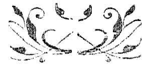
बीजक कबीरदास

(टीका सहित)



टीकाकार

श्रीरीवाँराज्याधिपति वैकुण्ठवासि

श्रीविश्वनाथसिंह

छठी बार

लखनऊ

केसरीदास सेठ सुपरिंटेंडेंट द्वारा

नवलकिशोर प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

१९२९

महात्मा कबीरदासजी



भारतवर्ष धर्मप्रधान देश है । यहाँ साधु-महात्माओं की कमी नहीं । यहाँ एक-से-एक बढ़कर धर्मपरायण प्राणी प्रादुर्भूत हुए । भगवद्भजन के प्रभाव से उन्होंने अनेक चित्र-विचित्र कार्य कर दिखाए । संसार को अचम्भे में डाल दिया । त्रिकालज्ञ और सर्वज्ञ तो वे होते ही थे । वह आध्यात्मिक समय था, अध्यात्म-विद्या या आत्म-विद्या का उन्हें बड़ा शौक़ था और लोगों का उस पर पूरा विश्वास था । उस समय आजकल की तरह न विना तार का तार था और न हवाई जहाज़ या रेडियो की रंगत । पर उनका आत्म-विश्वास और विचार की दृढ़ता ऐसी सच्ची और पक्की थी कि वह घर बैठे संसार की गति और प्रगति का पूरा परिचय प्राप्त कर लेते थे । संसार से वे विरक्त और अपने में लीन रहते थे । अपने शरीर में ही उन्हें रेडियो की मशीन चलती नज़र आती । अपने अन्तःकरण ही में उन्हें वे तार की तारबर्क़ी का स्विच-बोर्ड दिखाई देता और उसका उन्हें पूरा अनुभव और ज्ञान होता । आवश्यकतानुसार वे उसका उपयोग भी करते । ऐसी बातें वे किसी से कहते, तो लोग उन्हें पागल और सीड़ी समझते, उन पर हँसते और उनकी मज़ाक़ उड़ाते । पर धीरे-धीरे उनके पागलपने का प्रताप ज्यों-ज्यों सच्चा सिद्ध होने लगा, जनता उन पर अधिकाधिक श्रद्धा करने लगी । उनसे दीक्षा लेने लगी, अपना सर्वस्व और अपने तईं भी उन्हें समर्पित करने लगी । लोग उनके चेले हो गए और उनके इशारे पर नाचने में अपना अहोभाग्य समझने लगे ।

यहाँ भी हम ऐसे ही एक पागल सीड़ी, महात्मा, साधु या संत, जिस नाम से आप उचित समझें उन्हें सम्बोधित करें, का परिचय अपने पाठक को कराते हैं । इनका नाम आपसे छिपा नहीं है । साहित्य से कुछ भी प्रेम रखनेवाले की ज़बान पर इनके उपदेशामृत, शिक्षाप्रद वचन ऐसे चढ़े हुए हैं कि वे, अधिकतर बिना उनका गूढ़ आशय समझे ही समय-समय पर उनका उच्चारण किया करते हैं । यह और कोई नहीं हमारे महात्मा कबीरदासजी हैं । ऐसे महात्माओं का प्रादुर्भाव संसार में किसी न किसी प्रयोजन से ही

होता है। धार्मिक श्रद्धा का जब ह्रास होने लगता है, आचार-विचार में भ्रष्टता आती-जाती है, स्वार्थ की मात्रा जब सीमोल्लंघन कर जाती है, दान-दया का दिवाला निकल जाता है, अपना ही अपना जब अच्छा लगता है, दूसरे के दुःख-सुख में सहृदयता प्रदर्शन अनावश्यक शिष्टाचार प्रतीत होने लगता है, तभी कोई-न-कोई ऐसे भगवद्भक्त का अवतार होता है, जो अपनी आदर्श सच्चरित्रता, निर्मल अंतःकरण, परोपकार वृत्ति, अल्प संतोष, सच्चे आत्म-ज्ञान, निःस्पृह सेवा-सुश्रूषा, एकाग्रता और एकनिष्ठता के कारण मनुष्यों के रहन-सहन, आचार-विचार आदि पर ऐसा प्रभाव डालते हैं कि वे फिर अपने बहके हुए मार्ग से हटकर सच्चे और सीधे रास्ते पर आ जाते हैं।

इन्हीं सब उद्देश्यों की पूर्ति को ही अपने जीवन का आदर्श बनाकर महात्मा कबीरदासजी भी अपना संसार-यात्रा कर रहे थे।

कबीरजी के जन्म की कथा भी बड़ी विचित्र है। इनका जन्म पन्द्रहवीं शताब्दी में हुआ था। इनके जन्म की कथा इस प्रकार है—एक विधवा ब्राह्मणी किसी सिद्ध साधु की सेवा-सुश्रूषा में समय-यापन करती थी। एक दिन साधु उस पर बड़े प्रसन्न हुए और उसे आशीर्वाद दिया, बेटी, पुत्रवती हो। यह सुनकर वह ब्राह्मणी बड़ी लज्जित हुई और हाथ जोड़ कर विनय करने लगी, महाराज, मैं अभागिनी विधवा हूँ। आपने यह कैसा आशीर्वाद दिया? इसमें तो मेरा बड़ा अपयश होगा। साधु ने कहा, मैं जो कुछ कह चुका वह मिथ्या नहीं हो सकता। खैर, यथासमय उस ब्राह्मणी को एक पुत्र हुआ। लज्जावश और अपयश के डर से वह उस नवजात शिशु को लहरतारा तालाब के पास छोड़ आई। सुबह नीरू नाम का एक जुलाहा उधर हो के निकला। उसके कोई संतान न थी। उसने लड़के को पड़ा देखकर, उठा लिया और अपने घर ले आया। स्त्री से सब हाल कहा। वह बड़ी प्रसन्न हुई और उसका अपने पुत्र की ही तरह लालन-पालन करने लगी। पर हिंदी-नवरत्न के लेखक मिश्रबंधु इसे मनगढ़न्त कथा कहते हैं। उनका कहना है कि कबीर नीरू और नीमा के ही पुत्र थे; कारण, इन्होंने अपने को बार-बार काशी का जुलाहा कहा है, ब्राह्मणी का मातृत्व कहीं नहीं वर्णन किया है। इतने ही से इनका ब्राह्मणी का पुत्र न होना सिद्ध नहीं होता। नीरू और नीमा को भी नहीं मालूम था कि वास्तव में वह नवजात शिशु किसका लड़का था। उन्होंने तो उसे पड़ा पाया था। फिर यह बात कबीर या और

किसी से कहने ही क्यों लगे। कबीर को फिर इसका ज्ञान ही कैसे हो सकता था कि वह ब्राह्मणी के पुत्र हैं। मिश्रबंधु लिखते हैं कि कबीरदासजी ने मुसलमान होकर भी हिंसा से पूर्ण घृणा दिखलाई है, जिससे एवं अन्य बातों से जान पड़ता है कि आप चित्त से हिंदू थे (हिन्दी-नवरत्न, पृष्ठ ४८६) आप चित्त से हिंदू न थे पर जन्म से भी हिंदू थे; क्योंकि उसी ग्रंथ के ४४६ पृष्ठ पर मिश्रबंधु लिखते हैं—सुना जाता है, यह कभी-कभी कहा करते थे—"कासी को मैं बासी बाँभन, नाम मेरा परवीना। एक बार हरि-नाम बिसारा, पकरि जोलाहा कीना।" पाठक ही अब इसका निर्णय करलें।

जब वह शिशु बड़ा हुआ तो अपने पिता के व्यवसाय में पूरी सहायता देने लगा। बचपन ही से इसमें ईश्वर-भक्ति का भाव ऐसा भर गया था कि वह काम करने के बाद जो समय मिलता उसमें भगवद्भजन किया करता। मेहनत-मजूरी से जो कुछ मिलता उसकी खाने भर की वस्तु लाके घर दे देता। बाकी पैसे वह गरीब गुरबों और साधु-संतों में बाँट देता। एक बार का ज़िक्र है कि यह एक कपड़ा तैयार करके बाज़ार बेचने ले गया। वहाँ एक साधु ने उससे वह कपड़ा माँगा, उसने बिना कुछ आगा-पीछा सोचे चट उसे दे डाला।

इनकी भगवद्भक्ति की मात्रा दिनों-दिन बढ़ती जाती थी। अब इनके मन में गुरुमुख होने की समाई। उन दिनों काशी में रामानंद स्वामी भी विराजमान थे। वह दक्षिण की ओर के थे। बड़े पहुँचे हुए थे और रामा-नंदी मत के प्रवर्तक थे। ब्राह्मणेतर जातिवाले को वह शिष्य नहीं बनाते थे। यह देखकर कबीर को बड़ा खेद हुआ; पर इन्होंने किसी-न-किसी तरह उनसे गुरुमंत्र लेने का निश्चय कर लिया था। रामानंदजी नित्य रात रहते ही गंगा-स्नान को जाया करते थे। इन्होंने अपनी चतुराई से उन्हीं के मार्ग में गंगाजी की सीढ़ियों पर लेट लगाई। रात के पिछले पहर जब वह स्नान करने आए तो अंधेरे में उनका पैर कबीर पर पड़ गया। पैर पड़ते ही उन्होंने राम-राम ऐसे शब्द उच्चारण किए। बस कबीर का मतलब निकल आया। उन्हीं राम-राम शब्दों को उन्होंने गुरु-मन्त्र मान लिया और निरंतर राम की रटना लगाते रहे। अब उन्होंने मूँड़ मुँड़वा के तिलक-मुद्रा लगाना आरम्भ कर दिया और सदा राम-नाम जपते, मुसलमान-धर्म के विरुद्ध आचरण करते। इस पर इनकी माता ने सिकंदर लोदी के दरबार में फ़रियाद की कि

रामानंद ने मेरे पुत्र कबीर को अपना चेला बना लिया है। अब वह कुछ और ही होगया है। इस पर रामानंद स्वामी की दरबार में पेशी हुई। उन्होंने कहा कि मैं इस संबंध में कुछ भी नहीं जानता। पर किसी को इतने ही से विश्वास क्यों होता। तब रामानंदजी ने एकांत में ले जाके कबीर से पूछा, बात क्या है? उसने सब हाल कह दिया। इस पर वह कबीर से बड़े प्रसन्न हुए और उन्हें राम-नाम जपने और साधु सेवा का उपदेश देके बिदा किया। सिकंदर ने कबीर से भी बहुत तर्क-वितर्क करके माता के पास लौट जाने को कहा; पर यह कब माननेवाले थे। इन्हें तो ईश्वर की सच्ची लगन लगी थी। ऐसे युक्ति-युक्त जवाब दिए कि सिकंदर लोदी को निराश होके इन्हें छोड़ देना पड़ा *।

कबीर की सिद्धि देखकर लोग उनके दर्शन के लिये बराबर उनके घर पर जुटे रहते थे। इससे उनको भगवद्-भजन में बड़ा अंडस पड़ने लगा। भीड़ दूर करने के लिये उन्होंने एक तरकीब की कि एक हाथ एक वेश्या के गले में और दूसरे हाथ में मदिरा का भ्रम करानेवाली गंगा-जल की एक शीशी लेकर सड़क पर उन्मत्त की तरह घूमने लगे कि लोगों की उनपर से अश्रद्धा होजाय। इससे इनकी निंदा होने लगी; पर भीड़ फिर भी कम न हुई। तब एक दिन वह उसी तरह वेश्या और बोतल लिए हुए राजदरबार में जा पहुँचे; पर अश्रद्धा होने के कारण किसी ने इनका आदर-सत्कार नहीं किया। कबीरजी ने थोड़ा सा गंगा-जल धरती पर डाला और राम-राम कहके सोच करने लगे। राजा ने सोच का कारण पूछा, तो बोले कि इस समय श्रीजगन्नाथजी का रसोइया आग से जल रहा था। पानी डाल के आग बुझाई और उसे बचाया। राजा को इस पर बड़ा आश्चर्य हुआ। दूत भेजके समाचार मँगाया, तो बात सच निकली। राजा बड़ा लज्जित हुआ। रानियों सहित नंगे पाँव वह कबीरजी के पास दौड़ा आया और अपना अपराध क्षमा कराने लगा। कबीरजी ने क्षमा प्रदान की और उपदेश दिया †।

एकबार सिकंदर लोदी काशी गया। हिंदू-मुसलमान के झूठ सच लगाने से उसने कबीर की तलबी की। कबीरजी गए। लोगों ने उनसे बादशाह

---

* भारतीय चरिताम्बुधि। † भक्तमाल

को सलाम करने को कहा। उन्होंने कहा, मुझे न सलाम करने आता है, और न बादशाह से मेरा कोई प्रयोजन ही है। मैं तो एक राम-नाम को जानता हूँ। वही मेरा सर्वस्व है और वही मेरे प्राणों का आधार है। बादशाह ने क्रोधित होके कबीर को जंजीर से कसवा के गंगाजी में फेंकवा दिया। पर वह डूबे नहीं। आग में डलवाया; पर जले नहीं; मतवाले हाथी के आगे धरवाया, पर हाथी ही हट गया। यह सब प्रभाव देख के बादशाह बड़ा शर्मिंदा हुआ और पैरों पड़के अपराध क्षमा कराया। यही नहीं, अपनी संपत्ति और राज्य-पाट सब इनके चरणों में अर्पित करने लगा। कबीरजी ने कहा, मुझे केवल राम-नाम छोड़के और किसी से प्रयोजन नहीं। यह कहके वह अपने घर चले आए।

इतने पर भी कुछ लोग कबीरजी के पीछे पड़े रहे और किसी साधु-द्वारा देश भर में निमंत्रण भेज दिया कि फलाने दिन कबीरजी के यहाँ भंडारा है। नियत दिन को साधुओं की जमाअत आ पहुँची। कबीरजी को जब सब हाल मालूम हुआ, तो वह बड़े घबड़ाए। उनके घर में इनका आतिथ्य करने को सामग्री न थी। तब इनकी लोई नामकी स्त्री ने कहा कि अगर आपकी इच्छा हो, तो एक साहूकार के उस बेटे से धन लाऊँ, जो मुझपर मोहित है। कबीर ने संत-समादर के विचार से यह भी स्वीकृत कर लिया और लोई ने रात को उसके पास जाने का वचन देकर धन प्राप्त किया, जिससे संतों का आतिथ्य हुआ। रात को जाने के समय बड़े ज़ोर से पानी बरसने लगा। पर कबीरसाहब वचन रखने के लिये लोई को कंधे पर चढ़ाकर साहूकार के लड़के के पास ले गये। जब उसने यह जाना तो वह कबीर-साहब के पैरों पड़ा, क्षमा माँगी और इनका शिष्य भी होगया।

कबीरजी की परीक्षा लेने स्वर्ग की एक अप्सरा मोहिनीरूप धर के आई। इन्होंने उसपर निगाह तक नहीं उठाई। वह लज्जित होके चली गई। इस-पर भगवान् ने प्रसन्न होके अपना चतुर्भुजी रूप का दर्शन दिया और हस्त-कमल को उनके मस्तक पर धरके आज्ञा दी कि शरीर समेत परम धाम को चलो। चतुर्भुजीरूप की माधुरी देखके कबीरजी आनंदमय होगए और जाने को तैयार होगए। इनके अंतिमकाल के संबंध में कथा प्रचलित है कि यह मगहर में मरे थे। लोगों को विश्वास था कि मगहर में मरने से मनुष्य नरक को जाता है। इस पर कबीरदास यह कहकर काशी से मगहर चले गए

कि "जो कबिरा कासी मरै, तौ रामै कौन निहोर।" मगहर में ही अंतिम-काल में रहकर यह सदेह स्वर्ग को सिधारे। जब यह मरे तो इनके मुसलमान शिष्यों ने कहा कि कबीर मुसलमान थे इनकी लाश दफ़नाई जायगी। हिंदू कहते थे, यह राम-भक्त थे, इनकी लाश का अग्नि-संस्कार होना चाहिए। इसी वादाविवाद में जब लाश की ओर लोगों का ध्यान गया और कफ़न उठा के देखा, तो वहाँ लाश नदारद! उसके स्थान में कुछ सुगंधित पुष्प पड़े मिले।

कबीरजी के कमाल नाम का एक पुत्र भी था पर यह उनका औरस-जात पुत्र न था। कहते हैं कबीरजी एक दिन गंगा-किनारे बैठे थे। उधर सियार बोल रहे थे कि नदी में यह मुर्दा बहा आ रहा है, किनारे लगने पर इसे खाके खूब आनंद करेंगे। कबीरजी उनकी भाषा समझ गए और किनारे आके देखने लगे। मुर्दा जब किनारे लगा तो इन्होंने उसे निकाल के बाहर रक्खा। इस पर नदी की मछलियाँ कहने लगीं कि कबीर ने हमारे खाने का हिस्सा छीन लिया। कबीरजी ने सोचा कि यह तो बड़े धर्म-संकट का प्रश्न आ पड़ा। फिर उन्होंने उस मुर्दे पर गंगा-जल छिड़का और वह जी उठा। अब उसे वह अपने साथ रखने लगे और पुत्र की तरह उसे पाला। लोग कबीर का यह कमाल देख के चकित हो गए। उसका नाम भी इसी से कमाल पड़ा *। पर हिंदी-नवरत्न में इसका कहीं ज़िक्र नहीं है। उनका कहना है कि कबीर का विवाह बनखंडी वैरागी की पालिता कन्या लोई के साथ हुआ था, जिससे आपके कमाल और कमाली नामक पुत्र और कन्या उत्पन्न हुईं। लोई बड़ी सुंदरी थी। कबीर के सद्गुणों पर रीझ के उसने इनका साथ पसंद किया था।

कुछ भी हो, पर यह निर्विवाद है कि कमाल के कारनामे काले ही थे। यह पैसा-पूजक था। भगवद्भक्ति और भजन से यह भागता था। तभी कबीरदासजी ने कहा है—

"बूड़ा बंस कबीर का, उपजे पूत कमाल।
हरि का सुमिरन छोड़िके, घर ले आया माल॥"

कबीर साहब का लौकिक ज्ञान बड़ा गहरा था। यह उन्होंने देश-देश घूमकर उपार्जन किया था। कहते हैं आप बलख तक गए थे। आप सत्य

* भारतीय चरितांबुधि।

के साथी थे और असत्य के आलोचक। जो बात आपको असत्य जँचती, उसकी आप कड़े शब्दों में आलोचना अवश्य करते। कबीरसाहब स्वयं संत और योगी थे, पर गृह-त्याग के पक्ष में न थे। देखिए मूँड़ मुँड़ा के संन्यासी होनेवालों की आपने कैसी खबर ली है—

"कनवा फराय जोगी जटवा बढ़ौले, दाढ़ी बढ़ाये जोगी होई गैलै बकरा;
जंगल जाय जोगी धुनिया रमौले, काम जराय जोगी बनि गैलै हिजरा।"

"झूठा रोज़ा झूठी ईद"

जैसे वाक्य आपके ज़बान पर सदा रहते थे। हिंदू-मुसलमान दोनों के सैकड़ों आचार-विचार की आप खासी खबर लिया करते थे; पर शुद्ध भाव से। हाँ, इनके कटाक्ष तीव्र अवश्य होते थे। सभी उन्हें सह नहीं सकते थे। सिकंदर लोदी तक इनकी शिकायत गई। ज़ंजीर से बँधवा के गंगाजी में फिकवा दिए गए; पर यह किसी तरह बच गए। इस संबंध में इन्होंने स्वयं लिखा है—

"गंग-लहर मेरी टूटी जंजीर, मृगछाला पर बैठे कबीर।
कहु कबीर कोउ संग न साथ, जल-थल राखत हैं रघुनाथ॥"

कबीर साहब सूफ़ी मत के पूर्ण ज्ञाता थे। इनके धार्मिक सिद्धान्तों में अनेक ऐसी बातें निकलती हैं, जिनसे प्रकट होता है कि आपको सूफ़ी मत का अच्छा ज्ञान था। हिंदू लोग इन्हें 'भगत कबीर' और मुसलमान 'पीर कबीर' कहते थे। काशी में रहने से यह हिंदू और मुसलमान दोनों मतों के सिद्धान्तों से पूरी तरह परिचित हो गए। मोहसिन फ़ानी लिखता है कि कबीर ने लड़कपन ही में अनेक हिंदू तथा मुसलमान विद्वानों और संतों से भेंट की। बहुत दिनों वह जौनपुर, झूँसी इत्यादि में शेख तक़ी तथा अन्य मुसलमान सूफ़ियों और पीरों के साथ रहे, जिनका ज़िक्र कबीरसाहब ने अपनी रमैनी में किया है। इसके बाद कबीर ने बनारस में अपना सत्संग शुरू कर दिया। इनके विचार बड़े स्वतंत्र थे। आरम्भ में मुसलमान मौलवी और हिंदू पंडित दोनों उनसे बेहद नाराज़ हुए। इन लोगों ने हर तरह से कबीर को कष्ट पहुँचाने का यत्न किया। अंत में दोनों जातियों में से कबीर के सहस्रों अनुयायी हो गए। लेकिन कबीर ने कपड़ा बुनने का धंधा जन्म-भर नहीं छोड़ा।

कबीर हिंदुओं के वर्णाश्रम धर्म या जाति-भेद के कट्टर विरोधी थे।

वेदों, शास्त्रों अथवा कुरान् में से किसी को भी वह निर्भ्रान्त अथवा प्रामाणिक नहीं मानते थे। सूफ़ियों के समान, प्रेम, इश्क़ अथवा भक्ति उनका मुख्य धर्म था। अपनी रमैनी, शब्दों और साखियों के ज़रिए उन्होंने हिंदू और मुसलमान दोनों को एक समान धर्म का उपदेश दिया। निर्भीकता के साथ दोनों मतों की रूढ़ियों का एक समान खंडन किया और प्राणीमात्र के साथ प्रेम तथा एक ईश्वर की भक्ति का सबको एक समान उपदेश दिया। यह राम-नाम की महिमा गाते थे। एक ही ईश्वर को मानते थे। यह कर्मकांड के घोर विरोधी और सखी-भाव के अविचल भक्त। मूर्ति, अवतार, रोज़ा, ईद, मसजिद, मंदिर आदि को यह नहीं मानते थे। अहिंसा, मनुष्य-मात्र की समता तथा संसार की असारता को इन्होंने बार-बार गाया है। यह उपनिषदों के विचारवाले ईश्वर को मानते थे, और साफ़ कहते थे कि वही शुद्ध ईश्वर है, चाहे उसे राम कहो या रहीम।

स्वामी रामानंद के शिष्यों में कबीर मुख्य थे। इस संप्रदाय के आराध्य देव विष्णु हैं। कबीर-पंथी सिद्धांतों और रामानंदी-संप्रदाय के विचारों में बड़ा अंतर था; पर इनकी सदा उस ओर सहानुभूति रहती थी। कबीर-पंथ में देवी-देवताओं की पूजा नहीं मानी जाती। इनमें न कोई पूजा का मंत्र है और न प्रणाम और वंदना आदि की कोई रीति। कीर्तन ही इनकी उपासना है। गृहस्थ कबीर-पंथी तो देवी-देवताओं की पूजा भी करते हैं, पर संन्यासी नहीं।

कबीर ही पहले भारतवासी थे, जिन्होंने हिंदू और मुसलमान दोनों के लिये बल्कि समस्त मानव-जाति के लिये एक सामान्य धर्म का निर्भीकता के साथ प्रतिपादन किया। उनके अनुयायियों में हज़ारों हिंदू और मुसलमान शामिल थे। अभी तक कबीरचौरा (काशी) में कबीर के हिंदू अनुयायी और मगहर में मुसलमान अनुयायी प्रतिवर्ष जमा होकर कबीरदासजी की स्मृति में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। इस समय भी कबीर-पंथियों की संख्या लगभग दस लाख के होगी; पर कबीर का प्रभाव इससे कहीं अधिक है। इनका मत पंजाब, गुजरात और बंगाल तक फैला हुआ है।

जैसे कबीर के धार्मिक भावों ने क्रांति पैदा की थी, वैसे ही इनकी साहित्यिक सेवा भी कम महत्त्व की नहीं है। कबीरसाहब अशिक्षित थे। आपने जितनी कविता बनाई है, सब मौखिक थी। बीजक में आप स्वयं लिखते हैं—

"मसि कागज छूवो नहीं, कलम गहो नहिं हाथ।
चारिउ जुग का महातम कबिरा मुखहिं जनाई बात॥"

कबीर जो कुछ कविता बनाके गाते, उसके शिष्य उन्हें लिख लिया करते थे। फ़रीदुद्दीन अत्तार के पंदनामे और जलालुद्दीन रूमी और शेख़-सादी सीराजी की कविताओं से कबीर निःसन्देह भलीभाँति परिचित थे। कबीर के पद्यों में इन महापुरुषों तथा अन्य सूफ़ियों के उपदेशों की बार-बार झलक आती है। कबीर ने संस्कृत की अपेक्षा भाषा में अपने पद्यों को लिखना पसंद किया। उनका उद्देश्य सर्वसाधारण तक अपने विचारों को फैलाना था। अपनी साखी में एक स्थान पर उन्होंने लिखा है—

"संस्कारित है कूप जल, भाषा बहता नीर।"

इनके पद्यों में कहीं संस्कृत भरी हिंदी और कहीं फ़ारसी भरी उर्दू दोनों मिलती हैं। अभी तक खोज से इनके ७५ ग्रंथ प्राप्त हुए हैं। उनके नाम ये हैं—

(१) अगमूल, (२) अनुरागसागर, (३) उग्र ज्ञानमूल सिद्धांत, (४) ब्रह्मनिरूपण, (५) हंसमुक्तावली, (६) कबीर-परिचय की साखी, (७) शब्दावली, (८) पद, (९)साखियाँ, (१०) दोहे, (११) सुख-निधान, (१२) गोरखनाथ की गोष्ठी, (१३) कबीरपंजी, (१४) बलक की रमैनी, (१५) विवेक-सागर, (१६) विचार-माला, (१७) काया-पंजी, (१८) रामरक्षा, (१९) अठपहरा, (२०) निर्भय ज्ञान, (२१) कबीर और धर्मदास की गोष्ठी, (२२) रामानन्द की गोष्ठी, (२३) आनंद राम, (२४) सागर मंगल, (२५) अनाथ-मंगल, (२६) अक्षर-भेद की रमैनी, (२७) अक्षर-खण्ड की रमैनी, (२८) अलिफ़नामा, (२९) अर्जनामा, (३०) आरती, (३१) भक्ति का अंग, (३२) छप्पय, (३३) चौकाघर की रमैनी, (३४) ज्ञान-गूदरी, (३५) ज्ञान-सागर, (३६) ज्ञान-स्वरोदय, (३७) कबीराष्टक, (३८) करमखंड की रमैनी, (३९) मुहम्मद बोध-नाम-माहात्म्य, (४०) पिया पहिचानबे को अंग, (४१) पुकार कबीर-कृत, (४२) शब्द अलट टूक, (४३) साधु को अंग, (४४) सतसंग को अंग, (४५) स्वांस गुंजार, (४६) तीसा-जंत्र, (४७) जन्मबोध, (४८) ज्ञान-संबोध, (४९) मखहोम, (५०) निर्भय ज्ञान,

(५१) सत नाम या सतकबीर, (५२) बानी, (५३) ज्ञान-स्तोत्र, (५४) सतकबीर बंदी छोरा, (५५) शब्दवंशावली, (५६) उग्र-गीता, (५७) बसंत, (५८) होली, (५९) रेखता, (६०) झूलना, (६१) खसरा, (६२) हिंडोला, (६३) बारहमासा, (६४) चांचरा, (६५) चौंतीसा, (६६) रमैनी, (६७) बीजक, (६८) आगम, (६९) रामसार, (७०) सोरठा, (७१) कबीरजी की कृत, (७२) शब्द पारखा, (७३) आदि ग्रंथ, (७४) ज्ञान-बत्तीसी और (७५) ज्ञान-तिलक।

इन ग्रंथों में बहुत से संदिग्ध भी हैं और कितने ग्रंथों के भाग-मात्र समझ पड़ते हैं। इनमें मुख्य-ग्रंथ 'बीजक' और 'आदि-ग्रंथ' हैं। सभी ग्रंथ धार्मिक विचार-प्रधान हैं। सबका विषय एकही-सा है। किसी में कोई कथा-प्रसंग नहीं है। सबमें मुक्तकों द्वारा कबीर के सिद्धांतों का कथन है। सबमें नए-नए छंदों द्वारा वे ही विचार सैकड़ों बार दुहरा कर आए हैं। कबीरसाहब ने सबसे अधिक ईश्वर का वर्णन किया है। ईश्वरीय विचार जितना कबीरसाहब ने कहा है, उतना हमारे किसी अन्य भारी भाषा-कवि ने नहीं कहा।

कबीरदास के छंदों तथा जीवन के चरित्र से जान पड़ता है कि आप योगी, सिद्ध, ब्रह्मानंदी और समाधिस्थ थे। आपकी गणना पैगंबरों और मिस्टिक महापुरुषों में हो सकती है। फिर भी आपने किसी को अपने ऊपर अनुचित विश्वास करने का उपदेश नहीं दिया, और सारी चितावनियाँ तथा विचार जो कुछ कहा सब बुद्धि-ग्राह्य था।

इनकी भक्ति सखी-संप्रदाय की थी। इनकी रचनाओं में शृंगार-पूर्ण वर्णन इस संबंध में बहुत आया है; पर शृंगार का उनमें आभास-मात्र ही है। वास्तविक वर्णन जीवात्मा और परमात्मा ही का है। अतएव इनका शृंगार-वर्णन इतना रोचक नहीं हुआ है।

कबीरसाहब ने रूपक भी बहुत कहे हैं। इनकी उल्टवाँसी भी बहुत हैं। अपने उद्देश्य और भाव को भड़कदार, आकर्षक और आश्चर्यजनक बनाने के लिये इन्होंने उल्टवाँसी कही हैं। इनमें देखने को तो उल्टा कथन किया जाता है, किंतु आध्यात्मिक अर्थ लगाने से उनका अर्थ ठीक बैठ जाता है। इन्होंने सांकेतिक पद भी बहुत कहे हैं। सर्वसाधारण आसानी से उनका भी अर्थ नहीं लगा सकते।

अपने काव्यों में आपने अहिंसा का सदा प्रतिपादन किया है। मुसलमान होकर भी आपने हिंसा से पूर्ण घृणा दिखलाई है। मुसलमानों को उपदेश देते हुए आपने कहा है—

"दिन-भर रोजा धरत हौ, राति हनत हौ गाय।
एक खून एक बंदगी, कैसे खुशी खुदाय॥"

अपने ग्रंथों में इन्होंने उपदेश और चेतावनियाँ भी बहुत दी हैं। इनके नीति के दोहे तो अनमोल ही हैं। सत्य-प्रिय होने के कारण इनकी आलोचना बड़ी तीव्र होती थी। अन्य उपदेशकों की भाँति आप भी श्रोताओं को मृत्यु की याद दिलाया करते थे। कबीर की कहावतें तो लोक-प्रसिद्ध ही हैं। यहाँ तक कि छोटे-बड़े सभी की जिह्वा पर ये पद चढ़े हैं।

इनके अधिक छंद संतों को संबोधित करके कहे गए हैं। आपने तुकांत-हीन कविता भी की हैं। रीतियों, नियमों आदि का मान आपने किसी बात में नहीं किया, तब साहित्य-संबंधी नियमों को ही आप क्यों मान देते।

इनकी रचना में छंदोभंग बहुत पाए जाते हैं। संभव है, यह त्रुटि लिखनेवालों की भूल से आगई हो; क्योंकि आपने हाथ से कलम छुआ ही नहीं; पर आपकी रचनाओं से आपका पूरा पांडित्य प्रकट होता है।

आपकी भाषा साधारणतः बनारस की है। खड़ी बोली में भी आपने रचना की है। कुछ गजलें भी कही हैं। यह निर्विवाद है कि कबीर साहब उच्चकोटि के कवि हैं। स्वयं रवींद्रनाथ टैगोर ने इनकी रचनाओं से आकर्षित होके उनका अंग्रेज़ी में अनुवाद किया है। इनके मूल पदों में अव्वल दर्जे की साहित्यिक छटा मिलती है।

कबीरदास की रचना इतनी लोक-प्रिय हैं कि महात्मा तुलसीदास के बाद इन्हीं का नंबर आता है। यद्यपि आपकी रचनाएँ में उद्दंडता की मात्रा कम नहीं है *।

'मिश्रबंधु-विनोद' में इनके संबंध में लिखा है कि इन्होंने खरी बातें बहुत उत्तम और साफ़-साफ़ कही हैं, और इनकी कविता में हर जगह सचाई की झलक देख पड़ती है। इनके-से बेधड़क कहनेवाले कवि बहुत कम देखने में आते हैं। कबीरजी का अनुभव बहुत बढ़ा-चढ़ा था, और दृष्टि अत्यंत

---

* हिंदी-नवरत्न

पैनी थी। कहीं-कहीं इनकी भाषा में कुछ गँवारूपन आजाता है, पर उसमें उद्दंडता की मात्रा अधिक होती है। आपने प्रायः साधारण बातों ही में ज्ञान कहा है। इनके कथन देखने में तो साधारण देख पड़ते हैं, पर उनमें गूढ़ आशय छिपे रहते हैं। इन्होंने रूपकों, दृष्टांतों और उत्प्रेक्षाओं आदि में धर्म-संबंधी विचारों एवं सिद्धांतों को सफलता-पूर्वक व्यक्त किया है। साधारण भजनों में प्रायः कबीरदास ने संसार की असारता दिखलाई है। आपकी रचना तथा जीवन की सर्वोत्कृष्ट बातें सिद्धता और हिंदू-मुसलमानों को मिलाने के प्रयत्न हैं। आपका जीवन तथा काव्य धन्य है।

हिंदी-साहित्यकारों में आपका स्थान कहाँ है, इस संबंध में साहित्य-समालोचकों ने निम्न पदों में अपना निर्णय दिया है। सूरदास और तुलसीदास के बाद ही इनका स्थान है—

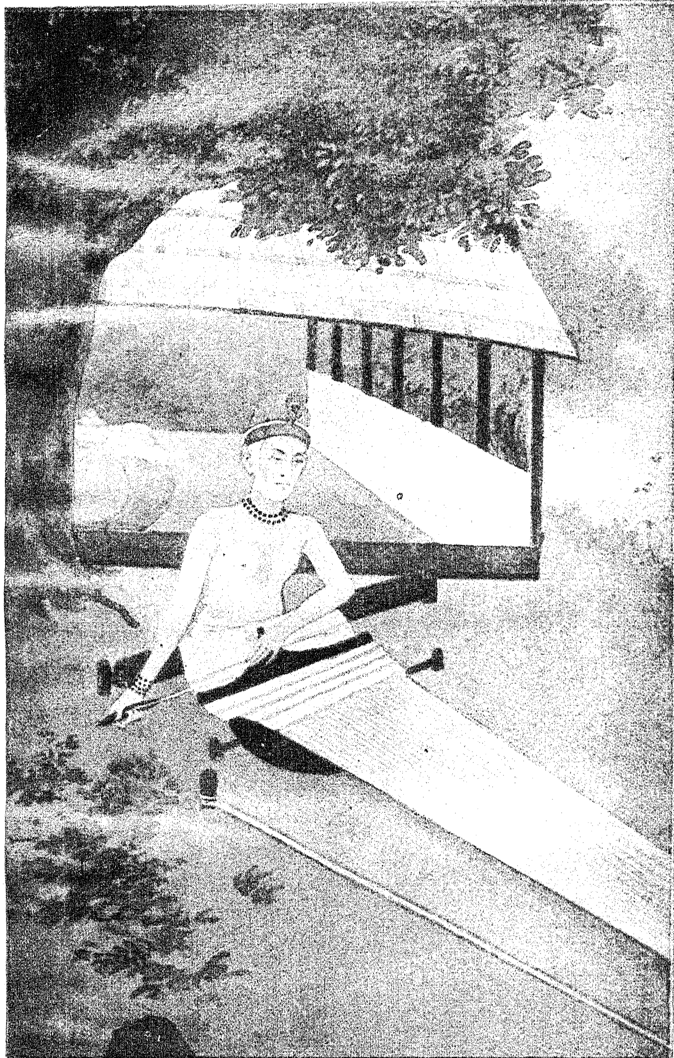
तत्त्व-तत्त्व सूरा कही, तुलसी कही अनूठी,
बचीखुची कबिरा कही, और कही सब झूठी।

यही नहीं और लोगों ने भी इसी की पुष्टि की है—

जो कुछ रहा सो अँधरा भाखा, कठवौ कहेसि अनूठी,
बाकी रहा सो तुलसी कहिगा, और कहेन सब झूठी।

छुन्नूलाल द्विवेदी

बीजक कबीरदास



कबीरजी

झीनी-झीनी बीनी चदरिया,

काहे कै ताना, काहे कै भरनी, कौन तार से बीनी चदरिया ;
इँगला पिंगला ताना भरनी, सुखमन तार से बीनी चदरिया ।
आठ कँवल दल चरखा डोलै, पाँच तत्व गुन तीनी चदरिया ;
साईं को सियँत मास दस लागै, ठोक-ठोक कै बीनी चदरिया ।
सो चादर सुर-नर-मुनि ओढ़ैं, ओढ़ि कै मैली कीनी चदरिया ;
'दास कबीर' जतन से ओढ़ी, ज्यों-की-त्यों धर दीनी चदरिया ।



श्रीगणेशाय नमः ॥

बीजक कबीरदास ॥

अथ आदि मङ्गल ॥

दो० प्रथमै समरथ आप रह, दूजा रहा न कोय ॥
दूजा केहि बिधि ऊपजा, पूछत हौं गुरु सोय १
तब सतगुरु मुख बोलिया, सुकृत सुनो सुजान ॥
आदि अन्त की पारखै, तोसों कहौं बखान २
प्रथमसुरति समरथ कियो, घटमें सहज उचार ॥
ताते जामन दीनिया, सात करी बिस्तार ३
दूजे घट इच्छा भई, चितमनसा तो कीन्ह ॥
सात रूप निरमाइया, अविगतकाहु न चीन्ह ४
तब समरथ के श्रवणते, मूलसुरति भै सार ॥
शब्द कला ताते भई, पाँच ब्रह्म अनुहार ५
पाँचौ पाँचै अण्ड धरि, एक एकमा कीन्ह ॥
दुइ इच्छा तहँ गुप्त हैं, सो सुकृत चित चीन्ह ६
योगमया यकु कारनो, ऊजो अक्षर कीन्ह ॥
या अविगतसमरथ करी, ताहि गुप्त करि दीन्ह ७
श्वासा सोहं ऊपजे, कीन अमी बन्धान ॥
आठ अंश निरमाइया, चीन्हो सन्त सुजान ८
तेज अण्ड आचिन्त्यका, दीन्हो सकल पसार ॥
अण्ड शिखा पर बैठिकै, अधर दीप निरधार ९

ते अचिन्त्य के प्रेमते, उपजे अक्षर सार ॥
चारि अंश निरमाइया, चारि वेद बिस्तार १०
तब अक्षरका दीनिया, नींद मोह अलसान ॥
वेसमरथ अविगत करी, मर्म कोइ नहिं जान ११
जब अक्षर के नींदगै, दबी सुरति निरबान ॥
श्याम वर्ण यक अण्ड है, सो जलमें उतरान १२
अक्षर घटमें ऊपजे, व्याकुल संशय शूल ॥
किन अण्डा निरमाइया, कहा अण्डका मूल १३
तेही अण्डके मुक्खपर, लगी शब्दकी छाप ॥
अक्षर दृष्टिसे फूटिया, दशद्वारे कढ़ि बाप १४
तेहिते ज्योति निरञ्जनौ, प्रकटे रूप निधान ॥
काल अपरबल बीरभा, तीनिलोक परधान १५
ताते तीनों देवभे, ब्रह्मा बिष्णु महेश ॥
चारिखानितिनसिरजिया, मायाके उपदेश १६
चारि वेद षट शास्त्रऊ, औ दशअष्ट पुरान ॥
आशा दै जग बाँधिया, तीनों लोक भुलान १७
लख चौरासी धारमा, तहाँ जीवदिय बास ॥
चौदह यम रखवारिया, चारिवेद बिश्वास १८
आपु आपु सुख सबरमै, एक अण्डके माहिं ॥
उत्पति परलय दुःख सुख, फिरिआवहिंफिरिजाहिं १९
तेहि पाछे हम आइया, सत्य शब्द के हेत ॥
आदि अन्तकी उतपती, सो तुमसों कहिदेत २०
सात सुरति सब मूल है, प्रलयहु इनहीं माहिं ॥
इनहीं माहें ऊपजे, इनहीं माहँ समाहिं २१
सोई ख्याल समरत्थकर, रहे सो अछपछपाइ ॥
सोई संधिलै आइया, सोवतजगहिजगाइ २२
सात सुरति के बाहिरे, सोरह संखिके पार ॥
तहँ समरथ को बैठका, हंसन केर अधार २३

घर घर हम सबसों कही, शब्द न सुनैं हमार ॥
ते भवसागर डूबहीं, लख चौरासी धार २४
मङ्गल उत्पति आदिका, सुनियो सन्त सुजान॥
कह कबीर गुरु जाग्रत, समरथका फुरमान २५

दो० प्रथमै समरथ आपरह, दूजा रहा न कोय ॥
दूजा केहिविधि ऊपजा, पूछतहौं गुरु सोय १

कबीरजीकी वाणीके अर्थ करिबेको मोमें सामर्थ नहीं रही परन्तु साहब यह विचारिकै कि कबीरजीके बीजकको पाखण्ड अर्थ लगाइकै जीव बिगरेजायँ हैं सो साहब तो परम दयालु हैं उनको करुणा भई तब कबीरजीको भेज्यो या कहिकै कि आगे हम तुमको भेज्यो हतो सो तुम ग्रन्थ बनाइकै बहुत जीवनको उपदेशकरिकै उद्धार कियो सो अब तिहारे ग्रन्थ को पाखण्ड अर्थ करिकै पाखण्डी ह्वैकै जीव बिगरे जायँहैं और बहुत बिगरिगये सो तुम जाइकै जौन अर्थ तुम बीजकमें राख्यो है सो अर्थ विश्वनाथ सों बनवावो जाते सो अर्थ समुझिकै जीव हमारे पास आवैं सो कबीरजी आयकै मोसों कह्यो कि तुम बीजकको अर्थ बनाओ हम तुमको बतावेंगे सो उनके हुकुमते मैं बीजक को अर्थ बनाऊं हौं बतावनेवाले श्रीकबीरजीही हैं मो में ताक़त नहीं है जो मैं बनायसकौं और नाभाजी भक्तमाल में लिख्यो है कि "कबीर कानि राखी नहीं बरणाश्रम षटदरशनी" सो इहां कबीरजी को सिद्धान्त मत मैं कहौंगो औ सर्वसिद्धान्तग्रन्थ जो मैं बनायो है तामें सबको सिद्धान्त यथार्थ राख्योहै सो यहां बीजकके तिलक में साहबको औ कबीरजीको हुकुम यहीहै कि एक सिद्धान्त रहै जो सबते परेहै और सिद्धान्त सब खण्डन ह्वैजायँ सो सबके सिद्धान्तन को खण्डन करिकै एक सिद्धान्त मैं वर्णन करौहौं सो सुनिकै साहब के हुकुमी जानिकै साधुलोग पण्डितलोग और और मतवाले जेहैं ते मेरे ऊपर खफ़ा न होयँ प्रसन्न रहैं ना समुझि परै तौ प्रसन्न होइकै गुरुसों पूछिलेइँ औ यह वस्तुनिर्देशात्मक

मङ्गल है ताको अर्थ लिखे हैं (अथ अर्थ) प्रथम समरथ जे श्री रामचन्द्रहैं ते आपहीहैं दूसरा कोई नहीं रह्यो जो कहौ उनके लोक में तो हंस हंसिनी सब वर्णन करै हैं उनके पार्षद सब हैं ताको वर्णन निर्भय ज्ञान में विस्तरते हैं सो इहां संक्षेप ते सूचित किये देइ हैं "सत्य पुरुष निर्भय निरबाना । निर्भय हंस तहँ निर्भय ज्ञाना" इत्यादिक बहुत वर्णन निर्भयज्ञानमें कबीरजी ने कियो है तुम एकही कैसे कहो हो सो सत्यहै उहांके जीव सनातन पार्षद बने रहै हैं और साहब व साहबको लोक सनातन बनो रहै है परन्तु उहांके पार्षद जीव और उहांकी सब वस्तु साहबही का रूप है औ सब चिन्मय है सो वेद कहै हैं (श्लोक) "सच्चिदानन्दो भगवान् सच्चिदानन्दात्मिकास्य व्यक्तिः" और वह अयोध्या नगरी ब्रह्मके परे है ब्रह्म वाको प्रकाशहै और रघुनाथजीके समीप के जे पार्षद हैं ते साहबके स्वरूपहैं तामें प्रमाण "अयोध्या च परब्रह्म, सरयू सगुणः पुमान् । तन्निवासी जगन्नाथः, सत्यं सत्यं वदाम्यहम् १ अयोध्यानगरी नित्या, सच्चिदानन्दरूपिणी । यदंशांशेन गोलोकः, वैकुण्ठस्थः प्रतिष्ठितः २" (इति वशिष्ठसंहितायाम्) "देवानां पूरयोध्या तस्यां हिरण्मयः कोशः स्वर्गो लोका ज्योतिषावृताः" (इति श्रुतेः) सो इहां कहै हैं कि प्रथम तो समर्थ साहब वह लोक में आपही आपहैं दूजा कोई नहीं रह्यो दूजा जो रह्यो सो तो साहबके लोकको प्रकाश चैतन्याकाशमें रह्यो है सो कबीरजीते धर्मदास कहै हैं कि हे गुरुजी ! मैं तुमसे पूछौंहौं कि साहब के लोकको प्रकाश चैतन्याकाश में जो समष्टि जीव यह दूजा रह्यो सो केहि विधिते उपज्यो संसारी भयो काहेते कि साहब तो दयालुहैं जीवोंको संसारते छुड़ाइदेइ हैं जीवोंको संसारी नहीं करिदेइ हैं औ वह समष्टि जीवके तो मन आदिक नहीं रहे शुद्ध रह्यौहै उपजिबे की सामर्थ्य नहीं रहीहै और साहब सामर्थ्य दैके जीव को संसारी करबही न करैंगे सो दूसरा जो है समष्टिजीव सो उपजिके व्यष्टिरूप संसारी केहि विधिते भयो, औ जीव के

अपने ते उपजिबे की सामर्थ्य नहीं रही तामें प्रमाण "कर्तृत्वं करणत्वं च स्वभावश्चेतना धृतिः । तत्प्रसादादिमे सन्ति न सन्ति यदुपेक्षया" (इति श्रुतेः) ॥ १ ॥

दो० तब सतगुरुमुखबोलिया, सुकृत सुनो सुजान ॥
आदि अन्तकी पारचै, तोसों कहौं बखान २

गुरु साहब को कहै हैं काहेते सबते श्रेष्ठ हैं और जे यथार्थ उपदेश करै हैं तिनको सतगुरु कहै हैं व जे अयथार्थ उपदेश करै हैं तिनको गुरुवालोग कहैहैं सो यह बीजक ग्रन्थ की और अनुभवातीत प्रदर्शनी यह टीका की यह सैली है तब सतगुरु जे कबीरजी हैं ते मुखते बोले कि, हे सुजान, हे सुकृत! जीव समष्टि ते व्यष्टि जेहि प्रकार भये हैं सो सुनो मैं तुमसों आदि अन्तकी परचै कहौ हौं जेहिते तुम जानिलेउ ॥ २ ॥

दो० प्रथम सुरति समरथ कियो, घटमें सहज उचार ॥
ताते जामन दीनिया, सात करी विस्तार ३

प्रथम समर्थ जे साहब श्रीरामचन्द्रहैं साकेतनिवासी दयालु जिनके लोकमें प्रकाश में समष्टिरूपते यह जीवहैं ते श्रीरामचन्द्र परमदयालु यह जीव को देखिकै कि कछू वस्तुको याको ज्ञान नहीं है जब यह जीवपर साहबकी दया भई तब सुरतिमात्र देकै अपने जानिबेको वाको समर्थ करतभये कि जब याके सुरति होयगी तब मोको जानैगो मैं हंसस्वरूप देकै अपने लोक लै आऊंगो जहां मन, माया,कालकी गति नहींहै तहां सुख पावैगो अबै तो याको सुखको ज्ञानई नहीं है यह करुणा करिकै वह समष्टिरूप जीवके घटमें सहजही सुरतिको उचार करत भये कहे अंकुर करतभये सो साहब तो अपने जानिबेको सुरति दियो कि मोको जानै और यह जीव वही सुरतिको पाइकै व मनआदिकन को कारण इनके रहबई करै और शुद्ध रहै—दूध रहै जीव अपनी शुद्धतारूप दूधमें जगत्को कारण बनोई रहै तामें वही

सुरति को जामन देदियो सो बिनशिगयो सो वह सुरति पाइकै साहब के पास तो न गयो जीव बिनशिकै इच्छादिक जे सात तिनको विस्तार करत भयो और यह चैतन्य जीवको सुरति दैकै साहब चैतन्य करैहै साहब चैतन्यों को चैतन्य है तामें प्रमाण श्लोक "नित्यो नित्यश्चेतनश्चेतनानाम्। द्रव्यं कर्म च कालश्च स्वभावो जीव एव च। यदनुग्रहतः सन्ति न सन्ति यदुपेक्षया" (इति भागवते) और इच्छादिकनको कौन सात विस्तार करत भयो सो आगे कहै हैं ॥ ३ ॥

दो० दूजे घट इच्छाभई, चितमनसातौ कीन्ह ॥
सातरूपनिरमाइया, अविगतकाहुनचीन्ह ४

जब याको साहब सुरति दीन तब जीवके जगत्को कारण में रामाज्ञान बनोईरहै तेहिते सुरति साहबमें न लगायो जगतमुख लगायो जब सुरति जगत्मुख लाग्यो तब प्रथम जगत्को कारण पुष्ट भयो बिनशिगयो तेहिते दूसर इच्छारूप अंकुर भयो तीसर चित्त भयो चौथ मन भयो पांचौं बुद्धि भई छठौं अहंकार भयो सातौं अहंब्रह्म कहे अनुभवते भयो जो ब्रह्म ताको मान्यो कि महीं ब्रह्म हौं सो शुद्ध ते अशुद्ध ह्वैकै सात विस्तार करिकै समष्टिरूप जो जीव सो "अहं ब्रह्मास्मि" मान्यो तब याको अनुभव ब्रह्म माया शबलित भयो ताही द्वारा जगत् उत्पन्न भयो ताही द्वारा यह जीवौ उत्पन्न भयो अर्थात् समष्टिरूप जीवको अनुमान जो ब्रह्म सो इच्छा कियो एकते अनेक होऊं सो वा अनुमान ब्रह्मसमष्टि जीवको है याहि हेतु ते वह समष्टिजीव एकते अनेक ह्वैगयो और फिरि वह समष्टिरूप जीवको जो अनुमान ब्रह्म सो विचाखो कि ई जे अशुद्धरूप जीवात्मा तिनमें प्रवेश कैकै नाम रूप करो याही अर्थमें प्रमाण श्लोक "सदैव सौम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयं तदैक्षत बहुस्याम् अनेन जीवेनात्मनानुप्रविश्य नामरूपे व्याकरवाणि" (इत्यादि श्रुतयः) जो कहो वा सत्

ब्रह्मजीव को अनुमान कैसे कहौहौं ब्रह्मही सब भयो ऐसो काहे नहीं कहौहो तो " यतो वाचो निवर्तन्ते असह्य मनसा सह " इत्यादिक श्रुतिन करिकै मन वचनके परे है सत्नाम कहनो वामें नहीं संभवति है काहेते वो निर्विकार है साविकार ह्वैकै एक ते अनेक ह्वैजैबो नहीं सम्भवै या हेतुते यह समष्टि जीव ही अपनो अनुमानरूप धोखा ब्रह्म ठाटकैकै माया शबलित ह्वैकै तद्द्वारा जगत् उत्पन्नकैकै तद्द्वारा आयो उत्पन्न ह्वैकै समष्टिते व्यष्टि ह्वै गये अविगत समर्थ जे साहब हैं तिनको न चीन्हत भये यह सूक्ष्मरीति ते जो उत्पत्ति भई सो कहिदियो और जब जीव साहबके जानिबे को समर्थ भयो तब जैसी उत्पत्ति भई है सो कहैहैं साहब जो सुरति दियो सो तौ अपनेमें लगायबेको दियो यह संसारमें लगायो परन्तु जो संसार ते खैंचिकै अजहूं सुरति सम्हारै साहबमें लगावै तो साहब के हजूर आठौपहर बनोरहै अर्थात् साहबै सर्वत्र देखेपरै संसार देखिही न परै तामें प्रमाण कबीरजी की साखी " सुरति फँसी संसारमें, तेहि से परिगा दूर। सुरति बांधि सुस्थिर करै, आठौं पहर हजूर १ " आगे जौनीतरह ते उत्पत्ति भई साहबको त्यागि संसारी भयो सुरति पाय काज करिबेको समर्थ भयो तबहूं साहब सारशब्द को उपदेश दियोहै ताको साहबमुख अर्थ न समुझिकै संसारमुख अर्थ समुझिकै ब्रह्मकी कल्पना कैसेकै संसारको उत्पन्न कैकै संसारी भयो है यह जीव सो आगे कहै हैं ॥ ४ ॥

दो० तब समरथकेश्रवणते, मूलसुरति भइ सार ॥
शब्दकला ताते भई, पांच ब्रह्म अनुहार ५

साहब को दियो सुरति पाइकै समरथ भयो जो समष्टिजीव ताके श्रवण में मूलसुरति जो साहब अपने जानिबेको दियो है सो सार भई कहैं रामनाम रूप ते प्रकट भई सार रामनामको कहै तामें प्रमाणसाखी कबीरजीकी "रामैनाम अहैनिजसारू।

औसबभूंठ सकलसंसारू १ " साहब जो सुरति दियोहै सो वह सुरतिके चैतन्यताते नाम सुन्यो अर्थात् साहब जो याको गोहरायो कि रामनामको जपिकै बिचारिकै मोको जानो तो मैं हंसस्वरूप ह्वैकै अपने पास बुलाइलेउँ सो सुनिकै रामनाममें जगत् मुख अर्थ है ताको ग्रहण कियो और शब्दमें लगाइ दिये वही राम नाम लैकै शब्दरूप वाणी उचरी है सो कबीरजीकी रमैनी में आगे लिख्योहै "रामनाम लै उचरी बाणी" और वही रामनाम ते शब्द कलावाणी होतभई सो पांच ब्रह्मके अनुहार हैं पांच ब्रह्म कौन हैं ते कहै हैं सोहं, ररंकार, ओंकार, अकार, पराशक्तिरूप परम श्रीकबीरजीके भेदसारग्रन्थको प्रमाण "प्रथम शब्द सोहं जो कीन्हा । सब घटमाहीं ताकर चीन्हा ॥ ररंकार यक शब्द उचारी । ब्रह्मा बिष्णु जपैं त्रिपुरारी ॥ ओंकार शब्द जो भयऊ । तिनसबही रचना करिलयऊ ॥ शब्दस्वरूप निरञ्जन जाना । जिन यह कियो सकलबन्धाना । शब्दस्वरूपी शक्ति सो बोलै । पुरुष अडोल न कबहूं बोलै " ॥ ५ ॥

दो० पांचौ पांचै अण्डधरि, एक एकमा कीन्ह ॥
दुइ इच्छा तहँ गुप्तहैं, सो सुकृत चित चीन्ह ६

ते पँचहुनको पांच अण्ड कहे पांच स्वरूप बनाइकै एक एक स्वरूपमें एक एक अक्षर राखत भये और दुइ इच्छा जे प्रथम कहि आये हैं एक वह इच्छा कारणरूपा जब साहब सुरति दियो है तब जो रही है साहब मुख नहीं होनदियो याको बिनशिकै जगत्मुख कियो और दूसरी वह सुरति पाइकै जगत्मुख होइ कै अपने अनुभव ब्रह्मको खड़ाकियो वह ब्रह्म माया शबलित ह्वैगई तौन माया आदिशक्ति गायत्रीरूपा इच्छा सो ये दोनों इच्छा पँचहुन में गुप्तहैं सो कबीरजी कहैहैं कि, हे सुकृत ! चित्तमें चीन्हों मैं वर्णन करौहौं बिचारिकै देखो ये पँचहुन में दोनों इच्छा हैं कि नहीं ये सिगरे ब्रह्म जे सारशब्द के जगत्मुख अर्थ ते भये हैं ते

माया शबलित हैं कि नहीं तुम चीन्हों सो आगे कहै हैं ॥ ६ ॥

दो० योगमया यकु कारनो, ऊजो अक्षर कीन्ह ॥
या अविगतसमरथकरी, ताहिगुप्तकरिदीन्ह ७

कारणरूप सुरति और योगमाया—गायत्री ये जे दुइ इच्छा हैं ते वे पांचों ब्रह्मको करती भई सो सर्वत्र तो यह सुनै हैं कि ब्रह्मते सब होइ है और यहां इनते ब्रह्म होइहै पांचौ यह बड़ो आश्चर्य है यह अविगति समर्थ जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते जब सुरति दियो है तब ये सब भये हैं तिनको गुप्तकरि दियो अर्थात् इनहीं पांचौ ब्रह्ममें और जीवमें नामको अर्थ लगायदियो है ते पँचहुनको बतावै है ॥ ७ ॥

दो० श्वासा सोहं ऊपजे, कीन अमीबन्धान ॥
आठअंश निरमाइया, चीन्हों सन्तसुजान ८

यह सोहं शब्द वह परमपुरुष जो है समष्टिजीव ताके श्वासा ते उपज्यो सोई बतावै है कि सोहं कहे "सः अहं" सो जो है अनुभवगम्य ब्रह्म सो मैंहों और वही आदिपुरुष समष्टि जीव श्वासाते अमीबन्धान करतभयो कि इनकी मिठाई पाइके लोग लोभायजायँ कौन अमीबन्धान करत भयो वही श्वासाते आठ अंश बनावतभये कहे आठौ सिद्धियां निकासतभये आठौ सिद्धियों के नाम "अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा। प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं चाष्टसिद्धयः" अथवा आठ अंश निरमाइया कहे आठ प्रधान ईश्वर प्रकट कियो तेई परम पुरुष समष्टि जीवके मन्त्री भये तामें प्रमाण महातन्त्र में महादेव का वाक्य "काली च कौशिकी विष्णुः सूर्योऽहं गणनायकः। ब्रह्मा च भैरवोप्यष्टौ जीवामात्याः प्रकीर्तिताः १" यह प्रमाण शतानन्दभाष्य में विस्तार कैकैहै सो हे सन्त, सुजानौ! तुम चीन्हत जाउ वह जो सार शब्द रामनाम है सो साहब समष्टि जीव पुरुष को बतायो सो सुन्यो व साहबको न जान्यो धोखा

ब्रह्मरूप आप ह्वैकै वाको औरई जगद्रूप अर्थ निकासिलियो और वह जो सोहं शब्द प्रकट भयो सो संकर्षणहै काहेते कि "सोहं शब्द" जीवमें घटित होइहै कि वह जीव जो है सोई विचार करै है कि सो जो है ब्रह्म सो अहं कहे महींहौं एक और दूसरो कोई नहीं है सो उन्हींको आदिपुरुष व विराट् और हिरण्यगर्भ कहै हैं और सहस्रशीर्षा पुरुष कहै है और ई समष्टिरूपजीव पुरुष है सो वही समष्टिरूपते संकर्षण स्थूलरूप धारण करिकै प्रकटभयो सबको आकर्षण करिकै एक ह्वैरहै ताको संकर्षण कही समष्टि जीव काहेते महाप्रलयमें जब जीव समष्टि जीवै में रहैं हैं और व्यञ्जन मकार पचीसौ वर्ण है सो जीववाचक है ताको अर्थ समष्टि जीव रूप संकर्षण समुझ्यो औरं रामनामकी जो मकार है सो तौ वर्णातीत है पचीसौ वर्ण नहीं है रामनाम के व्यञ्जन मकार में संकर्षण के अंशी जेहैं लक्ष्मण तिनको अर्थ न समुझ्यो वहां पांच ब्रह्म कहि आये हैं सो इहां एक ब्रह्मकी और रामनाम के एकमात्राकी प्राकट्य भई ॥ ८ ॥

दो० तेज अण्ड आचिन्त्यका, दीन्हो सकल पसार॥
अण्डशिखा पर बैठिकै, अधर दीप निरधार ९

अचिन्त्य जो है रामनाम ताको तेज अण्ड जो है रामनाम को रेफ तौने रेफको अर्थ लैकै सर्वत्र पसराइ दियो अर्थात् रेफ अर्धमात्रा को अर्थ परा आद्याशक्ति ब्रह्मस्वरूपा समुझ्यो सो सब जगत् में पसराइ दियो वही माया ते सम्पूर्ण जगत् होत भयो सो वह परा आद्याशक्ति अण्ड जो है ब्रह्माण्ड ताकी शिखापर बैठिकै अधरदीप कहे नीचे के ब्रह्माण्डन को निरधार कहे प्रकाशकरिकै निर्माण करत भई सो वही को योगीलोग ब्रह्माण्डमें प्राण चढ़ायकै वहीब्रह्मज्योति कोध्यान करैं हैं और वही ज्योति में जीव को मिलावै हैं और रेफपदवाच्य ते श्रीजानकीजी हैं सो अर्थ न समुझ्यो इहां दूसरे ब्रह्मकी प्राकट्य भई ॥ ९ ॥

दो० ते अचिन्त्यके प्रेमते, उपज्यो अक्षर सार ॥
चारिअंश निरमाइया, चारिवेद बिस्तार १०

तौन जो अचिन्त्य रामनाम ताके प्रेमते कहे जब वामें प्रेम कियो कि याको समुझै कहाहै तब रामनाममें जोहै रकार तेहिमें जो है लघु अकार तौनेके शक्तिहू अक्षरसार जो है रामनाम सो प्रणवरूपते प्रकट होतभयो ताहीको शब्द ब्रह्मरूप करिकै समुझतभये तौने प्रणवकी चारिमात्रा हैं अकार, उकार, मकार बिन्दुते एक एक मात्राते एक एकवेद भये सो चारिवेद होत भये और सबते परे जे श्रीरामचन्द्रहैं रकारार्थ तिनको न समुझत भये सो याहीमें एकाक्षरौ ब्रह्मकी और शब्दहू ब्रह्मकी प्राकट्य भई सो इहां तीसरे ब्रह्म की प्राकट्य भई १ वहां रकारकी अकारको अर्थ करि आयो यहां रकारार्थ श्रीरामचन्द्रको कहौहौं यह कैसे सो रेफवाच्यते जानकी और श्रीरामचन्द्रते बिलग नहीं होयहै याही अभिप्रायते लघुरकारकी जो अकार तौनेके रेफते सहितै कह्यो है रकारवाच्य श्रीरामचन्द्रको लिख्यो याही प्रमाणके अनुरोध तें वोहू रकारवाच्य श्रीरामचन्द्रको लिखदियो सीताराम बिलग नहीं होयहैं तामें प्रमाण "अनन्या राघवेणाहं भास्करस्य प्रभा यथा" ये जानकीको वचन है "अनन्या हि मया सीता भास्करस्य प्रभा यथा" ये श्रीरामके वचन हैं याही अभिप्राय ते कबीरजी जानकीको वर्णन नहीं कियो श्रीरामही के वर्णन ते जानकी आइगई काहेते सीताराम में भेद है तामें प्रमाण "रामः सीता जानकी रामचन्द्रो नित्याखण्डो ये च पश्यन्ति धीराः" (इति श्रुतिः) ॥ १० ॥

दो० तब अक्षरका दीनिया, नींद मोह अलसान ॥
वेसमरथ अविगतिकरी, मर्मकोइ नहिं जान ११

तब योगमाया अक्षर कहे जो एकाक्षर ब्रह्म प्रणव तत्प्रतिपाद्य जो ईश्वर प्रकट भयो जो जीव ताको नींद मोह आलस्य

देत भई और प्रणव व वेदनते पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाशादिक सब जगत् प्रकट भयो व ताही प्रणव वेदनते सब जीवनके नाम रूप शुभाशुभ कर्मादिक सब वस्तु प्रकट भई अर्थात् वेदही में सब वर्णितहै व सबके नाम रूप वेदही ते निकसे हैं सो प्रणव रकारहीते प्रकट भयोहै और सब अक्षर प्रकट भये हैं ताहीते सब वेद भयेहैं याही हेतु ते प्रणव और वेदहू अविगति समर्थ जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनकी महिमा करी कहे कही जो वेद तात्पर्य करिकै बतावैंहैं तौनेको मर्म कोई न जानत भयो और प्रणव तात्पर्य करिकै श्रीरामचन्द्रहीको कहैं हैं सो अर्थ तापिनी का प्रमाण दैकै लिख्योहै सो मेरे रहस्यत्रय ग्रन्थमें है सो प्रणव अक्षर वेद सब रामनामही ते निकसे हैं सो मेरे मन्त्रार्थ में प्रकट है ॥ ११ ॥

दो० जब अक्षर के नींद गइ, दबी सुरति निर्बान ॥
श्यामबरणयकअण्डहै, सो जलमें उतरान १२

योगमाया में सोय रहे अक्षर कहे नाशरहित जे नारायण तिनको जब योगमाया जगायो नींद गई तब उनको निर्वाण सुरति देत भई काहेते ई जे हैं नारायण तिनको निर्वाणरूप कहे निराकाररूप कैकै अन्तर्यामीरूपते सबके भीतर दबाइ देत भई अर्थात् चेष्टारहित दिव्यगुणविशिष्ट सर्वत्रव्यापक अन्तर्यामी तत्त्वरूप जे निर्वाण नारायण तिनको सबके अन्तर दबाइ देत भई कहे सबके अन्तर्यामी करि देतभई तेई प्रकट होतभये श्याम वर्ण अण्ड कहे चतुर्भुजरूप धारण करिकै जलमें उतरान कहे जलमें रहतभये सो इनके शरीरमें शरीर जे हैं निराकार नारायण तिनको नित्य सम्बन्ध होत भयो सो रकारमें जो है अकार ताको नारायण अर्थ करत भये और भरतवाची जो है अकार सो अर्थ न समुझत भये यहां चौथे ब्रह्मकी प्राकट्य भई ॥ १२ ॥

दो० अक्षर घटमें ऊपजै, व्याकुल संशयशूल ॥

किन अण्डा निरमाइया, कहा अण्डका मूल १३

अक्षर जे नारायण हैं तिनके घटते ऊपजे अर्थात् तिनकी नाभि में कमल होइ है तेहिते ब्रह्मा होइहै ते ब्रह्मा सब जगत् करै हैं तब समष्टि जीव शुद्धते अशुद्ध ह्वैके ब्रह्मा ते उत्पन्न ह्वैके बहुत शरीरधारण करैहैं ते ब्रह्मा जब उत्पन्न भये तब व्याकुल भये और संशय करतभये कि कहां अण्डका मूल है व किसने अण्डा को बनायो है व हम कहांते उत्पन्न भये हैं सो खोज्यो खोजे ना पायो तब तपस्या करत भयो तब नारायण प्रकट भये ते ब्रह्मा ते कह्यो कि तुम जगत् की उत्पत्ति करौ यह कथा पुराणनमें प्रसिद्ध है ॥ १३ ॥

दो० तेहीअण्डके मुख्यपर, लगी शब्दकी छाप ॥
अक्षरदृष्टि से फूटिया, दशद्वारे कढ़ि बाप १४

तौने ब्रह्मरूपी अण्डके मुखपर शब्दकी छाप लगी अर्थात् शब्दब्रह्म जो वेदसार ताको नारायण बताय दियो तौनेको ब्रह्मा जपत भये तब वाहीते प्रकटे जे चारोवेद ते ब्रह्मा के चारिउ मुख ते निकसतभये तौने वेदनको अक्षर जो समष्टिजीवहै सो जगत् मुख दृष्टि कियो अर्थात् जगत्मुख अर्थ देख्यो तब द्वारे ह्वैके वह मायाते शबलित जो ब्रह्महै जाको आगे बाप कहि आये हैं जो शुद्धते अशुद्ध जीवनको कैकै उत्पन्न करैहै सो दश द्वारेते कहे दशौ इन्द्रिनते कढ़त भयो तब इन्द्रिन की विषय ह्वैकै इन्द्री ह्वैके चिदंश ह्वैके चिदाचिदात्मक जगत् होत भयो अर्थात् वेदन को अर्थ जब जगत्मुख देख्यो तब वह जीव चिदचिदात्मक जगत्को धोखा ब्रह्मही देखत भयो सो जगत् तो साहबके लोक प्रकाश को शरीरहै तौने को वेदार्थ करिकै धोखा ब्रह्महो देखत भयो यही धोखाहै तात्पर्य कैकै वेद जो साहबको कहैहै ताको न जानत भये लघु रकार की अकार ते नारायण भये तिनते ब्रह्मा की उत्पत्ति भई सो कहि आये अरु वाहिते जे तो जगत्के उत्पन्न

को प्रयोजन रह्यो सो कहि गये अब फेरि सिंहावलोकन करिकै पञ्चम ब्रह्मकी प्राकट्य कहैहैं ॥ १४ ॥

दो० त्यहितेज्योतिनिरञ्जन, प्रकटेरूपनिधान ॥
कालअपरबलबीर भा, तीनलोकपरधान १५

तेहिते कहे वही रामनामते व्यञ्जन मकारको जो अर्थ करि आयेहैं तामें जो अकार रहीहै ताको महाविष्णु अर्थ करतभये जे विरजाके पार पर वैकुण्ठमें रहेहैं जिनके अंशते रमा वैकुण्ठ-वासी भगवान् भयेहैं सो अञ्जन जो अविद्या माया ताते वे रहित हैं काहेते कि अविद्या माया विरजा के यही पारभर बननहै पै पुराणादिक में सो व्यञ्जन मकारकी अकारको महाविष्णु अर्थ करत भये और वह अकार शत्रुघ्नवाचकहै सो अर्थ न समुझत भये ते अकाररूप महाविष्णुते महाकाल अपरबल बीरभा कहे जेहिते प्रबल बीर कोई नहीं है अथवा अकार जे विष्णुहैं तेई हैं परमबल जिनके सो तीनलोकमें प्रधान होत भयो इहां पाँचों ब्रह्मकी प्राकट्य ह्वै गई ॥ १५ ॥

दो० ताते तीनों देव भे, ब्रह्मा बिष्णु महेश ॥
चारिखानितिनसिरजिया, माया के उपदेश १६

तौने कालते कहे वही कालमें काल पाइ पाइकै एक एक ब्रह्माण्डमें तीन तीन देवता ब्रह्मा, विष्णु, महेश उत्पन्न होतभये सो कोटिन ब्रह्माण्डनमें कोटिन ब्रह्मादिक भये ते मायाके उपदेश ते कहे माया को ग्रहणकरिकै संसारमें चारिखानि जे जीवहैं तिन को सिरजिया कहे उत्पत्ति करत भये सो उत्पत्तिको क्रम ब्रह्माते पहिले कहिआये हैं ॥ १६ ॥

दो० चारिबेद षट्शास्त्रऊ, औ दश अष्ट पुरान ॥
आशादै जगबाँधिया, तीनोंलोक भुलान १७

चारोवेद, छवोशास्त्र और अठारहौ पुराण में माया जोहै सो औरई और फलकी आशा बताइकै औरई और नाना मतन में

लगाइदियो और सम्पूर्ण जगत् बांधिलियो मुख्य अर्थ करिकै साहबको भुलाय दियो ये सब तात्पर्य कैकै साहबको कहैहैं सो साहबको न जानन पाये ताते तीनों लोकके जीव भुलायगये १७॥

दो० लखचौरासीधारमा, तहां जीव दिय बास ॥
चौदहयमरखवारी, चारिबेद बिश्वास १८

चौरासीलाख जो योनिहैंसोई हैं धारा ताहीमें जीवको बास देतभये कहे वही चौरासीलाख योनिरूपी धारामें सब जीव बहे जाइहैं अर्थात् नानारूप धारण करैहैं सो चारिवेदके विश्वासते कहे चारि वेदके मतते नाना मत होतभये "शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता" इत्यादिक नाना देवतनकी उपासना गुरुवालोग बतावतभये वेद जो तात्पर्यकरिके बतावैहै साहबको सो अर्थ न जानतभये औ चौदहो यम जीवकी रखवारी करत भये यह जीव निकसिकै साहबके पास न जान पायो चौदह यमके नाममें प्रमाण ज्ञानसागरको "दुर्गदचित्रगुप्तबरियारा। ईतो यमके हैं सरदारा॥ मनसा मल्ल अपरबल मोहा। कालसैन मकरन्दी सोहा॥ चितचञ्चल औ अन्धअचेता। मृतक अन्ध जो जीतैखेता॥ सूरसिंह औरो क्रमरेखा। भावीतेजकाल का पेखा॥ अधनिद्रा औ क्रोधितअन्धा। जेहिमा जीव जन्तु सब बन्धा॥ परमेश्वर परबल धर्मराजा। पाप पुण्य सबते भल छाजा॥ यह सबयमैं निरञ्जन कीन्हा। लिखनी कागद रचिकै दीन्हा॥ १॥" प्रथम दुर्गद कहैं हैं दुर्ग कहावै कि जो कोई पुण्य करैहै ताको स्वर्ग दैकै पुण्यभोग करावैहै और जो पाप करै है तिनको नरकनमें पापको भुगताइकै क्लिारूपी जो है शरीर सो जीवको देय है याते दुर्गद यम एक और दूसरा चित्रगुप्त जे कर्मनके लेखा करै हैं तीसरा मलिन मन व चौथा मोह व पांचौ कालकी सेनाका मकरन्दी कहे बसन्त ते सहित व छठो अन्ध अचेत जोहै चित्त सो व सातौं मृत्यु भई जो खेतको जीतैहै कहे

सबको मारैहै व आठों सूर कहे अन्धा अर्थात् अशुभकर्मकी रेखा व नवों सिंह कहे समर्थ शुभकर्मकी रेखा व दशौं यमभावी जो कालको पेखाहै कहे जो कर्म होनहारहै सो काल करिकै होइ है अर्थात् कालकी अपेक्षा राखै है व ग्यारहौं अघ कहे पापरूप निद्रा व बारहौं अन्धको देनवारो क्रोध जामें सब जीव जन्तु बँधे हैं व तेरहौं प्रबल परमेश्वर रमावैकुण्ठवासी विष्णु जे शुभाशुभ फलके दाताहैं व चौदहौं धर्मराज यज्ञपुरुष ये चौदहौं यमनिरञ्जन जो आगे कहि आयेहैं विरजापार विष्णुकी सत्ता विना ये सब जड़हैं कार्य नहीं करि सकेहैं वोई लिखनी कागद देहहैं ॥ १८ ॥

दो० आपु आपुसुखसब रमै, एक अण्डकेमाहिं ॥
उत्पतिपरलयदुःखसुख, फिरिआवैंफिरिजाहिं १९

एक अण्ड जो है ब्रह्माण्ड तौनेमें जीव अपने अपने सुखके लिये सब रमैहै कोई मानै है कि हम जीवात्माहैं कोई मानैहै कि हम ब्रह्महैं कोई मानैहै कि हम ईश्वरहैं कोई मानैहै कि हम देवताहैं कोई मानैहै कि हम सेवकहैं कोई मानैहै कि शरीरभर सब कुछहै आगे कछू नहीं है सो विषयही सुख करिलेइ कोई यज्ञादिक करिकै स्वर्ग को सुख चाहैहै और कोई यश चाहैहै कि अपने स्वस्वरूपको प्राप्त होयँ तो हमको अक्षयसुख होय सो जिन जिन मतन करिकै जौन जौन स्वस्वरूप ई मानै है ते इनके स्वस्वरूप नहीं है ये अच्छे सुख काहेको पावै तेहिते इनके जनन-मरण न छूटत भये उत्पत्ति प्रलयमें दुःख सुखको प्राप्त होइहै और फिरि आवैहै फिरि जाइहै ककार—चकार—आदिक जे वर्णहैं तिनमें बुन्दार्थ चन्द्रदेइ तब सानुनासिक ताकी एक मात्रा रामनाममें और है सो याके अर्थ हंसस्वरूपहै सो साहब देइहै सो ना समुझो प्राकृत नाना जीवरूप आपनेको मानिकै नानामतनमें लागिकै संसारी ह्वै गये और रामनाममें छामात्रा हैं तामें प्रमाण "रामनाम महाविद्ये । षड्भिर्वस्तुभिरावृतम् ।

जीवब्रह्ममहानादैस्त्रिभिरन्यं वदामि ते ॥ स्वरेण अर्धमात्रेण दिव्यया माययापि च" (इति महारामायणे) और रामनामको जो अर्थ भलिगयेहैं तामें प्रमाण सब मुनिनको भ्रम भयो श्रुतिन को प्रमाण दै कोई कहै हमारो मत ठीकहै कोई कहै हमारो मत ठीकहै तब सब मुनि वेदन ते पूछ्यो जाइ वेदहू विचारेउ कि सबमें तौ हमारही प्रमाण मिलैहै सो वेदहूको भ्रम भयो तब सब मुनि और वेद ब्रह्माके पास गये तब ब्रह्मा ते पूछ्यो तब ब्रह्मौके भ्रम भयो कि सांच मत सांच साहब कौनहै सो महादेवजी पार्वतीजीते कहै हैं कि तब सबको साहब श्रीरामचन्द्रको ध्यान कियो तब साहब कह्यो कि यह बात सबके आचार्य जे संकर्षण हैं ते जानै हैं तिनके पास सबको पठै देहु वे समझाय देयँगे तब ब्रह्मा की आज्ञा ते सब संकर्षणरूप से शेषके यहां गये सो वेद उहां पूछ्यो संकर्षण ते तब संकर्षण जी एक सिद्धान्त जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको बतायो है रामनाम को यथार्थ अर्थ तौन सदाशिवसंहिता के ये श्लोक हैं "रामनाम्नोऽथमुख्यार्थं भगत्स्वेतत्प्रतिष्ठितम् । विस्मृतं कण्ठमणिवद्वेदाः शृणुत तत्त्वतः १ तात्पर्यवृत्त्या विज्ञेयो बोधयामि विभागतः । रामनाम्नि शुचौज्ञेयाः षण्मात्रास्तत्त्वबोधकाः २ रामनाम्नि स्थितो रेफो जानकी तेन कथ्यते । रकारेण तु विज्ञेयः श्रीरामः पुरुषोत्तमः ३ अकारेण तथा ज्ञेयो भरतो विश्वपालकः। व्यञ्जनेन मकारेण लक्ष्मणोऽत्र निगद्यते ४ ह्रस्वाकारेण निगमाः शत्रुघ्नः समुदाहृतः । मकारार्थो द्विधा ज्ञेयः सानुनासिकभेदतः ५ प्रोच्यन्ते तेन हंसा वै जीवाश्चैतन्यविग्रहाः । संसारसागरोत्तीर्णाः पुनरावृत्तिवर्जिताः ६ दास्याधिकारिणः सर्वे श्रीरामस्य महात्मनः । एततात्पर्यमुख्यार्थादन्यार्थो योनुभूयते ७ सोऽनर्थ इतिविज्ञेयः संसारप्राप्तिहेतुकः " (इति सदाशिवसंहितायांविंशाध्याये वेदान्प्रतिशेषवचनम्) सो जौन नाम साहब बतायो ताके औरई और अर्थ करिकै जीवसंसारी ह्वैगये साहबको न जान्यो ॥ १६ ॥

दो० तेहि पाछे हम आइया, सत्य शब्द के हेत ॥
आदि अन्तकी उतपति, सो तुमसोंकहिदेत२०

इहां कबीर जी कहै हैं कि तेहि पीछे कहे जब संसारकी उत्पत्ति ह्वैगई और जीव नाना दुःख पावन लगे तब साहब जे दयालुहैं तिनके दया भई कि हमतो अपने नाम को उपदेश कियो कि हमारे रामनामको जो यह अर्थ लक्ष्मण जानकी हम भरत शत्रुघ्न हमारे हंसरूप पार्षद् तिनको जानिकै हमारे पास आवै और ये सबजीव संकर्षण आद्या पराशक्ति, शब्दब्रह्म, नारायण, महाविष्णु, जीव इनके पक्ष में रामनाम की छवोमात्रा इनमें लगाइकै और और मतनमें लागिके संसारी ह्वैकै नानादुःख पावन लगे तब रामनामको यथार्थ अर्थ बतावनको हमको भेज्यो सो हम सारशब्द जो है रामनाम ताको सत्य कहे सांच जो अर्थ है ताके बतावनके हेतु हम आये सो आदि अन्तकी उत्पत्ति हम तुम से कहे देयहैं आदि कौन है जो यह उत्पत्ति ह्वैआई संसार भयो और अन्त कौन है जो हम रामनामको सांच अर्थ बतायो सो अर्थ समुझिलेइ साहबके पास जाय वाको संसारको अन्त ह्वैजाइ है फिरि संसार में नहीं आवै है सो यह आदि अन्त की उत्पत्ति हम तुम सों कहिदियो कि यहि भाँतिते जगत् की उत्पत्ति होय है जीवसंसारी होइ हैं और यहि भाँतिते जब रामनामको सांच अर्थ जानै है तब संसारको अन्त ह्वै जाइहै ॥ २० ॥

दो० सातसुरति सबमूलहै, प्रलयहु इनहीं माहिं ॥
इनहींमा से ऊपजै, इनहीं माहिं समाहिं २१

इहां मङ्गलको उपसंहार करै हैं सबकी मूल सात सुरति जे प्रथम वर्णन करि आये हैं सो वे तो सोई सुरति स्थूलरूप सात रूपते प्रकट भई है सात कौन हैं दु इच्छा एक योगमाया एक जगत् को अंकुर कारणरूपा और पांचो ब्रह्मरूपा यई सातौ सब के मूल हैं इनहींते उपजै हैं इनहींते प्रलय ह्वै जाय है कहे नाश

ह्वै ह्वै जाय है और इनहीं में पुनि समाइ है सातो सूरति में प्रमाण साखी शंकरगुष्टकी "निरञ्जन अक्षर अचित, वोहं सोहं जान। औ पुनिमूलअंकूरकहि, सात सूर्त परमान" ॥ २१ ॥

दो० सोइख्यालसमरत्थकर, रहे सो अछपछपाइ ॥
सोई संधि लै आयउ, सोवतजगहिजगाइ २२

सो समष्टिजीव अपनेको समर्थ मानिकै साहबको न जानिकै यह ख्याल करत भयो अछप कहे रामनामके अर्थ में साहब न छपे रहे और सर्वत्र पूर्णरहे साहबके सब सामग्री साहबको लोक साहिबेको रूपवर्णन करिआये हैं जो साहबके लोक को प्रकाश सर्वत्र पूर्णरहा तो साहब पूर्णई रहे सर्वत्र सो जीव रामनाम को और और अर्थ करिकै और और मतनमें लग्यो तेहिते साहब छपायगये साहबको जीव न जानतभये सो तौने संधि लैकै मैं आयों कि जीवते संधि कहे बीच परिगयो है रामनाम को सांच अर्थ भूलिगयो सो जौने संसारमें यह सोवैहै तौनी जगहमें आयो कि मैं याको सोवत ते जगाय देहुं कि जौने २ मतन में तुम लगे हौ सो रामनाम को अर्थ नहीं है ये संसारके देनवारे हैं तुम संसारी ह्वैगये सब स्वप्न देखौ हौ वह अर्थ नाम को मिथ्या है तुम जागिकै रामनामार्थ जे साहब हैं तिनको जानौ ॥ २२ ॥

दो० सात सूर्तके बाहिरे, सोरह संख्यके पार ॥
तहँ समरथको बैठका, हंसनकेर अधार २३

साहब कैसे हैं कि सात सूर्त जे कहि आये तिनके बाहिर हैं और षोडश कला जीवको छान्दोग्य उपनिषद्में तत्त्वमसी के पूर्व लिख्योहै सो इहां कहे हैं कि 'सोरहसंख्यके' कहे सोरहसंख्यक जे जीव हैं अर्थात् षोडशकलात्मक जे समष्टि जीव जे लोकके प्रकाशमें रहे हैं शुद्धरूप तिनके साहब पार हैं सो जहां सोरह-संख्यकहे षोडशकलात्मक जीव हैं तिनके पार वह लोक साहब को है तहां समर्थ जे साहब हैं तिनको बैठकाहै कहे वही लोकमें

रहैहैं समर्थ जो कह्यो सो समर्थ साहिबही हैं जीव समर्थ नहीं है उन्हीं के किये जीव समर्थ होइहै यह आपको झूठही समर्थ मानिलियोहै याही हेतुते जीव संसारी भयो है सो हंसन के आधार तो परमपुरुष श्रीरामचन्द्रही हैं तेहिते जब हंसरूप पावै तब साहबके पास वह लोक में बसै जाय ॥ २३ ॥

दो० घर घर हमसबसों कही, शब्द न सुनैं हमार ॥
ते भवसागर डूबहीं, लख चौरासीधार २४

सो कबीरजी कहैहैं कि घर २ हम सबसों बात कही हमारो कह्यो सांचशब्दको अर्थ कोई नहीं समुझैहै ना सुनैहै ते संसाररूपी सागरके चौरासीलाख योनि जो हैं धारा तामें डूबिजाय हैं ॥ २४ ॥

दो० मङ्गलउतपतिआदिका, सुनियोसन्तसुजान ॥
कह कबीरगुरुजाग्रत, समरथकाफुरमान २५

सो आदिकी उत्पत्ति का मङ्गल हम यह कह्योहै सो हे सन्त, सुजानो !सुनत जाइयो हम आपनो बनायकै नहीं कह्योहै हम यह मङ्गल गुरु कहे सबते श्रेष्ठ और तीनोंकालमें जाग्रत् कहे ब्रह्म मन मायादिकनके भ्रमते रहित ऐसे जे समर्थ सत्यलोकनिवासी श्री रामचन्द्र हैं तिनको फुरमान कहे उनके हुकुमते मैं कह्यों है व सबके पर साहबहैं और साहबको लोकहै तामें प्रमाण आदिवाणी को शब्द "बलिहारी अपने साहबकी, जिन यह जुगुति बनाई । उनकी शोभा केहि बिधि कहिये, मोसों कही न जाई ॥ बिना ज्योतिकी जहँ उजियारी, सो दरशै वह दीपा । निरतेहंसकरैंकौतूहल, वोही पुरुषसमीपा । झलकै पदुम नाना बिधि बानी, माथे छत्रबिराजे । कोटिनभानु चन्द्रतारागण, एक फुचरियन छाजे ॥ करगहि बिहँसि जबै मुखबोलै, तबहंसा सुखपावै । बंशअंश जिन बूझ बिचारी, सो जीवनमुकतावै ॥ चौदहलोकबेदकामण्डल, तहँलग कालदोहाई । लोक वेद जिन फन्दाकाटी, ते वह लोक सिधाई ॥ सात शिकारी चौदह पारथ, भिन्नभिन्ननिरतावै । चारि

अंशजिनसमुझि विचारी, सो जीवन मुकतावै॥ चौदहलोक बसै यमचौदह, तहँलग कालपसारा। ताके आगे ज्योति निरञ्जन, बैठै सुन्नमझारा॥ सोरह षट अक्षर भगवाना, जिन यह सृष्टि उपाई। अक्षरकला सृष्टिसे उपजी, उनहीं माहँ समाई॥ सत्रह संख्यपर अधरदीप जहँ, शब्दातीत बिराजै। निरतै सखी बहूबिधि शोभा, अनहदबाजाबाजै॥ताके ऊपर परमधामहै, भरम न कोई पाया। जो हम कही नहीं कोउ मानै, ना कोइ दूसरआया॥ बेदनसाखी सब जिउ अरुझे, परमधाम ठहराया। फिरि फिरि भटकै आप चतुर ह्वै, वह घर काहू न पाया॥ जो कोइ होइ सत्य का किनका, सो हमका पतिआई। औरन मिलै कोटिकरथाकै, बहुरिकालघरजाई॥ सोरहसंख्यकेआगे समरथ, जिन जगमोहिं पठवाया। कहै कबीर आदिकीबाणी, बेद भेद नहिं पाया"॥२५॥

व मङ्गलको सात सुरति तेई शिकारी व चौदह जे यम पारथ हैं कहै तेऊ शिकारी हैं व चारिअंश चारिवेद तिनको बूझिकै विचारै तौ जीवनका समुझावै का विचारै जे सातौ शिकारी हैं सुरति ते भीतर जीव मृगा के भीतर को शिकार खेलै हैं बाहरते मारै हैं सो आगे निरञ्जन शून्य में बैठाहै जीव पकरबेके रहाशून्य में बैठा निरञ्जनको कस्तोसो सबके ऊपर है वोई सबको बांधे है साहबके इहां नहीं जानपावैहै शून्यमें लगाय देइहै अपनेमें लगाइराखै सोरहखण्डकहै समष्टिजीव सोरह कलात्मक तौनेते उत्पत्ति होइहै सो उनहींमें समाइहै सत्रहसंख्य कहे सत्रहतत्त्व जे सूक्ष्म शरीरमें रहती हैं तेहिके ऊपर अधरदीपिकालोकहै जो मङ्गलमें ज्योतिरूप को वर्णन करिआये हैं सबके ऊपर तहां सूक्ष्म शरीर नहीं पहुँचिसकै है तेहिके ऊपर पात्र दैकै आगे लिखैंगे अर्थात् यह स्पष्ट है धाम और है सो दशमुकामी रेखता प्रमाण "उपक्रमोपसंहारावभ्यासोपूर्वताफलैः। अर्थवादोपपत्तीभलिङ्गंतात्पर्यनिर्णये १" उपक्रम, उपसंहार, अभ्यास, अपूर्वताफल, अर्थवाद, उपपत्ति इहां वस्तु तात्पर्य के वर्णन में लिङ्गकहे बोधकहै॥

उपक्रमको लक्षण यहहै प्रकरणके बिषे प्रतिपाद्य जो वस्तु ताको आदिअन्तके विषय जो है वर्णन सो उपक्रम औ उपसंहार कहावै १ और प्रकरणके बिषे प्रतिपाद्य जो है वस्तु ताको फेरि फेरि जोहै वर्णन सो अभ्यास कहावै है २ औ प्रकरणके बिषे प्रतिपाद्य जो है वस्तु सो औरै प्रमाण करिकै वर्णन में न आवै सो कहावै अपूर्वता ३ प्रकरणके बिषे प्रतिपाद्य जो है वस्तु ताके ज्ञाने करिकै ताकी जो है प्राप्ति सो कहावै फल ४ और प्रकरण में प्रतिपाद्य जो है वस्तु ताकी जो है प्रशंसा सो कहावै अर्थवाद ५ और प्रकरणमें प्रतिपाद्य जो है वस्तु ताको दृष्टान्त करिकै फेरि जो है प्रतिपादन सो कहावै उपपत्ति ६ इहां कबीरजीके बीजकके प्रकरणके आदिमें और आदिमङ्गलमें कहाहै कि शुद्ध जीव साहबके लोकके प्रकाशमें पूर्ण रहे हैं जब साहब सुरति देइ है तब जीव उत्पन्न होइहै यह जीव शुद्धहै साहबको है मन मायादिक यामें नहीं हैं ये बीचही ते भयेहैं मनमायादिक को कारण यामें बनो रह्योहै ताते साहबमें नालगे संसारमुख ह्वैगये जब श्रीरामचन्द्र की प्राप्ति होई तबहीं शुद्धजीव होइ सो साहब हटक्यो सो ना मान्यो मनमाया ब्रह्ममें लगिकै संसारी ह्वै गयो "जीवरूप यक अन्तरबासा। अन्तर ज्योति कीनपरकासा १ इच्छारूप नारि अवतरी। तासु नाम गायत्रीधरी २" यह उपक्रम वाक्यहै और पदनके अन्तमें बिरहुलीहै ॥ बिषहरमन्त्र न मान बिरहुली गाडुरि बोलै और बिरहुली बिषकी क्यारी बोयो बिरहुली जन्म जन्म अवतरे बिरहुली फल यक कनइल डाल बिरहुली कहैं कबीरसचुपाय बिरहुली जो फलचाखहु मोर बिरहुली १ सोबिरहुली में यह लिख्योहै कि तुम तो प्रथम शुद्ध रह्योहै तुमहीं मनमायादिकनको बनायकै फँसि गयेहौ यह उपसंहार भयो और साखिन के आदिमें यह साखीहै "जहियाजन्म मुकताहता, तहिया हतान कोय। छठी तिहारी हौं जगा, तू कहँचलाबिगोय १" और एक पोथीके अन्तमें यह साखीहै "जासोंनाताआदिका, बिसरिगयो

सो ठौर। चौरासीके बशपरे, कहतऔरकेऔर १" सो येहूमें वही बातहै और दूसरी पोथीके अन्तमें यह साखीहै "धोखे २ सबजग बीता, द्वैतअङ्गकेसाथ। कहै कबीर पेड़ जो बिगस्यो, अब का आवै हाथ १" सो येहूमेंवहीबातहै और अट्ठाइस साखी कौनिउँ पोथी में और हैं कौनिउँ पोथी में और हैं तातेदुइसाखी अन्तकी लिख्यो है यह उपक्रमउपसंहारभयो १ और प्रकरणमें यहहै कि श्रीरामचन्द्र को जब जीव जानै तब छूटै सो ग्रन्थभरे में बारबार यही उपदेशहै "लखचौरासी जीव योनिमें, भटकि भटकि दुखपावै। कहैं कबीर जो रामहि जानै, सो मोहिंनीकेभावै १ राम बिनानरह्वैहौ कैसा। बाटमांझ गोबरौरा जैसा २" इत्यादिकबहुतसे वाक्य हैं याते अभ्यास भयो और सगुण जेहैं ईश्वर परमेश्वर अवतार अवतारी सब निर्गुण जो है ब्रह्म जौन मनवचनकेपरे है ताहूते परे नित्य साकेत रासविहारी रामचन्द्र हैं यह अपूर्वता भई "अवधूछोड़हु मन बिस्तारा। सोपदगहौ जाहिते सद्गति, पारब्रह्मतेन्यारा॥ नहीं महादेव नहीं महम्मद, हरि हजरत तबनाहीं। आदम ब्रह्मनाहिं तबहोते, नहीं धूप नहिं छाहीं॥ असी सहसपैगम्बर नाहीं, सहस अठासीमूनी। चन्द्रसूर्यतारागणनाहीं, मच्छ कच्छ नहिं दूनी॥ बेदकिताबसुमृतिनहिंसंयम, नाहिं यमन परसाही। बांगनिवाज नहींतव कलमा, रामौनहींखोदाही॥ आदि अन्तसन मध्य न होते, आतश पवन न पानी। लख चौरासी जीव जन्तुनहिं, साखी शब्द न बानी॥ कहहिं कबीर सुनौहो अवधू आगेकरहुबिचारा। पूरणब्रह्म कहांते प्रकटे, करतिम किन उपचारा १" यह पद यही बीजकग्रन्थको है सो जहां या पद है तहां अर्थ लिख्यो है सो देखिलीजियो यातें अपूर्वताभई और रामनामहीं के जपेते श्रीरामचन्द्रहीके जानेते मनवचन के परे श्रीरामचन्द्ररूप फल की प्राप्ति होइहै यह फल है " इच्छाआहि छत्रपति पासा। छकि किनरहै छोड़िसबआसा॥ मैंतोहींक्षणक्षणसमुझाया। खसम छोंड़िकस आपबँधाया १ ररांरारिरहाअरुझाई। रामकहेदुखदारिद

जाई ॥ ररांकहै सुनौरेभाई । सतगुरुपूछिकै सेवहु आई २" इत्यादिक बहुत से वाक्य हैं यह फल है और अर्थवाद कबीरजी तो साहबके पासके हैं उनको संसारका कौन डर है यह प्रशंसा करै है याते अर्थवादभयो "डरपतअहो यहभूलिबेको राखुयादव-राय । कहकबीर सुनु गोपाल बिनती शरण हरितुवपाय " और प्रकरणमें प्रतिपाद्य जो है कि रामनामैको जानैहै सोई छूटिजाय है औ जे नहीं जानै हैं और औरे मतनमें लगेहैं तेई संसारी होय हैं यह बात दृष्टान्त दैकै रामनामहो को दृढ़कियो है " रामनाम बिन मिथ्या, जन्म गँवाईहो । सेमरसेयसुवाजोजहँड्यो, ऊनपरे-पछिताईहो ॥ ज्यों बिनमादिपगांठि अरथे दै, घरहुंकी अकिल गैवाईहो । स्वादहुउदर भरै जो कैसे, वोसहिप्यास न जाईहो" इत्यादि ककहरामें लिख्यो है यह उत्पत्ति भई येई षट्लिङ्ग हैं जे इन को देखिकै अर्थकरै हैं सो सत्य है जे इनको नहीं जानिकै अर्थकरैहैं वह ग्रन्थको तात्पर्य और है और अर्थकरैहै सो अनर्थ है जैसे बीजकको कोई निराकार ब्रह्ममें लगावैहै कोई जीवात्मा में लगावै कोई नये नये खामिन्द बनाइकै अर्थलगावै है इत्यादि वेमनमुखी अपने अपने मन ते नानामतनमें अर्थलगावै हैं ते अनर्थ हैं अर्थ नहीं हैं वे गुरु जे हैं सबते गुरु परमपुरुष श्री-रामचन्द्र तिनके द्रोही हैं ताते प्रमाण "गुरुद्रोही औ मनमुखी, नारिपुरुष अबिचार । ते नरचौरासीभ्रमहिं, जबलगिशशिदिन-कार १" अरु हम जो बीजक को यह अर्थ करै हैं तामें छइउ लिङ्ग श्रीरामचन्द्र में घटित हैं तेहिते जो अर्थ हम करैहैं अनि-र्वचनीय श्रीरामचन्द्रको प्रतिपादन सोई ठीकहै काहे ते कि जहां भरि प्रभु हैं तिनहूंके प्रभु हैं तौनेमें प्रमाण वाल्मीकीय को "सूर्य-स्यापिभवेत् सूर्यो ह्यग्नेरग्निः प्रभोःप्रभुः" अर्थ जो येई सूर्यमें येई अग्नि में अर्थलगावै तो पुनरुक्ति होय है काहेते जब बड़ो प्रकाश-मान सूर्यको कह्यो तब अग्नि को कहिबे कोहै ताते यह अर्थ है जो कर्मनमें लोकनकी प्रेरणाकरै सो कहावै सूर्य अर्थात् अन्तर्यामी

व सबके आगे रहत भयो याते अग्नि कहावै ब्रह्म सो सूर्य के सूर्य कहे अन्तर्यामी के अन्तर्यामी और अग्नि के अग्नि कहे ब्रह्म के ब्रह्म अन्तर्यामी परिछिन्न है ताते बड़ो ब्रह्म है जो सर्वत्र पूर्ण है और परिछिन्न है ताते बड़ो जाको प्रकाश यह ब्रह्म है जामें सब जीव भरे रहे हैं ऐसो साहबको लोक है सबको प्रभु परब्रह्मस्वरूप ताहूके प्रभु वह लोक के मालिक श्रीरामचन्द्र हैं वह ब्रह्म जोहै सोई मन वचन के परेहै पुनि जाको वो प्रकाश है ब्रह्म सो लोक कैसे मन वचन में आवै साहब तो दुहुनका मालिकहै उन की कहवाई कहाकरे जो कहौ सबके मालिक श्रीरामचन्द्र हैं यह कहतई जाउहौ और कहौ कि मन वचन में नहीं आवै है यह बड़ो आश्चर्य है सो सत्य है ये कबीरहूजी कहै हैं कि रामो नहीं खोदाई काहते रामो नहीं खोदाय हौ कहे हैं "रामै नाम अहै निज सारू। औ सबझूठ सकल संसारू" इत्यादिक बहुत प्रमाण देकै बीजक भरे में रामैनामको सिद्धान्त कियोहै ताही में याको समाधान है और ताही में कबीरजीको बीजकलागे है औरी भांति अर्थ किये नहीं लागे है सो सुनो जो साहब को रामनाम है ताके साधन कीन्हे ते वह मन वचनके परे जो रामनाम ताको साहब देइ है सो वह नाम याके वचन में नहीं आवै है साहिबै के दीन्हेते पावैहै जब याको संसार छूट्यो तब अपने लोक को साहब हंसस्वरूप देइ है तौने हंसस्वरूप में टिकिकै साहबको देखै हैं नामलेइ हैं साहब साहबको नाम साहबको लोक साहबको दियो हंसस्वरूप या प्राकृत अप्राकृत मन वचनके परे हैं तामें प्रमाण "यतोवाचोनिवर्तन्तेयत्परम्ब्रह्मणःपदम्। अतः श्रीरामनामादि न भवेद् ग्राह्यमिन्द्रियैः" और यह रामनामके जपनकी विधि जैसी २ कबीरजी आपने शब्दनमें कह्योहै तेही रीतिते जो जप करै तो रामनाम मन वचनके परे जो आपनो स्वरूप सो याके अंतःकरण में स्फूर्ति करि देयँहैं और साहब को रूप स्फूर्ति करि देयँहैं अर्थात् आपही स्फूर्ति ह्वैजायहैं तामें प्रमाण "नामचिन्ता-

मणीरामश्चैतन्यपराविग्रहः। नित्यशुद्धो नित्ययुक्तो न भिन्नन्नामनामिनः॥ अतः श्रीरामनामादि न भवेद् ग्राह्यमिन्द्रियैः। स्फुरतिस्वयमेवैतज्जिह्वादौश्रवणे मुखे २" सो यही रामनाम जो मन वचनके परेहै ताहीको कबीर जानै "सो जानै जेहि महीं जनाऊं। बांह पकरि लोकै लैआऊं॥ सहज जाप धुनि आपै होई। यह सँधि बूझै बिरला कोई॥ रँग २ बोलै रामजी, रोम रोम राकार। सहजै धुनि लागीरहै, सोई सुमिरणसार॥ ओठकण्ठहालैनहीं, जिह्वा नाहिं उचार। गुप्तबस्तुको जो लखै, सोई हंस हमार" जो हंसरूपमें टिकिकै जपत रहेहैं तौनेमें प्रमाण भक्तमालकी टीकामें श्रीप्रियादासजीने लिख्योहै "बिनै तानो बानो हिय राम मड़रानो" श्रीमहाराजाधिराजरामसिंहबाबा पूछयो है कबीरसाहब कह्यो है "रा अक्षर घट रम्यो कबीरा। निजघरमेरोसाधुशरीरा॥ १" ताते रामनामहीको परत्व बीजकमें है मुक्ति रामनामहीमें है और साधनमें नहींहै यह कबीरजी बीजक भरेमें कह्यो है और अर्थ जे करै हैं ते बीजकको अर्थ नहीं जानैहैं काहेते भागूदास बीजक लैभागे हैं सो बघेलवंश विस्तार में कबीरहीजी कहि दियो है कि अर्थ नहीं जाने हैं तामें प्रमाण "भागूदासकी खबरि जनाई। लैचरणामृत साधु पियाई॥ कोउ आयकह कालि जरिगयऊ। बीजकग्रन्थचोराइलैगयऊ॥ सतगुरु कहँ वह निगुरापन्थी। काह भयो लै बीजकग्रन्थी॥ चोरी करि वह चोर कहाई। काह भयो बड़ भक्त कहाई॥ बीजमूल हम प्रकट चिन्हाई। बीज न चीन्हो दुर्मति ल्याई॥ बघेलवंश में प्रकटी हंसा। बीजकज्ञानकी करी प्रशंसा॥ सबसों पूछी प्रेम हिताई। आप सुरति आपैमें ल्याई॥ बीजक लाय गुफा में राखी। सत्यै कहौं बचन मैं भाखी" सो और २ अर्थ जे कबीरहा करै हैं ते भागूदास और भागूदास के शिष्य प्रशिष्य तें बीजक को बितण्डाबाद अर्थ करिकै कबीरजी के सिद्धान्त को अर्थ जो रामनामहै ताते जीवन को विमुख करि डारयो नरककी राह बताय दियो काहेते दूसरी पोथी तो रही

नहीं वोही पोथी रही तौने को मनमुखी अर्थ करिकै आप बिगरे और शिष्यन प्रशिष्यन को बिगाख्यो जे उनके सत्संग किये ते सब याहीते नाम तो रहै भगवानूदास पै भागूदास कबीरजी कह्यो है और मैं जो तिलक करौंहौं बीजकको सो एकतो साहबके हुकु-मई ते कियोहै सो आगे लिखि आये हैं दूसरे तिलक बनाइ बांधो-गढ़ में आयो तहां बयालिसबंश विस्तार ग्रन्थ देख्यो ताको प्रमाण तिलकमें लिखि दियो है पोथी पन्द्रहसै यकइस के साल की धर्मदासके हाथकी लिखी है और येही पोथी में कबीरजी राजा रामते आगम कहिदियो है "तुमसे दशौ वंश जो हैहैं । सो तौ शब्द हमारो गहिहैं ॥ परमसनेही अनुभव बानी । कथिहैं शब्द लोक सहिदानी २" तेहिते मैं जो अर्थ करौं हौं सोई कबीरजी का सिद्धान्त है और यह ग्रन्थ में चारि साधन करिकै युक्त जो पुरुषहै सो अधिकारी है चारि साधन कौनहैं ? नित्यानित्य वस्तु विवेक १ और इहामुत्रार्थफल भोग विराग २ और दम, शम, उपरति, तितिक्षा और श्रद्धा समाधान ई षट्संपत्ति ३ और मुमुक्षुता ४ नित्यानित्य विवेक का कहावै जीवात्मा नित्य और देह इन्द्रिय आदि दैकै जो संसार सो अनित्य है यहै कहावै नित्यानित्य विवेक और इहामुत्रार्थ फलभोग विराग का कहावै यह लोक के और परलोक के विषे जेहैं स्रक्-चन्दन-वनिता यह आदि दैकै तिनको अनित्यता बुद्धिकैकै तिनते जो है वैराग्य सो इहामुत्रार्थ फलभोग विराग कहावै और लौकिक व्यापारते मन के जो है निवृत्ति सो कहावै शम और बाह्य जे इन्द्रिय हैं तिन की श्रीरामचन्द्र के सम्बन्धते व्यतिरिक्त जो विषय है तेहिते नि-वृत्ति होब जो है सो कहावै दम और श्रीरामचन्द्र को जो ज्ञानहै तेहि पूर्वक उपासनाके अर्थ विहित जेहैं नित्यादिक कर्म तिनको जो है त्याग सो कहावै उपरति और शीत उष्ण आदि दैकै जेहैं द्वन्द्व तिनको जोहै सहब सो कहावै तितिक्षा और निद्रा आ-लस्य प्रमाद इनको जोहै त्याग तेहि पूर्वक मनकै जोहै स्थिरता

सो कहावै समाधान और गुरुवेदान्त वाक्य में अविचल विश्वास सो कहावै श्रद्धा और संसारते छूटिबे की जो है ३ इच्छा सो कहावै मुमुक्षुताई साधना चतुष्टय जामें होय सो कहावै अधिकारी१ और यह जीव साहब को है और को नहीं है यह जो है ज्ञान सो यह ग्रन्थ में विषय है २ और ग्रन्थको विषय सो सम्बन्ध कौन है तात्पर्य करिकै प्रतिपाद्य प्रतिपादकभाव ३ और यह ग्रन्थमें प्रयोजन काहै कि मनमाया और अहंब्रह्म जोहै ज्ञान तौने में बँधा जो है जीव सो मनमाया ब्रह्मते छूटिकै रघुनाथजी को प्राप्त होय सो प्रयोजन ४ जीवको मनमाया ब्रह्मते छोड़ायकै श्रीरघुनाथ जीके पास प्राप्त करिबे को कही अपनी उक्तिते कही साहब की उक्तिते कही मायाकी उक्तिते कही जीवकी उक्तिते कही ब्रह्मकी उक्तिते कबीरजी उपदेश कियोहै और उत्पत्ति प्रकरण कैयो प्रकारते अपने ग्रन्थनमें कबीरजी कह्योहै सो इहां कबीरजी प्रथम रमैनी में आदिकी उत्पत्ति कहैहैं जब कुछ नहीं रह्यो है तब वही साहबको लोक रह्योहै ताही को परम अयोध्या कहै हैं और सत्यलोक सांतानकलोक नापैदलोक आदि दैकै नाना नाम हैं तौने लोक में जे हंस हंसनी हैं गुल्म लता तृणआदि दैकै ते सब चिन्मयहैं और परमपुरुष श्रीरामचन्द्र सबके मालिक हैं तामें प्रमाण "राजाधिराजः सर्वेषां राम एव न संशयः" (इति श्रुतेः) दूसरो प्रमाण "यत्र वृक्षलतागुल्मपत्रपुष्पफलादिकम्। यत्किंचित्पक्षिभृङ्गादि तत्सर्वंभातिचिन्मयम्"(इति वशिष्ठसंहितायाम्)कबीरोजी कह्योहै॥ "सदा बसन्त जहँ फूलहिं कुञ्ज सोहावहीं। अक्षयबृक्षतर सेज सो हंस बिछावहीं॥ धरती आकाशजहां नहीं जगमगै। वहियां दीनदयाल हंसकेसँगलगै" तौने श्रीअयोध्याजीको जो है प्रकाश तामें शुद्धजीव जे हैं ते भरेहैं तिनको साहबको और साहबके लोकको ज्ञान नहींहै जो साहबकोजानै और साहबके लोक जाय तो ना उलटि आवै सो साहबको तो जानै नहींहै याही ते माया उनको धरि लैआवैहै सो प्रथम साहब दयाल उनमें दयाकरिकै

आपनी शक्ति दैकै उनके सुरति उत्पत्ति करतभये कि हमको जानै हमारे पास आवै तो माया ते बचि जाय सो आदिमङ्गल में करि आये हैं जब उनके सुरति भई तब वे धोखा ब्रह्ममें और मायामें लगिकै संसारीभये सो साहब बहुत हटक्यो सो हटक्यो ना मान्यो सो आगे बेलिमें कहैंगे " तू हंसामनमानि कहो रमैया राम। हटल न मान्यो मोरहो रमैया राम । जस कीन्ह्यो तसपायोहो रमैया राम ॥ हमरदोषजनिदेहु हो रमैया राम" और साहब के लोक में मनादिकनको कारण नहीं है तामें प्रमाण "न यत्रशोको न जरा न मृत्युर्न कालमायाप्रलयादिविभ्रमः। रमेत रामेत स तत्र गत्वा स्वरूपतां प्राप्य चिरं निरन्तरम्" (इति वशिष्ठसंहितायाम् १) कबीरोजी कह्यो है "तत्वभिन्ननिहतत्त्वनिरक्षर, मनो प्रेमसेन्यारा । नादबिन्दुअनहदनिरगोचर, सत्यशब्दनिरधारा" और साहबको लोक सबके पार है सो मङ्गल में कहिआये हैं जो साहबको जानै व साहबके लोक जाइ तो ससारमें ना आवै सो तीनै उत्पत्ति श्रीकबीरजी प्रथम रमैनी में संक्षेप ते कहै हैं और सबकी उत्पत्ति साहबके लोकके प्रकाश के बहिरेहीते होइहै तामें प्रमाण ज्ञानसागरको " जानैभेद न दूसर कोई । उतपति सबकी बाहर होई" ॥ १ ॥

इति आदिमङ्गलसम्पूर्णम् ॥

अथ रमैनीप्रथम ॥ १ ॥

चौ० जीवरूपयकअन्तरबासा । अन्तरज्योतिकीनपरगासा १
इच्छारूप नारि अवतरी । तासु नाम गायत्री धरी २
तेहिनारीकेपुत्रतिनभयऊ। ब्रह्माबिष्णुमहेशनामधयऊ ३
तब ब्रह्मा पूंछतमहतारी । कोतोरपुरुषकाकरितुमनारी ४
तुमहमहमतुमऔरनकोई। तुममोरपुरुषहमैंतोरिजोई ५

साखी ॥ बाप पूतकी एकै नारी , औ एकै माय बिआय ॥
ऐसापूत सपूत न देख्यो , जो बापै चीन्है धाय १

चौ.जीवरूपयकअंतरबासा।अन्तरज्योतिकीनपरगासा १

श्रीरघुनाथजीके लोकको जोहै प्रकाश तेहिके अन्तर जेहैं जीव एकहू पते कहे समष्टिरूप ते बास किये रहे अन्तरज्योति कहे साहबके लोकको जोहै प्रकाश तेहिके अन्तरै कहे भीतरै आपनई प्रकाश करतभये अर्थात् सुरतिकी चैतन्यता पाय मनादिक उत्पन्न के संसार प्रकटकै संसारी ह्वैगये साहबको न जानत भये या बात मङ्गलमें विस्तारते कहिआयेहैं याते इहां प्रसङ्गमात्र सूचित कियोहै जब प्रलय होयहै तबहूं वही ब्रह्ममें लीन होइ है उहैंते पुनि उत्पत्ति होइहै और अनुभव धोखा ब्रह्ममें ज्ञान करिकै जे मुक्त होइहैं ते सनातनज्योति जोहै अयोध्याजीको प्रकाश वही ब्रह्म जहां पूर्व लीन रहैहै तहैं जाय लीन होयहै औ जे श्रीरामचन्द्र को जानैहैं ते ज्योति वह भेदिकै श्रीरामचन्द्रके पास जायहैं तामें प्रमाण "सिद्धा ब्रह्मसुखे मग्ना दैत्याश्च हरिणा हताः । तज्ज्योतिर्भेदने शक्ता रसिका हरिवेदनाः" । " जैसे माया मन मिल्यो, ऐसे रामरमाय । तारामण्डल भेदिकै, तबै अमरपुर जाय " और धोखाको अर्थ यहहै जो औरेको और देखे सो कौनहै कि एकजोहै सर्वत्र पूर्ण लोकप्रकाश ब्रह्म ताके अन्तर कहे भीतर अनुरूप जे जीव ते समष्टिरूपते बास कियेरहे सो अन्तरज्योति प्रकाश कहे जब साहब सुरतिदियो सोई अन्तरप्रकाश करतभई तब जीवको ज्ञान परनलग्यो चैतन्यता आई तब संकल्प विकल्प कियो कि मैं कौन हौं यही मनकी उत्पत्ति भई सो जीवको रूप तो " बालाग्रशतभागस्य शतधा कल्पितस्य च । भागो जीवः स विज्ञेयः स चानन्त्याय कल्पते " (इतिश्रुतेः) इत्यादिक प्रमाण करिकै वाको स्वरूप तो अनु है सोतो वाको न देखि पर्यो सर्वत्र प्रकाशरूप ब्रह्म देख्यो सो मान्यो कि मही ब्रह्म हौं यही धोखा ब्रह्महै कही जीव ब्रह्म तो बनैहै जीव कहना यही याकी भूलहै जबयाको ज्ञान भयो ज्ञानते विज्ञान भयो अनुभवानन्द प्राप्त भयो जब भर अनुभवानन्द बनोरहैहै तब भर याको जीवत्वको लेश बनोरहै है

जब अनुभवानन्दरूप ही ह्वैगयो तब याको जीवत्व मिटि गयो संसारऊ मिटिगयो एक आपही आप रहतभयो तुम कैसे कहौ हौ कि जीवको ब्रह्म होना धोखा है जो ऐसो कहौ तौ सुनौ जो पदार्थ बीचको होयहै सो मिटि जायहै और जो पदार्थ सनातन है सो नहीं मिटिजाय है कैसे जैसे तुम कहौहौ कि जीवत्व बीच ही को है वही ब्रह्म अनेकरूप धारण कैलियोहै एकते अनेक होइ गयो है जब जीवत्वको भ्रम मिटिगयो तबब्रह्मही रहिजायहै जो प्रथम रह्योहै सोई रहिजायहै जो पदाई बीचको होय है सो मिटि जायहै तैसे हमहूं कहैहैं कि आदिमें तो जीव रह्यो है सो जब संसार छूट्यो तब शुद्धजीवको जीवही रहिजायहै जो कहो ब्रह्मही जीव ह्वै जाय है तो हम तुमसों या पूछै हैं कि प्रथम तो ब्रह्मही रहत भयो सो ब्रह्म अकर्ता है निर्धर्म है मनमायादिकते रहित है देश, काल, वस्तु, परिच्छेद ते शून्य है सो ऐसे ब्रह्मको जीवत्व को भ्रम कहांते भयो जो कहो वह ब्रह्म जीवत्व को धारण नहीं कियो वाको तो भ्रम ही नहीं है काहेते कि "सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म" यह श्रुतिलिखै है वाको भ्रमतो संभवितै नहीं है भ्रमतो जीवन को भयो है जिन को ब्रह्मको विज्ञान है तिन को न जीवत्व है न संसार है जैसे अज्ञानी जीवन को संसारही देखिपरै है तैसे ज्ञानी जीवनको ब्रह्मही देखिपरैहै तो सुनो तुमहीं दुइजीव कहौहो एक अज्ञानी जीव एक ज्ञानी जीव सो अज्ञानी जीवको या कह्यो कि संसारही देखाय है सो ब्रह्मके तो अज्ञान होतही नहीं है जाते आपको जीवत्व मानिकै संसारीहोय जो कहो मायाते शबलित ह्वैकै ब्रह्मही जीव होइ संसारी ह्वै जायहै तो माया को तो मिथ्या कहौहौ "मायामात्रमिदं...अध्यैः मिथ्यैव" फिरि ब्रह्म को तो ज्ञानस्वरूप कहि आये हौ कि ब्रह्मको माया को स्पर्श नहीं होयहै ब्रह्म जीव नहीं होइ सकै है तो ज्ञानी अज्ञानी जीव और संसार वह ब्रह्म भ्रमकरिकै कैसे भयो जो कहो जीव और संसार था हई नहींहै तो पुराण और कुरान वेदान्त काको उपदेश करै

है तेहिते तुम्हारो समाधान कियो नहीं होय है जीव ब्रह्म कबहूं नहीं होइहै सनातनते जीव भिन्न है और ब्रह्म भिन्न काहेते साहबके लोकप्रकाश ब्रह्म में अनादिकालते समष्टिरूपते जीव रहैहै ताको साहब दयाल दयाकरिकै सुरति दियो कि मोमें सुरति लगावै तो मैं हंसरूप दैकै अपने पास लैआऊं सो अनादि कालते श्रीरामचन्द्रको जनबईन किये या मनादिकनको कारण उनके रहबहीकरे वह सुरतिपायकै संसारी ह्वैगये जो साहबको जानते तो संसार में ना आवते जब मनादिक भये तब अनुभव ब्रह्मको उत्पन्न कियो सो यहतो साहबकोहै सो साहबको ना जान्यो आपहीको ब्रह्म मान्यो यही धोखाहै और जीव सनातनहै सर्वत्र पूर्ण लोकप्रकाशरूप ब्रह्म नहीं होय है वही प्रकाश में अचल समष्टिरूपते भरो रहैहै तामें प्रमाण "नित्यःसर्वगतःस्थाणुरचलोयंसनातनः" (इतिगीतायाम्) और लोकप्रकाश व्यापक ब्रह्म ते जीव ते भेद है तामें प्रमाण "सत्यआत्मा सत्योजीवः सत्यंभिदः सत्यंभिदः" और अज्ञानहूते ब्रह्ममें लीन होय है तबहूं मायाधरिलैआवैहै तामें प्रमाण "येऽन्येऽरविन्दाक्षविमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः। आरुह्य कृच्छ्रेण परंपदं ततः पतन्त्यधोनादृतयुष्मदङ्घ्रयः" (इतिभागवते) तेहिते साहबके लोकप्रकाश में भरे जे जीवहैं तहैं ते व्यष्टि होतहै और तहैं समष्टिरूप करि लीन होत है अनादिकाल यही क्रम है सो जैसो हम वर्णन करि आयेहैं ताही रीतिमें प्रकाशरूप जो ब्रह्महै तामें निर्विकारत्व निर्धर्मत्वादि जे वेदान्तमें विशेषणहैं ब्रह्मके ते बन रहेहैं औरी भांति नहीं संघटित होयहै और प्रकाशरूप जो ब्रह्म है सो निर्विकार है निर्धर्म है अकर्ता है वाकी करी रच्छा जीवकी नहीं होयहै दूनोंते परे जे साहब हैं तिनको जो जानै है जानिकै उनके लोकको जाय है सो फेरि नहीं आवै है वे रच्छा करिलेय हैं काहेते वहां मनमायादिकन की गति नहींहै ॥ तामें प्रमाण "यद्गत्वा न निवर्त्तन्ते तद्धाम परमं मम" और जगत्की उत्पत्ति जो उपनिषदनमें लिखेहै

सो समष्टिरूप जीवही ते लिखे है सो कहै हैं "सदेवसौम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयम्" (इति श्रुतेः) एक कहे सजातीयभेद शून्य अद्वितीय कहे विजातीयभेद शून्य ये अकारते स्वगत भेदशून्य यद्यपि सूक्ष्म भेद वामें बनेहैं परन्तु समष्टिरूप करिके जीव एकही रहैहै प्रलय में अथवा जीवत्व करिकै एक रहैहै यह श्रुतिसद्नाम कैकै कहैहै ताते अनामा जो ब्रह्म है तामें नहीं लगै है और दूजी श्रुति है "स ऐच्छत एकोऽहं बहु स्याम्" तौने जोहै समष्टि जीव सो सुरति पायकै इच्छा करत भो कि एकते बहुत होउँ सो या ब्रह्माष्टि जे समष्टि जीव ताहीमें लगै है और ब्रह्मपद यह समष्टि जीवहीमें घटित होयहै काहेते "बृहि वृद्धौ" यह धातु है व्यष्टिते समष्टि ह्वैजायहै समष्टिते व्यष्टिहोइजायहै और वह जो लोक प्रकाश ब्रह्म एकरस न घटै न बढ़ै तामें "एकोऽहंबहुस्याम्" या अर्थ नहीं लगैहै और अनुभव करि आपनेको जो ब्रह्म मान्यो है सो तो धोखेहै नाम मिथ्येहै सो एकतो समष्टि जीवरूप सगुणब्रह्म तौन और एक लोक प्रकाशरूप निर्गुणब्रह्म तौन ई दूनों ते साहब परेहैं और मङ्गलमें पांच ब्रह्म कहि आयेहैं सो नारायण जे हैं साकार ते और तिनके अन्तर्यामी जेहैं निराकार तत्त्वरूप नारायण तेई दूनों जे साकार निराकार हैं तिनते साहब परे हैं और निराकार साकार ये दोऊ साहब के शरीर हैं तामें प्रमाण "यामिच्छसि महाराजतां तनुं च कवीश्वराः। वैष्णवीं तां महातेजो यद्वाकाशं सनातनम्" (इति बाल्मीकीये) और साहब साकार द्विभुज नराकृतिहै तामें प्रमाण "स्थूलं चाष्टभुजं प्रोक्तं सूक्ष्मंचैव चतुर्भुजम्। परा तु द्विभुजं रूपं तस्मादेतत्त्रयं यजेत्" (इति आनन्दसंहितायाम्) "आनन्दोद्विभुजः प्रोक्तो मूर्त्तश्चामूर्तएवच। अमूर्त्तस्याश्रयो मूर्त्तः परमात्मा नराकृतिः" (इति आनन्दसंहितायाम्) और मुसल्माननके जे अच्छे समुझवारे हैं ते साकारही मानै हैं काहे ते कि कुरान में लिखैहै अल्लाह कहैहै कि महम्मद मोको एकबार जब लड़कामें देखाहै और एकबार मैंने बुलाया मेरे सामने चला

आया दुइकमान ते कम फ़रक रहिगया सो महम्मद देखा याते अल्लाहके सुरतिहैयहआयो और महम्मदकीहदीस खलककलइंसान अल्लाहके सूरतिहीमें बनाया है ईसान अपनी सुरतिका यहिसे या आया कि अल्लाह द्विभुज है याहिसे या मालूम भया कि अल्लाह कहिकै द्विभुज श्रीरामचन्द्रही वर्णन करैहै और जे अल्लाहकी सुरति कहते हैं कि नहीं है कुरानकी जबान नहीं मानते हैं तिनको काफर कहतेहैं और वह जो है निर्गुण सगुणके परे साहब नराकृति सो जाके ऊपर कृपा करैहै ताको आपनो हंसरूप आपनी इन्द्रिय देइ है आपै देखिपरै है तामें प्रमाण "ब्रह्मणैव जिघ्रति ब्रह्मणैव पश्यति ब्रह्मणैव शृणोति" (इति श्रुतेः) और साहब को रूप साकार निराकारते विलक्षणहै याते अरूपीरूप कहैहैं और जैसो यह नामहै तैसो नाम नहीं है वह नाम विलक्षण मन वचन के परेहै याते वाको अनामानाम कहैहैं तामें प्रमाण "अनामासोऽप्रसिद्धत्वादरूपोभूतवर्जनात्" (इति अग्निपुराणे) "अप्राकृतशरीरत्वादरूपी भगवान्विभुः" (इति वायुपुराणे) और साहब के हाथ पांय नहीं हैं निराकार आयो और चलै है ग्रहण करिलेइहै ताते साकार आयो तामें प्रमाण "अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुःसशृणोत्यकर्णः" (इति श्रुतेः) सो ऐसे साहबके लोक प्रकाशब्रह्मको यह जीव ना समुझ्यो कि साहब को लोक प्रकाश है मनते अनुभवकरि वह ब्रह्म आपहीको मानत भयो यही धोखा ब्रह्म है सो जीवपै कहे एकरूपते और कहे समष्टिरूपते जीवलोक प्रकाश के अन्तर में वास कियेरहे सो अन्तरज्योतिकहे सुरतिपाय प्रकाश कीन कहे मतादिक उत्पन्न करि समष्टिते व्यष्टि होबे की इच्छा करत भये सो आगे कहै हैं ॥ १ ॥

इच्छारूपनारिअवतरी । तासुनाम गायत्रीधरी २

आपने को जो धोखा ते ब्रह्म मानिलियो समष्टिरूप जीव ताके जब इच्छा भई सोई मूलप्रकृति माया है तेहिते शबलित ब्रह्मभयो

सो इच्छा माया जब प्रकट भई ताको नाम गायत्री धरावतभये गायत्री तो सूर्यमध्यवर्ती जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको तात्पर्यते बतावै है सो अर्थ तो न ग्रहण करतभये सूर्यके मध्यमें साहबहै तामें प्रमाण "सूर्यमण्डलमध्यस्थं रामं सीतासमन्वितम्" सूर्यप्रतिपादक अर्थ ग्रहण करतभये तेहिते दिन राति संध्या होत भई और ब्रह्मादिक देवता भये सो आगे कहैंगे यह संसारमुख अर्थ समुझ्यो तेहिते गायत्री सबकी उत्पत्ति करत भई जो कहो काहे ते जानौ कि गायत्री के द्वै अर्थ हैं तो सुनो यह वाणी जो है सो सार शब्द जो रामनाम ताको लैके प्रथम प्रकटभई है तामें द्वै अर्थ हैं एक साहबमुख एकसंसारमुख ऐसे प्रणव-निगम-आगम इनमें द्वै द्वै अर्थ हैं एक साहबमुख एक संसारमुख काहेते कि रामनाम ते सब निकसेहैं सो जो कारणमें द्वै अर्थ भये तो कार्य में द्वै अर्थ होवई चाहैं सो संसारमुख अर्थ लैके जीव संसारी होत भये सो यह उत्पत्ति मङ्गलमें विस्तारते लिखिआये हैं ताते संक्षेप इहां उत्पत्ति लिख्यो है ॥ २ ॥

तेहिनारीकेपुत्रतिनिभयऊ। ब्रह्माविष्णुमहेशनामधयऊ ३

तौने गायत्रीरूप नारीके ब्रह्मा, विष्णु, महेश उत्पन्न होतभये तब वह जो गायत्री रूप नारी है ॥ ३ ॥

तबब्रह्मापूछतमहतारी । कोतोरपुरुषकेकरतुमनारी ४

तासों ब्रह्मा पूछत भये कि को तोर पुरुष है काकरि तू नारी है और काके हम पुत्रहैं सो बताउ हम जानो चहैंहैं तब वा नारी कहत भई ॥ ४ ॥

तुमहमहमतुमऔरनकोई । तुममोरपुरुषहमैंतोरजोई ५

प्रथम साहबके लोकप्रकाशमें अनादिकालते साहबते विमुखता रूप जो जगत्को कारण तेहिते सहित जीव समष्टिरूप वास कियेरह्यो तिनके ऊपर साहब दया कियो कि अबोध सुषुप्ति ऐसे में परे हैं इनको सुखको अनुभव नहीं है यह जानि साहब विचार्यो

कि हम इनको सुरति देयँ जेहिते हमको जानि लेइ तौ मैं हंसरूप देकै आपने धामको बोलाय लेउँ सो जब साहब सुरति दियो तब चैतन्यता भई अर्थात् स्मरण भयो यही चित्तकी उत्पत्ति है और वाको रूपतो अनु है सोतो आपनो देखै नहीं है संकल्प विकल्प करै है कि मैं हौं कि नहीं हौं यही मनकी उत्पत्ति है फिरि विचास्यो कि मैं हौं तो पै कौन हौं आपनो रूपतो देखै नहीं है फिरि निश्चय कियो कि जो मैं होतो न तो यह संकल्प विकल्प काको होतो याते मैं हौं यही बुद्धि की उत्पत्ति भई जौने लोक प्रकाश में अपार है ताको देखि मानत भयो कि सत् चित् आनन्द स्वरूप सो मही हौं यही अहंब्रह्मरूप अहंकारकी उत्पत्ति है सो जब समष्टिजीव आपनेको चिद्रूप ब्रह्म मान्यो तब वही पूर्वजगत् कारणरूप योगमाया अर्थात् साहब ते विमुखतारूपा सो स्थूलरूप ते चिद्रूपा योगमाया लागी तब आपनेको सच्चिदानन्द ब्रह्म मानिकै एकते अनेक होवेकी इच्छा कियो अर्थात् समष्टिते व्यष्टि होवेकी इच्छाकियो तबसाहब जान्यो कि समष्टिजीव आपने को सच्चिदानन्द ब्रह्म मानि संसारी होनचहै हैं तब सार शब्द जो रामनाम ताको दियो कि याको अर्थ समुझि हमको जानै तो हम हंसस्वरूप दै आपने धामको लैआवैं सो रामनाम को अर्थ साहब मुखतो न समुझ्यो जगत्मुख अर्थ लगाय रामनामकी जे षट् मात्रा हैं तिनते पांच मात्रा ते पांच ब्रह्म प्रकट कियो छठीं मात्रा को अर्थ जीवको हंसस्वरूप है सो न जान्यो वाहीको जीवको अर्थ करि समष्टिते व्यष्टि ह्वै गयो सो समष्टि ते व्यष्टि होवेवाली जो इच्छा है सोई गायत्रीरूपा माया है तेहिते ब्रह्मादिक देवता भये सो प्रथम शुद्ध जीव आपनेको ब्रह्म मानि अशुद्ध ह्वैगये हैं याही हेतु ब्रह्मको कोई जगत् को निमित्त कारण कहै हैं कोई निमित्त उपादान कारण कहै हैं याही ते या ब्रह्म अशुद्ध जीवन को बाप है सोतो धोखई है गायत्री कैसे बतावै कि प्रथम ब्रह्मासों कि तिहारा बाप है ताते यह कहै हैं कि प्रथम तुम रहे तिनके इच्छा

हम हैं अत्र हम तुम कहे हमते तुम भये और तो कोई हई नहीं है तुमहीं हमार पुरुष हौ हमैं तुम्हारि जोई हैं अर्थात् जब तुम शुद्धते अशुद्ध भयेहौ तब चित अचितरूपा जो माया हमहैं तिन हींते शबलित ह्वै उत्पन्न भयो है तबहूं हम तुम्हारी नारी रही हैं और अबहूं सरस्वती आदिक तुमको देयँगे ते हमहीं हैं याते तुमहीं पुरुष हौ हमहीं नारी हैं ॥ ५ ॥

साखी ॥ बापपूतकी एकैनारी, औ एकैमाय बिआय ॥
ऐसापूतसपूतनदेखौं, जो बापै चीन्हैं धाय ६

बापतो धोखा ब्रह्म है जाते शुद्ध जीव अशुद्ध ह्वै उत्पन्न भये हैं ते अशुद्ध जीव पूत हैं सो दोऊ माया शबलित भये ताते बाप पूतकी एकै नारी भई और पूर्व जगत् कारणरूपा जो माया है तौनहींते "अहं ब्रह्मास्मि" मान्यो है और तौनेहींते व्यष्टि जीवन की उत्पत्तिहू भई है याते दोहुनकी एकै महतारी है याते एकै माया बियानी है सो ऐसा पूत सपूत नहीं देखहु है कौनसो बाप जो है ब्रह्म ताको धायकै कहे बहुत बुद्धि दौरायकै चीन्है कि यह धोखाहै अब जाकी शक्ति करिकै यह जगत् भयोहै जौनी भांति ते सो समेटिकै सिंहावलोकन कैकै पुनि कहै हैं ॥ ६ ॥

इति प्रथमरमैनी समाप्तम् ॥ १ ॥

अथ दूसरीरमैनी ॥ २ ॥

अन्तर ज्योति शब्द यकनारी । हरि ब्रह्मा ताके त्रिपुरारी १
ते तिरियै भग लिङ्ग अनन्ता । तेउन जानैं आदिउ अन्ता २
बखरी एक बिधातैं कीन्हा । चौदहठहर पाटि सो लीन्हा ३
हरि हर ब्रह्म महन्तौ नाऊं । ते पुनि तीनि बसावलगाऊं ४
ते पुनि रचिनिखण्ड ब्रह्माण्डा । छः दरशन छानवे पखण्डा ५
पेटहि काहु न बेद पढ़ाया । सुनतिकरायतुरुकनहिंआया ६
नारी मोचित गर्भ प्रसूती । स्वांग धरे बहुतै करतूती ७
तहिया हम तुम एकै लोहू । एकै प्राण बियापल मोहू ८

एकै जनी जना संसारा । कौन ज्ञानते भयो निनारा ९
भा बालक भग द्वारे आया । भग भोगेते पुरुष कहाया १०
अविगतिकीगति काहु न जानी । एकजीभकितकहौंबखानी ११
जो मुख होय जीभ दशलाषा । तौकोइ आइ महन्तौभाषा १२
साखी ॥ कहहिं कबीर पुकारिकै, ईलयऊ व्यवहार ॥
रामनाम जाने बिना, भवबूड़िमुवासंसार १३

अन्तरज्योतिशब्द यकनारी । हरिब्रह्मा ताके त्रिपुरारी १

अन्तरज्योति कहे वह ज्योतिके अन्तरकहे भीतरै नारी जोहै गायत्रीरूप वाणी सो शब्द जो है रामनाम ताको लैकै प्रकट भईहै सो मङ्गल में कहि आयेहैं तौने शब्दकी शक्ति ते तानारी के हरि ब्रह्मा त्रिपुरारी भयेहैं अर्थात् रामनामको जगत् मुख अर्थलैकै वहै वाणीरूप नारी वेद शास्त्र और सब संसार प्रकट कियो रामनाम में ये सब भरेहैं सो मैं अपने मन्त्रार्थ में लिख्यो है सो रामनाम में जो साहबमुख अर्थहै ताको छिपाय दियो ॥ १ ॥

तेतिरियैभगलिङ्गअनन्ता । तेउ न जानैंआदिउअन्ता २

तीन जो है तिरिया ताते अनन्त भग लिङ्ग होत भये अर्थात् बहुत स्त्री पुरुष भये ते अनेक शास्त्रन में अनेक वेदन में विचार करत २ तबहूं वह रामनाम के अर्थ को अन्त न पाये ॥ २ ॥

बखरीएकबिधातैंकीन्हा । चौदहठहरपाटिसोलीन्हा ३

एक बखरी यह ब्रह्माण्ड ब्रह्मा बनावत भये सो चौदह ठहर कहे चौदह भुवन करिकै पाटि लेते भये ॥ ३ ॥

हरिहरब्रह्म महन्तौ नाऊ । तेपुनि तीनिबसावलगाऊ ४

और हरिहर ब्रह्मा जौन ब्रह्माण्ड प्रथम ब्रह्मा बनायो है वोही ब्रह्माण्डमें तीनि गांव बसावत भये तहांके मालिक होत भये और जे प्रथम ब्रह्मादिक देवताभयेहैं तेई ब्रह्मादिकन के अङ्गन के देवता होत भये सो मङ्गलमें लिखि आयेहैं ब्रह्मादिकनकी उत्पत्ति और पुनि भगवान्‌की नाभी में कमलभयो तेहिते ब्रह्मा भये हैं तिनते

उत्पत्ति भई है और ब्रह्मवैवर्त्तौंमें प्रथम ब्रह्माकी उत्पत्ति प्रकृति पुरुषके अङ्गन ते भईहै और पुनि भगवान्की नाभीमें कमल भयो है जो मङ्गल में कहि आये हैं तेहिते ब्रह्मा भये हैं तिनते उत्पत्ति भई है और तीनै बात या रमैनीहू में कहेहैं कि पहिले इच्छारूपी नारीते ब्रह्मादिकभये और पुनि ब्रह्माण्डान्तरानुवर्ती ब्रह्मादिकभये ते सतोगुणाभिमानी जे विष्णु ते ऊपर देवलोक बसावत भये ते ताके मालिक और रजोगुणाभिमानीजे ब्रह्माते मध्यके लोक बसाये ते तहां के मालिक और तमोगुणाभिमानी जे महादेव ते नीचेके लोक बसाये ते तहां के मालिकहोतभये सो ये तीनौं तीनलोकके मालिकै हैं परन्तु तीन तीन लोकनकी प्रधानता दिखाईहै ॥ ४ ॥

ते पुनिरचिनिखण्डब्रह्मण्डा। छःदर्शन छानवे पखण्डा ५
पेटहिकाहु न बेदपढ़ाया। सुनतिकरायतुरुकनहिंआया ६

ते तीनौं देवता मिलिकै ब्रह्माण्ड में छःदर्शन छानवे पाखण्ड बनावत भये "योगी जङ्गम सेवरा, संन्यासी दुरवेश। छठयें कहिये ब्राह्मण, छाघर छा उपदेश॥ दशसंन्यासी बारहयोगी, चौदह शेषबखाना। बौध अठारहि जङ्गम अठारहि, चौबिस सेवरा जाना" और प्रथम उत्पत्ति में कहि आये हैं ब्रह्मा, विष्णु, महेश ते यह ब्रह्माण्डके ऊपर अपने लोक बसाये फिर एक २ अंशते अनन्त कोटि ब्रह्माण्डन में बसे जाय ५ और पेटैते कोऊ वेद नहीं पढ़ि आया कह गायत्री नहीं पढ़्यो बरुवा नहीं भयो और न पेटैते सुनति करायकै तुरुक बनि आया है ताते हिन्दू तुरुक को जीव एकई है सो तो ना जान्यो वेद किताब की वाणी सुनिकै अपने २ कर्मते सब अनेक भेद ह्वैगये वेद किताबको भेद न जान्यो ॥६॥

नारीमोचित गर्भप्रसूती। स्वांगधरै बहुतै करतूती ७
तहिया हम तुमएकै लोहू। एकै प्राण बियायल मोहू ८

गर्भवासमें जब तुम रहे हो तब न हिन्दूए रह्यो है ना तुरुक रह्यो न वेद पढ़्यो न तिहारी सुन्नति भईजब गर्भ ते निकसे तब

कर्म करिकै हिन्दू मुसल्मान ह्वै गये वहै नारी जो है वाणी ताही में चित्त लगाय कै कर्म करिकै नाना स्वांग हिन्दू मुसल्मान भये ७ सो कबीरजी कहै हैं कि जैसे हम शुद्ध हैं तैसे तुमहूं शुद्ध रहे हौ जब तुमहीं मन प्रकट कियो है और इच्छा भई है तब हम तुम एकही लोहू रहेहैं अर्थात् एकईजाति चित्त स्वरूप शुद्ध रहेहौ सो एक मोह कहे भ्रम जो है मन सो व्याप्त ह्वैकै नाना भांति तुम को कराइ दियो कि हम हिन्दू हैं हम तुरुकहैं इत्यादिक सबसों॥८॥

एकै जनी जना संसारा। कौन ज्ञानते भयो निनारा ९
भा बालक भगद्वारे आया। भगभोगेते पुरुष कहाया १०
अविगतिकीगतिकाहुनजानी।एकजीभकितकहौंबखानी ११

एक जनी कहै उत्पत्ति करनहारी माया और एकै जना कहे उत्पत्ति करनहार मनका अनुभव ब्रह्म माया शबलित इनहीं ते सब जगत् है तुम कौन ज्ञानते हिन्दू तुरुक नानाजाति बनायलिये निनार निनार ९ जब भगके द्वारे आया तब बालक कहाया और जब भोगन लग्यो तब पुरुष कहाया १० अविगति जो है धोखा ब्रह्म ताकी गति कोई नहीं जानै है मैं एक जीभते केतो बखानिकै कहौं ॥ ११ ॥

जोमुखहोइजीभदशलाषा। तौकोइआयमहन्तौ भाषा १२

जो एक मुख में लाख जीभ होयँ तो कोई कहे महन्त वही ब्रह्मको भाषै अर्थात् न भाषै यह काकु अर्थ है काहेते कि वाके तो कुछ रूप रेखा हुई नहीं है धोखही है अथवा महत् जे ब्रह्मादिक अपने २ लोकके मालिक जिन जगत् की उत्पत्ति कियो है तिनके कर्तव्यता को जो काहूके दशलाख जीभ होयँ कहै तो का कहि- सकै अर्थात् नहीं कहिसकै ॥ १२ ॥

साखी ॥ कहहिंकबीर पुकारिके, ई लयऊ व्यवहार ॥
रामनाम जाने बिना, भवबूड़ि मुवा संसार १३

कबीरजी पुकारिकै कहै हैं कि या जो उत्पत्ति वर्णन करिआये

सो सब लय कहे नाशवान् है औऊ कहे वह धोखा ब्रह्मको जो व-र्णन करि आये सो व्यवहारैमात्र है अर्थात् समुझेते धोखही है कुछ वस्तु नहीं है सो एक विना रामनामके जाने कहे साहब को जो बतावै है रामनाम सो अर्थ बिनजाने माया को बतायो जोहै रामनाम में संसार और ब्रह्मा को अर्थ तौनैहै भव कहे भयंरूप समुद्र तौनेमें संसार बूड़ि मुवा इहां लक्षणा है संसार बूड़ि मुवा कहे संसारी जीव बूड़ि मुये ॥ १३ ॥

इति दूसरी रमैनी समाप्तम् ॥ २ ॥

अथ तीसरी रमैनी ॥ ३ ॥

चौ० प्रथमअरम्भ कौनकेभाऊ । दूसर प्रकट कीन सो ठाऊ १
प्रकटे ब्रह्म विष्णु शिव शक्ती । प्रथमै भक्ति कीन जिव उक्ती २
प्रकटि पवन पानी औ छाया । बहु बिस्तारकै प्रकटी माया ३
प्रकटे अण्ड पिण्ड ब्रह्मण्डा । पृथिवी प्रकटकीन नवखण्डा ४
प्रकटे सिध साधकसंन्यासी । ये सब लागिरहे अबिनासी ५
प्रकटे सुर नर मुनि सबझारी । तेऊ खोजि परे सबहारी ६
साखी ॥ जीव सीव सब प्रकटे, वे ठाकुर सब दास ॥
कबिर और जानै नहीं, एक रामनामकी आस ७

प्रथम अरम्भ कौनके भाऊ । दूसर प्रकट कीन सो ठाऊ १
प्रकटे ब्रह्मविष्णुशिवशक्ती । प्रथमैभक्तिकीन जिवउक्ती २

प्रथम अरम्भ कौनके भाऊ कहे भयो और दूसर कौन प्रकट कियो जाते ये सब व्यवहार हैं १ प्रथम अनुमान समष्टिजीव कियो मनके अनुभव ते ब्रह्म भयो और वाणी भई ताते ब्रह्मा, विष्णु, महेशादिक देवता प्रकटभये उनकी सब शक्तियां प्रकटभई और प्रथमही जीवै जोहै सो अपनी उक्ति करिकै उक्त देवतनकी भक्ति करत भयो अर्थात् नाना उपासना बांधिलेत भये ॥ २ ॥

प्रकटिपवनपानीऔछाया । बहुबिस्तारकैप्रकटीमाया ३

प्रकटेअण्डपिण्डब्रह्मण्डा । पृथिवीप्रकटकीननवखण्डा ४

वे जे ब्रह्मादिक हैं ते अपनो अपनो करतब करतभये तेहिसे पवन पानी और छाया बहुत विस्तार कैकै माया प्रकटभई और चारि जे खानिहैं अण्डज, पिण्डज, स्वेदज, उद्भिज्ज प्रकट भये जे ब्रह्माण्ड में हैं और नवखण्ड पृथ्वी प्रकट भई ॥ ३ । ४ ॥

प्रकटेसिधसाधकसंन्यासी । येसबलागिरहेअबिनासी ५

प्रकटेसुरनरमुनिसबझारी । तेऊखोजिपरे सब हारी ६

और सिद्ध साधक संन्यासी प्रकट होतभये ये सम्पूर्ण जेहैं ते अविनाशी में लागिरहे हैं अर्थात् अविनाशीको खोजे हैं ५ औ सुर नर मुनि सब झारिकै प्रकट होत भये तेऊ अविनाशी को खोजत खोजत हारि परे तिनहूं न पायो ॥ ६ ॥

साखी ॥ जीव सीव सब प्रकटे, वे ठाकुर सबदास ॥
कबिर और जानै नहीं, एकरामनामकी आस ७

जीव और सीव कहे ईश्वर सो सब प्रकटे सो ईश्वर तो ठाकुर भयो और सब जीव दास भये सो कबीरजी कहै हैं कि हमतो दूसरो काहूको नहीं जानै हैं न अविनाशी निर्गुण ब्रह्मको जानैं न सगुण ईश्वरन को जानैं निर्गुण सगुण के परे जे श्री रामचन्द्र हैं तिनके एक रामनामकी हमारे आशा है कि वही हमारो उद्धार करैगो ॥ ७ ॥

इति तीसरी रमैनी समाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ चौथी रमैनी ॥ ४ ॥

चौ० प्रथमचरणगुरु कीनबिचारा । करता गावै सिरजन हारा १
कर्म्म करिकै जग बौराया । शक्ति भक्तिलै बांधिनिमाया २
अद्भुतरूप जातिकी बानी । उपजी प्रीति रमैनी ठानी ३
गुणिअनगुणीअर्थनहिंआया । बहुतकजनेचीन्हिनहिंपाया ४
जो चीन्है तेहि निर्मल अङ्गा । अनचीन्हे नल भये पतङ्गा ५

साखी ॥ चीन्हि चीन्हि कहि गावहू, बानी परी न चीन्हि ॥
आदि अन्त उत्पति प्रलय, सब आपुहि कहिदीन्हि ६

प्रथमचरणगुरुकीनबिचारा । करता गावै सिरजनहारा १
कर्मै करिकै जग बौराया । शक्तिभक्तिलैबांधिनिमाया २

प्रथमचरण कहे जगत्की आदिमें गुरु कहे साहब विचार कीन कहे सुरति दीन कि हमको जानै हम हंसरूपदै आपने धामको लै आवैं सो जीव जे हैं ते वा चैतन्यता पाय जगत् मुख ह्वै जगत् उत्पन्न करिकै संसारी ह्वैगये सो करता तो साहबहैं जिनकी चैतन्यता पाय जीव समष्टिते व्यष्टिभये तौने साहबकी कर्तव्यता तो न जान्यो ब्रह्मादिक आपहीको सिरजनहार मानतभये १ तेई ब्रह्मादिक नानाकर्मनको प्रतिपादन करिकै जगत् बौरायदियो और शक्ति जो है गायत्री तौने के उपदेशकी विधि कैकै ताकी भक्ति आप कैकै और जीवनको करायकै माया में बांधदियो ॥ २ ॥

अद्भुतरूप जातिकी बानी । उपजीप्रीति रमैनी ठानी ३
गुणिअनगुणीअर्थनहिंआया।बहुतकजनेचीन्हिनहिंपाया ४

अद्भुतरूप और नानाजाति की जो है कर्मप्रतिपादक ब्रह्मादिकनकी वाणी अर्थात् अद्भुतरूपनके हैं ध्यान जिनमें कहे काहू के बहुत मूड़ काहूके बहुत हाथ काहूके बहुत पांय यहि रीति के देवतनकी उपासना करै हैं और नाना जातिकी कहे नाना तरहकी है उपासना वर्णन जिनमें ऐसी उनकी वाणी सुनके तिन तिन देवनपर जीवनकी प्रीति उपजतभई और रमैनीठानी जो कह्यो सो अपने अपने उपास्य देव गुणी जे हैं सगुण उपासनावाले ते जीवको स्वस्वरूप दासरूपता खोजनलगे और अनगुणी जे हैं निर्गुणवाले ते जीवको अनुमान जो ब्रह्मस्वरूपता खोजन लगे सो वा वेदतात्पर्यार्थ दुइमें कोई नहीं पाये अर्थात् बहुतेरे जने बहुत विचार कियो परन्तु न चीन्हपायो ॥ ३४ ॥

जो चीन्है तेहि निर्मल अङ्गा । अनचीन्हेनलभये पतङ्गा ५

जे यह धोखाको जानैहैं कि यह धोखा है तिनहीं को जानिये कि इनके पारख है यह बात बिना जाने जगत्के जे जीव हैं ते जैसे दीपक में पतङ्ग जरिजाय है ऐसे वह धोखा में परिकै नाना दुःख पावे हैं और जो कोई साहबको चीन्हे है जाको नेति नेति वेद कहै हैं और पारिख करै हैं ताके निर्मल अङ्ग ह्वैजायहैं अर्थात् हंसरूप पावैहैं काहेते कि वह साहब तो निर्गुण सगुण मन वचनके परेहै सो जब वाको चीन्ह्यौ तब वाहू मनवचनके पर ह्वै जायहै ॥५॥

साखी ॥ चीन्हि चीन्हि कह गावहू, बाणीपरी न चीन्हि ॥
आदिअन्तउत्पतिप्रलय,सबआपुहिकहिदीन्हि६

चीन्हो चीन्हो तुम कहा गावहुहो अर्थात् कहा कहौहो वह वाणी तो तुमको चीन्हि नहीं परी काहेते वाणी आपही कहतजाय है कि जाकी उत्पत्ति होय है ताकी प्रलयभी होय है जाकी आदि होय है ताको अन्तहू होयहै ताते जेते पदार्थ जगत्में वाणी आदि दैकै हैं ते मन वचनके परे नहीं हैं और जो चीन्है है ताको निर्मल अङ्ग होयजायहै यह जो कह्यो ताते यह देखाय दियो कि जब मनादिक एको नहीं रहिजाय हैं तब मन वचन के परे जो पुरुष है सो वह मुक्तजीवको हंसरूप देइ है ताको पायकै तेहि हंसरूप के इन्द्रिन ते साहबको देखैहैं सो याको प्रमाण वेद में है "मुक्तस्य विग्रहो लाभः" (इति कठशाखायाम्) सो यह विचार नहीं करैहैं वाणी के फेरमें ब्रह्महूं भूलिगये सो आगे कहैं हैं ॥ ६ ॥

इति चौथी रमैनी समाप्तम् ॥ ४ ॥

अथ पांचवीं रमैनी ॥ ५ ॥

चौ० कहँलौं कहौं युगनकी बाता । भूले ब्रह्म न चीन्हे त्राता १
हरि हर ब्रह्मा के मन भाई । बिबिअक्षरलै युगति बनाई २
बिबिअक्षरकाकीन बिधाना । अनहदशब्दज्योतिपरमाना ३
अक्षर पढ़ि गुणि राहचलाई । सनकसनन्दन के मनभाई ४

बेद किताब कीन बिस्तारा । फैलगैलमन अगमअपारा ५
चहुँयुग भक्तन बांधलबाटी । समुझि न परै मोटरीफाटी ६
भैं भैं पृथ्वी चहुँदिशि धावै । अस्थिरहोय न औषध पावै ७
होयभिस्तजोचित न डोलावै । खसमैंछोड़िदोजखको धावै ८
पूरब दिशा हंसगति होई । है समीप सँधि बूझै कोई ९
भक्तौ भक्तिनि कीन शृंगारा । बूड़िगये सबमाँझहिधारा १०

साखी ॥ बिनगुरु ज्ञानैद्वन्दभो, खसमकही मिलिबात ॥
युग युग कहवैया कहै, काहु न मानी जात ११

कहँलोंकहौंयुगनकीबाता । भूले ब्रह्म न चीन्हे त्राता १
हरि हर ब्रह्माके मनभाई । बिबिअक्षरलै युगति बनाई २

युगनकी बात मैं कहांलों कहौं मन वचनन के परे जो है ताकी बाट ब्रह्मौं भूलिगयेहैं जो बाट हाठ होयहै तो यह अर्थ है और जो त्राता पाठ होय है तो यह अर्थ है कि सबके त्राता कहे रक्षक जो साहब ताको ब्रह्मा भूलिगयेहैं १ जौन रामनामको अर्थ जगत्मुख लैकै वाणी और समष्टिजीव आदि जगत् रच्योहै तौने युगति ब्रह्मौं विष्णु महेशके मन में भावत भई सो दूनों अक्षर रामनाम को लैकै रचत भये ॥ २ ॥

बिबिअक्षरकाकीनबिधाना।अनहदशब्दज्योतिपरमाना३
अक्षरपाढ़िगुणिराहचलाई । सनकसनन्दनकेमनभाई ४

ओई जे द्वै अच्चर हैं तिनको विधान करतभये कहां विधान कियो को बन्धान करदेते भये अनहदशब्द ज्योति तिनते प्रमाण है कि ज्योतिरूपी जो है आदिशक्ति रेफरूप अग्निबीज जाको मण्डलमें पांच ब्रह्ममें लिख्योहै ताहीते अनहद शब्द उठै व मनमें जो कुछ कहनेकी वासना आई चित्तमें सो मूलाधारकी जोहै ज्योति तौनेमें मन मिल्यो कहे संकल्प उठ्यो तब वह ज्योति डोली ताते कछु पवनको संचारभयो ताते नादकी प्रकटता भई तब वह वाणी उठी सो पश्यन्ती मध्यमा है त्रिकुटीके ऊपर मकार है बिन्दुरूप

तहां टक्करपायवैखरी ये तीनरूप ह्वैकै बाहरको आई और योगी सो जहां अग्निको और पवनको संयोग होय है तहां जो शब्द होयहै सो अनहद कहावै है सो वह वाणी जो बाहर आई सो सम्पूर्ण अक्षर भे तौने पढ़ि गुणिकै सनक सनन्दन जे जीव हैं तिन के मनमें भावत भई अथवा सनकसनन्दनादिक जे ब्रह्माके पुत्र तिनके मनमें भावत भई सो वहै राह चलावत भये ॥ ३ । ४ ॥

बेद्किताबकीन्हबिस्तारा । फैलगैलमनअगमअपारा ५

तेई अक्षरनको लैकै वेद किताब कुरान पुरान जे हैं तिनको विस्तार करतभये सो सबके मनमें फैल गैल कहे फैलजात भई अर्थात् जाकेमनमें जौन गैलनीकीलगी सो चलतभये सो वह गैल तो भूलहीगये बहुतगैल ह्वैगई अपनेअपने मतनकी अपनी अपनी गैलकहे हैं कि यही सिद्धान्त है तेहिते नानासिद्धान्त ह्वैगये जो सिद्धान्त है ताको तो पावै नहीं वेदादिकनको कुरानादिकनको कहनलगे कि अगमहै अपारहै काहे ते कि नाना मतहैं तिनमें वेद कुरान को प्रमाण सबमें है सो एक सिद्धान्तमें निश्चय काहूकी न होत भई अथवा अगम अपार जो धोखा ब्रह्म है ताहीमें अपनो अपनो सिद्धान्त करते भये सो वह तो अगम अपार है काहूको मिलबइ नहीं कियो ॥ ५ ॥

चहुँयुगभक्तनबांधलबाटी । समुझिनपरैमोटरीफाटी ६
भैं भैं पृथ्वीचहुँदिशिधावै । अस्थिरहोयनऔषध पावै ७

चारिहुयुगके नानादेवतनके जे भक्तहैं ते अपनी अपनी राह बांधत भये तबहूं वह सिद्धान्त न समुझि पर्‍यो काहेते कि बहुत राह ह्वैगई रामनामके संसार मुख अर्थ में है तो सब मत बनेही हैं परन्तु साहबमुख जो अर्थ है रामनाम को ताको भूलही गये भरमको जो है मोटरी सो फटी कहे पण्डित भये पढ़े भरम नाशकी उपायकरनलगे अर्थात् शास्त्रन के अर्थ विचारनलगे यही थोरो पढ़िबोहै सोई वह राह तो पाई नहीं बहुतराह ह्वैगई तब नाना

प्रकारकी शङ्काउठी भरम फैलिरह्यो नानाशास्त्रन के सिद्धान्तन में वेद को प्रमाण सबहीमें मिलेहै काको सांच कहैं काको असांच कहैं ताते शास्त्रन में एको सिद्धान्त न करिसके ६ तब जीव जेहैं ते भैं भैं पृथ्वी में चारो ओर भ्रमन लगे खोजन लगे एकहु मतको सिद्धान्त नहीं पावै हैं सो यह रोगकी औषध जो साहब को जानैहै ताही बिरले सन्तमें हैं सो तो पावत न भये और औरमें लगे ताते अस्थिर न होत भये ॥ ७ ॥

होयभिस्तजोचितनडोलावै । खसमैंछोड़िदोजखकोधावै ८
पूरब दिशा हंसगति होई । है समीप संधि बूझै कोई ९

जो चित्त न डोलावै सुधर्ममें चलै तो भिस्त जो स्वर्ग सो होय है अथवा जौने जौने देवतनकी उपासना करै है तिनके लोक जाय है अथवा यज्ञपुरुषकी आराधना करिकै स्वर्ग जायहै औ खसम कहे मालिक ऐसे जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको भुलाइकै सब जीव दौरै हैं मुक्ति कहांते होय दोजख जो नरक है ताहीमें परै हैं इहां स्वर्गहूको नरकही मानिकै कहै हैं काहेते कि खसमके भूले जो स्वर्गहू जायगो तो दुःखही पावैगो आखिर गिरिही परैगो ८ पूर्व दिशा कहे सबके पूर्व जब शुद्धजीव रह्योहै कहे जब शुद्धहैकै अपने स्वस्वरूपको चीन्है तब साहब हंसस्वरूप देय है सो वा साहब को विचार कर्मके बाहिरे है सो याकी जो संधिहै कहे विचार है सो समीपही है जो अपने स्वरूपको चीन्है तो साहब हंसरूप देवै करै परन्तु कोई बूझत है ॥ ९ ॥

भक्तौभक्तिनि कीन शृंगारा । बूड़िगयेसब माँझहिधारा १०

ज्ञान मिश्रावाले जे भक्तहैं ते भक्तिनि जो माया तेहिते शृंगार करतभये कहे विचार करतभये कि हमहीं ब्रह्महैं वह मनकी धारा में बूड़िगये कहां बूड़े कि यह सब मिथ्याहै यह कहत कहत एक अनुभव सिद्धान्त राख्यो सो अनुभव जीव को है ताते मनते भिन्न नहीं है वही मनकी मांझ धारा में बूड़िगये अथवा

साहबको छोड़िके जे नाना देवतनके भजन करै हैं ते भक्त भक्तिनि कहावै हैं ते साहब को तो न जान्यो श्रृङ्गार करतभये कहे नानावेष बनावतभये कोई अछिद्रनाकों की ओर चन्दन दियो कोई मृत्तिका दियो कोई राख लगायो इत्यादिक नानावेष बनावत भये ते सब संसाररूपी समुद्रकी मांझ धारामें बूड़िगये ॥ १० ॥

साखी ॥ बिनगुरुज्ञानै द्वन्दभो, खसमकही मिलिबात ॥
युगयुग कहवैया कहै, काहु न मानी जात ११

खसम जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते मिली बात कही कहे अपनो रामराम बतायो तामें द्वै अर्थ रह्यो एक साहबमुख एक संसारमुख सो आदि मङ्गल में लिखि आये हैं सो सबते श्रेष्ठ गुरु साहब तिनको ज्ञान तो नहीं भयो संसारमुख अर्थ ग्रहण कियो ताते द्वन्दकहे जन्म मरण दुःख, सुख, स्त्री, पुरुष, ज्ञान, अज्ञान इत्यादिक संसार में होत भयो सो कबीरजी कहै हैं कि युगयुग में कहनहार जो मैंहौं कबीर सो कह्यो मेरी कही बात काहू सों नहीं मानी जात है ॥ ११ ॥

इति पँचई रमैनी समाप्तम् ॥ ५ ॥

अथ छठी रमैनी ॥ ६ ॥

चौ० बर्णहुँ कौनरूप औ रेखा । दूसर कौन आय जो देखा १
औ ओंकार आदि नाहिं बेदा । ताकर कहौं कौन कुलभेदा २
नहिं तारागणनहिं रविचन्दा । नहिंकछुहोतपिता के बिन्दा ३
नहिंजलनहिंथलनहिंथिरपवना । कोधरैनामहुकुमकोबरना ४
नाहिंकछुहोतदिवसअरुराती । ताकरकहहुं कौनकुलजाती ५
साखी ॥ शून्य सहज मनस्मृतिते, प्रकट भई यकज्योति ॥
बलिहारी तापुरुष छबि, निरालम्ब जो होति ६

बर्णहुँ कौन रूप औ रेखा । दूसर कौन आय जो देखा १
औ ओंकारआदि नहिं बेदा । ताकरकहौंकौनकुलभेदा २

वह जो अनिर्वचनीय है ताको कौन रूप रेखा वर्णनकरौं मैंहीं नहीं वर्णन करि सकौंहौं तो दूसर कौन आय जो देख्यो १ प्रणव को वेदहू नहीं जानै हैं काहेते कि प्रणव एकाक्षरब्रह्म वेदनको आदि है सो तौ प्रणवहू नहीं रह्यो ताहूको आदि है उसको कौन कुल भेद कहौं ॥ २ ॥

नहिंतारागणनहिंरविचन्दा। नहिंकछुहोतपिताकेबिन्दा ३
नहिंजलनहिंथलनहिंथिरपवना। कोधरैनामहुकुमकोबरना ४
नहिंकछुहोतदिवसअरुराती। ताकरकहहुंकौनकुलजाती ५

न तारागण न सूर्य न चन्द्रमा न पिता को बिन्दु एकौ नहीं रहे जाते सब उत्पत्ति है ३ पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश ये एकौ नहीं रहे तहां कौन नाम धरतभये व काको हुकुम वर्णन करत भये ४ और तहां न दिवस होत भयो न रात्रि होत भई ताकी कौन कुलजाति कहौं ॥ ५ ॥

साखी ॥ शून्यसहजमनस्मृतिते, प्रकटभई यकज्योति ॥
बलिहारी तापुरुषछबि, निरालम्ब जो होति ६

सहजशून्य जो प्रकाश देखिपरै ब्रह्म ताके मनके स्मरणते एक ज्योति प्रकट होय है सो सालम्ब है योगीजन ब्रह्माण्ड में देखै हैं और वह जो अनुभव ब्रह्म है सोऊ सालम्ब है काहेते कि वाहूको मन करिकै अनुभव होय है सो कबीरजी कहै हैं कि ये दोऊ सालम्ब हैं कि तिनकी बलिहारी मैं कहां जाऊं सबके मालिक निरालम्ब परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनकी छबिकी मैं बलिहारी जाऊं हौं साहबनिरालम्ब काहेते हैं कि जीवकी जेती सामग्री हैं मनआदिक इन्द्रियन करिकै ज्ञानकरिकै अनुभव करिकै साहब न देखे जायहैं न जाने जायहैं जब आपही अपनो हंसरूप देय हैं तब वह रूप करिकै देखेजायहैं और आपही ते जाने जाय हैं तामें प्रमाण "सो जानै जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हैं तुम्हैं ह्वै जाई ॥

तुम्हरी कृपा तुम्हैं रघुनन्दन । जानहिं भक्त भक्ति उरचन्दन १ ” (अर्थ) हे श्रीरामचन्द्र ! जाको तुम जनाइ देहुहौ सो जानै है जो कहो हमारे ही जनाये कैसे जानैगो वेद्शास्त्र तो सब जनौते है तो एक बड़ो अवरोध है जब तुम्हारे जानबे के लिये शम दमादिक कियो हृदय शुद्ध भयो तब आप ही को मानैहै कि महीं राम हौं सो तुमको कैसे जानि सकै या हेतुते तुम्हारी कृपैते तुमको जानै है जब तुमने वाको हंसरूप दियो तब वह पांचो शरीर ते भिन्न ह्वैके हंसरूपमें स्थितभयो वह हंसस्वरूप कैसो है तुम्हारी अनिर्वचनीयासभक्तिरूप जो चन्दन है सो वाके उरमें लग्यो है ताकी शीतलता ते वह धोखा ब्रह्मके ज्ञानकी गरमी नहीं आयसकै है जिनको कृपा करिकै तुम हंसरूप देहुहौ सो जानै है तुमको सो ऐसे जे साहब हैं परमपुरुष निरालम्ब तिनको कबीरजी कहै हैं कि मैं बलिहारी जाउँहौं परमपुरुष श्रीरामचन्द्रही हैं तामें प्रमाण “धर्मात्मा सत्यसंधश्च रामो दाशरथिर्यदि । पौरुषे चाप्रतिद्वन्द्वः शरो मे हन्तु रावणिम्” (इति बाल्मीकीये) लक्ष्मणजी ने मेघनादके मारत में शपथ कियो है कि जो पौरुषमें अप्रतिद्वन्द्वी श्रीराम होयँ कहे पुरुषत्वमें वैसो दूसरा न होय तो हमारो बाण मेघनाद का शिर काटिलेइ सो मेघनादको शिर काटिलियो और भागवतहूमें है “ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिवविरंचिनुतं शरण्यम् । भृत्यार्तिहं प्रणतपालभवाब्धिपोतं वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् १ ” (अर्थ) हे महापुरुष ! तिहारे चरणारविन्द की हम वन्दना करैहैं कैसे तिहारे चरणारविन्द हैं कि सब कालमें ध्यानकरिबेके योग्य हैं और परिभव जो तिरस्कार ताके नाश करनेवाले हैं अर्थात् जो कोई ध्यानकरै है ताको तिरस्कार लोक में कोई नहीं करै है और मनोवाञ्छित पूर्ण करनेवाले तीर्थ जे हैं तिनके आश्रयभूत और शिव विरंचि ते स्तुति करेगये व शरण्य कहे रक्षाकरनेमें समर्थ और दासनके पीड़ाहरनेवाले व दीननके पालनेवाले और संसारसमुद्र के नौकारूप तामें प्रमाण कबीरजी

को "साहब कहिये एकको, दूजा कहा न जाय । दूजा साहब जो कहै, बादवितण्डै आय ॥ ६ ॥

इति छठवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ६ ॥

अथ सातवीं रमैनी ॥ ७ ॥

जीवमुख-जहियाहोतपवननहिंपानी । तहिया सृष्टिकौनउतपानी १
तहिया होत कली नहिं फूला । तहिया होत गर्भ नहिं मूला २
तहिया होत न बिद्या बेदा । तहिया होत शब्द नहिं खेदा ३
तहिया होत पिण्ड नहिं बासू । नाधर धरणि न गगन अकासू ४
तहिया होत गुरू नहिं चेला । गम्य अगम्य न पन्थ दुहेला ५
साखी ॥ अविगातिकी गति क्या कहौं, जाके गाँव न ठाँउ ॥
गुण विहीना पेखना का कहि लीजै नाँउ ६

जहियाहोतपवननहिंपानी । तहियासृष्टिकौनउतपानी १
तहियाहोतकलीनहिंफूला । तहियाहोतगर्भनहिं मूला २

जहिया कहे जेहि समय सृष्टि नहीं रही जेहि समय न पवन रह्यो न पानी रह्यो तब सृष्टिको कौन उत्पन्नकियो १ न तब कली रही न फूल रह्यो अर्थात् न बाल रह्यो न वृद्ध रह्यो न गर्भ रह्यो न गर्भको मूलबीज रह्यो ॥ २ ॥

तहिया होत न बिद्या बेदा । तहियाहोतशब्दनहिंखेदा ३
तहियाहोतपिण्डनहिंबासू । नाधरधरणिनगगनअकासू ४
तहियाहोतगुरूनहिंचेला । गम्यअगम्यनपन्थदुहेला ५

न वेद रह्यो न चौदहौ विद्या रहीं न शब्द रह्यो न खेद कहे दुःख रह्यो ३ न पिण्ड रह्यो न पिण्डमें जीवको बास रह्यो न अधर कहे पाताल रह्यो न धरणि रही न आकाश रह्यो ४ न गुरु रह्यो न चेला रह्यो न गम्य कहे सगुण रह्यो न अगम्य कहे निर्गुण रह्यो और दुहेला कहे दूनों पन्थ नहीं रहे ॥ ५ ॥

साखी॥अविगतिकीगतिक्याकहौं,जाकेगाँउनठाँउ॥

गुणबिहीना पेखना, का कहि लीजै नाँउ ६

वह जो अविगति कहे अव्यक्त जो नहीं प्रकट होय धोखा ब्रह्म है निराकार ताके गाँउ ठाँउ नहीं है वह गुण करिकै विहीन जो निर्गुण है ताको पेखना कहे देखिबे को का कहिकै नामलीजै कि यह है वातो कुछ वस्तु ही नहीं है ॥ ६ ॥

इति सातवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ७ ॥

अथ आठवीं रमैनी ॥ ८ ॥

चौ० तत्त्वमसी इनके उपदेशा। ईउपनिषद कहै सन्देशा १
ऊनिश्चयउनके बड़भारी। वाहिकिवरणकरैअधिकारी २
परमतत्त्वकानिजपरमाना। सनकादिकनारदसुखमाना ३
याज्ञवल्क्यऔजनकसँवादा। दत्तात्रयीवहै रसस्वादा ४
वहै वशिष्ठ राममिलि गाई। वहै कृष्णऊधवसमुझाई ५
वहै बात जो जनक दृढ़ाई। देहै धरे विदेह कहाई ६
साखी॥ कुलअभिमानाखोयकै, जियतमुवा नहिं होय॥
देखत जो नहिं देखिया, अदृष्टकहावै सोय ७

तत्त्वमसी इनके उपदेशा। ई उपनिषद कहै संदेशा १

तौने धोखा ब्रह्मको जौनी रीतिते गुरुवालोग उपनिषद्को प्रमाणदैकै प्रतिपादन करै हैं सो और सांच जो अर्थ है सो कबीरजी दोऊ तात्पर्य करिकै देखावै हैं "तत्त्वमसी" जो श्रुति उपनिषद्को उपदेश ताको गुरुवालोग संदेश ऐसो कहैहैं संदेश कौन कहावै है कि बात को पूर्वापर नहीं समुझै वाकी कहनूति वासों कहिदेइ जो संदेशको हेतुपूछै कि कौने हेतुते कह्यो है तो वह कहै हैं कि संदेश कहि दियो यह नहीं जानैहैं कि कौन हेतु ते कह्योहै सो ऐसे गुरुवालोग श्रुति को तो पूर्वापर जानै नहीं हैं अक्षरमात्र को अर्थ करै हैं कि तत्त्व ब्रह्मत्व असि तौन ब्रह्मत्वही है सो जीवही को अनुमान तो ब्रह्म है जीव ब्रह्म कैसे होयगो ब्रह्म तो ज्ञानस्वरूप है शुद्ध है माया कैसे धरिलावती अज्ञानी कैसे होतो तो

गुरुवा लोग कहै हैं कि वा अतर्क है तर्क न करो सो श्रुतिको अर्थ यह है कि पूर्व षोड़शकलात्मक जीव को कहिआये हैं ताही को कहै हैं कि "त्वम् असि" तौन षोड़शकलात्मक जीवते है षोड़श कला तोहीं में हैं तो उनते भिन्न हैं शुद्ध है यह जीवको स्वरूप लखायो सो नहीं समुझै हैं सो या बात मेरे तत्त्वमस्यर्थवाद में विस्तारते है ॥ १ ॥

ऊनिश्चयउनकेबड़भारी । वाहिकिबरणकैरैअधिकारी २

ऊ कहै वह जो धोखा ब्रह्म है ताहीकी निश्चय उनके बड़ीभारी है वाहीकी वरण कहै वही धोखा ब्रह्म को अधिकारी जे चेला हैं तिनको वरणकैरै है अर्थात् अंगीकार करायदेइ है परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको नहीं जानै है जे जानैहैं तिनको कहै हैं ॥२॥

परमतत्त्वकानिजपरवाना । सनकादिकनारदसुखमाना ३
याज्ञवल्क्यऔजनकसँवादा । दत्तात्रयीवहैरसस्वादा ४

परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको निजते पर मानत भये याही हेतुते सनकादिक और नारद जे हैं ते सुख जानत भये अर्थात् सुखी होत भये भाव यह है कि जे कोई परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को अपने ते पर मानै हैं तेई सुखी होय हैं ३ और फिरि कहै हैं याज्ञवल्क्य और जनकको संवाद भयो है सो याज्ञवल्क्य कह्यो जो परमतत्त्व श्रीरामचन्द्र सो जनकजी जान्यो है और वही तत्त्व दत्तात्रयी चौबीसगुरुबनाय संसार ते वैराग्यकैकै तात्पर्य वृत्ति ते जान्यो है ॥ ४ ॥

वहैवशिष्ठरामामिलिगाई । वहैकृष्णऊधवसमुझाई ५
वहै बात जो जनक दृढ़ाई । देहै धरे विदेह कहाई ६

वही परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको मिलिकै गाय कहे कहिकै वशिष्ठजी जान्यो है और वही परमतत्त्व तात्पर्यवृत्ति करिकै कृष्णचन्द्र ऊधवको उपदेश कियो है ५ वही परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको दृढ़स्मरण कैकै देहै धरे जनकजी विदेह

कहावत भये इहां है जनक जो कह्यो सो वा वंश में एक जनक नाम करिकै राजा भये हैं तेहिते विदेह होत आये ॥ ६ ॥

साखी ॥ कुल अभिमानाखोयकै, जियत मुवा नहिं होय ॥
देखत जो नहिं देखिया, अदृष्ट कहावै सोय ७

ऐसे जे परमतत्त्व श्रीरामचन्द्रहैं तिनको जानि आपनो कुलाभिमान खोयकै कहे त्यागिकै जियते मुवा असनाभये अर्थात् हंसस्वरूप में टिकिकै पांचौ शरीरते भिन्न ना भये देखत जो ना देखै सो अदृष्ट कहावै सो परमतत्त्व जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको वेद, पुराण, कुरान, शास्त्र, महात्मा इनके द्वारा देखतऊहैं और जिनको वर्णन करिआये सनकादिक महात्मनको उद्धार है गयो यहौ देखतऊ हैं समस्त दृष्टिते परन्तु ये मूर्ख जीव गुरुवालोग ना जानै तेहिते अदृष्ट कहावै हैं कहे आँधरे कहावै हैं परमतत्त्व श्रीरामचन्द्रहीहैं तामें प्रमाण "राम एव परंतत्त्वं श्रीरामो ब्रह्मतारकम्" (इति हनुमदुपनिषदि) जो यह कहौ शुक सनकादिक येऊ न जान्यो तो अब को जानैगो नास्तिकपना आवै वस्तु मिथ्या होय है ताते साधु तो जानतई हैं जिनको साहब जनाय दियो है कबीरोजी कहै हैं "ध्रुवप्रहलादउबारिया, सोहरिहमरेसाथ । हम को शंकाकछुनहीं, हम सेवैं रघुनाथ" ॥ ७ ॥

इति आठवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ८ ॥

अथ नवीं रमैनी ॥ ९ ॥

चौ० बांधे अष्ट कष्ट नौ सूता । यमबांधे अञ्जनि के पूता १
यमकेबाहन बांधिनिजनी । बांधे सृष्टि कहांलौं गनी २
बांधे देव तेंतीस करोरी । सुमिरतबन्दि लोहगैतोरी ३
राजासुमिरै तुरिया चढ़ी । पन्थीसुमिरि नामलै बढ़ी ४
अर्थबिहीना सुमिरै नारी । परजा सुमिरैपुहुमीझारी ५
साखी ॥ बँदि मनाय फल पावहीं, बन्दि दिया सो देव ॥
कह कबीर ते ऊबरे, निशि दिन नामहिं लेव ६

चौ० बांधे अष्ट कष्टनौसूता। यमबांधे अञ्जनिके पूता १

अष्ट जे अष्टाङ्गयोग हैं और कष्ट जो विज्ञान है तेहिते बांधि गयो धोखा ब्रह्म को विज्ञानरूप कष्ट है तामें प्रमाण "अव्यक्ता- हिगतिर्दुःखंदेहवद्भिरवाप्यते" (इति गीतायाम्) "श्रेयःश्रुतिं भक्तिमुदस्य ते विभो क्लिश्यन्ति ये केवलबोधलब्धये। तेषामसौ क्लेशल एव शिष्यते नान्यद्यथा स्थूलतुषावघातिनाम्" (इति भागवते) और नौ सूतकहे सगुना जो नवधा भक्ति है तेहि करिकै बांधिगयो और यमकहे दुइ विद्या और अविद्या तेहिकरिकै अञ्जनी जो माया ताके पूत जे जीव हैं ते सब बांधि गये ॥ १ ॥

यमकेबाहनबाँधिनिजनी। बाँधेसृष्टिकहांलौंगनी २
बाँधे देव तेंतीस करोरी। सुमिरतबन्दिलोहगैतोरी३

और यम जे विद्या अविद्या दूनों माया हैं तिनके सब जीव वाहनभये काहेते कि उनहींको ढोवन लगे उनहींकी चाल चलन लगे और वै जे दूनों माया हैं ते बांधिनिजनी कहे फेरि फेरि जीवन को उत्पन्न करिकै संसार दैकै बांधि लियो और शीशमें चढ़ी रहती हैं सो अनादि कालते बँधी जो सृष्टि ताको कहांलौं गनी २ तेंतीसकोटि देवता बांधेगये तिनको सुमिरतमात्रहीमें बन्दि कहे लोहेकी बेड़ी में परिकै तोरी कहे मारेगये अथवा तेंतीसकोटि देवता बांधिगये तिनके सुमिरत में का बन्दिलोहेकी बेरी जीव तोरि गये नहीं तोरिगये ॥ ३ ॥

राजासुमिरै तुरियाचढ़ी। पन्थीसुमिरि नाम लै बढ़ी ४
अर्थविहीना सुमिरैनारी। परजासुमिरै पुहुमीभारी ५

तुरीया अवस्था को नाम है तामें ज्ञानीलोग चढ़ी कहे आरूढ़ ह्वैकै राजित होयहैं ताहीते राजा कहे हैं ते अहंब्रह्मको सुमिरै हैं और पन्थी जे अनेकपन्थ चलावनवालेहैं ते नानामतके पन्थ में आरूढ़ ह्वै अपने अपने इष्टदेवनके नाम लैकै साधन में बढ़ेहैं सो यहो विरहीहैं ४ अर्थविहीना कहे अर्थ जो है द्रव्य ताको वैराग्य

ते त्यागि वन में बासिकै अपने इष्टदेवनको सुमिरै हैं ते और पर जो ब्रह्म है तामें जो जाथो चहै सारी पुहुमी सहित सुमिरै है अर्थात् सर्वत्र ब्रह्महीं देखैहै ते ये दोऊ सगुण निर्गुण उपासक नारी जो माया है ताही को सुमिरै हैं काहेते कि जहांलौं मन जाय है तहांलौं सब माया है ॥ ५ ॥

साखी ॥ बँदिमनायफलपावहीं, बन्दिदियासो देव ॥
कह कबीर ते ऊबरे, निशिदिननामहिंलेव ६

बन्दि कहे विद्या अविद्यारूप जो बेरी ताको जे मनावै हैं ते तौने फल पावैहैं अर्थात् जे स्वर्गादिक की चाह करै हैं ते लोहेकी बेरीमें परे जे "अहंब्रह्मास्मि" माने ते सोने की बेरी में परे सो जौने इष्टदेवतनको मनाये सो बन्दीही फल देतभये अथवा बन्दि में नाय कहे बन्दिमें डारिदिये हैं तेई फल पावै हैं अर्थात् स्वर्गादिक जे फलहैं ते सब बन्दिमें डारनवारे हैं सो बन्दि डारनवारो जे फल देय हैं ते का देव हैं नहीं हैं देव सो कबीरजी कहैहैं कि जे श्रीरामचन्द्र को नाम निशिदिन लेयहैं तेई उबरै हैं ॥ ६ ॥

इति नवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ९ ॥

अथ दशवीं रमैनी ॥ १० ॥

चौ० राही लै पिपराही बही । करगी आवत काहु न कही १
आई करगी भो अजगूता । जन्म जन्म यम पाहिरे बूता २
बुतापहिरयमकरै पयाना । तीनलोकमें कीन समाना ३
बांधे ब्रह्मा विष्णु महेशू । पार्वती सुत बांध गणेशू ४
बँधेपवन पावक नभनीरू । चन्द्र सूर्य बांधे दोउ बीरू ५
सांचमन्त्र बांधे सबझारी । अमृत बस्तु न जानै नारी ६
साखी ॥ अमृत बस्तु जानै नहीं, मगनभये कित लोग ॥
कहहिं कबिर कामोनहीं, जीवह मरण न योग ७

राही लैपिपराहीबही । करगीआवतकाहु न कही १

राही कहे सुराहके चलनवाले और पिपराही कहे पीपरकी ब-निका की नाईं अनेक मति में डोलनवाले जे जीव ते राही जे हैं तिनहूं को लैकै संसारसागर में बहतभये करगी बूड़ा को जल जो छिटकैहै ताको कहैहैं सो यह माया ब्रह्मको जो धोखारूप बूड़ा है ताके आवतमें काहु न कहो कि या धोखाब्रह्ममें न परो बूड़ि जाउगे ॥ १ ॥

आई करगी भो अजगूता। जन्मजन्मयमपहिरेबूता २

जब करगी आई तब अयुक्ति होत भई कैसी भई कि जन्म जन्म कहे जबजब ब्रह्माण्डन की उत्पत्ति भई तब तब यम पहिरे बूता कहे यमको काल निरञ्जन जे हैं तिनको बूता कहे पराक्रम काल पहिरत भयो अर्थात् काल तो जड़ है निरञ्जनै को पराक्रम लैकै जीवनको मारै है ॥ २ ॥

बुतापहिरियमकीनपयाना। तीनिलोकमोकीनसमाना ३
बांधे ब्रह्मा विष्णु महेशू। पार्वतीसुत बांध गणेशू ४
बँधेपवनपावक नभनीरू। चन्द्रसूर्य्य बाँधे दोउबीरू ५

वही निरञ्जनको बुता कहे पराक्रम काललैकै पयान कियो सो लव, दिन, पक्ष, मास, वर्ष, युग, कल्परूप करिकै तीनलोक में समाइ जातभयो ३ जौनकाल तीनिलोकमें समानो ताही में ब्रह्मा, विष्णु, महेश, षण्मुख, गजमुखादि आयुर्दाय प्रमाणरूपते सब बँधतभये ४ अरु ताही में पवन व पावक व पानी व चन्द्र व सूर्य और नभ सब बँधत भये ॥ ५ ॥

सांचमन्त्र सबबांधे झारी। अमृत बस्तु न जानै नारी६

झारादैकै जे साहब के सांच मन्त्र हैं तिनहूं को काल बांधि लियो काहेते कि जो साहब के मन्त्रको अर्थ प्रभाव और साहब को ज्ञानरूप अमृतवस्तु नारी जो आवरण कैलियो माया तामें परे जे जीव ते न जानैं जो जानैंगे तो हमारे मारे न मरैंगे याही हेतुते बांध्यो है ॥ ६ ॥

साखी ॥ अमृतवस्तु जानै नहीं, मगनभये कितलोग ॥
कहैं कबिर कामो नहीं, जीवहमरन न योग ७

अमृतवस्तु जो साहब है ताको तो न जान्यो कौने कुत्सित संसार में तू मगन भयो कौन साहब जो कामो नहीं अर्थात् कामें नहीं है सबही में है सो ऐसो अमृतवस्तु साहब समीपई है वा जीव का जनन मरण योग है अर्थात् नहीं है व्यंग्यते या कहै हैं कि जीव महामूढ़ है अथवा जिनको सांच मन्त्र माने रहे ते तो सब बांधि गये अमृतवस्तु जो रामनामको साहबमुखअर्थ सो जानतही नहीं है याते जनन मरण न छूटतभयो ॥ ७ ॥

इति दशवीं रमैनी समाप्तम् ॥ १० ॥

अथ ग्यारहवीं रमैनी ॥ ११ ॥

गुरुमुख ॥ आँधर गुष्टिसृष्टिभैबौरी । तीनिलोकमहँ लागिठगौरी १
ब्रह्महिं ठग्यो नागसंहारी । देवनसहित ठग्यो त्रिपुरारी २
राज ठगौरी बिष्णुहिं परी । चौदह भुवन केर चौधरी ३
आदि अन्त जेहि काहु न जानी । ताको डर तुम काहे मानी ४
ऊ उतंग तुम जाति पतङ्गा । यमघर किहेहु जीव के सङ्गा ५
नीमकीट जस नीम पियारा । बिषको अमृत कहै गँवारा ६
विषके संग कवन गुण होई । किंचित लाभ मूल गो खोई ७
बिष अमृतगो एकहि सानी । जिन जाना तिन बिषकै मानी ८
कहा भये नल सुध बेसूझा । बिनपरचै जग मूढ़ न बूझा ९
मतिके हीन कौन गुण कहई । लालच लागे आशा रहई १०
साखी ॥ मुवा अहै मरिजाहुगे, मुये कि बाजी ढोल ॥
स्वप्नसनेही जगभया, सहिदानी रहिगा बोल ११

आँधर गुष्टि सृष्टिभै बौरी । तीनिलोकमहँलागिठगौरी १

साहब कहैहैं कि जे मोको ज्ञानदृष्टि करिकै नहीं देखैहैं ते जे आँधर हैं ते माया और निराकार धोखाब्रह्म याही की गोष्टी जो वार्ता सो करतेभये ताही में सारीसृष्टि बौरी ह्वैजातभई कोई तौ

मैंही ब्रह्महौं यह मानि अपने को मुक्त मानतभये कोई मायामें परि नाना देवतनकी उपासना करि अपने को भक्त मानत भये कोई जीवात्मै को मानै कोई सुन्निन को मानत भये सो यही ठगौरी जो माया है सो तीनोंलोकमें लागतभई सो आगे कहेहैं ॥ १ ॥

ब्रह्महिं ठग्यो नागसंहारी । देवनसहितठग्योत्रिपुरारी २
राजठगौरी बिष्णुहिंपरी । चौदहभुवन केर चौधरी ३

शेषनाग को संहारिकै कहे बांधिकै माया ब्रह्मा को ठग्यो ते संसार की उत्पत्ति करनलगे नागकहजाई जो पाठ होय तौ माया ब्रह्मा को ठगिसि और शेषनाग कहँ जाइकै ठगिसि सो शेषनाग पृथ्वी को भार शीशमें धरतभये देवनसहित महादेवको ठग्यो ते संसारके संहारमें लगे देवता अपने अपने काममें लगे २ और चौदहभुवन को चौधरी विष्णु को करिकै ठग्यो ते संसार को पालन करनलगे याही रीतिते मायाते जे गुणाभिमानी रहे तिनको सबको ठग्यो ॥ ३ ॥

आदिअन्तज्यहिकाहुनजानी । ताकोडरतुमकाहेनमानी ४

फिरि कैसीहै माया जाको आदि अन्त कोई जनबई न कियो काहेते न जान्यो वा कुछ वस्तुही नहीं है भ्रमहीमात्र है जेतो पदार्थ देखेहै सुनैहै कहैहै सो सब त्रिगुणमय है गुण न आत्मई में है न ब्रह्महीमें है ताते ये सब मिथ्याहीहैं और धोखाब्रह्म मिथ्या है कैसे सो कहेहैं सबको निराकरण करत करत जो वा रहिजायहै ताही को मानौ हौं कि सो ब्रह्म हमहैं ताहूको मूलअज्ञान कहौं सो जब सोऊ न रह्यो तब वह दशा में बिचारिदेखो तुमहीं रहिजाउ हौ तुम्हारोई अनुमान ब्रह्म है ताते मिथ्याही है जब तुम्हीं रहि गये तब तुम में तो माया ब्रह्मते छूटने की सामर्थ्य है नहीं जो सामर्थ्य होती तो पहिलेही ते तुमको काहे को बांधिलेती याते तुम डेराउहौ कि हम कैसे कै छूटैंगे सो या माया और धोखाब्रह्म का डर तुम काहेको मानते हौ मैं जो अनिर्बचनीय हौं ताके तुम अंशहौ

तुमहूं अनिर्वचनीय हौ नाहक धोखाब्रह्म और माया को अनुमान कैकै नानादुःख पावतेहौ तुम मायाब्रह्म को भ्रमत्यागि मेरे अनिर्वचनीय नाम में लगिकै मेरे पास आवो मैं रक्षाकरि लेउँगो यह मालिक जे श्रीरामचन्द्र हैं ते कहै हैं ॥ ४ ॥

ऊउतङ्गतुम जातिपतङ्गा । यमघर किहेहु जीवकै सङ्गा ५
नीमकीटजसनीमपियारा । विषको अमृतमान गँवारा ६

वह जो माया और धोखाब्रह्म अग्निरूप ताकी उत्तुङ्ग कहे बड़ी ऊंची लपटैहैं तुम जातिके पतङ्ग ह्वैकै वामें काहे जरि जरि मरौ हौ सो हे जीव! नानावस्तुनको संगकरि जाहीमें मन लगाय मर्यो और सोई भयो याही भांति जनमिकै मरिकै यमके पास घरबनाये हौ अर्थात् या संगका प्रभाव है जो यमके यहां घर बनाये हैं ५ जैसे नीमके किरवा को नीमही पियारलगैहै जो मिष्टान्नौ पावै तो न खाय ऐसे विषरूप जो विषय ताको अमृतमानि गँवार जो जीव हैं सो खाय हैं ॥ ६ ॥

विषकेसंग कौनगुण होई । किंचितलाभमूलगो खोई ७
विषअमृतगोएकहिसानी । जिनजानातिनविषकैमानी ८

सो या विषरूपी विषयके संग कौनगुणहै क्षणभरेको सुख है और सबको मूल जो मेरो ज्ञान सो नशायगो अनेक जन्म दुःख पावन लग्यो ७ साहब कहैहैं कि और नाना देवतन को जो नाम जपिबो और तिनहीं के लोक में जाय सुख पाइबो याते विष है और मेरे नामको जपिबो मेरे लोकमें जाय सुख पाइबो याते अमृत है सो ये दूनों विष अमृत एकै में सानिगो कैसे जैसे साहब को नाम लीन्हे मुक्त ह्वैजाय है साहब के लोकमें जाय सुख पावैहै ऐसे औरहू देवतनके नाम लीन्हेसे मुक्तह्वै जाय है औ तिनके लोक में जाय सुख पावैहै वास्तव एकही नाम भेदसे और और कहैहै या भाँतिते जे ज्ञान राखे हैं तिनके ज्ञान को मेरे अनिर्वचनीय नामरूप धाम के जे जनैया हैं तिनके ज्ञानको ते विषयी मानै हैं ॥ ८ ॥

कहाभयेनलसुधबेसूझा। बिनपरचै जगमूढ़ न बूझा ९
मतिकेहीनकौनगुणकहई। लालचलागेआशारहई १०

ऐसे बेसूझ जीव जिनको नहीं सूझपरै है ते कहां शुद्ध भये नहीं भये मैं जो अनिर्वचनीय ताके परचै विना जगमें मूढ़ जीवो तुम न बूझत भयो सो ऐसे मतिके हीन जे तुम तिनके कौन गुण कहैं लालचई में लागेरहैहैं काहूको द्रव्यकी आशा काहूको ब्रह्मज्ञानकी आशा काहूको नाना देवतनकी आशा काहूको विषय की आशा में फिरै है सांच जो वेद को अर्थ मैं ताको न जानत भये॥ ९। १०॥

साखी॥ मुवाअहै मरिजाहुगे, मुयेकी बाजी ढोल॥
स्वप्नसनेहीजगभया, सहिदानीरहिगाबोल ११

साहब कहैहैं कि हे जीवो! मुवा जो धोखा ब्रह्म नानादेवता तिनमें जो लागोगे तो मरिजाहुगे अर्थात् जन्मतै मरतरहौगे या तुम्हारे मुयेकी ढोल जो वेद पुराण हैं सो बाजैहैं कहे कहैहैं तब तुम्हारा इष्टदेवन को स्नेह और सब सुख जगत्को स्वप्न ऐसा ह्वै जायगा ये सब मुयेहैं ये वेद पुराण तात्पर्यते डङ्कादैके कहै हैं अथवा जो गुरुवालोग ब्रह्मको नाना देवतनमें लगावै हैं सो सब संसार में मुये की ढोल बाजै हैं मारिजाहुगे जो यामें लगोगे तो तुम्हारी सहिदानी बोल रहिजायगा बोल कहाहै जे तुम अपने इष्टदेवनके ग्रन्थ बनाय जावगे तेई रहिजायँगे कि फलाने के बनाये ग्रन्थ हैं कालपाय वोहू न रहिजायँगे अथवा सहिदानी बोल रहिजायगा कौन जौन मेरे रामनाम को संसारमुख अर्थ करि संसारी भयो हौ सोई जगत् की सहिदानी मेरो नाम रहिजायगो ताहीको फेरि संसार मुख अर्थकरि संसारी होउगे जब नाम में मोको जानोगे तबहीं मुक्त होउगे॥ ११॥

इति ग्यारहवीं रमैनी समाप्तम्॥ ११॥

अथ बारहवीं रमैनी ॥ १२ ॥

चौ० माटिक कोट पषाणकताला । सोई बन सोइ रखनेवाला १
सो बनदेखत जीवडेराना । ब्राह्मणविष्णु एककरिजाना २
जारि किसान किसानी करई । उपजै खेतबीज नहिं परई ३
त्यागिदेहु नर झेलिक झेला । बूड़े दोऊ गुरु अरु चेला ४
तीसर बूड़े पारथ भाई । जिनबन दाह्यो दवा लगाई ५
भूंकि भूंकि कूकुर मरिगयऊ । काज न एकस्यारसोंभयऊ ६
साखी ॥ मूस बिलारी एक संग, कहु कैसे रहिजाय ॥
यक अचरज देखौ हो संतो, हस्ती सिंहै खाय ७

माटिककोटपषाणकताला । सोईबनसोइरखनेवाला १

माटीका कोट यह शरीर है पाषाण का ताला है कठिन भ्रम जौनेते माया और धोखाब्रह्म में लग्यो है सोई भ्रम के बनको नानावाणी माया ताको रक्षक सोई भ्रमही है जब भ्रम मिटै तब माया धोखाब्रह्म तबहीं मिटै संसारताला खुलै तब मैं सर्वत्र देखेपरों ॥ १ ॥

सोबनदेखतजीवडेराना । ब्राह्मणबिष्णुएककरि जाना २

तौन जो भ्रमको वन नानाशास्त्र तिनके नाना मतन में तुम सब नहिं पारपाये कि कौन मत लैके संसार पार होइ ये शास्त्र एक मत नहीं कहै हैं तब डेराय ब्राह्मण भये "ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः" एक व्यापक तुम सब विष्णुहीं को मानतभये व्याप्य पदार्थ न मानतभये सो हे जीवो ! जो व्याप्य पदार्थ न होयगो तो व्यापक कामें होयगो ताते एक मानिबो धोखई है अथवा ब्राह्मण जे हैं ब्रह्मज्ञानी और वैष्णवजे हैं विष्णुके दास तौनेके एकै मानतभये कि दास भाव करत करत जब अन्तःकरण शुद्ध होइगो तब अभेदई भाव होइगो काहेते कि देव ह्वैकै देवताकी पूजा करिबे को होइहै यह शास्त्र में लिखा है ताते हम विष्णुही ह्वैजाइँगे तौने दृष्टान्त देइहैं कि वहै तौ बनैहै वहै रखवार तो कैसे पूर परै

माया ब्रह्म ईश्वर ई सब मनके कल्पित हैं मनै है और यही मन को रक्षक मानै अथवा ब्रह्मज्ञान को रक्षक मानै है सो वही तो भ्रम है और वही को रक्षक मानै है सो कैसे पूर परैगो ॥ २ ॥

जोरिकिसानकिसानीकरई। उपजैखेतबीज नहिं परई ३

जैसे सिगरी सामग्री जोरि किसान किसानी करैहै जौन बीज खेतमें बोवै है सोई उपजै है तैसे हे जीवो ! तुम सब नानावाणी को विस्तार करि नानामतन में लाग्यो सोई फल भयो मेरो जो रामनाम बीज सो तौ खेत में परबई न कियो मेरो ज्ञान फल कहांते होय ॥ ३ ॥

छांड़िदेहुनरझेलिकझेला। बूड़े दोऊ गुरु अरु चेला ४
तीसर बूड़े पारथ भाई। जिनबन दाह्यो दवालगाई ५

सो हे नरो ! झेली का झेला तुम छांड़ि देहु धोखाब्रह्ममें लागि कै तुम मायाको झेला चाहौहौ माया तुमहीं का झेलै है या नहीं जानौहौ कि धोखाब्रह्म माया शबलित है ताही मायाकी धारमें गुरु जे तुमको उपदेश किये ते और तुम दोऊ बूड़े ४ "पृथुविस्तारे" धातु है अपने ज्ञान दवाग्निको विस्तार कैकै अपने सेवकन के जे वनरूप कर्म जारि अपनेलोकनको लैगये ऐसे जे इष्टदेवता जिनको गुरुवालोग उपदेश करै हैं सो हे भाई ! तीसरे तेऊ मायाकी धार में बूड़े काहेते महाप्रलय में वोऊ नहीं रहिजायँ ॥ ५ ॥

भूंकिभूंकिकूकरमरिगयऊ। काजनएकस्यारसोंभयऊ ६

हे नरो ! जैसे कूकुर शीशाके महल में अपनारूप देखि भूंकि भूंकि मरिजाय है तैसे तुम्हारोई अनुभव जो धोखाब्रह्म तामें लागि भूंकि भूंकि कहे शास्त्रार्थ करिकरि जन्मत मरत रहौहौ स्यार जो वाणी ताते एकौ काज नहीं भयो अर्थात् जौनी वाणी के देखाये प्रतिबिम्बदेख्यो अनुभव ब्रह्म मान्यो तौने के काज न भयो जनन मरण न छूट्यो अथवा हे जीवो ! तुम जे कूकुरहौ ते स्यार, शिवा, भवानी, रुद्राणी अमर में लिखै हैं अथवा "अहंब्रह्म,

अहंब्रह्म, अहंईश्वरः, अहंभोगी, अहंसिद्धः, अहंबलवान्, अहं सुखी" इहै भूंकैहै तामें प्रमाण "ईश्वरोऽहमहंभोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी।"इत्यादिकरूप जो वाणीहै ताको देखिदेखि भूंकतेहौ कहे पढ़ते हौ वा स्याररूप वाणी के धरिबेको तो भूंकि भूंकि तुमहीं मारिगये स्यार ते कार्य न भयो अर्थात् स्याररूप जो वाणी सो तुम्हारी धरी न धरिगई वाको तात्पर्यार्थ को धन जानतभये रूप जो वाणी मोमें वृत्ति तो नहीं राखौहौ अपने जानपनी को घमण्ड राखौ हौ ताते माया ते न छूटे ॥ ६ ॥

साखी ॥ मूस बिलारी एक सँग, कहु कैसे रहिजाय ॥
यक अचरज देखौहो संतौ, हस्तीसिंहैखाय ७

हे नरो ! मूस जे तुमहौ तिनको बिलारी जो माया है सो कैसे न खाय एकसंग तो रहौहौ सो कैसे विना खाये रहिजाय सो हे सन्तो ! एक आश्चर्य और देखो तुम जे जीवहौ तेतौ सिंह हौ तिनको जो हाथी धोखाब्रह्म है सो खायलेय है जो मोको तुम जानौ तो तुम सिंहही बनेहौ तुम सब धोखा मिटावनवारे हौ ॥७॥

इति बारहवीं रमैनी समाप्तम् ॥ १२ ॥

अथ तेरहवीं रमैनी ॥ १३ ॥

गुरुमुख-नहिंपरतीतिजोयहिसंसारा। द्रव्यकचोटकठिनकोमारा १
सोतौ शेषै जाय लुकाई। काहूके परतीति न आई २
चले लोग सब मूलगँवाई। यमकी बाढ़िकाटि नहिं जाई ३
आजुकाजजियकालिहअकाजा। चले लादिदिग्गन्तर राजा ४
सहज बिचारत मूल गँवाई। लाभते हानि होय रे भाई ५
ओछी मती चन्द्र गो अथई। त्रिकुटीसंगम स्वामी बसई ६
तबहीं बिष्णु कहा समुझाई। मैथुनाष्ट तुम जीतहु जाई ७
तब सनकादिकतत्त्व बिचारा। जैसे रङ्क धनपाव अपारा ८
भोमर्याद बहुत सुखलागा। यहि लेखे सब संशय भागा ९
देखत उतपति लागु न बारा। एकमरै यककरै बिचारा १०

मुये गये की काहु न कही। झूठी आश लागिजगरही ११
साखी ॥ जरत जरत से बाचहू, काहेन करहु गोहारि ॥
विष बिषयाके खायहू, रातदिवसमिलिझारि १२

नहिंपरतीतिजोयहिसंसारा। द्रव्यकचोटकठिनकोमारा १

साहब कहै हैं यह तो उपदेश हम करते हैं तुम सबको परतीति जो नहीं आई सो यहि संसार में पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश, दिशा, काल, मन, आत्मा को धोखाब्रह्म ई नवौ द्रव्यकी चोट कठिन कौन माऱ्यो तुमको जाते तुम या माऱ्यो कि शरीर मैंहीं हौं देवता मैंहींहूं ब्रह्म मैंहींहौं सो तुम भूल गये नवौ द्रव्य मेराही शरीर है ताको न जान्यो तुम तामें प्रमाण "खं वायुमग्निं सलिलं महीं च ज्योतींषि सत्त्वानि दिशो द्रुमादीन्। सरित्समुद्रांश्च हरेःशरीरं यत्किंच भूतं प्रणमेदनन्यः" (इति भागवते) "यआत्मनितिष्ठन्यमात्मानवेदयस्यात्माशरीरम्" (इतिश्रुतिः) ॥ १ ॥

सोतौ शेषै जाय लुकाई। काहूके परतीति न आई २

साहेब कहैहै हे जीवो ! चित् अचित् जगत्‌रूप जो मेरो शरीर तामें तुम द्रव्यबुद्धि किये हौ सो त्यागिदेहु यह मेरही शरीर कैके देखौ तो नित्य है नहीं तो शेष होत हो तब सब लुकाय जायहैं एक एक में लीन ह्वै जायहैं निषेध करत करत तुमहीं रहिजाउहौ कि मैं रहिजाउँ हौं तब मैं तुमको हंसरूप दै आपने धामको लै आवौंहौं सो या जगत् मेरही शरीर है या परतीति तुमको काहू को न आई द्रव्यही बुद्धि मानते भये ॥ २ ॥

चलेलोगसब मूलगँवाई। यमकीबाढ़िकाटिनहिंजाई ३

सबको मूल जो मेरो रामनाम ताको गँवायकहे भूलिकै हे जीवो ! तुम सब नानापन्थ चलेहौ परन्तु यम कहे दोऊ विद्या अविद्यारूप जो घोरनदी तिनकी बाढ़ि जो है धारा सो न काटी जायगी अर्थात् न पैरी जायगी वाही में बूड़ि जावोगे अथवा यम जो है कालरूप ब्रह्म ताकी बाढ़ि जो वाणी जो एकते अनेक भई

है सो हे जीवो ! तुम्हारी काटी न काटी जायगी जो काटि पाठ होय तो यह अर्थ है विद्या अविद्याकी दुइ नदी बाढ़ी तुम्हारे हिय में सो तुम्हारी काटी न काटि जायगी अर्थात् वाही में परेरहोगे अथवा चौदहौ जे यम वर्णन करिआये हैं तिनकी बाढ़ि बढ़ी है सो तुम्हारी काटी न कटैगी विना मोको जाने ॥ ३ ॥

आजुकाजजियकाल्हिअकाजा। चलेलादिदिग्गन्तरराजा४

हे जीवो ! अनिर्वचनीय जो मेरो नाम ताको जो आजु समुझौतो कार्य होयगो तिहारो और जो काल्हि कहे शरीर छूटे में समुझो चाहौ तो अकाज है नाजानैं कौनी योनि में परौ फिरि समुझौ धौंना समुझौ सो हे जीवो ! तुमतो राजा हो मन मायादिक ये तुम्हारे ही बनाये हैं सो तो तुम भूलिगये चलेलादि कहे विद्या अविद्या के जे नानाकर्म तिनको अङ्गीकार करि अर्थात् वहै बोझा अपने माथे में धरि दिगन्तर में जाय नानाशरीर धारण करत हो सो अबहूं मोको जानि तुम सब यह दुःख त्यागो यह मायारूप धोखावालेन को उपदेश दियो अब सहजसमाधिवालेन को कहै हैं ॥ ४ ॥

सहज विचारत मूलगँवाई । लाभतेहानिहोयरेभाई ५

सहजकहे सो हंस अहं यह प्रतिश्वास बिचारत बिचारत सब को मूल जो मेरो नाम ताको गँवाय दियो अर्थात् भुलायादियो सो हे जीवो ! तुमको तो धोखाब्रह्म का लाभ भया परन्तु इस लाभते मेरे जाननेवाला जो ज्ञान ताको हे भाइयो ! हानि ह्वैगई अर्थात् नहीं प्राप्तभई ॥ ५ ॥

ओछीमती चन्द्रगो अथई । त्रिकुटीसंगमस्वामीबसई ६
तबहीं विष्णुकहासमुझाई । मैथुनाष्ट तुम जीतहुजाई ७

वीर्यकी उलटी गति करत करत ओछीमतिकहे बुद्ध्यादिक सूक्ष्म है थिर ह्वैगई तब चन्द्ररूप जो वीर्य सो अथैगयो अर्थात् उलटी गति ह्वैगई तब दूनौं नेत्रको उलटिकै ध्यानलगाय प्राण

के साथ वीर्य को चढ़ाय त्रिकुटी में जहां इड़ा, पिङ्गला, गङ्गा, यमुना, सरस्वती को सङ्गम है स्वामी बसै है जहां पहुँचौहौ तब लक्ष्मीनारायण तुमसों कहै हैं कि अब ऊपर गैबगुफा में जायकै आठौप्रकारके मैथुन जीति लेहु अबै एकही प्रकार जीत्यो है तब तुम उहां जाउहौ सो आगे कहैहैं ॥ ६ । ७ ॥

तबसनकादिकतत्त्वबिचारा। जैसेरङ्कधनपाव अपारा ८
भोमर्यादबहुतसुख लागा। यहिलेखेसबसंशय भागा ९

सो जब गैबगुफा में ध्यान लग्यो ज्योति में मिल्यो तब सनकादिक कहै हे जीवो! तुम सब वाहीको सखस्युतत्त्व विचारौहौ कैसे जैसे रङ्क अपारधन पायकै परमतत्त्व मानै है ८ भो मर्याद ब्रह्म जो ज्योति तामें जब आत्मा को मिलायो ज्योतिही ह्वैगयो यहीं तक मर्याद है या मान्यो तब तुमको बहुत सुख लागतभयो अर्थात् वाही में मगन होइजातेभये सो तुम्हारे लेखे तो सब संशय भागि गई परन्तु संशय नहीं गई सो आगे कहैहैं ॥ ९ ॥

देखतउतपति लागु न बारा। एकमरैयककरैबिचारा १०

हे जीवो! तुम या देखत हौ कि जो समाधि उतरी तो मनादिक उत्पन्न होत बार नहीं लगै है तो संसार कबै छूट्यो और येहू देखतहौ कि एकै मरै हैं तिनको लाय आय गैबगुफा जारिगई औ फिर वही गैबगुफा में प्राण चढ़ाइ मुक्ति को विचारौ हौ अर्थात् मुक्ति चाहौहौ सो हे जीवो! तुम सब विचारौ तो जो समाधि सुख नित्य होतो तो कैसे मिटि जातो ताते नित्य नहीं है ॥ १० ॥

मुयेगयेकी काहु न कही। झूठीआशलागिजगरही ११

तुम्हारे गुरुवालोग मरे मरिकै कहांगये कौनी गति को प्राप्त भये या निकासकी बात तो काहू न कह्यो सो तो तुम सब न विचार्यो धोखाब्रह्महोबेकी जो झूठी आशा ताही में तुम सब लागि रहेहौ मोको न जानतभये ॥ ११ ॥

साखी ॥ जरतजरतसेबाचहू, काहे न करहु गोहारि ॥
विषविषयाकैखायहू, रातिदिवसमिलिझारि १२

प्रथम तो हे जीवो ! नानायोनि नरक गर्भवास के जठराग्नि में जरत जरत से बचेहु अर्थात् मोसों नानाप्रार्थना करि गर्भ-बास ते निकसे सो गर्भबास को दुःख तो तुमको भूलिगयो और जौन मोसों करार कियेरहौ सोऊ भूलिगयो विषरूपी जो विषय ताही को राति व दिन खायहु अर्थात् झारि विषयही भोग कीन्हों मेरी शरण को काहे न गोहरायो जे मेरी शरणको गोहरावैहैं तेई बचै हैं सो हे जीवो! जब मेरी शरण को गोहरावोगे तबहीं बचोगे मेरी या प्रतिज्ञा है जो कोई मेरी शरणको गोहरावै है ताको मैं बचायही लेउहौं गोहारिको अर्थ यहहै कि कोई हमारी रक्षाकरै सो साहब शरणगयेरक्षा करतही हैं तामें प्रमाण "सकृ-देवप्रपन्नाय तवास्मीति च याचते। अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्ये-तद्व्रतम्मम १" (इति बाल्मीकीये) ॥ १२ ॥

इति तेरहवींरमैनीसमाप्तम् ॥ १३ ॥

अथ चौदहवीं रमैनी ॥ १४ ॥

गुरुमुख ॥ बड़सो पापी आयगुमानी। पाखँडरूपछलोनर जानी १
वामनरूप छल्यो बलिराजा। ब्राह्मण कीन कौन कर काजा २
ब्राह्मणही सब कीन्हों चोरी। ब्राह्मणही को लागी खोरी ३
ब्राह्महि कीन्हों ग्रन्थ पुराना। कैसेहुकै मोहिं मानुष जाना ४
यकसे ब्रह्मै पन्थ चलाया। यकसे हंस गोपालहि गाया ५
यकसे शम्भू पन्थ चलाया। यकसे भूत प्रेत मनलाया ६
यकसे पूजा जौन बिचारा। यकसे निहुरिनिवाज गुजारा ७
कोउ काहूको हटा न माना। झूठाखसम कबीर ने जाना ८
तन मन भजिरहु मेरे भक्ता। सत्य कबीर सत्य है वक्ता ९
आपुहि देव आपुही पाती। आपुहिकुलआपुहिहैजाती १०
सर्वभूत संसारनिवासी। आपुहिखसमआपुसुखरासी ११

कहते मोहिं भये युगचारी । काके आगे कहौं पुकारी १२

साखी ॥ सांचे कोइ न मानई, झूठाके सँगजाय ॥
झूठे झूठा मिलिरहा, अहमक खेहाखाय १३

बड़ोसोपापी आयगुमानी । पाखँडरूपछलोनरजानी १
वामनरूपछल्योबलिराजा । ब्राह्मणकीनकौनकरकाजा २

साहब कहैहैं तैं बड़ोपापी है बड़ोगुमानी है काहेते कि मैं येतो समझाऊं हौं तैं नहीं समझैहै सो मैं जान्यो पाखण्डरूप जो धोखा ब्रह्म ताते हे नर! तुम छले गये और जिनको छल्यो तिनको कहै हैं १ वही माया शबलित ब्रह्म वामनरूप करिकै बलिराजाको छल्यो है सो या ब्राह्मण जो माया शबलित ब्रह्म सो कौनको काज कीन्हों है अर्थात् नहीं कीन्हों है ॥ २ ॥

ब्राह्मणहीसब कीन्हों चोरी । ब्राह्मणही को लागी खोरी३

वही ब्रह्म सबकी चोरी कियो है काहेते कि माया तो जड़ है यह चैतन्य है ब्रह्मही माया शबलित है मायहू को कर्ताकै मेरे सांचेज्ञानको संसार में शब्दादिक पदार्थ बनाइ चोराइ राख्यो है सो जब व्यापकरूप ते सब पदार्थ ब्रह्मही ठहस्यो और ब्रह्मही के संयोगते माया कर्ता भई है तब ब्रह्मही को खोरिलगी कि वही सब करे है ॥ ३ ॥

ब्रह्महिकीन्होंग्रन्थ पुराना । कैसेहुकैमोहिंमानुष जाना ४

वही माया शबलित जो ब्रह्म है ताहीते सब वेद पुराण निकसे हैं ताहीते नानामत भये कोई निराकार ब्रह्मही कोई चतुर्भुज कोई अष्टभुज इत्यादि मानतभये तुम सब बसहु जो निर्गुण के सगुणपरे वेदपुराणको तात्पर्य ताको जानिकै ऐसो मेरो मनुष्य रूप कैसेहुकै कहे जस तसकै कोई बिरले सन्त जानै हैं और नहीं जानै हैं अथवा मोको सब बातके जनैया श्रीरामचन्द्रको सांच मनुष्यरूप है तामें प्रमाण "आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजम्" इति और जे नानापंथ वेदते निकसे तिनको आगे कहैं

अर्थ दशन्तिमयानितिदशः गरुडः सरथोयस्य सः दशरथःविष्णुः स एव आत्मजोयस्यसः दशरथात्मजः तम् ॥ ४ ॥

यकसेब्रह्मैपन्थ चलाया । यकसेहंस गोपालहि गाया ५

यकसे कहे एक जो माया शबलित ब्रह्म ताही को प्रतिपादन करत ब्रह्मै नानाशास्त्र के नानापन्थ चलावतभये और यकसे कहे एक जो माया शबलित ब्रह्म ताही को विचारकरत हंस जो जीव सो गोपालहि गावतभये अर्थात् गो जो इन्द्रिय ताको पालनवारो जो मन ताहीको गावतभये अर्थात् मनमुखी पन्थ चलावत भये और ब्रह्माने वेद कह्यो है वेदते सब मत निकसे हैं जीवनको जो जुदे करिकै कह्यो सो मेरे सम्मुख को जो अर्थ है ताको छपाय दीन्हों वेद अर्थ नानादेवतन यज्ञादि में लगाय दीन्हे ॥ ५ ॥

यकसे शम्भू पन्थचलाया । यकसे भूतप्रेत मनलाया ६
यकसे पूजा जौन बिचारा । यकसेनिहुरिनेवाजगुजारा ७

यकसे कहे एक जो माया शबलित ब्रह्म ताही को प्रतिपादन करत वेदको अर्थ बदलिकै महादेवजी को तामसमत चलावत भये और यकसे कहे एक जो माया शबलित ब्रह्म ताही को प्रतिपादन करत जीवन को मन भूत प्रेत देव सब लगाय देते भये अर्थात् माया में अरुझाय देते भये ६ यकसे कहे एक जो माया शबलित ब्रह्म ताके ज्ञानहेतु निहुरिकै मुसल्मानलोग नेवाज गुजारत भये ॥ ७ ॥

कोउकाहूको हटा न माना । झूठाखसमकबीरने जाना ८
तनमन भजिरहुमेरे भक्ता । सत्य कबीर सत्य है वक्ता ६

कोऊ काहूको हटको न मानत भये झूठा जो धोखाब्रह्म ताही को दृढ़ करिकै काया के वीर जे जीव ते नाना देवतनसोते खसम जानत भये कोई महीं ब्रह्महौं या मानत भये खसम जो परम पुरुष मैंहौं ताको तुम सब न जानत भये ८ तनमनते मोहीं में लगो तबहीं तिहारो उबार होयगो सो हे कबीरजी ! वो एकतो

तुम सत्यहौ और एक जो तिहारे समुझावनवालो वक्ता मैं सो सत्य हौं और सब झूठे हैं वही ब्रह्म चारों ओर ह्वैगयो है यह द्वैमत देखायो तामें प्रमाण "सत्यमात्मा सत्यजीवो सत्यंभिदः" ॥ ९ ॥

आपुहिदेवआपुहीपाती। आपुहिकुलआपुहिहैजाती १०
सर्वभूतसंसारनिवासी। आपुहिखसमआपुसुखरासी ११
कहतेमोहिंभयेयुगचारी। काके आगे कहौं पुकारी १२

और वही माया शबलित ब्रह्म आपही देवता ह्वै गयोहै आपु ही फूल पाती हैं आपुही पूजा करनवालो है आपुही कुल जाति है १० सो या भाँतिते वही ब्रह्म सर्वभूत में निवासी ह्वैके आपु ही खसम ह्वै रह्योहै औ जामें पुरुषके सुखको सांचहै ऐसी सुखराशी नारी ह्वै रह्यो है ११ सो यह बात चारोयुग मोको कहत भयो काके आगे पुकारिकै कहा कोई समुझै या धोखाब्रह्म को नहीं देखो परै ॥ १२ ॥

साखी ॥ सांचे कोइ न मानई, झूंठाके सँग जाय ॥
झूठे झूठा मिलिरहा, अहमक खेहाखाय १३

सांचो मैं सांचे तुम जीव यह मत तो कोई नहीं मानै है झूठा जो वह ब्रह्म ताके संग सब जाय हैं अर्थात् वहीको सर्वस्व मानैहैं सो झूठा वह ब्रह्म और झूठा ज्ञानवाला जो जीव सो मिलिकै अहमक खेहा खाय है अर्थात् मर्‌यो तब राख खाय है जनन मरण नहीं छूटै है ॥ १३ ॥

इति चौदहवींरमैनीसमाप्तम् ॥ १४ ॥

अथ पन्द्रहवींरमैनी ॥ १५ ॥

चौ० उनई बदरिया परिगै सांझा। अगुवाभूले बनखँड मांझा १
पियअनतै धन अनतै रहई। चौपरि कामरि माथे गहई २
साखी ॥ फुलवा भार न लैसकै, कहै सखिन सों रोइ ॥
ज्यों ज्यों भीजै कामरी, त्यों त्यों भारी होइ ३

उनईबदरियापरिगैसांझा । अगुवाभूलेबनखँडमांझा १

भ्रमकी बदरीओनई परिगै सांझा कहे जगत् में अँधियारी ह्वै गई साहबको ज्ञानरूपी रवि मूंदिगयो न समुझि परत भयो तब बनखगड जो चारिउ वेद तामें अगुवा जे ब्रह्मादिक सब मुनि ते भूलिगये कोई भैरव कोई भवानीको कोई गणेशको इत्यादि नाना देवतनकी उपासना करतेभये और शास्त्रहु में नानामत होतभये कोई कर्मको कोई ब्रह्मको कोई प्रकृतिपुरुषको कोई ईश्वरको कोई कालको कोई शब्दको कोई ब्रह्मागडमें ज्योतिको प्रधान मानतभये और तिनहूं में एकएक मतन में अनेक मत होते भये और मुसल्मानहूंके मज़हबमें तिहत्तरि फिरके होत भये एकमें तो मुक्ति होती है औरनमें नहीं होती सो जो जौने फिरकेमें पराहै सो ताही को मुक्तिवाला माने है सो या एक सिद्धान्त ब्रह्माके पुत्र वेदन ते पूछ्यो वेद ब्रह्मा तेपूछ्यो तब ब्रह्मै संभ्रमपूर्वक सबको शेष के पास पठयो सो शेषजी जौन वेदको तात्पर्य्य सिद्धान्त सबको समुझायो है सो आदिमङ्गलमें लिखि आयेहैं और मेरे बनाये रामायणके अन्तहूमें लिख्यो है सो या हेतुते कबीरजी कहै हैं कि अगुवा जे ब्रह्मा तिनहींको भ्रम भयो है ॥ १ ॥

पियअनतैधनअनतैरहई । चौपरिकामरिमाथेगहई २

पियतो साहबहै और पियके मिलनवारो जो जीवनको ज्ञान सोई धन है सो दोऊ अनतही रहैहैं कोई बिरले सन्त पावैहैं चौपरि जो चारौ वेद तिनकी कामरि ऐसी भारी शीशपर धरे अपने अपने मन को अर्थ करैहैं वेदको सिद्धान्त नहीं पावैहैं अथवा चौपरि जो चारो खानिके जीव ते कर्मरूप जो है कामरि ताको कांधे में धरे हैं ॥ २ ॥

साखी ॥ फुलवा भार न लैसकैं, कहै सखीसों रोय ॥
ज्यों ज्यों भीजै कामरी, त्यों त्यों भारीहोय ३

जीव जे हैं ते अनु हैं अल्पबुद्धि हैं कर्मकागडरूप जो फूल ताही

को भार नहीं सहिसकै अर्थात् सोई नहीं समुझिपरै ब्रह्मविचार कैसे समुझिपरै सो वेदरूप कामरी कांधेधरे जब ब्रह्मविचार करन लगे निषेध करत करत तब विचार में ब्रह्म न आयो तब सखी जे जीव हैं तिनते रोइके कहतेहैं नेति नेति इतनै नहीं है अवै और कछु है नहीं समुझिपरै यही रोइबो है सो ज्यों ज्यों वेदरूप कामरी भीजैहै कहे विचारत जाइहैं त्यों त्यों भारीहोत जाय है अर्थात् गहिरो अर्थ होत जाय है सो कैसे समुझिपरै वातो धोखाब्रह्म कुछ वस्तुही नहीं है ॥ ३ ॥

इति पन्द्रहवींरमैनीसमाप्तम् ॥ १५ ॥

अथ सोलहवीं रमैनी ॥ १६ ॥

चलत चलत अति चरण पिराने। हारिपरे तहँ अतिखिसिआने १
गण गन्धर्व मुनि अन्त न पाया। हारि अलोप जग धंधे लाया २
गहनी बन्धन बांध न सूझा। थाकि परे तब कछू न बूझा ३
भूलिपरे जिय अधिक डेराई। रजनी अन्धकूप ह्वै जाई ४
माया मोह उहां भरि भूरी। दादुर दामिनि पवनहु पूरी ५
बरसै तपै अखण्डित धारा। रैनि भयावनि कछु न अहारा ६
साखी ॥ सबैलोग जहँडाइया, औ अन्धा सभै भुलान ॥
कहा कोइ नहिं मानही, सब एकैमाहँ समान ७

चलतचलतअतिचरणपिराने।हारिपरेतहँअतिखिसियाने १

नाना मतमें लगे जीव तिनके चरण ब्रह्मके खोजहीमें पिरान लगे अर्थात् थकिआये मति नहीं पहुँचै एकहू शास्त्रके विचारके पार न गये अतिरेसयान पाठ होय तो यह अर्थ कि बड़े सयानो रहे तेऊ हारिगे तामें प्रमाण "इन्द्रादयोपि यस्यान्तं न ययुः शब्दवारिधेः। प्रक्रियां तस्य कृत्स्नस्य क्षमो वक्तुं नरः कथम्" तब खिसिआइकै यह कहते भये ॥ १ ॥

गणगन्धर्वमुनिअन्तनपाया। हारिअलोपजगधन्धेलाया२

जौने ब्रह्मको अन्त गन्धर्व और मुनिनके गण नहीं पायो ताको

हम कैसे जानिसकैं जो ब्रह्मको साकार कहैहैं तो मध्यम प्रमाण में आयजाय हैं अनित्य होय है और जो ब्रह्मको निराकार कहैहैं तो जगत्का कर्तृत्व सिद्धान्त न भयो कबीरजी कहैहैं कि कैसे होयगा संदेहमें परे जैसे हरि हैं तैसे विना सद्गुरुके बताये तो जानत ही नहीं हैं यहिते हरि अलोप कहे हरि अप्रकट भये तिनके विना जाने जगत्के धन्धे में जीव सब अपनो मन लगायराख्यो ॥ २ ॥

गहनी बन्धन बांध न सूझा । थाकिपरे तब कछू न बूझा ३

गहनी बन्धन जो माया शबलित ब्रह्म जौन बांधिकै संसारमें डारि देनवारो ऐसो जो ब्रह्म ताको बांध जीवनको न सूझिपर्‌यो कौन बांध कि जो कोई मोहींमें लगैहै तो मैं बांधिकै संसारमें डारि देउँ हौं या माया शबलित ब्रह्मको बांध न सूझि पर्‌यो जो कहो काहेते बांध बांध्यो है तो जगत् की उत्पत्ति वही ब्रह्मते होय है वा ब्रह्म जगत्को रहिबोई चाहैहै याही ते जो कोई वामें लगै है ताको साहब को ज्ञान भुलायकै संसारहीमें राखै है सो कबीरजी कहै हैं कि जब वही संसार में थकिपरे तब कछू न बूझत भये अर्थात् अनेक मतनको विचारै है पै सिद्धान्त न पावत भये साहब को ज्ञान भूलिगये ॥ ३ ॥

भूलिपरे तब अधिक डेराई । रजनी अन्धकूप ह्वै जाई ४
मायामोह उहां भरि भूरी । दादुरदामिनिपवनहुपूरी ५
बरसै तपै अखण्डितधारा । रैनिभयावनिकछुनअहारा६

सो जब साहबको ज्ञान भूले संसारमें परे तब अधिक डर आवत भयो काहेते कि मूला अज्ञानरूप रजनीकी बड़ी अँधियारी होत भई कछू न सूझिपर्‌यो काहेते कि "अहंब्रह्मास्मि" मानिकै लीन ह्वैकै वही संसारमें पर्‌यो जहां माया मोह भूरि भरे हैं तब तो माया कारणरूपा रही है अब कार्यरूपा भई बहुत मोहादिक होतभये तामें परे जैसे दादुर बोलै हैं अर्थ कछू नहीं है तैसे उनको वेदको पढ़िबोहै अर्थ नहीं जानै हैं जो काहूके कहे कछू ज्ञान भयो

तब दामिनी कैसी दमक ह्वै जायहै कछु हृदय में नहीं ठहरायहै और पवनहु पूरी जो कह्यो सो पवन चढ़ायकै योग करिये तो श्रम करै है कि कोई खेचरी आदिक मुद्राकरि अखण्डधारा अमृत बर्षाइ नागिनी उठाइ समाधि करैहै और कोई तपै अखण्डित धारा कहे पांचहज़ार कुम्भक करिकै ज्वाला उठाइ तौनेते नागिनीको जगाय प्राण चढ़ाय समाधि करैहै तहौं भयावनि रैनि जो मूला अज्ञानकी अँधियारी ताहीमें पर्‍यो अर्थात् जबतक ज्योति देख्यो तबतक तो उजियारी जब ज्योति में लीन ह्वैगयो तब सुषुप्ति ऐसे में पर्‍यो रह्यो यही भयावनि रैनिहै भयावनि को हेतु यह है कि प्राण के उतारिबेकी अवधि बनी है ॥ ४ । ५ । ६ ॥

साखी ॥ सबैलोग जहँडाइया, औ अन्धासभैभुलान ॥
कहाकोइनहिंमानही, सब एकैमाहँ समान ७

और जे मायाते सभयरहे डेराते रहे ते लोग जहँडाइया कहे बहकिकै औरई और मतनमें लागिगये और जे अज्ञान आंधरे रहैं ते संसारहीमें परे संसार छूटिबेको उपावै न किये भूलिही गये सो कबीरजी कहै हैं कि मेरो कहा कोई नहीं मानै है सब जे जीव हैं ते एक जो मायाब्रह्म ताहीमें सब समाते भये इत्यर्थः और साहब को विना जाने ब्रह्महूमें लीनह्वै संसारहीमें आवै हैं वाको प्रमाण पीछे लिखि आये हैं ॥ ७ ॥

इति सोलहवींरमैनीसमाप्तम् ॥ १६ ॥

अथ सत्रहवीं रमैनी ॥ १७ ॥

चौ० जसजिवआपुमिलैअसकोई । बहुत धर्म सुखहृदया होई १
जासों बात रामकी कही । प्रीति न काहूसों निर्बही २
एकैभाव सकलजग देखी । बाहेर परै सो होय बिबेकी ३
बिषयमोहके फन्दछोड़ाई । जहांजायतहँ काटु कसाई ४
आय कसाई छूरी हाथा । कैसेहु आवै काटों माथा ५

मानुष बड़े बड़े ह्वै आये । एकै पण्डित सबै पढ़ाये ६
पढ़ना पढ़हु धरहु जनि गोई । नहिंतोनिश्चयजाहुबिगोई ७
साखी ॥ सुमिरन करहु सुराम को, औ छांड़हु दुख की आस ॥
तरऊपर धरि चापि है, जस कोल्हू कोटि पचास ८

जसजिवआपुमिलैअसकोई । बहुतधर्मसुखहृदयाहोई १
जासों बात रामकी कही । प्रीति न काहूसों निर्बही २

जैसो आपु होइ तैसो जब ताको मिलै तबहीं धर्म बढ़ैहै और हृदय में बड़ो सुख होय है तामें प्रमाण गोसाईंजी को (दोहा) "इष्टमिलै अरु मन मिलै, मिलै भजनरसरीति । तुलसिदास तासों मिलै, हठिकै उपजै प्रीति १" सो औरीभाँति सुख नहीं होयहै १ काहेते कि जासों कहे जौने जीवनसों रामकी बात मैं कह्यो हौं कि तैं रामचन्द्रको है तिनको अपनो साहबमानु नानाईश्वर जो तैंने मानेहैं सो ये सब मायाके जालमें परेहैं तोको कहा उबारेंगे सो कबीरजी कहेहैं कि या मेरी बातपै काहूजीवनकी प्रीति न निबहत भई अर्थात् जो मेरी बातप्रीति ते सुनै साहबको जानै अपने अपने मत में आरूढ़ ह्वै बाद सो करै है वस्तु नहीं ग्रहण करै है ॥ २ ॥

एकैभाव सकलजग देखी । बाहेरपरै सो होय बिबेकी ३
बिषयमोहके फन्दछोड़ाई । जहांजाय तहँ काटु कसाई ४

एकैभाव सकलजग देखी कहे जे एक ब्रह्मभाव जगत्को देखै हैं तेहिते बाहेर अपनेको दास मानि साहबरूपते जगत्को जानै हैं सोई विवेकी होय हैंसो ऐसे विवेकिन के पास तो नहीं जाय है ३ नानाविषय के मोहके फन्द छोड़ायकै अर्थात् संसारते वैराग्य करिकै अधिकारिहू ह्वैकै जहां जहां जाय है तहां तहां कसाई जे गुरुवालोग ते गला काटैहैं अर्थात् साहबको ज्ञानकाटि धोखाब्रह्म में लगाय देयँ हैं सो याको गला काट्यो गलाकाटे फेरि जन्म होयहैयाते गुरुवालोगन को कसाई कह्यो ऐसे याहूको जनन मरण होय है व्यंग्य यह है कि जे जीव साहबको त्यागि औरै और में

लगै हैं ते पशु हैं उनको ऐसही गला काट्यो जायहै ये कसाई श-रीर को गला काटैहैं यही द्वैतज्ञानवाले गुरुवालोग जीवनको गला काटै हैं जो संसार में रहतो तो कबहूं दैवयोगते साधुसंग भयो उद्धारहू होतो सो तौने धोखाब्रह्म में लगाय दियो जहांते उद्धार नहीं है वहां काहेको कोई साहबको बतावैंगे ॥ ४ ॥

आय कसाई छूरी हाथा । कैसेहु आवै काटों माथा ५
मानुष बड़े बड़े ह्वै आये । एकै पण्डित सबै पढ़ाये ६

कसाई जे गुरुवालोग तिनकी बनाई पोथी सोई छूरी हाथ में लीन्हे यह ताकेहैं कि कैसेहुकै कोन्यो मतको आवै तो ठगिकै अपने मतमें कैलेइँ माथ काटिलेयँ कहे मूड़िडारैं चेला करि लेयँ सो साहबको छोड़ाइ औरै और में लगावन वारोहै सो गुरु कसाई है ५ मनुष्य जेबड़े बड़े ज्ञानीलोग हैं ते यही पढ़ावतभये कि एक वही ब्रह्म है जीव नहींहै और कोई या पढ़ाया कि एक जीवही सांच है और सब असांच है ॥ ६ ॥

पढ़नापढ़हुधरहुजनिगोई । नहिंतौनिश्चयजाहुबिगोई ७

जौन पढ़ना तुम गुरुवालोगनते पढ़्यो है सो अब जनि गोइ राखो और जो गोइराखोगे तो कुमतिहीं में परेरहौगे जो गोइ न राखोगे तो सन्तलोग समुझायकै भ्रम काटिडारैंगे कैसे कि जो एकब्रह्महोतो तो भ्रम कौन को होतो और जो एक जीवही साहब होतो तो बँधि कैसे जातो सो माया तो बांधनवाली है और जीव बन्धनधारी है और साहब छुड़ावनवालोहै यह विचारि साहबको जानो साहब छुड़ाय लेइँगे नहीं निश्चय बिगोइ जाहुगे अर्थात् कुमति में लागि कै बिगरिजाहुगे ॥ ७ ॥

साखी ॥ सुमिरनकरहुसुरामको, औछांड़हुदुखकीआस ॥
तर ऊपरधारि चापिहै, जसकोल्हूकोटि पचास ८

सो परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको सुमिरन करौ धोखा ब्रह्म और माया इनकी दुःखरूप जो आश सो छांड़ो जो न

छांड़ोगे तो तरे तो मायारूप कोल्हू ऊपर ब्रह्मरूपजाठमें तुमको पेरिडारैगो पचासकोटि कोल्हू कह्यो सो अगणित ब्रह्माण्ड हैं तामें डारि कै ॥ ८ ॥

इति सत्रहवींरमैनीसमाप्तम् ॥ १७ ॥

अथ अठारहवीं रमैनी ॥ १८ ॥

चौ० अद्भुत पन्थ बरणि नहिं जाई । भूले राम भूलि दुनिआई १
जो चेतौ तौ चेतुरे भाई । नहिंतौजिय जरिमूलै जाई २
शब्द न मानै कथै बिज्ञाना । ताते यम दीन्ह्योहै थाना ३
संशय साउज बसै शरीरा । तेखायल अनबेधल हीरा ४
साखी ॥ संशय साउज देह में, संगहि खेलै जुआरि ॥
ऐसा घायल बापुरा, जीवन मारै झारि ५

अद्भुत पन्थ बरणि नहिं जाई । भूलेराम भूलि दुनिआई १
जो चेतौ तौ चेतुरे भाई । नहिंतौजियजरिमूलैजाई २

अद्भुत पन्थ जो ब्रह्म ताको वर्णत कोईने अन्त नहीं पायो राम जे साहब हैं तिनके भूले कहे बिना जानेते सब दुनिया धोखाब्रह्म माया में भूलिगई १ हे भाइउ ! चेतौ तो चेतौ नहीं तो मायाब्रह्म की आगिमें जरिकै मूलते जाउगे यह कबीरजी कहै हैं नहीं तो यम जीव लैजाइँ जो यह पाठ होय तो यह अर्थ है कि चेतौ तो चेतौ नहीं तो यम लैजायके नरकमें डारि देइँगे ॥ २ ॥

शब्द न मानै कथै बिज्ञाना । ताते यम दीन्ह्योहै थाना३
संशय साउज बसै शरीरा । तेखायल अनबेधलहीरा४

बिज्ञानहूको सार जाते सब शब्द निकसेहैं ऐसो जो रामनाम ताको तो मानै नहीं है और और मतमें लागिकै बिज्ञान कथै है ताते यमराज जो जैसो कर्मकरैहै ताको तैसो नरक स्वर्गको थान देयहैं ३ संशयरूपी साउज जो मन सो शरीररूपी वनमें बसिकै अनबेधल कहे जाको यश रामनाममें नहीं है ऐसो जो हीरा जीव ताको खायगयो कौनी रीतिते खायो सो आगे कहै हैं ॥ ४ ॥

साखी ॥ संशयसाउजदेहमें, संगहिखेलै जुआरि ॥
ऐसा घायलबापुरा, जीवनमारै झारि ५

जैसे शिकारी बाघको मारै है जो बाघ घायल भयो तो शिकारीको धरिडारै है तैसे संशय साउज जो व्याघ्ररूप मन सो देहरूपी वनमें बसैहै ताके संग जीव जुआं खेलैहै जब मनोवासना छैकी उपायकियो तब वही वाको घायल ह्वैबो है सो व्याघ्ररूप जो मन है सो घायल ह्वैकै बापुरे जे सब जीव हैं तिनको झारादैकै मारै है अर्थात् सबको वही माया धोखाब्रह्ममें लगायदियो और जो यह पाठ होय कि "ऐसा घायल बापुरा सब जीवनमारै झारि" तो यह अर्थहै कि ऐसा घायल कहे घाती जो मन सो बापुरे जीवनको झारादैकै मारैहै जनन मरण देइहै ॥ ५ ॥

इति अठारहवींरमैनीसमाप्तम् ॥ १८ ॥

अथ उन्नीसवीं रमैनी ॥ १९ ॥

चौ० अनहदअनुभवकीकरिआशा। देखो यह बिपरीततमाशा १
यहै तमाशा देखहु भाई। जहँहै शून्य तहां चलिजाई २
शून्यहिबाञ्छा शून्यहिगयऊ। हाथा छोड़ि बेहाथा भयऊ ३
संशय साउज सब संसारा। काल अहेरी सांझ सकारा ४
साखी ॥ सुमिरन करहु सो रामको, काल गहे है केश ॥
नाजानौं कब मारि है, क्या घर क्या परदेश ५

अनहदअनुभवकीकरिआशा॥देखोयहबिपरीततमाशा १

अनहद शब्द सुनत सुनत जौने ब्रह्मको अनुभव होइहै ताको तू विचारै है कि ब्रह्म मैंहीहौं या नहीं जानैहै कि अनहद मेरे शरीरहीको है वह ब्रह्म मेरही अनुभव है यह बड़ो तमाशा है ताही की आशाकरै है यह बड़ी विपरीत है ॥ १ ॥

यहै तमाशा देखहु भाई। जहँहैशून्यतहांचलिजाई २
शून्यहिबाञ्छाशून्यहिगयऊ। हाथाछोड़िबेहाथा भयऊ ३

सो हे भाइयो, हे जीवो ! यह तमाशा तुमहूं अनेकन जन्म ते देखते आये हौ परन्तु जहां शून्य है तहां जाइकै मुक्ति ह्वैबो चाहौहौ तुम या नहीं विचारौहौ कि शून्य जो धोखाब्रह्म तामेंजो हम जायँगे तो हमारी मुक्तिकी वाञ्छहु शून्य ह्वैजायगी अर्थात् मुक्ति न होयगी सो या बड़ो आश्चर्य है आपने ते झूठमें बांधिकै साहब को हाथ छोड़िकै बेहाथ भयऊ कहे धोखाब्रह्म के हाथ में ह्वैजाउ हौ अथवा कबीरजी छूट जीवनते कहैहैं हे भाइयो ! देखौ तो तमाशा ये जीव जहां शून्यहै धोखा है तहां सब चलेजायँ हैं जौने ज्ञान में साहब भरेपूरेहैं तहां नहीं जायँहैं ॥ २ । ३ ॥

संशय साउज सबसंसारा । कालअहेरी सांझसकारा ४

संशय कहे मनरूप जो साउज ताहीको सकल कहे सुरतिया संसार ह्वैरह्यो है अर्थात् मनरूप जीव ह्वैरह्यो है संकल्प विकल्प सब कैरहे हैं सो अहेरी जो काल शिकारी सो सांझ सकार कहे काहू को जन्मतमें मारैहै आदि अन्त कहे मध्यको काल है काहू को आयुर्दायके अन्तमें मारैहै यम वो ॥ ४ ॥

साखी ॥ सुमिरनकरहुसोरामको, काल गहे है केश ॥
नाजानों कब मारिहै, क्याघरक्यापरदेश ५

सो कबीरजी कहै हैं कि परम पुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको सुमिरण करहु शिकारी जो काल है सो केश करमें गहे है या नहीं जानौ हौ धौं कब मारै या घर में या परदेश में अर्थात् साहब के विना स्मरण घर में रहोगे तो न बचोगे जो वनमें जाउगे तो न बचोगे ॥ ५ ॥

इति उन्नीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ १९ ॥

अथ बीसवीं रमैनी ॥ २० ॥

चौ० अबकहुरामनामअविनासी।हरितजिजियराकतहुँनजासी १
जहां जाहु तहँ होहुपतङ्गा । अबजनिजरहुसमुझिबिषसङ्गा २

रामनामलौलायसोलीन्हा । भृङ्गीकीट समुझि मन दीन्हा ३
भो अतिगरुवा दुखकैभारी। करुजियथतन सो देखुबिचारी४
मनकीबातहैलहरिबिकारा। त्वहिं नहिं सूझै वार न पारा ५
साखी ॥ इच्छाको भवसागरै, बोहित राम अधार ॥
कहैंकबिरहरिशरणगहु, गोबछखुर बिस्तार ६

अबकहुरामनामअबिनासी।हरितजिजियराकतहुँनजासी १

अविनाशी जो रामनाम ताको अबहूं कहु हरि कहे भक्तन के आरति हरणहारे जे साहब हैं तिनको छोड़ि हे जीव ! और मतन में कतहुँ न जा अर्थात् चित चित्तते विग्रह करि सर्वत्र साहिबै को देखु ॥ १ ॥

जहाँजाहुतहँहोहुपतङ्गा।अबजनिजरहुसमुझिविषसङ्गा२

जौनेन मतमें जाहु हौ तहां पतङ्गही से जरिजाउहौ सो संग जो विषाग्नि ताको समुझि अब जनि जरहु अर्थात् जो इनको संग करहुगे तो मन इन्द्रियादिकन को विषय को सिद्धान्त कीन्हे है ताही में तुमहूंको लगाइ देयँगे तो संसारहीमें परे रहोगे ताते इनको संग त्यागि रामनाम जपौ जो कहौ कौनी रीतिते जपैं राम नाम तो मन बचनके परे है सो आगे कहै हैं ॥ २ ॥

रामनामलौलायसोलीन्हा।भृङ्गीकीटसमुझिमनदीन्हा ३

रामनाम में सो लौ लगाय लीन है कौन जौन भृङ्गी और कीट की ऐसी गति समुझिकै अपने मन दीन्ह है अर्थात् जैसे कीट भृङ्गी को देखत देखत वाको शब्द सुनत सुनत वाको डेरात डेरात तदाकारकैहै भृङ्गीहीरूप ह्वैजाय है तैसे रामनाम जपत जाइ है वाको सुनत जाइ है जगत्मुख अर्थते डेरात जाय है और साहब मुख अर्थमें साहबका रूप और अपनो हंसस्वरूप विचारत निज हंसरूप में तदाकार ह्वैजाय है मनआदिक मिटिजाय है शुद्ध रहिजाय है सो अपनेरूप पाय जाय है तब मन वचन के परे जो रामनाम सो आपनेते स्फूर्ति होइ है तामें लौ लगायकै जैसे कीट

भृङ्गी बनिकै औरे कीटको भृङ्गी बनावै है तैसे यहौ जीव उपदेश करिकै औरहू को हंसरूप बनावै है सो जो भृङ्गीको शब्द कीट न ग्रहण करै तो कीटही रहिजाय ऐसे जो रामनाम को जीव न ग्रहणकरै तो असारही रहिजाय है तामें प्रमाण अनुरागसागरको "ज्यों भृङ्गी गै कीटके पासा। कीटहि गहि गुरगमि परगासा॥ बिरला कीट होय सुखदाई। प्रथम अवाज गहै चितलाई॥ कोइ दूजे कोइ तीजे मानै। तन मन रहित शब्दहित जानै॥ तब लैगे भृङ्गी निजगेहा। स्वाती दैकर निज समदेहा"॥ ३॥

भोअतिकरुवादुखकैभारी। करुजिययतनजोदेखुबिचारी ४
मनकीबातहैलहरिबिकारा।त्वहिंनहिंसूझैवार न पारा ५

यह संसार भारी दुःख करिकै अति गरुवा बोझा है जीव तू विचारि देखु जो तोको बोझालगै तो रामनामको यतन करु ४ मनकी बात कहै मनते गुरुवनको धोखा ब्रह्म तेहिते उठी जो विकाररूप लहरि माया ताको कौनो मन कहिकै तोको वारपार नहीं सूझै है॥ ५॥

साखी॥ इच्छा के भवसागरै, बोहित रामअधार॥
कहै कबीर हरिशरणगहु, गोबछखुरबिस्तार ६

यह जोसमष्टि जीवको इच्छारूप भवसागर तामें बोहित जो नौका रामनाम सोई आधार है और नहीं है सो कबीरजी कहैहैं हरि जे साहेब हैं तिनकी शरण गहु यह भवसागर गऊके बछवा के खुरके सम उतरि जायगो यामें संदेह नहीं है॥ ६॥

इति बीसवींरमैनीसमाप्तम्॥ २०॥

अथ इकीसवीं रमैनी॥ २१॥

चौ० बहुत दुखैहै दुखकी खानी। तबबाचिहौजबरामहिजानी १
रामहिजानि युक्ति जो चलई। युक्तिहिते फन्दा नहिं परई २
युक्तिहि युक्ति चलतसंसारा। निश्चय कहा न मानु हमारा ३

कनककामिनी घोरपटोरा। संपति बहुत रहे दिन थोरा४
थोरेहि संपतिगो बौराई। धरमरायकी खबरि न पाई५
देखित्रासमुखगो कुम्हिलाई। अमृत धोखे गो बिष खाई ६
साखी॥ मैं सिरजों मैं मारहूं, मैं जारौं मैं खाउँ॥
जल थल मैंहीं रमिरह्यों, मोर निरञ्जन नाउँ ७

बहुतदुखैहैदुखकीखानी। तबबचिहौजबरामहिजानी १
रामहिजानियुक्तिजोचलई। युक्तिहितेफन्दानहिंपरई २
युक्तिहियुक्तिचलतसंसारा। निश्चयकहानमानुहमारा ३

यह दुखकी खानि जो संसार सो बहुत दुःख है अर्थात् बहुत दुःख देइ है तुम तबहीं याते बचौगे जब सबके मालिक रक्षकजे श्रीरामचन्द्र तिनको जानौगे आन उपाय न बचौगे १ काहेते जे श्रीरामचन्द्र को जानिकै युक्ति सहित चलैहैं तेई वही युक्तिहीते संसारके फन्दा में नहीं परैहैं सो कबीरजी कहै हैं सो युक्ति आगे लिखैंगे २ या संसार केवल अपनी अपनी युक्तिहीते चलैहै कबीर जी कहै हैं मैं जो निश्चय बात कहौ हौं कि रामनामहीते तेरो उद्धार होयगो याकी युक्ति कोई नहीं मानै है अपनेही मनकी युक्ति चलै है॥ ३॥

कनककामिनी घोरपटोरा। संपति बहुत रहे दिनथोरा ४
थोरेहि संपति गो बौराई। धर्मराजकी खबरि न पाई ५

कनक जोहै कामिनी जोहै घोड़े जेहैं हाथी जेहैं पटम्बर जेहैं ये संपति तो बहुत हैं परन्तु इनके भोग करिबेको दिन तो थोरही है अर्थात् आयुर्दाय थोरी है सोतो भोग में बितावै है साहब को कब जानैगो ४ सो तैंतो थोरही संपति में बौराय गयो धर्मराज की खबरि तैं नहीं पाई कि जब मोको धरिलैजाइँगे तब सारी संपति हियई परी रहिजायगी तब कौन भोग करैगो यह विचारि साहब को जानो॥ ५॥

देखित्रासमुखगो कुम्हिलाई। अमृतधोखेगोबिषखाई ६

और देवयोग जो कदाचित् तुम्हैं धर्मराजको त्रास देखिकै मुख जब कुम्हिलायगयो कहे संसारते वैराग्यभयो तब गुरुवा लोगनके निकटजाइ अपनो स्वरूप समुझ्यो कि मैं अमृत हौं मन मायादिक ते भिन्न हौं सो बात तो तू सांच विचारी ऐसही है परन्तु भगवत् अंशत्व तेरे स्वरूपमेंहै सो गुरुवालोग नहीं बतायो औरहीमें लगाय दियो सो अपनो स्वरूप समुझबो जो अमृत ताही के धोखे ते 'अहंब्रह्मास्मि' विष खायगयो भगवत्दास आपने को न मान्यो साहबको न जान्यो सर्वत्र मैंही हौं या मानि कहनलाग्यो ॥ ६ ॥

साखी ॥ मैं सिरजौं मैं मारहूं, मैं जारौं मैं खाउँ ॥
जलथलमैंहींरमिरह्यो, मोर निरञ्जन नाउँ ७

और मैंहीं जगत्को सिरजों हौं, महीं मारौं हौं, महीं जारौं हौं, जौने अग्निते जारौं हौं ताको महीं खाउँ हौं और जल थल में मैंहीं रमि रह्यो हौं मोर निरञ्जन नाउँ है कैवल्य महीं हौं और अञ्जन जो माया ताते शबलित ह्वैकै मैंहीं सब करौं हौं ॥ ७ ॥

इति इक्कीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २१ ॥

अथ बाईसवीं रमैनी ॥ २२ ॥

चौ० अलखनिरञ्जन लखै न कोई । जेहिके बँधे बँधा सबकोई १
जेहि झूठो सो बँधो अयाना । झूठी बात सांच कै माना २
धन्धा बँधा कीन्ह व्यवहारा । कर्म बिवर्जित बसै निनारा ३
षटआश्रमषटदरशनकीन्हा । षटरसबस्तुखोटसबचीन्हा ४
चारि बृक्ष छाशाख बखानै । विद्याअगणित गनै न जानै ५
औरौ आगम करै बिचारा । तेहि नहिं सूझै वार न पारा ६
जप तीरथ ब्रत पूजे भूता । दान पुण्य औ किये बहूता ७

साखी ॥ मन्दिर तो है नेहको, मति कोइ पैठै धाइ ॥
जो कोइ पैठै धाइकै, बिन शिर सेंती जाइ ८

अलखनिरञ्जनलखैनकोई। जेहिकेबँधेबँधा सबकोई १
जेहिझूठोसोबँधोअयाना। झूठीबात सांचकैमाना २
धन्धाबँधाकीन्हव्यवहारा। कर्मबिबर्जित बसै निनारा ३

कबीरजी कहैहैं कि हे जीव! तूतो आपनेको निरञ्जन मान्यो सो निरञ्जन तो अलख है वाको कोई नहीं लखै है जाके बँधेते कहे मायामें सबकोई बँधेहैं १ हे अजानो! जौने झूठे सो तुम बँधो हौ सो झूठही है तुम सांच मानो हौ सो न मानो २ धन्धा जो साहबकी सेवा ताको बँधा कहे बांधनवारे तौनेको व्यवहार तुम कीन अर्थात् व्यवहार मानि कर्मते वर्जित ब्रह्म सबते न्यारही रहै है या परमार्थ तुमलोग कहौ हौ और वाही में आरूढ़ होत हौ साहबको नहीं जानौ हौ॥ ३॥

षटआश्रमषटदरशनकीन्हा। षटरसबस्तुखोटसबचीन्हा ४
चारिबृक्ष छा शाख बखानै। विद्याअगणितगनै न जानै ५

षट्रसनको खोटमानि त्यागन करिकै और षट् आश्रम करिकै षट् दर्शन करिकै वही धोखाब्रह्महीं को सिद्धान्त मानते भये ४ पुनि चारि वेद, छवोशास्त्र, अगणितविद्या वाच्यार्थ करिकै धोखाब्रह्मको कहैहैं ताको तो तुम ग्रहणकियो तात्पर्यवृत्ति ते जो साहबको कहै है सो तुम न जानत भये॥ ५॥

औरौ आगमकरै बिचारा। त्यहि नहिं सूझैवार न पारा ६
जप तीरथ ब्रत पूजेभूता। दान पुण्य औ किये बहूता ७

अरु औरौ आगम जेहैं ज्योतिष यन्त्र मन्त्र आदि दैकै तेऊ तात्पर्यवृत्तिते जौने साहबको कहै हैं ताको वार पार तो तुमको न सूझिपर्‍यो वाच्यार्थ प्रतिपाद्य जो धोखा ब्रह्म ताही में लागत भये और और देवता ६ सो यहिप्रकार नानामतन करिकै मानते भये कोई नानादेवतन के जप किये, कोई तीर्थ किये, कोई ब्रत किये, कोई भूतनकी पूजा किये, कोई दान किये, कोई पुण्य जो यज्ञादिक कर्म ते किये॥ ७॥

साखी ॥ मन्दिर तो है नेहको, मति कोइ पैठै धाइ ॥
जो कोइ पैठै धाइकै, बिन शिर सेंती जाइ ८

सो यह सब मतमा एक नानादेवता धोखाब्रह्म इनमें जो प्रीति है सो नेहको मन्दिर है तामें तू धायकै मति पैठै जो इनमें धायकै पैठैगो तो बिन शिर कहे सबके शिरे जे साहब तिनके विना सेंतिही जाइगो कछु हाथ न लगैगो तेरे साधन मुक्तिदेनवाले न होवेंगे संसारही देनवाले होइँगे अथवा तुम्हारो माथा काटो जायगो वृथा मारेजाउगे ॥ ८ ॥

इति बाईसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २२ ॥

अथ तेईसवीं रमैनी ॥ २३ ॥

चौ० अलपसौख्यदुखआदिहुअन्ता।मन भुलान मैगर मैंमन्ता १
सुख बिसराय मुक्तिकहँ पावै । परिहरिसांचभूंठनिजधावै २
अनल ज्योति दाहै यकसङ्गा । नयन नेह जसजरै पतङ्गा ३
करुबिचार ज्यहि सबदुख जाई। परिहरि भूंठा केरि सगाई ४
लालच लागे जन्म सिराई । जरामरण नियरायल आई ५

साखी ॥ भ्रमको बांध लई जगत्, यहिबिधि आवहि जाय ॥
मानुष जन्महि पाइ नर, काहे को जहँडाय ६

अलपसौख्यदुखआदिहुअन्ता।मनभुलानमैगरमैंमन्ता १
सुखबिसरायमुक्तिकहँपावै । परिहरिसांचभूंठनिजधावै २
अनलज्योति दाहै यकसङ्गा । नयननेह जसजरैपतङ्गा ३

औने संसार में अलप तो सुख है और आदिहू में अन्तहू में दुख है ऐसे संसार में मैगर मैंमन्ता कहे मतवारो हाथी जो मन सो भुलाइकै मैंमंता कहे महीं ब्रह्म हौं या मानिलियो अथवा मैंहीं देह हौं या मानिलियो १ सुखरूप जे साहब हैं तिनको बिसरायकै कबीरजी कहैहैं कि मुक्ति कहां पावै सांचको छोड़िकै भूठ जो धोखाब्रह्म है तामें तो धावै है यह जीव कैसे सुख पावै २ अनल-

ज्योति जो ब्रह्म है सो एकसंग सब ज्ञानिनको दाहै है अग्नि ब्रह्म को नाम है "अज्ञत्वादग्निनामासौ" कैसे दाहै है जैसे नयननेह कहे देखनके लालच लगे दीपककी ज्योति में पतङ्ग जरै हैं ॥ ३ ॥

करुविचारज्यहिसबदुखजाई। परिहरिझूंठाकेरिसगाई ४
लालचलागे जन्म सिराई। जरामरणनियरायलआई५

झूंठ जो या धोखाब्रह्म है और अपनो कलेवर तौने की सगाई त्यागिकै परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको विचार करु जाते तेरे सब दुःख जाइँ ४ धोखा ब्रह्मके लालच में लगे कि हमारी मुक्ति होयगी हमको विषयही ते सुख होयगो याही में लगे लगे जन्म सिराय गयो जरा जो बुढ़ाई और मरण सो नियराय आयो ॥ ५ ॥

साखी ॥ भ्रमको बांधलई जगत, यहि बिधि आवैजाय ॥
मानुषजन्महि पाय नर, काहे को जहँडाय ६

यही रीतिते भ्रमको बांधा या जगत् है वही ब्रह्मते आवै है कहे उत्पन्न होइहै और जाइ है कहे लीन होइ है "मानुषजन्महि पाय नर, काहेको जहँडाय" कहे काहे जड़वत् होय है मनुष्य जन्म याते कह्यो अथवा जहँडाय कहे काहे भूले जाते हैं कि मनुष्य के मनुष्यै होय हैं हाथी के हाथी होय हैं कछू हाथी के मनुष्य नहीं होय हैं ऐसे जो तैं निराकार ब्रह्म को हो तो तोहूं निराकार होतो सो तैं मनुष्य है ताते मनुष्यरूप जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनही को है ॥ ६ ॥

इति तेईसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २३ ॥

अथ चौबीसवीं रमैनी ॥ २४ ॥

चौ० चन्द्रचकोर कासिबातजनाई। मानुषबुद्धिदीन पलटाई १
चारि अवस्था सपनो कहई। झूठे फूरे जानत रहई २
मिथ्याबात न जानै कोई। यहिबिधि सिगरे गये बिगोई ३
आगे दैदै सबन गँवावा। मानुष बुद्धि न सपनेहु पावा ४

चौंतिस अक्षरसों निकलै जोई । पाप पुराय जानैगा सोई ५
साखी ॥ सोइ कहते सोइ होउगे, निकलि न बाहर आउ ॥
हो हुजूर ठाढ़ो कहौं, धोखे न जन्म गँवाउ ६

चन्द्रचकोरकसिबातजनाई । मानुषबुद्धिदीनपलटाई १

साहब कहे हैं कि हे जीवो! तुम को गुरुवालोग चन्द्रचकोर कैसो दृष्टान्त जनायकै नाना ईश्वर में लगायदियो कैसे जैसे चन्द्रमा को ताकत ताकत चकोर चन्द्ररूपै है या बुद्धिमानैहै तब चकोरको अग्निकी गरमी नहीं लगै है अग्नि खायजाय है तैसे अपनो स्वरूप जो ब्रह्म ताको जब जानिलेहुगे तब तुमको दुःख सुख न जानिपरैगो कोई यह कहै हैं कि जैसे चन्द्रमा चकोर में नेह करैहै ऐसे तुम ईश्वरनमें प्रीति करोगे तो दुःख सुख न जानि परैगो यह जो तुम्हारी मनुष्यबुद्धि कि मैं हंसस्वरूप हौं द्विभुजहौं द्विभुजई को होउँगो सो पलटायकै ब्रह्ममें लगायदिये नानादेवतन में लगाय दिये ॥ १ ॥

चारि अवस्था सपनो कहई । झूठे फूरे जानत रहई २
मिथ्याबात न जानै कोई । यहिबिधिसिगरेगयेबिगोई ३

चारि अवस्था जे हैं जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीया ते सपन कहाती हैं तो झूठी फुरी जानत रहै हैं २ वह कैवल्य जो है पँचई अवस्था तद्रूप ह्वैजाइबो कि महीं ब्रह्म हौं सो मिथ्या है यह बात कोई नहीं जानै है यही विधि सिगरे जीव बिगरिगये कहे बिगोइ गये ॥ ३ ॥

आगे दैदै सबन गँवावा । मानुषबुद्धि न सपनेहु पावा ४
चौंतिस अक्षर सों निकलै जोई । पापपुरायजानैगासोई ५

वही धोखाब्रह्मके आगे और कुछ नहीं रह्यो आदिकी उत्पत्ति वही ते है यही बात आगे दैदै कहे विचारिकै सिगरे जे ऋषि मुनि हैं ते आज अपने स्वस्वरूप को गँवावत भये मनुष्यरूप जो मैं तिनके जाननेवाली बुद्धि सपन्यो न पावत भये ४ चौंतिस

अक्षर सों जो निकरैगा सोई पाप पुण्य जानैगा मैं साहब को हौं और मैं लागौं हौं सो पापई करौं हौं या बात मेरो अनिर्वचनीय निर्वाण जो नाम है ताको जपिकै जानैगो और अपनो स्वस्वरूप जानैगो ॥ ५ ॥

साखी ॥ सोइ कहते सोइ होउगे, निकलि न बाहर आउ ॥
हो हुजूर ठाढ़ो कहौं, धोखे न जन्म गँवाउ ६

जो पदार्थ देखोगे जो सुनोगे जो कहौगे जो स्मरण करोगे संसार में सोई होउगे वही धोखा में लागिकै पुनि संसारी होउगे वामें ते निकरिकै बाहर न होउगे काहेते कि वह तो अकर्ता है तुम्हारी रक्षा कौन करैगो सो साहब कहै हैं कि सर्वत्र पूर्ण हौं तेरे हुजूर ठाढ़ कहतई हौं कि तैं मेरोहै तू काहे धोखा ब्रह्ममें ईश्वरन में जगत्के नानापदार्थ में लागिकै जन्म गँवाये देत है ॥ ६ ॥

इति चौबीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २४ ॥

अथ पचीसवीं रमैनी ॥ २५ ॥

चौ० चौंतिस अक्षरको यही बिशेखा । सहसो नाम यहीमें देखा १
भूलि भटकि नर फिरि घर आवै । होतज्ञान सो सबन गँवावै २
खोजहिं ब्रह्म विष्णुशिवशक्ती।अमितलोकखोजहिंबहुभक्ती ३
खोजहिंगणगँधर्वमुनिदेवा । अमितलोकखोजहिंबहुसेवा ४

साखी ॥ यती सती सब खोजहीं, मनै न मानै हारि ॥
बड़े बड़े बीरबाचैं नहीं, कहहि कबीर पुकारि ५

चौंतिसअक्षरकोयहीबिशेखा । सहसो नाम यहीमें देखा १
भूलिभटकिनरफिरिघरआवै । होतज्ञानसोसबनगँवावै २

चौंतिस अक्षर को विशेष धोखई है काहेते हजार नाम यही चौंतिस अक्षरै में देखै है अर्थात् जे भरि वचन में आवै है ते माया ब्रह्मरूप धोखई है मिथ्याही सो चौंतिसै अक्षर के भीतर सब है अनिर्वचनीय पदार्थ तोको कैसे मिलै १ चौंतिस अक्षरको

विस्तार जो निगम अगम तामें साहब को ज्ञान भूलि भटकिकै जब पार नहीं पावै है तब फिरि थकिकै आपने घटमें आय या कहै है कि एकयेहू नहीं है वेदहु तो " नेतिनेति "कहैहैं तब अपनो स्वरूप में आयो सो साहबके ज्ञान होतही गुरुवालोग भटकाइकै अज्ञान में डारि दिये जौन यह विचार कियो कि ये सब अनिर्वचनीय नहीं हैं सो गँवाय दियो अनिर्वचनीय धोखाब्रह्महीको मानत भये ॥ २ ॥

खोजहिं ब्रह्मविष्णुशिवशक्ती।अमितलोकखोजहिंबहुभक्ती ३
खोजहिंगणगँधर्वमुनिदेवा । अमितलोकखोजहिंबहुसेवा ४

अनन्त जे लोक हैं तिनमें अनन्त जे ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शक्ति तिनकी भक्ति करिकै वही ब्रह्माण्डन में अनिर्वचनीय को खोजन लगे अरु वही को अनन्तलोकमें बहुत सेवाकरि गन्धर्व, मुनि, देवता खोजनलगे ॥ ३ । ४ ॥

साखी ॥ यती सती सब खोजहीं, मनै न मानै हारि ॥
बड़े बड़े बीर बाचैं नहीं, कहहि कबीर पुकारि ५

और यती सती सब मनमें हारि ना मानिकै वही अनिर्वचनीय जो मायाब्रह्म ताहीको खोजै हैं सो कबीरजी कहै हैं कि मैं पुकारिकै कहौहौं या माया ब्रह्मके धोखाते बड़े बड़े बीर नहीं बाचैं हैं जे कोई बिरले सन्त साहबको जानै हैं तेई बाचैहैं तामें प्रमाण कबीरजीको " रसना रामगुण रमिरमि पीजै । गुणातीत निर्मूल कलीजै ॥ निरगुण ब्रह्म जपौरे भाई । जेहि सुमिरत सुधि बुधि सब पाई ॥ विष तजि राम न जपसि अभागे । काबूड़ेलालचकेलागे ॥ ते सब तरे रामरस स्वादी । कह कबीर बूड़े बकवादी " ॥ ५ ॥

इति पचीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २५ ॥

अथ छब्बीसवीं रमैनी ॥ २६ ॥

चौ० आपुहि करताभे करतारा । बहुबिधि बासन गढ़ै कुम्हारा १

विधना सबै कीन यकठाऊं । अनेक यतनकै बनकबनाऊं २
जठरअग्निमहँदियपरजाली । तामें आपु भये प्रतिपाली ३
बहुत यतनकै बाहर आया । तब शिवशक्ती नाम धराया ४
घरको सुत जो होय अयाना । ताके संग न जाय सयाना ५
सांची बात कहौं मैं अपनी । भया देवाना और कि सपनी ६
गुप्त प्रकट है एकै मुद्रा । काको कहिये ब्राह्मण शुद्रा ७
झूंठ गर्व भूलै मति कोई । हिन्दू तुरुक झूंठ कुल दोई ८
साखी ॥ जिन यह चित्र बनाइया, सांची सूरति द्दारि ॥
कहहि कबिर ते जन भले, चित्रवन्तहिलेहिं बिचारि ९

आपुहिकरताभेकरतारा । बहुबिधिबासनगढ़ैकुम्हारा १
बिधनासबैकीनयकठाऊं । अनेकयतनकैबनकबनाऊं २

विधि जे ब्रह्मा हैं ते अपनेको कर्ता मानि सब साजु जोरि अनेक यतन कै जगत् बनावत भये जैसे कुम्हार दण्ड चक्र सब साजु जोरिकै वासन गढ़ैहै सो कर्तार जो अपने को कर्त्ता मान्यो सो वाकी अज्ञानता है काहे ते कबीरजी कहै हैं कि सबसाजु आगेहि उत्पन्न ह्वैरहीहै कौन नई साज बनाइ कर्तार अपनेको कर्त्ता मानै साजु तो सब आगेकी उत्पन्न भई है सो कहै हैं ॥ १ । २ ॥

जठरअग्निमहँदियपरजाली । तामेंआपुभयेप्रतिपाली ३
बहुतयतनकै बाहर आया । तबशिवशक्तीनामधराया ४

जब महाप्रलय होइजाइहै तब जौनकाल रहिजायहै सो काल सदा शिवरूप है ताके जठर मैं कहे पेटमें अग्नि जो लोकप्रकाश ब्रह्म तामें समष्टि जीव परजालि दिये पराशक्ति को जाल लगाइ दिये अर्थात् अग्नि जो लोकप्रकाश ब्रह्म सो मही हौं यह मानि मायाशबलित होत भयो तामें तीने मायाके प्रतिपाली आपही होत भये अर्थात् जीवनके मानेमात्र माया है ३ सो माया शबलित जो ब्रह्म समष्टि जीवरूप सो अनेक यत्न कहे रामनाम को संसारमुख अर्थ करि पांचौ ब्रह्म आदि सब वस्तु उत्पन्नकै समष्टि

ते व्यष्टि ह्वैकै जगत् उत्पन्न कियो ताको शिवशक्त्यात्मक नाम धरावत भये ॥ ४ ॥

घरकोसुतजो होयअयाना। ताकेसंग न जाहि सयाना ५

सो कबीरजी कहै हैं कि हे जीवो ! ये ब्रह्मादिक तुम्हारही सुत हैं तुमहीं समष्टिते व्यष्टि भये हौ कि जो घरको पूत अयान होइ है ताके संग सयान नहीं जाय है ऐसेही ब्रह्मादिक जे अनेक मत करिकै आपने को कर्ता मानि लिये हैं तिनके संग तुम न लागौ अर्थात् अनेक मतनमें तुम न परौ तुम साहब को जानो ॥ ५ ॥

साँची बात कहौंमैं अपनी। भयादेवाना औरकिसपनी६

सो कबीरजी कहै हैं कि सांचीबात मैं अपनी कहौं हौं अपनी कौनकी मैं नानामतनको छांड़ि साहबको जान्यो है सो तुम नहीं बूझौ हौ औरकी सपनी कहे स्वप्नवत् झूठी नानामतन की बाणी में देवाना कहे बिकल हे जीवो ! ह्वै रहेहौ सो नानामत त्यागि साहब को जानो कहे 'औरकी सुनी' जो या पाठ होय ताको अर्थ या है साँची बात अपनी मैं कहता हूं जो मेरे मतमें साहब को जानता है सोई साँच है या सुनि पुनि और का जो भया सोई देवाना ॥ ६ ॥

गुप्त प्रकट है एकै मुद्रा। काको कहिये ब्राह्मण शुद्रा ७
झूठ गर्ब भूलै मति कोई। हिन्दू तुरुक झूठ कुल दोई ८

सो हे जीवौ ! गुप्त कहे जब समष्टिमें रहे हौ तबहूं और जब प्रकट कहे व्यष्टिमें रहे हौ तबहूं एकही मुद्रा रहे हौ अर्थात् साहिबै के रहे हौ तुम जे नाना मतन में परि नानासाहब मानि ब्राह्मण शूद्र कहते हौ सो झूठे हौ जीवत्व तो एकही है ७ मैं हिन्दू हौं मैं तुरुक हौं यह झूंठो गर्ब करिकै मति कोई भूलौ विचारिकै देखौ तो हिन्दू तुरुक कुल ये दोऊ झूठे हैं तुमतौ साहब के हौ ॥ ८ ॥

साखी ॥ जिन यह चित्र बनाइया, सांची सूरति ढारि ॥

कहहिकबिरतेइजनभले, चित्रवन्तहिलेहिबिचारि६

जिन यह नानाचित्र बनाइया कहे जिन यह जीवको मन नाना शरीर जगत् में बनायोहै तौनेको सूत्रधारी साहब साँचो है जौन सबको सुरतिदियो है सो कबीरजी कहैहैं चित्रवन्त जो या मन नानादेह देनेवालो थाको जो कोई बिचारि लियो कि या मिथ्या है और साँच साहबको जानिलियो ते जन भले हैं ॥६॥

इति छब्बीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २६ ॥

अथ सत्ताईसवीं रमैनी ॥ २७ ॥

चौ० ब्रह्मा को दीन्हों ब्रह्मण्डा । सात द्वीप पुहुमी नौखण्डा १

सत्य सत्यकै बिष्णु दृढ़ाई । तीनिलोकमहँ राखिनि जाई २

लिङ्गरूप तब शंकरकीन्हा । धरती कीलि रसातल दीन्हा ३

तब अष्टङ्गी रची कुमारी । तीनिलोक मोहनिसबझारी ४

द्वितियानामपार्वति भयऊ । तपकरता शंकर को दयऊ ५

एकै पुरुष एक है नारी । ताते रचिनि खानि भौ चारी ६

शर्मन वर्मन देवो दासा । रजगुण तमगुण धरणि अकाशा ७

साखी ॥ एक अण्ड ॐकारते, यह जग सब भयो पसार ॥

कहकबीर सबनारिरामकी, अबिचलपुरुषभतार ८

ब्रह्माको दीन्हों ब्रह्मण्डा । सातद्वीपपुहुमी नौखण्डा १

सत्यसत्यकै बिष्णु दृढ़ाई । तीनिलोकमहँराखिनिजाई २

अष्टाङ्ग कौन है "भूमिरापोनलोवायुःखंमनोबुद्धिरेवच । अहंकारइतीयंमेभिन्नाप्रकृतिरष्टधा" ऐसी जो इच्छारूपी नारि अष्टाङ्गी सो ब्रह्माको ब्रह्माण्ड देतभई और सातद्वीप नवौखण्ड पृथ्वी विष्णुको दैकै तीनिलोकमें राखिनि कहे व्यापक करिदेत भई और विष्णुको नाम सत्य धरावत भई सो आठ नाम में प्रसिद्ध है "हरिः सत्यो जनार्दनः" सो जब ब्रह्मा विष्णु दोऊ अपने अपने को मालिक मानि लरे तब महादेवजी कह्यो कि हम लिङ्ग बढ़ावै हैं जोई अन्त लैआवै सोई बड़ो ॥ १ । २ ॥

लिङ्गरूपतबशङ्करकीन्हा। धरतीकीलरसातलदीन्हा ३

तब महादेवजी सातलोक नीचे के सात ऊंचे के तामें कीलवत् लिङ्ग बढ़ावत भये ब्रह्मा, विष्णु, दोऊको पठयो कि जाय अन्त लै आवो सो विष्णु जायके या कह्यो कि हम अन्त नहीं पाये ब्रह्मा कह्यो हम अन्त लै आये सुरभी के दूधते नहवायो, केतकी के फूलते पूज्यो है सो सुरभी और केतकी साखी हैं तब महादेवजी तीनोंको झूठा जानि तीनोंको शापदियो ब्रह्माको कह्यो लोकमें अपूज्य होउ, सुरभीको कह्यो तुम्हारो मुख अशुद्ध होइ, केतकी को कह्यो हम पर न चढ़ो और विष्णुको प्रसन्न ह्वैकै या कह्यो कि तीनलोक में पूज्य होउ तुम सत्य कह्योहै यह पुराणन में कथा प्रसिद्ध है॥ ३॥

तबअष्टङ्गीरचोकुमारी । तीनिलोकमोहनिसबझारी ४
द्वितियानाम पार्बतिभयऊ। तपकरताशंकरकोदयऊ ५

तब अष्टङ्गी जो कारणरूपा शक्ति सो प्रसन्न ह्वैकै तीनि लोककी मोहनहारी कुमारी सती रचिकै तप करता जे दक्ष हैं तिनके द्वारा महादेवजीको देत भई तौनेहीको दूसरो पार्वती नाम भयो॥४।५॥

एकै पुरुष एक है नारी। ताते रचिनि खानि भै चारी ६
शर्मनवर्मनदेवोदासा। रजगुणतमगुणधरणिअकासा ७

एकै पुरुष जो है ब्रह्म अरु एकै नारी जो है माया ताते चारि खानिके जीव उत्पन्न होतभये अण्डज, पिण्डज, स्वेदज, उद्भिज ६ और शर्मन, वर्मन, देवो, दासा कहे शर्मन ब्राह्मण, वर्मन क्षत्रिय, देवो वैश्य, दासा शूद्र अथवा शर्मन कहे श्रोता, वर्मन कहे वक्ता, अरु देवता व उनके दास रजोगुणी, तमोगुणी व धरती और आकाश होतभये॥ ६। ७॥

साखी॥ एकअण्ड ओंकारते, यह सब जगभयो पसार॥
कहकबीरसबनारिरामकी, अविचलपुरुषभतार ८

मङ्गलमें पांच ब्रह्म पांच अण्डमें राख्यो है या कहि आये हैं

सो तामें शब्द ब्रह्मरूप जो है अखण्डप्रणवता प्रतिपाद्य जो ब्रह्म सो माया शबलित ह्वै इच्छा आदि अष्टाङ्गी उत्पन्नकै जगत् पैदा कियोहै सो कबीरजी कहैहैं कि धोखा वही है प्रणवप्रतिपाद्य श्रीरामचन्द्रही हैं काहेते रामनामहीके जगत्मुख अर्थते प्रणव प्रकटभयो है ताते प्रणवप्रतिपाद्य श्रीरामचन्द्रही हैं यह रामनाम को साहबमुख अर्थ रामतापिनीमें प्रसिद्धहै ताते हे जीवो! तुम सब रामचन्द्रहीकी नारी हौ अविचल कहे न चलायमान निर्विकार सदा एकरस ऐसे भतार कहे स्वामी तुम्हारे श्रीरामचन्द्रही हैं जीव चित्शक्ति माया अष्टाङ्गीआदि अचित् शक्ति ई दूनों शक्ति उनहींकी हैं याते पति श्रीरामचन्द्रहीहैं इहां कबीरजी माया में सब परेहैं या देखाय साहबको लखायो इहां सब जीवनको या देखायो कबीरजी कि तुम रामकी नारी हौ और पुरुष करौगी तो मारी जाउगी ॥ ८ ॥

इति सत्ताईसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २७ ॥

अथ अट्ठाईसवींरमैनी ॥ २८ ॥

चौ० असजोलहाकामर्मनजाना । जिनजगआइपसारलताना १
महि अकाश दुइ गाड़ बनाई । चन्द्र सूर्य दुइ नरा भराई २
सहस तार लै पूरिन पूरी । अजहूं बिनय कठिन है दूरी ३
कहहिं कबीर कर्मसों जोरी । सूत कुसूत बिनय भल कोरी ४

असजोलहाकाकर्मनजाना । जिनजगआयपसारलताना१
महिअकाशदुइगाड़बनाई । चन्द्र सूर्य दुइ नरा भराई२

यहि भांतिको जोलहा जो मन है जौन जगत् में ताना पसार्‍यो है कहे बाणी पसार्‍यो है ताको मर्म कोई न जानत भयो भतार श्रीरामचन्द्रको भूलिगये धोखाब्रह्म नानापति खोजन लग्यो १ महि और आकाश कहे अर्ध ऊर्ध्व दुइ गड़वा बनावत भये तामें चन्द्र सूर्य इड़ा पिङ्गला हैं तिनकर नरा भरावत भये ॥ २ ॥

सहसतारलै पूरिनपूरी । अजहूं बिनय कठिन है दूरी ३

कहहिं कबीर कर्मसोंजोरी। सूत कुसूत बिनयभलकोरी ४

अरु तार जो है प्रणव ताको हज़ारन दोनों कुम्भक में जपत भये अजहूं लों वाहीमें लगेहैं और यह कहै हैं कि कठिन दूरि है ३ कबीरजी कहैहैं जब तानाको ताग टूटि जाइहै तब कोरी भिजैकै जोरि देइहै ऐसे वह साधक अभ्यासरूप कर्मते जोरि देइ है सो कर्मको लाठिनमें बांधिकै सूत जो है जीव कुसूत जो है वाणी ताको जोलहा जो मन है सो बिनय है अथवा विद्या-अविद्या सूत कुसून बिनय है जब वस्तु तैयार होइजाय है तब जोलहाको बिनिबो छूटैहै सो धोखाब्रह्ममें लागि अनादिकालते बिनतईहै जब साहबको जानै तब साधनरूप कर्म करिबो छूटिजाइ हंसरूप साहब देइ जरामरण मिटिजाइ ॥ ४ ॥

इति अट्ठाईसवींरमैनीसमाप्तम् ॥२८॥

अथ उनतीसवींरमैनी ॥ २९ ॥

चौ० बज्रहु ते तृण क्षण में होई। तृणते बज्र करै पुनि सोई १
निझरूनरू जानि परिहरई। कर्मकबांधल लालच करई २
कर्म धर्म बुधिमति परिहरिया। झूठानाम सांचलै धरिया ३
रजगति त्रिबिध कीन परकाशा। कर्म धर्म बुधिकेर बिनाशा ४
रबिके उदय तारा भो छीना। चरबेहर दोनों में लीना ५
बिषकेखाये बिष नहिं जावै। गारुड़सोइ जो मरतजिआवै ६
साखी ॥ अलखजोलागी पलकमों, पलकाहिमोंडसिजाय ॥
बिषहर मन्त्र न मानही, गारुड़ काह कराय ७

बज्रहुते तृण क्षणमें होई। तृणते बज्र करै पुनि सोई १
निझरूनरूजानिपरिहरई। कर्मकबांधललालचकरई २

बज्रहु तृण क्षण में करिदेइ है अरु तृणते बज्र करिदेइ है ऐसे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को जानो १ निझरूनरू कहे जिनको माया ब्रह्म को धोखा निझरि गयो कहे मिटि गयो ऐसे जे नर हैं

ते पूरा गुरु पाइकै परम पुरुष जे श्रीरामचन्द्र तिनको जानिकै सम्पूर्ण जगत् के कर्म त्यागिदेयँ हैं और जे कर्ममें बँधेहैं ते अनेक लालच करै हैं कोई द्रव्यादिक की कोई ब्रह्म मिलन की कोई ईश्वरन की ॥ २ ॥

कर्मधर्मबुधिमतिपरिहरिया। झूठानामसांचलैधरिया ३
रजगतित्रिबिधिकीनपरकाशा।कर्मधर्मबुधिकेरबिनाशा ४

साहबके मिलनवारो जो कर्म धर्म बुधि है ताको त्यागि देते भये झूठे झूठे जे देवता हैं तिनको नाम सांच मानिकै जपत भये ३ गुरुवालोग रजोगुणी, तमोगुणी, सतोगुणी तीन प्रकार के मत प्रकाशकैके साहब के मिलनवारो जो कर्म-धर्म बुधि है ताको नाश करि देत भये ॥ ४ ॥

रबिके उदय तारा भो छीना। चरबेहरदोनों में लीना ५
बिषके खाये बिषनहिंजावै। गारुड़सोजोमरतजिआवै ६

गुरुवालोग हे जीवो! तुमको उपदेश देयँ हैं जैसे सूर्य के उदय मों ताराको तेज क्षीण ह्वैजाय है ऐसे जब ज्ञान भयो जीवत्व मिट्यो तब चर और बेहर जो अचर ये दोनों में लीन ह्वैजाय है चर अचर ब्रह्मरूपते आपनेनको मानै है ५ सो साहब कहै हैं कि हे जीवो! ऐसो उपदेश जो गुरुवालोगोंने तुम्हें दियो सो ठीक नहीं है काहेते कि संसार विष उतारिबे को तुम धोखा ब्रह्म में लगे हौ सो विषके खाये विष नहीं जाइहै यह धोखा ब्रह्म विषरूपै है संसार देनवारोहै गारुड़ सो कहावैहै जो मरत में जिआइ लेइ सो मेरो ज्ञान धोखाब्रह्म विषते बचाइ काज़ते बचाइ लेइ ताको जानो ॥ ६ ॥

साखी॥अलखजोलागीपलकमों, पलकाहिमोंडसिजाय॥
बिषहरमन्त्र न मानही, गारुड़ काह कराय ७

अलख जो वह ब्रह्म है सो सबके पलकमें लाग्यो है अर्थात् पल पल में ध्यान करै है और एक पलही में डसिजाय है

अर्थात् जो गुरुवनके मुँहते कढ़्यो सो पलै में वा ज्ञान लगिजाय है सो साहब कहै हैं । कि तैं मेरो है मेरी तरफ़ आउ यहि विष को हरनवारो जो ज्ञान ताको तो मानत ही नहीं है मैं जो गारुड़ सो काह करौं ॥ ७ ॥

इति उनतीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ २९ ॥

अथ तीसवीं रमैनी ॥ ३० ॥

चौ० औ भूले षटदरशन भाई । पाखँडबेष रहा लपटाई १
जीवसीवका आयनसौना । चारो बद्ध चतुरगुण मौना २
जैनी धर्मक मर्म न जाना । पाती तोरि देव घर आना ३
दवना मरुआ चम्पा फूला । मानो जीव कोटि समतूला ४
औ पृथिवी को रोम उचारै । देखत जन्म आपनो हारै ५
मन्मथ बिन्दुकरै असरारा । कलपै बिन्दु खसै नहिं द्वारा ६
ताकर हाल होय अघकूचा । छा दरशन में जौन बिगूचा ७
साखी ॥ ज्ञान अमरपद बाहिरे, नियरेते है दूरि ॥
जो जानै तेहि निकटहै, रह्यो सकल घट पूरि ८

औभूले षट दरशन भाई । पाखँडबेष रहा लपटाई १
जीवसीवका आयनसौना । चारोबद्ध चतुरगुण मौना २

पाखण्ड वेष जो धोखाब्रह्म सो सर्वत्र लपटाइ रह्यो है ताही में षट्दर्शन जे हैं तेऊ भूलिगये १ यह जो धोखाब्रह्म को ज्ञान है सो जीव जो है ताको सीव जो कल्याण है सो नशावनवारो है और चारों प्रकारके जीव जे हैं तेऊ बद्ध हैं जे चतुर हैं ते गुणमौना कहे गुणातीत हैं परन्तु वोऊ धोखाब्रह्मही में हैं ॥ २ ॥

जैनी धर्मक मर्म न जाना । पाती तोरि देव घर आना ३
दवना मरुआ चम्पा फूला । मानो जीवकोटि समतूला ४

अरु जैनी जे नास्तिक हैं ते धर्म को मर्म नहीं जान्यो काहेते कि बांधे तो मुँहै पट्टीरहै हैं कि कहूं किरवा न घुसिजाय जीवको

बचावैहैं कि हिंसा हम न करैंगे सो जिन वृक्षनमें जीव हैं तिनकी पातीको तोरिकै पाषाण जे पारसनाथ देव हैं तिनमें चढ़ावै हैं ३ दवना व मरुआ और चम्पाके फूल को तोरिकै कोटिन जे जीव हैं ते सूंघिकै अघाय हैं तिनको तोरि तोरिकै पारसनाथकी मूर्ति में चढ़ावै हैं सो अरे मूढ़ो! प्रत्यक्ष जे जीव वृक्ष हैं तिनके पत्रको तोरि कै जड़ जो पाषाण है तामें काहे को चढ़ाओ हौ तुम तो प्रत्यक्ष प्रमाण मानो हौ कर्म किये फल होय है या मानतही नहीं हौ पाषाण पूजे कहा फल होयगो ॥ ४ ॥

औ पृथिवीको रोम उचारै। देखत जन्म आपनो हारै ५
मन्मथ बिन्दु करै असरारा। कलपैबिन्दुखसै नहिंद्वारा६
ताकरहालहोय अघकूचा। छादरशनमें जौनबिगूचा ७

और पृथ्वी के रोमा जे हैं वृक्ष तिनको चेलनते उखरावै हैं और शिष्यनकी स्त्रिनको देखिकै भोग करिकै अपनो जन्म हारि-देइहैं कहे नरकको जायहैं ५ साधन करिकै मन्मथ के बिन्दु को असरार कहे सरल करैहैं और कन्यन ते भगिनी नाते और उनकी स्त्रिन ते भोग करै हैं तब वह बिन्दु ऊपरते नीचेको कलपत है कहे बढ़त है और पुनि नीचेते मेरु दण्ड ह्वैकै ऊपरको चढ़ाइ लेजाइहै ६ सो जे जैनधर्मी हैं छः दर्शन में बिगूचा कहे भूलि गये हैं तिनकी और जिनको कहिआये हैं वीर्य बढ़ावनवारे तिनको हाल अघकूचा कहे नरकनमें कूचे जाइ हैं ॥ ७ ॥

साखी ॥ ज्ञान अमरपद बाहिरे, नियरेते है दूरि ॥
जो जानै तेहि निकट है, रह्योसकलघटपूरि ८

अमरपद कहे आत्माको जो स्वस्वरूप है सो साहबको अंश है दास है सोई अमर है ताको ज्ञान नियरेते दूरि है और बाहिरे है इहां नियरेते दूरि कह्यो ताते अपने को ज्ञान नहीं है और बाहिरे है कहे बहुत दूरि देखि परैहै परन्तु जो सतगुरु भेद बतावै है तो ज्ञान होइहै आत्मा के स्वरूपको जानैहै ताको साहब

निकटही है काहे घट घट में तो पूर्ण है तो आत्माके निकटै है॥८॥

इति तीसवींरमैनीसमाप्तम्॥ ३० ॥

अथ इकतीसवीं रमैनी ॥ ३१ ॥

चौ० स्मृति आहि गुणनको चीन्हा। पापपुण्यको मारग लीन्हा १
स्मृति वेद पढ़ै असरारा। पाखण्डरूप करै अहँकारा २
पढ़ै बेद औ करै बड़ाई। संशय गाँठि अजहुँ नाहिं जाई ३
पढ़िकैशास्त्रजीव बध करई। मूड़ काटि अगमनके धरई ४

साखी॥ कह कबीर पाखण्डते, बहुतक जीव सताय ॥
अनुभवभाव न दर्शई, जियत न आपु लखाय ५

स्मृतिआहिगुणनको चीन्हा। पापपुण्यकोमारगलीन्हा १
स्मृति वेद पढ़ै असरारा। पाखँडरूप करै अहँकारा २

स्मृति कहे स्मृति गुणनको चीन्हा आप कहे तीनोंगुण स्मृति में देखिपरै काहेते कि पाप पुण्यको मार्ग कीन्हे हैं अर्थात् पाप पुण्य के मार्ग वहीते जानिपरै हैं १ रा रा जो जीव स्मृति वेद को अस पढ़त है पाखण्डरूप ह्वैके या अहंकार करै है जानिबेके लिये नहीं पढ़ै है अर्थात् हम विद्यामें जीतै कोई विद्यावान् जानि हमैं मानै चेला होइ इत्यादि कछू आपनै पढ़ै है ॥ २ ॥

पढ़ै बेद औ करै बड़ाई। संशय गांठि अजहुँ नहिं जाई ३
पढ़िके बेद जीव बध करई। मूड़काटि अगमन कै धरई ४

बेद पढ़ै है सब देवतन की बड़ाई कहे स्तुति करै है अथवा अपनी बड़ाई करै है कि महापण्डित हौं संशयकी गांठि जो परि गई है सो अजहूं नहीं जाइहै वेदान्तशास्त्र आदि पढ़ै है आत्मा सर्वत्र है या कहै है पै चैतन्य जो जीव है ताको मूड़ काटिकै पाषाणकी मूर्ति है ताके आगू धरै है॥ ३ । ४ ॥

साखी॥ कह कबीर पाखण्डते, बहुतक जीव सताय ॥
अनुभव भावन दर्शई, जियत न आपु लखाय ५

कबीरजी कहै हैं कि यहि पाखण्डते बहुत जीवन को सतावत भये उनको अनुभवको भाव नहीं दरशै है कि जैसे हम मारै हैं तैसे येऊ हमको मारैंगे जबभर जिये हैं तबभर अपनी इच्छा नहीं करै हैं जेहिते बचैं ॥ ५ ॥

इति इकतीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ३१ ॥

अथ बत्तीसवीं रमैनी ॥ ३२ ॥

चौ० अन्ध सो दर्पण बेद पुराना। दरवी कहा महारस जाना १
जस खर चन्दन लादेभारा। परिमलबास न जान गँवारा २
कह कबीरखोजै असमाना। सोनमिलाजेजायअभिमाना ३

जैसे आँधरको दर्पण वह आपनो मुख कहादेखै और दरवी जो करछुली है सो पाकके रसको कहाजानै १ और गदहा चन्दनको लादे चन्दनकी सुबास कहाजानै तैसे गँवार जे हैं ते वेद पुराणको तात्पर्यार्थ जे साहब हैं तिनको कहा जानैं जो गरवीपाठ होय तो या अर्थ है अहंकारीलोग मधुररसको का जानैं २ सो कबीरजी कहै हैं कि आसमान जो निराकार धोखाब्रह्म ताको खोजै हैं सो वातो झूठई है सो पुरुष याको न मिला जाके उपदेशते अहंब्रह्म को अभिमान जाय और साहब को जानिलेय ॥ ३ ॥

इति बत्तीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ३२ ॥

अथ तेंतीसवीं रमैनी ॥ ३३ ॥

चौ० बेदकी पुत्री स्मृति भाई। सो जेवरि कर लेतै आई १
आपुहि बरी आपु गरबन्धा। झूठी मोह कालको धन्धा २
बँधवतबन्ध छोड़ि ना जाई। बिषयस्वरूपभूलिदुनियाई ३
हमरे लखतसकलजग लूटा। दासकबीर राम कहि छूटा ४

साखी ॥ रामहि राम पुकारि ते, जीभ परोगोरोस ॥
सूधा जल पीवै नहीं, खोदि पियनकी होस ५

बेदकी पुत्री स्मृति भाई। सो जेवरि कर लेतै आई १

यहां कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड और ज्ञानकाण्ड ये तीनों

की कठिनता देखाइ तात्पर्यवृत्तिते छुड़ाइ साहब में लगावै है क-
बीरजी कहैहैं कि हे भाइउ! जौनी स्मृति को कर्म प्रतिपादक अर्थ
करि कर्मरूप जेवरी में तुम बँधिगयेहौ स्मार्त भये हौ सो स्मृति
वेदकी पुत्री है तौने वेदहीको अर्थ तुम नहीं जानतेहौ धौं वाको
तात्पर्य कर्मके छुड़ाइबेमें है धौं कर्मके बांधिबे में है तो स्मृतिको
अर्थ कब जानोगे सो वेदको तात्पर्य तो कर्मते छुड़ायबेहीं में है
कैसे जैसे जीवनकी मांसमें आसक्ति स्वभावईते है वैसे छोड़ावै
तो न छूटै ताते वेद नियम बतावैहै कि मांस खाय तो यज्ञमें खाय
ताते या आशो कि जब बहुत श्रम करि बहुत द्रव्यलगाय यज्ञ
करैगो तब थोड़ा मांस विना स्वादका पावैगा तामें या बिचारैगो
कि या थोड़े मांस विना स्वादके खाये यामें कहाहै या विचारि
मांस छोड़ि देयगो या भांति कर्मकाण्ड को तात्पर्य निवृत्तिही में
है और स्मृति नाना देवतनकी उपासना कहैहैं सो उन पूजनकी
यन्त्र मन्त्र की पुरश्चरणकी विधि कठिनहै जो करतमें सिद्धभयो
तो उनके लोकको गयो जो कछू बीच परिगयो तो बैकलाइकै
मरिजाइ है या भांति उपासनाकाण्डको तात्पर्य निवृत्तिही में है
और स्मृति ज्ञानकाण्ड जो कहै हैं सो मनको साधन कठिन है
काहेते कि जो "अहंब्रह्मास्मि" मान सर्व कर्मनको त्यागिदियो
और दूसरी बुद्धि न गई तो पतित ह्वै जाय है तामें एक इतिहास
है एक राजाके गोहत्या लगी सो हत्या आई तब राजा कह्यो कि
सर्वत्र ब्रह्महीहै हमहूं ब्रह्म हैं हमको हत्या काहेको लगैगी हाथके
देवता इन्द्र हैं सो इन्द्रही को लगैगी इत्यादिक जवाब देतभयो
तब वह हत्या राजाकी बेटीके पास गई सो वो श्रृंगारकरि रानी
के पलँगमें परिरही तहां राजा आये कन्याको परी देखी तब कह्यो
कि तू कहां परीहै तब कन्या ने कह्यो जैसे रानी तैसे मैं ब्रह्म तो
एकहीहै तब राजा उलटिचले हत्या राजाके शिर में चढ़िबैठी या
भांति ज्ञानकाण्डहू को तात्पर्य निवृत्तिही में है कि जौनसरल उ-
पाय वेद तात्पर्यकैकै बतावै है कि मनादिकन को छांड़िकै राम-

नाम को जपै साहबको है जाय तो मुक्ति-ह्वैजाय तामें प्रमाण "द्वापरान्ते नारदो ब्रह्माणं प्रति जगाम कथं नु भगवन् गां पर्यटन्कलिं स तरेयमिति सहोवाच भगवत् आदिपुरुषस्य नारायणस्य नाम्नेति नारदः पुनः पप्रच्छ भगवतः किंतन्नामेति सहोवाच हरेराम हरेराम रामरामहरेहरे" (इतिश्रुतिः) आदिपुरुष भगवान् नारायणके नाम हैं उद्धार करनवारे सो नारायणनाम सुनावहू कियो और पूछ्यो कि कौन नाम है तब रामनाम को बतायो तेहिते उद्धारकर्त्ता रामनामही है पुनि स्मृतिहू कहै है "सप्तकोटि महामन्त्राश्चित्तविभ्रमकारकाः। एकएवपरोमन्त्रो रामइत्यक्षरद्वयम्" ताते वेदको तात्पर्य कर्मकाण्ड—उपासनाकाण्ड—ज्ञानकाण्ड तीनों के त्यागमें है साहबके मिलायबे में है तामें प्रमाण "सर्वे वेदायत्पदमामनन्ति" (इतिश्रुतिः) और कबीरजीहू ने कह्यो है कि वेदको अर्थ उलटिकै कहे तात्पर्यते समुझै तो तौने अर्थ वेद को सांच है अपरोक्ष अर्थ तो झूठो है तामें प्रमाण "दौरधूप सब छोड़ो सखिया, छोड़ो कथापुरान। उलटि वेदका भेदलखौ, गहि सारशब्द गुरुज्ञान" दूजो प्रमाण "आसन पवन किये दृढ़रहुरे। मनको मैल छांड़ि दे बौरे॥ का शृङ्गी मूड़ा चमकाये। क्या बिभूति सब अङ्गलगाये॥ क्या हिन्दू क्या मूसलमान। जाको साबित रहै इमान॥ क्या जो पढ़िया वेदपुरान। सो ब्राह्मण बूझै ब्रह्मज्ञान॥ कहैं कबीर कछु आनन कीजे। रामनामजपिलाहालीजे" सो स्मृति में जो तुमको नाना अर्थ भासमान होय हैं सोई बन्धन रूप जेवरि कमरमें लेते आई है सो वा जेवरि तुम्हारीही बरी है॥१॥

आपुहि बरी आपु गरबन्धा। झूठा मोह कालको धन्धा २

सो आपही स्मृतिको कर्मप्रतिपादनकरि कर्मरूप रसरी बरिकै आपही गर बांधत भयो अर्थात् कर्म करनलग्यो झूठा जो मोह है तामें परिकै कालको धन्धा बनावत भयो अर्थात् नानादेह धरत भयो काल मारत भयो साहबको जो तात्पर्य ते स्मृति बतावै है ताको मास बुझावत भयो॥ २॥

बँधवतबन्धछोंड़िनजाई। विषयस्वरूपभूलिदुनिआई ३
हमरेदेखत सबजगलूटा। दासकबीर रामकहि छूटा ४

सो बांध तो बांध्यो पै वह बन्धते छोड़यो नहीं छूटै है विषय में सब दुनिया भूलिगई मांस खाइबे को चाह्यो तो छागर मारि बलिदानदै खाइलियो और सुरापानहू करिबेको चाह्यो और वेश्या राखिबो चाह्यो तो बाममार्गीलियो इत्यादिक अर्थ करिकै ३ सो कबीरजी कहै हैं कि हमारे देखत देखत यह माया सम्पूर्ण जगको लूटिलियो सो मैं तो रामै कहिकै छूटिगयो सो मैं सबको बताऊं हौं सो दुष्टजीव नहीं मानै ॥ ४ ॥

साखी ॥ रामहिं राम पुकारते, जीभ परी गोरोस ॥
सूधा जल पीवै नहीं, खोदिपियनकीहोस ५

मोको रामै राम पुकारत पुकारत कि राम में लगो जीभ में रोस परिगयो कहे ठहर परिगयो पै जीव न मानतभये सो सूधा जल तो पीवै नहीं है कि सीधे राम कहै तरिजाय वही धोखाब्रह्म में लगाइकै नानामत दक्षिण बामादिक करिकै खोदिकै जलपियन की होस करैहै कहे आशा करै है सो ये तो सब धोखाही है मुक्ति कैसे होयगी ? सीधे रामजपि स्वामी सेवक भावकरि संसारसागर ते उतरि काहे नहीं जाय है ॥ ५ ॥

इति तैंतीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ३३ ॥

अथ चौंतीसवीं रमैनी ॥ ३४ ॥

चौ० पढ़िपढ़िपण्डितकरिचतुराई। निजमुक्तिहिंमोहिं कहहुबुझाई १
कहँबसैपुरुषकवनसो गाऊँ। सोम्वहिं पण्डितसुनावहु नाऊँ २
चारि वेद ब्रह्मा निज ठाना। मुक्तिक मर्म उन्हौं नहिं जाना ३
दानपुण्य उन बहुतबखाना। अपनेमरनकि खबरि न जाना ४
एक नाम है अगम गँभीरा। तहवाँ अस्थिर दास कबीरा ५
साखी ॥ चींटी जहां न चढ़ि सकै, राई नहिं ठहराय ॥

आवागमन कि गम नहीं, तहँ सकलौ जगजाय ६

पढ़िपढ़िपण्डितकरिचतुराई।निजमुक्तिहिंमोहिंकहहुबुझाई१
कहँबसैपुरुषकवनसोगाऊँ।सोमोहिंपण्डितसुनावहुनाऊँ२

हे पण्डितौ! पढ़ि पढ़ि के चतुराई करौ हौ सो अपनी मुक्ति तो समुझाइ कहौ कहांते तिहारी मुक्ति होइहै जौनेको मुक्ति मानेहौ सो ब्रह्म धोखा है १ अरु वह ब्रह्मलोक प्रकाश है सो जाके लोक को प्रकाश है सो वह पुरुष कहां बसै है ताको गाउँ कौन है सो मोको बतावो अरु वाको नाउँ बतावो वह कौन है॥ २॥

चारिवेदब्रह्मानिजठाना। मुक्तिकमर्मउन्हौं नहिंजाना ३

चारिवेद को हम कियो है और हमही जानेहैंहमहींपढ़ेहैंयह ब्रह्मा मानत भये पै वेद को तात्पर्यार्थ मुक्तिको मरम वोऊ न जानत भये काहेते कि जो जानते तो रजोगुणी अभिमानी ह्वैकै जगत्की उत्पत्ति काहेको करते ब्रह्महूको भ्रम भयो है सो प्रमाण मङ्गलमें कहिआये हैं तो पण्डित कहाजानै वही धोखामें पण्डित लोग लगावतभये कि वह जो ब्रह्म सर्वत्र पूर्ण है सो तुहीं है "अहंब्रह्मास्मि" यह भावना करु सो वातो जीवही अनुभव है जीव ब्रह्म कैसे होइगो अरु पण्डित कहां बतावै वाको तो अनामा कहै हैं अरु वाको वस्तु गाउँ कहां बतावैं वाको तो देश काल वस्तुने रहित कहै हैं सो जाके नामरूप नहीं है देश काल वस्तुते रहितई है सो वह है कि नहीं है जो कहौ अनुभवमें तो आवै है तबतो अनुभवौ तो जीवहीको है जो यह बिचारिबो धोखाई भयो तो जीवब्रह्म कैसे होइगो॥ ३॥

दानपुण्यउनबहुतबखाना।अपनेमरनकीखबरिनजाना ४
एक नाम है अगमगँभीरा। तहवां अस्थिर दासकबीरा ५

अरु कर्मकाण्डवारे दान पुण्य बहुत बखान्यो है पै अपने मरिबे की ख़बरि नहीं जान्यो कि यह काल बहुत दान पुण्यवारेन को खाइ लियो है हम कैसे बचैंगे ४ जौने नाममें लगे जन्म मरण

नहीं होइ है और अगमहै कहे जे सन्तलोग हैं तेई पावै हैं अरु गम्भीर पद है कहे गहिर अर्थ है सो कबीरजी कहै हैं कि तौने नाम में मैं स्थिर हौं ॥ ५ ॥

साखी ॥ चींटी जहां न चढ़ि सकै, राई नहिं ठहराय ॥
आवागमनकी गम नहीं, तहँसकलौजगजाय६

वो ब्रह्म कैसो है कि चींटी जो वाणी है सो नहीं पहुँचै और राई जो बुद्धि है सो नहीं ठहराय अर्थात् मन वचन के परे है और आवागमन की गम नहीं है अर्थात् न वहांते कोई आवै है न यहां ते कोई जाय है अर्थात् मिथ्या है तहां सिगरो जग जाय है ॥ ६ ॥

इति चौंतीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ३४ ॥

अथ पैंतीसवीं रमैनी ॥ ३५ ॥

चौ० पण्डित भूले पढ़ि गुण बेदा । आपु अपनपौ जानु न भेदा १
संध्या तर्पण औ षटकर्मा । ई बहुरूप करहिं अस धर्मा २
गायत्री युग चारि पढ़ाई । पूछहु जाइ मुक्ति किन पाई ३
और के छुये लेतहौ सींचा । तुमते कहौ कौनहै नीचा ४
यहगुणगर्बकरौ अधिकाई । अतिकेगर्ब न होइ भलाई ५
जासु नाम है गर्वप्रहारी । सो कस गर्वहि सकै सिहारी ६

साखी ॥ कुल मर्यादा खोइकै, खोजिनि पद निर्बान ॥
अंकुर बीज नशाइकै, भये बिदेही थान ७

पण्डित भूलेपढ़िगुणबेदा । आपु अपनपौ जानु न भेदा१

पण्डित जे हैं ते गुण भेद कहे त्रैगुण्यविषयक जो वेद है ताको भूलिगये कहे वेदको तात्पर्य त्रैगुण्य जानत भये कौन तात्पर्य न जान्यो सो कहै हैं कि न आपको जान्यो कहे अपने स्वस्वरूपको न जान्यो कि मैं साहबको अंश हौं और अपनपौ न जान्यो कहे याके प्रियसखा साहबहैं तिनहीं ते जीवको अपनपौ है तिनको न जान्यो यह देश बोली है कि फलानेसों अपनपौ है

कहे सख्य है अरु जीव साहबको सखा है तामें प्रमाण "द्वासुपर्णास्युजायाया" (इति श्रुतेः) ॥ १ ॥

संध्या तर्पण औ षटकर्मा । ईबहुरूपकरहिं असधर्मा २
गायत्री युग चारि पढ़ाई । पूछहु जाइ मुक्ति किन पाई ३

अरु संध्या तर्पण और षट्कर्म[1] इनहीं आदि दैकै बहुरूप कहे बहुतभाँति के जे धर्म हैं तिनको करे हैं २ अरु साक्षात् वेदमाता गायत्री ताको चारियुग में ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य उपदेश पावै है कहो मुक्ति कोहिको भई है काहेते वाको तात्पर्य तो यह है कि जब साहब को स्वरूप अरु आपनो स्वस्वरूप जानै तो मुक्ति होइ सो साहबको स्वरूप और आपनो स्वस्वरूप तो जानतई नहीं है मुक्ति कैसे पावै ॥ ३ ॥

और के छुये लेतहौ सींचा । तुमते कहौ कौन है नीचा ४
यह गुणगर्व करौ अधिकाई । अतिकेगर्व न होइभलाई ५
जासु नाम है गर्वप्रहारी । सो कसगर्वहिसकै सिहारी ६

और को छुवौहौ तो गङ्गाजल सींचौ हौ कि पवित्र है जाय सो कहो तुमहीते कौन नीच है ४ मल मूत्रादिक तुमहीं में भरेहैं और अपने गुणको गर्व अधिक तुम करतेहौ सो अतिगर्व किये भलाई नहीं होइहै काहेते कि ५ जाको नाम गर्वप्रहारी है सो कैसे गर्व को सिहारि सकै यह जो परमपुरुष है सो गर्वप्रहारी है तिहारो गर्व कैसे सहैगो ॥ ६ ॥

साखी ॥ कुल मर्यादा खोइकै, खोजिनिपदनिर्बान ॥
अंकुर बीज नशाइकै, भये बिदेही थान ७

जे कर्मको त्याग किये हैं तिनको गांठिहूको धर्म गयो आपनी कुल मर्यादा तो पहिले खोइ दियो है और निर्बानपदको खोजत भये अंकुर जो है सुरति बीज जो है शुद्धजीव आत्माबीज जो

---

१ "इज्याध्ययनदानानि याजनाध्यापने तथा । प्रतिग्रहश्च तैर्युक्तः षट्कर्मा विप्र उच्यते" (इति स्मृतिः) ॥

है साहब ताको नशायके बिदेही जोहै ब्रह्मनिराकार ताहीके थान भये कहे आपनेकोब्रह्म मानतभये सो जाको अनुभवहै ब्रह्म ताको तो भूलिहीगये बिना अंकुरवाले कैसे होइगो अर्थात् धोखही में परे राहिगये वामें कुछ नहीं मिलै है तामें प्रमाण कबीरजी को "अंकुर बीज जहां नहीं, नहीं तत्त्व परकाश । तहां जाय का लेउगे, छोड़हु झूठी आश" अर्थात् चेष्टारहित ब्रह्मको खोजतभये सो वातो कुछ वस्तुही नहीं है मिलिबोई कहां करै ॥ ७ ॥

इति पैंतीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ३५ ॥

अथ छत्तीसवीं रमैनी ॥ ३६ ॥

चौ० ज्ञानी चतुर बिचक्षण लोई । एकसयान सयान न होई१
दुसरसयानको मर्म न जाना । उत्पतिपरलयरैनिबिहाना२
बाणिजएकसबनमिलिठाना । नेमधर्म संयम भगवाना ३
हरि अस ठाकुरते जिन जाई । बालनभिस्तगाँवदुलहाई४
साखी ॥ ते नर मरिकै कहँ गये, जिन दीन्हों गुरु छोट ॥
राम नाम निज जानिकै, छोड़हु बस्तू खोट ५

ज्ञानी चतुर बिचक्षण लोई । एकसयान सयान न होई१
दुसरसयानकोमर्म न जाना ।उत्पातिपरलयरैनिबिहाना२

ज्ञानी जे हैं चतुर जे हैं बिचक्षण जे हैं तिनहीं लौ जेई लोग हैं अर्थात् सूक्ष्म ते सूक्ष्म ताहूते सूक्ष्म लौ बिचारनवारे जे अद्वैतवादी सबलोग हैं ते एक जो ब्रह्म ताहीमें सयान जो भये कि महीं ब्रह्म हौं यही मानतभये तो वे सयान नहींहैं १ दूसर सयान जे द्वैतवादी हैं जे साहबको और आपनेही को मानै हैं ताको तो मरमई नहीं जानै हैं भूलिकै उत्पति परलय कहे संसारकी जो उत्पत्ति प्रलय होतरहै है ताहीमें रैनि बिहाना कहे दिन राति जनमत मरत रहैहैं ॥ २ ॥

बाणिजएकसबनमिलिठाना । नेमधर्मसंयमभगवाना ३

हरिअसठाकुरतेजिनजाई । बालनभिश्तगाँवदुलहाई ४

एक बणिज सब मिलि ठानत भये नेम, धर्म, संयम इत्यादिक जे सब साधन हैं तिनहींको भग कहे ऐश्वर्य मानिकै तिनमें सब लागतभये ३ हरि कहे आरतिके हरनहारे जे साहब हैं तिनते जिनजाइ कहे जे जे फरक ह्वैगये हैं ते बालन कहे बालककी ऐसी है बुद्धि जिनकी ऐसे जे जीव हैं ते भिश्तगाँव दुलहाई कहे भिश्त जो स्वर्ग है ताहीको दुलहाइकै गावतभये अर्थात् संयम नेमकरि स्वर्गमें जाइ अप्सरनते भोगकरै यही गावत भये ॥४॥

साखी ॥ ते नर मरिकै कहँगये, जिन्हदीहों गुरु छोट ॥
रामनाम निज जानिकै, छोड़हु बस्तू खोट ५

जिनको गुरु छोट दियो है अर्थात् थोरे अक्षरको मन्त्र दियो और जो घोट पाठ होइ तो यह अर्थहै कि गुरु उनको मूड़ घोटि दियो अर्थात् मूड़ मूड़िदियो अथवा जूंठ प्याला को घोटादैदियो पियाय दियो ते नर जे हैं हिन्दू मुसलमान ते मरिकै कहां गये अर्थात् कहूं नहीं गये संसारहीमें परे हैं सो अपनो जो रामनाम ताको जानिकै खोट वस्तु जो नाना देवतनकी उपासना धोखा ब्रह्म स्वर्गकी चाह ताको छांड़ो अन्त में उबार रामनामही करैगो तामें प्रमाण "मनरे जबते राम कह्योरे । फिरि कहिबे को कछु न रह्योरे ॥ काभो योग यज्ञजपदाना । जो तैं रामनाम नहिं जाना ॥ काम क्रोधदोउभारे । गुरुप्रसादसब तारे ॥ कहै कबीर भ्रमनाशी । राजाराम मिले अविनाशी" ॥ ५ ॥

इति छत्तीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ३६ ॥

अथ सैंतीसवीं रमैनी ॥ ३७ ॥

चौ० एक सयान सयान न होई । दुसर सयान न जानै कोई १
तिसर सयान सयानै खाई । चौथ सयान तहां लै जाई २
पँचयें सयान न जानै कोई । छठयें महँ सब गैल बिगोई ३

सतयें सयान जो जानौ भाई। लोक बेद मो देहु दिखाई ४
साखी ॥ बिजक बतावै बित्तको, जो बित गुप्ता होइ ॥
शब्द बतावै जीवको, बूझै बिरला कोइ ५

एकसयान सयान न होई। दुसर सयान न जानैकोई १
तिसर सयान सयानै खाई। चौथ सयान तहां लै जाई २

एक जो ब्रह्म ताहीमें जे सयान हैं अर्थात् वाही को सांच मानै हैं और सब मिथ्या है ते सयान नहीं हैं और दूसर माया में जे सयान हैं वे कहैं हैं कि माया को हम जानै हैं सो माया तो सत् असत् ते विलक्षण है ताको कोई जानतही नहीं है कि कौन वस्तु है १ अरु तीसर जो जीव तामें जे सयान हैं कि जीवात्मै सबका मालिक है या विचारै हैं ऐसे जे गुरुवालोग हैं ते सयान जो जीव है ताको खाइ हैं कहे पाखण्डमत में लगाइ नरक में डारि देइ हैं चौथ जो ईश्वर और सब देवता तामें जे सयान हैं अर्थात् उनकी उपासना जो करै हैं ईश्वर देवता तिनको अपने लोकको लैजाय हैं ॥ २ ॥

पँचये सयान न जानैकोई। छठयें महँ सब गये बिगोई ३
सतयेंसयान जोजानौभाई। लोक बेद महँ देहु देखाई ४

और पाँचौं इन्द्रिनकी विषय तिनमें जे सयान हैं तेतो वे कछू जानतही नहीं हैं बद्धही हैं अरु छठौं है मन ताही ते सबै गैल बिगोइगई है ३ सातवें सयान जो साहब ताको जो जानौ तो हे भाई! लोक वेदमें मैं देखायदेहुँ कि जेते वर्णन करिआये तिन ते साहब परे है ॥ ४ ॥

साखी ॥ बिजकबतावै बित्तको, जोबित गुप्ता होइ ॥
शब्द बतावै जीव को, बूझै बिरला कोइ ५

श्रीकबीरजी कहैं हैं कि, जैसे जौन बित्त गुप्त होय है कहे गाड़ा होइ तौने धनको बीजक बतावै है तैसे सारशब्द जो राम नामबीजक सो साहबमुख अर्थमें जीवको बतावै है कि साहबको

है तेरोधन साहिबै है सो या बात कोई विरला साधु बूझै है॥५॥

इति सैंतीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ३७ ॥

अथ अड़तीसवींरमैनी॥ ३८ ॥

चौ० यहिविधिकहौंकहा नहिंमाना । मारगमाहिंपसारिनिताना १
रातिदिवसमिलिजोरिनितागा । ओटतकाततभर्मनभागा २
भर्मै सबघट रह्यो समाई । भर्म छोंड़ि कतहूं नहिं जाई ३
परै न पूरि दिनोंदिन छीना । जहां जाहु तहँ अङ्गबिहीना ४
जोमतआदिअन्तचलिआया । सोमत उनसबप्रकटसुनाया ५

साखी ॥ वहसँदेश फुरमानिकै, लीन्हों शीश चढ़ाय ॥
सन्तोंहै संतोष सुख, रहहु तौ हृदय जुड़ाय ६

यहिबिधिकहौंकहानहिंमाना । मारगमाहिं पसारि निताना १

कबीरजी कहैं हैं कि सतयुग में सत्यसुकृत नामते त्रेता में मुनीन्द्र नामते द्वापरमें करुणामय नामते कलियुगमें कबीर नामते मैं चारों युगमें जीवनको रामनामको अर्थ साहबमुख समुझायो पै कोई जीव कहा न मान्यो वेदमार्गमें ताना पसारत भये कहे अपने अपने मतमें अर्थ करि लेते भये ॥ १ ॥

रातिदिवसमिलिजोरिनितागा॥ओटतकाततभर्म न भागा२

और रातिउ दिन तागा जोरतभये कहे वेदार्थको अपने अपने मतमें लगावत भये अर्थात् जहां जहां अर्थ नहीं लगैहै तहां तहां अपने मतमें योजित करतभये और ओटत कातत कहे शङ्कासमाधान करत करत भर्म न भाग्यो इहां ताना प्रथम कह्यो ओटब कातब पीछे कह्यो सो प्रथम शङ्का समाधान करिकै काति ओटिकै ताना तनत भये अर्थ बनावत भये जब बन्यो तब फेर फेर शङ्का समाधान करि ओटि काति अर्थको ताना पसारत भये भर्म न भाग्यो एक सिद्धान्त न भयो ॥ २ ॥

भर्मै सबघट रह्यो समाई । भर्म छोड़ि कतहूँ नहिं जाई ३

परै न पूर दिनौंदिन छीना । जहां जाहु तहँ अङ्ग विहीना ४
जोमतआदिअन्तचलिआया । सोमतउनसबप्रकटलखाया ५

वही भर्म घट घटमें समाइ रह्यो है भर्म छोड़िके अनत न जात भये वही संशय में रहिगये ३ पूर नहीं परैहै कहे निश्चय नहीं होइहै दिनौंदिन क्षीण होत जाइहै क्षीण कहां होइहै कि यह जानैहै कि हमारो अज्ञान दूरभयो पै जहां जाइ है तहँ निराकार धोखई मिलैहै हाथ कछु नहीं लगैहै ४ वेदको अर्थ तो परोक्ष है कहे अप्रकट है तात्पर्यवृत्ति करिकै साहबको लखावै तौन अनादिमत ताको न समुझतभये वह वेदको अर्थ गुरुवालोग प्रकट करिकै अर्थात् अपरोक्ष जौन आदि अन्तते चलो आयो है ताको बल गरिगयो ॥ ५ ॥

साखी ॥ वह सँदेश फुरमानिकै, लीन्हों शीश चढ़ाइ ॥
सन्तो है संतोषसुख, रहहु तो हृदय जुड़ाइ ६

वही "तत्त्वमसि" उपनिषद्को संदेश शीश चढ़ाइ लेते भये वेदनमें वाणीमें तात्पर्य करिकै सांच पदार्थ कह्यो ताको न जानत भये सन्तपद संतोष सुखहै तौने जो रहौ तो हृदय जुड़ाइ और में तो तापई होइगो काहेते सबते परे है जाको साहब दूसरो नहीं है ऐसे जे चक्रवर्ती श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जब पायो तब उनते कम ब्रह्महोबेकी ईश्वरके मिलिबेकी और मायिक जे पदार्थ हैं तिनके मिलिबेकी चाहई न होइगी काहेते कि वह चक्रवर्ती के मिलिबेके समसुख नहीं है ब्रह्मानन्द विषयानन्द आदिकन में तब लगैगो तहीं सबते संतोष ह्वै याको मन शान्त ह्वै जाइगो ॥ ६ ॥

इति अड़तीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ३८ ॥

अथ उन्तालीसवीं रमैनी ॥ ३९ ॥

चौ० जिन्हकलिमाकलिमाहँपढ़ाया।कुदरतखोजितिन्हैंनहिंपाया १
करिमत कर्मकरै करतूती । बेद किताब भया सबरीती २

करमत सो जो गर्भऔतरिया। करमतसोजोनामहिंधरिया ३
कर्मते सुन्नति और जनेऊ। हिन्दू तुरुक न जानै भेऊ ४
साखी॥ पानी पवन सँजोयकै, रचि आई उतपात॥
शून्यहिंसुरतिसमानिया, कासों कहिये जात ५

जिन्हकलिमाकलिमाहँपढ़ाया।कुदरतखोजितिन्हैंनहिंपाया १
करिमतकर्मकरैकरतूती। बेद किताब भया सब रीती २

जिन्ह महम्मद सबको कलियुगमें कलिमा पढ़ायो है तेऊ कह्यो है कि हम अल्लाह के कुदरतिको खोज कहे अन्त नहीं पायो १ आपन आपन मत करिकै करतूती कैकै कर्म करनलगे सो वेद किताब सब रीति है जातभये॥ २॥

करमतसोजोगर्भऔतरिया। करमतसोजोनामहिंधरिया ३
कर्मते सुन्नति और जनेऊ। हिन्दू तुरुक न जानै भेऊ ४

कर्महिंते गर्भमें आय अवतार लेते भये अरु कर्महीते नाम धरतभये ३ और कर्मैते सुन्नति और जनेऊ चलत भयो ताको भेद हिन्दू तुरुक दूनौ न जानत भये॥ ४॥

साखी॥ पानी पवन सँजोयकै, रचि आई उतपात॥
शून्यहिंसुरतिसमानिया, कासोंकहियेजात ५

पानी कहे बिन्दु अरु पवन ये दूनौके संयोग ते गर्भभयो कहे शरीररूपी उत्पात खड़ाभयो सो कर्म में लगे जन्म मरणादिक येते उत्पात भये पै कर्म न छोड़त भये अरु जिन कर्म छोड़िबोऊ कियो तिनकी सुरति शून्यै में समाइ जातीभई सो वहांकी बात कासों कही जात है अर्थात् काहूसों नहीं कहिजाय है "नेतिनेति" कहिदेइ हैं अर्थात् वहां तो शून्य है कुछु हाथ न लग्यो॥ ५॥

इति उन्तालीसवींरमैनीसमाप्तम्॥ ३९॥

अथ चालीसवीं रमैनी॥ ४०॥

चौ० आदम आदि सुद्धि नहिं पावा। मामा हौवा कहँ ते आवा १

तब होते न तुरुक औ हिन्दू। मायके रुधिर पिताके बिन्दू २
तब नहिं होते गाय कसाई। कहुबिसमिल्लहकिनफुरमाई ३
तबना रह्योहै कुल औ जाती। दोजख भिश्तकहांउतपाती ४
मनमसलेकी खबरि न जानै। मतिभुलान दुइदीन बखानै ५
साखी॥ संयोगे का गुनरवै, बिन योगे गुणजाय॥
जिह्वास्वाद के कारणे, कीन्हे बहुत उपाय ६

आदम आदिसुद्धिनहिंपावा। मामा हौवा कहँते आवा १
तब होते न तुरुक औ हिन्दू। मायकेरुधिरपिताकेबिन्दू २

आदि आदम जे ब्रह्मा ते मामा कहे जगत्पिता हौवा नाम ऐसी जो वाणी ब्रह्माकी नारी सों ब्रह्महीं सुधि ना पायो कि कहां ते आई है १ तब आदि में न हिन्दू रहे न तुरुक रहे और मायके रुधिरते पिता के बिन्दुते गर्भ होइहै सोऊ नहीं रह्यो॥ २॥

तबनहिंहोतेगायकसाई। कहुबिसमिल्लहकिनफुरमाई ३
तबनरह्योहैकुलऔजाती। दोजखभिश्तकहांउतपाती ४
मनमसलेकीखबरिनजानै। मतिभुलानदुइदीनबखानै ५

तब न गाइ रही न कसाई रहे सो जो बिसमिल्ला कहिके हलाल करैहै सो किन फुरमाई है ३ अरु तब न कुल रह्यो और न जाति रही दोजख भिश्त कहां रह्यो है ४ मनके मसलेकी सुधि न जान्यो कोई मेरे मनैके बनाये हैं दोनों दीन और अपने आत्माको मत न जान्यो कि यह न हिन्दू है न मुसलमान है मतिहीन दुइदीन बखानत भये॥ ५॥

साखी॥ संयोगे का गुणरवै, बिनयोगे गुणजाय॥
जिह्वास्वादकेकारणे, कीन्हे बहुत उपाय ६

जब मनको आत्माको संयोग होइ है तबहीं संकल्प होइ है और तबहीं गुण होइहै अरु जब मनको आत्माको संयोग नहीं होइ है तब गुण जाइहै कहे गुणौ नहीं रहैहै अरु संकल्पौ नहीं रहै है सो नर जे हैं ते जिह्वा सुखके कारण और शिष्ण इन्द्रिय

सुखके कारण बहुत उपाय करतभये और मन व आत्मा को संयोग छोड़ावन को उपाय करत भये और जे मन आत्मा को संयोग छोड़यो हैं ते आपने स्वस्वरूप को प्राप्त भये हैं ॥ ६ ॥

इति चालीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ४० ॥

अथ इकतालीसवीं रमैनी ॥४१॥

चौ० अम्बुकिराशि समुद्राकि खाई । रबि शशि कोटि तेंतिसौभाई १
भँवरजालमें आसनमाड़ा । चाहत सुख दुख संग न छाड़ा २
दुख का मर्म काहु नहिं पाया । बहुतभांतिके जग बौराया ३
आपुहि बाउर आपु सयाना । हृदयाबसत राम नहिं जाना ४
साखी ॥ तेई हरि तेइ ठाकुरा, तेई हरि के दास ॥
जामें भया न यामिनी, भामिनिचलीनिरास ५

अम्बुकिराशिसमुद्रकीखाई । रबिशशिकोटितेंतिसौभाई १
भँवरजालमेंआसनमाड़ा । चाहतसुखदुखसङ्गनछाड़ा २

अम्बु कहे बिन्दु ताकी राशि शरीर है समुद्र जो है संसारसागर ताकी खाई है अर्थात् संसारहीमें सब शरीर परे हैं जैसे जलजीव समुद्रमें रहे आवैहैं तैसे नानाजीवनके शरीर परे रहैहैं और सूर्य चन्द्रमा तेंतीस कोटि देवता १ यही संसारसागरके भँवरजालमें परे कबहूं नरकको जाय हैं कबहूं स्वर्गको जायहैं याही भांति सब जीव और सब देवता चाहत तो सुख को हैं कि हमको सुख होय पै दुःखरूप जो संसार है ताको संग नहीं छोड़े हैं ॥ २ ॥

दुखकामर्मकाहुनहिंपाया । बहुत भांतिकेजगबौराया ३
आपुहिबाउरआपुसयाना । हृदयाबसतरामनहिंजाना ४

वह दुखरूप जो संसार है ताको मर्म कोई न जानत भयो बहुत भांति करिकै जगमें सबजीव बौराय गये ३ सो जीव जे हैं ते आपुहीते बाउर होत भये अरु आपहीते सयान होत भये हृदय में बसत जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको न जानतभये अर्थात्

जे संसार में परे हैं ते तो बाउरई हैं जे आपनेको बहुत ज्ञानी मानै हैं और सयान मानै हैं तेऊ बाउरे हैं अर्थात् जे और और ईश्वरनके दास भये और जे आपहीको ब्रह्म मानत भये कि हमहीं ब्रह्म हैं और आपने आत्मैको मानत भये तिनको साहब को ज्ञान नहीं होय है या हेतुते दुःखहीको सुख मानैहै ॥ ४ ॥

साखी ॥ तेई हरि तेइ ठाकुरा, तेई हरि के दास ॥
जामें भया न यामिनी, भामिनि चली निरास ५

तेई जे जीव हैं ते अपने को हरि मानत भये व आपनेही को ठाकुर मानत भये कि हमहीं जगत्कर्ता हैं और आपनेही को हरिके दास मानतभये अर्थात् सब आपही को मानत भये और यामिनी कहावै है लगानिया वह वस्तु कराइदेइ है सो पूरा गुरु कहावै है सो यह जीवको उद्धार कराइदेइ है सो जो जीव पूरा गुरु रामोपासक ना पायो जो समुझाइ देइ कि यह धोखाहै तिन जीवन ते भामिनि जो मुक्ति सो निराश ह्वै गई कि ई न मुक्ति होयँगे ॥ ५ ॥

इति इकतालीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ४१ ॥

अथ बयालीसवीं रमैनी ॥ ४२ ॥

चौ० जबहमरहल रहा नहिं कोई । हमरे माहँ रहल सब कोई १
कहहुसोरामकवनतोरसेवा । सोसमुझायकहो मोहिंदेवा २
फुरफुरकहउँ मारुसबकोई । झूठे झूठा संगति होई ३
आंधर कहै सबै हम देखा । तहँ दिठियार पैठि मुँह पेखा ४
यहिबिधिकहौमानुजोकोई । जसमुखतसजोहृदया होई ५
कहहिं कबीर हंस मुकुताई । हमरे कहले छुटिहौ भाई ६

जब हमरहलरहानाहिंकोई । हमरेमाहँ रहल सबकोई १
कहहु सो राम कौनतोरसेवा । सोसमुझायकहौमोहिंदेवा २

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जब हम साहब के लोकमें रहे हैं तब

तुम कोई नहीं रहेहौ तुम सब हमरे साहब के लोक प्रकाश में रहेहौ १ अपने को रामतौ कहौहौ तुम्हारी सेवा कौनहै कहां वेद पुराण में लिखो है कि इनकी सेवा किये मुक्ति होइगी सो तुम देवता बने फिरौहौ परन्तु मोको समुझाय के कहौ तो कौन मुनि तुम्हारी सेवा कियो है काकी मुक्ति भई है ॥ २ ॥

फुर फुर कहउँ मारु सब कोई। झूठे झूठा संगति होई ३

जो कोई फुरफुर कहै है तो सब मारनधावैहै अर्थात् जो कोई कहैहै कि तुम सांचहौ साहबकेहौ तो सब मारन धावै है शास्त्रार्थ करि लरै है काहेते लोक में रीति है कि झूठेकी झूठेनसों संगति होयहै सो सांच जो जीव सो झूठामन उत्पत्ति करिकै झूठा जो धोखा ब्रह्म ताहीकी संगति होत भई ॥ ३ ॥

आंधर कहै सबै हम देखा। तहँदिठियार पैठि मुँहपेखा ४

साहबके ज्ञानते बिहीन जे आंधर हैं ते या कहै हैं कि वेद शास्त्र पुराण में अर्थ सब हमने ब्रह्मरूपई देखा है जाके देखते सबको ज्ञान हमको ह्वै गयो तामें प्रमाण "येनाश्रुतं श्रुतंभवत्यमतंमतमविज्ञातं विज्ञातं भवति" तहां दिठियार जे साहबके देखनवारे ते वोई श्रुतिन में साहब मुख अर्थ देखै हैं कैसे जैसे 'येनाश्रुतं श्रुतं' कहे जौने रामनामके सुने जो नहीं सुनाहै सोऊ सुनै अस होइजाइहै काहेते वेद शास्त्र पुराणादि रामनामहीते निकसे हैं और जौने रामनामके जानेते यह जो अमत है सर्वत्र ब्रह्ममानिबो धोखा सो मत होइ जाइहै अर्थात् परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको चित अचित विग्रही सबको मानै है और मन वचन के परे जे अविज्ञात साहब ते रामनाम साहब मुख अर्थ में व्यञ्जित होयहै अथवा रामनाम को जानिकै साधन किहेते साहब हंसरूप दै जानेजाइ है ॥ ४ ॥

यहिविधिकहौंमानुजोकोई। जसमुखतसजोहृदयाहोई ५

कहहिं कबीर हंसमुसकाई। हमरे कहले छुटिहौ भाई ६

सो या भांति ते मैं सब जीवनको समुझाऊँ हौं पै कोई बिरला मानैहै कौन मानैहै जौन जस मुखते कहैहै तैसे हृदय ते होइ है ५ कबीरजी कहै हैं कि मुसकाई मुसकै बँधीं जीवो हमारेहीं कहते तुम छूटोगे औरीभांति न छूटौगे और मुकताई पाठ होय तो या अर्थ मुक्ति होबेकी है इच्छा जिनके ॥ ६ ॥

इति बयालीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ४२ ॥

अथ तैंतालीसवीं रमैनी ॥ ४३ ॥

चौ० जिनजिवकीन्हआपुबिश्वासा। नरकगयेतेहिनरकहिबासा १
आवत जात न लागहि बारा। काल अहेरी सांझ सकारा २
चौदहि विद्या पढ़ि समुझावै। अपने मरनकि खबरि न पावै ३
जाने जिवको परा अँदेशा। झूठ आनिकै कहै सँदेशा ४
संगति छोड़ि करै असरारा। उबहै मोट नरक की धारा ५
साखी ॥ गुरुद्रोही औ मनसुखी, नारी पुरुष बिचार ॥
ते नर चौरासी भ्रमहिं, जबलगि शशि दिनकार ६

जिनजिवकीन्हआपुबिश्वासा। नरकगयेतेहिनरकहिबासा १

जे नर अपने में विश्वास कियो कि हमारो जीवात्मा है सोई मालिक है दूसर नहीं है एकै है ते नर की मुक्तिकी बातैं कौन कहै वे स्वर्गहू नहीं जायहैं नरक में जायकै नरकहीमें बास किये रहै हैं काहेते नरकही जायहैं कि इहां तो तीर्थ, व्रत, संयम जो स्वर्ग जाबे को उपाय है ते तो मिथ्या मानि छांड़ि दियो जीवात्मै को मालिक मान्यो दूसरा मालिक न मान्यो जो यमतें रक्षाकरै और वेद, पुराण को मिथ्या मान्यो छूटनको उपाय एकौ न कियो जब यमदूत मोगरालैकै मारनलगे बांधिकै कांटा में कढ़िलावनलगे तब मूढ़ पुकारनलाग्यो गुरुवालोगनको ते रक्षा न किये और गुरुवालोगनहूं की वही हवाल देखनलग्यो सो साहबको नाम तो सब छांड़िकै लियो नहीं जो यमते रक्षाकरि वहांको लैजाय इहां स्वर्गजाबेवारो सुकर्म कियो नहीं ये अहमक ऊंटके से पाद जन्म

गवाइ दिये न इतके भये न उतके भये तामें प्रमाण "रामनाम जान्यो नहीं, कहा कियो तुम आय॥ इतके भये न उतके, रहिया जनम गँवाय" ॥ १ ॥

आवतजातनलागहिवारा। कालअहेरी सांझसकारा २
चौदहबिद्यापढ़िसमुझावै। अपनेमरणकिखबरिनपावै३

आवत जात बार नहीं लगै है कहे पुनि पुनि जन्म लेइहै काल जो अहेरी है सो सांझ सकार उनहीं को खाय है वही वासना उनकी बनीरहै है फेरि वाही मनमें आरूढ़ है फेरि वही नरकही को जायहै २ और चौदहौ विद्या पढ़िकै गुरुवालोग जे हैं ते औरे को तौ समुझावै हैं परन्तु अपने मरणकी खबरि नहीं पावै हैं ॥ ३ ॥

जानौजियकोपराअँदेशा। झूठ आनिकै कहै सँदेशा ४
संगति छोड़ि करै असरारा। उबहै नर्कमोट को भारा ५

जे जीवात्महीं को जानै हैं साहबको नहीं जानै हैं तिनहीं को अंदेश परै है काहेते कि सब झूठ ही है वही सँदेश कहै हैं जब यमदूत मारनलगे तब वा मारु देखि उनको अँदेश परै है कि हमारी रक्षा कौनकरैहै सो या पापिनकी दशा गरुड़पुराण में प्रसिद्ध है ४ साहबके जाननवारे जे साधु हैं तिनकी संगति छोड़िकै जे असरार कहे कफरई करै हैं अपने जीवात्मै को मालिक मानै हैं साहबको नहीं जानै हैं उ कहे वे जे दुष्ट हैं ते बहै मोट नरक को भारा कहे नरक को है भार जामें ऐसी जो माया की मोटरी ताही को बहै कहे ढोवै हैं ॥ ५ ॥

साखी ॥ गुरुद्रोही औ मनमुखी, नारी पुरुष विचार ॥
तेनरचौरासी भ्रमहिं, जबलगिशशिदिनकार ६

कबीरजी कहै हैं कि शुकादिक मुनि वेद पुराण साधु और जे साहबके बतावनवारे हैं सो येई गुरु हैं जो कोई इनकी वाणी को मिथ्या मानै है सोई गुरुद्रोही है सो गुरुद्रोही और मनमुखी कहे अपने मनैते नारि नर बिचारिकै जे एक जीवात्महींको मालिक

मानै हैं ते चौरासी लक्ष योनिही में जबलगि सूर्य चन्द्रमा रहै हैं तबलगि वाही में परे रहै हैं ॥ ६ ॥

इति तेंतालीसवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ४३ ॥

अथ चौवालीसवीं रमैनी ॥ ४४ ॥

चौ० कबहुँ न भये संग औ साथा। ऐसो जन्म गँवाये हाथा १
बहुरि न ऐसो पैहौ थाना। साधुसंगतुम नहिं पहिंचाना २
अब तौ होइ नरक में बासा। निशिदिनपरेलबारकेपासा ३
साखी ॥ जात सबन कहँ देखिया, कहै कबीर पुकार ॥
चेतवा होहु तौ चेति ले, दिवस परतहै धार ४

कबहुं न भये संग औ साथा। ऐसो जन्म गँवाये हाथा १

साहबके जाननवारे जे साधु तिनको सत्संग कबहूँ न कियो और उनके बताये साहबको साथ कबहूँ न कियो जेहिते आवागमनरहित होय मनुष्य ऐसो जन्म अपने हाथ ते गमाय दियो ॥ १ ॥

बहुरि न ऐसो पैहौ थाना। साधुसंगतुमनहिंपहिंचाना २
अबतोरहोइनरकमें बासा। निशिदिनपरेलबारकेपासा ३

ऐसो थान कहे मनुष्यदेह तुम फेरि न पावोगे साधुसंग तुम नहीं पहिंचान्यो है साधुसंग करो जो पूरा गुरु पाइजाउगे तो उबार ह्वै जाइगो २ धोखा जो है ब्रह्म और माया ताके उपदेश करनवारे जे हैं गुरुवालोग लबरा तिनके पास में निशिदिन पस्यो है सो बिना पारिख तेरो नरकही मों बास होइगो ॥ ३ ॥

साखी ॥ जातसबनकहँदेखिया, कहैं कबीर पुकार ॥
चेतवाहोहु तौ चेतिले, दिवसपरतहैधार ४

दूनो ब्रह्ममायाके धोखा में सबको नरक जात देखिकै कबीरजी पुकारिकै कहै हैं कि चेतिबे को होइ तो चेतौ नहीं तो दिनैकै तिहारे ऊपर धार परै है कहे गुरुवालोगनको डाकापरै है भाव यह

है जो गुरुवालोगन को डाका तुम्हारे ऊपर परैगो और वह ब्रह्म को उपदेश करैगो और तुम्हारे वह धोखा दृढ़ परिजाइगो तो तुम मारेपरोगे कहे जैसे मरा काहूको फेरो नहीं फिरै है तैसे तुमहूं वह धोखाते काहूके फेरे न फिरोगे अर्थात् काहूको कहा न मानोगे तो संसारही में परेरहोगे बहुत बड़े बड़े वही धोखाते ब्रह्ममें परिकै मरिगये साहब को न जानत भये सो आगे कहै हैं ॥ ४ ॥

इति चौवालीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ४४ ॥

अथ पैंतालीसवीं रमैनी ॥ ४५ ॥

चौ० हिरणाकुश रावण गये कंसा। कृष्ण गये सुर नर मुनि बंसा १
ब्रह्मा गये मर्म नहिं जाना। बड़ सबगयो जो रहे सयाना २
समुझिनपरीरामकी कहानी। निरबकदूध कि सरबकपानी ३
रहिगोपन्थ थकित भो पवना। दशौदिशा उजारिभोगवना ४
मीनजाल भोई संसारा। लोह कि नाव पषाणको भारा ५
खेवै सबै मरम नहिं जाना। तहिंबो कहै रहै उतराना ६
साखी ॥ मछरी मुख जस केंचुवा, मुसवन मुँह गिरदान ॥
सर्पन माहँ गहे जुवा, जाति सबनकी जान ७

हिरणाकुशरावणगयेकंसा। कृष्णगयेसुरनरमुनिबंसा १
ब्रह्मागये मरम नहिंजाना। बड़सबगये जो रहेसयाना २

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हिरणाकुश, रावण, कंस ये मरिजात भये और इन तीनों के मरवैया कालस्वरूप जे कृष्ण तेऊ मर जातभये दशौ अवतार निरञ्जन नारायणै ते है हैं या हेतुते मारिजानवारे तीनि कह्यो मारनवारो एकही कह्यो और सुर, नर, मुनि इनके वंशवारे तेऊ मरिगये और ब्रह्मा आदिक जे बड़े बड़े सयान रहैं तेऊ वेद को तात्पर्य न जान्यो मरिगये ॥ १ । २ ॥

समुझिनपरीरामकीकहानी। निरबकदूध कि सरबकपानी ३
रहिगोपन्थथकितभोपवना। दशौदिशा उजारिभोगवना ४

राम की कहानी कहे रामनाम की कहनि जो चारों वेद कहैहैं सो काहू को न समुझिपरी धौं निरबक दूधही है धौं पानिही पानी है अर्थात् जिनको परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको ज्ञानभयो वेद को तात्पर्य बूझ्यो साहबमुख अर्थ लगायो सो दूध ही पियत भयो और जो जगत्मुख अर्थ में लग्यो सो पानिही पानी पियत भयो साहब मुख अर्थ न जान्यो एते सब मरिगये ३ अपने अपने पन्थ चलावतभये जब पवन थकित भयो कहे श्वासारहित भई तब दशौदिशा कहे दशौ इन्द्रिनद्वारके जे देवता ते जातरहे तब दशद्वार को जो शरीर गाउँ सो उजारि ह्वैगयो कहे मरिगये याते या आयो कि जे नानामत चलावै हैं मत यहै रहिजायहै जा शरीर में मरिकै गये ताहीकी सुधि रहै है ॥ ४ ॥

मीनजाल भोई संसारा । लोह कि नाव पषानको भारा ५

याही रीतिते मरत जियत जे मीनरूप जीव हैं तिनको यहि संसारसमुद्रमें वाणी जाल फन्दनको भयो सो जे जालमें फँदे ते तो अविद्याके जालमें फँदेही हैं जे उबरे चाहैहैं ते जड़वत् जो मन पाषाण ताहीको है भार जामें ऐसी जो अविद्यारूपी लोहेकी नाव तामें चढ़े सो वह बूड़िही जायगी फिर वही संसार में परे रहे हैं ॥ ५ ॥

खेवै सबै मर्म नहिं जाना । तहिवो कहै रहै उतराना ६

सब गुरुवाजन खेवै हैं कहे वही धोखा ब्रह्म में लगावै हैं और या कहै हैं कि हम मर्म जान्यो है तुम यामें लगो पार ह्वै जाउगे सो वह जो संसारसमुद्र में अविद्यारूपी नाव मन पाषाण ते भरी बूड़िही जायगी तामें गुरूचेला दोऊ बूड़िही जायँगे पार न पावैंगे अर्थात् वेदान्त आदि नानाशास्त्रनमें नानातर्क उठाय उठाय विचार करतऊ जायहैं संकल्प विकल्प नहीं छूटै तात्पर्य तो जानै नहीं और जन्मभरि चेला पूछतई जायहै परन्तु तबहूं यही कहै हैं कि तुम संसार समुद्र में उतराने हौ कहे उबरेहौ यह नहीं विचारै हैं

कि संकल्प विकल्प छूटबई नहीं कियो संसारते कैसे उबरैंगे॥६॥

साखी॥ मछरीमुखजस केचुवा, मुसवन मुँह गिरदान॥
सर्पन माहँ गहेजुवा, जाति सबनकी जान ७

जैसे मछरीके मुखमें केंचुआ मुसवानके मुहँमें गिर्दान अर्थात् जब मूस गिर्दानको रंग देख्यो तब लाल मास अथवा लाल फल जानि धरनधायो जब फूंक मास्यो तब आँधर ह्वैगयो गिर्दानही मूसको खायलियो और सर्प जैसे गहेजुवा कहे छछूंदरको धरैहै जो उगिलै तो आँधर ह्वैजायहै खाय तो मरिजाय ऐसे सब जीवनकी जातिहै जे कर्मकाण्डी हैं ते जैसे मछरी केचुवा को जब खाय है तब मुँहमें बरवा चुभिजायहै वाही में फँसिजाय है तैसे स्वर्गादिकफल की चाहकरि कर्म करैहै जनन मरण नहीं छूटैहै काल खायलेइ है और जे ज्ञानकाण्डी हैं ते साहबको ज्ञान तो काचो है अपने शास्त्रबल या कहै हैं कि हम समुझायकै पाखण्डमतवारे जे हैं तिनको अपने मतमें लै आवैंगे या विचारि तिनके यहां गये सो वे धोखा ब्रह्मरूप उपदेश फूंक ऐसा मास्यो कि आँधरे ह्वैगये साहब को जौन ज्ञान रहै सो भूलिगये तो उनके खाबे को पै वोई उलटिकै खागये और उपासनाकाण्डी जे हैं ते अपने अपने इष्टकी उपासना धस्यो सोतो छोड़तही नहीं बनैहै डरैहै कि देवता खफा न होइ आंधर न करिदेइ जो न छोड़ै तो वाही देवता के लोक गये और फेरि आये जन्म मरण नहीं छूटैहै जैसे सांप छछूंदर को धस्यो परन्तु न उगिलत बनै न लीलत बनै ताते कबीर जी कहैहैं कि साहब को जानो जनन मरण उनहीं के छुड़ाये छूटैगो॥७॥

इति पैंतालीसवीं रमैनी समाप्तम्॥४५॥

अथ छियालीसवीं रमैनी॥४६॥

चौ० बिनसै नाग गरुड़ गलिजाई। बिनसै कपटी औ सतभाई १

बिनसैपापपुण्यजिनकीन्हा। बिनसैगुणनिर्गुणजिनचीन्हा२
बिनसै अग्नि पवन अरु पानी। बिनसै सृष्टि जहांलौं गानी ३
बिष्णुलोक बिनसै छनमाहीं। हो देखा परलयकी छाहीं ४
साखी॥ मच्छरूप माया भई, यमरा खेलहि अहेर॥
हरिहर ब्रह्म न ऊबरे, सुर नर मुनि केहिकेर ५

जे भर ब्रह्माण्ड के भीतरहैं ते सब नाशवान् हैं संसारसमुद्र में ऐसो माया लपेट्यो कि यह मत्स्यजीव माया ह्वै गई अर्थात् मिलिगई है कहे जीवनको शरीर में डारिदियो है शरीरही देखपरे है जीवको खोज नहीं मिले है भीतर बाहर मन मास आदिक वह जड़मायही देखिपरैहै यमराजो धीमर काल है सो शिकार खेलैहै ताते कोई नहीं उबरै है कोई हालही मरैहै कोई महाप्रलय में मरै है॥ १। ५॥

इति छियालीसवीं रमैनी समाप्तम्॥ ४६॥

अथ सैंतालीसवीं रमैनी॥ ४७॥

चौ० जरासन्ध शिशुपाल सँहारा। सहसअर्जुनै छल सो मारा १
बड़छल रावणसो गये बीती। लङ्कारह कञ्चनकी भीती २
दुर्योधन अभिमानहिं गयऊ। पाण्डव केर मरम नहिं पयऊ३
मायाके डिभगे सबराजा। उत्तम मध्यम बाजन बाजा ४
छाचकवैवितधरणि समाना। यकौ जीव परतीति न आना५
कहँलौं कहौं अचेते गयऊ। चेत अचेत झगर यकभयऊ६
साखी॥ ई माया जग मोहनी, मोहिसि सब जगधाय॥
हरिचन्द्र सतिके कारने, घर २ सो गो बिकाय ७

ये जे राजा बड़े २ गनाय आये ते सब मारे परे कोई उत्तम कोई मध्यम कोई निकृष्ट कर्मकरिकै गये सो कहाँलौं मैं कहौं चित अचितके झगरा ते कहे चित जीव अचित माया ई दूनौं के संयोग ते सब जीव पृथ्वी में मिलगये अपने शुद्ध आतमा को न जानत भये यह माया जो है जगमोहनी सो सब जगको धायकै मोहि लेत

भई हरिश्चन्द्र जे राजा हैं ते सत्यके कारणे विद्यामायामें बँधिकै घर २ बिकाय जातभये पुत्र बिकानो स्त्री बिकानी ॥ १ । ७ ॥

इति सैंतालीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ४७ ॥

अथ अड़तालीसवीं रमैनी ॥ ४८ ॥

चौ० मानिकपुरहि कबीर बसेरी। मद्दति सुनो शेष तकिकेरी १
ऊजो सुनी जमनपुर धामा। झूसी सुनी पिरनके नामा २
इकइसपीर लिखे तेहिठामा। खतमा पढ़ैं पैगसर नामा ३
सुनिबोल मोहि रहा न जाई। देखि मकुरवा रहे लोभाई ४
हबीबी औ नबीके कामा। जहँलों अमल सो सबेहरामा ५

साखी ॥ शेखअकरदी शेख सकरदी, मानहु वचन हमार ॥
आदि अन्त उत्पति प्रलय, देखो दृष्टि पसार ६

प्रकट कबीरजी तो यह कहैहैं कि मानिकपुरमें रह्यो तहां से खतकी मुद्दति सुन्यो जिन पीरनके स्थान १ जमनपुर में सुन्यो ते झूसीपार में आये तहां मैं हूं गयों २ इकैसो जे पीरहैं तिनके नाम लिखेहैं कि ये सब पैग़म्बरैकेर फ़ातियां देइ हैं और कलमा पढ़े हैं ३ सो उनके बोल सुनि २ मो पै नहीं रहाजाय है मकुरवा देखि २ ये सब भुलायरहेहैं यह जानिकै तहां मैं जाइकै कह्यो कि ४ हबी कहे देवतनको खाना अथवा हबी फ़ारसीमें दोस्तको कहै हैं और जहां भर नाम है नबीके जे तुम लेतेहौ और नबी के जहां भर काम है जे पीरलोग तुमको उपदेश करतेहैं सो सब हराम हैं काहेते अल्लाह तो मन वचन के परे है ५ हे शेखअकरदी, हे शेख सकरदी! हमारो कहो जो वचन है सो सब साँच मानो आदि अन्तमें जो दृष्टि पसारिकै देखौ तो जहां भर मन वचन में पदार्थ आवै हैं सो सब माया को पसार है अल्लाह नहीं है सो कबीरजी के चौबिसपरचैसे खत के लिखे पीछे शिष्य भये सो सब कथा निर्भयज्ञान में विस्तारते हैं ॥ ६ ॥

इति अड़तालीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ४८ ॥

अथ उनचासवीं रमैनी ॥ ४९ ॥

चौ० दरकी बात कहो दुर्वेशा । बादशाह है कौने भेशा १
कहां कूच कहँ करै मुकामा । कौनसुरतिकोकरौंसलामा २
मैं तोहिं पूछौं मूसलमाना । लाल जर्दकी नाना बाना ३
काजी काज करौ तुम कैसा । घर २ जबै करावो वैसा ४
बकरीमुर्गीकिनफुरमाया । किसकेहुकुमतुमछुरीचलाया ५
दर्द न जानै पीर कहावै । बैता पढ़ि २ जग समुझावै ६
कहकबीरयकसय्यदकहावै । आपुसरीका जग कबुलावै ७
साखी ॥ दिन भर रोजा धरतहौ, राति हततहौ गाय ॥
यह तौ खून वह बन्दगी, क्योंकर खुशी खोदाय ८

और पदको स्पष्टही है ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ दर्द तो तिहारे दिलमें आवती नहीं है गला कटावते में अल्लाह को बागी चाखऐब करतेहौ अरु बैतैं पढ़ि २ के पीर कहावतेहौ और जगत् को समुझावतेहौ अर्थात् हौ बेपीर पीरभर कहवावतेहौ ६ सो कबीरजी कहै हैं कि एक सय्यद जो है वह पीर गुरुवा सो जैसा आप खुआरहै और तैसे सबको खुआरकरैहै ७ दिनको तो रोज़ा धरते हौ और बन्दगी करतेहौ और रातिको गाई हततेहौ कहे मारते हौ सो यह तौ खूनकरतेहौ बहुत भारी और वह बन्दगी बहुत थोरी करतेहौ दिनको न खायो रातिहीको खायो क्योंकर तिहारे ऊपर खोदाय खुशी होय ताते यह कि वह तो साहब को है सो जिनको गला तुम काटतेहौ तिनहीं के हाथ तुम्हारऊ गला वह साहब कटावैंगे ॥ ८ ॥

इति उनचासवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ४९ ॥

अथ पचासवीं रमैनी ॥ ५० ॥

चौ० कहतेमोहिंभयलयुगचारी । समुझतनाहिंमोहिसुतनारी १
बंशआगिलागि बंशैजरिया । भ्रमभुलाय नल धन्धेपरिया २
हस्तीके फन्दे हस्ती रहई । मृगी के फन्दे मिरगा परई ३

लोहै लोह काटजलआना। तियकै तत्त्व तिया पहिंचाना ४
साखी ॥ नारि रचन्ते पुरुष है, पुरुष रचन्ते नार ॥
पुरुषहि पुरुष जो रचै, तेहि बिरले संसार ५

चारिउ जग मोको समुझावत भयो पै सुत नारीके मोहते कोई समुझत नहीं है १ जैसे बांसकी आगी बांसैको जारिदेइहै तैसे सुतनारीके मोहरूप भ्रम में भुलायके नर धन्धे में परे जाइ हैं कोई नाना ज्ञान उपासना में परिकै जरै है कोई सुत नारी के धन्धे में परिकै जरै है २ जैसे हाथिनीके फन्दे हाथी रहैहै मृगी के फन्दे मृगा परै है कहे फँदिजाय है ऐसे जीवके फन्देमें जीव परेहै जैसे लोहते लोह कटिजायहै तैसे जीवहीते जीव यह मारो परै तियकी तत्त्व स्त्री पहिंचानै स्त्री जो ऊंटिनी ताकी तत्त्व वही जानैहै अर्थात् जीवही ते जीव भ्रमिजाय है काहेते साहबको तो जानैनहीं जीव जीवही मों विश्वास माने माया में मिलिके या जीव माया ही में रह्यो है ताते माया कही पदार्थ में विश्वास मानैहै ३ । ४ नारीते पुरुष रचि जाइहै कहे मायाते सब पुरुष भये हैं और पुरुष जो है शुद्धसमष्टिजीव ताहीते माया भई है और पुरुष जो हैं शुद्धजीव सो परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं सबके बादशाह तिनमें रचे कहे प्रीति करै ऐसो कोई बिरला है ॥ ५ ॥

इति पचासवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ५० ॥

अथ इक्यावनवीं रमैनी ॥ ५१ ॥

चौ० जाकरनाम अकहुवाभाई। ताकर कहां रमैनी गाई १
कहैको तात्पर्य है ऐसा। जस पन्थी बोहित चढ़िबैसा २
हैकछुरहनिगहनिकीबाता। बैठारहत चला पुनिजाता ३
रहैबदननहिंस्वागसुभाऊ। मन अस्थिर नहिं बोलै काऊ ४
साखी ॥ तनरहतै मन जातहै, मनरहते तन जाय ॥
तनमन एकै है रह्यो, हंस कबीर कहाय ५

जाकर नाम अकहुवा भाई। ताकर कहाँ रमैनी गाई १

जाको नाम अकह है ताको तो हिन्दू मन वचनके परे कहते हैं और मुसलमान "बेचून, बेचिगून, बेसुभा, बेनिमून" कहते हैं सो हम पूछते हैं हिन्दू कहै हैं कि वह तो निराकार होतो तो कहै हैं कि वेद मेरी श्वासा है शरीर न हो तो तौ वेद श्वासा कैसे होतो जो कहो वेद तो माय कहे तो मिथ्याके बताये तुमही सांच पदार्थ कैसे जानिहौ जो कहै साकार है तो मध्यम परमान ठहराय तो अनित्य होइ है अकहुवा न होइगो अरु जो मुसलमान निराकार कहै हैं कि उसके आकार नहीं है तो मूसा पैग़म्बरको कोहतरकै पहाड़ में अँगुनी देखायो सो वह पहाड़ क्षार ह्वैगयो जो शरीर न होतो तो अँगुनी कैसे देखावतो कुरान में लिखेहै कि जिस तरफ़ अपना मुँह फेरै तिसी तरफ़ साहबका मुँह है और सबके हाथके ऊपर अल्लाहको हाथ है और अल्लाह महम्मदसों कहते हैं कि जिसका हाथ पकरा तूने तिसका हाथ पकरा मैं तब सों इन लीलौते यह आवताहै कि उसके शकल है पै जिसतरहका उसका शकल है सो कोई नहीं कहिसकै है काहेते कि जो उसके मिसाल दूसरा कोई होय तो उसकी उपमा दैकै समुझाय सक्रै सो उसकी शकल तो कोई नहीं समुझाय सक्ता है लेकिन जो कोई उसकी शकल देखा है सोई जानता है जैसी उसकी शकल है लेकिन बयान नहीं कर सक्ता है और कुरान खोदाको कलाम है कहे बात है जो बदन न होता तो कलाम कैसे कहते सो निराकार साकार के परे अकह जो साहब है ताकी रमैनी कहे तिसके रूपादि वर्णन की कथा ज़बान में किस तरहसे कहौ वचन में तो आवै नहीं है अथवा जाकर नामै अकहुवाहै ताको रूप अकहुवा बनै है तिसकी कथा कहां कहैं जो वाहू अकहुवा होयगी जो ऐसा भया तो जानि न परैगो किसूको मिथ्या होइजाइगो तौनेको कबीरजी कहै हैं कि सबको हमको अकहुवा है कछू उसको साहबको कोई बात अकहुवा नहीं है हम ताहीकी कही रमैनी गाइतहै सो जो कछु रमैनी में लिख्यो है सो सांचही है ॥ १ ॥

कहै को तात्पर्य है ऐसा । जसपन्थी बोहितचढ़ि बैसा २
हैकछुरहनिगहनिकीबाता । बैठारहा चला पुनि जाता ३

जौन कहि आये तौनेको तात्पर्य ऐसाहै कि पांच शरीरते साहब नहीं मिलैहैं काहेते मन वचनके परेहै साहब और जो हमसों साहब कहा कि जीवनको रमैनी उपदेश करौ ताको हेतु यह है साहब विचार्यो कि मनवचके परे जो मैंहौं सो विना मेरे बताये जीव मोको न जानैंगे जो कहौ साहब को का परी है न जानैंगे जीव तो साहबके दयालुताकी हानि होइहै याते उपदेश करै कहैहैं सो जौने अकह रामनाम के जपे ते साहब प्रसन्न है हंसरूप देइ है तौन रामनाम रमैनी ते जानिकै काहेते कि "इच्छाकर भवसागर, बोहित रामअधार । कहहिं कबिर हरि शरणगहु, गोबछ खुर बिस्तार" ऐसी साखी रमैनी में लिखी है तेहिते या अर्थ आया कि संसारसागर पार होवेको एक रामनामही जहाज मानि नामार्थ में जो शरणकी विधि है ताको अनुसंधान करत रामनाम जपै २ यह रहनि गहनि कैकै जैसे बछवाको खुर लोग उतरि जाय हैं ऐसो संसारसागर में रामनाम को अभ्यासकै तरिजायहैं कैसे जैसे नाव को चढ़ैया नाव में बैठाहै पै पार होत जाय है ऐसे रामनाम को जपैया संसारसागर में बैठो देखो परै है परन्तु पार को चलो जाय है ॥ ३ ॥

रहैबदननहिंस्वागसुभाऊ । मनअस्थिरनहिंबोलैकाऊ ४

इस तरहके जे हैं जिनके वदन कहे संभाषण करिबे ते जीवनको स्वागको सुभाउ कहे ब्रह्म ह्वैजावो चतुर्भुजादिकनके लोक में जाइ चतुर्भुज ह्वैजावो और नानादेवतनके लोकजाय तिनके तिनके रूपधरिबो सो मिटिजायहै संसार तो छूटिही जायहै सो वे बोलै हैं और मन स्थिर ह्वैगयो है कहे मनको संकल्प विकल्प तो छूटै नहीं है मनते भिन्न ह्वैबो कहा है कि संकल्प विकल्पही मनको स्वरूप है जब संकल्प विकल्प छूटिगयो तब मनते भिन्न ह्वै गयो सो कैसे मनते भिन्न होइगो सो साधन आगे कहै हैं ॥४॥

साखी ॥ तनरहते मनजातहै, मन रहते तन जाय ॥
तन मन एकै ह्वैरहो, हंस कबीर कहाय ५

तन जो है वा शरीर स्थूल सूक्ष्म कारण महाकारण सो अर्थ अनुसंधान करत रामनाम जपत २ तनते जब रहित ह्वैगयो तब मन जातरहै है और मन जायहै तब चारिउ शरीर जात रहैहैं सो जब तन मन एकह्वैरहै कहे सिगरे तन प्राणमें बँधेहैं सो प्राण और मनको एकघर करिदेइ सो नाम जपि विधि जानि तब संकल्प विकल्प मनको छूटिजाय है मन तो संकल्प विकल्परूप है सो जब संकल्प विकल्प छूट्यो तब मन नाश ह्वैगयो तब चारिउ शरीर को हेत जो है ज्ञान सोऊ जातरहै है तब चारिउ शरीर भिन्न ह्वै जाय हैं एक शुद्ध आत्मा में स्थिर ह्वैरहे हैं मुक्ति ह्वै जाय हैं जैसे पूर्वशुद्ध समष्टिरूप में रह्यो है तैसे सो ह्वै गयो जैसे समष्टिजीव में जब रह्यो है तब जगत् को कारण रह्यो आयो है साहब को न जानिबो रूप ताते संसारही ह्वैगयो है तैसे यह जो शरीरन में साहबको भजन करिराख्यो साहब को जानि राख्यो सो जब मनआदिक याके छूटिगये शुद्ध ह्वैगयो तब वाही भांति साहब को जानै को कारण रहिगयो काहेते कि रामनाम को साहब मूर्ख जानि राख्यो है सो मङ्गल में साहब कहिआये हैं कि जो रामनाम जपि कै मोको जानै तो मैं हंसरूप दै अपने पास बुलाय लेऊं याही ते साहब हंसरूप देइ है तब वह कायाको वीर जीव हंस कहावै है कैसे हंस कहावै है कि असार जे हैं चारिउ शरीर और मन मायारूप पानी ताको छोड़िदियो और सार जो है साहबको ज्ञानरूप दूध ताको ग्रहण कियो और अकह रामनाम जो मोती है ताको चुनन लग्यो कहे लेनलग्यो सो कबीरजी लिखबै कियो है शब्दमें निर्मल नाम चुनि चुनि बोलै अरु अकह रामनामईहै अरु अकह निर्गुण सगुण के परे है श्रीरामचन्द्रई हैं तामें प्रमाण "रामके नामते पिण्डब्रह्माण्ड सब रामको नाम सुनि भर्ममानी । निर्गुण निरङ्कार के पार परब्रह्म है तासु को नाम

रङ्कार जानी ॥ विष्णुपूजाकरै ध्यान शङ्कर धरै भनहि सुविरंचि बहुबिबिध बानी । कहै कब्बीर कोइ पार पावै नहीं रामको नामहै अकह कहानी" ॥ ५ ॥

इति इक्यावनवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ५१ ॥

अथ बावनवीं रमैनी ॥ ५२ ॥

चौ० ज्यहिकारणशिवअजहुँबियोगी । अङ्गबिभूतिलायभेयोगी १
शेषसहसमुखपार न पावै । सोअबखसमसहितसमुझावै २
ऐसीबिधिजो मोकहँध्यावै । छठयें मास दर्श सो पावै ३
कौनेहुँ भांतिदिखाई देऊ । गुप्तै रहि सुभाव सब लेऊ ४

साखी ॥ कहहिं कबीर पुकारिकै, सबका उहै हवाल ॥
कहा हमर मानै नहीं, किमिछूटैभ्रमजाल ५

ज्यहिकारणशिवअजहुबियोगी।अङ्गबिभूतिलायभेयोगी१
शेषसहसमुखपारनपावै। सोअबखसमसहितसमुझावै२

जाके कारण शिव अङ्गमें विभूति लगाइकै योगी भये परन्तु अजहूँलौं वासों वियोगी हैं काहे ते कि जो वियोगी न होतो तो तमोगुणाभिमानी काहे रहते १ और शेष सहसमुखते कहिकै पार न पायो तेई दुर्लभ खसम जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तेहि ते सहित जीवनको समुझावै है काहेते जीवनको हित मानिकै समुझावैहै किमोको जानिकै मेरेपास आवै संसार दुःख नपावै ॥२॥

ऐसीबिधि जो मोकहँध्यावै । छठयें मास दर्श सो पावै ३
कौनेहुँ भांति दिखाई देऊ । गुप्तैरहि सुभाव सबलेऊ ४

साहब कहा समुझावै है कि जैसो पूर्व कहिआये हैं नामार्थ में लिखि आये हैं शरणकी विधि तैसो अनुसंधान करत रामनाम जपिकै निरन्तर जो छठयें मास याहोइ तो जो या शरीरते करै है छामहीना में दर्शन सो पावै है याही भांतिसों जो मोको ध्यावै तो छठयेंमास मेरो दर्शन पावै कहे छठौ जो हंसस्वरूप तामें

स्थिर ह्वैकै ३ तो कौनिउँ भांतिसों मैं देखाइ देउहौं और निशि दिन वाके साथ गुप्तरहिकै वाको सब सुभावलेउ और जो दृढ़ होइ तो राम नामका साधक हेत ताको छठौं शरीर दैकै वाको प्रत्यक्ष ह्वैजाउ पाछे पाछे रघुनाथजी नित्य बनेरहत हैं तामें प्रमाण "रामरामेतिरामेति रामरामेतिवादिनम् । वत्संगौरिवगौर्थच्र्या धावन्तमनुधावति" ॥ ४ ॥

साखी ॥ कहहिं कबीरपुकारिकै, सबका उहै हवाल ॥
कहा हमर मानै नहीं, किमिछूटै भ्रमजाल ५

श्रीकबीरजी पुकारिकै कहै हैं कि जिनको शेष शिवादिकने पार नहीं पायो यह भांतिके दुर्लभ जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते आजु कालिह ऐसे सुलभ ह्वैगये हैं कि आपई उपाय बतावै हैं कि जो ऐसो उपाय करैं तो छठयें शरीर में मोको पाइजाइँ ते साहबको कह्यो मैं यतनो समुझावत हौं पै सब बेवकूफ़ हैं जीवन को हवाल उहै है कहे वही मायाके नानामतन में लगेहैं वहीको विचार करैहैं जौन धोखाते संसार पायो है हमारो कहो यतनेहू पै नहीं मानेहैं सो ऐसे दुष्ट जीवनको भ्रमजाल कैसे छूटै ॥ ५ ॥

इति बावनवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ५२ ॥

अथ तिरपनवीं रमैनी ॥ ५३ ॥

चौ० महादेव मुनि अन्त न पावा । उमासहित उन जन्म गँवावा १
उनते सिद्ध साधु नहिं कोई । मन निश्चल कहु कैसे होई २
जौ लग तन में ऐहै सोई । तौ लग चेत न देखौ कोई ३
तबचेतिहौजबतजिहौप्राना । भया अनततबमनपछिताना ४
इतनासुनतनिकटचलिआई । मनको बिकार न छूटै भाई ५

साखी ॥ तीनिलोक मों आयकै, छूटि न काहु कि आश ॥
यक आंधर जग खाइया, सब जग भया निराश ६

उनते अधिक सिद्धि कौन साध्यो है जाको मन निश्चल होइ अर्थात् सिद्धि साधे मन निश्चल नहीं होयहै २ जबलग शरीर

में मन है तबलग चेतन करिकै अथवा महा महा देवता जे हैं और बड़े बड़े मुनि जे हैं ते अन्त नहीं पायो जो कोऊ जान्यो है ते वोही साधन ते जान्यो है कहे ज्ञान करिकै वह परम पुरुषको कोई नहीं देखै हैं ३ कबीरजी कहै हैं कि तुम तब चेतिहौ जब प्राण छोड़ोगे तब कहां चेतौगे यह काकु है जब अनतही जानना शरीर पावोगे तब मनको पछितावई रहिजायगो जो भया अयान पाठ होइ तो यह अर्थ है कि तुम जो अयानेभये साहबको न जान्यो हमार कहा मानबई न कियो तो अब पछिताना क्या है पछितातो काहेको है संसार पीर सहो४यह सब जगत् शास्त्रन में सुना है कि मौत निकट चलीआवै है हमहूं मरिजायँगे पै मरघट ज्ञान कथै है मन को बिकार नहीं छोड़ै है ५ तीन लोक में आइकै सब मरि गयो परन्तु काहू की आशा न छूटत भई एक आंधर जो है मन सो जगत् को खाइलियो सब जगत् परमपुरुष के मिलिबेको निराश ह्वैगयो इहां आंधर कह्यो सो मन परमपुरुष को कबहूं नहीं देखै है काहेते कि साहब मन वचन के परेहै आपही शक्ति देइहै जीव को तबहीं देखै है ॥ ६ ॥

इति तिरपनवींरमैनी समाप्तम् ॥ ५३ ॥

अथ चौवनवींरमैनी ॥ ५४ ॥

चौ० मरिगयेब्रह्माकाशिकेवाशी। शीव सहित मूये अविनाशी १

मथुरामरिगयेकृष्णगुवारा। मरि मरि गये दशौ अवतारा २

मरिमरिगयेभक्तिजिनठानी। सर्गुणमें जिन निर्गुण आनी ३

साखी ॥ नाथ मछन्दर ना छुटै, गोरखदत्ता ब्यास ॥

कहहिं कबीर पुकारिकै, सबपरे कालके फाँस ४

ब्रह्मा जे हैं काशीके बासी शंभू जेहैं तिनते सहित अविनाशी जे विष्णु ते मरिगये सो अविनाशी सबकोई कहतई है और मरिबो कहैहैं सो उनको तो नाश कबहूं होतही नहीं है महाप्रलय में तिरोधानह्वै पुनि प्रकटहोइ हैं याते अविनाशी कह्यो है १ मथुरा

के कृष्ण व गुवार और दशौ अवतार तेऊ मरि कहे तिरोधान ह्वै गये कहांगये जहां श्रीरामचन्द्रके आगे हजारन ब्रह्मा, विष्णु, महेश और दशौ अवतार ठाढ़े हैं जाको जौने ब्रह्माण्डको हुकुम होइ है सो तहां अवतार लै पुनि अपने अंशन में लीन होइ है तामें प्रमाण शिवसंहिताको अगस्त्यवचन हनुमान्प्रति "आसीनं तमनुध्याये सहस्रस्तम्भमण्डिते। मण्डपे रत्नसङ्के च जानक्या सह राघवम्॥ मत्स्यः कूर्मश्च कृष्णश्च नारसिंहाद्यनेकधा। वैकुण्ठोऽपि हयग्रीवो हरिः केशववामनौ॥ यज्ञो नारायणो धर्मपुत्रो नरवरोऽपि च। देवकीनन्दनः कृष्णो वासुदेवो बलोऽपि च॥ पृष्णिगर्भो मधून्माथी गोविन्दो माधवोऽपि च। वासुदेवो परोऽनन्तः संकर्षण इरापतिः॥ एतैरन्यैश्च संसेव्यो रामनाम महेश्वरः। तेषामैश्वर्यदातृत्वं तं मूलत्वं निरीश्वरः॥ इन्द्रनामा स इन्द्राणां पतिः साक्षी गतिः प्रभुः। विष्णू स्वयं स विष्णूनां पतिर्वेदान्तकृद्विभुः॥ ब्रह्मा स ब्रह्मणांकर्ता प्रजापतिपतिर्गतिः।रुद्राणां सपतीरुद्रो रुद्रकोटिनियामकः॥ चन्द्रादित्यसहस्राणि रुद्रकोटिशतानि च। अवतारसहस्राणि शक्तिकोटिशतानि च॥ ब्रह्मकोटिसहस्राणि दुर्गाकोटिशतानि च। सभां यस्य निषेवन्ते स श्रीराम इतीरितः२" और जिन सगुणमें भक्तिको ठानी है तेऊ मारिगये और जे निर्गुण आन्यो है तेऊ मरिगये याते यह आयो कि निर्गुण सगुणवारे भक्त द्वौ मरिगये ३ और मछन्दर, गोरख, दत्तात्रेय और व्यास सोई योगऊ कियो छूटिबेको पै श्रीकबीरजी कहै हैं कि सब काल के फाँसमें परत भये कहे महाप्रलय में नाश ह्वैगये महाप्रलय में जब ब्रह्मा मरे हैं तब कोई नहीं रहे हैं॥ ४॥

इति चौवनवींरमैनीसमाप्तम्॥ ५४॥

अथ पचपनवीं रमैनी॥ ५५॥

चौ० गये राम अरु गये लक्ष्मना। संग न गै सीता असि धना १
जात कौरवन लाग न बारा। गये भोज जिन साजल धारा२

गे पाण्डव कुन्तीसी रानी । गे सहदेव जिन मतिबुधिठानी ३
सर्व सोनेके लङ्क उठाई । चलत बार कछु संग न लाई ४
कुरियाजासु अन्तरिक्षछाई। सो हरिचन्द्र देखि नहिं जाई ५
मूरुखमानुष अधिकसँजोवै। अपना मुवल और लगिरोवै ६
इन जानै अपनो मरि जैबै । टका दश बिढ़ै और लै खैबै ७
साखी ॥ अपनी अपनी करिगये, लागि न काहुके साथ ॥
अपनी करिगयो रावणा, अपनी दशरथनाथ ८

गये राम अरु गये लक्ष्मना । संगन गे सीता असिधना १

देवतन मुनिनको कहि आये हैं अब राजनको कहै हैं काहेते कि आगे दशअवतार कहि आये हैं इहां पुनि राम कहै हैं तहां इहां जे जीव रामराजा भये ताको और लक्ष्मणको महाभारत सभापर्व में नारद युधिष्ठर ते कह्यो है राजन के गिनती में यमकी सभामें तिनको कहै हैं कि राम गये लक्ष्मण गये और संगमें सीता असि नारी न जातभई जो यह अर्थ कोई न मानै तो यह कहै हैं कि नारायणके अवतार रामचन्द्र हैं तिनहीको जाइबो कबीर कहै हैं तो कबीरजी तो सांचके कहवैया हैं झूठी कैसे कहैंगे सब रामयणमें वर्णन है कि प्रथम जानकी शरीरते सहित गई हैं पुनि श्रीरामचन्द्र शरीरते सहित जात भये जिनके संग श्रीशक्ति भूशक्ति लीलाशक्ति शरीरसहित चली जाती है सो जो कबीरजी व राजा जे भये हैं तिनको जाइबेको न कहते तो संगमें सिया असि धना न गई यह कैसे लिखते ॥ १ ॥

जातकौरवनलागिनबारा । गयेभोज जिनसाजलधारा २
गे पाण्डवकुन्तीसी रानी ।गेसहदेवजिनमतिबुधिठानी३
सर्वसोनेकी लङ्क बनाई । चलत बार कछु संग न लाई४

और कौरवनको जात बार न लग्यो और राजा भोज गये जिन धारानगरी को बसायो है कहे साज्यो है जरासन्ध के पुत्र हैं भोज ते कलियुग के राजा सब आय गये २ और पाण्डवा जे हैं

व कुन्ती ऐसी रानी जो है और सहदेव जे हैं ते सब जातभये जे पण्डित हैं तिनहूं में अपनी मति कहे बुद्धि अधिक ठानत भये कहे करत भये ३ और सब लङ्का सोनेके रावण बनायो पै चलतबार संगमें न गई ॥ ४ ॥

कुरियाजासुअन्तरिक्षछाई । सोहरिचन्द्रदेखिनहिंजाई ५

और जाकी कुरिया अन्तरिच्छमें छाई है कहे स्वर्ग में महल बनो है इन्द्रते अधिक सिंहासन में बैठे हैं ऐसे जे हैं हरिश्चन्द्र राजा तेऊ नहीं देखि परे हैं अर्थात् तेऊ न रहिगये मरिगये भाव यह है कि महाप्रलय भये त्रैलोकमें कोई नहीं रहिजाइ है ॥ ५ ॥

मूरखमानुषअधिकसँजोवै । अपनामुवलऔरलगिरोवै६
इन जानै अपनो मरिजैबे । टका दश बिढ़ै और लै खैबे७

मूरुख जो मनुष्य है सो संजोवै कहे अधिक सम्यक् प्रकारते जोवैहै अर्थात् और को मरिबो कहे आजा मरिगयो बाप मरिगयो इत्यादिक सबको मरिबो देखतई जाय हैं और रोवै हैं अपने मरनकी जिन्ता नहीं करै हैं ६ या नहीं जानै हैं कि जेते दिन बीति गये जेतने मरिगये और मरिहीं जायँगे यहै विचारै हैं कि और दश टका बिढ़वैं जाते बहुत दिन बैठे खायँ ॥ ७ ॥

साखी ॥ अपनी अपनी करिगये, लागि न काहुके साथ ॥
अपनी करिगयो रावणा, अपनी दशरथनाथ ८

जीति जीति पृथ्वी सबै अपनी अपनी करिकै गये यशस्वी दशरथराजा ते अधिक कोई न भयो जाकी सब प्रशंसा करै हैं उनके सुकृतको यश जगतहीमें रहिगयो उनके साथ न गयो और अयशस्वी रावणते अधिक कोई न भयो जाकी सब कोई निन्दा करै हैं जाके दुष्कृतको अयश जगतही में रहिगयो ॥ ८ ॥

इति पचपनवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ५५ ॥

अथ छप्पनवीं रमैनी ॥ ५६ ॥

चौ० दिन दिन जरै जरलके पाऊ। गाड़े जाइ न उमगै काऊ १
कन्ध न देइ मसखरी करई। कहुधौं कौनि भांति निस्तरई २
अकरमकरै करमको धावै। पढ़ि गुणिवेद जगत समुझावै ३
छूछे परे अकारथ जाई। कह कबीर चितचेतहु भाई ४

दिन दिन जरै जरलके पाऊ। गाड़े जाइ न उबरै काऊ १

कबीरजी कहै हैं कि जे रोज रोज ज्ञानाग्नि करिकै कर्म को जारै हैं और अपने जीवत्वको जारै हैं कि हम ब्रह्म ह्वै जायँ सो जरल के पाऊ कहे न काहूके कर्महीं जरे न कोई ब्रह्महीं भयो अथवा जरलके पाऊ कहे जारिगये हैं कर्म जाको अर्थात् कर्महीं नहीं है ऐसो जो ब्रह्म ताको पायो है अर्थात् कोई नहीं पायो है जो कहो जड़भरतादिक पायो है तो वे जो ब्रह्महीं ह्वैजाते तो दूसरो मानिकै रहूगण को कैसे उपदेश करते कपिलदेव सगरके लरिकन को काहे जारिदेते और सनकादिक जय विजय को काहे शाप देते सो तुम ब्रह्म ह्वैवेकी आशा न करो जो संसार में परे रहौगे तो कबहूं सत्संग पायकै उद्धारहू होइजाइगो जो ब्रह्मरूपी गाड़ में परोगे तो गड़िजाउगे कबहूं न उमगौगे अर्थात् तिहारो कतहूं उद्धार न होइगो ॥ १ ॥

कन्धनदेइ मसखरी करई। कहुधौं कौनभांति निस्तरई २

कहो या कौनी भांति ते जीवको निस्तार होय समीचीन साधुनको संत्सग तो मिलै नहीं है गुरुवालोग को संत्सग मिलै है ते मसखरी करै हैं मसखरी कौन कहावैं जो आप तो जानै और औरेन को ठगै सो गुरुवालोग आप तो जानै हैं कि या झूठा ब्रह्म में हम लागे हमारे हाथ कछु वस्तु न लागी ब्रह्म न भये परन्तु जो साहब में लगै है जीव तिनको कांधा तान दिये अर्थात् उनको ज्ञान अधिक पुष्ट तो न किये कि भले लगे हैं तुम मसखरी किये कि जो तुमहूं "अहं ब्रह्मास्मि" मानौ तो तुमको अनेक प्रकारकी

ऋद्धि सिद्धि प्राप्त होइ है साहब को ज्ञान छांड़िदेहु या भांति समुझाय नरक में डारि दिये ॥ २ ॥

अकरमकरैकरमकोधावै। पढ़िगुणिवेदजगतसमुझावै ३
छूछे परै अकारथ जाई। कह कबीर चित चेतहु भाई ४

कैसे हैं वे गुरुवालोग करम तो अकरममत है कि हमको करम त्याग है हम संन्यासी हैं हम ज्ञानी हैं और करम करिबेको धावै हैं और वेदको पढ़िगुणिके जगत्को समुझावै हैं कि निष्कर्म होउ चाहई ते सब विकार है चाह छोड़िदेउ और आप भाजीके लिये बाज़ार में झगरै हैं सो उनके कहे जीवन को कैसे समुझिपरै ३ उनको उपदेश अकारथई जायहै और जो सुनै है सो छूंछई परै है अर्थात् कछू वस्तु हाथ नहीं लगै है सो कबीरजी कहै हैं कि हे भाई! चित चेत करो जेहिते कनक कामिनीरूप माया ते और धोखा ब्रह्म ते बचि जाउ ॥ ४ ॥

इति छप्पनवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ५६ ॥

अथ सत्तावनवीं रमैनी ॥ ५७ ॥

चौ० कृतिया सूत्रलोक यक अहई। लाख पचासके आगे कहई १
बिद्या बेद पढ़ै पुनि सोई। बचन कहत परतक्षै होई २
पहुँचि बात बिद्या के बेता। वाहु के भर्म भये संकेता ३
साखी ॥ खग खोजनको तुम परे, पीछे अगम अपार ॥
बिन परचै किमि जानिहो, झूठा है हङ्कार ४

कृतियासूत्रलोक यकअहई। लाखपचासकेआगेकहई १

अथ कृतिया कहे यह कृत्रिम जो है कर्म "अहं ब्रह्म" मानिबो सो यह लोकमें एक सूत्रके बरोबर है कहे रसरी के बरोबर है जीवनके बांधिबेको मङ्गलमें कहेउ आयेहैं कि ब्रह्ममें अणिमादिक सिद्धियाँ होइहैं सो वह कृत्य करिकै कहे ब्रह्म मानिकै पचासलाख

वर्षके आगेकी कहे हैं सो पचासलाख यह उपलक्षण है अर्थात् भूत-भविष्य-वर्तमान सब कहे हैं ॥ १ ॥

विद्या वेद पढ़ै पुनि सोई । बचन कहत परतक्षै होई २
पहुँचि बात बिद्या के बेता । वाहुके भर्म भये संकेता ३

विद्या जो है वेद जो है सो सम्पूर्ण पढ़िलेइ अर्थात् आइ जाइ तब जौन बात कहे हैं तौन परतक्ष होइहै कहे वाक्य सिद्धि ह्वैजाइ है २ वे विद्या के वेत्ता कहे जनैया जे लोगहैं ते वह बातको पहुँचि कहे पहुँचतभये अणिमादिक सिद्धि होत भई और ब्रह्मको जानत भये परन्तु साहब को जो है साकेत लोक ताके जानिबेको उनहूंको भ्रम भयो अर्थात् साहब को लोक न जानत भये ॥ ३ ॥

साखी ॥ खगखोजन को तुम परे, पीछे अगम अपार ॥
बिन परचै किमि जानिहौ, झूठा है हङ्कार ४

और खग जो है हंस तिहारो स्वरूप ताके खोजिबे को तुम चल्यो कि हम अपने आत्मा को स्वरूप जानैं सो साहब अगम अपार जो धोखा ब्रह्म सों लग्यो है वाही को अपनो स्वरूप मानि लियो है जब कुछ संसार तुमको छूट तब अगम अपार जो धोखा ब्रह्म है ताही को "अहं ब्रह्मास्मि" मानिकै बैठ्यो सो वह अगम है काहूकी गम्य नहीं है अपार है अर्थात् झूठा है भाव यह है कि जब साकेत लोक को जानोगे तब साकेत निवासी जे परम पुरुष श्रीरामचन्द्र तिनको जानोगे तब वे हंसस्वरूप दै अपने धाम को लैजायँगे तबहीं जन्म मरणते रहित होउगे तब हंसस्वरूप पावोगे औरी भांति संसार ते न छूटोगे न सिद्धि प्राप्त भये न ब्रह्म भये तामें प्रमाण गोसाईं तुलसीदासजी को दोहा "बारि मथे घृत होइ बरु, सिकताते बरु तेल । बिनु हरिभजन न भव तरै, यह सिद्धान्त अपेल १" और कबीरहूजी को प्रमाण "राम बिना नर ह्वैहौ कैसा । बाटमाँझ गोबरौरा जैसा" ॥ ४ ॥

इति सत्तावनवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ५७ ॥

अथ अट्ठावनवीं रमैनी ॥ ५८ ॥

चौ० तैं सुत मानु हमारी सेवा । तो कहँ राजि देहुँ हो देवा १
गम दुर्गम गढ़ देहु छड़ाई । अवरो बात सुनो कछु आई २
उतपति परलै देउ देखाई । करहु राज्य सुख बिलसहु जाई ३
एको बार न जैहै बाँको । बहुरि जन्म नहिं होइहै ताको ४
जाय पाय देहौ सुखधाना । निश्चय बचन कबीर को माना ५
साखी ॥ साधुसन्त तेई जना, जिन माना बचन हमार ॥
आदि अन्त उत्पति प्रलय, सब देखा दृष्टिपसार ६

तैं सुत मानु हमारी सेवा । तोको राजिदेहुँ हो देवा १
गम दुर्गम गढ़ देहु छड़ाई । अवरो बातसुनो कछु आई २

वही लोकके गये जन्म मरण छूटैहै सो कबीरजी साहिबकी उक्ति कहै हैं साहब कहै हैं हे सुत, हे जीव ! तू हमारिही सेवा मानु जिन देवतनको तैं चाहै है कि मैं इनको दास हौं तिन देवतनकी राज्य मैं तोको देहुँगो अर्थात् मेरो पार्षद जब होयगो तब सबके ऊपर ह्वै जायगो ते देवता तुम्हारही सेवा करैंगे १ और गम जो है जगत्, दुर्गम जो है निर्गुणब्रह्म ये दूनों धोखा जे गढ़ हैं ते तोको छोड़ाय देउँगो अर्थात् मायाते रहित तोको करिदेउँगो और वह धोखाब्रह्म में न लगन देउँगो जो जीवन को संसारी करिदेइ हैं तब सगुण निर्गुण के परे जो और कछु बात है सो मेरे पार्षद कहै हैं सो तैंहूं मेरे नगीच आइकै सुनैगो ॥ २ ॥

उतपतिपरलैदेउदेखाई । करहुराज्यसुख बिलसहुजाई ३

अरु उत्पत्ति प्रलय जौनी भांति सो मेरे प्रकाश के भीतर समष्टिजीवते होइ है सो मैं उंचेते तोको देखाइ देउँगो और जगत् में आयकै जो मोको जानिकै मेरी भक्ति करै हैं सो सुख है सो तैंहूं मेरी भक्ति करिकै संसाररूपी राज्य में जाइकै सुख सों बिलसैगो तोको संसार बाधा न करिसकैगो जगत्रूपी राज्य के विषयानन्द ब्रह्मानन्द आदिक जे सुख हैं ते सुख नहीं हैं जो कहो साहब

के लोक जाइ फेरि कैसे आवैगो उहाँ गये तो अपुनरावृत्ति कहि आये हैं तो कबीरजी बीरसिंह देवको साहबके लोक लैगये लोक देखाइकै पुनि लैआइकै शिष्य करतभये और श्रीकृष्णचन्द्र गोपनको आपनो लोक देखाइ पुनि लैआये हैं उनको जगत् बाधा नहीं करिसकै है वे साहब लोकही में हैं काहेते कि साहब को लोक प्रकाश सर्वत्र व्यापक है साहबकी सकल सामग्री साहबके रूपई वर्णन करि आयेहैं साहब लोकप्रकाश सर्वत्र पूर्ण है तो साहबको लोक और साहब सर्वत्र पूर्णई है जे साहबको जानै हैं और जगत्ऊ में हैं तो साहब के लोकई में बने हैं उनको संसार बाधा नहीं करिसकै ॥ ३ ॥

एको बार न जैहै बाँको । बहुरि जन्म नहिं होइहै ताको ४
जायपायदेहौसुखधाना । निश्चयबचनकबीरकोमाना ५

एको बार न बाँको जाइगो जन्म मरण तेरो छूटिही जायगो फेरि जन्म मरण न होइगो ४ और संपूर्ण जे पाप हैं ते रहैंगे और सुखको धाना कहे समूह तोको देउँगो सो साहब कहैहैं कि हे जीव! कबीरजी को वचन तुम निश्चय मानिकै मेरे पास आवो ॥ ५ ॥

साखी ॥ साधु सन्त तेई जना, जिन माना बचन हमार ॥
आदिअन्तउत्पति प्रलय, सबदेखादृष्टिपसार ६

जे हमारो कह्यो वचन प्रमाण मान्यो है तेई साधु हैं कहे साधन करणवारे हैं और तेई सन्त हैं तिनहीं के मनादिक शान्त ह्वैगये हैं और तेई आदि, अन्त, उत्पत्ति, प्रलय सब बात दृष्टि पसारिकै देख्यो है अर्थात् सब बात जानिलियो है ॥ ६ ॥

इति अट्ठावनवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ५८ ॥

अथ उनसठवीं रमैनी ॥ ५९ ॥

चौ० चढ़त चढ़ावत भड़हरफोरी । मन नहिं जानै को करिचोरी १

चोर एक मूसल संसारा। बिरलाजन कोइ जाननहारा २
स्वर्ग पताल भूमि लै बारी। एकै राम सकल रखवारी ३
साखी ॥ पाहन ह्वै ह्वै सब चले, अनभितियन को चित्त ॥
जासों कियो मिताइया, सो धनभे अनहित्त ४

चढ़तचढ़ावतभड़हरफोरी। मननाहिंजानैकोकरिचोरी १
चोर एक मूसलसंसारा। बिरला जन कोइ जाननहारा २
स्वर्ग पताल भूमिलै बारी। एकै राम सकल रखवारी ३

गुरुवालोग आप प्राण चढ़ावे हैं अरु औरको सिखै सिखै प्राण चढ़वावे हैं सो यही प्राण चढ़त चढ़त भड़हर जो ब्रह्म ताको फोरि के वही धोखाब्रह्म में लीनभये मनते या नहीं जाने हैं कि साहब के ज्ञानकी चोरी को करै है वही धोखाब्रह्म ही तो करै है यह नहीं जानैहैं वाहीमें लगे हैं १ सो चोर एक जो धोखाब्रह्म है सो संसार भरेको मूसिलियो अर्थात् ब्रह्मही के ज्ञानको सब दौरेहैं परमपुरुष को नहीं दौरे हैं तेहिते कोई बिरलाजन परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जाने है २ जे श्रीरामचन्द्र एक स्वर्ग पाताल भूमि को बारीके सम रखवारी कहे रक्षा करैहैं इहां एकै राम रखवार है यह जो कह्यो ताते बाँधनवारे धोखा देनवारे बहुत हैं पै बन्धन ते छोड़ावनवारे एक श्रीरामचन्द्रई हैं दूसरो नहीं है स्वर्गते ऊपर के भूमिते मध्यके पातालते नीचे के लोक सब आये ॥ ३ ॥

साखी ॥ पाहन ह्वै ह्वै सबचले, अनभितियनकोचित्त ॥
जासों कियो मिताइया, सो धनभे अनहित्त ४

अनभितिया को चित्त जो धोखाब्रह्म है तौने में लागिकै सम्पूर्ण जे जीवहैं ते पाहन ह्वैगये कहे जड़वत् ह्वैगये वे धनते छोड़ावनवारे श्रीरामचन्द्रको न जानतभये जौन ब्रह्मते सबजीव मिताई कियो सो अनहित भये कहे संसारमें डारनवारो धोखई ठहस्यो ॥ ४ ॥

इति उनसठवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ५९ ॥

अथ साठवीं रमैनी ॥ ६० ॥

चौ० छांड़हु पति छांड़हु लबराई । मन अभिमान टूटि तब जाई १
जनचोरी जो भिक्षा खाई । फिरि बिरवा पलुहावन जाई २
पुनि संपति औ पतिको धावै । सो बिरवा संसार लै आवै ३

साखी ॥ झूठा झूठेके डारहूं, मिथ्या यह संसार ॥
तेहि कारण मैं कहतहौं, जासों होय उबार ४

छांड़हुपति छांड़हुलबराई । मन अभिमानटूटितबजाई १
जनचोरी जो भिक्षाखाई । फिरि बिरवापलुहावन जाई २
पुनि संपति औ पतिको धावै । सो बिरवा संसारलै आवै ३

कबीरजी कहै हैं कि नाना देवता जो पति मानो हौ और लबराई जो धोखाब्रह्म है ताको छोड़िदेव न छोड़ोगे तो पुनिकै जब संसार आवोगे तबतो अभिमान दूरि होजाय अर्थात् नाना देवतनही की सुधि रहिजायगी न धोखाब्रह्म ही की सुधि रहिजाइगी १ काहे ते कहै हैं कि ब्रह्मको छोड़िदेउ सो आगे कहै हैं जीव या सनातनको साहबको है सो जे जन साहबते चोराइकै और देवतनते भिक्षा माँगि खाय हैं और फिरि फिरि बिरवारूप देवतन को पलुहावै कहे प्रश्नकरे जायहैं पुनि उनहीं सों सम्पति कहे नाना ऐश्वर्य होय सिद्धि होय और पति कहे राजा होय इन्द्र होय याको धावै हैं सो वे बिरवारूप जे देवताहैं ते फिरि फिरि संसारमें लै आवै हैं जन्म मरण होय है ॥ २ । ३ ॥

साखी ॥ झूठा झूठेके डारहूं, मिथ्या यह संसार ॥
तेहिकारण मैं कहतहौं, जासों होय उबार ४

सो झूठा जो ब्रह्म है ताको झूठ समुझिलेउ अरु देवता संसारहीमें हैं सो यह संसार जो है ताको मिथ्या मानिलेउ और सब को कारण जौन सर्वत्र है जाको पूर्व कहि आये हैं कि एकै राम रखवारी करै हैं सो मैं हीं हौं तिहारो पति तुम मोमें लगौ जाते

तुम्हारो उबार ह्वैजाइ जिनको तुम पति मानिराख्यो है ते तुम्हारे पति नहीं हैं वे बांधनेवारे हैं ॥ ४ ॥

इति साठवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ६० ॥

अथ इकसठवीं रमैनी ॥ ६१ ॥

चौ० धर्मकथा जो कहते रहई । लबरी नित उठि प्रातै कहई १
लबरिबिहानेलबरीसांझा । यक लाबरि बस हृदयामांझा २
रामहुँकेर मर्म नहिं जाना । लै मति ठानी वेद पुराना ३
वेदहुकेर कहा नहिं करई । जरतै रहै सुस्त नहिं परई ४
साखी ॥ गुणातीत के गावते, आपुहि गये गमाय ॥
मातीतन माटी मिल्यो, पवनहि पवन समाय ५

धर्मकथा जो कहतैरहई । लबरी नितउठि प्रातै कहइ १

धर्म की कथा जो कहतई रहै हैं कि स्त्री आपने पति ही को जानै और दूसरेको पति करि न जानै परन्तु धर्म कछू जानै नहीं हैं धर्म कहां है कि जीव यह साहबकी शक्ति है याके पति साहब हैं तामें प्रमाण "अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम् । जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत्" (इति गीतायाम्) "वासुदेवः प्रमाणैकः स्त्रीप्रायमिदं जगत्" दूसर कबीर का प्रमाण "दुलहिन गावो मङ्गलचार । हमरे घर आये रामभतार ॥ तनरति करि मैं मनरति करिहौं पांचौ तत्त्वबराती । रामदेव मोहिं ब्याहनऐ हैं मैं यौवन मदमाती ॥ सरिरसरोवर बेदी करिहौं ब्रह्मा वेद उचारा । रामदेव सँग भाँवरि लैहौं धनि धनि भाग हमारा ॥ सुर तेंतीसौ कौतुक आये मुनिवर सहस अठाशी । कहै कबीर हम ब्याहि चले हैं पुरुष एक अविनाशी" ते साहब को या जीव नहीं जानै है और और में लगे है बड़े प्रातःकाल उठिकै लबरी कहैहै कि हमहीं राम हैं दूसरो नहीं है अथवा जब जीव जन्म लेइहै सो प्रातःकाल है जब गर्भ में रह्यो तब साहब ते कह्यो है कि तुम मोको गर्भ ते छुड़ायो मैं तिहारो भजन करौंगो और जब गर्भते

निकस्यो जन्म लियो तब वह बात लबरी के डार्यो में कहा । कह्यो है साहब को भजन न कियो कहां कहां करन लग्यो ॥ १ ॥

लबरिविहानेलबरीसाँझा । यकलाबरिबसहृदयामाँझा२
रामहुँकेर मर्म नहिं जाना । लै मति ठानी वेद पुराना ३

सो यहि तरह ते लबरा विहाने कहे हैं और साँझ के लबरी कहै है कहे आपन व गुरु के और देवता की एकता मानै है काहेते तीनि हैं कि एक लबरी जो है माया सो हृदय में बसै है सोई सब लबरी कहावै है २ सो भला ब्रह्म को मर्म न जानै तो न जानै काहेते कि वह तो धोखा है जो कछू वस्तु होइ तो जानै परन्तु सांच व सर्वत्र पूर्ण और सबते श्रेष्ठ ऐसे जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जो या मर्म है कि जो कोई मेरे सम्मुख होई ताको मैं छुड़ाय लेउँ या जीव न जानत भये साहब छुड़ाइ लेइ है तामें प्रमाण "अबहीं लेउँ छुड़ाय कालते, जो घट सुरति सम्हारो" याही हेतु सुरति दियो है मति लैके कहे ग्रहण करिकै वेद पुराण के अर्थ ठानै है कहे अपने सिद्धान्तन में लगाय देइ है ॥ ३ ॥

वेदहु केर कहा नहिं करई । जरतै रहै सुस्त नहिं परई४

सिद्धान्त तो एकै होइ है साहब को सिद्धान्त जो तात्पर्य वृत्ति करिकै यह कहै है सो भला न जानै मुक्ति न होइ परन्तु वेद में जो सुकर्म लिखे हैं सो करिकै नरक ते तो बचै सो वेदहू की कही जो विधि निषेध है सोऊ नहीं करै है ऐसो मूढ़ यह जीव शोकरूपी अग्नि में जरतै रहै है सुस्त नहीं परै है सुचित्त नहीं होय है अर्थात् इहां कुछ छोड़्यो उहां धोखा जो ब्रह्म है तहां कुछ न समझ्यो और ईश्वर जे हैं तिनहूं को काहू न मान्यो और सबके रखवार दयालु जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनहूं छोड़्यो तेहिते मूर्ख ऊंटके पाद ह्वैगयो न ज़मीन को न आसमान को वाको कौन बचावै जो कहो आत्मा को चीन्हिकै बचि जाय तो जो आत्मा में एती शक्ति होती तो बन्धन में न परतो आपही बचि जातो ताते सबके रखवार जे साहब हैं तिनहीं के बचाये बचै है ॥ ४ ॥

साखी ॥ गुणातीतके गावते, आपुहि गये गमाय ॥
माटीतन माटी मिल्यो, पवनहि पवन समाय ५

गुणातीत जो साहब को लोक ताके गावते कहे प्रकाशते जहां समष्टि जीव रहे हैं तहां आपुही रामनामको साहबमुख अर्थ गमाय के संसारमुख अर्थ करि संसारी ह्वै गयो शरीर धारण कियो पुनि माटीमें माटी मिलिगयो और पवन में पवन मिलिगयो अर्थात् ते पुनि जैसेके तैसे ह्वैगये और जो 'गुणातीत के गावते' यह पाठ होइ तो यह अर्थ है गुणातीत जो है धोखाब्रह्म ताको गावत गावत साहब को गवांइ जात भये ॥ ५ ॥

इति इकसठवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ६१ ॥

अथ बासठवीं रमैनी ॥ ६२ ॥

चौ० जो तोहिं कर्ता वर्णविचारा । जन्मत तीनिदण्ड अनुसारा १
जन्मत शूद्रभये पुनि शूद्रा । कृत्रिमजनेउ घालिजगदुंद्रा २
जो तुम ब्राह्मणब्राह्मणीजाये । और राह तुम काहे न आये३
जो तू तुरुक तुरुकिनी जाया । पेटै काहेन सुरति कराया ४
कारी पीरी दूहौ गाई । ताकर दूध देहु बिलगाई ५
छांडुकपटनलअधिकसयानी । कह कबीर भजु शारँगपानी ६

जोतोहिंकर्ताबर्णविचारा । जन्मततीनिदण्डअनुसारा १

जे तोको ब्रह्मा वर्ण को विचार कियो कि ये ब्राह्मण हैं क्षत्रिय हैं वैश्य हैं शूद्र हैं मुसल्मान हैं सो एतो शरीर के धर्म हैं तीनि दण्ड जे हैं संचित-क्रियमाण-प्रारब्ध तिनके कर्म के अनुसारते जन्मत कहे जन्मलेइ हैं ॥ १ ॥

जन्मत शूद्रभयेपुनि शूद्रा । कृत्रिमजनेउघालिजगदुंद्रा २
जोतुमब्राह्मणब्राह्मणीजाये । औरराहतुमकाहेनआये ३

जब प्रथम तेरो जन्म होइहै तब तैं शूद्रई रहेहै काहेते कि संस्कार कुछ नहीं रहैहै और जब मरै है तब अशुद्धई रहैहै शिखा

जनेऊ दूनों आगीमें जरिजाइ हैं तबहूं शूद्रै ह्वै जाइहै सो कृत्रिम जनेऊ पहिरिकै तैं जगत् में द्वन्द्व मचाइ दियोहै कि हम ब्राह्मण हैं ये क्षत्रिय हैं ये वैश्य हैं ये शूद्र हैं २ जो कहो हम जन्म करिकै ब्राह्मण हैं ब्राह्मणीते उत्पन्न हैं और राह ह्वै काहे आये ब्रह्माण्ड फोरिकै आवते आँखीके राह ह्वै आवते अशुद्ध राह ह्वै काहे आये अर्थात् न ब्राह्मणी आपनी शक्तिते उत्पन्न करिसकै और न तैं आपनी शक्ति ते आइसकै कर्मही ते ब्राह्मणी उत्पन्न करै है कर्मही ते तैं आवै है तेहिते जन्म ते तो शूद्र हौ संस्कारते द्विज भये वेद अभ्यास कियो तब विदभये और जब ब्रह्म को जानैगो तब ब्राह्मण कहावैगो ताते कर्महीते ब्राह्मणत्व तो में आवै है अहंब्रह्मता धोखही है परब्रह्म जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनहूंको तैं न जान्यो सो तैं ब्राह्मण कैसे होइगो जब तैं साहब को जानैगो तबहीं ब्राह्मण होइगो ॥ ३ ॥

जोतूतुरुकतुरुकिनीजाया । पेटै काहे न सुरति कराया ४
कारी पीरी दूहौ गाई । ताकर दूध देहु बिलगाई ५

और जो तू कहै है कि हम तुरुकिनी ते उत्पन्न हैं तो पेटै काहे न सुरति करायो तेहिते तुरुकिनी के पेटते भये ते मुसल्मान नहीं हैं ४ कारी पीरी गाइको दूध मिलाइकै कोई बिलगावै तो का बिलग होइ है ऐसे आत्मा तो एकही जाति है हिन्दू तुरुक नहीं ह्वै सकै है ॥ ५ ॥

छांड़ुकपटनलअधिकसयानी।कहकबीरभजुशारँगपानी६

आपनी सयानी अधिक करिकै जो कपट करि राख्यो है सो छोड़ि दे विचारिकै देखु तैंतो आत्मा न हिन्दूहै न तुरुकैहै तैं जाको अंश है ऐसे शारँगपाणि जे साहब हैं ताको भजु ताकी सेवा करु शारँगपाणी जो कह्यो ताको यह हेतु है कि धनुषबाण लिये तेरी रच्छा करिबेको तैयार हैं औरै औरै में लगे हैं जो साहबमें लागैहैं

सोई सबनेश्रेष्ठ होयहैं तामें प्रमाण "विप्राद्द्विषट्गुणयुतादरविन्द-नाभपादारविन्दविमुखाच्छ्वपचंवरिष्ठम् । मन्ये तदर्पितमनो वचने हितार्थप्राणं पुनाति सकुलं न तु भूरिमानः१" (इति भागवते) ६॥

इति बासठवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ६२ ॥

अथ तिरसठवीं रमैनी ॥ ६३ ॥

चौ० नाना वर्णरूप यक कीन्हा । चारि वर्ण उन काहुन चीन्हा १
नष्टगये करता नहिं चीन्हा । नष्टगये औरहि मन दीन्हा २
नष्टगये जिन वेद बखाना । वेद पढ़ा पै भेद न जाना ३
विमलपकरैं नयननहिं सूझा । भोअयान तब कछुव न बूझा ४
साखी ॥ नाना नाच नचाइकै, नाचै नटके वेष ॥
घट घट अविनाशी बसै, सुनहु तकी तुम शेष ५

नानावर्णरूप यक कीन्हा । चारिवर्णउनकाहुनचीन्हा १
नष्टगयेकरतानहिंचीन्हा । नष्टगये औरहि मनदीन्हा २
नष्टगये जिन वेद बखाना । वेद पढ़ा पै भेद न जाना ३
विमलपकरैंनयननहिंसूझा। भोअयानतबकछुवनबूझा ४
साखी ॥ नाना नाच नचाइकै, नाचै नट के वेष ॥
घटघटअविनाशीबसै, सुनहुतकीतुम शेष५

वर्ण धर्मखण्डन करि आये अब सब वर्णको एक मानि जे साहबको भूलै हैं तिनको खण्डनकरै हैं नानारूप जे जीव हैं तिन-को एक वर्ण कहे एक रङ्ग करिदेत भयो 'अहंब्रह्मास्मि' करिकै सब मानत भयो कि हमहीं सब हैं दूसरो नहीं है चारिउ वर्ण वहीको वर्णन करत भये यह न जानत भये कि यह धोखाब्रह्म को खाइ लेइ है १ फिरि फिरि सब जीव नष्ट ह्वैगये कहे मरि गये उद्धार-कर्ता जो साहब है ताको न चीन्हत भये और औरहि जो वा धोखा ब्रह्म है तौनेमें मन दैके नष्ट ह्वैगये अर्थात् लीन ह्वैगये साहबको

---

१ धर्मश्च सत्यं च दमस्तपश्च अमात्सर्यं ह्रीस्तितीक्षाऽनसूयाः । यज्ञश्च दानं च धृतिः श्रुतं च व्रतानि वै द्वादश ब्राह्मणस्य ॥

तो जाने नहीं फिर संसारी भये २ जे वेदको बखानि बखानिकै पढ़ि पढ़िकै औरनको अर्थ सुनावै हैं ते वेद पढ़यो परन्तु भेद न जान्यो कहे वेद को तात्पर्य जे साहब हैं तिनको न जान्यो तेहिते नष्ट ह्वैगये सब वेदको भेद साहब है तामें प्रमाण "सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति" ३ विमलरूप जो साहब मन वचनके परे ताको खं कहे आकाशवत् शून्य ज्ञान करै है कि वह नहीं है आकाशवत् ब्रह्महीं पूर्ण है सो उनके ज्ञान नेत्र तौ हई नहीं हैं साहब कैसे सूझि परै जब न सूझि पर्यो तब अज्ञान ह्वैगये "नेति नेति" कहनलगे कि अकथ है कबीर का प्रमाण "वेद बिचारि भेद जो जानै। सतगुरु मर्म शब्द पहिंचानै" ४ गुरुवालोग कहैहैं कि वही जो है अविनाशी सो सबके घट घटमें सबको नाच नचावैहै और नटके वेष आपो नाचैहै सो कबीर शेषतकी सों कहै हैं कि हे शेषतकी! जो सबको नाच नचावैगो आप नट के वेष नाचैगो सो अविनाशी कैसे होइगो? काहेते कि नट एक वेष लै आयो पुनि वह वेष छोड़िकै और वेष लेआयो याही भांति नानावेष नट धारण करै हैं ते सब अनित्य हैं नानावेष धरिबो तो मायाके गुण हैं वह मायाके परे कैसे होइगो और जब मायाते परे न होइगो तो अविनाशी कैसे होइगो सो हे शेषतकी! तुम सुनो वाहू विचार करत करत जो शेष रहिजायहै सो तुमहो वातो तुम्हाराही अनुभव है अथवा तुम शेष हौ सो कार निराकार के परे जो साहब है ताको तुम शेष हौ कहे अंश हौ॥ ५॥

इति तिरसठवींरमैनीसमाप्तम्॥ ६३॥

अथ चौसठवीं रमैनी॥ ६४॥

चौ० काया कञ्चन यतन कराया। बहुत भांतिकै मन पलटाया १
जो सौबार कहौ समुझाई। तहिबो धरा छोड़ि नहिंजाई २
जनके कहे जोजनरहिजाई। नवो निद्धि सिद्धी तिन पाई ३
सदा धर्म तेहि हृदयाबसई। राम कसौटी कस तै रहई ४

जोरि कसावै अन्तै जाई । तौ बाउर आपुहि बौराई ५
साखी ॥ ताते परी कालकी फांसी, करहु आपनो शोच ॥
जहां संत तहँ संत सिधावै, मिलि रहे पोचै पोच ६

कायाकञ्चनयतन कराया । बहुतभांतिके मन पलटाया १
जोसौबारकहौं समुझाई । तहिबो धरा छोड़ि नहिंजाई २
जनकेकहेजोजनरहिजाई । नवो निद्धि सिद्धी तिनपाई ३
सदाधर्मतेहिहृदयाबसई । राम कसौटी कसते रहई ४
जोरि कसावै अन्तै जाई । तौ बाउर आपुहि बौराई ५
साखी ॥ ताते परीकालकीफांसी, करहु आपनो शोच ॥
जहांसन्त तहँ सन्त सिधावै, मिलिरहे पोचै पोच ६

कबीरजी कहै हैं कि ईजीवनके कायाको हम बहुत यतनकरवाया और बहुत भांति ते मन पलटाया कि तू धोखा को त्यागि कञ्चन आपने स्वरूपको जानो १ या बात यद्यपि मैं सौबार समुझाऊं हौं ताहूपै ऐसो धोखाको धर्‌यो कि छोड़ि नहींजाय सो जे जन गुरुवाजनके कहे रहिजायहैं धोखाको नहीं त्यागै हैं २ ते नवो निद्धि पावैहैं और निर्गुण सगुणके परेमें जो बात कहौहौं ताको कहांबूझैं ३ जे मेरो कह्यो बूझैहैं कि हम साहबके हैं या धर्म जिनकेहृदयमें बसै है ते साहबकेरूप कसौटी में आपनो कञ्चनस्वस्वरूप कसतई रहै हैं और जे साहब नहीं कसै हैं गुरुवालोगनके कसावै जाइहैं ते वे बाउरऊ निराकार ब्रह्म तामें आपही बौरायजाय हैं जो और को और कहै सो बाउर है ४ । ५ सो हे जीवो ! तुम साहब के होइके धोखा में लागे ताहीते कालकी फांसी में परेहौ सो आपने छूटिबे को शोच करौ देखो तो जहां सन्त रामोपासक हैं तहँ सन्त जाइहैं आपनोस्वरूप जानि छूटिजाइहैं जे गुरुवालोगन को उपदेश लेइ हैं ते जीव पोचै पोच मिलिरहे हैं ॥ ६ ॥

इति चौसठवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ६४ ॥

अथ पैंसठवीं रमैनी ॥ ६५ ॥

चौ० अपने गुणके औगुण कहहू । यहै अभाग जो तुम न विचरहू १
तुम जियरा बहुते दुखपाया । जलबिन मीनकवनसचुपाया २
चातकजलहल भरे जो पासा । मेघ न बरसै चलै उदासा ३
स्वांग धरयो भवसागर आसा । चातकजलहलआशैपासा ४
रामै नाम अहै निजसारू । औ सब झूठ सकल संसारू ५
किंचित है सपनेनिधि पाई । हियनमाहँ कहँ धरै छिपाई ६
हरि उतङ्ग तुम जातिपतङ्गा । यमघर कियो जीवको सङ्गा ७
हिय न समाय छोड़ नहिं पारा । झूठलोभ तैं कछुन बिचारा ८
अस्मृति कहा आपु नहिं माना । तरिवर छल छागरह्वैजाना ९
जियदुरमति डोलै संसारा । तेहिं नहिं सूझै वार न पारा १०
साखी ॥ अन्धभया सब डोलई, यह कोई नहिं करै विचार ॥
हरिकि भक्ति जाने विना, भवबूड़ि मुआ संसार ११

अपनेगुणकेऔगुणकहहू । यहैअभागजोतुमनविचरहू १
तुमजियराबहुतैदुखपाया । जलबिनमीनकवनसचुपाया २
चातकजलहलभरे जो पासा । मेघनबरसैचलैउदासा ३
स्वांगधरयोभवसागरआसा । चातकजलहलआशैपासा ४

स्वतः सिद्ध तुम साहब के दास हौ या जो आपनो गुण ताको अवगुण कहौ हौ कि हम ब्रह्म हैं सो या नहीं विचारौ हौ कि हम ब्रह्म हैं कि दास हैं याही तुम्हारी अभाग है दासभूत प्रेतमान "दासभूतः स्वतः सर्वदात्मनः" परमात्मा में बहुत दुःख पायो है जो छाया पाठ होय तो बहुत दुख में आयो सो जब विना कौनो सचुपायो है नहीं पायो ऐसे विना साहब के जाने सचु न पावोगे १ । २ जैसे जब मेघ स्वातीको जल नहीं बरषै हैं तब चातक उदासै रहै है कहे पियासै रहै है जो नजीक समुद्रौ भरो होय तो कहा होइ ऐसे स्वामी मेघसम रामोपासक पूरा गुरु तुम नहीं पायो जो साहब को बताइ देइ ताते तुम उदासई गया और और

में लगावनवारे गुरुवालोग जो उपदेशऊ कियो पै जनन मरण छूट्यो ३ भवसागर ते पार होबे की आशाकरि स्वांग जो धोखा ब्रह्म तौने को तुम धर्यो कि "अहं ब्रह्मास्मि" मानि संसारते छूटि जाइँगे सो तुम्हारी आशा चातककी भई कि स्वाती तो पायो नहीं जो बहुत जल है पै विना स्वाती चातक की आशा फांसही ह्वैगई अथवा स्वांग धोखाब्रह्म को जो तुम धर्यो है सो साहब की आशा कहे दिशा नहीं है भवसागरही की आशा कहे दिशा है ॥ ४ ॥

रामै नाम अहे निज सारू । औ सब झूठ सकल संसारू ५
किञ्चितहै सपने निधिपाई । हियनमाहँ कहँधरै छिपाई ६
हरिउतङ्गतुमजाति पतङ्गा । यमघरकियोजीवकोसङ्गा ७
हियनसमायछोड़नहिंपारा। झूठलोभतेंकछुनबिचारा ८
अस्मृतिकहाआपुनहिंमाना। तरिवरछलछागरह्वैजाना ९
जियदुरमतिडोलैसंसारा । तेहिनहिंसूझै वार नपारा १०

हे जीवो ! तुम यह विचारत जाउ कि निज कहे आपनो सार रामै नाम को साहब मुख अर्थ समुझि कै संसार ते छूटोगे अर्थात् साहब को स्वरूप और तुम्हारो स्वरूप रामनामही में है और सब कहे सब ब्रह्मई है यह जो मानि राख्यो है सो धोखा है झूठा है और मायिक जो सकल संसार है सो झूठा है अथवा सकल संसार में और जे मत हैं ते सब झूठे हैं ५ जो "अहंब्रह्मास्मि" ज्ञान करै है सो सपने कैसी है अर्थात् झूठी है तैं तो किंचित् कहे अणुहै वा विभु है झूठ लोभते कछु न विचारा तुम्हारे हिये में ब्रह्म नहीं समाय है कहे तुम्हारो ब्रह्म होइबो नहीं संभवति होइ है याको छोड़िदेव और वाको पार नहीं है कहे लबरी और न होय है याते झूठ लोभ किये है कि मैं ब्रह्म होइ जाउँगो सो कछु न विचारा काहेते अच्छा विचार नहीं किये है अथवा कछू न विचारा कहे वा विचार कछू नहीं है मिथ्या है ६ । ७ । ८ जौन स्मृति बतावै है " स्याज्जीवनेच्छा यदि ते स्वसत्तायां स्पृहा यदि ।

आत्मदास्यं हरेः स्वाम्यं संभावं च सदा स्मर १" सो तुम स्मृतिको कहा और कहे आपनो स्वस्वरूप न मान्यो धोखाब्रह्म में लगिकै अपने को ब्रह्ममानिकै तरिवर जो है संसार ताको छल जो है धोखाब्रह्म सोई है छागर कहे बोकरा ताही ह्वैके कहे वह ब्रह्म ह्वैके तुम जान्यो कि हम चरिलेइँ अर्थात् संसार ते छूटिजाइँ सो येतो बड़ा संसाररूपी वृक्ष कहा धोखाब्रह्म बोकरा चरोच-रिजाइ है ६ जौन जीमें दुर्मति करिकै संसार में डोलौहौ कहे फिरौहौ सो 'अहंब्रह्म' माने संसार को वारापार न पावोगे वह तो धोखा है॥ १० ॥

साखी ॥ अन्धभयासबडोलईयह, कोइ नहिं करैविचार॥
हरिकिभक्तिजाने बिना, भवबूड़िमुआसंसार११

श्रीकबीरजी कहै हैं कि मैं येतो समुझाऊं हौं परन्तु सब संसार की आंखी फूटिगई हैं अन्धभया सब डोलै है कहे फिरै हैं यह विचार कोई नहीं करै है भक्तनको संसार दुःख हरै सो हरि जे हैं सबके रक्षक परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनकी अनुरागात्मिका भक्ति बिना जाने भव जो है धोखाब्रह्म तौने है भ्रम को समुद्र ताही में संसार बूड़ि मुआ कहे संसारीजीव बूड़ि मुये ॥ ११ ॥

इति पैंसठवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ६५ ॥

अथ छाछठवीं रमैनी ॥ ६६ ॥

चौ० सोई हितू बन्धु मोहिं भावै। जात कुमारग मारग लावै १
सो सयान मारग रहिजाई। करै खोज कबहूं न भुलाई २
सो झूठा जो सुत कै तजई। गुरुकी दया रामको भजई ३
किंचितहै यकजगतभुलाना। धनसुतदेखिभयाअभिमाना४
साखी ॥ जिय जो नेक पयान किय, मन्दिर भया उजार ॥
मरे जे जियते मरिगये, बाचे बाचनहार ५

सोई हितू बन्धु मोहि भावै। जात कुमारग मारग लावै१

सो सयान मारग रहिजाई। करै खोज कबहूं न भुलाई २
सो झूठा जो सुतकै तजई। गुरुकी दया रामको भजई३
किंचितहैयहजगतभुलाना॥धनसुतदेखिभयाअभिमाना४
साखी॥ जिय जो नेक पयान किय, मान्दिर भया उजार॥
मरे जे जियते मरिगये, बाचे बाचनहार ५

सोई हितू वा बन्धु मोको भावै है जो कुमारग में जात जे जीव हैं तिनको सुमारग में लेआवै कहे साहब को बतावै अथवा कुमार्ग में जात जो जीव हैं ताको साहब के सुमार्गमें लगावै १ अरु सोइ जीव सयान है जो सुमार्ग में आयकै रहिजाय है कहे स्थिर ह्वै जाय है अरु और और मतनको खोज करिकै सबको सिद्धान्त साहबही में लगाइदेइ सो कबहूं न भुलाइहै २ ऐसो गुरुवा झूठा है जो सुतकै कहे मूड़ मूड़िकै अपनो चेला बनाइकै तजि देइ है साहब को नहीं बतावै है औरे औरे देवतन को सौंपि देइहै और जाकी दया ते अर्थात् जाके उपदेश ते यह जीव श्रीरामचन्द्र को भजन करैहै सोई सांचो गुरु है भाव यह है कि विना परमपुरुष श्रीरामचन्द्रजी के जाने यह जीवको शोक नहीं छूटैहै जे गुरुसाहब को बताइ कै संसार ते नहीं छुड़ावै हैं औरे औरे मतनमें लगाइ कै संसारमें डारि देइहैं ते अज्ञान दूरि करनवारे नहीं हैं वे नरक देनवारे हैं और आप नरक जानवारे हैं तामें प्रमाण "शिष धन हरै शोक नहिं हरई। सो गुरु घोर नरक में परई" और कबीरहूजी लिखि आये हैं "छोड़िदेहु नरझेलिकझेला। बूड़े दोऊ गुरु अरु चेला" इहै जीव तू तो अनु है एक जो ब्रह्म और जगद्रूप जो है माया तामें भुलाइरह्योहै याही ते तैं जगत् में उत्पन्न भयो है आपने को मालिकमानि धन सुतादिको ताको अभिमान होइहै ३।४ हे जीव! जो नेकहु पयान ते किय स्थूलशरीर मन्दिर उजार होइजाइ है सो विना परमपुरुष श्रीरामचन्द्रके भजन जे मरे ते जीवतो मरिकै चौरासीलाख योनि में भटकनेलगे और बाचे

बाचनहार कहे जे पांचौ शरीर ते बचिकै पार्षदरूप पाचनद्वार रहे ते बाचे ॥ ५ ॥

इति छाछठवींरमैनीसमातम् ॥ ६६ ॥

अथ सतसठवीं रमैनी ॥ ६७ ॥

गुरुमुख चौ० ॥ देह हलाये भक्ति न होई । स्वांग धरे बहुतै नर जोई १
धिंगा धिंगी भलो न माना । जो काहू मोहिं हृदय न जाना २
मुखकछुऔरहृदयकछुआन ॥ सपन्योकबहूंमोहिं न जाना ३
ते दुख पावैं यहि संसारा । जो चेतौ तौ होहु निनारा ४
जो नर गुरुकी निन्दा करई । शूकर श्वान जन्म सो धरई ५
साखी ॥ लखचौरासीयोनिजीवयह, भटकि भटकि दुख पावै ॥
कह कबीर जो रामहिं जानै, सो मोहिं नीके भावै ६

गुरुमुख ॥ देहहलायेभक्तिनहोई । स्वाँगधरेबहुतैनरजोई १
धिंगाधिंगीभलो न माना ॥ जो काहूमोहिंहृदय न जाना २

देह हलाये कहे पेट हलाय कुण्डलिनी उठावै है और स्वांग धरे कहे कोई खाख लगावै है कोई जटा नहीं बढ़ावै है कोई टोपी दै अलफी पहिरि कुबरी लेइहै कोई कोई तिलकै नहीं देइहै कोई बेंड़ा तिलकदेइहै कोई नाकते तिलक देइहै कोई काठफल पाषाण अस्थि इत्यादि की माला पहिरै है ऐसे स्वाँगधरे नरनको देखेहै सो विना साहबके जाने भक्ति होइहै नहीं होइ है १ धिंगाधिंगी कहे बड़े बड़े मालपुवा मोहनभोग खाय मोटायकै बड़े बड़े धिंगा ह्वै रहे हैं और बड़ी बड़ी धिंगी ह्वैरही हैं भलो जो साँचमत ताको नहीं मानै हैं साहब कहै हैं जो कोई मोको हृदयते नहीं जानै है सो मोको पावै है नहीं पावै है ॥ २ ॥

मुखकछुऔरहृदयकछुआना ॥ सपन्योकबहूंमोहिंनजाना ३
ते दुखपावहिं यहि संसारा । जोचेतौतौहोहुनिनारा ४
जोनरगुरुकीनिन्दाकरई । शूकर श्वानजन्म सो धरई ५

मुखमें तो और है कि हम संन्यासी हैं हम साधु हैं हम ब्रह्मचारी हैं और हृदयमें और है धन मिलै को उपाय खोजै हैं ते नर सपन्यो कबहूं मोरो नहीं जानिसकैहैं ३ सो ऐसे जे प्राणी हैं ते यहि संसार में दुःख नाना प्रकारके पावैहैं सो हे जीवो! तुम चेतकरौ तो इनने न्यारा ह्वै जाउ ४ और जे तात्पर्यवृत्ति करिकै मोको बतावै हैं ऐसे जे गुरु हैं तिनकी जो कोई निन्दा करै हैं कि जोई वर्णन करै हैं सो सब मिथ्या है ते मरिकै श्वान अरु शूकर को जन्म धारण करै हैं ॥ ५ ॥

साखी॥लखचौरासीयोनिजीवयह,भटकिभटकिदुखपावै।
कहकबीरजोरामहिंजानै, सोमोहिं नीके भावै ६

साहब कहै हैं कि मेरो भक्त कबीर कहै है कि चौरासी लाख योनिमें जीव यह भटकि भटकि दुःख पावै है सो तिनमें जो कोई श्रीरामचन्द्रको जानै सोई मोको भवै है सो ऐसो प्रकट कबीर बतावै है ताहूको और और अर्थकरि और और लगैहैं सो मोको नहीं जानै हैं ॥ ६ ॥

इति सतसठवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ६७ ॥

अथ अड़सठवीं रमैनी ॥ ६८ ॥

चौ० तेहि वियोगते भये अनाथा। परिनिकुञ्जबन पावनपाथा १
बेदौ नकल कहै जे जानै। जो समुझै सो भलो न मानै २
नटवर बन्द खेल जो जानै। ताकर गुण जो ठाकुर मानै ३
उहै जो खेल सबघटमाहीं। दूसर को लखी कछु नाहीं ४
भलो पोच जो अवसर आवै। कैसहुकै जन पूरा पावै ५
साखी॥ जेकरे शरलगै हिये तब, सो जानैगा पीर॥
लागै तो भागै नहीं सुख, सिन्धु निहारु कबीर ६

तेहिवियोगतेभये अनाथा। परिनिकुञ्जबनपावनपाथा १
बेदौ नकल कहै जो जानै। जो समुझैसो भलो न मानै २

सम्पूर्ण जे जीव हैं ते परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनहींके वियोग अनाथ ह्वैगये निकुञ्जवन जो वाणी को जाल है नाना मत जिनमें परिकै एक सिद्धान्त मत परमपुरुष श्रीरामचन्द्र के मिलनेके पाथ कहे पन्थ न पावत भये १ जिनको पूर्व कहिआये कि साहब को नहीं जानै स्वांगभर बनावै हैं तिनको हे जीव ! जो तैं जानै तो वेदहू वे मतवारेनको नकलई कहैहैं तो जो साहब को समुझैंहैं सोऊ उनको नहीं मानैहै नकलई मानैहै ॥ २ ॥

नटवरबन्द खेल जो जानै । ताकरगुण जो ठाकुर मानै३
उहै जो खेलै सबघटमाहीं । दूसरको लेखी कछु नाहीं ४
भलो पोच जो अवसर आवै । कैसे कै जन पूरा पावै ५

अब योगिनको कहै हैं नट कैसे बंटा जो कोई खेलै जानै है कहे यह जीव आत्मा को ब्रह्माण्ड में चढ़ाइकै फिरि उतारै जानै है ताको गुण यह है कि समाधि लगि जाइ है कहे ब्रह्मरूप ह्वै जाइ है सो वही ब्रह्मको जो कोई ठाकुर मानै है ३ अर्थात् जौन ब्रह्म मैं ह्वै जाउहौं तौनै घट घट में है दूसरे की कछु नहीं लगै है अर्थात् दूसरो पदार्थ कछु नहीं है ४ सो जे यह मत करै हैं तिनको भलो पोच कहे नीको नागा अवसर आवत है अर्थात् जब जीवमें लीन ह्वै ब्रह्मरूप ह्वै जाइहै यातो भलो अवसर और जब समाधि उतरि गई जैसेकै तैसे ह्वैगई या पाँच अवसर ह्वै सो कैसे कै जन पूरो ज्ञान पावै कि हम पूर्ण ब्रह्म हैं तो सर्वत्र पूर्ण हैं जो या ब्रह्म ह्वै जातो तो समाधि उतरेहू में वही वृत्ति बनी रहती ॥ ५ ॥

साखी ॥ जेकरे शरलगै हिये तब, सो जानैगा पीर ॥
लागै तौ भागै नहीं सुख, सिन्धु निहारु कबीर६

जेकरे शर लागैहै सोई बाण लागेकी पीर जानै सो जो कोई समाधि लगावै है सोई समाधि उतरे को दुःख जानै है सो समाधि तो तोर लागै है ना भागु समाधिही लगाये रहु सो तेरे।

भागिबो तो बनतई नहीं है समाधि उतरेही आवै है याते यह धोखा छोड़िदे कबीरजी कहै हैं सुखसिंधु जे साहब हैं तिनको निहारु जिनको एकबार निहारे समाधि लगी रहै है अर्थात् जो एकहू बार साहब के सम्मुख भयो है सो फिरि नहीं संसार में बच्यो है तामें प्रमाण "एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो दशाश्वमेधावभृथेन तुल्यः । दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय इति" अथवा जाके बाण लगैहै सोई पीर जानै है सो जो साहेबमें लागे हैं तेई धोखाकी पीर जानै हैं कि हम योग में यज्ञादि में लगिकै नाहक जन्म गँवाये सो कबीरजी कहै हैं कि साहबको दुर्लभ जानि तैं लागु तौ भागु न साहब सुखसिन्धु है तिनको तू निहारु तो ये सब धोखनकी पीर दूरि करि देयँगे तब अपराध तेरो न गनैंगे तामें प्रमाण "कथंचिदुपकारेण कृतेनैकेन तुष्यते । न स्मरत्यपकाराणां शतमप्यात्मवत्तया" (इति बाल्मीकीये) ॥ ९ ॥

इति अड़सठवींरमैनीसमाप्तम् ॥ ६८ ॥

अथ उनहत्तरवीं रमैनी ॥ ६९ ॥

चौ० ऐसा योग न देखा भाई । भूला फिरै लये गफ़िलाई १
महादेव का पन्थ चलावै । ऐसो बड़ो महन्त कहावै २
हाट बाट में लावै तारी । कच्चे सिद्धन माया प्यारी ३
कब दत्तै मावासी तोरी । कब शुकदेव तोपची जोरी ४
कब नारदबन्दूख चलाया । व्यासदेव कब बम्ब बजाया ५
करहिं लड़ाई मतिकेमन्दा । ई हैं अतिथि कि तरकसबन्दा ६
भये बिरक्तलोभमन ठाना । सोना पहिरि लजावै बाना ७
घोरा घोरी कीन्ह बटोरा । गांव पाय यश चलो करोरा ८
साखी ॥ तिय सुन्दरी न सोहई, सनकादिक के साथ ॥
कबहुँक दाग लगावई, कारी हांड़ी हाथ ९

ऐसा योग न देखा भाई । भूला फिरै लये गफ़िलाई १

महादेव को पन्थ चलावै। ऐसो बड़ो महन्त कहावै २
हाटबाट में लावै तारी। कच्चे सिद्धन माया प्यारी ३
कब दत्ते मावासी तोरी। कब शुकदेव तोपची जोरी ४

श्रीकबीरजी कहै हैं कि ऐसा योग हम नहीं देख्यो है कि साहब को तो जानै नहीं हैं गाफ़िल ह्वैके भूले भूले फिरै हैं १ अरु महादेव को पन्थ जो तामसशास्त्र है सो चलावै हैं और बड़े महन्त कहावै हैं २ सबके देखावन को हाट में और पहारन के बाट में तारी लगाय कै बैठे हैं और सिद्ध कहावै हैं और सबके देखावन को यह कहै हैं कि संन्यासी को धर्म नहीं है कि द्रव्य लेय और हाथ छुवै परन्तु जो कोई चढ़ाइकै चलो जाइहै ताको चिमटाते लैकै कमण्डलु में डारिलेइ हैं सो ऐसे कच्चे सिद्धन को माया बहुत प्यारी लगैहै ३ दत्तात्रेय कबै मवासिन को शत्रुन को तोर्‌यो है और शुकदेव कबै तोपखाना अपने साथ जोरिकै चलायो है ॥ ४ ॥

कब नारद बन्दूख चलाया। व्यासदेव कब बम्बबजाया ५
करहिंलराई मतिके मन्दा। ई हैं अतिथिकितरकसबन्दा ६
भये बिरक्त लोभमनठाना। सोना पहिरि लजावैंबाना ७
घोरा घोरी कीन्ह बटोरा। गाँवपाय यशचलोकरोरा ८

और नारदमुनि कबै बन्दूख चलायो है और व्यासदेव कबै नगारादैकै काहूके ऊपर चढ़े हैं ५ ई संन्यासी बैरागी मतिके मन्द लड़ाई करै हैं ई अतिथि हैं तरकसबन्द सावन्त हैं ६ भये तो बिरक्त संन्यासी परन्तु लोभ करिकै रोजगार करै हैं सोना पहिरि कै बाना को लजावै हैं ७ और घोरा घोरी हाथी बहुत आपने संग लेतभये और काहू राजाते गांव पायो करोरपती है या यश चलायो बड़े ज्ञानी हैं बड़े भक्त हैं या यश चलायो ॥ ८ ॥

साखी ॥ तिय सुन्दरी न सोहई, सनकादिक के साथ ॥
कबहुँक दाग लगावई, कारी हांड़ी हाथ ९

लाव लश्कर में स्त्री साथ रहतई है सनकादिक जटाधारे वैष्णवनको कहे हैं अथवा सनकादिक कहे जिनकी पांच वर्ष की अवस्था बनीरहैहैं ऐसे ब्रह्माके पुत्र तिनहूंको या मजा होय तो कबीरजी कहैहैं कि स्त्रीनके साथमें सुन्दरी का सोहैहै नहीं सोहै है कबहूं दाग लगावतई है जैसे कारीहांड़ी हाथमें लेइ तो दागलागि ही जाय है ऐसे जिनके जिनके संगमें स्त्रीरहै है ते पाखण्डिनको दाग लगतै है त्रिनते नहीं बचे हैं नामके तो संन्यासी बैरागी हैं अखाड़ा गृहस्थी बांधे हैं तहां स्त्री आवई चाहैं सो दाग लगावई चाहैं अथवा ऐसे पाखण्डी हैं ते मायारूपई ह्वैरहे हैं तेई माया रूपी सुन्दरी कहे स्त्री हैं तिनको संग न करै और जो संग करै तो दाग लगवई करै सो जीव ते पाखण्डिनको संग न करै तामें प्रमाण "पुंसां जटाधरणमोजवतां वृथैव मेशाविनामखिलशौचनिराकृतानाम् । तोयप्रदानपितृपिण्डबहिष्कृतानां संभाषणादपि नरा नरकं प्रयान्ति" (इति विष्णुपुराणे) ॥ ६ ॥

इति उनहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ६९ ॥

अथ सत्तरवीं रमैनी ॥ ७० ॥

चौ० बोलाना कासों बोलियेभाई । बोलतहीं सबतत्त्व नसाई १
बोलत बोलत बाढु बिकारा । सो बोलिय जो परै बिचारा २
मिलै जो सन्तबचनदुइकहिये।मिलै असन्त मौन ह्वै रहिये ३
पण्डितसों बोलिय हितकारी । मूरुखसों रहिये झखमारी ४
कह कबीर ई अधघट डोलै । पूरा होय बिचार लै बोलै ५

बोलाना कासोंबोलियेभाई । बोलतही सब तत्त्व नशाई १
बोलत बोलत बाढु बिकारा । सो बोलिय जो परैबिचारा २

बैरागिनकी संन्यासिनकी दशा जैसी ह्वैरही है सो पूर्वकहि आये सो ऐसे पाखण्डी संसारमें ह्वै रहे हैं बोलाना कासों बोलिये बोलतहीमें सब तत्त्व नशाई जाइहैं तत्त्व कहावैहै यथार्थ सो साहब के जे नाम रूप लीलाधाम यथार्थ हैं ते नशाइ जाइ हैं कहे

भूलिजाइ हैं १ बोलत बोलत बिकारई बाढ़े है ताते सो बात बोलिये जेहिते साहब के नामादिकन को विचार ठीक परिजाइ कौनी तरहते सांच विचार ठीक परै सो कहै हैं ॥ २ ॥

मिलैजोसन्तबचनदुइकहिये।मिलैअसन्तमौनह्वैरहिये ३
पण्डितसों बोलिय हितकारी।मूरुखसोंरहियेझखमारी४

जो सन्त मिलै तौ द्वै बचन कहबऊ करिये द्वै बचन कह्यो ताको भाव यह है कि थोरई आपने प्रयोजनमात्र बोलिये और सत्संग करिये काहेते कि उनके सत्संग किये बिचार बाढ़ैहै और असंत मिलै तो मौन ह्वैरहिये बोलिये न काहेते कि उनके संगते अज्ञान बाढ़ै है ३ तेहिते पण्डित सों बोलिबो हितकारीहै काहेते कि पण्डित जेहैं ते सारासार को विचार करिकै सारपदार्थ जे साहबहैं तिनको ठीक करिकै असार जो है धोखाब्रह्म और माया ताको छोड़ि दियो है वे साहबको बतावैंगे औरमूरुख सों बोलिबो झखमारी है काहेते कि जो मूरुख सों बोलै तो अपने स्मरण की हानि होइ है वह तो समुझायेते समुझैगो नहीं तब आपही झखमारि कै रहिजाइगो पीछे क्रोध होइगो अरु मूरुख नहीं समुझै है तामें प्रमाण गोसाईंजी को (सोरठा) "फरै न फूलै बेत, यदपि सुधा बरषै जलद । मूरुख हृदय न चेत, जो गुरु मिलैं बिरञ्चिसम १ पानी को पान, भीजे तो बेधे नहीं। त्यों मूरुखको ज्ञान, बूझै तो सूझै नहीं" ॥४॥

कह कबीर ई अधघट डोलै। पूरा होय बिचार लै बोलै५

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जे सत्संगऊ करैहैं और मूरुखहू सों बोलैहैं शास्त्रार्थ करैहैं व और और मतको सिद्धान्तजानो चाहैहैं कि हमारे मत ठीक है कि औरऊ मत ठीक है परमपुरुष श्रीरामचन्द्र सबते परे हैं यह सिद्धान्तको निश्चय नहीं है ते अधघट जे हैं और और मतवारे इनके समुझाये नहीं समुझै हैं और असन्तसंग करिकै बिचारकी हानि होइ है कहा हानि होइ है कि औरऊ को बिचार मन पर न लागैहै अपने मत में भ्रम होने लगै

है आपनो ठीक नहीं ठीक है जैसे आधी गगरी जलसे भरी होइ तो वाको जल डोलैहै ऐसे साहब में उनको ज्ञान तो पूरो नहीं ताते डोलैहै और जो पूरा सो वीचलैके बोलैहै और प्रश्न सुनिकै वाको बिचार लैलियो कहे समुझिलियो कि यह बोलिबो अधिकारी है हमारो कह्यो समुझैगो तब बोलै है जैसे भरी गगरी को जल नहीं डोलैहै औ जल वामें नहीं अमाय है ऐसे वे तो साहब के ज्ञान में पूरेहैं सो उनको ज्ञान डोलै नहीं है अरु और मतन को सिद्धान्त के जे ज्ञान हैं ते उनके अन्तःकरण में नहीं समायहैं ॥५॥

इति सत्तरवींरमैनी समाप्तम् ॥ ७० ॥

अथ इकहत्तरवीं रमैनी ॥ ७१ ॥

चौ० सोग बधावासमकरिजाना । ताकी बात इन्द्र नहिं जाना १
जटातोरि पहिरावै सेल्ही । योगयुक्ति कै गर्भ दुहेली २
आसन उड़ये कौन बड़ाई । जैसे काग चील्ह मड़राई ३
जैसी भिश्ति तैसि है नारी । राजपाट सब गनै उजारी ४
जैसे नरक तस चन्द न माना । जस बाउर तस रहै सयाना ५
लपसी लौंग गनै यकसारा । खाँड़ै परिहरि फांकै छारा ६
साखी ॥ यहि बिचार ते बह गयो, गयो बुद्धि बल चित्त ॥
दुइ मिलि एकै ह्वै रह्यो, काहि बताऊं हित्त ७

सोगबधावा समकरिजाना । जाकीबात इन्द्रनहिंजाना १
जटातोरि पहिरावै सेल्ही । योगयुक्तिकै गर्भ दुहेली २
आसन उड़ये कौन बड़ाई । जैसे कागचील्ह मड़राई ३
जैसी भिश्ति तैसि है नारी । राजपाटसब गनै उजारी ४

औरै पदको अर्थ स्पष्ट है १ । २ । ३ अब फिरि साहब के जनैयनको कहैहैं कि भिश्ति कहे स्वर्गको मानै हैं तैसे नारी कहे दोजख को मानै हैं अरबीकी किताबनमें भिश्तिको जिन्नत और दोजखकी नाई अर्थके सम्बन्धते बहुत जगह कह्यो है अथवा

नार कहे आगि सो जामें होय ताको नारी कहे हैं अर्थात् नरक और भिश्त पाठ होय तो जैसे भिश्त कहे देवालको मानै हैं तैसे नारीको मानै हैं और राजपाट जो है जगत् ताको उजारई गनै हैं कि संसार हई नहीं है चित्त अचितरूप साहबईके हैं नरक स्वर्गादिक तामें प्रमाण "नरक स्वर्ग अपवर्ग समाना। जहँ तहँ देखि धरे धनु बाना" ॥ ४ ॥

जैसे नरकतसचन्दनमाना। जसबाउर तसरहै सयाना ५
लपसीलौंगगनै यकसारा। खाँड़ै परिहरि फांकै छारा ६

जैसे नरक कहे विष्ठा को तैसे चन्दनको मानै हैं और हैं तौ सयान कहे साहबको जानै हैं परन्तु रहत बहुत बाउरही के तरह हैं ५ और जे साहबको नहीं जानै हैं आपही को ब्रह्म मानै हैं तिनको कहै हैं लपसी लौंगको एकई मानै हैं खांड़ छोड़िकै छारको फांकै हैं अर्थात् ताहूको एकही गनै हैं सर्वत्र एकही ब्रह्म मानै हैं जो कहो समान दृष्टि करतई हैं साहब के गैर जनैयन कहे जाननवारे हैं ये आपही को ब्रह्म मानै हैं और खांड़ परिहरिकै छार फांकै हैं ताको भाव यह है खांड़ साहब जे मिठाई ताके देनेवारे तिनको छांड़ि कै छार फांकै हैं जामें सार कछु नहीं है 'अहं ब्रह्मास्मि' ज्ञान करै हैं ॥ ६ ॥

साखी ॥ यहिविचारते बहगयो, गयोबुद्धिबलचित्त ॥
दुइमिलि एकै ह्वै रह्यो, मैं काहिबताऊंहित्त ७

श्रीकबीरजी कहै हैं विचारत बुद्धि को बल जो है निश्चय करिकै 'अहंब्रह्म' मानि सो येहू जात रह्यो और चित्त जो है सोऊ जात रह्यो मनो नाश बासना क्षय ह्वै गई कछु बासना न रहिगई दुइ जे हैं ब्रह्म और जीव ते मिलिकै एकही ह्वै रहे जैसे जल मिलिकै एकै ह्वै जाय है हितुवा वह कहावै हैं जो रक्षा करै ये तो दूनों एकई ह्वै रहे ब्रह्ममें लीनहोइ हैं पुनि जब सृष्टिसमय भई तब माया धरिलै आवै है तब तो दूसरो यह मानतै नहीं है मैं

काको हितुवा बताऊं जो मायाते रक्षा करिलेइ और जो साहब हितुवा मानै रक्षक मानै तो साहब याको हंसस्वरूप दैकै आपने पास बोलाइलेई इहां मायाकी गति नहीं है तो पुनि धरिके जीवको संसारी करै ॥ ७ ॥

इति इकहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ७१ ॥

अथ बहत्तरवीं रमैनी ॥ ७२ ॥

चौ० नारि एक संसारै आई । माय न वाके बाप न जाई १
गोड़ न मूड़ न प्राण अधारा। तामें भरमि रहा संसारा २
दिना सातलौं वाकी सही । बुध अधबुध अचरजयककही ३
वाहिकिबन्दनकरसबकोई । बुध अधबुध अचरज बड़ होई ४

नारि एक संसारै आई । माय न वाके बाप न जाई १
गोड़ न मूड़ न प्राण अधारा । तामें भरमिरहा संसारा २
दिना सातलौं वाकी सही ।बुधअधबुधअचरजयककही३
वाहिकिबन्दनकरसबकोई।बुधअधबुधअचरजबड़होई ४

एक नारि जो यह माया है सो संसार में आवतभई न वाके महतारी है और न वह बापते उत्पन्न है अर्थात् अनादि है १ अरु न वाके गोड़ है न मूड़ है न प्राण है न अधार है अर्थात् निराकार है भर्मई है ताहीं में संसार भरमि रह्यो है २ और सातो जे बार हैं दिन तिनमें वही माया की सही है अर्थात् काल में वही अमिसी है और सातोबार वोई फिरि फिरि आवैहैं वही मायाको चारों ओर बिस्तार है बुध जो है पण्डित निर्गुणवारे जे सारासार के विचार करिकै आपही को ब्रह्म मानै हैं और अधबुध जे हैं आधे पण्डित सगुण उपासनावारे सो ये दूनों में आश्चर्य जो है माया ताको एक कहैहैं दूनोंमें यह माया बरोबरि ब्याप्त है ३ श्रीकबीर जी कहैहैं कि यह बड़ो आश्चर्य है तौ कछु नहीं है और वही माया

की वन्दना निर्गुण सगुणवारे दोऊ करै हैं जो मन वचन में आवै है सो मायाही है ॥ ४ ॥

इति बहत्तरवींरमैनी समाप्तम् ॥ ७२ ॥

अथ तिहत्तरवीं रमैनी ॥ ७३ ॥

गुरुमुखचौ० चलीजाति देखायकनारी । तरगागरि ऊपरपनिहारी १
चलीजाति वह बाटै बाटा । सोवनहार के ऊपर खाटा २
जाड़नमरै सुपेदी सौरी । खसम न चीन्है घरणि भै बौरी ३
सांझ सकार दिया लै बारै । खसम छोड़ि सुमिरै लगवारै ४
वाहिकेसङ्गमें निशिदिनराँची । पियसों बात कहै नहिं साँची ५
सोवतछांड़िचली पियअपना । ईदुख अबधौंकहौंकयहिसना ६
साखी ॥ अपनी जाँघ उघारिकै, अपनी कही न जाय ॥
की जानै चित आपना, की मेरो जन गाय ७

चलीजाति देखा यक नारी । तर गागरि ऊपरपानिहारी १
चलीजात वह बाटैबाटा । सोवनहार के ऊपर खाटा २

सुरतिरूपी जो नारी सोईहै दूती ताको हम चली जात देखा है हृदय जो गगरी है सो तरे है और सुरतिउठी सो ऊपर सुधा सरोवर में जलभरनको गई शीश में पहुँची १ वह सुरति जब चलै है तब षट्चक्र बेधिकै राह राह जाय है काहेते कि नाभी में "मणिपूरक चक्र" है तामें शीश दिये नागिनी बैठी है सोई षट्कहे पलँग है सो ऊपर है ताके नीचे सोवनहार जो है आत्मा सोरहै है तहां ते सुरति उठै है तहां ज्वाला साथ नागिनी उठावै ताही साथ प्राण जाय है ॥ २ ॥

जाड़नमरैसुपेदी सौरी । खसम न चीन्है घरणि भै बौरी ३
सांझसकार दियालैबारै । खसमछोड़िसुमिरै लगवारै ४

सुपेदी कहे रजाई जो है यह शरीर सो जाड़न मरै है अर्थात् शीत उष्ण वहीको लगैहै सौरी कहे सुपेदीको सुमिरण करिकै

जाइन मरैहै अर्थात् जबलग देहाभिमान है तबलग शीत उष्ण है आत्मा को नहीं लगै है साहब कहैहैं कि वह जो है आत्मा मेरी घरणि कहे स्त्री अर्थात् जीवरूपा मेरी शक्ति सो मैं जो हौं याको खसम ताको नहीं चीन्है है त्यहिते बौरी कहे बौरायगई ३ साँझ सकार दिया लै बारैहै कहे समाधिलगायकैज्योतिको बारिकै कुण्डलिनी उठाइ आत्माको लैजाइकै वही ज्योतिमें मिलाये है और याको मैं खसम हौं सो मोको छोड़िकै लगवार जो है धोखाब्रह्म ताको सुमिरै है ॥ ४ ॥

वाहिकेसँगमेंनिशिदिनराँची।पियसोंबातकहैनहिंसाँची५
सोवतछांड़िचलीपियअपना।ईदुखअबधौंकहबक्यहिसना६

सुरतिरूपी नारी जो है दूती ताहीके साथ ह्वैकै वही धोखाब्रह्म में निशिदिन राचिरही है कहे प्रीति करि रही है पिय जो मैं हौं तासों सांची बात नहीं कहैहै सांची बात कहाहै कि मैं तिहारो हौं यह जो कहै तौ मैं जीवरूपा शक्ति को छोड़ाय लेउँ साहब की यह प्रतिज्ञा है जो मोको जानै मोको गोहरावै तौ मैं संसार ते छुड़ाइ लेउँ तामें प्रमाण "अबहूं लेउँ छुड़ाय कालते, जो घट सुरति सम्हारै ५" सो जीवरूपा शक्ति मोको न जान्यो मोको न गोहरायो सोवत रहि गई जागत न भई सोवत में मोको छोड़ि स्वप्न देखनवाली संसारी ह्वैगई अर्थात् मोहरूपी निद्रा जब प्रास भई तब संसार में परिकै नाना दुःख पावै है सो यह दुःख अपनो कासों कहै सांच जो मैं ताको तो जानै नहीं है अरु और सब स्वप्नते झूठे हैं ॥ ६ ॥

साखी॥अपनीजाँघउघारिकै, अपनी कही न जाइ॥
की जानै चित आपना, की मेरो जनगाइ ७

साहब कहै हैं कि याहिभांति मेरी जीवरूपा शक्ति मोको छोड़िकै संसारी ह्वैगई सो अपनी जङ्घा जो उघारिहोइ तो कोई कहां अपनो गिल्ला करै है नहीं करै है ऐसे मेरी शक्ति यह जीव

सो जो और और लगवार जो है सो यह दुःख का मोसो कहि जाइ है नहीं कहि जाइ है कितो मेरो दिल जानै है याको उद्धार ह्वै जाइ याही चाहौहौं और कि मेरेजन जे हैं ते मेरो सौशील्य दया बात्सल्यादिक गुण गान करिकै जानै हैं कि साहब में निर्देह सौशील्यादिक गुण हैं जीवको उद्धारई चाहै हैं और तो अज्ञानीजीव अपनो भूल न जानैंगे याही जानैंगे कि जो साहब सबको मालिक है सब करिबेको समर्थ है ताकी जो इच्छा होती तो हम सब जीव के बन्ध ते तामें प्रमाण "सो परन्तु दुख पावत, शिर धुनि धुनि पछिताय। कालहि कर्महि ईश्वरहि, मिथ्या दोष लगाय ॥ ७ ॥

इति तिहत्तरवींरमैनी समाप्तम् ॥ ७३ ॥

अथ चौहत्तरवीं रमैनी ॥ ७४ ॥

चौ० तहिया गुप्त थूल नहिं काया। ताके सोग न ताके माया १
कमल पत्र तरङ्ग यकमाहीं। सङ्गहि रहै लिप्त पै नाहीं २
आस ओस अण्डन महँ रहई। अगणितअण्डनकोईकहई ३
निराधार आधार लै जानी। रामनाम लै उचरी बानी ४
धर्म कहै सब पानी अहई। जातीके मन बानी रहई ५
ढोर पतङ्ग सरै घरियारा। तेहि पानी सब करै अचारा ६
फन्द छोड़ि जो बाहर होई। बहुरि पन्थ नहिं जोहै सोई ७
साखी ॥ भर्मक बांधलई जगत्, कोइ न किया बिचार ॥
हरिकि भक्ति जाने बिना, भवबूड़ि मुवा संसार ८

तहियागुप्त थूल नहिं काया। ताके सोग न ताके माया १
कमलपत्र तरङ्ग यक माहीं। सङ्गहिरहै लिप्त पै नाहीं २
आशओसअण्डनमहँरहई।अगणितअण्डनकोईकहई ३
निराधार आधार लै जानी। रामनाम लै उचरी बानी ४

जब जीव भूल्यो है तहिया कहे तब स्थूल शरीर नहीं रह्यो

और गुप्त कहे सूक्ष्म कारण महाकारण ये शरीर नहीं रहे हैं और न तेहिजीवके संगरह्यो और न मायारही है १ जैसे कमलपत्र में जल रहहै पै कमलपत्र में लिप्त नहीं रहै है तैसे यह आत्मा में मायाब्रह्म यद्यपि सब कारण रहै हैं परन्तु मायाब्रह्म में आत्मा लिप्त न रह्यो २ ब्रह्महैवेकी जो आशा है सोई पियासहै सो ओस चाटे कहूं पियास जाइ है नहीं जाइहै ओसके सम जो है ब्रह्मानन्द सो जीवरूप जे हैं अण्ड तिनमें रहहै अर्थात् कारणरूपते जीव में बनो रहै है जब समष्टिजीव रह्योहै तब रहे तो अगणित हैं अण्ड परन्तु सब मिलि एकई कहावत रह्योहै अगणित कोई नहीं कहत रह्यो ३ निराधार जो निराकार ब्रह्म है जामें सबजीव भरेहैं ताको आधार लै जानिये कि साहबके लोक में है अर्थात् साहब के लोकको प्रकाशहै तबतो समष्टिरही याही रामनाम लैकै वाणी उचरी कहे प्रकटभई इहां रामनाम लैकै वाणी प्रकटभई ताको हेतु यह है कि वाणी में जगत् प्रकटकरिबेकी शक्ति नहीं रही रामनाम को जगत्मुख अर्थ लैकै वाणी उचरी है पांचोब्रह्म समेत जगत् उत्पत्ति कियो है सोई इहां सिद्धान्त करै है ॥ ४ ॥

धर्म कहे सब पानी अहई । जातीके मन बानी रहई ५
ढोरपतङ्गसरै घरिआरा । तेहि पानी सब करै अचारा ६
फन्द छोड़ि जो बाहर होई । बहुरि पन्थ नाहिं जोहै सोई ७

वेदशास्त्र में आत्मा को धर्म कहहैं कि आत्मा चित्त है याते चित्त धर्म है जैसे जल में जल मिलै तो एकई होजाइ है ऐसे चिन्मात्र जो ब्रह्म हैं तामें मिलिकै चित्त जो है जीव सो एकई ह्वै जाय काहेते कि दुहुनको चित्तधर्म एकई है और जाती कहे सब जाति जे जीव हैं ते आपने स्वस्वरूपको चीन्हें हैं कि मैं साहबको अंश हौं जाति करिकै वही हौं कछु स्वरूप करिकै नहींहौं भेद बनोई है वह सर्वज्ञ है मैं अल्पज्ञ हौं वह विभु है मैं अणु हौं वह स्वतन्त्र है मैं परतन्त्र हौं यह जो कहहैं कि आत्मा ब्रह्मई है सोतो

वाणी को विस्तार है सामान्यधर्मलैके कहै हैं ५ ढोर पतङ्ग घरिआर आदिक जामें सरै हैं ताही जल में सब आचार करै हैं अर्थात् जौनी वाणी में सब मरि मरि समाइहै और पुनि वहीते उत्पत्ति होइहै और जौन सब जीवको फंदाये है तौनीही वाणी में कहे सब आचार करैहै अथवा वही वाणी को आचरण करैहै आपनेको ब्रह्म मानैहै काहूको आचार ठीक नहीं है ६ यह वाणीके फन्दते बाहरह्वैकै परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनमें जो लागै तो पुनि न जगत्‌के पन्थको जोहै अर्थात् फिरि न जगत्‌में आवै॥७॥

साखी ॥ भर्मकबांधलईजगत, कोइनहिंकियाबिचार ॥
हरिकिभक्तिजानेबिना, भवबूड़िमुवा संसार ८

यहि भांति भर्म जो माया शबलित ब्रह्म त्यहि करिकै बँध्यो जो यह संसार है ताको कोई नहीं विचार कियो हरि कहे सबके कलेश हरनहारे वेद तात्पर्यार्थ जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनकी भक्ति के विना जाने भर्मके समुद्र में संसार बूड़ि मुवा कहे संसारीजीव बूड़ि मुयो ॥ ८ ॥

इति चौहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ७४ ॥

अथ पचहत्तरवीं रमैनी ॥ ७५ ॥

चौ० तेहिसाहब के लागो साथा । दुइ दुखमेटिकै होहु सनाथा १
दशरथकुल अवतरि नहिं आया । नहिंलङ्काके रायसताया २
नहिं देवकिके गर्भहि आया । नहीं यशोदा गोद खेलाया ३
पृथ्वीरमनदमननहिं करिया । पैठिपतालनहींबलिछलिया ४
नहिं बलिरायसों माड़ीरारी । नहिं हिरणाकुशबधलपछारी ५
बराहरूपधरणी नहिं धरिया । क्षत्री मारि निक्षत्रनकरिया ६
नहिं गोवर्धन करतेधरिया । नहीं ग्वालसँगबनबनाफिरिया ७
गण्डकशालग्रामनशीला । मत्स्य कच्छ ह्वै नहिं जलहीला ८
द्वारावती शरीर न छांड़ा । लै जगनाथ पिण्ड नहिं गाड़ा ९

साखी ॥ कहहिं कबीर पुकारिकै, वा पन्थे मतभूल ॥
जेहि राखे अनुमानकरि, थूल नहीं अस्थूल १०

तेहि साहबके लागोसाथा। दुइदुखमेटिकैहोहु सनाथा १

जिनको पूर्व कहिआये हैं ते हरि कहे रक्षक मन वचनके परे परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके साथ में लागो दूनो जे दुःख हैं निर्गुण और सगुण तिनको मेटिकै सनाथ होउ कहे नाथ जे साहब हैं तिनते सहित वह साहब कैसो है कि धोखाब्रह्म है नहीं है और कौन्यो अवतार में नहीं है अर्थात् निर्गुणके सगुणके परे हित वह साहब कैसो है कि धोखाब्रह्म है नहीं है और कौन्यो अवतार में नहीं है अर्थात् निर्गुण सगुणके परे है कबहूं जब कौन्यो कल्प में बाणनके युद्धकी इच्छा होइ है तब आपही प्रकट ह्वैकै प्रतापी नामको रावण होइहै तासों बाणनको युद्ध करैहै और फिर शरीर सहित को चले जाइहै और बहुधा जे अवतार होइहैं तो नारायणै अवतार लेइहैं ॥ १ ॥

दशरथकुलअवतरिनहिंआया। नहिंलङ्काकेरायसताया२
नहिं देवकिकेगर्भहि आया। नहीं यशोदागोद खेलाया ३
पृथ्वीरमनदमननहिंकरिया।पैठिपतालनहींबलिछलिया४

श्रीकबीरजी कहै हैं कि वे श्रीरामचन्द्र कौन्यो अवतार में नहीं हैं दशरथ के इहां अवतार नहीं लियो दशरथ के इहां अवतार लै नारायणै रावण को मारे हैं २ अरु वे साहब देवकी के गर्भ में नहीं आयो अरु वाको यशोदा गोद में नहीं खेलायो ३ अरु वे साहब पृथ्वी रमण ह्वैकै म्लेच्छन को दमन अर्थात् बामनरूप नहीं धस्यो ॥ ४ ॥

नहिंबलिरायसोंमाड़ीरारी।नहिंहिरणाकुशबधलपछारी५
बराहरूपधरणीनहिंधरिया। क्षत्री मारिनिक्षत्रनकरिया६
नहिंगोवर्धनकरगहिधरिया।नहींग्वालसँगबनबनफिरिया ७

अरु वे साहब बलिरायसों रारि नहीं मांड़्यो कहे मोहनी अवतार लै देवतनको अमृत पिआय दैत्यनको वारुणी पिआय बलिसों युद्धकरि दैत्यनको विष्णुरूप ह्वै नहीं मार्‌यो और हिरण्यकशिपु को पछारिकै नहीं बाध्यो कहे नहीं बध्यो अर्थात् नृसिंहरूप नहीं धर्‌यो ५ अरु वे साहब बाराहरूप धरिकै डाढ़में धरणी नहीं धर्‌यो और क्षत्रिनको मारिकै निक्षत्र नहीं कियो अर्थात् परशुरामको अवतार नहीं लियो ६ अरु वे साहब करते गोबर्धन को नहीं धर्‌यो अर्थात् गोविन्दरूप नहीं धर्‌यो और न ग्वाल के संग वन वन में फिर्‌यो है याते हलधररूप नहीं धर्‌यो ॥ ७ ॥

गण्डकशालग्रामनशीला। मत्स्यकच्छह्वैनहिंजलहीला ८

द्वारावती शरीर न छाड़ा। लैजगनाथपिण्डनहिंगाड़ा ९

अरु वे साहब गण्डक में शालग्राम की शिला नहीं भये और न मत्स्य कच्छ ह्वैके जल में परे हैं ८ अरु वे साहब द्वारावती में शरीर नहीं छोड़ो है अर्थात् कालस्वरूप नहीं धारण कियो जौन जौन फिरि द्वारावती में छोड़्यो है और जगन्नाथ के उदर में ब्रह्म जो इधा में तेजराख्यो है सो वे साहबको तेज नहीं है यहि तरहते सगुण जे नारायण हैं और सब अवतार हैं ते वे नहीं हैं ॥ ९ ॥

साखी ॥ कहहिं कबीर पुकारिकै, वापन्थेमतिभूल ॥
ज्यहिराखे अनुमानकरि, थूल नहीं अस्थूल १०

श्रीकबीरजी पुकारिकै कहैहैं कि वा पन्थे मतिभूल कहे न जाउ ज्यहि राखे अनुमान करि कहे अनुमान करि राख्यो है ब्रह्म को सोऊ वे साहब नहीं हैं और अस्थूल नहीं अस्थूल कहे न स्थूल होइ सो स्थूल कहावै अर्थात् निराकार नहीं हैं ताते सगुण निर्गुण साकार निराकारके परे श्रीरामचन्द्र हैं यह बतायो दशरथ के इहां नारायण अवतार लेइ हैं तिनको रामनाम होइ है तिनहीं रामरूपते सगुण निर्गुण के परे हैं ॥ १० ॥

इति पचहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ७५ ॥

अथ छिहत्तरवीं रमैनी ॥ ७६ ॥

चौ० माया मोह कठिनसंसारा। यहै बिचार न काहु बिचारा १
मायामोह कठिनहै फन्दा। होय बिबेकी सो जन बन्दा २
रामनाम लै बेराधारा। सो तैं लै संसारहि पारा ३
साखी॥ रामनाम अति दुर्लभै, अवरे से नहिं काम॥
आदि अन्त औ युगयुगे, रामहिते संग्राम ४

मायामोह कठिन संसारा। यहै बिचारनकाहु बिचारा १

मायामोह रूप ते संसारको देखै है कहे नानापदार्थ भिन्न देखै है याहीते संसार कठिन है यामें ठपङ्गच यह है कि जो संसार को भगवत् चिदचित् विग्रहरूप करिके देखै तो संसार उतरिजायबे को सरलै है सो यह बिचार कोई न बिचार्‌यो॥ १॥

मायामोह कठिन है फन्दा। होय बिबेकी सो जनबन्दा २

अरु यह संसार में मायामोहरूप कठिन फन्दा है जो संसार में सब भिन्न भिन्न पदार्थ देखै है तौने संसार कोई भगवत् चिदचित् विग्रहरूप देखै और विवेकी होइ सोई जन साहब को बन्दा है॥ २॥

रामनाम लै बेरा धारा। सो तैं लै संसारहि पारा ३

और रामनाम जो है बेरा ताको आधार लैकै जो कोई साहब को जान्यो है ताको उबार ह्वै गयो है सो तैंहूं रामनाम जो है बेरा ताको आधार ले कहे रामनाम में आरूढ़ हो साहबको जानु तौ तैं संसारसमुद्र को पार ह्वै जाय॥ ३॥

साखी॥ रामनाम अति दुर्लभै, अवरे से नहिं काम॥
आदि अन्त औ युग युगे, रामहिते संग्राम ४

श्रीकबीरजी कहै हैं कि यह रामनाम अतिदुर्लभहै मोको औरे से काम नहीं है आदि अन्त में और युगयुग में मोसों रामैं ते संग्राम कहाहै कि शास्त्रार्थ करिकै रामनाम में जो जगत्मुख अर्थ है ताको खण्डन करिकै अतिदुर्लभ जो साहबमुख अर्थ ताको ग्रहण

करो हौं अर्थात् जब जगत् की उत्पत्ति नहीं भई है तब और युग युगन में कहे मध्य में अन्त में कहे जब मुक्त ह्वैगयो तबहूं राम नामही ते संग्राम कियो है अर्थात् रामनाम को विचार करत रहौ हौं ॥ ४ ॥

इति छिहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ७६ ॥

अथ सतहत्तरवीं रमैनी ॥ ७७ ॥

चौ० एकै काल सकल संसारा । एकै नाम है जगत पियारा १
तियापुरुष कछु कथो न जाई । सर्वरूप जग रहा समाई २
रूपअरूपजाय नहिं बोली । हलुकागरुआ जाय न तोली ३
भूख न तृषा धूप नहिं छाहीं । दुखसुखरहितरहैत्यहिमाहीं ४
साखी ॥ अपरम परम रूप मगुरंगी, नहिं त्यहि संख्या आहि ॥
कहहिं कबीर पुकारिकै, अद्भुत कहिये ताहि ५

एकै काल सकल संसारा । एकै नाम है जगतपियारा १

एक जो है लोकप्रकाश ब्रह्म ताको अनुभव करिकै जो ब्रह्म मानिलेइहै सोई माया शबलित ह्वैबो है सोई काल सकल संसार में है सो जगत् को पियार एक जो है रामनाम ताको बिना जाने याही ते जन्म मरण होइ है ॥ १ ॥

तियापुरुषकछुकथो न जाई । सर्वरूप जग रहा समाई २
रूपअरूपजायनहिं बोली । हलुकागरुआजायनतोली ३
भूखनतृषाधूपनहिं छाहीं । दुखसुखरहितरहैत्यहिमाहीं ४

वह माया शबलित ब्रह्मको स्त्री न कहि सकै न पुरुष कहि सकै सर्वरूप ह्वैकै संसार में समाइ रह्यो है २ वाको न रूप कहि सकै और न वह हलका गरुआ तौलि जाइहै कि हलुकै गरूहै अर्थात् अहंब्रह्म मानिबो तो धोखाहै जो कछु होइ तो कहिजाय औ तौलि जाइ ३ जौनेलोक में न भूख है न तृषा है न धूप है न छाहीं है न दुःख सुख है तौने साहबके लोकमें प्रकाशरूप ब्रह्म रहै है ॥ ४ ॥

साखी॥अपरमपरमरूपमगुरङ्गी, नहिंतेहिसंख्याआहि ॥
कहहिं कबीर पुकारिकै, अद्भुत कहिये ताहि ५

वह साहबको लोक परमरूप है ताको प्रकाश जो है वह ब्रह्म सो परमरूप है कहे परम नहीं है तौने को आपनेही को मानिबो जो है कि वह ब्रह्म हमहीं हैं सो धोखा है तौनेके मगमें रँगे जीव हैं तिनकी संख्या नहीं है अर्थात् वही प्रकाशमें भरे रहे जे समष्टि जीव हैं ते व्यष्टि ह्वै गये हैं तिनकी संख्या नहीं है सो कबीरजी पुकारिकै कहै हैं कि आपही कल्पना करिकै वह प्रकाशरूप ब्रह्म को मान्यो कि वह ब्रह्म मैंहौं सो वह तो लोकप्रकाश है जीव वह प्रकाश ब्रह्म नहीं ह्वैसकै है यही धोखामें जीव बूड़ा जाइ है यह बड़ो आश्चर्य है और जो यह पाठ होइ "अपरमपारे परमगुरु ज्ञानरूप बहुआहि" तो यह अर्थ है अपरम जो है प्रकाशरूप ब्रह्म ताहू के पार जो है परमलोक जाको प्रकाश वह ब्रह्म है ताको परम श्रेष्ठ कहे मालिक जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको न जान्यो वह जो है प्रकाशब्रह्म ताको जो ज्ञान कियो कि ब्रह्म मैं हौं वहै जो है धोखाब्रह्म तेहिते बहुआहि कहे जीव बहुत ह्वैगये काहेते कि ज्ञान बहुतहै ज्ञानी ज्ञान करिकै ब्रह्म मानैहैं और योगी जे हैं ते ज्योति-रूप में आत्मा को मिलाइकै ब्रह्म मानै हैं इत्यादिक नानारूप करिकै ऐक्य मानै हैं और सगुण उपासनावारे कोई चतुर्भुज, कोई अष्टभुज, कोई देवी, कोई गणेश, कोई सूर्य इत्यादि कन में ऐक्य मानै हैं ज्ञान करिकै तेहिते ज्ञान नाना हैं और साहब तो मन वचन के परे वह लोक में एकही बनो है ॥ ५ ॥

इति सतहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ७७ ॥

अथ अठहत्तरवीं रमैनी ॥ ७८ ॥

चौ० मानुष जन्म चुके जगमांझी । यहि तनकेर बहुत हैं सांझी १
तातजननि कहै हमरो बाला । स्वारथ लागिकीन्हप्रतिपाला २
कामिनिकहै मोर पिय आही । बाघिनिरूप गरासै चाही ३

पुत्र कलत्र रहै लवलाये। जम्बुक नाईं रह मुँहबाये ४
काग गीध दोउ मरण बिचारैं। शूकरश्वान दोउ पन्थनिहारैं ५
धरती कहै मोहिं मिलिजाई। पवन कहै मैं लेब उड़ाई ६
अगिन कहै मैं ई तन जारों। सोन कहै जो जरत उबारों ७
ज्यहि घर को घर कहै गवारे। सो बैरी है गले तुम्हारे ८
सो तन तुम आपनकै जानी। बिषयस्वरूप भुले अज्ञानी ९

साखी॥ यतने तनके साझिया, जन्मोभरि दुखपाय॥
चेतत नाहीं बावरे, मोर मोर गोहराय १०

मानुषजन्म चुके जगमांझी। यहि तनकेर बहुतहैं सांझी १
तातजननिकहै हमरो बाला। स्वारथलागिकीन्हप्रतिपाला २
कामिनिकहै मोरपियआही। बाघिनिरूपगरासै चाही ३

हे जीव! तैं मानुष जन्म जगत् के बीच में पायकै चूकिगयो साहब को भजन न कियो या तनके साझिया बहुत हैं १ और माता पिता कहै हैं हमारो पुत्र है आपने अर्थ में लगिकै प्रतिपाल करैहै २ और कामिनि जो परस्त्री है सो कहैहै हमारो बड़ो प्यारो पति है बाघिनिरूप मरति समय में गरासिओई चाहै है अथवा वाके संगते मूड़हू काटो जाय है॥ ३॥

पुत्र कलत्र रहैं लवलाये। जम्बुक नाईं रहमुँहबाये ४
कागगीधदोउमरणबिचारैं। शूकरश्वान दोउपन्थनिहारैं ५
धरतीकहै मोहिं मिलिजाई। पवन कहै मैं लेब उड़ाई ६
अगिनिकहै मैं ई तन जारों। सोन कहै जो जरतउबारों ७

पुत्र कलत्र जो घरकी स्त्री को लालच लगाये रहै हैं धन लेबे की और वाको उनकी चिन्ता में मांस सुखान जातहै जैसे सियार मांस खाबेको मुँह फारेरहै है तैसे वोऊहैं ४ और काग जे हैं गीध जे हैं शूकर जे हैं श्वान जे हैं ते मरनको पन्थ तेरो निहारै हैं या बिचारै हैं कि जो मरै तौ हम मांस खायँ ५ और धरती कहै हैं कि मोहीं में मिलिजाइ पवन कहै है कि याकी खाख मैं उड़ाय

लैजाउँ ६ औ अग्नि चाहै है कि याके तनको जारिडारों सो या बात कोई नहीं कहै है जाते जरत में उबार होइ बचिजाय ॥ ७ ॥

जेहि घरको घर कहै गवांरे । सो बैरी है गले तुम्हारे ८
सो तन तुमआपन कै जानी । विषयस्वरूपभुलेअज्ञानी ९
साखी ॥ यतने तनके साभिया, जन्मोभरि दुख पाय ॥
चेतत नाहीं बावरे, मोर मोर गोहराय १०

जेहि घर को शरीर को तू कहहै कि मेरोहै सो घर शरीर तेरे गले की बेरी कहे फांसी है अथवा बैरी है यमके यहां गला कटावेंगे ८ हे अज्ञानी! तोने शरीर को तू आपनो मानिकै विषयन में परिकै भूलिगयो है ९ सो यतने जेतने कहि आये ते यहि तनके साभी हैं तिनते जन्म भरि तैं दुःख पायकै हे बावरे! कहे मूढ़! मोर मोर तैं गोहरावै है कि यातन मेरोहै अजहूं चेत नहीं करै है कि यातनै मोको फांसे है ॥ १० ॥

इति अठहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ७८ ॥

अथ उन्नासिवीं रमैनी ॥ ७९ ॥

चौ० बढ़वत बाढ़ि घटावत छोटी । परखतखर परखावतखोटी १
केतिक कहौं कहांलौं कही । औरौ कहौं परै जो सही २
कहे बिना मोहिं रहो न जाई । बेरहि लैलै कूकुर खाई ३
साखी ॥ खाते खाते युग गया, अजहुँ न चेतो जाय ॥
कहहिं कबीर पुकारि कै, जीव अचेतै जाय ४

बढ़वतबाढ़िघटावतछोटी । परखतखरपरखावतखोटी १
केतिककहौं कहांलौं कही । औरौ कहौं परै जो सही २
कहे बिना मोहिं रहो न जाई । बेरहि लै लै कूकुर खाई ३

यह मायाको प्रपञ्च जो है सो बढ़ावत जाइ तो बढ़तई जाय है रङ्कते इन्द्रहू ह्वैजाय तऊ चाह बढ़तई जाय है और जो घटावै लगै तो घटिही जाइहै और नानामतमें लागि मनमुखी बिचारै हैं

तब तो खर कहे सांचै है और जब काहू साधुते परखायो तब झूठही ह्वै जायहै १ और मैं केतिको बात कह्यो परन्तु पाथर कैसो पानी बहिजाइहै बेधै तो हई नहीं है मैं कहांलों कहों व औरऊ कहों जो सहीपरै कहै जो तोको सांच जानिपरै २ हे जीव ! तेरे ये दुःख देखिकै मोको दया होइ है ताते विना ३ हे मोसों नहीं रहिजाइहै जौने बेरा रामनाम संसारसागर के उतरिबेको मैं बताइदेउँहौं तौने बेराको कूकुर जे तामस शास्त्रवारे गुरुवालोग ते खाइ जाइहैं कहे मेरो कहो तामें नहीं लगन देइ हैं औरे औरे मतमें लगाइ देइहैं जो यह पाठ होइ 'बिरहिनि लैलै कूकुर खाइ' तो यह अर्थ है कि बिरहिन जे लोग हैं जिनको साहबकी अप्राप्ति है तिनको गुरुवालोग खाइ जाइ हैं अथवा बीर जे साहब हैं तिनते हीन जे प्राणी हैं तिनको कूकुर खाइहैं ॥ ३ ॥

साखी ॥ खाते खाते युग गया, अजहुँ न चेतो जाय ॥
कहँहिं कबीर पुकारिकै, जीव अचेतै जाय ४

सो कबीरजी पुकारिकै कहै हैं कि खातखात केतन्यो युग बीति गये याहीते जन्म मरण याको नहीं छूटै है अज्ञान नहीं जाइ है सो अबहूं नहीं चेत करै है सो यह जीव अचेतै कहे विना साहब के चेत किये अर्थात् विना साहबके जाने नरकको चलोजाइहै॥४॥

इति उन्नासिवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ७९ ॥

अथ अस्सीवीं रमैनी ॥ ८० ॥

चौ० बहुतकसाहसकरिजियअपना। सोसाहेबसों भेटनसपना १
खराखोट जिन नहिं परखाया। चहतलाभसों मूर गमाया २
समुझि न परै पातरी मोटी। आछी गाढ़ी सब भो खोटी ३
कह कबीर केहि देहौं खोरी। जब चलिहौं झिन आशा तोरी ४

बहुतकसाहसकरिजियअपना॥ सोसाहेबसोंभेटनसपना १
खराखोटजिननहिंपरखाया। चहतलाभसोंमूरगमाया २

हे जीव! आपही ते तुम ज्ञान योग वैराग्य तपस्या में साहस करिकै बहुतक्लेश सह्यो परन्तु इनते तेहि साहबसों भेट सपनहू नहीं है जौन छड़ावनवारो है १ जिन जीव गुरुवालोगनके समुझाये नानामत में लागि कहूं सांच साधूते खरा खोट नहीं परखायो ते जीव चाहत तो मुक्तिको लाभ हैं परन्तु जिन सुकर्मनते अन्तःकरण शुद्धद्वारा सांचे साधुको ज्ञान बतायो ठहरै सोऊ सो मूर गमाय दियो ॥ २ ॥

समुझि न परै पातरी मोटी। आछीगाढ़ी सबभो खोटी ३
कहकबीर केहि देहौंखोरी।जबचलिहौंझिनआशातोरी ४

सो जिन मूर गमाय दियो तिनको पातरी कहे अरु मोटी कहे विभु नहीं समुझि परै है काहेते आछी जो मति है तामें निश्चयरूप गाढ़ी नहीं परै है कि यतनोई विचार है "नेति नेति" कहे है याते सब खोटही ह्वैगयो ३ श्रीकबीरजी कहैहैं सांचो जो है साहब रक्षक ताको न जान्यो झिनकहे झीन आशा जो है कि हम ब्रह्म ह्वैजायँ तौनेको तोरि ब्रह्ममें लीन होउगे फिरि संसार परोगे तब काको खोरी देहुगो तुमहीं ब्रह्म हौ ॥ ४ ॥

इति अस्सीवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ८० ॥

अथ इक्यासिवीं रमैनी ॥८१॥

चौ० देव चरित्र सुनौ रे भाई। सो तो ब्रह्मा धिया नशाई १
ऊजे सुनी मँदोदरि तारा। जेहि घर जेठ सदा लगवारा २
सुरपतिजाइअहल्याहिछलिया।सुरुगुरुघरणिचन्द्रमाहरिया ३
कह कबीर हरिके गुणगाया। कुन्तीकर्ण कुँवारेहि जाया ४

देवचरित्र सुनौरे भाई। सोतो ब्रह्माधिया नशाई १
ऊजेसुनीमँदोदरि तारा। ज्यहिघर जेठ सदालगवारा२

बड़े बड़े जीव माया में परिकै भूलिगये हैं छोटे जीवनको कहा कहिये हे भाइउ! देवचरित्र सुनो ब्रह्मा अपनी कन्यासंग

भूलि गये १ ऊजे मन्दोदरी तारा जेहैं तिनके घर में जेठही लगवार होत आयो है जो कहो सुग्रीव बिभीषण को कहते हो तो तिनके घर न कहते तिनके कहते औरई लहुरे हैं वे जेठ कहै हैं सो ब्रह्मा के हवाले कह्यो ब्रह्मा के पुत्र आपुसै में काज करतभये सो पुलस्त्य जेठ हैं ते लहुरे भाईकी कन्या को बिवाहे या मन्दोदरी के घरको हवाल भयो और ऋक्षराज स्त्री भये तिन्हैं सूर्य और इन्द्र गहे तिनते सुग्रीव और बालि भये सो प्रथम सूर्य ग्रहण कीन्हो सो उनकी स्त्री भई और सूर्य ते जेठे इन्द्र हैं तेऊ पीछे ग्रहण कियो तारा के घरको हवाल भयो सो तारा मन्दोदरीके घर जेठही लगवार होत आयो है जो लहुर पाठ होइ तो सुग्रीव बिभीषण बने हैं शकै नहीं है ॥ २ ॥

सुरपतिजाइअहल्यहिछलिया। सुरगुरुघरणिचन्द्रमाहरिया ३
कहकबीर हरिके गुणगाया। कुन्तीकर्णकुँवारेहिजाया ४

सुरपति अहल्याको गमन करतभयो और सुरगुरु जे बृहस्पति हैं तिनकी स्त्रीको चन्द्रमा गमन करतभयो ३ और कुन्ती जो हैं सो कुँवारेहिमां कर्णको उत्पन्न कियो है सो कर्म तो या डौलके हैं जो नीचहू नहीं करै है परन्तु कबीरजी कहै हैं कि हरिके गुण गावत भये ताते इनहूंकी सज्जनहीं में गिनती भई ऐसहु में हरि रक्षा के लियो सो हे जीव ! तैं केता अपराध कियो ॥ ४ ॥

इति इक्यासिवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ८१ ॥

अथ बयासिवीं रमैनी ॥ ८२ ॥

चौ० सुखकबृक्षयकजक्र उपाया। समुझिनपरीबिषयकछुमाया १
छौ क्षत्री पत्री युग चारी। फलद्वै पापपुण्य अधिकारी २
स्वादअनँदकछुबर्णिनजाही। कै चरित्र सो तेहि माही ३
नटवरसाजसाजिया साजी। सो खेलै सो देखै बाजी ४
मोहा बपुरा युक्ति न देखा। शिवशक्ती बिरञ्चिनहिं पेखा ५

साखी ॥ परदे परदे चलिगया, समुझि परी नहिं बानि ॥
जो जानै सो बाचिहै, होत सकल की हानि ६

सुखकबृक्ष यकजक्तउपाया । समुझिनपरीविषयकछुमाया १
छौ क्षत्री पत्री युगचारी । फल द्वै पाप पुण्य अधिकारी २
स्वाद्अनँदकछुबर्णिनजाही । कै चरित्र सो तेही माही ३

साहबको बिसरायकै सूखा जो वृक्ष है यह संसार माया कहे पावत भयो विषय विषरूप माया न समुझिपरी संसारी ह्वैगयो १ शरीर धारणकै छा उरमिन को धारण करनेवाला जो जीव क्षत्री सो पत्री कहे पक्षी है जौने वृक्ष चारिउ युगमें पक्षी ह्वैगयो अथवा क्षयमान जे नवगुण हैं तिनको धारण कीन्हे जो जीव सोई पत्री कहे पक्षी है नवगुण कौन हैं सुख दुःख इच्छा जल द्वेष धर्माधर्म भावना यहितरहको जीव जो है पक्षी सो पापपुण्य फल ताको खाइबेको चारिउयुग अधिकारी हैं २ तिन फलनमें बहुत स्वाद है कछु कहो नहीं जायहै तेही वृक्ष में जीवरूप पक्षी चरित्र करै है सो आगे कहै हैं ॥ ३ ॥

नटबरसाजसाजियासाजी । सो खेलै सो देखै बाजी ४
मोहाबपुरायुक्ति न देखा । शिवशक्ती बिरञ्चि नहिंपेखा ५

नटके बटा कैसा साज साजि कहे नाना रूप धारण करिकै आवै जाय है जो बाजीगर खेल खेलै है तौनै देखै है अर्थात् जे ब्रह्म में लगे ते ब्रह्मही देखै हैं जे जीवात्मामें लगे हैं ते जीवात्मै को देखै हैं इत्यादि जो जौने मत में है सो ताही में लगो है सांच बताये लरैधावै है काहेते उनकी बासना अनेक जन्म ते वही है ४ गुरुवा करिकै मोहा जो बपुरा जीव है सो साहबके जानिबे की युक्ति न देखत भयो शिवशक्त्यात्मक जगत् पूर्व कहिआये हैं सो या शिवशक्ति विरञ्चि मायारूप या बात न जानतभये ॥ ५ ॥

साखी ॥ परदे परदे चलिगया, समुझि परी नहिं बानि ॥
जो जानै सो बाचि है, होत सकलकी हानि ६

पाइदे परदे कहे विना साहब के जाने संसार में जीव चलिगया कहे संसार में जातरहा वाणी जो है वेद शास्त्र सो तात्पर्य करिकै साहब को बतावै है सो जीवको न समुझि पस्यो जो कोई वेद शास्त्रादि में तात्पर्य करिकै परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को जानै सोई बाचै है अपरोक्ष अर्थ जगत्मुख जानिकै सबकी हानि होतही जाय है ॥ ६ ॥

इति बयासिवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ८२ ॥

अथ तिरासिवीं रमैनी ॥ ८३ ॥

चौ० क्षत्री करै क्षत्रियाधर्मा। वाके बढ़ै सवाई कर्मा १
जिन अबधू गुरु ज्ञान लखाया। ताकर मन तहँई लैधाया २
क्षत्री सो कुटुम्ब सों जूझै। पांचों मेटि एककरि बूझै ३
जीवहि मारि जीव प्रतिपालै। देखत जन्म आपनो घालै ४
हालै करै निशाने घाऊ। जूझिपरे तहँ मनमत राऊ ५
साखी ॥ मनमत मरै न जीवई, जीवहि मरण न होय ॥
शून्य सनेही रामबिन, चले अपनपौ खोय ६

क्षत्री करै क्षत्रिया धर्मा। वाके बढ़ै सवाई कमा १
जिनअबधूगुरुज्ञानलखाया। ताकरमनतहँई लैधाया २
क्षत्री सो कुटुम्बसों जूझै। पांचों मेटिएककरि बूझै ३

जैसे क्षत्रिय क्षत्रियाधर्मकरै है तौ वाके सवाई कर्म बढ़ै हैं रण में पैठिकै शत्रुनको मारिकै शूरतारूप कर्म बढ़ै हैं ऐसे जीव यह क्षत्रिय हैं क्षत्रिय जे साहब हैं तिनकी जाति है सो संसार रण में पैठिकै मन माया धोखा ज्ञान ई शत्रुमारि साहबके मिलनरूप शूरता बढ़ै है १ जे अबधू कहे बधू जो माया ताहिते रहित रामोपासक जे साधु ते गुण जे साहब हैं तिनको ज्ञान जाको लखायो है ताको मन तहँई लय भयो मनोनाश वासनाक्षय ह्वैगई जब मनोनाश भयो तब धाया कहे हंसरूप में स्थित ह्वै साहबके पास

को धावत भयो २ क्षत्रिय सो है जो कुटुम्ब सों जूझै कुटुम्ब याके कोहै पांचौ शरीर तिन को मेटिकै एक जो है हंसस्वरूप रथहि करिकै साहब को बूझै ॥ ३ ॥

जीवहिमारिजीवप्रतिपालै । देखतजन्मआपनोघालै ४
हालै करै निशाने घाऊ। जूझिपरे तहँ मनमतराऊ ५

जीवहि मारिकै कहे जो और और को जीव है रह्यो है आपने को ब्रह्म मानै है आपने को और और देवताके दास मानै है यह नाम मिटाइदेइ और यह जीवको जीव नाम मिटाइदेइ और हंसरूप में स्थित ह्वैके जीव को नाम रामदास धरावै तबहीं यह जीव को प्रतिपाल होइहै आपने देखते जन्म मरणको लैहै कहे छोड़िदेइ है ४ सो जो कोई या भांति साधन करै सो हालै निशाने में घाउ करै अर्थात् मनोनाश वासक्षय हालै ह्वैजाइहै और जे मनमतराउहैं अपने मनमतमें अपनेको राजा मानै हैं जूझिकै संसार में परे अर्थात् कोई आपनेनको ब्रह्म मानै है कोई आत्मैको मालिक मानै है ते जैसे मिथ्या वासुदेव अपने को कृष्णमानि जूझिपरयो ऐसे येऊ मनमाया करिकै मारे जाय हैं ॥ ५ ॥

साखी ॥ मन मतमरैनजीवई, जीवहि मरण न होय ॥
शून्यसनेहीरामाबिन, चले अपनपौ खोय ६

मनमती न मरै है न जियै है काहेते जीवहि मरण न होय जीवको जीवत्व नहीं जाइ है जिअब तो तब कहिये जब साहब को जानिकै साहबके लोकहि में जन्म मरण छूटि जाय मरिबो तब कहिये जब ब्रह्ममें लीन होय जीवत्व छूटिजाइ जनन मरण न होइ सो शून्य जे हैं वे धोखा तिनके सनेही जे मनमती हैं ते मरैहैं न जियै हैं जीवको तत्त्व नहीं जाइ है जीव सनातनको है तामें प्रमाण ॥“ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः”॥ ६ ॥

इति तिरासिवीं रमैनी समाप्तम् ॥ ८३ ॥

अथ चौरासिवीं रमैनी ॥ ८४ ॥

चौ० जोजिय अपने दुखै सँभारू । सो दुख व्यापिरहो संसारू १
माया मोह बन्ध सब लोई । अलपै लाभ मूलगो खोई २
मोर तोर में सबै बिगूता । जननी उदर गर्भमहँ सूता ३
ई बहुरूप खेलै बहु बूता । जनभौंरा अस गये बहूता ४
उपजै खपै योनि फिरि आवै । सुखकलेशसपनेहुँ नहिंपावै ५
दुख संताप कष्ट बहु पावै । सोन मिला जो जरत बुझावै ६
मोर तोर में जर जग सारा । धिक जीवन झूंठो संसारा ७
झूंठे मोह रहा जगलागी । इनतेभागिबहुरिपुनिआगी ८
जे हितकै राखे सबलोई । सो सयान बाचे नहिं कोई ९
साखी ॥ आपु आपु चेतै नहीं, औ कहौ तौ रिसिहा होइ ॥
कहकबीरसपनेजगै, निरस्थि अस्थि नहिंकोइ १०

जोजियअपनेदुखैसँभारू । सोदुखव्यापिरहो संसारू १
मायामोह बन्ध सबलोई । अलपै लाभ मूलगो खोई २
मोर तोरमें सबै बिगूता । जननी उदर गर्भमहँसूता ३
ई बहुरूप खेलै बहु बूता । जनभौंरा अस गये बहूता ४

हे जीव ! जौन दुःख यह संसार में व्यापिरह्यो है तौने अपने दुःखको सँभारु अर्थात् तौने दुःखते निकसु १ मायामोह में सब बँधेहौ सो अलपतो लाभ है अर्थात् विषयसुखते थोरही है तिन सबके मूल सम्पूर्ण दुःख के मेटनवारे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते खोइजाइ हैं कहे बिसरि जाय हैं २ मोर तोर याही में सब जीव बिगूता कहे अरुझिरहेहै याहीते जननीके उदर में सदा सूतत है अर्थात् गर्भवास नहीं मिटैहै ३ जैसे भौंरा फूलनमें रस लेनको जाइहै संध्या ह्वैगई तब कमल संपुटित ह्वैगयो तब फँसि गयो तैसे ये जीव बहुरूपते बहुत पराक्रम करिकै खेल खेलै हैं कहे विषय रसलेनको जाय हैं माया में फँसिजाय हैं ॥ ४ ॥

उपजैखपै योनिफिरिआवै । सुखकलेशसपनेहुँनहिंपावै ५

दुखसंताप कष्ट बहुपावै। सो न मिला जो जरत बुझावै६

उपजै है और खपै कहे मरै है पुनि पुनि योनि में फिरि आवै है सुखको लेश सपन्यो नहीं पावै है ५ दुःख संताप कष्ट बहुत पावै है जो आगीते जरत बुझावै सो गुरु नहीं मिलैहै इहां दुःख संताप कष्ट तीनबार जो कह्यो तामें कुछ भेद है दुःख वह कहावै है जो काहू मारे होइ है और जो रोगादिकन करिकै होइ है सो संकष्ट कहावै है और जो कोई हानिते होइहै सो संताप कहावै है ॥ ६ ॥

मोर तोरमें जर जग सारा। धिकजीवन झूठो संसारा७
झूठमोहरहाजगलागी। इनतेभागि बहुरिपुनि आगी ८
जे हितकै राखे सबलोई। सो सयान बाचे कहिं कोई ९

और तोर मोर करिकै सब संसार जरजाइ है यह संसार साहब को चिद्रूप करिकै नहीं देखै वे यह संसारको संसाररूप करिकै देखै हैं यही झूंठो है सो ऐसे झूठे संसार में जीवनको जीबेको धिक्कार है ७ मायाको जो मोह है सो सब संसार में लगिरह्यो है सो झूठो है इनते जो कोई भागिबेऊ कियो तौ फेरि वही झूठ ब्रह्माग्निमें जरै है ८ जे जे सबलोई कहे लोगन को हितकै राखै हैं ते सयान कालसे कोई नहीं बचैहैं तू कैसे बचैगो ॥ ९ ॥

साखी॥ आपु आपु चेतै नहीं, औ कहौ तौ रिसिहा होइ॥
कहकबीरसपनेजगे, निरस्थिअस्थिनहिंकोइ १०

आपु आपु कहे आपने स्वरूप को नहीं चेतै है कि मैं परम पुरुष श्रीरामचन्द्र के हौं सो मैं जो समझाऊंहौं तो रिसहा होइ है सो कबीरजी कहै हैं कि जो सपने जागे सपन कहा है देह को अभिमानी मनमुखी है जागे कहे अपने मनते यह बिचारिलेइ कि मैं जाग्यो मैं ब्रह्म ह्वैगयो अथवा आपने को जान्यो महीं सबको मालिक हौं और कोई दूसरो छोड़ावनवारो नहीं हैं मैं अपनेको जान्यो सो छूटिगयो सो कोई साहब को न मान्यो सो

निरस्थि कहे नास्तिक है सो अस्थि कहे आस्तिक न होइ है सो कहा जागै है नहीं जागै है अर्थात् वह ज्ञानतो धोखा है संसारसमुद्र ते तेरी रक्षा कहा करैगो ताते वह साहबको समुझि जाते तेरो संसारसमुद्र ते उबार करि देइ ॥ १० ॥

इति चौरासिवीं रमैनी सम्पूर्णम् ।

इति ॥

अथ पहिला शब्द ॥ १ ॥

सन्तो भक्ति सतोगुरु आनी । नारी एक पुरुष दुइ जाये बूझो पण्डित ज्ञानी १ पाहन फोरि गङ्गयक निकरी, चहुँदिशि पानी पानी । तेहि पानी दुइ पर्वत बूड़े, दरिया लहरि समानी २ उड़ि मक्खी तरुवर के लागी, बोलै एकै बानी । वहि मक्खी के मक्खा नाहीं, गर्भ रहा बिन पानी ३ नारी सकल पुरुष वहि खायो, ताते रहेउ अकेला । कहै कबीर जो अबकी समुझै, सोई गुरू हम चेला ॥ ४ ॥

सन्तो भक्ति सतोगुरु आनी ॥

नारी एक पुरुष दुइ जाये, बूझो पण्डित ज्ञानी १

हे सन्तो, हे जीवो ! तुमतो शान्तरूप हौ गुरु जे हैं सबते श्रेष्ठ परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनकी सतो कहे सातो जे भक्ति हैं ते आनी कहे आनई हैं अर्थात् सगुण निर्गुण के परे मन वचन के परे है कौन सातभक्ति हैं ते कहै हैं शान्त प्रथम ताकर द्वै भेद सूक्ष्मा-सामान्या सो शान्त के सूक्ष्मा के सामान्या के जुदे जुदे लक्षण हैं ताते तीनि भक्ती ये हैं औ दास्य, सख्य, वात्सल्य, शृङ्गार चारि ये मिलाय सात भक्ति भई सोई जे हैं सातौ रस हैं ते मन वचन ये नहीं आवै हैं जब प्राप्ति होइ हैं तबहीं जानि परै है कि ऐसे हैं सो या भांति साहब की जे सातौ भक्ति हैं ते गुप्त ह्वै गई काहेते कोऊ न जानत भयो सो कहै हैं नारी जो है कारणरूपा माया

सो द्वै पुरुष को प्रकट कियो एक जीव दूसरो ईश्वर सो पांच ब्रह्म ईश्वर प्रकट भये हैं सो आदि मङ्गलमें कहि आये हैं "जनी प्रादुर्भावे" धातु है या जायो को अर्थ प्रकट करबोई है और माया ते जीव ईश्वर प्रकट भये हैं तामें प्रमाण "मायाख्यायाः कामधेनोर्वत्सौ जीवेश्वरावुभाविति। जीवेशावाभासेन करोति माया चाविद्या च" (इति श्रुतेः) सो हे पण्डित! ज्ञानी तुम बूझो तो सारासार के विचार करनवारे सांच हौ यह वाणी जो है सोई तुमको भरमाइ दियो है॥ १॥

पाहनफोरिगङ्गयकनिकरी, चहुँदिशि पानी पानी॥
तेहि पानी दुइ पर्वत बूड़े, दरिया लहरि समानी २

पाहन कहिये कठिनको सो कठिन मन है ताको फोरिकै गङ्गा निकसी नानापदार्थनमें जो राग होइ है सोई गङ्गा हैं सो वही रागरूपा माया में परिकै जीव संसार में रागकरि बूड़िगये और ईश्वर उत्पत्ति प्रलय करिकै दोनों जीव ईश्वर जे हैं तेई दुइ भारी पर्वत हैं ते बूड़िगये और दरिया जो धोखाब्रह्महै तामें रागरूपी जो है गङ्गा ताकी जो लहरिहै सो समाइजातीभई अर्थात् सब धोखही में राग करत भये सांच वस्तु में जिन जाना तेई बाचे अथवा वही राग गङ्गा लहरि संसारसागर में समाइजाती भई सबजीव ईश्वर संसार में रागद्वेष करिकै बूड़िगये अथवा वहै जो वाणी गङ्गा सो पाहन जो मन है तौनेको फोरिकै निकरी है सो चारिउ ओर पानी पानी ह्वै रही है तौने पानी दुइ पर्वत बूड़े एक जीव एक ईश्वर और गङ्गा समुद्र में समानी हैं इहां वाणीरूप गङ्गा को पर्यवसान दरिया जो ब्रह्म है ताही में होत भयो॥ २॥

उड़ि मक्खी तरुवर के लागी, बोलै एकै बानी॥
वहि मक्खी के मक्खा नाहीं, गर्भ रहा बिन बानी ३

मक्खी जे हैं जीव ते तरुवर जो है देह तामें उड़िकै आपने आपने बासनन्ते लागत भये अर्थात् प्रलय जब भई तब वही ब्रह्म

में लीनभये पुनि जब सृष्टि भई तब पुनि शरीर पावत भये अ-
थवा मक्खी जे हैं जीव ते संसारवृक्ष में लागत भये ते सब एक
वाणी बोलैहैं कि एक ब्रह्महीहै दूसरो नहीं है साहबको नहीं जानैहै
सो वही मक्खी जो जीव है ताके मक्खा नहीं है कहे प्रथम जीव
जो हिरण्यगर्भ समष्टिजीव है ताके पति नहीं है परन्तु विना पानी
गर्भ रहतई भयो जीवते संसार प्रकटै यह आपहीते नाम को
जगत् मुख अर्थ करिकै संसारी ह्वैगयो साहब तो याको उद्धार
करिबो रमानामदियो ताकी मेरे नाम मेरो अर्थ जानिकै मेरे पास
आवै संसार न होइ ॥ ३ ॥

नारी सकल पुरुष वहि खाया, ताते रह्यो अकेला ॥
कहै कबीर जो अबकी समुझै, सोई गुरू हम चेला ४

नारी जो है वहै कारणरूपा माया सो सबजीव ईश्वर जे पुरुष हैं तिनको खाइलियो कहे आपने पेटमें डारिलियो अर्थात् उनके काहूके ज्ञान न रहिगयो आपनो चेरो बनाइ लियो तेहिते हे संतो, हे जीवो ! तुमतो शुद्ध हौ इनको छोड़िदेउ तब साहब जे हैं तेई छोड़ाइ लेइँगे अकेला रहो कहे अकेल जे सबके साहब परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनके ह्वैकै रहौ जो जीव ईश्वरनको संग करोगे तो तुमहूंको माया धरिलेइगी श्रीकबीरजी कहैहैं कि जो अबकी समुझै कहे यह मानुष शरीर पाइकै समुझै सोई गुरू है तौने जीवको हम चेला ह्वैजाइँ अर्थात् ताके हम सेवक ह्वै जाइँ जो जो हमसों पूछै सो सब वाको बताइ देइँ कछू गोप्य न राखैं अथवा सो हम पूछिलेइँ कि ऐसे भ्रमजालमें परिकै कौनी भांति ते छूट्यो सो कबीरजी तो कबहूं बँधिकै छूटै नहीं हैं ताते कबीरजी कहै हैं कि जो अबकी या समुझि लेइ तो हम पूछि लेइँ बँधिकै छूटै कैसे सुख होइ ॥ ४ ॥

इति पहिला शब्द समाप्तम् ॥ १ ॥

अथ दूसरा शब्द ॥ २ ॥

सन्तो जागत नींद न कीजै। काल न खाय कल्प नहिं ब्यापै, देह जरा नहिं छीजै १ उलटी गङ्ग समुद्रहि सोखै, शशि औ सूर गरासै। नवग्रह मारि रोगिया बैठे जलमें बिम्ब प्रकासै २ बिन चरणनको दुहुँदिशि धावै, बिन लोचन जग सूझै। ससा सो उलटि सिंहको ग्रासै, अचरज कोऊ बूझै ३ औंधे घड़ा नहीं जल डूबै, सूधेसों घट भरिया। जेहि कारण नर भिन्न भिन्न करु, गुरुप्रसाद ते तरिया ४ पैठि गुफामें सब जग देखै, बाहर कछुव न सूझै। उलटा बाण पारथिव लागै, शूरा होय सो बूझै ५ गायन कहै कबहुं नहिं गावै, अनबोला नित गावै। नटवर बाजीपेखनी पेखै, अनहद हेतु बढ़ावै ६ कथनी बदनी निजुकै जोहैं, ई सब अकथकहानी। धरती उलटि अकाशहि बेधै, ई पुरुषहि की बानी ७ बिना पियाला अमृत अचवै, नदी नीरभरि राखै। कहै कबीर सो युग युग जीवै, राम सुधारस चाखै ॥ ८ ॥

सन्तो जागत नींद न कीजै ॥

काल न खाय कल्प नहिं ब्यापै, देह जरा नहिं छीजै १

हे सन्तो, हे जीवो! तुमतो चैतन्यरूप हौ तुम काहेको सोवौ हौ अर्थात् काहे जड़ भ्रममें परेहौ मायादिक तो जड़ हैं और तिहारो अनुभव जो ब्रह्म है सोऊ जड़ है काहेते कि तिहारो मन तो जड़ है ताहीकी कल्पना ब्रह्म है जो कहो मनको बिषय ब्रह्म है यह तो कोई वेदान्त में नहीं है तो जहांभर मन वचनमें आवै तहांभर अज्ञान कल्पित है और "अहं ब्रह्मास्मि" में ब्रह्म है यह मानिबो तो मूलाज्ञान में है यह वेदान्तको सिद्धान्त है जैसे धूरि धूम बादर घटादिक के आकाशही रहिजाय है कबीरजी कहै हैं कि तैसे तीनों अवस्थामें तुमहीं रहिजाउहौ जहांभर ब्रह्म कहै हैं और विचार करै हैं सो मन वचन में आइजाइहै ताते मनहीं को कल्पित है ताते वोऊ जड़ हैं सो तुम नहीं हौ तुमतो चैतन्य हौ तिहारे

रूप को काल नहीं खाय है और कौनौ कल्पना नहीं व्यापै है अर्थात् कौनौ तुम्हारे स्वरूप में कल्पना नहीं उठैहै और तेरो जो स्वरूप है याते परमपुरुष श्रीरामचन्द्र के समीपरहै है सो रूप जरा जो बुढ़ाई है ताते नहीं छीजै है अर्थात् कबहूं बुढ़ाई नहीं होइ है सदा किशोर बनोरहै है ॥ १ ॥

उलटी गङ्ग समुद्रहि सोखै, शशि औ सूर गरासै ॥
नवग्रह मारि रोगिया बैठे, जलमें बिम्ब प्रकासै २

रागरूपी जो है गङ्गा सो संसारमुख ब्रह्ममुख ह्वैरही है सो जो उलटै साहबमुख होइ साहबमें जीव अनुराग करै तो समुद्र जो है संसारसागर और धोखाब्रह्मसागर ये दुहुँनको सोखिलेइ और शशि जोहै जीवात्मा मानिबो कि एक आत्मही है दूसरो पदार्थ नहींहै यह ज्ञान और सूर जोहै नाना निरञ्जनादिक ईश्वरनके दास मानिबेको ज्ञान तौनेको गरासिलेइहै और यह साँचो साहबको है जान याको देइहैं संसारवालो जो रोग है सो पारखहोते जाय है सो नवग्रह जब निबल होइहै तब रोग होइहै सो नवग्रह नवद्रव्य हैं नवद्रव्य के नाम पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश, काल, आत्मादिक मन तिनको मारिकै कहे मिथ्या मानिकै और आपनी आत्मा को साहब को दास मानिकै बैठे तब रागरूपी जल में बिम्ब जो है शुद्ध साहब को अंश याको स्वरूप जाको प्रतिबिम्ब धोखाब्रह्म है और संसार है तौन प्रकाशै कहे अपने स्वस्वरूपको जानै ॥ २ ॥

बिनचरणनकोदशादिशि धावै, बिन लोचन जग सूझै ॥
ससा सो उलटि सिंहको ग्रासै, अचरज कोऊ बूझै ३

तब विना चरणनको कहे संसारमुख चलिबो ब्रह्ममुख चलिबो याको छूटिगयो अर्थात् येई चरणहैं तिनते हीन ह्वै गयो तब नवधाभक्तिको छोड़िकै दशु कहे दशौ जो साहबकी अनुरागात्मिका भक्ति हैं तौने के दिशा को धावै है अथवा नवद्वार को

छोड़िकै दशो द्वारको जोहै मकरतार साहबके इहांकी डोरिलगी है तहांको धावै है और शरीरन को जे प्राकृत नयनहैं ते याके न रहिगये साहब को दियो जो याको हंसस्वरूप है तौने के नेत्र करिकै साहब को चिदचिद्रूप यह संसार सो सूझि परन लग्यो कहे बूझिपरनलग्यो तब अरे मूढ़! भ्रमरूप जोहै ससा खरहा अहंब्रह्म बिचार सो तैं जोहै समर्थसिंह ताको ग्रासै है सो वह तो धोखाहै वही भर्म भूलि गयो सो हे जीवो! यह अचरज कोऊ बूझौ और जौन ज्ञान मैं कहि आयों तौनकरि साहबमें लगो जो कबहूं न होइ नई बात होय सो यह आश्चर्य है ससा सिंहको कबहूं नहीं खाइहै जीव ब्रह्म कबहूं नहीं होयहै सो तुम कबहूं ब्रह्म न होउगे वह ब्रह्म तुम्हारई अनुभव है ताहीमें तुम भुलान हौ॥३॥

औंधे घड़ा नहीं जल भरिया, सूधे सों घट भरिया ॥
जेहि कारण नर भिन्न भिन्न करु, गुरुप्रसाद ते तरिया ४

औंधा घड़ा जो जल में डारि दीजै तौ नहीं डूबै है जल नहीं भरि आवैहै सो तैं जो साहबको पीठि दैकै ब्रह्ममें और संसार में लगै सो तो धोखाहै जैसे सूधे घट में जलभरि आवै है तैसे तैंहूं साहबकी ओर मुखकरु जब साहब तेरे ऊपर प्रसन्न होइगो तबहीं तैं ज्ञान भक्ति करिकै पूरा होइगो जा कारण नर भिन्न भिन्न करै है कहे भिन्न भिन्न पदार्थ मानै है और सब पदार्थ साहबको चिद-चिद्रूप करिकै नहीं देखै है सो यह भ्रम समुद्र गुरु सबते श्रेष्ठ अन्धकारको दूर करनवारे परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके प्र-सादते तरोगे अथवा साहबके बतावनवारे अन्धकारके दूर करन-वारे जब गुरु मिलैंगे तब तिनके प्रसादते तरोगे ॥ ४ ॥

पैठि गुफा मों सब जगदेखै, बाहर कछुव न सूझै ॥
उलटा बाण पारथिव लागै, शूरा होय सो बूझै ५

दुर्लभ मनुष्य शरीररूपी जो गुफा है तौनेमें पैठिकै कहे श-रीर पाइकै चिदचित् साहबको रूप सब संसार याको सूझिपरै

और साहबके रूपते बाहिरे और कुछ वस्तु न सूझिपरै सुरतिरूपी जो बाण है सो जगत्मुख ब्रह्ममुख ईश्वरमुख जीवात्मामुख ह्वै रहा है सो उलटा कहे उलटिकै पार्थिव कहे राजा जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनमें लगावै यह बात जो कोई शूरा होइ कहे ब्रह्मज्ञान ईश्वरज्ञान जीवात्माज्ञान की एक आरमै सत्य है तिनको जीत लेइ सो बूझै तबहीं जन्म मरण याको छूटै है ॥ ५ ॥

गायन कहै कबहुं नहिं गावै, अनबोला नित गावै ॥
नटवर बाजी पेखनी पेखै, अनहद हेतु बढ़ावै ६

गायन जो है बाणी वेदशास्त्र पुराण सो तात्पर्य करिकै अनिर्वचनीय साहब को कहै हैं तौनेको तो कबहूं नहीं गावै है अनबोला जो निराकार धोखाब्रह्म है जो कबहूं बोलतै नहीं है सो कसे पूरपरै कौनीतरहते अनबोला को गावै हैं सो आगे कहै हैं वह जो धोखाब्रह्म को पेखना है सो नटवत् बाजी है कहे झूठै है वहां कछू नहीं देखो परै है जो कहो अनहद को हेतु तो बढ़ावै है कहे दशौ धुनि अनहद की तो सुनि परै है ॥ ६ ॥

चौ० कथनी बदनी निजुकै जोहै, ई सब अकथ कहानी ॥
धरती उलटि आकशहि बेधै, ईपुरुषहिकी बानी ७

सोई तो सब कथनी बदनी है जो बिचारिकै देखो तो अनहद आदि दैकै ई सब अकथ कहानी हैं साहबके जाननवारे पूरेसन्तन के कहिबे लायक नहींहै झूठहैं कछुइनमें है नहीं सब मन के अनुभव हैं पुरुष जे हैं तिनकी यह बानी कहे स्वभाव है धरती जो जड़माया है ताको उलटिदेइ है वाको मुख मुरकाइ देइहै वासों आप फिरि आवैहै और आकाश जो ब्रह्म है ताको बेधै कहे ब्रह्म के पारजाय है तामें प्रमाण "सिद्धा ब्रह्मसुखे मग्ना दैत्याश्च हरिणा हताः । तज्ज्योतिर्भेदने शक्ता रसिका हरिवेदिनः" और कुपुरुष जेहैं ते संसार में लगे हैं कि धोखाब्रह्म में लगैहैं उनकी बानी कहे यहै स्वभाव है ॥ ७ ॥

बिना पियाला अमृत अचवै, नदीनीर भरिराखै ॥
कहै कबीर सो युग युग जीवै, राम सुधारस चाखै ८

स्थूल सूक्ष्मादिक जे पांचों शरीर हैं तेई पियाला हैं स्थूलसूक्ष्म कारण करिकै विषयानन्द पियैहैं और महाकारण कैवल्य ते ब्रह्मानन्द पियैहैं पांचौ शरीर पियाला बिना कहेते निकसिकै जे पुरुष साहबको दियो जो हंसस्वरूप है तामें स्थित ह्वैकै साहबको प्रेमरूपी जो अमृत है ताको अँचवै हैं जाते जन्म मरण न होइ तिनको जगत्‌के रागरूपी नीर करिकै भरी जो नदी है जाको आगे वर्णनकरिआयेहैं नदियानीर नरकभरि आई सो तिनको राखै कहे छारईहैं अर्थात् झूरहीहैं अथवा संसारमें जो राग कियेहैं सो नरक भरी हैं ताको निकारिकै रसरूपा भक्ति जो साहबकी नीर ताको भरिराखै सो कबीरजी कहैहैं कि सोई युग युग जीवै है कहे वही को जनन मरण नहीं होय जो या भांति परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके प्रेमरूपी सुधारसको चाखैहै ॥ ८ ॥

इति दूसरा शब्द समाप्तम् ॥ २ ॥

अथ तीसरा शब्द ॥ ३ ॥

सन्तो घरमें झगराभारी। राति दिवस मिलि उठि उठि लागैं, पांच ढोटा यक नारी १ न्यारो न्यारो भोजन चाहैं, पांचौ अधिक सवादी। कोइ काहूको हटा न मानै, आपुहि आपु मुरादी २ दुर्मति केर दोहागिनि मेटै, ढोटैचाप चपेरै। कह कबीर सोई जन मेरा, घर की रारि निबेरै॥ ३ ॥

सन्तो घर में झगरा भारी ॥
राति दिवस मिलि उठि उठिलागैं, पांच ढोटा यक नारी १

आगे या कहिआये हैं कि बिना पियाला अमृत अचवै हैं और जे नहीं अचवै हैं तिनको कहै हैं हे सन्तो, हे जीवो! या घर जो शरीर है तामें भारी झगरा मच्यो है पांचौ ढोटा जे पांचौ तत्त्वहैं

और नारी जो माया है सो उठि उठि लागै हैं कहे झगरा करै हैं यहै उपाधि राति दिन जीवको लगीरहै है ॥ १ ॥

न्यारो न्यारो भोजन चाहैं, पांचौ अधिक सवादी ॥
कोउ काहूको हटा न मानै, आपुहि आपु मुरादी २

अपने अपने न्यारे न्यारे भोजन चाहै हैं पांचौ बड़े सवादी हैं आकाश श्रोत्र इन्द्रिय प्रधान है सो शब्द चाहै है वायु त्वचा इन्द्रिय प्रधान सो स्पर्श को चाहै है और तेज चक्षुइन्द्रिय प्रधान है सो रूपको चाहै है और जल रसनेन्द्रिय प्रधान है सो रसको चाहै है और धरती घ्राणेन्द्रिय प्रधान है सो गन्धको चाहै है और माया जीवही को ग्रासन चहैहै कोई काहूको हटको नहीं मानै है आपही आपु मालिक ह्वैरहे हैं आपुही आपु आपनी मुरादि कहे वाञ्छा पूर करै हैं ॥ २ ॥

दुर्मति केर दोहागिनिमेटै, ढोटै चाप चपेरै ॥
कह कबीर सोई जनमेरा, घरकीरारिनिबेरै ३

दुर्मति जेहैं गुरुवालोग जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को छोंड़ि आत्महीको सत्यमाने हैं और या कहैहैं कि सबसुख करिलेउं वहां कछु नहीं है ऐसे जे नास्तिक हैं तिनकी दोहागिनि कहे नहीं ग्रहणलायक वाणी तिनको मेटिकै कहे छोंड़िकै ढोटा जेहैं पांचौ तत्त्व तिनको जोहै चाप कहे दबाउब ताको आपै चपेरै कहे दबाइ लेइ अर्थात् वे न दबावन पावैं आपने आपने विषयन में मनको खैंचि लैजाइहै तहां मन न जानपावै सो कबीरजी कहैहैं कि जो पारिख करिकै शरीर जो घर है तौने में जो पांचौ इन्द्रिन को झगड़ा है ताको निबेरै कहे सब तत्त्व जे पृथ्वी आदिकहैं तिनमें लीन जे पांचौ इन्द्रिय हैं तिनकी जे विषय हैं तिनको निबेराकरै कि भगवत् की अचिदविग्रहहै पृथ्वी आदिक तत्त्वरूप करिकै जो देखै है इन्द्रियरूप करिकै जो देखै और विषयरूप करिकै जो देखै है सो न देखै और यह मानै कि मैं जोहौं जीवात्मा तौने

की एको नहीं हैं काहेते कि मैं चिदचित् विग्रह हौं ये जड़ वि-
ग्रह हैं इनते भिन्न हौं सो ये जे हैं जड़ ते आत्मै की चैतन्यता
पाइकै आपुस में लड़े हैं सो इनते जब आत्मा भिन्न ह्वै जाइगो
तब सब शरीरै एको कार्य करन को समर्थ न होइगो कैसे जैसे
शरीरते जीव इनते अपने को जुदो मानैगो हंसस्वरूप में स्थित
होइगो सो इनहीं को चपाइ लेइगो घरकी रारि निबरि जायगी
सो इस तरहते जो कोई अपने स्वरूपको जानि घर की रारि नि-
बेरै परमपुरुष श्रीरामचन्द्र में लगै सोई जन मेरो है ॥ ३ ॥

इति तीसरा शब्द समाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ चौथा शब्द ॥ ४ ॥

सन्तो देखत जग बौराना। साँचकहौं तो मारनधावै झूठे जग
पतियाना १ नेमी देखे धर्मी देखे, प्रात करहिं असनाना। आतम
मारि पाषाणहिं पूजैं, उनमें कछू न ज्ञाना २ बहुतक देखे पीर
औलिया, पढ़ैं किताब कुराना। कैमुरीद तदबीर बतावैं, उनमें
उहै जो ज्ञाना ३ आसनमारि डिम्भ धरि बैठे, मनमें बहुत गु-
माना। पीतर पाथर पूजनलागे, तीरथ गर्व भुलाना ४ माला प-
हिरे टोपी दीन्हे, छाप तिलक अनुमाना। साखी शब्दै गावत
भूले, आतम खबरि न जाना ५ हिंदू कहै मोहिं राम पियारा,
तुरुक कहै रहिमाना। आपुस में दोउ लरिलरि मूये, मर्म न काहू
जाना ६ घर घर मन्त्र जे देत फिरत हैं, महिमाके अभिमाना।
गुरुवा सहित शिष्य सबबूड़े, अन्तकाल पछिताना ७ कहै कबीर
सुनो हो सन्तो, ई सब भर्म भुलाना। केतिक कहौं कहा नहिं मानै
आपहि आप समाना ॥ ८ ॥

सन्तो देखत जग बौराना ॥
सांच कहौं तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना १

हे सन्तो! यह जगत् देखत देखत बौराइ गयो यह जानै है
कि यह कल्पना मनहीं की है एकनको दुःख पावत देखै है एकन

को भूत होत देखै है एकनको रोगग्रसित देखै है एकनको घोड़े हाथी चढ़े देखै है एकनको राजा होत देखैहै और एकनको मरत देखै है आपही मरघट ज्ञान कथै है कि ऐसेही हमहूं मरिजाइँगे सो यहि देखत देखत भुलाइजाइहैं परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको भजन नहीं करै है जाते संसारते छूटै जो सांच बताऊं हौं कि सांच जे परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं जो चित् अचित् में व्यापक हैं सब ठौर बने हैं तिनमें लगौ जाते उबार है तो मारन धावै है और झूठे जे मायाब्रह्म हैं तिनके विस्तारके जे नानामत हैं तिनमें जो कोई लगावैहै तो तिनको सांच मानिकै पतिआय जाय है ॥ १ ॥

नेमी देखे धर्मी देखे, प्रात करहिं असनाना ॥
आतममारिपाषाणहिं पूजैं, उनमें कछू न ज्ञाना २

बहुत नेमी धर्मी देखे हैं बहुत प्रातःस्नान करनेवालेन को देखेहैं स्वर्गको जाय हैं और आत्माको मारिकै कहे भगवान् को मन्दिर शरीर में साक्षात् सब के हृदय में भगवान् अन्तर्यामी-रूप ते बसे हैं तौने शरीरको फोरिकै मेढ़ा महिषादिकनको मूड़ लैके पीतर पाथर आदिक जे देवीकी मूर्ति हैं तिनमें चढ़ावै हैं और सब के उद्धार ह्वैबेको बतावै हैं तो इनमें कौन ज्ञान है कछू ज्ञान नहीं है काहेते कि साहबको सर्वत्र नहीं जानै हैं ॥ २ ॥

बहुतक देखे पीर औलिया, पढ़ैं किताब कुराना ॥
करि मुरीद तदबीर बतावैं, उनमें यहै जो ज्ञाना ३

और बहुते पीर औलियनको देखे किताब कुरान के पढ़नवाले ते जीवनको मुरीद कहे शिष्य करिकै मुरगी बकरी के हलालकरै की तदबीर बतावै हैं और आपौ हलाल करै हैं ॥ ३ ॥

आसनमारि डिम्भधरि बैठे, उनमें बहुत गुमाना ॥
पीतर पाथर पूजन लागे, तीरथ गर्ब भुलाना ४

और कोई चौरासी आसन कैकै प्राण चढ़ायकै डिम्भधरि बैठे

हैं कि हमारे बरोबरि कोई सिद्ध नहीं है यही मनमें गुमान करै हैं यह योगिनको कह्यो और कोई पीतरकी मूर्ति कोई पाथरकी मूर्ति पूजै हैं और सर्वभूत में व्यापक जो भगवान् तिन भूतन को द्रोह करै हैं ते अज्ञानी हैं साहबको नहीं जानै हैं तामें प्रमाण "अहमुच्चावचैर्द्रव्यैः क्रिययोत्पन्नयानघे । नैव तुष्येऽर्चितोर्चायां भूतग्रामावमानिनः १ यस्यात्मबुद्धिः कुणपे त्रिधातुके स्वधीः कलत्रादिषु भौमइज्यधीः । यत्तीर्थबुद्धिः सलिले न कर्हिचिज्जनेष्वभिज्ञेषु स एव गोखरः २" (इति भागवते) और कोई तीर्थन में लागे हैं इनहीके गर्बमें सब भुलाने हैं कि हम मुक्त ह्वै जायँगे ॥ ४॥

माला पहिरे टोपी दीन्हे, छाप तिलक अनुमाना ॥
साखी शब्दै गावत भूले, आतम खबरि न जाना ५

अब कबीरपन्थिन को नानापन्थिन को कहैहैं कि माला पहिरे हैं टोपी दीन्हे हैं और नाकते लैकै * छिद्र ऊर्ध्वतिलक दीन्हे हैं ताही के अनुसार छाप पाये हैं या कहैहैं हमको गद्दीकी छाप भई है हम महन्त हैं पान पायो है और साखीशब्द गावत हैं पै वाको अर्थ भूले हैं साखीशब्द में जो साहबको रूप बतावै हैं जीवात्मा को सो नहीं जानै ॥ ५ ॥

हिन्दूकहै मोहिंरामपियारा, तुरुक कहै रहिमाना ॥
आपसमेंदोउलरिलरिमूये, मर्म कोइ नहिं जाना ६

सो हिन्दू तो कहै हैं कि वेदशास्त्र में रामही पियारा है और मुसल्मान कहै हैं कि रहिमानही पियारा है यह द्विविधा लगाय राख्यो है या न जानत भये कि एकही हैं आपस में लड़िलड़िकै मरिगये मर्म कोई न जानत भये कि वही राम है वही रहिमान है साहब एकई है दूसरो नहीं है सब नाम वहीके हैं तामें प्रमाण "सर्वाणि नामानि निजमाविशन्ति" (इतिश्रुतिः) सो सबनाम वही में घटित होय हैं ॥ ६ ॥

घर घर मन्त्र जे देत फिरतहैं, महिमाके अभिमाना ॥

गुरुवासहित शिष्य सबबूड़े, अन्तकाल पछिताना ७

घर घर जे मन्त्र देत फिरत हैं अपनी महिमा के अभिमानते कि हम सिद्ध हैं योगी हैं पीर हैं औलिया हैं ऐसे जे गुरुवा हैं ते यही अभिमानते सबकी रक्षा करनवारे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको भुलाइकै सब जीवनको और और में लगाइदेइहैं और कहै हैं कि हम उद्धार कै देइ हैं गुरुवासहित सब शिष्य बूड़िजाइँगे और जब यमकेर मोंगरा लगैगो तब पछितायगो कि हम परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको भजन न कियो जे सबके रक्षक हैं ॥ ७ ॥

कहहिं कबीर सुनोहो सन्तो, ई सब भर्म भुलाना ॥
केतिक कहौं कहा नहिं मानै, आपहि आप समाना ८

सो कबीरजी कहै हैं कि हे संतो! तुम सुनो ये सब भर्मई भुलानरहै हैं मैं चारौयुग में केतनो समुझाऊंहौं पै मानै नहीं हैं यद्यपि माया ब्रह्मकी एती सामर्थ्य नहींहै कि यह जीवको धरि लै जाय काहेते कि वह जीवही को अनुमान है सो यह आपनेनते आप यह भर्म में समाइ गयो है कि मैं ब्रह्म हौं आप आपहीते यह माया ब्रह्म सो आपस मानलियो है अर्थात् संगति कैलियो है तेहिते संसारी ह्वैगयो ॥ ८ ॥

इति चौथा शब्द समाप्तम् ॥ ४ ॥

अथ पांचवां शब्द ॥ ५ ॥

सन्तो अचरज यक भो भाई । यह कहौं तो को पतिआई १ एकै पुरुष एकहै नारी, ताकर करहु बिचारा । एकै अण्ड सकल चौरासी, भर्म भुला संसारा २ एकै नारी जाल पसारा, जग मैं भया अँदेशा । खोजत काहू अन्त न पाया, ब्रह्मा विष्णु महेशा ३ नागफांस लीन्हे घट भीतर, मूसि सकल जग खाई । ज्ञान खड्ग बिन सब जग जूझै, पकरि काहु नहिं पाई ४ आपुहि मूलफूल फुलवारी, आपुहि चुनि चुनि खाई । कहैं कबीर तेई जन उबरे, जेहि गुरु लियो जगाई ॥ ५ ॥

सन्तो अचरज यकभोभाई। यह कहौं तो को पतिआई १
एकै पुरुष एक है नारी, ताकर करहु विचारा॥
एकै अण्ड सकल चौरासी, भर्म भुला संसारा २

हे सन्तो, शुद्धजीवो, भाई! एक बड़ो आश्चर्य भयो जो मैं वाको कहौं तो को पतिआय १ एकै पुरुष है एकै नारी है कहे वही जीवात्मा पुरुषौ है नारिउ है ताको बिचारकरो वा कौन हैं एकै अण्डमा कहे एक ही प्रणवमें उत्पन्न चौरासी लाखयोनि तामें परिकै यह जीव संसारके भर्म में भुलाय रह्यो है अथवा एकही अण्ड कहे ब्रह्माण्डहि में॥ २॥

एकै नारी जाल पसारा, जगमें भया अँदेशा॥
खोजत काहू अन्त न पाया, ब्रह्मा विष्णु महेशा ३

यह जीव शरीर धर्यो तब एकै नारी जो वाणी सो नानाप्रकार की जो है कल्पना सोई है जाल ताको पसारि देतभई तब जग में नानाप्रकार को अँदेशा होत भयो कहे नानाप्रकार के मतन करिकै जगत्के कारणको खोजतभये परन्तु ब्रह्मा, विष्णु, महेश ये कोई अन्त न पावत भये थकिकै " नेति " कहिदियो आत्मा को नानाविचार कियो कि कौनकोहै॥ ३॥

नागफाँस लीन्हे घट भीतर, मूसि सकल जग खाई॥
ज्ञानखड्ग बिन सब जग जूझै, पकरि काहु नहिं पाई ४

सो ये कैसे अन्त पावै नागफांस कहे त्रिगुणकी फांसी लिये घट के भीतर माया बनीरहै है सोई सब संसार को मूसिकै खाइ लेइहै मूसिकै खाइ जो कह्यो सो वै तो नाना मतन में परे यह जानै हैं कि यही सत्य है माया जो है सो परमपुरुष को जानिबो मूसि लियो कहे चोराइलियो सो परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको और अपने आत्मा को जानिबो कि साहब को हौं मैं और मायादिकन को मिथ्या मानिबो यह जो ज्ञानखड्ग है ताके

बिना सब जग जूझो जाइ है वह मायाको कोई पकरि न पायो अर्थात् यथार्थ मायाही कोई न जान्यो तब साहब को अपनो स्वरूप का जानै ॥ ४ ॥

आपुहि मूल फूल फुलवारी, आपुहि चुनि चुनि खाई ॥
कहहि कबीर तेई जन उबरे, ज्यहि गुरु लियो जगाई ५

आपहि वह मायामूल अविद्या है जगत् नानापदार्थ भई कहे कारण अविद्या भई और आपही फूल फुलवारी कहे कार्य अविद्या ह्वैकै जगत्के नानापदार्थ भई और आपही कालरूप ह्वैकै चुनि चुनि खाइहै सो कबीरजी कहैहैं स्वप्न व जो माया तौनेते जगाय साहब को बताइदियो है जाको सद्गुरु तेई जन उबरे हैं अर्थात् जो साहबको जानै हैं और अपने स्वरूप को जानै हैं कि मैं साहबको हौं ताको माया स्वप्नवत् है अथवा गुरु जे सबते श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र हैं तेई जिनको मोहनिशा में सोवत जगाइदियो है अर्थात् हंसरूप दैके अपने पास बोलाइलियो है तेई जन उबरेहैं कहे बचे हैं ॥ ५ ॥

इति पांचवां शब्द समाप्तम् ॥ ५ ॥

अथ छठा शब्द ॥ ६ ॥

सन्तो अचरज यकभो भारी । पुत्रधरलमहतारी १ पिता के संगहि भई बावरी, कन्यारहल कुमारी । खसमहिं छोंड़ि ससुर सँग गवनी, सो किन लेहु बिचारी २ भाई संग सासुरी गवनी, सासु सौतियादीन्हा । ननँदभौज परपञ्च रच्यो है, मोरनाम कहि-लीन्हा ३ समधी के सँग नाहीं आई, सहजभई घरवारी । कहहि कबीर सुनोहो सन्तो, पुरुष जन्म भो नारी ॥ ४ ॥

सन्तो अचरज यक भो भारी । पुत्र धरल महतारी १

---

१ "गुशब्दस्त्वन्धकारः स्याद्रुशब्दस्तन्निरोधकृत् । अन्धकारनिरोधत्वाद्गुरुरित्यभिधीयते" (इति गुरुगीतायाम्) ॥

पिताके संगहि भई बावरी, कन्या रहल कुमारी॥
खसमहि छोंड़ि ससुरसँगगवनी, सो किनलेहु बिचारी २

हे सन्तो! एक बड़ो आश्चर्य भयो पुत्र जो यह जीव है ताकी महतारी जो माया है सो धरतभई १ अरु पिता जो ब्रह्म है ताके संग बावरी ह्वै जातभई कहे जारपुरुष बनावत भई अर्थात् माया शबलित ब्रह्म भयो और कन्या जो बुद्धि है सो पति को निश्चय कहूं न करतभई बिचारै करत रहिगई कुँवारिही रहत भई अर्थात् सब मतन में खोजत भई परन्तु निश्चय न होत भई पहिले पिता जो ब्रह्म है ताको खसम बनायो पुनि तौने खसम को छोंड़िकै ससुर जो है मन कहे मनैको अनुभव ब्रह्म है ताके संग गवनत भई सो हे जीवो! अपनेते काहे नहीं विचारि लेउहौ कि माया हमारे मनमें पैठिकै और और में बुद्धि निश्चय करावै है २

भाई के सँग सासुर आई, सासु सौतिया दीन्हा॥
ननँद भौज परपञ्च रच्यो है, मोरनाम कहि लीन्हा ३

प्रथम याको भय भई तब या बिचार कियो कि "द्वितीयाद्वै भयं भवति" तबही माया लगी याते भाई भयो मायाको भय सोई भाई के साथ नानामतवारे जे गुरुवालोग तिनको जो मन है सोई सासुर है तहां आई और तिन गुरुवनकी बाणी जो है सोई सासु है काहेते ब्रह्मकी उत्पत्ति बाणी होति है सो गुरुवनकी बाणीरूप जो मायाकी सासु ताकी सवति जो दीक्षारूप सो माया को देतभई सो मायाते दैवयोग छूटिउ जाय परन्तु दीक्षा सवति ते नहीं छूटै है सो मायाकी सवति दीक्षा काहेते भई माया तो ब्रह्म की स्त्री है सो ताही ब्रह्मको दीक्षाहू लगावै है सो ज्ञान विद्यारूप है सो ब्रह्मके साथही भई ब्रह्मकी बहिनि भई मायाकी ननँद कहाई तौन अविद्या ब्रह्मको पति बनायो सो भौजी आप भई सो ये दोऊ भौजी ननँद मिलिकै परपञ्च रच्यो है अरु जीव कहै है मेरो नाम कहदियो है कि जीवही सब करै है॥ ३॥

समधी के सँग नाहीं आई, सहज भई घरवारी ॥
कहै कबीर सुनौ हो सन्तो, पुरुष जन्म भो नारी ४

माया की कन्या बुद्धि कहि आये सो बुद्धि कुँवारेही में नाना जीवन को जारपति बनायो सब जीव साहब के अंश हैं ताते सब जीवनके बाप साहब ठहरे सो माया के समधी भये तिनके घरवारी कहे आपही सब जीवनको विवाह लेत भई अर्थात् बश कर लेत भई सो कबीरजी कहैहैं कि हे सन्तो ! जीव जो पुरुष है सो माया के साथ नारी ह्वैगयो ॥ ४ ॥

इति छठा शब्द समाप्तम् ॥ ६ ॥

अथ सातवां शब्द ॥ ७ ॥

सन्तो कहौ तो को पतिआई । झूठा कहत सांच बनिआई १ लौके रतन अबेध अमोलिक, नहिं गाहक नहिं सांई । चिमिकि चिमिकि चमकै दृगदुहुँदिशि, अरबरहा छरिआई २ आपहि गुरू कृपा कछु कीन्हो, निर्गुण अलखलखाई । सहजसमाधि उनमुनी जागै, सहजमिलै रघुराई ३ जहँ जहँ देखौ तहँ तहँ सोई, मनमाणिक बेध्यो हीरा । परमतत्त्व यह गुरुते पायो, कह उपदेश कबीरा ॥ ४ ॥

सन्तोकहौतोकोपतिआई । झूठा कहत सांच बनिआई १

हे सन्तो ! झूठा जो ब्रह्म है ताको कहत कहत जीवन सांच बनिआई वही ब्रह्मको सांच मानालियो है अब जो मैं सांच साहबको बताऊं हौं तो को पतिआय अर्थात् कोई नहीं पतिआय है ब्रह्मही में लगे हैं ॥ १ ॥

लौके रतन अबेध अमोलिक, नहिं गाहक नहिं साँई ॥
चिमिकिचिमिकिचमकैदृगदुहुँदिशि,अरबरहाछरिआई२

लौ लगनको कहै हैं सो वा ब्रह्ममाहीं हौं या जो लौ कहे लगन ताही ज्ञानको रतन कै अबेधित अमोलिक मानि जामें गाहक

और साईं नहीं है अर्थात् दूसरा तो हई नहीं है गाहक साईं कहां ते होय सो वही ज्ञानको ब्रह्म मानिलियो है तौने ब्रह्म उनके दृगन में चमकि चमकि चमकै है सर्वत्र देखो परै है जो कहो लोकप्रकाश ब्रह्मही देखो परैहै सो नहीं अरु जो या हठ है कि सर्वत्र ब्रह्मही है या जो बरहा है सो छरिआइ रह्योहै सर्वत्र ब्रह्मही देखाय है जैसे बरहा में जल बढ़े सर्वत्र फैलिजाय है ऐसे "अहं ब्रह्मास्मि" जो या ज्ञान सो जब बढ़यो तब याको हठहीरूप ब्रह्म देखो परै है ॥ २ ॥

आपुहि गुरू कृपा कुछ कीन्हो, निर्गुण अलख लखाई ॥
सहज समाधि उनमुनी जागै, सहज मिलै रघुराई ३

सो गुरु जे हैं सद्गुरु ते जब आपही कृपा करै हैं तब निर्गुण जो ब्रह्म है ताको अलख लखावै है कि वे कछु वस्तुही नहीं हैं अर्थात् अलख हैं धोखा हैं साहब कब मिलै जब सहज समाधि उनमुनी मुद्राकरि जो सर्वत्र ब्रह्म देखै है तौन उनमुनीरूप निद्राते जागै अर्थात् सहजही समाधिकै चित् अचित्रूप विग्रह या जगत् साहब को है या देखै तो सहजही में परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं ते मिलैं ॥ ३ ॥

जहँ जहँ देखौ तहँ तहँ सोई, मनमाणिक बेध्यो हीरा ॥
परमतत्त्व यह गुरुते पायो, कह उपदेश कबीरा ४

अबेधित अमोलिक आगे कहिआये ताको तो नेतिनेति कहै हैं वामें काहूको मनहीं नहीं बेध्यो अर्थात् धोखही है अब साधुन को मन जो माणिक है अनुरागपूर्वक लाले सो साहब जे हीरा हैं तिनमें बेध्यो है ऐसे जे साहब चित् अचित्रूप जहां जहां देखौहौ तहां तहां सोई है यह कबीरजी कहैहैं कि यह परमतत्त्व को उपदेश मैं गुरुते पायो है ॥ ४ ॥

इति सातवां शब्द समाप्तम् ॥ ७ ॥

अथ आठवां शब्द ॥ ८ ॥

सन्तो आवै जाय सो माया । है प्रतिपाल काल नहिं वाके, ना कहुँ गया न आया १ क्या मकसूद मच्छकच्छ होना, शंखासुर न संहारा । अहैदयालु द्रोह नहिंवाके, कहहु कौनको मारा २ वेकर्ता न बराह कहावैं, धरणिधरै नहिं भारा । ईसब काम सहबके नाहीं, झूठकहै संसारा ३ खम्भफारि जो बाहरहोई, ताहिपतिज सबकोई । हिरणाकुश नख उदरबिदारे, सो नहिं कर्ता होई ४ बावनरूप न बलिको यांचे, जो यांचे सो माया । बिना बिवेक सकल जग जहड़े, मायाजगभरमाया ५ परशुराम क्षत्री नहिं मारा, ईछलमायाकीन्हा । सतगुरुभक्ति भेद नहिं जानै, जीवअमिथ्या दीन्हा ६ सिरजनहार न ब्याहीसीता, जलपषाण नहिं बन्धा । वे रघुनाथएककैसुमिरे, जोसुमिरैसोअन्धा ७ गोपीग्वालगोकुल नहिं आये, करते कंस न मारा । है मेहरबानसबनको साहब, नहिं जीता नहिं हारा ८ वे कर्ता नहिं बौद्धकहावैं, नहीं असुरको मारा । ज्ञानहीन कर्ता सब भरमे, मायाजगसंहारा ९ वे कर्ता नहिं भये कलङ्की, नहीं कलिङ्गहि मारा । ई छल बल सब मायै कीन्हा, यतिनसतिन सब टारा १० दश अवतार ईश्वरी माया, कर्ताकै जिनपूजा । कहै कबीर सुनो हो सन्तो, उपजै खपै सो दूजा ॥ ११ ॥

अवतरण सबते गुरुश्रेष्ठ परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र को वर्णन करिआये तिनके द्वारमें नारायणादिक मत्स्यादिक रहे आवै हैं ते अमायिक हैं काहेते कि आवै जाय नहीं हैं तिनहीं को परात्पर ब्रह्म करिकै वर्णत हैं तामें प्रमाण "पूर्णमदःपूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते" (इतिश्रुतेः)और ई मायातेपरेहैं और बहुधा निरञ्जनादिक जे नारायण हैं जिनको पांच ब्रह्म में कहिआये हैं ते उनकी उपासना करिकै उनको आपने ते अभेद मानिकै उनकी शक्तिको प्राप्ति ह्वैकै जगत्के कार्य सब करै हैं और जब मत्स्यादिक अवतार लेइ हैं तब जे साकेत मत्स्यादिक हैं तिनकी अभेद भावना करिकै उनते अवतार की शक्ति

पाइकै आपही मत्स्यादिक होइहैं ये सब साकेतमें जे नारायणादिक सब हैं तिनके उपासक हैं उपासना में देवको और अपनो अभेद मानिबो लिख्यो है "देवो भूत्वा देवं यजेत्" तेहिते उनकी शक्ति ते ये सब अवतार लेइहैं जो कहो यामें कहा प्रमाण है कि ये सब उनहीं के उपासक हैं तो रामनाम के साहब मुखअर्थ में मकार स्वतः सिद्ध सानुनासिक है ताको जो है मात्रा तौने में साहब के जे सबपार्षद हैं तिनको वर्णन करि आये हैं ये सब नारायणादिक रामनामही की उपासना करै हैं सो जाकी जाकी उपासना कीन चाहै हैं ताकी ताकी उपासना रामनामही में ह्वै जाय है रामनाम की ये सब उपासना करै हैं तामें प्रमाण "नारायणःस्वयंभूश्च शिवश्चेन्द्रादयस्तथा। सनकाद्या मुनीन्द्राश्च नारदाद्या महर्षयः॥ सिद्धाः शेषादयश्चैव लोमशाद्या मुनीश्वराः। लक्ष्म्यादिशक्तयः सर्वा नित्यमुक्ताश्च सर्वदा॥ मुमुक्षवश्च मुक्ताश्च ऋषयश्च शुकादयः। तत्प्रभावपरं मत्वा मन्त्रराजमुपासते" (इति वशिष्ठसंहितायाम्) जो कहो ये सब रामनाम में साहब मुख अर्थ तो जान्यो मायिक काहेभयो तो बिना माया शबलित भये जगत् के कार्य नहीं ह्वै सकै हैं तेहिते ये सब माया शबलित ह्वैकै कार्यकरै हैं परन्तु जैसे इतर जीवनके जन्म मरण होइहैं तैसे इनके नहीं होइहैं जब महाप्रलय भई तब सब जीव साहब के लोक प्रकाश में समष्टिरूप रहे हैं जब उत्पत्ति भई तब फिरि कर्मकरिकै उत्पत्ति होइहै और ये सब नारायणादिकन की उत्पत्ति प्रलय नहीं होइहै काहेते कि ईश्वर हैं जब महाप्रलय भई तब जे साकेतलोक में नारायणादिकहैं ते इनके अंशी हैं उपास्य हैं तहां लीन ह्वैकै रहे जाइहैं उत्पत्तिसमय में समष्टिजीव व्यष्टि होन चाहैं हैं तब राम नाम में जगत् मुख अर्थको भावना करै हैं तब साकेतनिवासी जे नारायण हैं तिन्हैं तिनके अंशई सब पांच ब्रह्मरूपते प्रकट होइ हैं साकेत में जे नारायणादिक हैं ते अमायिकहैं और तिनके अंश नारायणादिक मत्स्यादिक अवतार लैकै आवै जाय हैं ते माया

शबलितै हैं सो ये सब मत्स्यादि अवतारन को मायिक कहिकै कबीरजी साहब को परत्व देखावै हैं कि साहब सबते भिन्न हैं ॥

सन्तो आवै जाय सो माया ॥
है प्रतिपाल काल नहिं वाके, नहिं कहुँ गया न आया १

हे सन्तो ! आवै जाय है सो तो मायाको धर्म है जे साहब हैं परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते सबको प्रतिपालहीभर करै हैं कहे उद्धारईभर करैहैं और काम नहीं करै हैं उनके काल नहीं है अर्थात् प्रलय आदिक नहीं होइहै अथवा जो कोई वे साहब को जानै है ताको कालको भय छूटिजायहै वे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र न कहीं गये हैं न आये हैं ॥ १ ॥

क्या मकसूद मच्छ कच्छ होना, शंखासुर न सँहारा ॥
अहै दयालु द्रोह नहिं वाके, कहौ कौन को मारा २
वे कर्ता न बराह कहावैं, धरणि धरै नहिं भारा ॥
ई सब काम सहब के नाहीं, झूठ कहै संसारा ३

अरु वे उद्धारकर्ता परमपर पुरुष श्रीरामचन्द्र को क्या मकसूद कहे क्या मकसद हैअर्थात् क्या प्रयोजन है मच्छ कच्छ होने का वे शंखासुरको नहीं संहाख्यो है शंखासुर उपलक्षण याते जिनको जिनको माख्यो है अवतारते सब आइगये अरु सो दयालु हैं सबकी रक्षाकरै हैं उनके द्रोह नहीं है कहौ कौनको माख्यो है २ अरु वे उद्धारकर्ता साहब बाराह नहीं भये और न पृथ्वीको भारा धख्यो सो जौन सब कोई कहै हैं कि ई सब काम साहबही के हैं सो ये काम साहब के नहीं हैं यह संसार झूठई कहै है सो साहब को बिना जाने कहै हैं ॥ ३ ॥

खम्भ फारि जो बाहर होई, ताहि पतिज सब कोई ॥
हिरणकशिपु नख उदर बिदारे, सो नहिं कर्ता होई ४
बावनरूप न बलिको यांचे, जो यांचे सो माया ॥

बिना बिवेक सकलजग जहड़े, माया जग भरमाया ५

और खम्भ फारिकै बाहर ह्वैकै नरसिंहरूप ह्वै नखते हिरण्यकशिपुके उदरको बिदास्यो है तौनेन व्यापक ब्रह्म को सब कोई पतियाय है सो वे उद्धारकर्ता परमपुरुष श्रीरामचन्द्र नहीं हैं यह सब माया कियो है ४ और बावनरूप ह्वै वे साहब बलिको नहीं यांच्यो है मांगिबो पाइबो तो सब माया है सब जगत् के जीव बिना बिवेक जहड़े कहे भुलाय गये हैं सब जीवन को माया भरमाइ लियो है ॥ ५ ॥

परशुराम क्षत्री नहिं मारा, ई छल मायहि कीन्हा ॥
सतगुरुभक्ति भेद नहिं जानै, जीव अमिथ्या दीन्हा ६

अरु वे उद्धारकर्ता परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र परशुराम ह्वै क्षत्रिन को नहीं मास्यो है यह सब मायाही कियो है सतगुरु कहे सैकरन जे गुरुवा हैं ते साहब के भक्तिके भेद को जानै नहीं हैं जीव को ये जे नारायण हैं और सब जे अवतार हैं तिनही को अमिथ्या कहे मिथ्या नहीं सांच कहिकै कि वे सांच साहब येई हैं तिनही की जीवन को दीक्षा देइ है सो मिथ्या है ॥ ६ ॥

सिरजनहार न ब्याही सीता, जल पषाण नहिं बन्धा ॥
वे रघुनाथ एक के सुमिरे, जो सुमिरै सो अन्धा ७

और वे सिरजनहार कहे ताके सुरतिदियो ते ब्रह्मा विष्णु महेश आदिक अवतार लेइहैं और जगत्की उत्पत्ति होइहै सो सीता को नहीं बिवाह्यो और सेतु नहीं बांध्यो सो वे निर्विकार उद्धारकर्ता रघुनाथ को और इन सब अवतारन को एक करिकै सब कोई सुमिरैहैं सो जो एक करिकै सुमिरै हैं ते अन्धे हैं काहे ते कि वे तो रघुनाथ हैं रघु कहिये सब जीवको तिनके नाथ हैं वे काहेको काहू के मारनको अवतार लेइँगे वे निर्विकार और ये माया शबलित ह्वैकै सब अवतार लेइहैं जो कोई आवैजाय है सो मायिक है सो वे निर्विकार साहब और सविकार ये सब अवतार

एक कैसे होइँगे और रघु जीवको कहै हैं ते रघुशब्दके उत्पत्ति (रङ्घन्ते लोकाल्लोकान्तरं गच्छन्ति रघवो जीवास्तेषांनाथः) अर्थ-लोकते और लोक जाय ते जीव रघु हैं तिनके नाथ जे हैं तेई रघुनाथ हैं ॥ ७ ॥

गोपी ग्वाल गोकुल नहिं आये, करते कंस न मारा ॥
है मेहरबान सबन को साहब, नहिं जीता नहिं हारा ८

और गोपी ग्वाल गोकुल में कबहूं नहीं आये हैं वे उद्धारकर्ता साहब कंसको करते नहीं मार्‍यो और न मथुरा गये काहेते कि ब्रह्मवैवर्त में लिखाहै "वृन्दावनं परित्यज्य पदमेकं न गच्छति" वे साहब तो सबके ऊपर मेहरबानी करनवारे हैं वे न काहूसों जीते हैं न हारे हैं न काहूको मारे हैं अर्थात् युद्धई नहीं कियो वे तो रासई करत रहे हैं ॥ ८ ॥

वे कर्ता नहिं बौद्ध कहावें, नहीं असुर को मारा ॥
ज्ञानहीन कर्ता सब भरमे, माया जग संहारा ९
वे कर्ता नहिं भये कलङ्की, नहीं कलिङ्गहि मारा ॥
ई छलबल सब मायै कीन्हा, यतिनसातिन सब टारा १०

अरु बौद्धरूप ह्वैकै दैत्यनको नास्तिक मतसिखै दैत्यनको संहार कराइडार्‍यो है सो सब माया कियो है वे मुक्तिकर्ता साहब नहीं कियो काहेते कि वे मुक्तिकर्ता साहब देवको निन्दा करिकै इनको अज्ञानी कैसे करैंगे शोक ज्ञानहीन जेहैं ते भर्मे यह कहै हैं कि यह सब उद्धारकर्ता जो है सोई सब करैहै सो कर्ता नहीं करै है यह माया सब जगत्को संहारकरै है ९ अरु वे उद्धारकर्ता परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र कलङ्की अवतार नहीं लियो और न कलिङ्गदेशी जे म्लेच्छ हैं तिनको मार्‍यो है यह छलबल सब मायै कियो है यतिनको जो है सत्य सब ताको टारिदियो है अर्थात् यती जे रहे संन्यासी गोरखादिक तिनकर सत्य जोहै साहबको जाननवारो मत तौनेको टारिदियो योगादिकनमें लगाइदियो ॥ १० ॥

दश अवतार ईश्वरी माया, कर्ता कै जिन पूजा।
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो, उपजै खपै सो दूजा ११

नारायणै माया करिकै अवतार लेइहै ते सब ईश्वरी माया है कहे ईश्वररूपही माया है तिनको जिन पूजा कहे रामचन्द्र मानिकै न पूजो वैसे पूजो तो पूजो ईश्वर मानिकै न पूजो सो कबीर जी कहैहैं कि हे सन्तो! जो उपजै हैं और खपै हैं सो साहबते दूजो पुरुष हैं वे उद्धारकर्ता परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र साकेत ते कबहूं नहीं आवै जाय हैं तामें प्रमाण "पूर्णःपूर्णतमः श्रीमान् सच्चिदानन्दविग्रहः। अयोध्यां कापि संत्यज्य स कचिन्नैव गच्छति" (इति वशिष्ठसंहितायाम्) "साकेते नित्यमाधुर्यधाम्नि स्वे राजते सदा" (शिवसंहितायाम्) जो कहो इनहूको तौ कौन्यो कल्प में अवतार लिख्यो है सोई कबहूं आवै जाय नहीं है साकेतही में बनेरहैहैं जब कबहूं बाणयुद्धकी इच्छा चलै है तब यह अयोध्या साकेतई प्रकट होइ है अरु उहांके सब परिकार जसके तस प्रकट होइहैं यह ब्रह्माण्ड में तहां जैसे साकेत में विहारकरै हैं तैसे विहारकरै हैं याही हेतु ते ज्ञानी अज्ञानी जड़ चेतन कीट पतङ्गादिको मुक्ति करिदियो सो श्रुतिमें लिखै है "ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः" बिना ज्ञान मुक्ति नहीं होइहै सो जो वह साकेत केशव न होते तो मुक्ति कैसे होते जो कहो यह ब्रह्माण्ड वह साकेतई ह्वैगयो तो साकेत को आइबो तो आयो तो सुनो वह साकेत और यह अयोध्या एकई है इहां साकेत आवै जाय नहीं है जैसे साहब सर्वत्र पूर्ण हैं तैसे साकेत तो साहब के रूपई है सो वहौ सर्वत्र पूर्ण है "अयोध्या च परंब्रह्म" इत्यादिक प्रमाण ते जब परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र को प्रकट विहार करन को होइहै तब प्रकट ह्वैजाय हैं और जब गुप्तविहार करनकोहोइहै तब गुप्त ह्वै जाइहैं तब साकेत जो प्रकट और गुप्त ह्वैजाइहै कैसे जैसे श्रीकबीरजी को जब प्रकट उपदेश करनकी इच्छा होइ है तब प्रकट होइ उपदेश करै हैं और जब देखै हैं और जब गुप्त उपदेश

करन होइहै तब गुरु उपदेश करै हैं जाको उपदेश करैहैं सोई जानै है वे साकेतनिवासी श्रीरामचन्द्र जैसे सर्वत्र पूर्ण हैं तैसे उनको लोकऊ सर्वत्रपूर्ण है जो कहो उनके नामादिक तो अनिर्वचनीय हैं वे कैसे प्रकट वचन में आवैंगे तो नारायण जे रामावतार लेइहैं तेई हैं तिनके नामादिक तिनते उनके नामादिक व्यञ्जित होइ हैं सो पीछे लिखिआये हैं जब उद्धारकर्ता साहब प्रकट होइहैं तब जे देखनवारे सुननवारे हंसरूप में स्थित हैं तेई वहीरूपते देखैहैं सुनैहैं सच्चिदानन्दात्मको भगवान् सच्चिदानन्दात्मिका अस्यव्यक्तिः यह श्रुति करिकै एकरूपता कहिआये हैं याहीते लोकहूको व्यापक कह्यो और नारायण जो रामावतार लै अशोकवाटिका में लीलाकियो सो वर्णनकरि मन वचन के परे जे साहब हैं तिनके लीला को व्यञ्जितकरैहैं सो व्यञ्जित तो करैहैं परन्तु मन वचनके परे जे साहबहैं तिनके नामरूप लीलाधाम मन वचनकेपरे साकल्य करिकै व्यञ्जितऊ नहीं करिसकैहैं सो यह बात जो कोई साहब करिकै हंसरूप पाये हैं सो साहबके मन करिकै साहबको नामादिक जानै है और जपै है और साहबके दिये रूपकी आंखि ते साहबको देखै है तामें वेदसारोपनिषद्को प्रमाण ३७ "जनकोहवैदेहो याज्ञवल्क्यमुपसृत्य पप्रच्छकोहवैमहान्पुरुषोयंज्ञात्वेह विमुक्तोभवतीति १ सहोवाच कौशल्योरघुनाथएवमहापुरुषः तस्यनामरूपधामलीलामनोवचनाद्यविषयाः सपुनरुवाचेदृशंकथमहं शक्नुयां विज्ञातुं ज्ञापकाज्ञानादिति सपुनःप्रतिवक्ति २" अथैते श्लोका भवन्ति॥ "विरजायाःपरे पारे लोको वैकुण्ठसंज्ञितः । तन्मध्ये राजतेऽयोध्या सच्चिदानन्दरूपिणी ३ तत्र लोके चतुर्बाहू रामनारायणः प्रभुः। अयोध्यायां यदा चास्य अवतारोभवेदिह ४ तदास्ति रामनामेदमवतारविधौ विभोः । तन्नाम्नो नामरहितस्याम्नातंनामतस्यहि ५ दशकण्ठवधाद्यादिलीलाविष्णोःप्रकीर्तिताः । सकदाचित् कल्पेस्मिन् लोके साकेतसंज्ञिते ६ पुष्पयुद्धं रघूत्तंसः करोति सखिभिःसह ७ कस्मिन् कल्पेतु रामोऽसौ बाणजन्येच्छया विभुः । तैरेवसखिभिः सार्द्ध-

माविर्भूय रघूद्वहः दरावणादिवधेर्लीला यथा विष्णुः करोति सः । तयायमपि तत्रैव करोति विविधाः क्रियाः९क्रियाश्च वर्णयित्वाथ विष्णुलीलाविधानतः । लीलानिर्वचनीयत्वं ततो भवति सूचितम् १० किंचायोध्यापुरोनाम साकेत इति सोच्यते । इमामयोध्या माख्याय सायोध्या वर्ण्यते पुनः ११ अनिर्वाच्यत्वमेतस्या व्यक्तमेवानुभूयते । रामावतारमाधत्ते विष्णुः साकेतसंज्ञिते १२ तद्रूपं वर्णयित्वा निर्वचनीयप्रभोःपुनः । रूपमाख्यायते विद्भिर्महतः पुरुषस्य हि १३ " (इत्यथर्वणवेदे वेदसारोपनिषदि प्रथमखण्डे) श्रीकबीरजीका यही मत है कि साकेत छोड़ि कहूं नहीं जाय है नित्यविहारी है ॥ ११ ॥

इति आठवां शब्द समाप्तम् ॥ ८ ॥

अथ नवां शब्द ॥ ९ ॥

सन्तो बोलेते जगमारै । अनबोलेते कैसे बनिहै, शब्दै कोइ न विचारै १ पहिले जन्म पूतको भयऊ, बाप जनमिया पाछे । बाप पूतकी एकै माया, ई अचरज को काछे २ उन्दुर राजा टीकाबैठे, विषहरकरैखवासी । श्वानबापुरा धरनिढाकुरा, बिल्लीघरमें दासी३ कागज कारकारकुड़ आगे, बैलकरै पटवारी । कहहि कबीर सुनो हो सन्तो, भैंसै न्याउ निवारी ॥ ४ ॥

सन्तो बोले ते जगमारै ॥

अनबोलेते कैसे बनिहै, शब्दै कोइ न बिचारै १
पहिले जन्म पूतको भयऊ, बाप जनमिया पाछे ।
बाप पूतकी एकै माया, ई अचरज को काछे २

हे सन्तो ! जो बोलौहौ कहे जो मैं बताऊंहौं सोतो मानै नहीं है बोलेते जगमारैहै कहे शास्त्रार्थ करैहै और जो न बोलौ तो बनै कैसे शब्दको कोई नहीं बिचारै १ अरु पहिले पूत जो जीव है ताको जन्म हैलेइहै तब पिता जो है जीवको अनुमान ब्रह्म ताको

जन्म होइ है पिता जीव को काहेते कह्यो कि जब शुद्धजीव एकते अनेक ब्रह्म ही द्वार भयोहै वह माया शवलित ब्रह्मपूत है और जीव माया ही में पर्‍यो है दोनों माया शवलित हैं सो बाप जो है जीव और पूत जो है ब्रह्म तिनकी महतारी एकमायाही है अर्थात् यहीते अनादिकालते दोनों प्रकट हैं यहीमें परेहैं सो तैं विचारु तो यह अचरजको काछेहै अर्थात् तैंही अपने अज्ञानते यह अचरज काछे है और नानारूप धरेहै ॥ २ ॥

उन्दुर राजा टीकाबैठे, बिषहर करै खवासी ॥
श्वानबापुरा धरनिठाकुरा, बिल्ली घर में दासी ३

उन्दुर जोहै मूस सोतो राजाभयो टीकामें बैठ्यो और बिषहर जोहै सर्प सो खवासी करैहै और श्वानबापुरा जो है सो धरनिठाकुरा कहे वस्तुलैके ढांकिके धरैहै कहे भण्डारी है और बिल्ली घरमें दासीहै सो खानवालिनि है अर्थात् उन्दुरकहे वह साहब को ज्ञान जाको दूर कैदियोहै उन्दुर मूसको संस्कृतमें कहैहैं सो उन्दुर कहे मूस तो जीव है सो शरीरको आपनो मानिलियोहै सोई राजा भयो अरु वाको खानवालो जोहै सर्प सो काल है सो खवास भयो कहे क्षण पल घरी पहर वाको खातबीती तो होत जायहै सो खवास ह्वैकै यह काल वाकी आयुर्दाय को खातईजायहै और नानाप्रकार की जो बिषय हैं तेई बीराहैं ताको खवावत जायहै अरु श्वान कहे वह श्वान भवानन्द जो है सो बापुरा जो जीव ताको धरिकै ढांकि लियोहै कहे साहबको ज्ञान नहीं होन देइहै और बिल्ली जो है षट् दर्शननकी बाणी सो घरमें दासी ह्वैरहीहै कहे नानामतन में लगावै है साहबकी भक्तिरस जो है सोई है गोरस ताको खाइलेइ है ॥ ३ ॥

कागज हार कारकुड आगे, बैल करै पटवारी ॥
कहहि कबीर सुनोहो सन्तो, भैंसे न्याउ निवारी ४

कागजकारकहे लिखो कागजकार कुड जो बैल है ताको आगे

धरो है सोई बैल पटवारी करैहै सो कारो कागज कहे लिखो कागज जो गुरुवालोगन की बनाई पोथी तिनको आगे धरिकै बैल जे गुरुवालोगन के चेला हैं ते पटवारी करैहै अर्थात् कायानगरी के बसैया जे मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश, दशो इन्द्रिय तिनको बिचारिके कि कौन काके आधीन है ज्ञानरूपी द्रव्य तहसील करैहै वा पटवारी कैकै द्रव्य राजाके इहां लेजाइहै या ज्ञानरूपी द्रव्य आत्मा में राख्यो आइ अर्थात् काया नगरीके बसैया सब जीवात्मै ते चैतन्य हैं याते आत्मै मालिक है यह निश्चय कियो सो कबीरजी कहैहैं हे सन्तो ! तुम सुनो तहां भैंसा जो है सोई न्याउ निबौरैहै इहां भैंसा कहे गुरुवालोग जो हैं सो आप चहलामें परे हैं और चहलामें परो जो जीव ताही को मालिक बतावै हैं और चेला जे हैं तिनहूं को माया के चहला में डारैहैं ऐसो न्याउ निबौरैहैं भाउ यह है कि भैंसा यमकी असवारी है सो यमही पुर को लैजाइगो तहां जब यमके लट्ठा लगैंगे तब गुरुवाई निकसि आवैगी ॥ ४ ॥

इति नवम शब्द समाप्तम् ॥ ९ ॥

अथ दशवां शब्द ॥ १० ॥

सन्तो राह दुनों हम डीठा । हिन्दू तुरुक हटा नहिं मानैं, स्वाद सबनको मीठा १ हिन्दू ब्रत एकादशि साधै, दूधसिंघाड़ा सेती । अनको त्यागै मननहिं हटकै, पारन करै सगोती २ तुरुक रोजा नमाज गुजारै, बिसमिल बाँग पुकारै । उनकी भिश्त कहां ते होइहै, सांझै मुर्गी मारै ३ हिन्दू कि दया मेहर तुरुकनकी, दूनों घटसों त्यागी । वै हलाल वै झटका मारे, आगि दुनों घर लागी ४ हिन्दू तुरुक कि एक राह है, सद्गुरुइहै बताई । कहहि कबीर सुनौ हो सन्तो, राम न कहेउ खोदाई ॥ ५ ॥

सन्तो राह दुनौ हम डीठा ॥

हिन्दू तुरुक हटा नहि मानै, स्वाद सबन को मीठा१

हे सन्तो ! हम दूनोंकी राह डीठा कहे देखी दूनोंकी एकई राह है सो हमारो हटको कोई नहीं मानैहै हम सबको समुझावते हैं कि विषयन को छोंड़िकै देखो तो दूनों की राह एकई है सो दूनों दीनको विषयनको स्वाद मीठो लग्यो है यहीके मिलनकी उपाय करै हैं साहब को नहीं खोजैहैं ॥ १ ॥

हिन्दू ब्रत एकादशि साधै, दूध सिंघाड़ा सेती ॥
अनको त्यागै मन नहिं हटकै, पारन करै सगोती २
तुरुक रोजानमाज गुजारै, बिसमिल बाँग पुकारै ॥
उनकी भिश्त कहांते होइहै, सांझै मुर्गी मारै ३

हिन्दू जेहैं ते अन्नको त्यागिकै एकादशी ब्रतसाधै हैं कहे उपासे रहैहैं और फरहार करै हैं और बिहानभये नानाप्रकारके व्यञ्जन बनाइकै सगे जेहैं गोती भाई तिनको लैकै पारण करै हैं और मनको नहीं हटकैहैं वहे दशोइन्द्रिय ग्यारहों मनको नहीं हटकै हैं अर्थात् यह एकादशी नहीं करैहैं अथवा जैसे सगोतीमें वहे सगाई में अर्थात् जैसे विवाह में जाफ़त में खाय हैं तैसे पारण करै हैं २ और मुसल्मान रोजारहैहैं व नमाज गुजारैहैं और बिसमिल्ला को बाँग दैकै पुकारैहैं और सांझको मुर्गी मारिकै पोलाव बनाइ बनाइ खाय हैं सो वहो तो उनकी भिश्त कैसे होइगी ॥ ३ ॥

हिन्दू कि दया मेहर तुरुकनकी, दूनों घट सों त्यागी ॥
वै हलाल वै झटका मारैं, आगि दुनों घर लागी ४

हिन्दूकी दया तुरुककी मेहर है जो हिन्दू दया करता तो यम ते छूटत अरु जो मुसल्मान मेहर करता तो यमते छूटत सो ये दोऊ दया और मेहरको आपने घटते त्यागि दियो है मुसल्मान कहै हैं कि गलेकी रगसे भी अल्लाह नगीच है और घटघट में मौजूद है और गला काटतई हैं सो गौ से एकी गला काटते हैं और हिन्दू कहै हैं कि ब्रह्म सर्वत्र पूर्ण है और झटका मारै हैं कहे

मूड़ काटि डारै हैं सो दूनों घरमें आगि लगी है यह अज्ञानरूपी आगि दूनोंकी बुद्धि को दाहे डारै है ॥ ४ ॥

हिन्दू तुरुक कि एक राह है, सतगुरु इहै बताई ॥
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो, राम न कहौ खोदाई ५

हिंन्दू मुसल्मान की एकै राह है राम न कह्यो खोदाइ कह्यो राम कह्यो नाम सब वही बादशाहके हैं सो वह बादशाह को हिन्दू तुरुककी एती बड़ी साबाशी कब नीक लगैगी अथवा हिन्दू तुरुक की एकराहहै कहे एक रामनाम लियेते उद्धार होइहै सो कर्मते निवृत्त ह्वैके न हिंन्दू राम कहै न मुसल्मान खोदाइ कहै आपने आपने कर्म में सब लगे हैं तेहिते माया कैसे छूटै अथवा न नारायण राम कह्यो कि तुम झटका मारौ न खोदाइ कह्यो कि तुम हलाल करौ ये दोऊ अपने अज्ञानते बनाइ लियो है ॥ ५ ॥

इति दशवां शब्द समाप्तम् ॥ १० ॥

अथ ग्यारहवां शब्द ॥ ११ ॥

सन्तो पांड़े निपुण कसाई। बकरा मारि भैंसाको धावै, दिल में दर्द न आई १ करि असनान तिलक करि बैठे, बिधिसों देवि पुजाई। आतमराम पलकमो बिनशै, रुधिर कि नदी बहाई २ अतिपुनीत ऊंचेकुल कहिये, सभामाहँ अधिकाई। इनते दिक्षा सबकोइ माँगै, हँसि आवै मोहिंभाई ३ पापकटनको कथा सुनावै, कर्म करावै नीचा। बूड़त दोउ परस्पर देखा, गहे हाथ यमघींचा४ गाय बधै तेहि तुरका कहिये, उनते वै का छोटा। कहहि कबीर सुनौ हो सन्तो, कलिके ब्राह्मण खोटा ॥ ५ ॥

सन्तो पांड़े निपुण कसाई ॥
बकरा मारि भैंसाको धावै, दिलमें दर्द न आई १
करि असनान तिलककरि बैठे, बिधिसों देवि पुजाई ॥
आतमरामपलकमो बिनशै, रुधिर कि नदी बहाई २

हे सन्तो ! पांड़े निपुण कसाईहैं काहेते कि कसाई अबिधिते मारै है वह बिधिते मारै है याते निपुणहै बोकराको मारिके भैंसा के बलिदान दीबेको धावैहै १ स्नान करिकै रक्तचन्दनके बड़े बड़े तिलक दैकै बैठेहै और बिधिसों देवीको पूजावैहै अरु यह कहै है अन्तर्यामी सर्वत्र है और बोकरा भैंसाको मूड़काटि डारैहै रुधिर की नदी बहन लगैहै तब वह आतमराम जो है जीव कहे आत्मा जो है शरीर तेहि बिषे है आरामजाको सो बिनशि जायहै कहे शरीरते जुदा ह्वैजाय है जैसे दूध पानी बिनशि जाय है मुरदा ह्वैजाय है ॥ २ ॥

अति पुनीत ऊंचे कुल कहिये, सभा माहँ अधिकाई ॥
इनते दिक्षा सब कोउ मांगै, हँसि आवै मोहिं भाई ३

सो ऐसे ऐसे दुष्ट कसाइनको अतिपुनीत ऊंचे कुलके कहै हैं अरु सभामें उनहीं की अधिकाई है कहे शास्त्रार्थ करिकै सभामें आपनिन अधिकाई राखै है तेहिते सब कोई दीक्षा मांगै हैं कि हमको दीक्षा दै संसारते उबारिलेउ सो यह देखिकै मोको हँसि हँसि आवै है कि आपई नरक में जाइहै तो नरक ते कैसे उबारि है अर्थात् तोहूं को वही नरकमें डारि देइ है ॥ ३ ॥

पाप कटन को कथा सुनावै, कर्म करावै नीचा ॥
बूड़त दोउ परस्पर देखा, गहे हाथ यम घींचा ४

वोई गुरुवालोग पापकाटनको तो कथा सुनावै हैं रामायणादिक और वही कथा में वर्णन है कि रघुनाथजी शिकार खेलै हैं सो गुरुवालोग कहैहैं कि तुमहूं शिकार खेलो यह नहीं जानै हैं कि रघुनाथजी तिर्यग्योनिवालेन पर दया करी कि ई ज्ञानभक्ति बैराग्य कैसे करैंगे याते मारिकै मुक्ति करिदेइ हैं इनको मारैंगे तो पाप ते हम ई दोऊ नरकै जायँगे याहीते दोऊ गुरू चेलाको परस्पर नरकमें बूड़त देख्यो है तिनको नरक में डारिबेको यम घींचही धरै हैं नरकमें डारि देहिंगे तब नरकमें गुह मूत्र खाइगो

और मारो जाइगो और जो जीवनको मारिकै मांस खायो है तेई वाके मांसको खायँगे और अपने अपने सींगनते खुरनते मारैंगे याते मांस खायो है वै जीवतही मांस खायँगे इहांते जो जीवनको वह मार्‌यो तिनको क्षणइमात्रको क्लेश है और उहां वै जीव वाको बारबार मारैंगे मरणको क्लेश क्षणमें होइगो और यातना शरीर लाखनवर्ष न छूटैगो या कथा गरुड़पुराणादिक में प्रसिद्ध है ॥ ४ ॥

गाय बधै तेहि तुरुका कहिये, उनते वैका छोटा ॥
कहहि कबीर सुनोहो सन्तो, कलिके ब्राह्मण खोटा ५

जे गायको मारैहैं ते मुसल्मान कहावै हैं सो इनते वैकाछोटे हैं तुरुक गाय मारैहै अरु वै भेंड़ा भैंसा मारैहैं आत्मा तो सब एक हीहै सो कबीरजी कहैहैं कि हे सन्तो ! कलिके ब्राह्मण बहुत खोट हैं काहेते कि जे शास्त्रको नहीं समझैं तेतो मूढ़ही हैं वे खोटकर्म कराई चाहैं परन्तु जे शास्त्रको समझैहैं तिनहूंको समुझाइकै खोट कर्ममें लगाइदेइ हैं अपनी पाण्डित्यके बलते ब्राह्मण जो कह्यो ताको या अर्थ है सबको यही समुझावैहैको काको मारैहै सर्वत्र तो एकई ब्रह्म है और कोई या समुझावै है कि बलिदान दै देवीको प्रसन्नकरो तुमको ब्रह्मज्ञान दै ब्रह्म बनाइदेइँगे ॥ ५ ॥

इति ग्यारहवां शब्द समाप्तम् ॥ ११ ॥

अथ बारहवां शब्द ॥ १२ ॥

सन्तो मते मात जनरङ्गी । पीवत प्याला प्रेमसुधारस, मतवाले सतसङ्गी १ अर्द्धऊर्ध्वले भाठीरोपी, ब्रह्म अगिनि उदगारी । मूंदे मदनकर्म कटि कसमल, संततचुवै अगारी २ गोरखदत्त बशिष्ठ व्यासकबि, नारदशुकमुनिजोरी । सभाबैठिशम्भू सनकादिक तहँ फिरि अधरकटोरी ३ अम्बरीष औ याज्ञ जनकजड़, शेषसहस मुख पाना । कहँलोंगनों अनन्तकोटिलै, अमहल महल देवाना ४ ध्रुव प्रह्लाद विभीषणमाते, माती शिवकी नारी ।

सगुण ब्रह्ममाने वृन्दावन, अजहुँ न छूटि खुमारी ५ सुरनरमुनि जेते पीर औलिया, जिनरे पिया तिन जाना । कहैकबीर गूंगेको शक्कर, क्योंकर करै बखाना ॥ ६ ॥

सन्तो मतेमातजनरङ्गी ॥

पीवत प्याला प्रेमसुधारस, मतवाले सतसङ्गी १

सन्तो मते कहे सन्तन के जे मत हैं तिनमें रङ्गी ज जन हैं तेई मात कहे मतिरहेहैं 'रंगच्छतीति रङ्गःरङ्गोस्यास्तिगुरुत्वेनेतिरङ्गी' रकार बीजको जो कोई प्राप्त होइ है सो रङ्ग कहावै सो रकार बीज रामोपासकनके होइ है ते रामोपासक जाके गुरु होइ सो कहावै रङ्गी अथवा सुरति कमल बैठे जे परम गुरु हैं ते रकार बीजको उच्चार करै हैं सो रकार बीजको जो कोई वहां जाइकै सुने सो रङ्गी है सोई रङ्गी सन्तनके मतमें माते है और कबीरऊ रकारई बीज को जपत रहै हैं सो बंशावली में लिख्यो है श्रीराजा रामसिंह बाबाकबीरजीते पूछ्यो कि आपका कौन सिद्धान्त है तब कबीरजी कह्यो "राअक्षरघटरम्योकबीरा । निजघरमेरोसाधुशरीरा" सो पीछे लिखिआये हैं अरु सुधाको मादकधर्म है सो श्रीरामचन्द्र के प्रेमरूपी प्याला में भर्यो जो है सुधा रसरूपा भक्ति ताको जे पानकरै हैं तिनके सत्संगी जेहैं तेऊ मतवाले ह्वै जायहैं कहे परम सिद्धान्तवालो जो मतहै तेहिते युक्त ह्वैजाइ हैं अथवा रसरूपा भक्तिको नशा चढ़ोरहै दिनराति अर्थात् रसआनन्द को कहै हैं सो आनन्द में निमग्नरहैहैं तामें प्रमाण "रसोवैसःरसंह्येवायं लब्ध्वा नदी भवति" (इति श्रुतेः) उनकी कहाचली है इहां सुधारसको कह्यो ताको हेतु यह है कि जे सुधारसको पीते हैं तेई जनन मरण छोड़िकै अमर होयहैं औरेन को जनन मरण नहीं छूटै है अरु वह रसरूपा भक्ति माँवि उत्पत्ति भयो है ताको रूपक करिके समुझावै हैं ॥ १ ॥

अर्द्ध ऊर्ध्व लै भाठी रोपी, ब्रह्म अगिनि उदगारी ॥

मूंदे मदन कर्म कटि कश्मल, संतत चुवै अगारी २

उहां समेटिकै कहिआये हैं अब इहां रसरूपा भक्तिको मद को रूपक करिके कहै हैं अर्द्धकहे नीचेके लोक ऊर्ध्वकहे ऊंचेके लोक पर्यन्त जो सारासार को बिचार सार कहे चित् अचित्रूप साहब को या जगत् मानिबो और असार कहे नानात्व जगत् मानिबो या जो बिचार सोई भाठी रोपतभये और तेहिते भयो जो यथार्थज्ञान कि सब सच्चिदानन्दस्वरूप है काहेते चितौ अचित साहब को रूपहै यह हेतु ते सोई ब्रह्म अगिनि उदगारी कहे बारत भये महुवा नरमें धरै है इहां मदन जो मनोज तौनै जो है शरीर नर अर्थात् वीर्यते शरीर होइहै सो अन्तःकरण में मूंदे जे साहब की अनेक प्रकार की जो लीला तिनके जे ज्ञान ध्यान तेई महुवादिक द्रव्य हैं तिन्हैं जो कर्मन की बरोबरि मानिबो जो या भ्रम सोई जो कर्मरूप कश्मल ताको काटिडार्यो तब निश्चयात्मक बुद्धि जे पात्र तामें रसरूपा भक्तिरूप जो अगारी सो निरन्तर चुवनलागी ॥ २ ॥

गोरखदत्त बशिष्ठ व्यास कबि, नारद शुकमुनि जोरी ॥
सभा बैठि शम्भू सनकादिक, तहँ फिरि अधरकटोरी ३

गोरख, दत्तात्रेय, वशिष्ठ, व्यास, कवि कहे शुक्र, नारद, शुकमुनि कहे शुकाचार्य तेई सब जोरि जोरि इकट्ठाकरि धरत भये और सभाके बैठैया जेहैं शम्भू सनकादिक तहां रसरूपा भक्ति जो सुधारस तेहि करिके भरी जो है प्रेमरूपी कटोरी सो तिनके अधर हैं कहे मनकरिके न कोई धरिसकै न वचन करिके कोई धरि सकै है अर्थात् न मनमें आवै न वचन में आवै वाके पान करत में छकि सब जाय हैं रसवाच्य में नहीं आवै है यह सर्वत्र ग्रन्थन में प्रसिद्ध है ॥ ३ ॥

अम्बरीष औयाज्ञ जनक जड़, शेष सहसमुख पाना ॥
कहँलों गनों अनन्त कोटिलै, अमहल महल देवाना ४

अम्बरीष व याज्ञवल्क्य व जड़भरत व शेष कहे संकर्षण और सहसमुख कहे शेषनाग ते पान करतभये सो कहांलों मैं गनों परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र के जे अमहल महल अनन्त कोटि हैं ताहीमें लीनभये और देवाना होतभये कहे मत्त होत भये इहां अमहल महल जो कह्यो सोऊ जे अयोध्याजीके महल हैं अमहल हैं कहे महल नहीं हैं अर्थात् प्राकृत पञ्चभौतिक नहीं हैं अरु महल जो कह्यो ताते आनन्दरूप वे महल वर्तमान बने हैं अमहल कह्यो याते निर्गुणधर्म आयो और महल कह्यो याते स-गुणधर्म आयो सगुण निर्गुण में नहीं होयहै निर्गुण सगुण में नहीं होयहै उनमें दूनों धर्म बनेहैं ताते वे निर्गुण सगुणके परे विलक्षण महलमें हैं तिनमें जायके देवाने भये माया ब्रह्ममें जो देवाने रहे सो छोड़ि दिये अमहलमें देवाना हैबोई महलन में साहबकी अनेक प्रकारकी लीलनको ध्यानकैकै हंसरूप में स्थित ह्वैकै रस-रूपा भक्ति पानकैकै छकिरहे रसरूपा भक्ति शान्तशतक के तीसरे खण्ड में औ रामायणादिकमें हम लिखेन है सो देखिलेहु ॥ ४ ॥

ध्रुव प्रहलाद बिभीषण माते, माती शिवकी नारी ॥
सगुणब्रह्म माते वृन्दाबन, अजहुँ न छूटि खुभारी ५

और ध्रुव, प्रहलाद, विभीषण और पार्वती मतिगई और सगुण ब्रह्म जे साक्षात् नारायण श्रीकृष्ण हैं तेऊ वृन्दावन में मतिगये अबहूं भर खुभारी नहीं छूटी कि भाव यह है कि जिन के शरीर छूटे तेतो साकेतहीमें जाय देवानेभये कहे प्रेम में छके और जिनके शरीर बने हैं तिनहूंकी खुभारी नहीं छूटि कहे अबहूं भर श्रीरामचन्द्रही की उपासना करेहैं ताते प्रमाण "पूजितो नन्द-गोपाद्यैः श्रीकृष्णेनापि पूजितः । भद्रया महिषीभिश्च पूजितो रघुपुङ्गवः" यह वह ब्रह्मवैवर्त्त को प्रमाण है जौने को प्रमाण सब आचार्य दियो है ॥ ५ ॥

सुरनरमुनिजेतेपीरऔलिया, जिनरे पिया तिन जाना ॥

कहै कबीर गूंगे को शक्कर, क्योंकरि करे बखाना ६

और सुर नर मुनि जेते पीर औलियाहैं तिनमें जे श्रीरामचन्द्र की उपासना कियो है तेई रसभरी प्रेमकटोरी पियो है और तेई मन वचनके परे हैं जे साहबके नामरूप लीलाधाम तिनको जान्यो है सो जिन जान्यो है तिनको वर्णन करिबेको वह गूंगे को शक्कर है काहेते वह मन वचनके परे है जब वही भांति उहो ह्वै जाय तब वाको स्वाद पावै काहू सों वाको कोई बखान नहीं करि सकैहै सो कबीरजी कहैहैं कि जो कोई कहै यह अर्थ नहीं है वह प्रेमको पियाला कबीर जीव ब्रह्मको कहिआये हैं वहीको पीयीकै सब मतवार ह्वैगयेहैं सांच पदार्थ नहीं जान्यो तो हम यह कहै हैं जिनको कबीरजी आगे वर्णन करि आये हैं तेई नहीं जान्यो तो तुमहीं कैसे जान्यो जो कहो हम अपने गुरुवनके बताये जान्यो तो गुरुवनको कह्यो बाणीको कह्यो तो तुमहीं झूठ कहौहो जो कहो पारिख करिके जान्यो तो पारिखकिये तो मन वचनके परे और निर्गुण सगुण के परे जे शुद्धजीवात्मा सदा रघुनाथजी के निकटवर्ती ते और श्रीरामचन्द्र येई आवै हैं वेदशास्त्रमें प्रमाण मिलैहैं तुम पारिख कहिके मन वचनके परे कौन पदार्थ राख्यो है जो कहो हम जीवात्माको मानैहैं और कोई ब्रह्मको मानै हैं तो आत्मा और ब्रह्म येहू नामहै वचनमें आयगयो और तुम जो विचार करौहो सो मनमें आयगयो जो कहो तुमहीं कैसे श्रीरामचन्द्र को मन वचन के परे कहौहो वोऊ तो मन वचन में आयजाय हैं तो हम पूर्व लिखिआये हैं कि नारायण राम अवतार लेइ हैं तिनके नामरूप लीलाधाम के वर्णन करिके वे जे परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको सपरिकर लक्षितकरै हैं वे मन वचन के परे हैं और यहू आगे लिखि आये हैं कि "ऐसीभांति जो मोकहँ ध्यावै। छठयें मास दरश सो पावै" सो अपनी इन्द्रिय हैं आपे देखे परेहैं जो कोई उनके प्रसन्न करिबेको उपाय करै है सो साहिबै के जनाये जानै है तामें प्रमाण कबीरजी की साखी सागरकी

चौपाई "जानै सो जो महीं जनाऊं । बांह पकरि लोकै लै आऊं॥ बीजकों में लिखी है साखी बहुबन्धनते बांधिया एकबिचारा जीव । काबल छूटै आपनो जो न छुड़ावै पीव" उनको वर्णन कोई जीव नहीं करिसकै है तेहिते जो पारिख हम कियो सोई सांच है जो तुम पारिख करौहौ सो झूंठ है तुम श्रीकबीरजी को अर्थ जानते नहींहो भ्रम में लगेहो अनामा उनहीं को नाम है अरु वोई हैं तामें प्रमाण "अनामा सोप्रसिद्धत्वादरूपो भूतवर्जनात्" (इति वायुपुराणे) ॥ ६ ॥

इति बारहवां शब्द समाप्तम् ॥ १२ ॥

अथ तेरहवां शब्द ॥ १३ ॥

राम तेरी माया दुन्दि मचावै । गति मति वाकी समुझि परै नहिं, सुरनरमुनिहिं नचावै १ कासेमरकेशाखाबढ़ये, फूल अनूपम बानी । केतिकचात्रिकलागिरहे हैं, चाखतरुवाउड़ानी २ कहाखजूरबड़ाई तेरी, फलकोई नहिंपावै । ग्रीषमऋतु जब आयतुजानी, छायाकाम न आवै ३ अपनाचतुरऔरकोसिखवै, कामिनिकनक सयानी । कहै कबीर सुनो हो सन्तो, रामचरणरतिमानी ॥ ४ ॥

राम तेरी माया दुन्दि मचावै ॥
गति मति वाकी समुझिपरै नहिं, सुरनरमुनिहिं नचावै १

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हे जीवो ! राममें जो तिहारी माया जो कपट सो दुन्दि मचावैहै कैसी माया है कि जाकी गति मति नहीं समुझि परै सुर नर मुनि जे हैं तिनहूं को नचावै अर्थात् उनहूं को लागिहै सो साहब को न जानिबो रूप कारण जगत् को आदिमङ्गलमें कहि आये हैं ॥ १ ॥

का सेमर के शाखा बढ़ये, फूल अनूपम बानी ॥
केतिक चात्रिक लागिरहे हैं, चाखत रुवा उड़ानी २

सो हे जीवो ! तुम द्वन्द्वमाया को त्यागौ साहब को जानो

या संसाररूप सेमर को वृक्ष तामें नाना वासना नाना देवतनकी उपासनारूप शाखा बढ़ाये कहाहै जौने वृक्षमें अनुपम कहे साहब के जाननेवारे विशेषकर ज्ञानवारे जो नहीं कह्यो ऐसी गुरुवनकी बाणी सोई फूल है ताहीते भयो जो धोखाब्रह्म को ज्ञान सोई फल है तामें केनको चात्रिकरूप जीव लागिरहे हैं इहां चात्रिकै कह्यो और पक्षी न कह्यो सो चात्रिक पियासो रहैहै और इनहूं के मुक्तिकी चाह रहैहै पक्षी रस नहीं पावैहै इन मुक्ति नहीं पावैहै चाखत में रुवा उड़ैहै पक्षीके जीभमें लपटिजाय है जीभहुको रस सूखि जाय है इहां वा ज्ञानको जब अनुभव कियो तब गुरुवालोग बताये कि तुमहीं ब्रह्म हौ तुम्हारई जीवात्मा मालिक है सब को राम सबको खाय लेयहै रामको भजो रामतौ मायिक है सो जो कुछ उनकी श्रीरामचन्द्रमें वासना रही सोऊ छूटिगई यही गुरुवा है पक्षी वा रस नहीं पावै है तब खेद होइ है और या वही ज्ञानमें दृढ़ताकरिके उड़त उड़त नरकहीमें गिरैहै नरकमें दुःख पावैहै॥ २॥

कहा खजूर बड़ाई तेरी, फल कोई नहिं पावै॥
ग्रीषमऋतु जब आय तुलानी, छाया काम न आवै ३

अब धोखा ज्ञानवालेनको खजूरको दृष्टान्तदैके कहैहैं खजूर की बड़ाई लै कहा करै फल तो कोई पावते नहीं है ग्रीष्मऋतु में छाया काहू के काम नहीं आवैहै वाके तरेही रहैहै आतप तपते रहै है ऐसे हे गुरुवालोगो! तुम्हारी बड़ी बड़ाई कि मैंही ब्रह्म हौं मोते बड़ो कोई नहीं है आत्मै मालिक है सो न कोई ब्रह्मभयो न आत्मै मालिकभयो या फलो कोई नहीं पायो जो कोई तुम्हारे मत में आवै है सो जनन मरणरूप ग्रीष्म ताप नहीं छूटै है या तुम्हारो उपदेशरूप छाया काहू के काम नहीं आवैहै ॥ ३ ॥

अपना चतुर औरको सिखवै, कामिनि कनकसयानी॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, रामचरण रति मानी ४

गुरुवालोग कनककामिनी के मिलिबे को आप चतुर हैरहे हैं

कनक सुवर्ण कहावैहै सो आत्मा को सुवर्ण जो है स्वस्वरूप सो मायारूपी कामिनी में लपट्यो है तेहिते शुद्ध नहीं है अथवा कनक जो है सुवर्ण सो शुद्ध है और सुवर्णके जेहैं भेद कुण्डलादिक भूषण तिनके भेद मिथ्या हैं ऐसे और सबको मिथ्या मानिके एक ब्रह्महीको मानिबो और कामिनीमें सयानी कहे ज्ञानकरिके बिचारै है कि कामिनी माया हई नहीं है मिथ्या है यह सयानी कहे ज्ञान आपऊ सिखैहै व औरहूको सिखवैहै जनन मरण होतई जायहै माया नहीं छूटैहै सो कबीरजी कहैहैं कि हे सन्तो ! याही ते मैं ये बखेड़न को छोड़िके परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके चरणनमें रति मान्यो है इहां सन्तन को साखी दैके जो कह्यो ताको हेतु यह है कि सन्त समुझैंगे कि सांच कहै हैं कि झूठ कहैहैं अथवा हे जीवो ! मेरो सिखापन सुनो श्रीरामचन्द्रके चरणमें रति मानिके जैसे सब भयो है नानामत कियो है तैसे एकबार मेरो वचन सुनि रामचरण में रति मानिके सन्त होउ व्यङ्ग्य यह है कि जो सन्तहोउगे तो जनन मरणते रहित ह्वैजाउगे औरी भांति न छूटौगे अथवा अपना चतुर और को सिखवै कहे अपनो चतुर नहीं है माया ही में परेहैं और और को कनककामिनी में सयानी कहे विचार करावै है कि कनककामिनीरूप माया को विचार कै देख्यो या मिथ्या है सो जो आप चतुर नहीं भये कनककामिनी नहीं त्यागे तो उनके उपदेश में कनकामिनी माया कब त्यागैंगे ॥ ४ ॥

इति तेरहवां शब्द समाप्तम् ॥ १३ ॥

अथ चौदहवां शब्द ॥ १४ ॥

राम रा संशय गांठि न छूटै । ताते पकरि पकरि यम लूटै १
ह्वै मसकीन कुलीन कहावे तुम योगी संन्यासी । ज्ञानी गुणी शूर कबिदाता ईमति काहु न नासी २ अस्मृति वेद पुराण पढ़ै सब अनुभव भाव न दरशै । लोह हिरण्य होय धौं कैसे जो नाहिं

पारस परशै ३ जियत न तरै मुये का तरिहौ जियतै जो न तरै। गहि परतीति कीन जिन जासों सोई तहँ मरै ४ जो कछु कियो ज्ञान अज्ञाना सोई समुझि सयाना। कहैं कबीर तासों का कहिये देखत दृष्टि भुलाना ॥ ५ ॥

राम रा संशय गांठि न छूटै ॥
ताते पकरि पकरि यमलूटै १

ह्वै मसकीन कुलीन कहावै, तुम योगी संन्यासी ॥
ज्ञानी गुणी शूर कवि दाता, ई मति काहु न नासी २

राम रा कहे रकार जिनको मरा है अर्थात् रकार बीजको जिन को अभाव है रामोपासक नहीं हैं तिनकी संशयकी गांठि नहीं छूटै है तेहिते पकरि पकरिके यम लूटिलेइहैं अर्थात् याको मारि के नरकमें डारिदेइँहैं फिरि फिरि शरीर पावैहै फिरि लूटिजाय है मारो जायहै १ मसकीन कहे गरीब फ़कीर ह्वैके कुलीन कहावैहै कहे भये तो फ़कीर परन्तु कुलाभिमान नहीं छूटै है कहै हैं कि हम फलाने गद्दी के मुरीद हैं सो तुम योगी हौ संन्यासी हौ ज्ञानी हौ गुणी हौ शूर हौ कवि हौ दाता हौ इत्यादिक जो भेदकी मति हैं सो कोई न नाश कियो काहेते कि हे सन्तो ! ये परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रके अंश हैं सो यह कोई नहीं जानै है और यह जगत् चित् अचित् विग्रह करिके साहब को रूप है भेदकी बुद्धि लगाइ राख्यो है ॥ २ ॥

अस्मृति वेद पुराण पढ़ै सब, अनुभव भाव न दरशै ॥
लोह हिरण्य होय धौं कैसे, जो नहिं पारस परशै ३

स्मृत्ति, वेद, पुराण सबै पढ़ै हैं परन्तु परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं सबके तात्पर्य तिनको अनुभव काहूको नहीं दरशैहै जो पारसको स्पर्श न होय तो लोह हिरण्य कहे सोन कैसे होय न होय तैसे स्मृति वेद पुराणन को तात्पर्य श्रीरामचन्द्र हैं

तिनके चरण को जौलों न परशै तौलों मुक्ति नहीं होय है पार्षद-रूपता वाको प्राप्ति नहीं होय है ॥ ३ ॥

जियत न तरै मुये का तरिहौ, जियतै जो न तरै ॥
गहि परतीति कीन जिन जासों, सोई तहैं मरै ४
जो कछु कियो ज्ञान अज्ञाना, सोई समुझि सयाना ।
कहै कबीर तासों का कहिये, देखत दृष्टि भुलाना ५

सो जियत में जो न तुम तरोगे तो मुये कैसे तरोगे सो हे जीवो ! जियतै काहे नहीं तरि जाउहौ जासों कहे जौने साहबसों जाके स्पर्श किये जीव शुद्ध ह्वै जाय है तौने साहब सों जो कोई जहैं साहब को मत गहिके परतीति कहे विश्वास कीन है सो जानत है कहे संसारही में अमर ह्वै गयो है ४ सो कबीरजी कहै हैं कि ये जीव ज्ञान करै हैं कि अज्ञान करै हैं ताही को सब कुछ मानिकै आपने को सयान मानैहैं तिनसों कहा कहिये जो अपनी दृष्टिते देखत देखत भुलाय दियो स्मृति, वेद, पुराण चक्रवर्ती परमपुरुष श्रीरामचन्द्र ही को कहै हैं उनहीं के भक्त हनुमान् विभीषणादिक अमर भये हैं सो देखतैहौ और यह नहीं समुझौ हैं कि सबके मालिक बादशाह श्रीरामचन्द्र हैं इनहींके छोड़ाये छूटैंगे और के छोड़ाये न छूटैंगे ॥ ५ ॥

इति चौदहवां शब्द समाप्तम् ॥ १४ ॥

अथ पन्द्रहवां शब्द ॥ १५ ॥

रामराचली बिनावनमाहो । घर छोड़े जात जोलाहो १ गज नौगज दशगज उनइसकी, पुरिया एक तनाई । सात सूत नौ गाड़बहत्तरि, पाटलागु अधिकाई २ तापट तूलन गजन अमाई, पैसन सेर अढ़ाई । तामें घटै बढ़ै रतिओ नाहिं, करकच करघरहाई ३ नित उठि बैठ खसम सों बरबस, तापर लागतिहाई । भीनी पुरिया काम न आवै, जोलहा चलारिसाई ४ कहै कबीर

सुनोहो संतो, जिन्ह यह सृष्टि उपाई । छांड़ि पसार रामभजु बौरे, भवसागर कठिनाई ॥ ५ ॥

रामराचली बिनावन माहो । घर छोड़े जात जोलाहो १

रामराकहेरा जिनको मरा है अर्थात् रकार बीजको जिनके अभाव है साहब को नहीं जानें ऐसे जे समष्टिजीव तिनके इहां मा जो है कारणरूपा माया सो बिनावन को कहे बिनवावन को चली अर्थात् जगत् बनवाइबेको चली इहां बिनबो न कह्यो बिनवाइबो कह्यो सो बिना चैतन्यब्रह्म और जीवके लपेटे याको बनायो नहीं बनै है काहेते कि यह जड़ है अर्थात् ब्रह्मजीवको संयोग करिके बनवावनको चली ब्रह्मजीवके पास सों जोलाहा जो यह जीव है सो घरको छोड़देयहै अर्थात् यह शुद्ध जीव रमा आपनो जो घर है साहब के लोकको प्रकाश जहां शुद्ध रहै है तौने घरको छांड़िकै माया के लपेटमें परिके आपने बन्धनको आपने मनकरिके संसाररूपी पटको बनावै है ॥ १ ॥

गज नौ गज दश गज उनइसकी, पुरिया एक तनाई ॥ सात सूत नौ गाड़ बहत्तर, पाट लागु अधिकाई २

प्रथम एकगजकी कल्पनारूप पुरिया तनावत भई प्रथम जीव वाणी प्रणवरूप एकगजकी पुरिया अनुमान ब्रह्म बनायो अर्थात् मन भयो पुनि नौगज की पुरिया तनावत भई सो नवौ व्याकरण बनावत भई अर्थात् नवौ व्याकरण में शब्दब्रह्म को वर्णन है सो शब्द बनावत भई पुनि दशगज की पुरिया तनावतभई सो चार वेद औ छःशास्त्रई दशगज की पुरिया तनभयो पुनि उनइसगज की पुरिया तनावतभयो सो अठारहौं पुराण उनीसौं महाभारत ये उनइसगज की पुरिया बनावतभयो पुनि सातसूत कहे सप्तावरण पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश, अहंकार, महत्तत्त्व, अथवा सातसो सूत जाग्रत् महाजाग्रत् बीजजाग्रत् स्वप्नजाग्रत् स्वप्न और सुषुप्ति ये सात अज्ञान भूमिका बनावतभयो पुनि नव

गाड़ कहे नवद्वार बनावत भयो बहत्तर पाटकहे बहत्तर कोठा अथवा बहत्तरहज़ार नस बनावत भयो ॥ २ ॥

तापटतूल न गजन अमाई, पैसन सेर अढ़ाई ॥
तामें घटै बढ़ै रतिबो नहिं, करकच कर घरहाई ३

तापटकहे तौन जो है शरीर संसाररूपी पट तामें जब अहंब्रह्म भ्रमरूप तूलरह्यो तबतो गज़में नहीं अमात रह्यो कहे अप्रमेय रह्यो है और सेर कहे सिंहरूप रह्यो है संसारको नाशकैदेनवारो रह्यो है सो संसारी ह्वैके जैसे सूत पैसाको अढ़ाईसेर बिकाय है तैसे यहजीवात्मा विषयरूप पैसाको चाहिके अढ़ाईसेर ह्वै गयो एकै पृथ्वीको विषय सुख चाहै है एकै यज्ञादिक करिकै स्वर्गको विषय सुख चाहै हैं आधे मुमुक्षु ह्वैकै ईश्वरन के लोकको सुख चाहै हैं और ब्रह्ममें लीन ह्वैबो चाहै हैं इनमें पूरी विषय भोग नहीं है याते आधा कह्यो अहंब्रह्म तूलते नानाशरीर भ्रमरूप सूत निकस्यो एकते बहुत ह्वैगयो जो पट संसारमें बिनिगयो सो पट जो है संसार सो रत्तीभर न घटै है न बढ़ै है घरहाई जो है जीवैकी नारी माया सो यही जीवको कच आपने करमें करिलियो है अर्थात् यह जीवकी चूंदी गहिलियो है मायाको भोक्ता जीव है याते जीवहीकी स्त्री माया है ॥ ३ ॥

नितउठि बेठ खसमसों बरबस, तापर लागतिहाई ॥
भीनी पुरिया काम न आवै, जोलहा चला रिसाई ४

खसम जो जीव है तासों नित उठिउठिके बरबस कहे जबरदस्ती बेठकहे बेगारिलेयहै सो एकतो संसारमें माया तो बेगारि लेयहै दूसरो जो भागनते यह संसार उठो तो आत्मा को तिहाई लगी कहे त्रिकुटी में धोखाब्रह्म को ध्यान लगायो जौने में बिनि जाय है तौन पुरिया कहावै है सो जब भीजि जाय है तब नहीं काम आवै है ऐसे यह संसार पुरिया है नाना पदार्थ ते जो है राग तेहिकरिके जब शरीरभीज्यो तब यह संसारको असार जानि

के कहे संसार कुछ कामको न जानिके जोलाहा जो है जीव सो रिसायचह्यो धोखाब्रह्म में लगतभयो सोऊ ब्रह्म तो ताहीको अनुभव है वह अनुभव ब्रह्म में कछु न पावतभयो ॥ ४ ॥

कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जिन यह सृष्टि उपाई ॥
छांड़ि पसार राम भजु बौरे, भवसागर कठिनाई ५

सो कबीरजी कहैहैं कि जामें तुम लग्यो है सोतो तिहारोई मन को अनुभव है अरु यह संसारऊको तुम्हारो मनहीं रच्योहै सो जिन सृष्टिवाली उपाय कियोहै तेहि मायाब्रह्म ते छांड़ि पसार परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र को भजन करु काहेते कि यह भवसागर परमकठिन है उनहीं के भजनकिये छूटैगो औरीभांति न छूटैगो और तो सब याहीमें परे हैं अथवा यह कठिन भवसागर में आयके श्रीरामचन्द्रही को भजन करि मनते छूटैगो ॥४॥

इति पन्द्रहवां शब्द समाप्तम् ॥ १५ ॥

अथ सोरहवां शब्द ॥ १६ ॥

रामराझीझीजन्तरबाजै । करचरणविहूनाराजै १ करबिनबाजै श्रवण सुनै बिनु श्रवणै श्रोता सोई । पाटन स्वबशसभा बिनु अवसर बूझो मुनिजन लोई २ इन्द्रिय बिनु भोग स्वाद जिह्वा बिनु अक्षर पिण्डबिहूना । जागत चोर मँदिरतहँमूसै खसमअछत घरसूना ३ बिजबिन अँकुर पेड़ बिनु तरुवर बिनु फूले फल फलिया । बांझाकि कोखि पुत्र अवतरिया बिनुपग तरुवर चढ़िया ४ मसि बिनु द्वाइत कलम बिनु कागज बिनु अक्षर सुधि होई सुधि बिनु सहज ज्ञानबिनज्ञाता कहै कबीर जन सोई ॥ ५ ॥

पूर्वमायाको वर्णन करिआये तौनी मायाते छूटिकै जौने उपाय ते साहब को पावैहै सो उपाय कहै हैं ॥

रामराझीझीजन्तरबाजै ॥
करचरणविहूनाराजै १

हे जीव ! राम कहे रकार तोको मरा है अर्थात् रकार बीज को तोको अभाव है याहीते तैं अपने को ब्रह्म मानिके संसारी ह्वै गयोहै भीभी कहावै झिझिया जो कुवार शुक्लचतुर्दशी अनेक छिद्र कै जो मटुकी होय है ताके मध्य में दीप बारिके धरै है सो झिझिया नांवढेढिया को कबि संप्रदायहू में है "रन्ध्रजाल मग ह्वै कढ़ै, तियतन दीपति पुञ्ज । झिझिया के सो घट भयो, दिनहू में बनकुञ्ज" सारी मूलामलसी फलकान्ति झरोखनकी झँझरी झिझियासी सो झिझियारूप नव दुवार को अथवा रोम रोम में छिद्रहै जामें बोई छिद्रन ह्वै पसीना निकसैहै यहि प्रकारको भींभीं जो है शरीर तौने जन्तर बाजै है कहे ताहीको यह सोहंशब्द् हैं काहेते कि श्वासा कहै हैं सो वही श्वासके कहेते करचरण बिहून जो निराकार ब्रह्म है सो तेरे आगे राजै कहे शोभित होन लग्यो अथवा आंखिन के आगे नाचन लग्यो सर्वत्र ब्रह्महीं देखि परनलग्यो अथवा तैंहीं कर चरण बिहून कहे निराकार ब्रह्म ह्वैके नाचन लग्यो अथवा राजै कहे शोभित भयो सो तुम तो शरीरते भिन्न हो जैसे ढेढिया ते दीप भिन्न रहै है वह 'सोहं शब्द' तो शरीरको है वाको कहे तुम काहे धोखा में परेहौ तुम निर्गुण सगुणके परे जो है साहब ताके हौ तिनमें लगौ निर्गुण सगुणके परे कैसे साहब हैं सो कहै हैं ॥ १ ॥

कर बिन बाजे श्रवण सुनै, बिन श्रवणै श्रोता सोई ॥
पाटन स्ववश सभाबिनु अवसर, बूझौ मुनिजन लोई २

साहब के लोकके जे बाजा हैं ते बिन कर बाजै हैं काहेते कि वहां के जे बाजा हैं ते पञ्चभौतिक नहीं हैं और उहांके जे बासी हैं तिनके शरीर पञ्चभौतिक नहीं हैं अर्थात् मन वचन के परेहौ और प्राकृत जेहैं प्रकृतिसम्बन्धी पदार्थ साकार और अप्राकृत जो हैं निराकार ब्रह्मलोक प्रकाश ताहूते विलक्षण है कर बिन कह्यो याते साकारो नहीं है और बाजै है याते निराकारो नहीं है और

सोई श्रोता जे हैं लोकबासी ते श्रवणते सुनै हैं और श्रवण नहीं हैं याते साकारौ नहीं है और श्रवणते सुनै है याते निरकारौ नहीं है माया ब्रह्म जीव को जो अरुझा लाग्यो है सो जो जीव साहब को स्मरणकरे ताके पाटन कहे पटाइलीबे को साहब स्ववश हैं अथवा नौकर जाको राखैहैं ताको पट्टा लिखि देइहैं सो पाटा कहावै है सो इहां पाटन बहुबचन है सो जे जीव उनके शरण जाय हैं तिनको पाटनके लिखि दीवे में अपनायलीबे में स्ववशहैं तामें प्रमाण " सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते। अभय सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतम्मम" और बिना अवसर कहे बिना काल उनकी सभा लागी रहै है वहां कालकी गति नहीं है और बाजन सदा बाजैहैं अर्थात् सदा रास उहां होता रहैहै सो हे मननशील, मुनि लोगो! तुम उनहीं को समुझौ और उनहीं को मनन करो वह धोखा ब्रह्म के मनन कीन्हेते तुम्हारो जनन मरण न छूटेगो ॥ २ ॥

इन्द्रियबिनुभोगस्वादजिह्वाबिनु, अक्षय पिण्ड बिहूना॥
जागत चोर मँदिर तहँ मूसै, खसम अछत घरसूना ३

तुम वह साहब को कैसे समुझौ इन्द्रिय बिना ह्वैके साहब के लोक को जो है भोग सुख है ताको लेउ और बिना जिह्वा ह्वैके अनिर्बचनीय जो राम नामहै ताको स्वादलेउ और पिण्ड बिहूना कहे पांचों शरीरते बिहीन ह्वैके कहे पांचौ शरीरनको छोड़िके हंस स्वरूपमें स्थित ह्वैके अक्षय कहे अक्षय ह्वैजाउ तुम्हारे अन्तःकरणरूपी घरको चोर जोहै धोखाब्रह्म सो मूसे लेयहै अर्थात् साहब को ज्ञान चोराये लेयहै तुमहीं अहंब्रह्म बुद्धिकराये देयहै काहे ते कि खसम जेहैं साहब ते अछत बने हैं और तुम अपनो हृदय घर सून करि राख्यो है साहब को नहीं राख्यो अर्थात् साहब को नहीं जान्यो ॥ ३ ॥

बिजबिनु अंकुर पेड़बिनुतरुवर,बिनफूलै फल फलिया॥

बांझकिकोखिपुत्रअवतरिया, बिनपगतरुवरचढ़िया ४

इहां काकु अर्थ है बीज बिना कहूं अंकुर होय हैं और पेड़ विना कहे बिना जर कहूं तरुवर होइहैं और बिनाफूल कहूं फल होइहैं अरु बांझके कोखिमें कहूं पुत्र होइहैं व बिनापग कोई तरुवर में चढ़े है सो बीज तो वह ब्रह्मको कहोहौ सो तो शून्य है कोई पदार्थ नहीं है अंकुर कैसे भयो कहे कैसे माया शबलित ब्रह्म भयो और पेड़जरि मायाको कहौ सो तो मिथ्याहै संसार तरुवर कैसे भयो और ज्ञानरूप जो फूल है ताहू को तो मूलाज्ञान कहौहौ सोऊ मिथ्या है कहो तो मुक्तिरूपी फल कैसे फल्यो और मनको तो जड़ कहौहौ ताको अनुभव प्रबोधरूपी पुत्र कैसे भयो और आत्मा को तो अकर्ता कहौ हौ मन बुद्धि चित्तते भिन्नहै सो बिना पांव संसार वृक्षको चढ़िके कैसे चैतन्याकाश को पहुँच्यो ॥ ४ ॥

मसिबिनुद्वाइतकलमबिनुकागज, बिनु अक्षर सुधि होई॥
सुधि बिनु सहज ज्ञान बिनु ज्ञाता, कहै कबीर जन सोई ५

विना दुआइति मसि कैसे रहैगी अर्थात् मनको तो मिथ्या कहौहौ मनको अनुभवकैसे रहैगो वह मिथ्यई होइगो और विना कागजकलम कहाकरैगी अर्थात् देहेन्द्रियादि अन्तःकरण तो मिथ्यै कहौहौ ज्ञान केहिके आधार होइगो जहांबुद्धिरूपी क़लम ते लिखौगे निश्चय करौगे और जो यह पाठ होइ बिन अक्षर सुधि होय तो यह अर्थहै कि जो एकआरमाही को सत्य मानौगे तो साहब को विना अक्षरकहे विना अनादि माने सुधि कहे सुरति तुमको कैसे होयगी और कौन सुरति देयगो और सुधिबिन कहे जो सुधि न भई तो सहज कहे सोहं सो कैसे होयगो तेहिते विना ज्ञाताको ज्ञानकरुकहे अवैते अपने को ज्ञाता मानि रहे हैं कि मैं अपनो विचार करत करत और सबको निषेध करत करत जो पदार्थ रहि जायहै ताहीको मानिलेउँगो कि यही तत्त्व है सो यह भ्रम छांड़े तेरेजानेते साहब न जानि परैगे साहब मन वचन

के परे हैं सो जौन विना ज्ञाता को ज्ञानकौनहै जो साहब देय हैं काहेते कि वह ज्ञान काहूको नहीं जानोहै जब साहबआपनोरूप देयहैं तब वह रूपते जानिपरै साहबहीके रूपको जानो परै है वाको ज्ञाता कोई नहींहै सो ज्ञान करु अर्थात् रकारधुनि श्रवणरूप साधन करु तब साहबई तोको हंसस्वरूप दैकै आपने नामरूप लीलाधाम को स्फुरित करायदेयँगे तोने हंसस्वरूप की आंखीते श्रवणते साहब को देखु और साहबके गुण सुनु सो कबीरजी कहै हैं कि यहितरह ते जाके विना ज्ञाताको ज्ञान है सोई मेरो जनहै अर्थात् जौनेलोक में हमारी स्थिति है तौनेही लोकको वह जनहै विना ज्ञाताको ज्ञान कौन कहावैहै जो साहब देयहैं तामें प्रमाण "तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्। ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते (इति गीतायाम्)॥ ५॥

इति सोलहवां शब्द समाप्तम्॥ १६॥

अथ सत्रहवां शब्द॥ १७॥

राम गाइ औरेन समुझावै हरिजाने बिन बिकलफिरै १ जा मुख वेद्गायत्रीउचरै तासु बचन संसारतरै। जाके पांव जगत उठिलागै सो ब्राह्मण जिउबद्धकरै २ अपनाऊंचनीचकरै भोजन घीणकर्मकरिउदरभरै। ग्रहणअमावसढुकिढुकिमाँगै करदीपक लिये कूप परै ३ एकादशीव्रतौ नहिं जानै भूतप्रेतहठि हृदय धरै। तजि कपूर गांठी बिषबांधे ज्ञानगमाये मुगुध फिरै ४ छीजै शाहु चोरप्रतिपालै सन्तजनन की कूटकरै। कहैकबीरजिह्वाकेलम्पट यहिबिधि प्राणी नरक परै॥ ५॥

रामगाइ औरनसमुझावै, हरिजानेबिन बिकलफिरै १
जामुख वेद्गायत्री उचरै, तासु बचन संसार तरै॥
जाकेपाँवजगत उठिलागै, सो ब्राह्मण जिउ बद्धकरै २

श्रीरामचन्द्रको गावै हैं व औरेनको समुझावै हैं व सबके क-लेश हरनवारे जे साहबहैं तिनको नहीं जानै कि येई क्लेशहरि हैं

हरियेई हैं सो या नानादेवता नाना उपासना खोजत बिकल फिरैहैं १ अरु जाके मुखते वेदगायत्री जो वचन हैं सो उचरै हैं वही को तात्पर्यार्थ जे श्रीरामचन्द्र हैं तिन्हैं जानि संसार तरै हैं ताको अर्थ न जानिके कि वेदगायत्री तात्पर्यार्थ ते श्रीरामचन्द्रहीको कहैहैं तामें प्रमाण "सर्वे वेदाः सघोषाश्च सर्वे वर्णाः स्वरा अपि। स मात्रास्तु विसर्गाश्च सानुस्वाराः पदानि च॥ गुणसान्द्रे महाविष्णौ महातात्पर्यगौरवात्" (इति महाभारते) जे ब्रह्मादिक में विष्णु हैं ते विष्णु हैं और महाविष्णु श्रीरामचन्द्रही कहावै हैं तिनको तो नहीं जानै हैं वेदगायत्रीपढ़ै हैं और वहीमुखते हिंसा शिष्यनते प्रतिपादन करै हैं समुझावै हैं और आपही हिंसा करै हैं तिनहीं के पांय सब जगत् उठिलागै हैं अरु वाही को कहा सब सुनै हैं॥ २॥

अपना ऊंच नीच घर भोजन, घीणकर्म करि उदर भरै॥
ग्रहण अमावस ढुकिढुकिमाँगै, कर दीपक लिये कूपपरै३

आप तो जातिमें ऊंच हैं परन्तु नीचके घर भोजन करै हैं और जौन कर्म अपनेको उचित नहीं है तौन घिनहा कर्मकैकै पेटभरै हैं और ग्रहण में अमावस मे ढुकि ढुकि माँगै हैं कि यह कुदान आन न लैजाय हमें लेइँ और रामनाम मुँहते कहै हैं सो नामरूपी दीपक लीन्हें भ्रमकूप में परे हैं॥ ३॥

एकादशी ब्रतो नहिं जानै, भूत प्रेत हठि हृदय धरै॥
तजि कपूर गाँठी बिषबांधे, ज्ञान गमाये मुगुध फिरै ४

और एकादशीव्रत उपलक्षणमात्र है अर्थात् साढ़ अट्ठाइस जे व्रत हैं चौबीस एकादशी और रामनवमी, कृष्णाष्टमी, वामनद्वादशी, नरसिंहचतुर्दशी, आधाअनन्त ये जे वैष्णवांव्रत हैं तिनको नहीं जानै हैं अर्थात् वैष्णवी उपासना नहीं करै और मुँहते राम राम कहै हैं और भूत प्रेत याक्षिणी आदि जे उपासना हैं तिनको करै हैं तामें प्रमाण "अन्तःशाक्ता बहिश्शैवाः सभामध्ये

च वैष्णवाः । नानारूपधराः कौला विचरन्ति महीतले ” सो राम नाम जो कपूर है ताको छोड़िकै नाना पाखण्डमत जो विषय है ताको धारण कीन्हे ज्ञान गमाय के मूर्ख चारों ओर फिरै हैं ॥ ४ ॥

छीजै शाहु चोर प्रतिपालै, सन्तजनन की कूट करै ॥
कहै कबीर जिह्वाके लम्पट, यहि विधि प्राणी नरकपरै ५

तेहिते शाहु जो आत्मा परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को अंश सदाको दास या जीव को स्वरूप हैं सो जे हैं ते छीजै हैं अर्थात् वह ज्ञान वाको भूलि जाय है गुरुवन के बताये जे नाना पाखण्ड मत तेई चोर हैं तिनको प्रतिपाल कियो कहे संग कियो तेई ज्ञानको चोराय लेय हैं और जे साहब के ज्ञानके बतैया संत हैं तिनहींकी कूट करै हैं कि ये मुड़ियन को मत वेदशास्त्र के बहिरे हैं सो कबीरजी कहै हैं ऐसे जिह्वाके लम्पट प्राणी हैं ते नरकही में परै हैं ॥ ५ ॥

इति सत्रहवां शब्द समाप्तम् ॥ १७ ॥

अथ अठारहवां शब्द ॥ १८ ॥

रामगुण न्यारो न्यारो न्यारो । अबुझा लोग कहांलौं बूझैं, बूझनहार बिचारो १ केते रामचन्द्र तपसी सों, जिन यह जग बिटमाया । केते कान्ह भये मुरलीधर, तिनभी अन्त न पाया २ मत्स्य कच्छ बाराहस्वरूपी, बामन नाम धराया । केते बौद्ध भये निकलङ्की, तिनभी अन्त न पाया ३ केतिक सिद्ध साधक संन्यासी, जिन बनबास बसाया । केते मुनिजन गोरख कहिये, तिनभी अन्त न पाया ४ जाकी गति ब्रह्मै नाहिं पाई, शिवसनकादिक हारे । ताको गुण नर कैसे पैहौ, कहै कबीर पुकारे ॥ ५ ॥

रामगुण न्यारो न्यारो न्यारो ॥
अबुझा लोग कहांलौं बूझैं, बूझनहार बिचारो १

परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके गुण न्यारे न्यारे हैं इहां तीनवार जो कह्यो ताते या आयो कि साहब के गुण माया के गुणते जीवात्मा के गुणते ब्रह्मके गुणते न्यारे हैं कौनी रीतिसे न्यारे हैं कि मायाके गुण नाशवान् हैं विचार किये मिथ्या हैं और साहबके गुण नित्य हैं साँचहैं और जीवात्माके गुण अणु हैं और साहब के गुण विभु हैं और ब्रह्म निर्गुणत्व गुण ब्रह्ममें है और साहब निर्गुण सगुण के परे है सो या प्रमाण पीछे लिखि आये हैं " अपाणिपादो जवनो गृहीता " इत्यादि और ब्रह्मसम्बन्धी अनुभवानन्दजीव को होइ है और साहब अनुभवातीत हैं याते साहब के गुण सबते न्यारे हैं सो वा बात अबुझालोग कहांलौं बूझैं कोई बूझनहार तो विचारते जाउ ॥ १ ॥

केते रामचन्द्र तपसीसों, जिन यह जग बिटमाया ॥
केते कान्ह भये मुरलीधर, तिन भी अन्त न पाया २

केतन्यो रामचन्द्र हैं कौन रामचन्द्र जे तपस्वी ब्रह्म हैं तिनसों जगत् बिटमाया कहे बनायो है अर्थात् जे नारायण रामावतार लेइहैं सो ब्रह्माते कैसे जग बनवायो सो कथा पुराणन में प्रसिद्ध है कि कमल में ब्रह्मा भये तब आकाशवाणी भई " तप तप " तब तपस्या कियो तब नारायण प्रकट भये ते ब्रह्मा ते कह्यो कि जगत् बनावो तब बनावतभये नारायण जे रामावतार लेइ हैं तामें प्रमाण "यदा स्वपार्षदौ जातौ राक्षसप्रवरौ प्रिये। तदा नारायणः साक्षाद्रामरूपेण जायते॥ प्रतापी राघवसखा भ्राता वै सह रावणः। राघवेण तदा साक्षात्साकेतादवतीर्यते " ते नारायण अन्त न पायो ते नारायण रामचन्द्र क्षीरशायी श्वेतद्वीपनिवासी बहुत हैं जिनके गुण को अन्त कोई नहीं पावै हैं अरु जिनके गुण सबके गुणते न्यारे हैं ते श्रीरामचन्द्र एकई हैं और केते कान्ह मुरलीधर भये तिन भी अन्त नहीं पायो काहेते कि उनके अनन्त गुणहैं॥२॥

मत्स्य कच्छ बाराहस्वरूपी, बामन नाम धराया ॥

केते बौद्ध भये निकलङ्की, तिन भी अन्त न पाया ३
केतिक सिद्धसाधक संन्यासी, जिन बनबास बसाया ॥
केते मुनिजन गोरख कहिये, तिन भी अन्त न पाया ४

और केतन्यो मत्स्य, कच्छ, वाराह, वामन, बौद्ध, कलङ्की-रूप भये तिन भी अन्त नहीं पायो सोई अवतार जो कहिआये तिन में वामन नरसिंह आदिक अवतार आइगये तेऊ अन्त नहीं पायो है ३ और केतन्यो सिद्ध साधक संन्यासी भये जे वन में बास करतभये और केतन्यो मुनि गोरख इन्द्रिन के रखवार भये तेऊ ताको अन्त नहीं पायो ॥ ४ ॥

जाकी गति ब्रह्मै नहिं पाई, शिव सनकादिक हारे ॥
ताके गुण नर कैसे पैहौ. कहै कबीर पुकारे ५

और जाकी गति ब्रह्मा शिव सनकादिक नहीं पायो काहेते कि तिनके अनन्तगुण हैं सो हे नर ! तुम कैसे पावोगे ? जे गुरुवन के कहे कहौहौ कि मही राम हौं सो मिथ्या है वे राम के गुण न तुम्हारे गुरुवा पायो है न तुम पावोगे व्यङ्ग यह है कि ते वे पाखण्डी गुरुवनको संग छांड़िकै रामोपासकनको संगकरौ तब जैसी भजनक्रिया वे करै हैं सो करिकै निर्गुण सगुणके परे साहबके लोक जाउ तब तिहारो जनन मरण छूटैगो ये गुरुवालोग जौने में सिद्धान्त करि राखेहैं तेसब याही कैतीहै निर्गुण सगुणमें है और परम पुरुष पर साहबको लोक सब के पर है तामें प्रमाण कबीरजी को रेखता भूलनाछन्द पिङ्गल में कहेहैं ॥ " चला जब लोकको शोक सब त्यागिया हंसको रूप सतगुरु बनाई । भृङ्ग ज्यों कीटको पलटि भृङ्ग किया आप समरङ्ग दै लै उड़ाई ॥ छोड़ि नासूतमलकूत को पहुँचिया विष्णुकी ठाकुरी दीखजाई । इन्द्रकुब्बेरजहँ रम्भको नृत्य है देव तेंतीसकोटिक रहाई १ छोड़ि बैकुण्ठको हंसआगे चला शून्य में ज्योति जगमग जगाई । ज्योतिपरकाशमें निरखि निस्तत्त्वको आप निर्भयहुआ भयमिटाई ॥ अलख निर्गुण जेहि

वेद अस्तुति करै तीनहूँ देवको है पिताई। भगवान तिनके परे श्वेत मूरतिधरे भाग को आन तिनकोरहाई २ चारमुक्कामपरखण्डसो-रहकहैं अण्डको छोर ह्यांतेरहाई। अण्डकेपरे अस्थान आचिन्त को निरखिया हंस जब उहांजाई॥ सहस औ द्वादशै रूह हैं सङ्गमें करतकिल्लोल अनहद बजाई। तासुके बदनकी कौन महिमा कहौं भासती देह अति नूर छाई ३ महल कञ्चन बने माणिक तामें जड़े बैठ तहँ कलश आखण्ड छाजै। आचिन्तके परे अस्थान सोहंगका हंस छत्तीस तहँवाँ बिराजै॥ नूरका महल औ नूरका भुम्य है तहाँ आनन्द सो द्वन्दभाजै। करत किल्लोल बहुभांतिसे संग यक हंससोहंग के जो समाजै ४ हंस जब जात षट्चक्रको वेधिकै सातमुक्काममें नजर फेरा। सोहंगके परेसुरति इच्छा कही सहसबामन जहँ हंस हेरा॥ रूपकी राशिते रूप उनको बना नहीं उपमा हिन्दूजी निवेरा। सुरति से भेटिकै शब्दको टेकि चढ़ि देखि मुक्कामअंकूर केरा ५ शून्यके बीचमें बिमल बैठक जहां सहज अस्थान है गैवकेरा। नवो मुक्काम यह हंस जब पहुँचिया पलक बेलंब ह्वाँ कियो डेरा॥ तहाँसे डोरिमक्रतारज्यों लागिया ताहि चढ़ि हंसगो दै दरेरा। भये आनन्दसे फन्दसब छोड़िया पहुँचिया जहां सतलोक मेरा ६ हंसिनी हंस रूवगायबज्जायकै साजिके कलश वहिलेन आये। युगनयुग बीछुरे मिले तुम आइकै प्रेमकरि अङ्गसों अँगलगाये॥ पुरुषने दर्श जबदीन्हिया हंसको तपनिबहु जनमकी तब नशाये। पलटिकै रूप जब एकसेकीन्हिया मनहुँ तब भानु षोडश उगाये ७ पुहुपके दीप पीयूष भोजन करै शब्द की देह जब हंसपाई। पुहुप के सेहरा हंस औ हंसिनी सच्चिदानन्द शिर छत्र छाई॥ दिपैं बहुदामिनी दमक बहुभांतिकी जहां घन शब्द को घुमड़लाई। लगै जहँ बरसने गरज घन घेरि कै उठत तहँ शब्द धुनि अति सोहाई ८ सुनै सोइ हंस तहँ यूथके यूथ है एकही नूरयकरङ्गरागै। करत बीहार मनभामिनी मुक्तिभै कर्म औ भर्म सबदूरिभागै॥ रङ्क औ भूप कोइपराखि आवै नहीं करत

किल्लोल बहुभांतिपागे। काम औ क्रोध मद लोभ अभिमान सब छाँड़ि पाखण्ड सतशब्दलागे ६ पुरुष के बदनकी कौन महिमा कहौं जगत् में उभय कछु नाहिंपाई। चन्द्र औ सूरगण ज्योति लागैनहीं एकहीनखपरकाशभाई। पानपरवानजिनवंश का पाइया पहुँचिया पुरुष के लोकजाई। कहैं कब्बीर यहि भाँति सोपाइहौं सत्यकी राह सो प्रकट गाई १०" और वह लोकको वर्णन वेदसारार्थ जो सदाशिवसंहिताहै ताहूमेंहै (श्रीसौमित्रिरुवाच) "महर्लोकःक्षितेरूर्ध्वमेककोटिप्रमाणतः। कोटिद्वयेन विख्यातजनलोकं व्यवस्थितः १ चतुष्कोटि प्रमाणं तु तपोलोको विराजितः। उपरिष्टात्ततः सत्यमष्टकोटिप्रमाणतः२ आयुःप्रव्याप्तकौमारं कोटिषोडशसंभवम्। तदूर्ध्वोपरिसंख्यातमुमालोकं सुनिष्ठितम् ३ शिवलोकं तदूर्ध्वं तु प्रकृत्या च समागतम्। विश्वस्य पुरतो वृत्तिः शिवस्य पुरतो बहिः ४ एतस्माद्बहिरावृत्तिः सत्तावरणसंज्ञका। तदूर्ध्वं सर्वतत्त्वानां कार्यकारणमानिनाम् ५ निलयं परमं दिव्यं महावैष्णवसंज्ञकम्। शुद्धस्फटिकसंकाशं नित्यस्वच्छमहोदयम् ६ निरामयं निराधारं निरम्बुधिसमाकुलम्। भासमानं स्ववपुषा वयस्यैश्च विजृम्भितम् ७ मणिस्तम्भसहस्रैस्तु निर्मितं भवनोत्तमम्। वज्रवैदूर्यमाणिक्यग्रथितं रत्नदीपकम् ८ हेमप्रासादमावृत्य तरवः कामजानयः। रत्नकुण्डैरसंख्यातपुरुषैर्मलयवासिभिः ९ शरीरैः परमाह्लादैः संगीतध्वनिमोदितैः। स्तुतं च सेवितं रम्यरत्नतोरणमण्डितम् १० कारुण्यरूपं तद्द्वारं गङ्गा यस्माद्विनिःसृता। अनन्तयोजनोच्छ्रायमनन्तयोजनायतम् ११ यत्र शेते महाविष्णुर्भगवाञ्जगदीश्वरः। सहस्रमूर्द्धा विश्वात्मा सहस्राक्षःसहस्रपात् १२ यन्निमेषाज्जगत्सर्वं लयीभूतं व्यवस्थितम्। इन्द्रकोटिसहस्राणां ब्रह्मणां च सहस्रशः १३ उद्भवन्ति विनश्यन्ति कालज्ञानविडम्बनैः। यदंशेन समुद्भूता ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः १४ कार्यकारणसंपन्ना गुणत्रयविभावकाः। यत्र आवर्तते विश्वं यत्रैव च प्रलीयते १५ तद्वेदा परमं धाममदीयं पूर्वसूचितम्।

एतद्गुह्यसमाख्यानं ददातु वाञ्छितं हि नः १६ तदूर्ध्वन्तु परं दिव्यं सत्यमन्यद्व्यवस्थितम् । न्यासिनां योगिनां स्थानं भगवद्भावितात्मनाम् १७ महाशम्भुर्मोदतेऽत्र सर्वशक्तिसमन्वितः । तदूर्ध्वं तु स्वयंभातं गोलोकं प्रकृतेः परम् १८" अरु सहस्रशीर्षा पुरुष जो लिख्यो है तहँ शुद्धजीव समिटे रहे हैं वे समष्टि हैं ताके रोमरोम में अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड हैं तहँते अनेक ब्रह्माण्ड उत्पत्ति होइ हैं और तहँ महाप्रलय में लीन होइ हैं और दूसरे सत्यलोक में जो महाशम्भुको वर्णनकियो सो परमगुरु को रूप है तामें प्रमाण "वन्देशम्भुजगद्गुरुम्" और गुरुसों व साहबसों अभेद तामें प्रमाणहै ॥ "आचार्यं मां विजानियान्नावमन्येत कर्हिचित्" (इति भागवते) और महाशम्भु सों व महाविष्णुसों अभेदहै तामें प्रमाण "शिवस्य श्रीविष्णोर्यइह गुणनामादि सकलं धिया भिन्नं पश्येत् स खलु हरिनामाहितकरः" (इतिस्कन्दपुराणे) और नारायण जे वर्णन करिआये तेऊ श्रीरामचन्द्रई के रूप हैं तामें प्रमाण (सदाशिवसंहितायाम्) "वासुदेवो घनीभूतं तनतेजा महाशिवः" और गोलोक में श्रीकृष्णरूपते रघुनाथजी विहारकरै हैं और गोलोकके मध्य साकेतमें रामरूप ते रघुनाथजी विहारकरै हैं तामें प्रमाण सदाशिवसंहिता के विस्तारते वर्णन करि आये कि पश्चिमद्वार वृन्दावन है, उत्तरद्वार जनकपुर है, पूर्वद्वार आनन्दवन है, दक्षिण द्वार चित्रकूट है ताके आगे यह लोक है तेहिते इहां प्रयोजन मात्र लिख्यो है "तेषां मध्ये पुरं दिव्यं साकेतमितिसंज्ञकम् इति" और साकेत के ऊपर कछु नहीं है और साकेत, अयोध्या और सत्यासत्य लोक इत्यादिकनाम सब उस लोकके पर्याय हैं तामें प्रमाण "साकेतान्न परं किंचित्तदेवाहि परात्परम्" और गोलोक जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तेई श्रीरामचन्द्रईके महत् "सीतारामात्मकं युग्मं प्राविशन्नातिपूर्वकम् १" श्रीजानकीजी ने श्रीरघुनाथजी सों कह्यो कि वृन्दावनमें विहार करिये तब रघुनाथजी ने कह्यो जब तुमकह्यो तैं एक दूसरा विहारस्थल बनाइये तब हम वृन्दावन

बनायो राधिका तुम भई कृष्ण हम भये सो विहार करते भये सो हमारई तुम्हाररूप राधाकृष्ण है या कहिकै आकर्षण करिकै वृन्दावन बोलाइलियो राधाकृष्ण आइगये तबराधिकाजी जानकी-जी मैं लीनभई श्रीकृष्णचन्द्र रामचन्द्र में लीनभये अरु पुनि विहारकियो जब विहार करिचुके तब जानकी रघुनाथ ते निकसि-कै वृन्दावन समेत राधाकृष्ण चलेगये गोलोकको सो यह कथा शुकसंहिता में है ताको एकश्लोकलिख्यो है और विस्तार से देखिलीजियो तेई श्रीकृष्णके नखको प्रकाश ब्रह्महै वही प्रकाश को मुसल्मान लामकान कहै हैं और जे दशमुकाम रेखता में कहिआये और दशवोई मुकाम सदाशिवसंहितामें वर्णनकरिआये तिनमें पांच मुकाम मुसल्माननके कहे हैं और पांच मुकाम छोड़िदेइहैं तिनको उनहींमें गतार्थ मानिलेइहैं मुसल्माननमें वोई पांचमुकामके दुइनाम हैं नासूतको आलम अजसाम कहै शरीर-धारी याते यह लोकके सब आइगये और मलकूत को आलम मिसाल फिरिस्तनकै दुनिया देवलोक और जबरूतको आलम अर्थात् कहै पृथ्वी, अप, तेज, वायु, तत्त्वरूप है और लाहूतको आलम कर्व कहै नूर अर्थात् श्रीकृष्णको मुख्यप्रकाश जो है ब्रह्म वहीको कही लोकप्रकाश लिख्यो है और हाहूतको मुकाम मह-म्मदी कहै जहांभर महम्मद पहुँचेहै श्रीकृष्णके लोक अब इनके मन्त्रऊ लिखे हैं "जिकिरनासूतलाईलाहइलाहू जिकिरमलकूत-इल्लिलाहू जिकिरजबरूतअल्लाह अल्लाह जिकिरलाहूत अल्लाहजि-किरहाहूतहूंहू" सो इनको राति दिन पांचहजार बारकरै जब पांचहजार होय तब ध्यानकरै और ध्यान में गड़ै और आपको भूलै फिरि जहानको भूलै पुनि जिकिरकहे मन्त्रको भूलै तब कसते मजकूरको पहुँचै अर्थात् अल्लाही जे श्रीकृष्णचन्द्र हंसस्व-रूपदेइँ तामें स्थित ह्वैकै जिनको प्रकाश निराकार जोहैं ऐसे जे श्रीकृष्ण हैं तिनके पास होत उनके बताये मन वचनके परे जे खुद खामिन्द सब के बादशाह जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनके पास

जाता है सो यह मत महम्मद जे साहब के बन्देहैं तिनको साहब भेजा तब जे साहब के पास पहुँचनवारेरहे तिनको महम्मद भेद बताइदियो सो विरले कोई कोई यह भेद जानैहैं ते साहब के पास पहुँचेहैं अब याको क्रम बतावै हैं जौनीभांति साहब के पास पहुँचे तामें प्रमाण पीरानपीरसाहब के पासपहुँचे ऐसे जेहैं सलोलके मालिक पनाहअता तिनको कवित्त "देहनसूतसुरैमलकूतऔ जीवजबूतकीरूहबखानै । अर्बामेंनिराकारकहैजेहिलाहुतैमानिकै मंजिलठानै॥आगेहाहूतलाहूतहैजादुतिखुदखामिन्दजाहूतमेंजानै। सोईश्रीरामपनाहसबैजगनाहपनाहअतायहगानै १" (दोहा) "तजैकर्मणासूलहि निरखैतबमलकूत । पुनिजबरूतौछोड़िकै दृष्टि परै लाहूत २ इन चारोंतजिआगेहीपनाहआताहाहूत । तहां न मरै न बीछुरै जात न तहँयमदूत३" और जुलजलालअव्वल एक राम मुसल्मानोंके कहै हैं किताबन में प्रसिद्धहै साहब बुजुर्गीका साहब बख्शीश का अर्थात् वह सबते बुजुर्गी कहे बड़ा है उससे बड़ा कोई नहीं है और वही गुनाहका बकसनेवालाहै और के छोड़ाये न छूटैगो जब श्रीरामचन्द्र जीवको छोड़ावेंगे तबहीं छूटैगो और खोदाके सौ नाम हैं निन्नानबे सगुणनाम हैं और मुक्तिको देनवारो निर्गुण अल्लाह नामहीहै वहीहै वही खुदखामिन्दका नामहै तौनै बात वेदशास्त्र में सिद्धान्त कियोहै कोई कोई जे साहब के पहुँचेहैं ते वे ग्रन्थजानै हैं सो लिख्योहै कि और देवतनके नामते अधिक और सब नाम भगवान्केहैं और भगवान्के सब नामते अधिक रामनाम है सो महादेवजी पार्वतीजी ते कह्यो है "सहस्रनामतत्तुल्यं रामनामवरानने । सप्तकोटिमहामन्त्राश्चित्त-विभ्रमकारकाः ॥ एकएव परो मन्त्रोरामइत्यक्षरद्वयम् । विष्णो-रेकैकनामापि सर्ववेदाधिकं मतम् ॥ तादृग्नामसहस्रेण रामनाम-समं स्मृतम्" (इति पाद्मे) और गोसाईंजीनेहू लिख्यो है "राम सकल नामनते अधिका" सो यही रामनाम ते अल्लाह नाम निकस्यो रामनाम के मकार को रकार भये आगे का पीछे

आया तब अर भया सो अर राके पीछे आया तब 'अरराम' भयो रलके अभेदसे 'अल्ला' भयो व्याकरण वर्णविकार, वर्ण नाश, वर्णविपर्यय पृषोदरादिपाठ से सिद्धशब्द को साधनके वास्ते प्रसिद्ध है और जो सदाशिवसंहिता में दश मुक्काम लिखि आयेहैं और पहिले रेखतामें लिखिआयेहैं सो कबीरजी पुनि खुद खामिन्दको दूसरे रेखतामें वही बात लिख्योहै "जुलमतनासूत मलकूतमें फिरिस्ते नूरजल्लाल जबरूतमेजी । लाहूतमें नूरजम्माल पहिंचानिये हक्क मक्कानहाहूतमेजी ॥ बका बाहूत साहूत मुर्सिद वारहै जो रव्यराहूमेजी । कहत कब्बीर अबिगति आहूत में खद खामिन्द जाहूतमेजी १ " सो वे जे परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनके गुण सबते न्यारे हैं और उनका धाम सबते परे है वाको कोई अन्त नहीं पायो सो तिनके गुण हे जीवो ! तुम कैसे पावोगे ॥ ५ ॥

इति अठारहवां शब्द समाप्तम् ॥ १८ ॥

अथ उन्नीसवां शब्द ॥ १९ ॥

एतत रामजपोहो प्राणी, तुम बूझोअकथकहानी । जाको भाव होत हरि ऊपर, जागत रैनि बिहानी १ डाइनि डारे सो नहाडोरे, सिंहरहे बन घेरे । पांच कुटुँबमिलि जूझनलागे, बाजन बाजघनेरे २ रोहु मृगा संशय बन हाँके, पारथ बाना मेलै । सायर जरै सकल बनडाहै, मक्षअहेरा खेलै ३ कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जो यह पद निरधारै । जो यहिपदको गाइ बिचारै, आप तरै अरु तारै ॥ ४ ॥

एतत राम जपोहो प्राणी, तुम बूझौ अकथ कहानी ॥
जाको भावहोत हरि ऊपर, जागत रैनि बिहानी १

एतत कहे ई जे निर्गुण सगुण के परे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनको जपो कैसे जपो कि अकथ कहानी कहे मन बचनके परे

जो है रामनाम सो बूझ अर्थात् रामनाममें साहबमुख अर्थबूझि के जपो श्रीरघुनाथजीके ऊपर जाको भाव होयहै ताको यह संसाररूपी जो है निशा बिहानई ह्वै जायहै सोवतते जागिउठैहै ताते यह ध्वनित होयहै जाको रघुनाथजीके ऊपर भाव नहीं है ताको यह संसाररूपी निशा बनी रहैहै बिहान नहीं होयहै जागै नहीं है कहे ज्ञान नहीं होयहै भ्रमरूपी निशामें सोवतैरहैहै यहि संसारमें जीव कैसे घेरे रहतेहैं सो कहै हैं ॥ १ ॥

डाइनि डारे सोनहा डोरे, सिंह रहे बन घेरे ॥
पांच कुटुँब मिलि जूझनलागे, बाजन बाज घनेरे २

डाइनि जेहैं गुरुवालोग छालाके डारनेवाली जे वाके कानमें अपनी विद्या डारिदियो इहां गुरुवालोग डाइनिहैं जे सिंहको मन्त्र ते बांधि देय हैं वा वन त्यागि और वन नहीं जायहैं औ सोनहा जो है सोहंहंसमन्त्रतोने मो डोरा बांध्यो अर्थात् यह कह्यो कि तहीं ब्रह्म है और कहां खोजै है तैं वा है वा तैं है यह मन्त्रको अर्थ बतायो सो सिंह जो है जीव या सामर्थ्य है सो उनहीं बाणीरूप वन में घेरिरह्यो कहे बँधिरह्यो तब पांचौ जे ज्ञानेन्द्रिय हैं पांचौ जे कर्मेन्द्रिय हैं अथवा पांचौ जे प्राण हैं प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान तेई कुटुम्बहैं तिनमें मिलिकै जूझैलाग पांच कुटुम्ब सिंहके पञ्चआनन जब सिंहको मारन जाय है तब झुनका बाजा बजावै है तैसे यहां गुरुवालोग अनहद सुननकी युक्ति बतावनलगे सो दशौ अनहदकी धुनि सुननलग्यो तेई बाजा हैं ॥ २ ॥

रोहुमृगा संशय बन हांकै, पारथ बाना मेलै ॥
सायर जरै सकल बन डाहै, मच्छ अहेरा खेलै ३

रोहु कौन कहावै कि जो कमरी में आगी बारत जाय है झुनका बजावत जाय है तामें मृगा मोहि जाय हैं सो वाही की छाया में पीछे धनुष बाणकी बांस की बंदूकादि आयुधलिये खड़ो रहै है शिकारी सोई मारै है यही रोहु है सो मृगराज जो है जीव

ताको गुरुवालोग जब योगाभ्यास कैकै धोखाब्रह्म को प्रकाश बतायो तामें रहिगयो कहे मोहिगयो जो कहौ हाँकि कौन लायो तो संशयरूप हँकवैया है जैसे आगी बरत देखिकै वा बाजा सुनिकै टेममें मोहिकै मृग मृगराज जाय है या कैसो बाजा बाजै है या कैसी टेम है या संशय जो है ज्ञान मिलन की चाह सो याको हाँकिलै आयो ऐसे गुरुवालोगनकी जो बताई वाणी वन है जौन अनहद सुनिबेकी युक्ति बतायो तौन अनहदकी धुनि सुनिकै और जौन ज्योति बतायो सोऊ योगाभ्यास करिकै ज्योतिरूप ब्रह्म देखिकै जीव या संशय कैकै निकट जाय है और या बिचारै है कि या ज्योतिरूप ब्रह्म महीं हौं कि मोते भिन्न है तब शिकारी जैसे ढुको रहै है ऐसो मूलाज्ञानरूप शिकारी अहंब्रह्मास्मि वृत्तिरूप बाण मारि वा जीवको अनुभव करायदेयँ कि महीं ब्रह्म हौं वाके जीवत्वको नाश कै देयहै यही मारिबो है और जैसे बाण लागे मृगराज को अन्तःकरण जर उठै है अधिक कोपै है वनमें जोई आगे वृक्ष परै है तौने पर चोट करैहै जो मारनवाले को देखै है तो वाहूको धारिखाय है ऐसे जब आपने को ब्रह्म मान्यो तब सायर जो संसार है सो जरै है अर्थात् संसार याको मिथ्या जानि परै है और बन डाहै है कहे वा दशा में बाणीरूप बन सोऊ भूलि जाय है ऐसे बधिक मास्यो बधिक को बाघ मास्यो बधिकको जब मारिकै दोऊ गलिकै नदी में मिल्यो तब मछरी खायो अथवा मरिकै दोऊ बहैरहे कीड़ापरे जब बाढ़को जल आयो तब मछरी खायो ऐसे ब्रह्महुमें लीन है अठई अवस्था को प्राप्त भये तब न जीवत्व रह्यो न मूलाज्ञान रह्यो ऐसेहू भये तथापि साहब को विना जाने मच्छ जो काल है सो खायलेइ है फिरि संसार में परैहै तामें प्रमाण "येऽन्येऽरविन्दाक्ष विमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः। आरुह्य कृच्छ्रेण परंपदं ततः पतन्त्यधो नादृतयुष्मदङ्घ्रयः" (इति भागवते) कबीरजी को प्रमाण "कोटिकरमकटपलमें, जो राचै यकनाम

अनेक जन्म जो पुण्यकरै, नहीं नाम बिनु धाम " ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो हो सन्तो, जो यह पद निरधारै ॥
जो यहि पदको गाइ बिचारै, आपु तरै अरु तारै ४

सो कबीरजी कहैहैं कि हे सन्तो! जो यह पदको निरधारै कहे सारासार बिचार करै और जौन ब्रह्मपद कहिआये तौने को गाइ बिचारै कहे माया विचारै सो आपु तरिहि और आनहू को तारै है अर्थात् साहब को वा जानै व औरहू को जनाइदेइ ॥ ४ ॥

इति उन्नीसवां शब्द समाप्तम् ॥ १९ ॥

अथ बीसवां शब्द ॥ २० ॥

कोई रामरसिक रसपियहुगे। पियहुगेसुखजियहुगे १ फल अमृतै बीजनहिंबोकला, शुकपक्षीरसखाई। चुवै न बुन्दअङ्गनहिं भीजै, दासभँवरसँगलाई २ निगमरसाल चारिफललागे, तामेंतीनि समाई। एक है दूरिचहै सब कोई, यतन यतन कोई पाई ३ गयउ बसन्तग्रीष्म ऋतुआई, बहुरि न तरुवर आवै। कहै कबीर स्वामी सुखसागर, राममगन ह्वै पावै ॥ ४ ॥

कोइ रामरसिक रस पियहुगे। पियहुगे सुख जियहुगे १
फल अमृतै बीज नहिं बोकला, शुक पक्षी रस खाई ॥
चुवै न बुन्द अङ्ग नहिं भीजै, दासभँवर सँग लाई २

हे जीवो! कोई तुम रामरसिकनते रामरस पिऔगे अथवा रामरसिक ह्वैकै रामरस पिऔगे जो रामरसिकनते रामरस पिऔगे तबहीं सुखते जिऔगे कहे जन्ममरणते छूटोगे अरु आनन्दरूप होउगे १ वह रामरस कैसोहै अमृतको फलहै कहे वाके खाये ते जन्म मरण नहीं होइ है और तौनेफल में बीज बोकला नहीं है अर्थात् सगुण निर्गुणरूप बीज बोकला नहीं है और न मीठो फल होइ है ताही फल में सुवा चोंच चलावै है यह लोकमें प्रसिद्ध है यहां शुकाचार्य रामरस को मुक्त ह्वै आस्वादन कियो

है ताते यह व्यञ्जित भयो कि रामरसते ब्रह्मानन्द कमहो है अर्थात् श्रीमद्भागवत में है " वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् " ऐसो कहि शुकाचार्य परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रही के चरणनको बन्दनाकियोहै और श्रीरघुनन्दनही के शरणगये हैं यह वर्णन श्रीमद्भागवतहीमें है "तन्नाकपालवसुपालकिरीटजुष्टं पादाम्बुजं रघुपतेः शरणं प्रपद्ये" (इति भागवते) और श्रीरामचन्द्रहीको परतत्त्व तात्पर्यते वर्णन कियो है सो कोई विरला सन्तजन याको अर्थ जानै है और जो यह पाठहोइ "फल अंकुतै बीज नहिं बोकला" तो यह अर्थ है कि फलकी अंकृति कहे आकृति तो है परन्तु बीजबोकला जे निर्गुण सगुणहैं ते इनमें नहीं आवै हैं इनते भिन्न है सो रामरसरूपी फल है तो रसरूपई है परन्तु वाको रस बुन्दहू नहीं चुवैहै अर्थात् अन्त कबहूं नहीं होइ है अनादि अनन्त है और काहूके पांचौ शरीर के अङ्ग नहीं भीजै हैं अर्थात् कोई पांच शरीर ते भिन्न नहीं होइ है जब पार्षदरूप रामोपासक तेई भँवर हैं ते वाके संग लगे रहैहैं अर्थात् रामरसपान करतई रहैं हैं ॥ २ ॥

निगमरसाल चारि फल लागे, तामें तीनि समाई ॥
यक है दूरि चहै सब कोई, यतन यतन कोइ पाई ३

सो कबीरजी कहै हैं कि निगम जो है रसालकहे आमको वृक्ष तामें चारिफल लागे हैं अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष तिनमें तीनिफल तहैं समात हैं कहे नष्ट ह्वैजाइहैं अर्थात् तीनिऊ अनित्यहैं और एक जो है मोक्ष सोतो बहुत दूरि है यत्नही यत्न करत कोई बिरला पावै है अर्थात् निगमतो रसाल है रसमय है तात्पर्यवृत्ति करिके साहबई को बतावै है सो वह तो कोई जानै नहीं है यह कहैहै कि चारिफल लागे हैं ॥ ३ ॥

गयउ बसन्त ग्रीष्मऋतु आई, बहुरि न तरुवर आवै ॥
कहै कबीर स्वामी सुखसागर, राम मगन ह्वैपावै ४

अरु जो कोई निगमरूपी वृक्षको मोक्षरूपी फलपायो है वाको

पायो है ताको बसन्तऋतु जाइरहै है ग्रीष्मऋतु ह्वैजाइ है कहे आत्माको स्वस्वरूप भूलिगयो सुखको आस्वादन न रहिगयो कहनलग्यो कि मैंहीं ब्रह्म हौं ग्रीष्मऋतुमें प्रकाश बढ़ै है सो यही प्रकाशमें समाइगयो सो फेरि जोचाहै कि रामोपासनारूप ब्रह्मकी भक्तिरूप छाया मिलै तौ नहीं मिलै श्रीकबीरजी कहै हैं कि सुख-सागर स्वामी जे परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनके रामनाम रस में जब मग्न होय है तबहीं पावैहै जीवको स्वरूप " आत्मदास्यंहरेस्स्वाम्यंस्वभावं च सदास्मर " और शुकाचार्य या फल को चाखिन है तामें प्रमाण " निगमकल्पतरोर्गलितं फलं शुकमुखादमृतद्रवसंयुतम् । पिबत भागवतं रसमालयं मुहरहोरसिका भुविभावुकाः ५ " (इति भागवते) ॥ ४ ॥

इति बीसवां शब्द समाप्तम् ॥ २० ॥

अथ इक्कीसवां शब्द ॥ २१ ॥

रामनरमसिकौनदँडलागा । मरिजैहैकाकरिहै अभागा १ कोइ तीरथकोइमुण्डितकेशा । पाखँडभर्ममन्त्रउपदेशा २ विद्यावेदपढ़ि करहंकारा । अन्तकालमुखफांकैक्षारा ३ दुखितसुखितसबकुटुँब जेंवइबे । मरणबेरयकसरदुखपइबे ४ कहकबीरयहकलिहैखोटी । जोरहकरवानिकसलटोटी ॥ ५ ॥

रामनरमसिकौनदँडलागा । मरिजैहैकाकरिहैअभागा १

सबको दण्डछोड़ाय देनवारे जे सबते परे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनमें जो तैंनहीं रमैहै सो तोको गुरुवालोगनको कौन दण्ड चबावलगाहै यह तो सब यहींके साथी हैं साहबके भुलाय-देनवारे हैं जे उपदेश करनवारे गुरुवनके कहे माया ब्रह्मआत्माको ज्ञानरूपी दण्डबवावमें जोते परे हैं सो हे अभागा ! जब तैं मरि जैहै तब वे गुरुवा तोको न बचासकेंगे तब क्या करोगे ॥ १ ॥

कोइतीरथ कोइमुण्डितकेशा । पाखँडभर्ममन्त्रउपदेशा २

तीर्थन में जाइकै कोई चहौहौ कि बिना ज्ञानही मुक्ति ह्वै जाइ है और कोई मूड़मुड़ायकै बेषबनाइकै संन्यासीह्वैकै और अपने आत्माही को मालिक मानिकै चाहौहौ कि मुक्तिह्वैजायँ और कोई नास्तिकादिकनके जे नानापाखण्ड मतहैं तिनमें लागिकै जानौकि मुक्ति ह्वैगये और कोई भ्रम जो धोखाब्रह्म है तामें लागिकै आपने को ब्रह्म मानिकै जानौहौ कि हम मुक्तह्वैगये और कोई और और देवतन के मन्त्रउपदेश पायकै जानौहौ कि हम मुक्त ह्वै गये ॥२॥

बिद्या बेद पढ़ि कर हंकारा । अन्तकालमुखफांकैक्षारा ३

अरु कोई वेदबाह्य जे नानाविद्या अपने अपनेगुरुवनकी भाषा तिनको पढ़िकै व कोई वेद पढ़िकै वेदमें शास्त्र और चौंसठकलादिक सब आइगये अहंकार करौहौ कि हम मुक्त ह्वैगये सो मुक्ति तो जिनको वेदतात्पर्य करिकै ऐसे जे परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनके बिना जाने न होइगी होयगो कहा कि जब अन्तकाल तेरो होइगो तब यहौ मुख में क्षार फांकैगो और पुनि जब पुण्यक्षीण होइगो तब लोक आवोगे तबहूं मरबै करोगे क्षारई फांकौगे ॥ ३ ॥

दुखितसुखितसबकुटुँबजेंवइबे । मरणबेरयकसरदुखपइबे४

दुःखसुख में सबकुटुम्बनको जेंवावैहै ते मरणसमय कोई काम नहीं आवैहैं तैं अकेलही दुःख पावैहै परन्तु सहाय तेरी कोई नहीं करिसकै है ॥ ४ ॥

कहकबीरयहकलिहैखोटी । जोरहकरवानिकसलटोटी ५

कलि नाम झगड़ाको है सो कबीरजी कहैहैं यह मायाब्रह्मको झगड़ा बहुत खोट है अथवा यह कलिकाल अतिखोट है जो वस्तु करवामें रहै है सोई टोटीते निकसैहै तैसे जो कर्म यह जीव करैहै सोई दुःख सुख वह जन्म भोगकरै है अरु नाना देवतनकी उपासना अब करै है ताही की बासना बनीरहै है तेहिते पुनि वोई देवतनमें लागै है अरु जो ब्रह्मबिचार अब करै है सोई ब्रह्मबिचार पुनि जन्म लैकै करै है अर्थात् विना परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र के

जाने जन्म मरण नहीं छूटै है जो वासना अन्तःकरणमें बनीरहै है सोई पुनि होय है ॥ ५ ॥

इति इक्कीसवां शब्द समाप्तम् ॥ २१ ॥

अथ बाईसवां शब्द ॥ २२ ॥

अबधू छोड़ो मन बिस्तारा। सोपदगहहु जाहिते, सद्गति परब्रह्मते न्यारा १ नहीं महादेव नहीं महम्मद, हरिहजरत तब नाहीं। आदम ब्रह्म नहीं तब होते, नहीं धूप नहिं छाहीं २ असी सहस पैगंबर नाहीं, सहसअठासी मूनी। चन्द्रसूर्य तारागण नाहीं, मच्छकच्छ नहिं दूनी ३ वेद किताब अस्मृति नहिं संयम, नहीं यमन परसाही। बांगनेवाज कलिमा नहिं होते, रामोनहीं खोदाही ४ आदिअन्तमन मध्य न होते, आतश पवन न पानी। लख चौरासी जीवजन्तु नहिं, साखी शब्द न बानी ५ कहै कबीर सुनोहो अबधू, आगे करहु बिचारा। पूरणब्रह्म कहांते प्रकटे, किरतमकिन उपचारा॥ ६ ॥

अबधू छोड़ो मनबिस्तारा। सोपदगहहुजाहि ते सद्गति,परब्रह्मते न्यारा १ नहीं महादेव नहीं महम्मद, हरि हजरत तब नाहीं। आदम ब्रह्म नहीं तब होते, नहीं धूप नहिं छाहीं २ असीसहस पैगम्बर नाहीं, सहस अठासी मूनी। चन्द्रसूर्य तारागण नाहीं, मच्छ कच्छ नाहिं दूनी ३ वेद किताब अस्मृति नाहिं संयम, नहीं यमन परसाही। बांगनेवाजकलिमा नहिं होते, रामो नहीं खोदाही ४ आदिअन्तमनमध्य न होते, आतश पवन न पानी। लखचौरासी जीव जन्तु नहिं, साखीशब्द न बानी ५ कहैकबीरसुनोहोअबधू, आगे करहु बिचारा। पूरणब्रह्म कहांते प्रकटे, किरतम किन उपचारा ॥ ६ ॥

हे अवधू जीवो! तुम्हारे तो बधू कहे स्त्री नहीं है अर्थात् तुम तौ मायाते भिन्न हौ जेतनो तुम देखो हौ सुनो हौ ताको माया में मिलिकै तुम्हारे मनही विस्तार किया है सो यह मनको विस्तार छोड़िदेउ अरु जितने सद्गति कहे समीचीन गति है मन वचनके परे धोखाब्रह्म के पार ऐसो जो लोक प्रकाश ताहूते न्यारे ऐसे साकेतनिवासी परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनके पद गहो कबीर जी कहे हैं कि हे जीवो! विचार तो करौ जो जो बात यह पदमें स्पष्ट वर्णन करिगये ते ये कोऊ तब नहीं रहे अरु वासों भिन्न जो तुम कहौहौ कि पूर्णब्रह्म है कहे सर्वत्र ब्रह्मही है वासों भिन्न दूसरो नहीं है सो यह धोखा कहांते प्रकट भयो है और किरितम जो माया है ताको किन उपचार कहे किन आरोपण कियो अर्थात् यह शुद्धसमष्टि जीवको मनहीं किरितम जो माया है ताको आरोपण कियो है और मनहीं वह ब्रह्मको अनुमान कियो है ताहीको कियो राम खोदाय आदि जे मन वचन में आवै हैं जे वर्णन करि आये हैं तेई विस्तारहैं सो पूर्व मङ्गल में और प्रथम रमैनी में वर्णन करिआये हैं और यहां राम कोत्र हरि को जो कहे हैं सो नारायण जे रामावतार लेइहैं तिनको कहे हैं नहीं यमनपर साही कहे चौदहो यमनके परे जे निरञ्जनहैं तिनहूँकी साही नहीं रही परम पर पुरुष श्रीरामचन्द्र को नहीं कहे हैं काहेते कि वेतौ मन वचन के परे हैं सो पूर्व लिखि आये हैं सो बांचि लेहुगे सो जब मन को त्यागो तब परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिहारो स्वरूप देइँ तामें प्रमाण "मुक्तस्य विग्रहो लाभः" यह श्रुति तौने स्वरूपते साहब को अनिर्वचनीय रामनाम नामादिक तुमको स्फुरित होइँगे तामें प्रमाण "वाङ्मनो गोचरातीतः सत्यलोकेश ईश्वरः। तस्य नामादिकं सर्वं रामनाम्ना प्रकाश्यते" (इति महारामायणे) ॥६॥

इति बाईसवां शब्द समाप्तम् ॥ २२ ॥

अथ तेईसवां शब्द ॥ २३ ॥

अवधू कुदरतिकी गति न्यारी।रङ्कनिवाजकरैवह राजा, भूपति करै भिखारी १ येतेलवँगहि फलनाहिंलागै, चन्दन फूल न फूलै॥ मच्छशिकारी रमै जँगलमें, सिंहसमुद्रहिभूलै २ रेड़ारूखभयामलयागिरि, चहुँदिशिफूटीबासा। तीनिलोक ब्रह्माण्डखण्डमें, देखै अन्धतमासा ३ पंगुलमेरुसुमेरुउलंघै, त्रिभुवनमुक्ताडोलै। गूंगा ज्ञानविज्ञान प्रकाशै, अनहदबाणीबोलै ४ बांधि अकाशपताल पठावै, शेषस्वरगपरराजै। कहै कबीर रामहैंराजा, जो कछुकरैं सो छाजै॥ ५॥

जो पूर्व यह कहिआये कि रामौ नहीं खोदाइउ नहीं हैं जिनते समीचीन गति होइ है तिनके पद गहौ ते कौन पुरुष हैं तिनकी सामर्थ्य कहिकै खोलिकै बतावै हैं॥

अवधूकुदरतिकी गतिन्यारी॥

रङ्कनिवाज करै वह राजा, भूपति करै भिखारी १ येते लवँगहि फल नहिं लागै, चन्दन फूल न फूलै॥ मच्छ शिकारी रमै जँगलमें, सिंह समुद्रहि भूलै २

हे अवुध, जीवो! परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनकी कुदरति कहे सामर्थ्य की गति न्यारी है सुग्रीव जे पुत्र कलत्र ते हीन भिखारीकी नाईं बन बन पहाड़ पहाड़ बागतरहे तिनको निवाजिकै राजा बनाइ दियो और सब राजनके जीतनवारे जे क्षत्रिय तिनको मारिकै पृथ्वी भूसुरन दै डारेउ नारायण के दशौ अवतार ऐसे परशुराम तिनको भिखारी करिदियो १ लवङ्गमें फल नहीं लागै सोऊ लागै चन्दनमें फूल नहीं फूलै सोऊ फूलै है जाकी सामर्थ्य ते सो बाल्मीकीय में लिख्यो है जब श्रीरघुनाथजी अयोध्याजी आये हैं तब जे वृक्ष फलै फूलैवाले नहीं रहे सूखेरहे तेऊ फलि फूलि आये हैं और मच्छ जो मत्स्योदरी सो शिकारी जो शन्तनु ताके साथ भय ते रमनलगी सिंह समर्थ को कहै हैं सो

समर्थ जे बड़े बड़े दानव थलके रहैया ते समुद्रमें बसेजाय ॥ २ ॥

रेड़ारूख भया मलयागिरि, चहुँदिशि फूटी बासा ॥
तीनिलोक ब्रह्माण्डखण्ड में, देखै अन्ध तमासा ३

रेड़ा रूख जेहैं शवरी वानर निषादादिक जिनको वेदका अधिकार नहीं रह्यो तेऊ चन्दन ह्वैगये उनकी बास चारिउ दिशा फूटी कहे उनको यश सबकोई गावैहै चन्दन औरौ वृक्ष को चन्दन करैहै ऐसे औरहूको साधुन बनावनवारे ये सब भये तामें प्रमाण "न जन्म नूनं महतो न सौभगं न वाक् न बुद्धिर्नाकृतिस्तोषहेतुः।तैर्यद्विसृष्टानपि नो वनौकसश्चकार सख्ये बतलक्ष्मणाग्रजः" (इति भागवते) और आँधर जे हैं धृतराष्ट्र तिनको कृष्णचन्द्र ब्रह्माण्डभरेको तमाशा जिनकी सामर्थ्यते शरीरही में देखायदियो नारायण और कृष्णचन्द्र साहबकी सामर्थ्यते करैहैं तामें प्रमाण "यस्य प्रसादादहंवश ममसामर्थ्यमीदृशम् । संहरामि क्षणादेव त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ धाता सृजति भूतानि विष्णुर्द्धारयते जगत्" (इति सारस्वततन्त्रे) कृष्णचन्द्रको अवतार विष्णुहीते होइ है सो पुराणनमें प्रसिद्ध है ॥ ३ ॥

पंगुल मेरु सुमेरु उलंघै, त्रिभुवन मुक्ता डोलै ॥
गूंगा ज्ञान बिज्ञान प्रकाशै, अनहद बाणी बोलै ४

और जिनके अघटित घटना सामर्थ्यते पंगु जे हैं अरुण ते पृथ्वी के कीला जे हैं सुमेरु कुमेरु तिनको रोज उलंघै हैं नाकैहैं अथवा पंगु जो हैं राहु जाके शिरभर है गोड़ हाथ नहीं है सो सुमेरु कुमेरु का नाकतरहै है और मुक्त जे हैं नारद, शुक, कबीर आदिक जे संसार ते मुक्त ह्वैकै मनादिकनको छोड़िकै साहब के पास गये हैं और यह शास्त्र में लिखैहै कि वहांके गये पुनि नहीं आवैहै परन्तु तेऊ साहब की सामर्थ्यते त्रिभुवनमें डोलै हैं संसारबाधा नहीं करि सकै है और जब शुकाचार्य निकसे हैं तब व्यास पछुआनजात रहे हैं तब गूंगे जे वृक्ष हैं तेऊ व्यास को समुझायो है और

मध्वाचार्य जब भिक्षाटन को निकसे तब शिष्यनके पढ़ाइबेको बरदाको कह्यो तब बरदा शिष्यनको पढ़ायो है और जे साहबकी सामर्थ्यते ऐसी सामर्थ्य उन के दासनके ह्वैगई कि बोई अनहद बाणी को बोलै हैं जाकी हद नहीं है ॥ ४ ॥

बाँधि अकाश पताल पठावै, शेष स्वरगपर राजै ॥
कहै कबीर राम है राजा, जो कुछ करै सो छाजै ५

और आकाश जो है आकाशवत्ब्रह्म तौने को जो मानैहै कि वह ब्रह्म मैंहीहौं ताको साहब अपनो ज्ञान कराइकै धोखाज्ञानको बाँधिकै पतालमें पठैदेइहै अर्थात् जेहि जीवको मूलाज्ञान निर्मूलई करि देयहै जैसे लोकमें या बात कहै हैं कि या खनिकै गाड़देव ऐसे गाड़दियो फिरि वा अज्ञान को अंकुर नहीं होय है और शेष कहे भगवत् शेष जो है जीव सो जे साहब की सामर्थ्यते स्वर्गादिकन के परे जो है साहब को लोक तहाँ राजैहैं स्वर्गपद को अर्थ जो दुःखते भिन्न स्थान होय है सो कहावै स्वर्ग और जो लोक प्रकाश ब्रह्म ताहूते परे जो साहब तहाँ राजैहै दुःखरहित स्थानको स्वर्ग कहै हैं तामें प्रमाण " यन्नदुःखेनसंभिन्नं नचग्रस्तमनन्तरम् । अभिलाषोपनीतं च तत्पदं स्वः पदास्पदम् इति" सो कबीरजी कहै हैं कि यह अघटित घटना सामर्थ्य परम परपुरुष श्री रामचन्द्रहा हैं वे राजा हैं वे जो कुछ करैं सो सब छाजैहै चाहे रङ्कको राजा करैं चाहे राजाको रङ्ककरैं चाहे लौंगमें फल लगावैं चाहे चन्दनमें फूल फुलाय देयँ चाहे मछरीको वनमें रमावैं चाहे सिंह को समुद्रमें रमावैं चाहे रेंड़ारूखको चन्दन करैं चाहे अन्धा को तीनउलोक देखायदेयँ चाहे पंगु को सुमेरु कुमेरु नँघाय देयँ चाहे गूंगाको ज्ञान कहवायदेयँ चाहे आकाशको बाँधिकै पाताल पठावैं चाहे पातालवासी जे शेष तिनको स्वर्गपर राखैं या सामर्थ्य उनमें है श्रीरामचन्द्र तो राजा हैं तामें प्रमाण "राजाधिराजस्सर्वेषां रामएवनसंशयः" और उनहीं की भयते सूर्य चन्द्रमा

अवसर में उयेहैं और मृत्यु जब समय आवैहै तब खाय है तामें प्रमाण "यद्भयाद्वाति वातोऽयं सूर्यस्तपति यद्भयात् । वर्षतीन्द्रोद्हत्यग्निर्मृत्युश्चरतिपञ्चमः" (इति श्रीमद्भागवते) ॥ ५ ॥

इति तेईसवां शब्द समाप्तम् ॥ २३ ॥

अथ चौबीसवां शब्द ॥ २४ ॥

अवधू सो योगी गुरु मेरा । जोई पदको करै निबेरा १ तरुवर एक मूलबिनठाढ़ो, बिन फूले फललागा । शाखापत्र कछू नहिं वाके, अष्ट गगनमुखजागा २ पौ बिनु पत्र करह बिनु तुम्बा, बिनु जिह्वा गुण गावै । गावनहारके रूप न रेखा, सतगुरु होइ लखावै ३ पक्षी खोज मीनको मारग, कहे कबीर दोउभारी । अपरमपार पार पुरुषोत्तम, मूरतिकी बलिहारी ॥ ४ ॥

अवधू सो योगी गुरु मेरा । जोई पद को करै निबेरा १
तरुवर एक मूल बिन ठाढ़ो, बिन फूलै फल लागा ॥
शाखा पत्र कछू नहिं वाके, अष्टगगन मुख जागा २

बधू जाके न होइ सो अबधू कहावै सो हे अबधू जीवो ! जो यह पदके अर्थको निबेरा करिके जानै सो योगी गुरु कहे श्रेष्ठ है और मेरा है कहे मैं वाको आपनो मानौ हौं १ एक जो तरुवर है सो विना मूल ठाढ़ो है अरु वामें विना फूल फल लागो है सो यहां तरुवर मन है सो जड़ है अरु आत्मा चैतन्य है शुद्ध है जो कहिये आत्मा उत्पत्ति है सो जो आत्मा उत्पत्ति होतो तो आत्मा चैतन्यहै मानो होतो ताते आत्मा ते नहीं उत्पत्तिभयो यह आपई आत्माते प्रकाशभयो जो बिचारै तो वाको मूल भगवत् अज्ञान सत् नहीं है विना मूल ठाढ़ो भयो है अरु विना फूलै फल लागोहै कहे जगत् उत्पादक क्रियामन नहीं कियो मिथ्या संकल्पमात्रते जगद्रूप फल लागवई भयो अरु वाके शाखापत्र कछू नहीं है अर्थात् अङ्ग नहीं है चित्त बुद्धि अहंकार येऊ मिथ्याहैं निराकार हैं

अरु यह मनैके मुखते आठो गगन आगतभये सात सतावरणके आकाश अथवा चैतन्याकाश ॥ २ ॥

पौ बिनु पत्र करह बिनु तुम्बा, बिनु जिह्वा गुण गावै ॥
गावनहार के रूप न रेखा, सतगुरु होइ लखावै ३

अब श्रीकबीरजी जीवात्मा को वृक्षरूप ह्वैकै वर्णन करैहैं पौ बिनु कहे आत्माको जगत् को अंकुर नहींहै मनके संयोगते दुःख सुखरूप पत्र दुइ लागबेई कियो और करहू जो कर्म है सो नहीं रह्यो आत्मामें जगत्रूप तुम्बा लागबेई कियो यह जीवात्माकी दशा काहतेभई कि बिनु जिह्वा जो है निराकार ब्रह्म ताके जे गुण हैं देश काल वस्तु परिच्छेद ते शून्यत्व सो आपने में लगावन लग्यो ये गुण मोहीं में हैं मेरो स्वरूप यहीहै सो जो या आपने को ब्रह्म मान्यो तौ आत्मा के ब्रह्मके रूप को रेख नहीं है काहेते याको देश बनो है समष्टि जीवलोक प्रकाश में रहै है और काल बन्यो है जौनेकाल में समष्टिते व्यष्टि होइहै और या देश, काल, वस्तु, परिच्छेद ते सहित है काहेते अणु है भगवद्दास है तामें प्रमाण " बालाग्रशतभागस्य शतधा कल्पितस्य च । भागो जीवः सविज्ञेयः सचानन्त्याय कल्पते" (इति श्रुतिः) अंशोनाना-व्यपदेशात्ते ॥ ३ ॥

पक्षी खोज मीन को मारग, कहै कबीर दोउ भारी ॥
अपरमपार पार पुरुषोत्तम, मूरति की बलिहारी ४

ताते मीनकी नाईं संसारते उलटीगति चलिकै पक्षी जो हंस-स्वरूप आपनो ताको खोज कबीरजी कहै हैं ये दोऊ भारीहैं संसारते उलटी गति होइबो यह भारीहै आपनो हंसरूप पाइबो यहू भारी है सो संसारते उलटी गतिकरि हंसरूपपाइकै परमपर जो आत्मारूप पार्षदरूप ताहूते उत्तम जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र तिनकी बलिहारी जाय भाव यह है तब तेरो जनन मरण छूटैगो ॥ ४ ॥

इति चौबीसवां शब्द समाप्तम् ॥ २४ ॥

अथ पचीसवां शब्द ॥ २५ ॥

अबधूवोततुराबलराता। नाचै बाजन बाज बराता १ मौर के माथे दूलहदीन्हों, अकथाजोरिकहाता। मड़ये के चारन समधी दीन्हों, पुत्रविवाहलमाता २ दुलहिनिलीपिचोकवैठाये, निरभयपद परभाता। भातहि उलटि बरातहिखायो, भली बनी कुशलाता ३ पाणिग्रहण भये भवमण्डौ, सुषुमनि सुरति समाता। कहैं कबीर सुनोहो सन्तो, बूझो पण्डित ज्ञाता ॥ ४ ॥

अबधू वोततुरा बलराता। नाचै बाजन बाज बराता १

हे जीवो! आप तौ अबधूरहेहौ कहे आपके बधू जो है माया सो नहीं रही है परन्तु रौरे अब वह तत्त्व में रातेहैं अथवा हे अबधू! यह शरीर को राजा है जीव सो अब वह तत्त्व में राता है कौनतत्त्व में राता है सो कहै हैं जहां बाजन नाचैहै बरात बाजैहै सो इहां शरीर बाजनहै सो नाचै है वहे जाग्रत्अवस्था में स्थूल स्वप्न अवस्थामें सूक्ष्म और सुषुप्ति में कारण तुरीयामें महाकारण येई नाचैहैं तिनको जब इकट्ठा कियो अर्थात् एकाग्र मन कियो उनमुनी मुद्राआदिक साधन करिकै तब पचीसौ जे तत्त्व हैं तेई बरात हैं तईबाजैहैं कहे तिनको जो संघट्ट हैवोहै इन्द्रियनमें तिनते जो ध्वनि निकसै है तेई दशौ अनहदकी ध्वनि सुनि परती हैं तामें प्रमाण "उठतशब्द घनघोर, शंखध्वनि अतिघना। तत्त्वोंकी झनकार, बजतझीनीझना ॥ १ ॥

मौर के माथे दूलह दीन्हों, अकथा जोर कहाता ॥
मड़ये के चारन समधी दीन्हों, पुत्र विवाहल माता २

नाभीमें चक्र है तामें नागिनीको बास है चक्रके द्वारमें मूड़ दिये परीहै आत्मा नीचे है सो वह आत्मा दूलह है ताही की नागिनी मौर है रही है सो जब पांचहजार कुम्भक कियो तब नागिनी जागी सो ऊपर को चढ़ी तब चक्रको द्वार खुलिगयो तब आत्मा तो दूलह है सो चढ़िकै मौर जो नागिनी है ताके माथेपर

गैबगुफा में बैठ्यो जाइ और बरातन में जो नहीं कहिबे लायक झूठीबात सो गारी में कहैहैं इहां शरीर में ब्रह्म ह्वैजैबो अकथ है कहिवे लायक नहीं है सो कहै हैं कि हम ब्रह्म ह्वैगये और मड़ये के चारनको नेग समधी देइहैं इहां मड़येके चारनके नेगनमें समधीही दीन्हो है माया को पिता जो मन है सो एक समधी है और मनके समधी साहब हैं काहेते कि यह जीव भगवद्वात्सल्य को पात्र है जब यह आत्मा विषयन में रह्यो है तब बेजाने कबहूं कहतहू सुनतरह्यो जबते ब्रह्माण्ड मड़वा में गयो तबते कबीर जी यह कूट करै हैं कि मड़ये के चारन में समधी को दैराख्यो है कहे समधी जो साहब ताको कहिबो सुनिबो मिटिगयो सो जानै तो यह है कि हम मायाते छूटिगये पै नागिनी को जै बुन्द सुधा देइ है तै वर्ष वहां समाधि लागै है सो नागिनी ही वहां गहिराखै है सो पुत्र जो जीव है सो माता जो माया है ज्योतिरूप आदि-शक्ति ताको विवाहि लेय है कहे वाही के संग ज्योति में लीन ह्वैके वहां रहै है ॥ २ ॥

दुलहिन लीपि चौक बैठाये, निर्भय पद परभाता ॥
भातहिं उलटि बरातहि खायो, भली बनी कुशलाता ३

चौक लीपिकै दुलहिनि बैठावै हैं वहां दुलहिन जो है माया जो जगत्‌रूप करिकै नानारूप है ताको लीपिकै एक करिडार्‌यो कहे एक ब्रह्मही मानत भयो ताके ऊपर चौक बैठायो कहे चौक देत भयो अर्थात् अन्तःकरणावच्छिन्न जो चैतन्य सो प्रमातृचैतन्य कहावै है वृत्यवच्छिन्न जो चैतन्य सो प्रमाण चैतन्य कहावै है विषयावच्छिन्न चैतन्य प्रमेयचैतन्य कहावै है स्फूर्त्यवच्छिन्नचैतन्य फूल चैतन्य कहावै है सो ये चारों चैतन्यको चौकबैठायो कहे चौक पूर्‌यो अर्थात् चारो चैतन्यको एक करिकै स्थितकियो विवाह होत होत भिनसार होइजाय है तब यह मन भयो कि हम निर्भयपद को पहुँचिगये प्रभात ह्वैगयो मोहरात्री व्यतीत ह्वैगई नागिनको जो अमृत सरोवर में अमृत पिआवैहै सोई भात है सो नागिनी

जब अमृत पियो तब वहै भात बरात जो आगे वर्णन करि आये पांचतत्त्व पचीस प्रकृति ताको खाइ लियो अर्थात् कुछ सुधि न रहगई सो कबीरजी कहै हैं कि भली कुशलात बनी है कि तब तो कुछ सुधिहू रही अब कछू सुधि नहीं रहिगई ॥ ३ ॥

पाणिग्रहण भये भवमण्ड्यो, सुषमनि सुरति समाता ॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, बूझो पण्डित ज्ञाता ४

वहां मंडवपरेपर पाणिग्रहण होय है इहां पाणिग्रहण भये पर भवमण्ड्यो अर्थात् जब पाणिग्रहण माया को ह्वै चुक्यो कहे नागिनी को जब सुधा पिआइचुक्यो तब जै मुँह नागिनी को पानी दियो एक मुँहदियो तो महीना भरेकी समाधिलगी व दुइ मुँह दियो तो तीन महीनाकी समाधिलगी व चारि मुँह दियो तो छः महीनाकी समाधिलगी व पांच मुँह दियो तो वर्ष दिनकी व छः मुँह दियो तो तीन वर्ष की व सात मुँह दियो तो बारह वर्ष की समाधिलगी और जो हजारन वर्ष समाधि लगावा चाहै तो और मुँह देय सो जब नागिनी को सुधा पिआयो तब जै मुँह दियो तेतनेनदिनभर सुषुमनिसुरति समाता अर्थात् सुषुम्णा में जीव की सुरति समाइ है पुनि जब समाधि उतरी तब फिर भवमण्ड्यो कहे संसारी भयो अर्थात् पुनि ब्रह्माण्डमण्ड्यो कि शरीरकी सुधि भई सो कबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो, हे ज्ञातापण्डितो! तुम सुनौ तौ बूझौ तौ वे कहां मुक्ति भये नहीं भये फेरि तो संसारही में उलटि आवै हैं ॥ ४ ॥

इति पचीसवां शब्द समाप्तम् ॥ २५ ॥

अथ छब्बीसवां शब्द ॥ २६ ॥

कोइ बिरला दोस्त हमारा, भाईरे बहुत का कहिये। गाठन भजन सवारै सोई, ज्यों राम रखै त्यों रहिये १ आसन पवन योग श्रुति संयम, ज्योतिषपढ़िबैलाना। छौ दर्शन पाखण्ड छानबे, ये कल काहु न जाना २ आलम दुनी सकल फिरि आये, कलि जीवहि

नहिं आना। ताही करिकै जगत उठावै, मनमें मन न समाना ३
कहै कबीर योगी औ जंगम, फीकी उनकी आसा । रामै रामरटै ज्यों चातक, निश्चय भगतिनिवासा ॥ ४ ॥

कोइ विरला दोस्त हमारा, भाईरे बहुत का कहिये ॥
गाठन भजन सवारै सोई, ज्यों राम रखै त्यों रहिये १

कबीरजी कहै हैं कि हे भाइउ, जीवो ! और और बहुत मतवारे तो बहुत जीव हैं तिनको कहा कहिये रामोपासक हमारो दोस्त जैसे हम गाढ भजन करिकै रामचन्द्र को देख रहे हैं ऐसे ऐसे वह गाढ़ भजन करिकै रामचन्द्र को देखे रहै और जैसे हम को राम राखै है तैसही रहै हैं ऐसे वहू रहै क्षणभरि न भूलै ऐसा कोई बिरला है ॥ १ ॥

आसन पवन योग श्रुतिसंयम, ज्योतिष पढ़ि बैलाना ॥
छौ दर्शन पाखण्ड छानबे, एकल काहु न जाना २

अब बहुत मतवारे जे बहुत हैं तिनको कहैहैं कोई आसन दृढ़ करैहै कोई पवन साधैहै कोई योग करै है कोई वेद पढ़ैहै कोई संयम करैहै कोई व्रत करै है कोई ज्योतिष पढ़ै है सो ये सब बैकलाइगये जो बैकल होइहै सो झूठको साँच जानैहै और साँच को झूठ मानै है सो छःदर्शन छानबे पाखण्डवारे जे ये सब हैं एकल वहै एक स्वामी सब के परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको न जान्यो अथवा एकल कहे जौने करने में उपासना करोहौ सो कोई नहीं जानै है ॥ २ ॥

आलमदुनी सकल फिर आये, कालि जीवहिं नहिं आना ॥
ताही करिकै जगत उठावै, मनमें मन न समाना ३

आलम कहे सब जीव दुनिया में फिरि आये गुरुवालोगन के यहां याकल जौने करते मैं उपासना श्रीरामचन्द्र की करौहौ सो आपने जियमें न आनत भये जाते संसार छूटि जाय साहब मिलैं जे नानामत आगे कहिआये ताही करिकै जगत् को उठावै है कि

जगत् उठिजाय मरिहि जाइ सो यह जगत् तो मनरूपही है सो उनके मनमें मनरूप जगत् न समान्यो अर्थात् उनको मिथ्या कियो न करिगयो अथवा धोखाब्रह्म ताको मन कहे विचार उनके मनमें समाइ रह्यो है ताहीं करिकै जगत् को उठावै हैं कि जगत् न रहिजाय सोऊ न उठ्यो ॥ ३ ॥

कहै कबीर योगी औ जङ्गम, फीकी उनकी आसा ॥
रामै नाम रटै ज्यों चातक, निश्चय भक्ति निवासा ४

सो कबीरजी कहैहैं कि योगी जंगमन की सबकी आशा फीकी है काहेते धोखाब्रह्मके ज्ञानते संसार मिथ्या नहीं होइ है जीवन के ब्रह्म होवेकी आशा फीकी है सो जो रामनाम निशिवासर लेब है और जैसे चातक एक स्वाती ही की आशा करै है तैसे परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रकी आशा करैहै ताही के हृदयमें उनकी भक्ति को निश्चय कै निवास होइहै भक्तिरसरूप है याते इनकी आशा सरिस है अर्थात् सफलै है और सोई संसारसागर ते उबरै है सो आगे रमैनीमें कहिआये हैं "कहै कबीर ते ऊबरे जो निशिवासर नामहिलेव" ॥ ४ ॥

इति छब्बीसवां शब्द समाप्तम् ॥ २६ ॥

अथ सत्ताईसवां शब्द ॥ २७ ॥

भाई अद्भुतरूप अनूपकथाहै, कहौं तो को पतिआई। जहँजहँ देखो तहँतहँ सोई, सबघट रह्यो समाई १ लछि बिन सुख दरिद्र बिनु दुख है, नींदबिना सुखसोवै। जस बिनु ज्योति रूप बिनु आशिक, रतन बिहूनारोवै २ भ्रम बिनु ज्ञान मनै बिनु निरखै, रूप बिना बहुरूपा। थितिबिनुसुरति रहस बिनु आनँद, ऐसो चरित अनूपा ३ कहै कबीर जगतबिनु माणिक, देखो चित अनुमानी। परिहरि लाभै लोभ कुटुँब सब, भजहु न शाँरगपानी ॥ ४ ॥

भाई अद्भुतरूप अनूप कथाहै, कहौं तो को पतिआई ॥

जहँ जहँ देखौं तहँ तहँ सोई, सब घट रह्यो समाई १

जातिकरिकै सबजीव एकही है ताते जीवन को भाई कह्यो कि हे भाई, जीवो! वे जे हैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनको अद्भुत-रूप है अरु वाहि रूप की अनूप कथा है सो मैं जो वाको दृष्टान्त दैकै समुझाऊंहौं कि वाकोरंग दूर्वादलकी नाईं है अरसी कुसुमकी नाईं नीलकमलकी नाईं तौ येई सबमें भेद परै एक एककी तरह नहीं है वह तो मन वचन के परेहै ऐसे नामरूप लीलाधाम सब है वाको तो कैसे समुझाऊँ काहेते जो मैं वाको समुझाइकै कहौं तो कैसे कहौं और जो कहबऊ करौं तो कोई पतिआय कैसे सो यहितरहको जो याको रूपहै सो जहां जहां देखो हौं तहां तहां वहै रूप देखायहै काहेते कि सबघटमें समायरह्यो है यहां सब घटमें समान्यो जो कह्यो ताते चितहू अचितहू में समाइरह्योहै यह आयो जो व्याप्यपदार्थ है जीव ब्रह्म माया काल कर्म स्वभाव ताहीको सब देखैहै और जो व्यापकपदार्थ है ताको कोई नहीं देखै है जो चितहू अचित में जो कहो वही धोखाब्रह्मको तुमहूं कहतेहौ जोस-र्वत्र फैलिरह्योहै तो वाको कोई नहीं कहते हैं काहेते कि अद्वैतवादी कहै हैं कि सब पदार्थ वही ब्रह्महीं है वाते भिन्न दूसरो पदार्थ नहीं है और हम कहै हैं कि सब पदार्थ चित अचित रूपते व्याप्य है और हमारो साहब सर्वत्र व्यापक है सो जाको विश्वास होइ ताको वे साहब साकेतनिवासी परमपुरुष श्रीरामचन्द्र सहजही प्रकट ह्वैजाय हैं सो जो मैं कहौ हौं ताको नहीं प्रतीत करै हैं चित जो है जीव और ब्रह्म ताहू में श्रीरामचन्द्र व्यापक हैं तामें प्रमाण "ॐयो वै श्रीरामचन्द्रस्य भगवान् द्वैतपरमानन्दात्मा यः परंब्र-ह्मेति रामतापिन्याम्" जीवहू में व्यापक हैं तामें प्रमाण "य आत्मनि तिष्ठन् यमात्मानं वेद यस्यात्मा शरीरमिति" मायादिक सबमें व्यापक हैं तामें प्रमाण "यस्य भासा सर्वमिदं विभाति" (इति श्रुतिः) ॥ १ ॥

लछिबिनुसुख दरिद्रबिनु दुख है, नींदबिना सुखसोवै ॥

जस बिनु ज्योति रूप बिनु आशिक, रतनबिहूना रोवै २

कैसे साहब सर्वत्र पूर्ण है सो बतावे हैं लाखिबिनु सुख कहे जो पदार्थ प्रत्यक्ष नहीं होइ है तामें सुख नहीं होइ है देखो तो नहीं परै है साहब पै जो कोई स्मरण करै है सर्वत्र ताको सुख होय है साहब को कौनो बात को दरिद्र नहीं है जो चाहे सो करिडारै समर्थ है परन्तु नानाजीवनको अज्ञान में परे देखिकै साहिबो को यही दुःखहै कि मेरे अंश जीव माया में परिकै नरक स्वर्ग जाय हैं काहेते यह दुःख है कि साहब अतिदयालु हैं तामें प्रमाण "तावत्तिष्ठन्तिदुःखीवयावद्दुःखं न नाशयेत्। सुखीकृत्यपराभक्तान् स्वयम्पश्चात्सुखीभवेत् इति" ध्वनि यह है कि साहब दयालु हैं ते सर्वत्र पूर्ण हैं यह विचारिकै कि जीव मोको जहैं स्मरणकरै मैं तहैं उबारिलेउँ फिरि कैसो साहब है कि मोहनिद्रा नहीं है सदा जगै है अपने भक्तनकी रक्षा करिबेको ऐसेहूँ साहबके सम्मुख जो जीव नहीं होइ हैं तिनकी ओर सदा सुखमय साहब सोवै है अर्थात् कबहूं नहीं देखै है फिर कैसो साहब है जाकी ज्योति जो ब्रह्म है अर्थात् जाको लोकप्रकाश जो है ब्रह्म सो विना कौनो कथै है वा कौनो लीलै कियो अकथ है ऐसे साहब के विना रूपमें आशिकभये साहब को ज्ञानरत्नविहीना जीव संसार में जनन मरण पाइ पाइ रोवै है ॥ २ ॥

भ्रम बिनु ज्ञान मनै बिनु निरखे, रूप बिना बहुरूपा ॥
थितिबिनुसुरतिरहसबिनुआनँद, ऐसो चरित अनूपा ३
कहै कबीर जगत बिनु माणिक, देखौ चित अनुमानी ॥
परिहरि लाभै लोभ कुटुँब सब, भजहु न शारँगपानी ४

फिर कैसो है साहब भ्रम बिना है अर्थात् कबहूं माया शबलित ह्वैकै जगत् मेंही उत्पत्ति कियो सदाज्ञानगुण सदाज्ञानस्वरूप है तौने साहब को मानै बिनु निरखे कहे मन विना ह्वैकै हंसस्वरूप पाइकै तैं देखै कैसेहैं साहब कि चित् अचित् जे रूप हैं तेहि

विनाहैं अर्थात् ये स्पर्श नहीं करिसकै हैं और चित् अचित् के शरीरी ह्वैबहुतरूपौ हैं सब उन्हीं के रूप हैं फिरि कैसे हैं जब साहब सुरति दीन है तब जीवनकी स्थिति भई है और सुरति नहीं है साहबकी स्थिति वा लोक में बनी है और आनन्द जो मन वचन में आवै है सो नहीं है वहां आनन्द बनो है ऐसे साहब के अनूप चरित हैं अर्थात् जो रहस कहि आये सोऊ मन वचन के परे है सो कबीरजी कहै हैं कि जो चित्त में अनुमान करि देखौ तो यावत् उपासना व ज्ञान तुम करौ हौ जगत् मुक्तिरूप माणिक काहूते न मिलैगी ऐसी मुक्ति के लाभ को लोभ त्यागिकै व सब कुटुम्ब जे गुरुवालोग तिनको त्यागिके शारंगपानी कहे धनुष को लीन्हे साहब तिनको काहे नहीं भजौ हौ अर्थात् भजौ ॥ ३ । ४ ॥

इति सत्ताईसवां शब्द समाप्तम् ॥ २७ ॥

अथ अट्ठाईसवां शब्द ॥ २८ ॥

भाईरेगैयाएकबिरंचिदियो है, भारअभरभोभाई । नौनारीको पानिपियतिहै, तृषा तऊ न बुताई १ कोठाबहत्तरि औ लौलाये, बज्रकेवांरलगाई । खूंटागाड़िडोरीदृढ़बांधो, तेहिवोतोरिपराई २ चारि वृक्षछौशाखावाके, पत्रअठारहभाई । एतिकलै गैया गम कीन्हो, गैया अतिहरहाई ३ ईसातौअबरणहैंसातौ, नौऔचौदह भाई । एतिक गैयैखाइबढ़ायो, गैया तौ न अघाई ४ खूंटामेंराती है गैया, श्वेतसींग हैं भाई । अबरणबरण कछूनहिंवाके, भक्ष अभक्षौखाई ५ ब्रह्माविष्णु खोजकै आये, शिवसनकादिकभाई । सिद्धअनन्त वहि खोजपरे हैं, गैयाकिनहुँनपाई ६ कहै कबीर सुनोहो सन्तो, जो या पदअरथाई । जो या पदको गाइबिचारिहै, आगेह्वैतरिजाई ॥ ७ ॥

भाईरे गैया एक बिरंचि दियोहै, भार अभरभो भाई ॥
नौ नारीको पानि पियति है, तृषा तऊ न बुताई १

हे भाई, जीवो ! एक वाणीरूप गैया तुमहीं सबको विरंचि जे ब्रह्मा हैं ते दियो है सो गैया को जो तात्पर्य दूध है ताको तुम न पायो गैयाको भार अभर ह्वैगयो तुम्हारो सँभारो न सँभारिगयो अर्थात् जो जो वाणीमें विधि निषेध लिखेहै सो तुम्हारो कियो एकौ नहीं ह्वै सकैहै सो ये मायिक विधिनिषेध तो तुम्हारेकिये ह्वै नहीं सकैहै वाणी जो तात्पर्य वृत्तिने बतावैहै सो तो अमायिकहै कैसे जानोगे ? वह गैया कैसी है सो बतावै हैं नौ कहे नवो जे व्याकरण हैं तिनकी जो नारी कहे राह है तिनकर जो शब्दरूपी जल है ताको पियेहै अर्थात् वोहीके पेटते वेद शास्त्र सब निकसेहैं और वहीके पेटमेंहैं ते शास्त्र वेद वोही नवो व्याकरण के शब्दरूपी जलते शोधे जायहैं अर्थात् वही वाणी में जल समाइहै परन्तु तृषा तबहूं नहीं बुझाइहै कहे वोही नवो व्याकरण करिकै शोधै है शास्त्रार्थ करतही जाय है बोध नहीं होइ है कि शुद्ध ह्वैगयो पुनि प्रणीतन में आर्ष कहिदेय है ॥ १ ॥

कोठा बहत्तरि औ लौलाये, बज्र केवाँरि लगाई ॥
खूँटा गाड़ि डोरी दृढ़ बांधो, तेहि वो तोरि पराई २

पातञ्जलिशास्त्रवाले वही गायत्री गैयाको बांधन चह्यो बहत्तरिउ कोठाते लौ लगाइकै कहे श्वास खैंचिकै खेचरीमुद्राकरि घेटीके ऊपर वज्र कपाट जो लग्यो है ताको जीभते टार्‍यो तब वहां अमृत स्रवो तब नागिनी उठी श्वासके साथ ऊपरको चढ़ी ताके साथ आत्मौ खूंटा जो ब्रह्माण्डहै ब्रह्मज्योति तहां पहुँच्योजाइ सो ज्योतिरूप ब्रह्म खूंटा है तामें प्राणागिनी जो गैया है ताको बांध्यो तेहि वो तोरि पराई कहे जब समाधि उतरी तब फिरि जसको तस संसारी ह्वैगयो नागिनीशक्ति उतरि आई पुनि जीवन को संसार में डारिदियो ॥ २ ॥

चारि बृक्ष छौ शाखा वाके, पत्र अठारह भाई ॥
एतिक लै गैया गम कीन्हो, गैया अति हरहाई ३

पातञ्जलिशास्त्र में योगक्रिया है सो कायाते होय है ताते अलग कह्यो अब सब मेटिकै कहै हैं चारि वेद जे हैं तेई वृक्ष हैं और छइउ शास्त्र जे हैं तेई शाखा हैं अठारहौ पुराण पत्र हैं सो एकलै कहे यहां लगे गैया गमनकैजातभई कहे प्रवेश कै जातभई सो गैया बड़ी हरहाई है अर्थात् जहां जहां आरोप कियो तौन तौन वह खाय लियो अर्थात् जौन जौन आरोप कियो है तौन वाके पेट ते बाहर नहीं है भीतरही है ॥ ३ ॥

ई सातौ अवरण हैं सातौ, नौ औ चौदह भाई ॥
एतिक गैया खाय बढ़ायो, गैया तउ न अघाई ४

ई सातौ जे कहिआये छःचक्र और सातौ सहस्रार जहां ब्रह्म ज्योति में जीव को मिलावै है अरु सातौ आवरण जे हैं पृथ्वी अप्, तेज, वायु, आकाश, अहंकार, महत्तत्त्व, अथवा सातौ बार काल अरु नौखंड जे हैं अरु चौदहौ भुवन जे हैं सोई सबन को गैया खाइकै बढ़ाइ डास्यो तऊ न अघातभई अर्थात् सब वाणीमय ठहरे ॥ ४ ॥

खूंटा में राती है गैया, श्वेत सींग हैं भाई ॥
अवरण वरण कछू नहिं वाके, भक्ष अभक्षो खाई ५
ब्रह्मा बिष्णु खोज कै आये, शिवसनकादिक भाई ॥
सिद्धअनन्त वहिखोज परे हैं, गैया किनहुँ न पाई ६

सो वह गैया खूंटा जो धोखाब्रह्म है तामें रातीहै अर्थात् ब्रह्म माया शबलित है अरु यहि गैयाके सींग श्वेत हैं कहे सत गुणी हैं सोई ब्रह्म में बांधिबो है और अवरणकहे असत औ वरणकहे सत ई वाके कोई नहीं हैं अर्थात् सत असतते बिलक्षण है अथवा अवरण कहे नहीं है वरण जाके ऐसो निरक्षर ब्रह्मनाम रूपादिक नहीं है जाके और वरण कहे अक्षर ब्रह्म जीव ई दोनों नहीं हैं वाके अर्थात् ई दोनों ते विलक्षण है और भक्ष अभक्षो खाइ है कहे जो कर्म करावनलायक है सो करावै है और जो कर्म

करावनलायक नहीं है सोऊ करावै है अर्थात् विद्यारूप ते शुभकर्म और अविद्यारूप ते अशुभकर्म करावै है सो वाको शिवसनकादिक ब्रह्मा विष्णु महेश अनन्त सिद्ध खोजमरे पै गेया कोऊ न खोजे पायो कि सत् है कि असत् है तात्पर्यऊ न जाने ॥ ५ । ६ ॥

कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जो या पद अरथाई ॥
जो या पद को गाइ बिचरि है, आगे ह्वै तरिजाई ७

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो! सुनौ जो यह पदको अर्थ है कहे अर्थ विचरि है और जौन पद हम वर्णन करिआये सब ब्रह्माण्ड सप्तावरण आदिदैकै जे पद हैं कहे स्थान तिनको जो कोई गाइ कहे मायाको रूपही विचारैगो कि यहांभर तौ मायाही है सो मायाके आगेह्वैकै साहब को लोक बिचारैगो सोई तरैगो॥७॥

इति अट्ठाईसवां शब्द समाप्तम् ॥ २८ ॥

अथ उन्तीसवां शब्द ॥ २९ ॥

भाईरे नयन रसिकजोजागै । परब्रह्म अविगत अविनाशी, कैसेहुकैमनलागै १ अमलीलोग खुमारीतृष्णा, कतहुँसँतोष न पावै । काम क्रोध दोनों मतवाले, माया भरिभरिप्यावै २ ब्रह्म कलारचढ़ाइनिभाठी, लैइन्द्रीरसचाखै । सँगहिपोचह्वै ज्ञानपुकारै, चतुर होइ सो नाखै ३ संकटशोच पोचयाकलिमों, बहुतक ब्याधि शरीरा। जहँवांधीर गँभीर अतिनिर्मल,तहँ उठि मिलहु कबीरा ॥४॥

यहां मायाके परे जे साहब हैं तिनको बतावै हैं ॥

भाईरेनयनरसिकजोजागै ॥
परब्रह्म अविगत अविनाशी, कैसे कै मन लागै १

हे भाइउ! नयनरसिक जो है संसारी चर्मचक्षु ते भिन्न भिन्न देखि विषयरस लेनवारो सो जो जागै कहे मुमुक्षुहोइ तो ब्रह्मके पार व अविगत कहे बिगत नहीं सर्वत्र पूर्ण व अविनाशी कहे जाको नाश कबहूं नहीं होइहै ऐसे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं

तिनमें केसेकै मनलागै जो कैसेहुकै पाठ होय तो यह अर्थ है जो कैसेहुकै मन लगवा करै तो बीचमें बहुत अवरोध हैं ॥ १ ॥

अमली लोग खुमारी तृष्णा, कतहुँ सँतोष न पावै ॥
काम क्रोध दोनों मतवाले, माया भरि भरि प्यावै २

सबलोग अमली हैं विषय छांड़्यो पै तृष्णाकी खुमारी लगी है अरु कहूं संतोष को नहीं पावै है फिरि काममत जो कोकशास्त्रादिक क्रोधमत जो मुद्राराक्षसादि ग्रन्थन में प्रतिपाद्य जे मत हैं तेई प्याला हैं तिनको काम क्रोधरूप जो मद सो माया भरि भरि उनको पिआवै है ॥ २ ॥

ब्रह्मकलार चढ़ाइनि भाठी, लै इन्द्री रस चाखै ॥
सँगहि पोच है ज्ञान पुकारै, चतुर होइ सो नाखै ३

प्रथम तो काम क्रोधादिकनते जागन नहीं पावैहै जो कदाचित् जाग्यो तो ब्रह्म जो कलारहै जे अहंब्रह्म बुद्धिकरै हैं गुरुवा लोग ते भाठी चढ़ाइन ज्ञान सिखवै लगे कि तुहीं ब्रह्म है ताही में इन्द्रिनको लैकरिकै अहंब्रह्मास्मि को रस चाखनलग्यो अर्थात् ब्रह्मानन्द को अनुभव करनलग्यो जो मद पियै है ताको ज्ञान भूलिजाय है यहै कहैहै कि महीं मालिक हौं सो जो गुरुवालोगन को संगकियो ब्रह्मानन्द पानकियो सो मैं साहब को हौं यहअक्क भूलिगई वही गुरुवालोगनको ज्ञानदियो पुकारन लग्यो कि महीं ब्रह्महौं जो चतुराई होइ सो विघ्नन को नाकि जाइहै ॥ ३ ॥

संकट शोच पोच या कलिमों, बहुतक व्याधि शरीरा ॥
जहँवां धीरगँभीरअतिनिर्मल, तहँ उठि मिलहु कबीरा ४

पोच कहे अज्ञानी जे जीव हैं तिनको यहि कलिमें कहे माया ब्रह्मके झगड़ा में बहुत संकट शोच व व्याधिशरीर को है सो जहां अतिधीर है कहे चलायमान नहीं है निश्चलपदहै व गंभीर कहे गहिर है व निर्मल कहे मायाब्रह्म को लेश नहीं है सो हे कबीर कायाके बीर जीवो ! मायाब्रह्म के तुम परे हौ तहांते उठिकै

कहे मायाब्रह्म के विघ्नते निकासिकै साहब को मिलौ तबहीं तिहारो जनन मरण छूटैगो ॥ ४ ॥

इति उन्तीसवां शब्द समाप्तम् ॥ २९ ॥

अथ तीसवां शब्द ॥ ३० ॥

भाईरे दुइ जगदीश कहांते आये, कहु कौने भरमाया। अल्ला रामकरीमकेशव हरि, हजरतनाम धराया १ गहना एक कनक ते गहना, तामें भाव न दूजा। कहन सुननको दुइकरिथापे, यक नेवाज यक पूजा २ वही महादेव वही महम्मद, ब्रह्मा आदम कहिये। कोइ हिन्दू कोइ तुरुक कहावै, एक जिमींपर रहिये ३ वेद किताब पढ़ैं वे कुतुबा, वे मोलना वे पांड़े। बिगत बिगतके नाम धरायो, यक माटीके भांड़े ४ कह कबीर वे दूनौं भूले, रामहिं किनहुं न पाया। वे खसिया वे गाय कटावैं, बादै जन्म गँवाया ॥ ५ ॥

अब यहां यह बर्णन करै हैं कि दूसरो जगदीश नहीं है परम पुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तेई जगदीश हैं ॥

भाईरे दुइ जगदीश कहांते आये, कहु कौने भरमाया ॥
अल्ला राम करीम केशव हरि, हजरत नाम धराया १
गहना एक कनक ते गहना, तामें भाव न दूजा ॥
कहन सुनन को दुइकरि थापे, यक नेवाज यक पूजा २

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे भाइउ! दुइ जगदीश कहांते आये तोको कौने भरमायो है अल्ला राम करीम केशव हरि हज़रत ये तो सब नामभेद हैं कहते तो एकही को हैं १ जैसे एक गहना को सुवर्ण ते गहना कहे गाहिलेइ कहे सुवर्ण विचारिलेइ तामें भाव दूजा नहीं है वह सुवर्ण है जैसे कोई चूड़ा कोई बिजायठ इत्यादिक नाम कहै हैं परन्तु है सुवर्णही तैसे कहिबे सुनिबे को दुइ करि थाप्यो है यक नेवाज़ यक पूजा परन्तु है सब साहब की बंदगीही परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रही को सेवै हैं ॥ २ ॥

वही महादेव वही महम्मद, ब्रह्मा आदम कहिये ॥
कोइ हिन्दू कोइ तुरुक कहावै, एक जिमीपर रहिये ३

वोही परम पर पुरुष श्रीरामचन्द्र को महादेव व महम्मद व ब्रह्मा व आदम सबकहिये कहे कहत भये कोई राम कहिकै कोई अल्लाह कहिकै कुरान में लिखे है कि सब नामन में अल्लाह नाम ऊपर है और यहां वेद पुराण में लिखे है कि सब नामन में रामनाम ऊपर है तामें प्रमाण "सर्वेषामपि मन्त्राणां राममन्त्रफलाधिकमिति" "सहस्रनाम तात्तुल्यं राम नाम वरानने" याते सबके मालिक परमपुरुष श्रीरामचन्द्र ही जगदीश हैं दूसरो जगदीश नहीं है उनहीं के अल्लाहनामको सब नामनतेपरे महम्मद कुरान में लिख्यो है व उनहीं नामको महादेवने तन्त्र में लिख्यो है और ब्रह्मा वेदमें कहतभये आदम किताब में कहतभये अरु इहां तो एकजे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनहींके जिमीमें कहे जगत् में रहतभये नामके भेदते कोई हिन्दू कोई मुसलमान कहावै है ॥३॥

बेद किताब पढ़ैं वे कुतुबा, वे मोलना वे पांड़े ॥
बिगत बिगत कै नामधरायो, यक माटी के भांड़े ४

जिनके पोथी जमा होय हैं ते कहावैं कुतुबा वे वेद पुराण जमा कैके पढ़हैं वे किताब जमाकैकै पढ़े हैं वे पण्डित कहावहैं वे मोलाना कहावै हैं वेद पढ़िकै पण्डित किताब पढ़िकै मोलना कहावैं बिगत बिगतकहे जुदा जुदा नाम धराय लेते भये हैं एकई माटीके भांड़े कहै हैं सब पञ्चभौतिकही हैं ॥ ४ ॥

कह कबीर वे दूनों भूले, रामहिं किनहुँ न पाया ॥
वे खसिया वे गाय कटावैं, बादैं जन्म गँवाया ५

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हिन्दू तो बोकरा मारिके मुसलमान गाय मारिके नाना प्रकार के वाद बिवाद करिके अथवा बादै कहे वृथा ही दोऊ भूलिके जन्म गँवाइ दियो परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र तिनको न पावत भये हिन्दू तुरुक के खुदखाविन्द एकई है कोई

बिरले जानैहैं ते वहां पहुँचे हैं तामें प्रमाण "छोड़ि नासूतमलकूत जबरूत लाहूत हाहूत बाजी। और साहूत राहूत इहां डारिदे कूदि आहूत जाहूत जाजी ॥ जाय जाहूत में खुदखाविन्द जहँ वही मक्कान साकेत साजी । कहै कबीर ह्वां भिश्त दोजख थके वेद कीताबकाहूत काजी ॥ ५ ॥

इति तीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३० ॥

अथ इकतीसवां शब्द ॥ ३१ ॥

हंसा संशय छूरी कुहिया । गैया पियै बछरुवै दुहिया १ घर घर सावज खेलै अहेरा, पारथ वोटा लेई । पानीमाहिंतलफिगै भूभुरि, धूरि हिलोरादेई २ धरनी बरसै बादलभीगै, भीट भया पैराऊ । हंस उड़ाने ताल सुखाने, चहले बीधापाऊ ३ जौलगि कर डोलै पगु चलई, तौलगि आश न कीजै । कह कबीर जेहि चलत न दीखै, तासु वचन का लीजै ॥ ४ ॥

हंसा संशय छूरी कुहिया , गैया पियै बछरुवै दुहिया १ घर घर सावज खेलै अहेरा, पारथ वोटा लेई ॥ पानीमाहिं तलफिगै भूभुरि, धूरि हिलोरा देई २

कबीरजी कहैहैं कि हे हंसा ! संशयरूप छूरीते मारिगयो तोको उलटो ज्ञान ह्वै गयो बछरुवा जो है तैसो तेरोस्वरूप ज्ञानरूप जो दूध ताको गैया जो माया सो दुहिकै पीलियो १ सावज जो या मन है सो घर घर में कहे शरीर शरीर में शिकार खेलै है पारथ कहे शिकारी जो तैं सो वोटालेइहै अर्थात् नाना उपासना नानाज्ञान करत फिरै है पै मन तोको नहीं छोड़ै है साउज ते नहीं बचैहै वाणीरूप जो है पानी नानाशास्त्र तौनेमें भूभुरि जो सूर्यन के तापते तपित भूमिहोय है सो भूभुरि कहावै है ऐसे संसार तापते तपित जो तेरा अन्तःकरण सो तलफिगयो अर्थात् अधिक अधिक शङ्का होत भई तिनते अधिक नसभयो शीतल न भयो

काहेते कि धूधुरि जो सूवा ब्रह्मज्ञान सो हिलोरा देनलग्यो कहे शास्त्रन में वही धोचाब्रह्मही देखपरनलग्यो शास्त्रनको तात्पर्य जे साहब तिनको न जान्यो ॥ २ ॥

धरती वर्षे बादल भीजै, भीट भया पैराऊ ॥
हंस उड़ाने ताल सुखाने, चहले बीधा पाऊ ३

बुद्धि जो है सो धरती है काहेते सब मतनको आधार यही है वाणीरूप पानी बरसै है कहे नानामतनको निश्चय कै कै प्रकट करै है अरु यह वाणी जीवही ते प्रथम निकसी है सो जीव बादल है सो भीजै कहे वोई मतन को ग्रहण कियो यह लोकोक्ति है कि फलाने फलानेमें भीजिरहेहैं कहे आसक्त ह्वैरहे हैं भीटचारयो वेदहैं मर्यादा ते पैराउह्वैगये कहे उनकी थाह कोई न पावतभयो अर्थात् तात्पर्य करिकै जो परमपुरुषश्रीरामचन्द्र को वर्णनकरै है सो कोई न पावतभयो ताल सूखे हंस उड़े है यहां हंस उड़े ताल सूखे हैं जब हंस उड़ोकहे यह जीव निकसिगयो तब ताल जो शरीर है सो सूखि गयो तब बासना जे हैं तेई चहला हैं तिनमें पाँउ बँधिरह्यो जैसे तलाउ जबसूखेउ और पुनि चौमासे में जब जल बरस्यो तब जस को तस ह्वैगयो तैसे बासना में पाँउ फँसिरह्यो है दूसर शरीर जब पायो तब फिर वही शरीर में तलाउ में हंस जीव बूड़न उतरान लग्यो है सो भाव यह कि उड़नको तो करै है शरीर तालते अन्तै नहीं जाइसकै है कोई योनिमें रहै ॥ ३ ॥

जौ लगि कर डोलै पग चलई, तौलागि आश न कीजै ॥
कह कबीर जेहि चलत न दीखै, तासु बचन का लीजै ४

जबलग पाँव चलैहै कर डोलै है कहे शरीर बनो है तबलागि गुरुवालोगनकी आश न करिये जो आश करैगो तो याही भांति बँधिरहैगो सो कबीरजी कहैहैं जे गुरुवालोग नानापदार्थन में आश लगाइ देइ हैं तिनहींते नहीं चलत बनैहै तौ तिनको कह्यो वचन कैसे लीजिये कहे कैसे मानिये अर्थात् उनके यहां न जाइये

काहेते कि वे साहबको भुलाइकै औरे में लगाइदेइँगे संसारही में फँसो रहैगो यामें धुनि यह है कि जे संसारते छूटे हैं रामोपासक हैं तिनहीं को वचन मानिये तिनहीं के यहां जाइये ॥ ४ ॥

इति इकतीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३१ ॥

अथ बत्तीसवां शब्द ॥ ३२ ॥

हंसा हो चित चेतु सबेरा । इन्ह परपञ्च करल बहुतेरा १ पाखण्डरूप रच्यो इन्हतिरगुण यहिपाखण्ड भूल संसारा । घरको खसम बधिक भो राजा परजा काधौं करै बिचारा २ भक्ति न जानै भक्त कहावै तजि अमृत विष कैलियसारा । आगे बड़े ऐसही भूले तिनहूँ न मानल कहा हमारा ३ कहल हमारा गांठी बांधो निशिबासरहि होहु हुशियारा । ये कलिके गुरु बड़ परपञ्ची डारि ठगौरी सबजग मारा ४ वेदकिताब दोय फन्द पसारा ते फन्देपर आप बिचारा । कह कबीर ते हंस न बिलुड़े जेहि में मिल्यो छोड़ावनहारा ॥ ५ ॥

हंसाहो चित चेतु सबेरा । इन्ह परपञ्च करल बहुतेरा १
पाखण्डरूपरच्योइन्हतिरगुण, तेहिपाखण्ड भूलसंसारा ॥
घरको खसम बधिकभोराजा, परजा काधौं करै बिचारा २

हे हंसा, जीवो ! सबेरेते कहे तबहीं ते चित्तमें चेत करौ सबेरेते कह्यो ताको भाव यह है कि जब काल नियराइ आवैगो तब कछू न करत बनैगो तिहारे फांसिबेको यह माया बहुत परपञ्च कियो है १ पहिले पाखण्डरूप जो वह धोखाब्रह्म है ताको रच्यो तामें मिलिकै तिरगुण जे सत, रज, तमहैं तिनको तिहारे फांसिबेको प्रकट कियो सो तीनों गुणाभिमानी जे तीनों देवता हैं अरु पाखण्ड रूप जो धोखाब्रह्म है तामें सब भूलिगये घरको खसम जब स्त्री को बधिक कहे दुःख देनलाग्यो मारनलाग्यो तब स्त्री कहाकरै तैसे जो राजा प्रजा को बधिक कहे मारनलाग्यो दुःख देनलाग्यो तब

विचारे प्रजा कहा करैं सो यह मनतो सबको मालिक ह्वैरह्यो है सो यही जो सबको दुःख देनलाग्यो तौ जीव कहाकरैं ॥ २ ॥

भक्ति न जानै भक्त कहावै, तजि अमृतबिषकैलियसारा॥
आगे बड़े ऐसही भूले, तिनहुं न मानल कहा हमारा३

भक्तिको तो जानै नहीं हैं भक्त कहावै हैं अमृत जो है परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रकी भक्ति ताको छोड़िकै बिष जो है और और की भक्ति ताको सार मानि लियोहै सो आगे जे बड़े-बड़े ह्वैगये हैं तेऊ ऐसेही भूलिगये हमारो कह्यो नहीं मान्यो साहब की भक्ति छोड़िकै और और की भक्ति करिकै संसारही में परतभये ॥३॥

कहलहमारागांठीबाँधौं, निशिबासरहिहोहुहुशियारा ॥
येकलिकेगुरुबड़परपञ्ची, डारि ठगौरी सब जग मारा ४

सो हमारो कहो गांठी बांधो जो अबहूं हमारो कह्यो न मानौगे साहबकी भक्ति न करौगे तौ संसारही में परौगे कलियुग के जे गुरुवा हैं ते बड़े परपञ्ची हैं सब जगका ठगौरी कहे ठगिकै परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनकी भक्ति को छोड़ाइकै और और मतनमें डारिदेइ हैं सो निशिबासर हुशियार रहो अर्थात् निशिबासर रामनामको स्मरण करतरहो साहबको जानतरहो गुरुवालोगनको कहा न मानो ॥ ४ ॥

बेद किताब दोयफन्द पसारा, ते फन्देपर आप बिचारा॥
कहकबीर ते हंस न बिछुरे, जेहि मैं मिलो छोड़ावनहारा ५

वोई जे गुरुवालोगहैं ते आइ ये वेद किताबको फन्दा पसारि कै नानामतमें करतभये सो वहीफन्द में आप परतभये व औरहू को वहीफन्दमें डारिकै नानामतमें लगाय देते भये वेद किताब को तात्पर्य न जानतभये सो कबीरजी कहै हैं कि जौने जीवको मैं फन्दते छोड़ावनहार मिल्योहौं और परमपुरुष में लगाइ दियो ते आजलौं नहीं बिछुरे न बिछुरैंगे सो तुमहूं पारिखकरिकै मेरो

कहो मानिकै हे हंस, जीवौ ! तुमहूं फन्द छोड़ि परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनमें लगो ॥ ५ ॥

इति बत्तीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३२ ॥

अथ तेतीसवां शब्द ॥ ३३ ॥

हंसा प्यारे सरवरतें जे जाय। जेहि सरवर विच मोतिया चुनते बहुबिधि केलि कराय १ सुखेताल पुरइनि जल छोड़े कमलगयो कुँभिलाइ। कह कवीर जो अबकी बिछुरै बहुरि मिलै कबआइ॥२॥

हंसा प्यारे सरवरते जे जाय ॥

जेहि सरवर विच मोतियाचुनते, बहुबिधिकेलि कराय १
सुखे ताल पुरइनि जल छोड़े, कमलगयो कुँभिलाइ ॥
कह कवीर जो अबकी बिछुरै, बहुरि मिलै कबआइ २

हे प्यारे, हंस ! सरवर जो शरीरहै ताते जे जाय कहे जिनके शरीर छूटिजाय हैं जौने सरवर शरीर को प्राप्त होइकै मोतिया चुनै हैं कहे ज्ञानयोगादिक साधन करिकै मुक्ति की चाहकरै हैं और बहुविधकी केलिकरै हैं जो रथाजे पाठ होय तो या अर्थ है हे हंसा, जीव ! प्यारो जो सरवर शरीर ताको त्यागे जाय है जौन सरवर शरीर में नाना देवतनकी उपासनारूप मोती चुने नानाबिषयन को भोग कीन्हे सो छोड़े जाय है १ सो शरीररूपी ताल जब सूख्यो कहे रोगकरिकै ग्रस्तभयो तब पुरइनि जल छोड़िदियो अर्थात् वह ज्ञान बुद्धि तुम्हारे न रहिगयो अरु अनुभव जो तुम करतरह्यो सोई कमल है सो कुँभिलाइगयो अर्थात् भूलिगयो सो कबीरजी कहै हैं कि यहितरहते जो अबकी बिछुरै कहे शरीर छूटि जाय तब पुनि कबै ऐसो शरीर पावैगो चौरासीलाख योनि भटकैगो तब फेरि कबहूं जैसे तैसे मिलैगो शरीरछूटे ज्ञान योगादिक साधन भलिजाय हैं तेहिते मानुषशरीर पायकै साहब को जानै वह

शरीरहू छूटे नहीं भूलै है काहेते कि साहबही आपनो ज्ञान देइ है और हंसस्वरूप देइ है ॥ २ ॥

इति तेंतीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३३ ॥

अथ चौंतीसवां शब्द ॥ ३४ ॥

हरिजन हंसदशा लिये डोलैं । निर्मल नाम चुनी चुनि बोलैं १ मुक्ताहल लिये चोंच लोभावै । मौनरहैकी हरिगुण गावै २ मानसरोवर तटकेवासी । रामचरणचित अन्तउदासी ३ काग कुबुद्धि निकट नहिं आवै । प्रतिदिन हंसा दर्शन पावै ४ नीर क्षीर को करै निबेरा । कहै कबीर सोई जन मेरा ॥ ५ ॥

जे साहबको नहीं जानै हैं तिनको कहि आये अब जे साहब को जानै हैं तिनकी दशा कहै हैं ॥

हरिजनहंसदशालिये डोलैं । निर्मलनामचुनीचुनिबोलैं १

हरि जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं तिनके जे जन हैं ते हंसदशा जो है शुद्ध जीव पार्षदरूपता तौनी दशा के लिये सर्वत्र डोलै हैं कहे फिरै हैं यहां हरि जो कह्यो ताको हेतु यह है कि अपने भक्तन की सिगरी बाधा हरै सो हरि कहावै है सो परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र उनकी सिगरी बाधा हरि लेइ हैं तब तिनके जन सुखपूर्वक संसार में फिरै हैं उनको संसार स्पर्श नहीं करै है अरु जो नाम माया शबलित है तिनको छोड़ि देइ हैं और निर्मल जो नाम रामनाम है मन बचनके परे अमायिक ताको चुनि चुनि कहे साहबमुख अर्थ ग्रहण करिकै और संसारमुख अर्थ छोड़िके बोलै है कहे रामनाम उच्चारण करै है यहां मन वचन के परे जो नाम है ताको कैसे बोलै है ऐसो जो कहो तो ये हंसदशा लिये डोलै है कहे जब शुद्धजीव रहिजाय है तब साहब अपनी इन्द्रिय देइ है तिनते तौने नाम को बोले है जैसे सूमा जरिजाय है तब वाकी ऐंठनभर रहिजाय है तैसे यह शरीर की आकृतिमात्र रहिजाइ है वह पार्षदही शरीर में

स्थितरहै है जब शुद्ध शरीर ह्वैजाइहै तब आपनो पार्षदरूप पावै है यह आगे लिखि आये हैं ॥ १ ॥

मुक्ताहललिये चोंचलोभावै। मौनरहै की हरिगुणगावै २

हंस मुक्ताहल चोंच में लिये बच्चन को लोभावै है जौन बच्चा माँगै है ताके मुँहमें डारिदेइ है ऐसे साधुन के मुखमें पांच मुक्ति हैं सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य, सालोक्य, साष्टर्य तिनते जीव को लोभावै है कहे सब यह जानै है कि इनहीं की दई दैजाइ है जो जौन मुक्तिकी चाह करिकै उनके समीप जाइ है ताको श्रीरामनाम के उपदेश करिकै तीन भाव बताइकै मुक्ति देइ हैं और आप मौनही रहै हैं कि साहब के गुणगाइकै छकेरहै हैं ॥ २ ॥

मानसरोवर तटके बासी। रामचरण चित अन्त उदासी३

और हंस जे हैं ते मानसरोवर के तटके वासी हैं अरु वे साधु कैसे हैं कि मनरूपी जो सरोवर है ताके तटके वासी हैं कहे मनते भिन्न ह्वैरहे हैं जामें हंसकी दशा है साहबकी दीन ऐसो जो चिन्मात्र आपनो स्वरूप है ताको परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनहींके चरणन में लगाइ राखै हैं अरुअन्त उदासी कहेजो वह धोखाब्रह्म म "अहंब्रह्मास्मि" मानिकै आत्माको अन्त ह्वैजाइ है आपै ब्रह्म मानिलेइ है वह जो है आत्माके अन्त ह्वैबेको मत धोखा तेहिते उदासी कहे उदास ह्वै रहे हैं अथवा अन्त जो है संसार ताते उदास रहै हैं॥ ३ ॥

कागकुबुद्धि निकटनहिं आवै। प्रतिदिनहंसादर्शनपावै ४
नीर क्षीर को करै निबेरा। कह कबीर सोई जन मेरा ५

तिनके निकट कागरूपी जो कुबुद्धि यह अज्ञान सो निकट नहीं आवै है तौ और मत कैसे आवै सो कबीरजी कहै हैं कि यह भांति जो चलै है सो हंस शुद्धजीव प्रतिदिन श्रीरामचन्द्र को दर्शन पावत रहै है सर्वत्र साहब को देखत रहै है ४ जैसे हंस नीर चीर को निबेरा करै हैं तैसे हंस जे साधु हैं ते असार जो

है नाना उपासना नाना ज्ञान तामें अमीसी जो वेद शास्त्र पुराणादिकन में साहब की उपासना ताको ग्रहण करै हैं और सब असार को छोड़िदेय हैं सो कबीर जी कहै हैं कि सोई जन मेरो है अर्थात् जे रामोपासक हैं तेई कबीरपन्थी हैं और सब पाखण्डी हैं जौने स्वरूप में हंसदशा है तौनेस्वरूप में साहब के स्फूर्ति कराय नाम जपैहैं तामें प्रमाण " माला जपौं न कर जपौं जिह्वा जपौं न राम । मेरा साईं हरि जपै मैं पावों विश्राम ॥ ५ ॥

इति चौंतीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३४ ॥

अथ पैंतीसवां शब्द ॥ ३५ ॥

हरि मोर पीव मैं रामकी बहुरिया । राम मोर बड़ा मैं तनकी लहुरिया १ हरि मोर रहँटा मैं रतन पिउरिया । हरिको नाम लै कातल बहुरिया २ छःमास ताग बर्षदिन कुकुरी । लोग बोलै भल कातल बपुरी ३ कहै कबीर सूत भलकाता । रहँटा न होय मुक्ति को दाता ॥ ४ ॥

हरिमोरपीवमैंरामकीबहुरिया।राममोरबड़ामैंतनकीलहुरिया १

मोर पीव हरि हैं पीवक है वे मोको पियार हैं मैं उनकोऊ पियार हौं अरु मैं परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्र की बहुरिया कहे नारी हौं यहां नारीकह्यो सो यह जीव साहब की चितुशक्तिहै तामें प्रमाण कबीरजीके आदिटकसार ग्रन्थ को ॥ आतम शक्ति सुबश है नारी । अमरपुरुष जेहि रची धमारी १ औ दूसरो प्रमाण सायरबीजकको । दुलहिनि गाऊ मंगलचार । हमरे घर आये रामभतार॥ तन रतिकरि मैं मन रतिकरिहौं पांचौंतत्त्व बराती । रामदेव मोरे ब्याहन ऐहैं मैं यौबन मदमाती ॥ सरिर सरोवर वेदीकरिहौं ब्रह्मा वेद उचारा । रामदेवसंग भांवरिलेहौं धनिधनिभागहमारा । सुरतेंतीसो कौतुक आये मुनिवर सहस अठाशी । कह कबीर हम ब्याहचले हैं पुरुष एक अबिनाशी २ अरु श्रीरघुनाथजी मोर बड़े हैं अरु मैं तनकी लहुरिया हौं कहे उनके शरीर सर्वत्र व्यापक

विभु हैं औ मैं अणु हौं तामें प्रमाण "अणुमात्रोप्ययंजीवःस्वदेहं व्याप्यतिष्ठति" (इतिस्मृतिः) ॥ १ ॥

हरिमोररहँटामैंरतनपिउरिया।हरिकोनामलैकातलबहुरिया २

अरु हरि जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते मोर रहँटा कहे चित् अचित्रूप ते जगत् बोई हैं अरु मैं रतनपिउरिया हौं यह जगत् जीवही के वास्ते बन्यो है तामें प्रमाण ॥ जीव सूत ह्वैकै लपटि रहे हैं मैं रतनकी पिउरिया हौं ताते मैं नहीं लपटौ हौं हरि जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको नामलैकै बहुरियाकहे उलटिकै मैं कात्यो अर्थात् जगत् को जगद्रूप करिकै नहीं देख्यो जगत् को चित् अचित्रूप करिकै देख्यो है रामनाम में बहुरिकै साहब सुखअर्थ देख्यो जगत् सुखअर्थ नहीं ग्रहण कियो ॥ २ ॥

छःमासतागबर्षदिनकुकुरी।लोगकहलभलकातलबपुरी ३

छःमहीना में एक ताग कात्यो छःमहीना में एक ताग और कात्यो तब वर्षदिनमा एक कुकुरी भै दोनों ताग मिलाय कै अर्थात् छःमहीनामें मैं आपनो स्वरूप समुझ्यो कि मैं साहब की नारी हौं और छःमहीनामें मैं साहब को स्वरूप समुझ्यो वर्षदिन में साहब को मिल्यो सो मैं तो इतनी देर करिकै मिल्यो साहब तो हजूरही रहैं ताहूमें लोग कहे हैं कि बपुरी भलकात्यो जो अनन्तकोटि जन्मते नहीं जाने है सो साहब को बपु आपनो बपु वर्षोंदिना में समुझ्यो ॥ ३ ॥

कहैकबीरसूतभलकाता। रहँटा न होय मुक्तिको दाता ४

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जौनेरहँटा जगत्ते सूत भल कात्यो है कतवैया कबीरजीको विवेक है सो रहँटा न होय यह मुक्ति को दाता है काहेते कि जब शुद्धआत्मा रह्यो है याको परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं न तिनको ज्ञान रह्यो और न संसार को ज्ञानरह्यो यह शुद्धरूप भरो रह्यो है तामें प्रमाण " नित्यःसर्वगतस्स्थाणुरचलोयंसनातनः" (इति गीतायाम्) जब यह याके मनभयो

तब संसार को कात्यो है और संसार में परिकै दुःख सुख भोग कियाहै और जब पूरा गुरु मिल्यो है तब परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको पाइके संसार ते छूटिगयो है और पुनि संसार में नहीं आयो सो कबीरजी कहै हैं कि यह रहँटा कहे संसार न होय मुक्ति को दाता है जो संसार बुद्धि करिकै देखै है सो संसार में रहै है और जो संसार को साहबको चित् अचित्रूप करिकै देखैहै ताको मुक्तिही देइ हैं या संसारै में आये मुक्ति भयो है ॥ ४ ॥

इति पैंतीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३५ ॥

अथ छत्तीसवां शब्द ॥ ३६ ॥

हरि ठग जगत् ठगौरीलाई । हरिवियोग कस जियहुरे भाई १
को काको पुरुष कौन काकी नारी । अकथ कथा यमजालपसारी २
को काको पुत्र कौन काको बापा । को रे मरै को सहै संतापा ३
ठगि ठगि मूल सबनको लीन्हा । रामठगौरी बिरलै चीन्हा ४
कह कबीर ठगसो मनमाना । गई ठगौरीठगपहिंचाना॥५॥

हरिठगजगतठगौरीलाई । हरिवियोगकसजियहुरेभाई १

हरिठग कहे हरिरूप द्रव्य के चोरावनहारे गुरुवालोग ते जगत् में ठगौरी लगाइके कहे उपदेश करिकै जीवको ठगि लेइ हैं और और में लगाइके सो हे जीवो ! हरिके वियोगते तुम कैसे जिओहौ ॥ १ ॥

कोकाकोपुरुषकौनकाकीनारी । अकथकथायमजालपसारी २
कोकाकोपुत्रकौनकाकोबापा । को रे मरै को सहै संतापा ३

यह संसार में जब सांचे साहबको भूल्यो तब को काको पुरुष है को किसकी नारी है अकथकथा कहे कहिबेलायक नहीं है काहेते कि जिनकी उपासना करैहैं आपन स्वामी मानैहैं तिनके स्वामी कबहूं होय है वोई या की नारी होय है दास होइहै कबहुं स्त्री पुरुष होय है पुरुष स्त्री होय है सो या यमकहे दोऊ विद्या

अविद्या के जालपसार्यो है २ को काको पुत्र है को काको बाप है को मरै है को संताप सहै है तुम को तो सुखै सुख है तुमहीं साहब हौ तुमहीं भोगी हौ ॥ ३ ॥

ठगिठगिमूलसबनकोलीन्हा।रामठगौरीबिरलैकीन्हा ४
कहकबीरठगसोमनमाना। गईठगौरी ठग पहिंचाना ५

सो यह समुझाइ समुझाइ सब गुरुवालोग मूल जो है साहब को ज्ञान सो ठगि लेतभये और जो यह पाठ होइ ठगि ठगि मूड़ सबन को लीन्हा तो यह अर्थ है कि सब जगको ठगि ठगि मूड़ि लियो कहे चेला करि लियो है सो यह ठगौरी जो रामकै परीहै कि रामको ज्ञान सब जीवनको गुरुवालोग ठगेलेय हैं जैसे कोई रुपयाको कपड़ाको घोड़ा को ठगैहै तैसे गुरुवालोग रामको ठगैहैं तामें प्रमाण "शास्त्रं सुबुद्ध्वातत्त्वेन केचिद्वादबलाज्जनाः। कामद्वेषाभिभूतत्वादहंकार वशंगताः॥ याथातथ्यं च विज्ञाय शास्त्राणां शास्त्रदस्यवः। ब्रह्मस्तेनानिरारम्भादम्भमोहवशानुगाः४" सो कबीरजी कहे हैं कि तुम्हारो मन ठग है जे गुरुवालोग तिन हीं सो मान्यो है ते तुमको ठगिलीन्हे हैं सो जब तुम ठगको पहिंचानि लेउगे कि ये ठगहैं तब तुम्हारी ठगौरी जातरहैगी॥५॥

इति छत्तीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३६ ॥

अथ सैंतीसवां शब्द ॥ ३७॥

हरिठग ठगत सकल जगडोला। गवनकरतमोसोंमुखहू न बोला १ बालापनके मीत हमारे। हमें छोड़ि कहँ चले सकारे २ तुम अस पुरुष हौं नारि तुम्हारी। तुम्हरि चाल पाहनहुंते भारी३ माटिकदेह पवन को शरीरा। हरिठग ठगत सो डरल कबीरा॥५॥

हरिठगठगतसकलजगडोला।गवनकरतमोसोंमुखहुनबोला १

जीव कहै हैं कि हरिको ठग जो गुरुवा है सो ठगहारी करिकै सब जीवन को ठगत कहे हरिते बिमुख करत जगडोला कहे

संसार में फिरै है अरु जब गवन करनलगे यम घेरिलियो तब मोसों मुखहू ते न बोले कि येतेदिन जौने जौनेमें लगेरहे ब्रह्म में अथवा जीवात्मा में ते न बचायो यह खबरि कहि समुझाय न दियो कि हम को धोखा ह्वै गयो तुमहूं धोखा में न परौ ॥ १ ॥

बालपन के मीत हमारे । हमैं छोड़ि कहँ चले सकारे ॥
तुमअसपुरुषहौंनारितुम्हारी।तुम्हरिचालपाहनहुतेभारी३

सो तुम बालापन के हमारे मीत हौ जबभर रह्यो जियो तबभर हमको धोखाहीमें लगायेरहे अब हमैं छोड़िकै सकारे कहे हमहीं ते आगे कहां जाहुगे काहेते कि तुम तो काहूको रक्षक मान्यो नहीं वही धोखा में लगेरहे आपही को मालिक मानेरहे अब तुम्हारी रक्षा कौनकरै सो जब तुम्हारी कोई न कियो यम लैही गये तो जौन ज्ञान हमको दियो है तौनेते हमारी रक्षा कौन करैगो २ तुम ऐसो हमारे पुरुष है तुम्हारी हम नारी हैं काहेते कि बीजमन्त्र हमको उपदेश दियो है सो तुम्हारी चाल पाहनौ ते भारीहै कहे पाहनौ ते जड़है तेहिते साहब को भुलाइ दियो ॥ ३॥

माटिकिदेहपवनकोशरीरा।हरिठगठगतसोडरलकबीरा४

माटी की यह देह है सो स्थूल शरीर नाशवान् है और पवन को शरीर सूक्ष्म शरीर है सो मनोमय चञ्चल है ज्ञानभये वहौ नाशवान् है तामें स्थित जे कबीर कहे काया के बीर जीव हैं ते हरि जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं सबके कलेशहरनवारे तिनको ठग जे गुरुवालोग हैं तिनके ठगत में कहे रक्षक को छपायदेत में जीवडरै है कि हमारी रक्षा अब कौन करैगो वह ब्रह्म तो धोखई है वातो गुरुवनहीं की रक्षा नहीं कियो और तेई मालिक होतो तौ माया के वश कैसे होते और यम कैसे धरिलैजाते॥४॥

इति सैंतीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३७ ॥

अथ अड़तीसवां शब्द ॥ ३८ ॥

हरिबिनुभर्मबिगुरबिनगन्दा । जहँ जहँ गये अपनपौ खोये

तेहिंफन्दे बहुफन्दा १ योगी कहै योगहै नीको द्वितिया और न भाई। चुण्डित मुण्डित मौनजटाधरि तिनहुं कहां सिधि पाई २ ज्ञानी गुणी शूर कवि दाता ये जो कहहिं बड़ हमहीं। जहँ से उपजे तहँहिं समाने छूटिगये सब तबहीं ३ बायें दहिने तजे बिकारे निजुकै हरिपद गहिया। कह कबीर गूंगे गुरखाया पूछे सों का कहिया॥ ४॥

या पदमें जे जीवनको गुरुवालोगन को उपदेश लग्योहै तिन को कहैहैं और गुरुवालोगन को कहैहैं॥

हरिबिनुभर्मबिगुरबिनगन्दा॥

जहँ जहँ गये अपनपौ खोये, तेहिफन्दे बहु फन्दा १

मलीनबुद्धि जाकी होइहै ताको गन्दा कहैहैं सो गन्दा जो यह जीव है सो बिना जाने भर्मते बिगरि जातभयो ताते चिन्मात्र हरि को अंश जो यह जीव ताकी नीचबुद्धि होइगई जहां गयो तहां तहां अपनपौ कहे मैं सांचे साहब को हौं यह ज्ञान खोयकै तौने फन्दा में परिकै तौने मतमें लगिकै बहुत फन्दा जे चौरासी लाख योनि हैं तिनमें भटकत भये॥ १॥

योगी कहै योग है नीको, द्वितिया और न भाई॥
चुण्डितमुण्डितमौनजटाधरि, तिनहुं कहां सिधिपाई २
ज्ञानी गुणी शूर कवि दाता, ये जो कहहिं बड़हमहीं॥
जहँ से उपजे तहँहिं समाने, छूटिगये सब तबहीं ३

जिनको जिनको यह पद में कहिआये ते ते आपने मत को सिद्धान्त करतभये कि हमारही मत सिद्धान्त है परन्तु रक्षकके बिना जाने जहांते उपजे तहैं पुनि समाइ जातभये अर्थात् जा गर्भते आये तौनेही गर्भमें पुनिगये जनन मरण नहीं छूटैहै जब दूसर अवतार लियो तब जौने जौने मतमें आगे सिद्धान्त करि राख्यो तें ते मत सब छूटिगये अथवा जहांते उपजे कहे जौने

लोकप्रकाश ते उपजे हैं तहैं समाने महाप्रलय में तब सब बिसरिगयो ॥ २ । ३ ॥

बायें दहिने तजो बिकारै, निजुकै हरिपद गहिया ॥
कह कबीर गूंगे गुर खाया, पूछे सों का कहिया ४

सो मन्त्रशास्त्र में जे बाममार्ग दक्षिणमार्ग हैं ते दोऊ बिकारई हैं तिनको दुहुन को छोड़िदेउ और हरि जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिहारे रक्षा करनवारे तिनके पदको निजुकै कहे आपनमानिकै गहौ अथवा निजुकै कहे विशेषिकै तिनके पदको गहौ जो कहो उनको बताइदेउ वे कैसेहैं तो वेतो मन वचन के परेहैं उनको कोई कैसे बताइसकै जो उनको जान्यो है ताको गूंगे कैसो गुरभयो है कछू कहि नहिं सकै है इशारहिते बतावे हैं वेदशास्त्र को तात्पर्य करिकै जो सज्जनलोग साहबको समुझावै है सो तात्पर्य वृत्तिही करिकै बतावै हैं ऐसे तुमहूं जो भजनकरौगे तो तुमहूं उनको जानि लेउगे कि ऐसे हैं ॥ ४ ॥

इति अड़तीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ३८ ॥

अथ उनतालीसवां शब्द ॥ ३९ ॥

ऐसे हरिसों जगत् लरतुहै । पण्डुर कतहूं गरुड़ धरतुहै १ मूस बिलारी कैसे हेतू । जम्बुक कर केहरिसों खेतू २ अचरजयक देखा संसारा । सोनहा खेद कुंजर असवारा ३ कह कबीर सुनो सन्तो भाई । यह सन्धी कोई बिरलै पाई ॥ ४ ॥

ऐसे हरिसों जगत लरतुहै । पण्डुरकतहूं गरुड़धरतुहै१

जैसे पूर्व कहिआये ऐसे रक्षक हरिसों जगत् लरतुहै कहे बिरोध करतुहै और जे उनके भक्त उनको बतावें हैं तिनके मत को खण्डन करै हैं सो हे मूढ़ ! पण्डुर कहे पनिहां पियरसर्प कहूं गरुड़को धरतु है जो डुण्डुभ पाठहोय तो डुण्डुभ पनिहां सर्प का नामहै सो रामोपासना गरुड़ है सो और मत जे सर्प हैं तिनको

कहां खण्डन कौन होइहै वही सबको खण्डन करनवारी है जो वाको रामोपासना को मन अच्छीतरहते जानौ होइ है ॥ १ ॥

मूस बिलारी कैसे हेतू। जम्बुक कर केहरि सों खेतू २

सो हे जीवो ! तुम्हारो ज्ञान तो मूस है और गुरुवालोगन को ज्ञान बिलारी है जे और और मत में लगावै हैं तुमको और और मत में लगाइकै खाइ लेइँगे तिनसों तुमसों कैसे हेतुभयो जम्बुक जो सियार सो केहरि जो सिंह है तासों खेत करैहै वह लरैहै सो जम्बुक अज्ञान है सो सिंह जो तुम्हारो जीव सो लरै है वह सिंह जीव कैसो है अज्ञानको नाश कै देनवारो है अर्थात् जब आत्मा को ज्ञान होइ है तब अज्ञान नाश ह्वै जाइहै ॥ २ ॥

अचरजयक देखासंसारा। सोनहाखेदकुंजर असवारा ३
कह कबीर सुनो सन्तो भाई। यह सन्धी कोइ बिरलेपाई४

सो हम यह बड़ो आश्चर्य देख्यो है सोनहा जो कूकुर सो कुंजर के असवार को खेदै है सो नाना मतवारे जेहैं तेई कुत्ते हैं ते कांउं कांउं कहे शास्त्रार्थ करिकै कुंजर के असवार जे हैं रामोपासना के साधक तिनको खेदै हैं कहे उनसों वे कल नहीं पावैहैं यहां कुंजर मन है ताको परमपुरुष श्रीरामचन्द्र लगाइदियेहैं और आप असवार हैं ३ सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो, भाई ! तुम सुनो मनते भिन्न ह्वैके साहब के मिलबे की जो है सन्धि भेद ताको कोई बिरला पाये है अर्थात् जबभर मन बनो रहै है तबभर वाको भ्रान्तिबेकी सन्धि बनीही रहै है मनते भिन्न ह्वैकै वाके भजन करिबेको उपाय कोई बिरला जानै है ॥ ४ ॥

इति उनतालीसवां सब्द समाप्तम् ॥ ३९ ॥

अथ चालीसवां शब्द ॥ ४० ॥

पण्डित बाद बदौ सो झूठा। रामके कहे जगतगति पावै खांड़ कहे मुख मीठा १ पावक कहे पाव जो दाहै जल कहे तृषा

बुझाई । भोजन कहे भूख जो भाजै तौ दुनियां तरिजाई २ नरके संग सुवाहरि बोलै हरिप्रताप नहिं जानै । जो कबहूं उड़िजाय जँगल को तौ हरिसुरति न आनै ३ बिनु देखे बिनु अरस परस बिनु नामलिये का होई । धनके कहे धनिक जो हो तो निर्धन रहत न कोई ४ सांची प्रीति बिषय माया सों हरिभगतन की हासी । कह कबीर यक राम भजे बिन बांधे यमपुर जासी ॥५॥

पण्डित बाद बदौ सो झूठा ॥
राम के कहे जगत गति पावै खांड़ कहे मुख मीठा १

सो हे पण्डितो ! जो बाद बदौ हौ सो झूठा है काहेते कि पण्डित तो वह कहावै है जाके सारासार बिचारिणी बुद्धि होई है सो सारासार बिचारिणी बुद्धि तो तिहारे है नहीं पण्डित भर कहावौ हौ काहेते कि सारशब्द को झूठा कहौहौ यह बाद् बदिकै राम के कहे ते जो गति पावतो तौ खांड़ौ कहे मुख मीठ ह्वै जातो ॥ १ ॥

पावक कहे पाव जो दाहे जल कहे तृषा बुझाई ॥
भोजन कहै भूख जो भाजै तौ दुनियां तरिजाई २
नरके संग सुवा हरिबोलै हरिप्रताप नहिं जानै ॥
जो कबहूं उड़िजाय जँगल को तौ हरिसुरति न आनै ३

जो पावक के कहे दाह पावतो तो जीभ जरिजाती और जल के कहे तृषा बुझाइ जाती और भोजन के कहते भूख भाजि जाती तौ राम के कहते दुनियां तरि जाती २ नरके पढ़ाये सुवा राम राम कहे हैं और श्रीरामचन्द्र को प्रताप नहीं जानैहै काहेते कि जब कबहूं जङ्गल में उड़िजाय है तब राम की सुरति नहीं करै है ऐसे जो तुम रामनाम कहि हरिको प्रताप जाना चाहौगे तो कैसे जानौगे ॥ ३ ॥

बिनु देखे बिनु अरस परस बिनु, नामलिये का होई ॥
धनके कहे धनिक जो होतो, निरधन रहत न कोई ४

बिना देखे बिना स्पर्श किये नाम लिये कहा होइ है अर्थात् जो कोई दूर होइ और देखै न स्पर्श न होइ और जो वाको नाम लेई तौ का जानि लेइहै नहीं जानै है धन के कहेते कोई धनिक ह्वै जातो तो निर्द्धनी कोई न होतो ऐसे नामलिये जो मुक्ति होत तो सब मुक्त होइजात सो हे पण्डितो ! तुम ऐसे असंगत दृष्टान्त देकै यह बाद बदौ हौ सो झूठा है काहेते कि रामनाम तो मन वचन के परे है और ये सब मन वचन में आवै हैं और वह राम नाम साहब के दियेते स्फुरित होइ है यहै रामनाम जपेते और ये सब अनित्य ह्वैजाइ हैं ॥ ४ ॥

सांची प्रीति विषय माया सों, हरिभक्तन की हासी ॥
कह कबीर यक रामभजे विनु, बांधे यमपुर जासी ५

सो कबीरजी कहैहैं कि हे नास्तिक पण्डितो ! विषय माया सों सांची प्रीति करौहौ और ऐसे ऐसे कुवाद बदिकै हरिभक्तन की हासी करौहौ नामरूप लीलाधाम को खण्डन करिकै सो एक जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनके नाम के विना भजन किये बांधे मोगरनकी मार सहत यमपुरहीको जाहुगे जे परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र तिनते विमुख हैं ते सब लोकनमा निन्दित हैं तामें प्रमाण "यश्च रामं न पश्येत्तु यं च रामो न पश्यति। निन्दितस्सर्वलोकेषु स्वात्माप्येनं विगर्हते" ॥ ५ ॥

इति चालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४० ॥

अथ इकतालीसवां शब्द ॥ ४१ ॥

पण्डित देखौ मनमो जानी। कहुधौं छूटि कहांते उपजी तबहिं छूति तुम मानी १ नादे बिन्दु रुधिर यकसंगै घटहीमें घट सज्जै। अष्टकमलकी पुहुमी आई यह छूति कहां उपजै २ लख-चौरासी बहुत बासना सो सब सरिभो माटी। एकै पाट सकल बैठारे सींचि लेतधौं काटी ३ छूतिहि जेंवन छूतिहि अँचवन

छूतिहि जगउपजाया । कह कबीर ते छूति विवर्जित जाके संग न माया ॥ ४ ॥

पण्डित देखो मनमोजानी ॥

कहुधौं छूति कहांते उपजी, तबहिं छूति तुम मानी १

हे पण्डित ! तुम मन में जानिकै कह बिचार कै देखौ तो और कहौ तो यह छूति कहांते उपजी है जो छूति तुम अपने मनमें मान्यो है ॥ १ ॥

नादे बिन्दु रुधिर यक संगे, घटही में घटसज्जै ॥
अष्टकमलकी पुहुमी आई, यह छुति कहां उपज्जै २

नाद ते पवन बिन्दुते बीर्य रुधिर के संगते घटहीमें घट सजै है बुद्बुदा होइहै सो अष्टदल को कमलहै तामें अटकिकै लरिका होइ है सो पुष्ट परै है सो लरिकौ के वाही भांति को अष्टदल कमल होइहै तौने अष्टदलकमलके दलदल में वाको मन फिरत रहैहै ताते तैसे नाना कर्म में लागिकै नाना स्वभाव वाके होइ हैं और जहां जहां की बासना करिकै मरै है तौनी तौनी योनि में प्राप्त होइहै एकै जीव बासनन करिकै सर्वत्र होइहै यह छूति कहां ते उपजैहै ॥ २ ॥

लखचौरासी बहुत बासना, सो सब सरिभो माटी ॥
एकै पाट सकल बैठारे, सींचि लेत धौं काटी ३

यह जीव बहुत बासनन में परिकै चौरासीलाख योनिन में भटकैहै शरीर सरिकै माटी ह्वै जाय है एकै पाट में कहे जगत् में नाना बासना करिकै माया सबको बैठावतभई कहे शरीरधारी सबको करतभई अरु ये शरीर सब माटिही आईं और माटी में मिलि जाइँगे और जीव सबके एकही है और एकही पाटमें बैठहैं सो वे जलको सींचिकै छूति काटि लेत हैं का जल सींचे छूति मिटिजाय है नहीं मिटै ॥ ३ ॥

छूतिहि जेंवन छूतिहि अँचवन, छूतिहि जग उपजाया ॥
कह कबीर ते छूति विबर्जित, जाके संग न माया ४

सो वही छूति जो है बासना सो जब उठी तब जेंवन कियो और वही बासना उठी तब अँचयो और कहां लों कहैं वही बासना ते जगत् उपज्यो है सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि जाके संग माया नहीं है सोई बासनारूपी छूतिते विबर्जितहै सो हे पण्डित! माया को जो तुम छोड़्यो नहीं छूति तिहारे भीतर घुसी है ऊपर के छूति माने कहा होइ बड़ी छूति कियोहै बासनैते चित्तकी वृत्ति उठैहै तब यह मानैहै कि हम ब्राह्मण हैं क्षत्रिय हैं वैश्य हैं शूद्र हैं ॥ ४ ॥

इति इकतालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४१ ॥

अथ बयालीसवां शब्द ॥ ४२ ॥

पण्डित शोधि कहहु समुझाई। जाते आवागमन नशाई ॥ अर्थ धर्म औ काम मोक्षफल, कौन दिशा बस भाई १ उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम, स्वर्ग पताल के माहे। बिन गोपाल ठौर नहिं कतहूं नरकजात धौं काहे २ अनजाने को नरक स्वर्ग है, हरिजाने को नाहीं। जेहि डरको सबलोग डरतहैं, सो डर हमरे नाहीं ३ पाप पुण्य की शङ्कानाहीं, स्वर्ग नरक नहिं जाहीं। कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जहँ पद तहां समाहीं ॥ ४ ॥

ते बासना माया के योग ते होइ हैं सो माया जौनी प्रकार ते छूटैहै सो उपाय कहैहैं अरु आचार को वहां खण्डन करि आये सो अब जौनी दशा में आचार नहीं है सो कहैहैं ॥

पण्डितशोधि कहहुसमुझाई, जातेआवागमन नशाई ॥
अर्थ धर्म औ काम मोक्षफल, कौन दिशा बस भाई १
उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम, स्वर्ग पताल के माहे ॥
बिन गोपाल ठौर नहिं कतहूं, नरकजात धौं काहे २

हे पण्डित ! तुमतो सारासार को विचार करौ हौ सो तुम शोधिकै मोसों समुझाय कहो जाते यह जीवात्मा को आवागमन नशाइ अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष ये फल कौनी दिशा में रहे हैं १ उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम स्वर्ग पाताल यहां सर्वत्र मैं ढूंढ़िडास्यों परन्तु बिना गोपाल कहूं ठौर न देख्यो गोपाल कहे गो जो इन्द्रिय जड़ मनादिक तिनके चैतन्य करनवारे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनहीं को सर्वत्र देखत भयो विषय इन्द्रिनते देवता मनते मन जीव ते जीव परमपुरुष श्रीरामचन्द्र ते चैतन्य है सो जीव उनको चित् शरीर अरु माया काल कर्म स्वभाव उनको अचित् शरीर है तेहिते बिना गोपाल कहूं ठौर नहीं है जीव नरक स्वर्ग जाय है सो अब बतावे हैं ॥ २ ॥

अनजाने को नरक स्वर्ग है, हरिजाने को नाहीं ॥
जेहि डरको सबलोग डरत हैं, सो डर हमरे नाहीं ३

श्रीकबीरजी कहै हैं कि अनजाने को नरक स्वर्ग है कहे जो कोई हरिको नहीं जानैहै ताको न स्वर्ग है न नरक है और जो कोई हरिको सर्वत्र जानैहै ताको न नरक है न स्वर्ग है जौन डर को सबलोग डराय हैं माया ब्रह्म नरक स्वर्गादिकन को तौन डर उनको नहीं है काहेते वे तो सर्वत्र साहबै को देखैहैं ॥ ३ ॥

पाप पुण्यकी शङ्का नाहीं, स्वर्ग नरक नहिं जाहीं ॥
कहै कबीर सुनोहो सन्तो, जहँ पद तहां समाहीं ४

और न उनको पाप पुण्य की शङ्का है काहेते कि जो कोई बद्ध होइ सो न मुक्त होइ तेहिते न वे बद्धही हैं न मुक्तही हैं तामें प्रमाण (श्रीभागवते) "बद्धो मुक्त इति व्याख्या गुणतो मे न वस्तुतः । गुणस्य मायामूलत्वान्न मे मोक्षो न बन्धनम्" हम तो सर्वत्र साहबही को देखे हैं वे नरक स्वर्ग को नहीं जाइ हैं सो कबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो ! सुनो ऐसी भावना जे नर करै हैं

ते नर जहां पद तहां समाहीं कहे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र के अंश हैं सो तिनहीं के स्थान में जाइ हैं ॥ ४ ॥

इति बयालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४२ ॥

अथ तेंतालीसवां शब्द ॥ ४३ ॥

पण्डित मिथ्या करौ बिचारा । ना ह्वां सृष्टि न सिरजनहारा १ थूल स्थूल पवन नहिं पावक, रबिशशि धरणि न नीरा । ज्योति स्वरूपी काल न उहवां, बचन न आहि शरीरा २ कर्म धर्म कछुवो नहिं उहँवां, ना कछु मन्त्र न पूजा । संयम सहित भाव नहिं एकौ, सोतो एक न दूजा ३ गोरख राम एकौ नहिं उहँवां, ना ह्वां भेद बिचारा । हरि हर ब्रह्म नहीं शिव शक्ती, तिरथौ नहीं अचारा ४ माय बाप गुरु जाके नाहीं, सो दूजा कि अकेला । कह कबीर जो अबकी समुझै, सोई गुरू हम चेला ॥ ५ ॥

पण्डित मिथ्या करौ बिचारा । ना ह्वां सृष्टि न सिरजनहारा १ थूलस्थूलपवन नाहिंपावक, रबिशशिधरणि न नीरा । ज्योतिस्वरूपी काल न उहँवां, बचन न आहिशरीरा २ कर्मधर्म कछुवोनहिं उहँवां, ना कछु मन्त्र न पूजा । संयमसहित भावनाहिंएकौ, सोतो एक न दूजा ३ गोरख राम एकौ नहिं उहवां, नाह्वांभेदबिचारा । हरिहर ब्रह्म नहीं शिवशक्ती, तिरथौ नहीं अचारा ४ माय बाप गुरु जाकेनाहीं, सो दूजा कि अकेला । कहकबीर जो अबकी समुझै, सोई गुरू हमचेला ॥ ५ ॥

हे पण्डित ! तुमतौ वह ब्रह्म को मिथ्यै बिचार करो हो जो यह पद में वर्णन करिआये सो वह में एकउ नहीं है वह तो धोख ही है सो कबीरजी कहे हैं कि सो वह आत्मा ते दूसर है कि अकेल वह ब्रह्म है जो अबकी समुझै कहे यह ज्ञानभयेपर समुझै

कि मैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को हौं वह ब्रह्म धोखा है सोई गुरू है मैं चेलाहौं काहेते कि मोहिं तो धोखई नहीं भयो है जो आपने को ब्रह्ममानिकै और साहब को समुझै है और वाको धोखा मानिलेइ सो मेरो गुरू है और मैं वाको चेला हौं अर्थात् सोई मोसों अधिक है काहेते कि वह धोखा में परिकै निकस्यो है यह प्रशंसा कियो ॥ ५ ॥

इति तेंतालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४३ ॥

अथ चवालीसवां शब्द ॥ ४४ ॥

बूझहु पण्डित करहु विचारी पुरुष अहै की नारी १ ब्राह्मण के घर ब्राह्मणी होती योगी के घर चेली । कलिमा पढ़ि पढ़ि भई तुरुकिनी कलिमें रहैअकेली २ बर नहिं बरै ब्याह नहिं करई पुत्र जन्म हो निहारी । कारे मूड़े यकनहिं छांड़ै अबहूं आदिकुवांरि, ३ मायिक न रहै जाइ न ससुरे साईं संग न सोवै । कह कबीर वे युगयुग जीवैं जातिपांति कुल खोवै ॥ ४ ॥

यह मायाही सब जगत् के जीवनको भरमायो है सो कहै हैं ॥

बूझहु पण्डित करहु विचारी, पुरुष अहै की नारी १
ब्राह्मण के घर ब्रह्मणी होती, योगी के घर चेली ॥
कलिमा पढ़ि पढ़ि भई तुरुकिनी, कलि में रहै अकेली २

सो हे पण्डित ! तुम बूझो न बिचारिकै कामकरो यह माया पुरुषरूप है कि नारीरूप है यह माया सबको लपेटिलियो है १ विद्या माया ब्राह्मण के तो ब्रह्मणी ह्वैकै बैठीहै ब्राह्मण कहैहैं कि हम ब्रह्म को जानै हैं "ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः" अरु घरमें ब्राह्मणी बैठाये रहैहैं वाको स्त्रीको भाव करैहैं बेटीसों बेटी को भाव बहिनी सों भगिनीको भाव मानै हैं सो कहो तो ब्रह्मभाव कबभयो जो कहो जिनके स्त्री नहीं है तिनको तो ब्रह्मभाव ठीक है तो उन के ब्रह्मजानपनीरूप ब्राह्मणी की गरूरी बनी है संयोगिन के तो

चेली ह्वै बैठी है और योगिन के योगीरूप ह्वै बैठाहै योगी महामुद्रा साधन करिकै वीर्य की उलटी गति करेदेइहैं सो जब वृद्ध भये तब षोड़श कन्या एक घर में रातिभरि राखिकै संभोग करि कै उनको वीर्य लिंगद्वारते खैंचिकै कपार में चढ़ाइ लेइ हैं तब आप तरुण ह्वै जाइ हैं वे षोड़शौ कन्या मरि जाइ हैं एतो बड़ो अनर्थ करैहैं जे प्राणायाम करिकै प्राण चढ़ाय लैजाइहैं तिनके कुण्डलिनी ह्वै बैठीहैं औ मुसल्मानन के जब बिवाह होइ है तब निगाह सों निगाह पढ़िकै कलिमा पढ़िकै तुरुकिनी होइ है और मुसल्मान होइहै सो ये उपलक्षणहैं अर्थात् ब्राह्मण में स्त्री के साथ कर्मरूप ह्वै कै और योगिनके दशमुद्रारूप ह्वैकै और मुसल्मानन में निगाह कलमा आदिदैकै सरारूप ह्वैकै अकेली मायही रहत भई साहब के काम ये एको नहीं हैं ॥ २ ॥

बर नहिं बरै ब्याह नहिं करई, पुत्रजन्म हो निहारी ॥
कारे मूड़े यक नहिं छांड़े, अबहूं आदि कुवांरी ३

बर कहे श्रेष्ठ जे हैं साहब के जाननवारे भक्त तिनको नहीं बरयो अर्थात् उनको स्पर्श विद्या अविद्या ये दोनों को नहीं है अरु खसम ब्रह्म है सो ब्याह नहीं करै है काहेते कि धोखा की भँवरी नहीं परै और माया को पुत्र जगत् है जाको गर्भधारण करै है सो कारे कहे जिन के शिखा है हिन्दूलोग और मूड़े कहे जिनके शिखा नहीं है मुसल्मान लोग तिनको एकऊ नहीं छोड़यो अब हूं भर वह आदिकहे आद्या जो माया है सो कुवांरी ही बनी है अर्थात् हिन्दू मुसल्मान को आपही बशकैलियो है इनके बश नहीं भई ॥ ३ ॥

मायिक न रहै जाइ न ससुरे, साईं संग न सोवै ॥
कह कबीर वे युग युग जीवैं, जाति पांति कुल खोवै ४

अरु मायिक जो है शुद्ध आत्मा जाके उत्पत्तिभई है माया तहां तो रहतहीं नहीं है वहां तो जीव के साहब को अज्ञानरूप

कारणमात्र रह्यो है और सासुर जो है लोकप्रकाश ब्रह्म जहां जीव मान्यो है कि ब्रह्म मैंही हौं सो धोखा है तहां नहीं जाइ है और वही साईं कहे पति है काहेते कि वही माया शबलित होइ है तब जगत् होइ है ताके सङ्ग नहीं सोवै है काहेते कि वह तो धोखई है और वह माया धोखा है जो कछु बस्तु होइ तब न वाके संग सोवै श्रीकबीरजी कहै हैं कि सब जगत् को माया लपेटि लियो है जे जीव साहब और साहब की जाति आप को मानै हैं और अपनी जातिपांति कुल खोवै हैं सोई माया ते बचे हैं और युग युग जियै हैं और सबको माया खाइही लियो है अर्थात् उनहीं को जनन मरण नहीं होइहै ॥ ४ ॥

इति चवालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४४ ॥

अथ पैंतालीसवां शब्द ॥ ४५ ॥

कौन मुवा कहु पण्डितजना । सो समुझाय कहौ मोहिं सना १ मूये ब्रह्मा बिष्णु महेशा । पार्बतीसुत मुये गणेशा २ मूये चन्द्र मुये रबि केता । मुये हनुमत जिन्ह बांधी सेता ३ मूये कृष्ण मुये करतारा । यक न मुवा जो सिरजनहारा ४ कहै कबीर मुवा नाहिं सोई । जाको आवागमन न होई ॥ ५ ॥

कौनमुवाकहु पण्डितजना । सोसमुझायकहौमोहिंसना १
मूये ब्रह्मा बिष्णु महेशा । पार्बतीसुत मुये गणेशा २
मूये चन्द्र मुये रबि केता । मुयेहनुमतजिन्हबांधीसेता३
मूये कृष्ण मुये करतारा । यकनमुवाजो सिरजनहारा४
कहै कबीर मुवा नाहिं सोई । जाको आवागमन न होई५

जिनको जिनको या पदमें वर्णन करिआये ते ते सब महाप्रलय में लीन होइहैं एक कहे सम अधिकते रहित जो साहब नहीं मुवा और सिरजनहार जो समष्टिजीव सो नहीं मुवा है अर्थात् सो रहि जाय है और कौन नहीं मुवा तिनको कबीरजी बतावै हैं जीव तो

मरै नहीं है शरीरही मरै है सो जे जे देवतनको मुवा कहिआये ते जौन रूप ते साहब के समीपरहै हैं सो स्वरूप उनको नहीं मुवै है पार्षद शरीर ते बनेरहै हैं यहां अपने अंशनते जगत् कार्यकरै है सो पूर्व लिखिआये हैं ॥ १ । ५ ॥

इति पैंतालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४५ ॥

अथ छियालीसवां शब्द ॥ ४६ ॥

पण्डित अचरज यक बड़ होई । यक मरमुये अन्न नहिं खाई । यक मर सीझरसोई १ करिअसनानतिलककरि बैठे, नौगुणकांध जनेऊ । हांड़ीहाड़हाड़थारीमुख, अबषटकर्मबनेऊ २ धरम कथै जहँजीवबधै, तहँअकरमकरमेरेभाई । जोतोहरेकोब्राह्मणकहिये, तौकेहिकहिय कसाई ३ कहै कबीर सुनोहोसन्तो, भरमभूलिदुनिआई । अपरमपार पारपुरुषोत्तम, यह गति बिरलैपाई ॥ ४ ॥

अब जे षट्कर्मी पण्डितलोग बलिदान करिकै मांस खाइ हैं तिनको कहै हैं ॥

पण्डित अचरज यक बड़ होई ॥

यक मरमुये अन्न नहिं खाई, यक मर सीझ रसोई १
करि असनान तिलक करि बैठे, नौगुण कांध जनेऊ ॥
हाड़ी हाड़ हाड़ थारीमुख, अब षट्कर्म बनेऊ २

हे पण्डित ! एक बड़ो आश्चर्य होइ है एक मरैहै ताके मरेते कोई अन्न नहीं खाय है और वाके छुयेते अशुद्ध ह्वै जाइहै अरु एक जीवको मारिलैआवै हैं तौने मुर्दाको रसोई मं सिझवै हैं १ और नौगुणको जनेऊ कांधे में डारिकै स्नान करिकै बड़ो वेदना ऐसो तिलक दैकै बैठैहैं सो कबीरजी कूटकरै हैं कि अब षट्कर्म बनि परयो कि हाड़ है थारी में हाड़ है मुखमें हाड़ है वही षट्कर्म ब्राह्मणके ये हैं पढ़ै पढ़ावै दानदेइ लेइ यज्ञ करै यज्ञ करावै इहां

ये षट्कर्म करे हैं एक हँड़िया दूजे हाड़ तीजे थारी चौथे हाड़ पाँचौ मुख छठों हाड़ अब ये षट्कर्म बनिपर्यो ॥ २ ॥

धरम कथै जहँ जीव बधै, तहँ अकरम कर मेरे भाई ॥
जो तोहरे को ब्राह्मण कहिये, तौ केहि कहिय कसाई ३
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, भरम भूलि दुनिआई ॥
अपरमपार पार पुरुषोत्तम, यह गति बिरलै पाई ४

जहां धर्मको कथै है क्रिया यज्ञ है देवपूजन पितर श्राद्ध है या धर्म है तहैं जीवनको मारै है सो हे भाइउ! जो करिबेलायक कर्म नहीं है सोऊ करैहैं ऐसे जे तुम्हारे कर्म हैं तिनको तो ब्राह्मण कहैंगे ब्रह्मके जनैया कहैंगे कसाई काको कहैंगे ३ श्रीकबीरजी कहै हैं कि ऐसे भ्रममें दुनियाँ भूलिरही है अपरमकहे परम नहीं ऐसी जो माया है ताते परब्रह्म है ताहूते पारपुरुष समष्टिजीव हैं जाके अनुभवते ब्रह्म भयो है ताहूते उत्तम श्रीरामचन्द्र हैं काहेते कि वे बिभु सर्वज्ञ हैं और जीव अणु अल्पज्ञ हैं ते श्रीरामचन्द्र जीकी जो यह गति है ज्ञान सो कोई बिरलै पाई है अर्थात् कोई बिरला जान्यो है कि सबते पर साहबई है उनते सम औ अधिक कोई नहीं है तामें प्रमाण "सकारणकारणकारणाधिपो नचास्य कश्चिज्जनिता नचाधिपः। न तस्य कार्यं करणं च विद्यते नतत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते" (इति श्वेताश्वतरोपनिषदि) "समो न विद्यतेतस्यविशिष्टः कुत एव तु" इतिवाल्मीकीये) और कबीरोजी को प्रमाण "साहब कहिये एकतौ, दूजा कहो नजाइ। दूजा साहब जो कहैं, बादबिडम्बनआइ ॥ जननमरणतेरहित है, मेरा साहब सोय। मैं बलिहारी पीउकी, जिन सिरजा सब कोय" ॥ ४ ॥

इति छियालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४६ ॥

अथ सैंतालीसवां शब्द ॥ ४७ ॥

पण्डितबूझिपिवोतुमपानी । जामाटीके घरमें बैठे, तामें सृष्टि समानी १ छपनकोटि यादव जहँबिनशे, मुनिजनसहसअठासी । परगपरगपैगम्बरगाड़े, तेसरिमाटीमासी २ मत्स्यकच्छघरियार बियाने, रुधिरनीरजलभरिया । नदियानीरनरकबहिआवै, पशु मानुष सबसरिया ३ हाड़झरीझरि गूदगली गलि, दूध कहांते आवै । सो तुम पाँड़े जेंवनबैठे, मटिअहिछूतिलगावै ४ वेदकिताब छोड़िदिहुपांड़े, ई सबमनकेकर्मा । कहै कबीर सुनोहो पांड़े, ई सब तुम्हरे धर्मा ॥ ५ ॥

जे दम्भकरिकै बड़ो आचार करै हैं जिनको चित्अचित् साहब को रूप है यह बुद्धि नहीं है ॥

पण्डित बूझि पियो तुम पानी ॥
जा माटी के घर में बैठे, तामें सृष्टि समानी १
छपनकोटि यादव जहँ बिनशे, मुनिजन सहस अठासी॥
परग परग पैगम्बर गाड़े, ते सरि माटी मासी २

सो हे पण्डित ! ज्ञानतो तिहारे है नहीं आचार करौहो सो तुम कहां को पानी पियौ हौ भला बूझिकै कहे बिचारिकै तौ पानी पियौ जौने माटी के घरमें अर्थात् पृथ्वी में तुम बैठेहौ तौने में सब सृष्टि समाइरहीहै १ और जौनी पृथ्वी में छप्पनकोटि यादव और अठासी हजार मुनि ये उपलक्षण हैं अर्थात् सब जीवन के शरीर वही माटी में मिलि मिलिकै सरिगये अरु परग परग में पैग़म्बर गाड़े हैं ते सब सरिकै माटी ह्वैरहेहैं तेहिते माटी मासी है कहे मांस में मिलिरही है और माटी मासी कहे मधुकैटभ के मांस की आइ ॥ २ ॥

मत्स्य कच्छ घरियार बियाने, रुधिर नीर जल भरिया ॥
नदिया नीर नरक बहि आवै, पशु मानुष सब सरिया ३

हाड़ झरीझरि गूद गली गलि, दूध कहांते आवै ॥
सो तुम पांड़े जेंवन बैठे, मटि आहि छूति लगावै ४

अरु नदिया के जल में मत्स्य कच्छ घरियार बियाने कहे होयहैं और रुधिर नीर मल इत्यादिक वही नदिया के जल में मिलिजाइ है और पशु मानुष जे सरिजाय हैं ते वही पानी पियो हौ और आचार करोहौ ३ दूधौ हाड़ते झरि झरि गूदते गलि गलिकै लोहू भयो वही लोहूते दूध भयो ताहीको लैकै हे पण्डित! तुम जेंवन बैठौहौ और माटी जो मांस है ताको छूति लगावो हौ कि मांस बड़ो अपवित्र है याको जे खाइ हैं ते बड़ो निषिद्धकर्म करै हैं सो कहो तो वह दूध मांसते कैसे भिन्न है ॥ ४ ॥

वेद किताब छोड़ि दिहु पांड़े, ई सब मन के कर्मा ॥
कहे कबीर सुनोहो पांड़े, ई सब तुम्हरे धर्मा ५

सो हे पांड़े! शुद्ध अशुद्ध तो वेद किताबते जाने जाइहैं ते वेद किताब को तुम छोड़िदियो ये जे सब कहिआये जे तुम धर्म करौ हौ ते तौ सब तुम्हारे मन के कर्म हैं आपने मनहींते ये सब तुम बनाइ लियो है इनते तुम न निबहौगे श्रीकबीरजी काकुकरैहैं कि, हे पांड़े! बिचारिकै देखौ ये सब तुम्हारे धर्म हैं अर्थात् नहीं हैं तुमतो साहबकेहौ अथवा कबीरजी कहै हैं एते सब कर्म करौहौ अपने मनके बनाये और वेद किताबौ के कहेते ये सब तुम्हारे धर्म कहे तुम्हारे शरीरमाहैं तेहिते शरीरते भिन्न ह्वैकै आपने स्वरूप को जानौगे तब आपने सांचे कर्मन को जानौगे यह व्यंग्य है ॥५॥

इति सैंतालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४७ ॥

अथ अड़तालीसवां शब्द ॥ ४८ ॥

पण्डित देखौ हृदयबिचारी । कौनपुरुषकोनारी १ सहजसमाना घटघटबोलै, वाको चरितअनूपा । वाकोनामकहाकहिलीजै, ना वह बरण न रूपा २ तैं मैं काहकरै नरबौरे, क्यातेरा क्यामेरा ।

रामखोदायशक्तिशिवएकै, कहुधौंकाहिनिबेरा ३ वेदपुराणकुरान-कितेवा नानाभांति बखानी । हिन्दू तुरुक जैनि औ योगी, एकल काहु न जानी ४ छःदरशन में जो परवाना, तासुनाम मनमाना। कहै कबीर हमहीं हैं बौरे, ई सब खलकसयाना ॥ ५ ॥

पण्डित देखो हृदय विचारी । कौन पुरुष को नारी १
सहज समाना घट घट बोलै, वाको चरित अनूपा ॥
वाको नाम कहा कहि लीजै, ना वह बरण न रूपा २

हे पण्डित ! तुमतौ सारासारको बिचार करौहौ हृदय में बिचारिकै देखौ तो कौन पुरुषहै कौन नारीहै वह आत्मा तो न पुरुष न नारी है १ जो कहो घट घट में सहजजीव ब्रह्म समाइ रह्यो है वाको चरित्र अनूप है सोई हमारो स्वरूप है तो वाको नाम कहां कहिलीजै वाको तो न वर्ण है न रूपहै वह तो धोखा है ॥ २ ॥

तैं मैं काह करै नर बौरे, क्या तेरा क्या मेरा ॥
राम खोदाय शक्ति शिव एकै, कहुधौं काहि निबेरा ३

और जो तैं मैं कहौहौ कि तैं मैं आह्यो मैं तैं आह्यो एकही ब्रह्म तो है तैं मैं कहाकरै है विचारिदेखु तौ क्या तेरा है क्या मेरा है सब साहबका तौ है जो तैं साहब होइ तब न तेरा होइ रामखोदाय और शक्ति शिव जे हैं तिनमें कहुधौं तैं काको निबेरा कियो है कि एक यह जगत्‌को मालिक है और वही मैं हौं अर्थात् इनकी सामर्थ्य तोमें एकऊ नहीं देखि परैहै ताते इनमें तैं कोई नहींहै ॥ ३ ॥

वेद पुराण कुरान कितेवा, नाना भांति बखानी ॥
हिन्दू तुरुक जैनि औ योगी, एकलकाहु न जानी ४

वही साहब को नाना नामलैकै कहै हैं सो वेद पुराण कुरान किताब में वही साहबको सबते परे नानाभांतिते नाना नाम लैकै वर्णन कियो है यही हेतुते हिन्दू, तुरुक, जैनि, योगी एकल कहे एक नामकरिकै कोई नहीं जान्यो कि एक यही सिद्धान्तहै यही

सबको मालिक है अथवा एकल कहे जौने करते जौने उपाय ते में मन वचनके परे साहब को जान्यो है सो कोई नहीं जान्यो॥४॥

छःदरशन में जे परवाना, तासु नाम मन माना ॥
कह कबीर हमहीं हैं बौरे, ई सब खलक सयाना ५

छइउ दर्शन में अरु जेते सब हिन्दू तुरुक आदि वर्णन करि आये तिन सबमें जौने धोखाब्रह्म को प्रमाण परे है तौनेही को नाम सब के मन में मानैहै कहत तौ मन वचनके परे हैं परन्तु कोई ब्रह्म कहिकै कोई अल्लाह कहिकै कोई जीवात्मा कहिकै वाही को सब मानै हैं सो कबीरजी कहै हैं कि सब खलक सयाना है काहेते कि कहते तो यह बात हैं कि वह तो मन वचन में आवतै नहीं है और जे मन वचन में आवै हैं तिनहीं में फिरि लागै है ताते हमहीं बौरहाहैं जो ऐसो कहै हैं कि साहब आपही ते कृपा करिकै अनिर्वचनीय रामनाम स्फुरित करि देइहैं ताहीके मिलन को उपाय बतावै हैं यह काकु करे हैं ॥ ५ ॥

इति अड़तालीसवां शब्द समाप्तम् ॥ ४८ ॥

अथ उनचासवां शब्द ॥ ४९ ॥

बुझ बुझ पण्डित पद निर्बाना । सांझपरेकहँवांबसभाना १ नीचऊँचपर्वतठेलानभीत । बिनागायनतहँवांउठगीत २ ओसन प्यासमँदिरनहिंजहँवां । सहस्रौधेनुदुहावैतहँवां ३ नितैअमावस नित संक्रांति । निननितनवग्रहबैठेपांति ४ मैंतोहिंपूछौंपण्डित जना । हृदयाग्रहणलागुकेहिखना ५ कहकबीरयतनौनाहिंजान । कौनशब्दगुरुलागाकान ॥ ६ ॥

अब योगिनको कहै हैं ॥

बुझबुझपण्डितपदनिरबाना।सांझपरेकहँवांबसभाना १
नीचऊँचपर्वत ठेलानभीत । बिनगायनतहवांउठगीत २

हे पण्डित ! तुम वह निर्बाणपद को बूझो तो जो त्रिकुटी में

ध्यान लगाइकै भानु कहे सूर्य देखौ हौ सो सूर्य सांझ परे कहे जब शरीर छूटिगयो तब कहां बसैहै १ नीचेते ऊंचे को कहे कुण्डलिनीतेंगैबगुफामें जब आत्मा जाइ है तौने पर्वत में न ढेला है न भीति है और बिना गायन तहँवां गीनउठैहै कहे अनहद की ध्वनि सुनिपरै है ॥ २ ॥

ओसनप्यासमँदिरनहिंजहँवां।सहस्रौधेनुदुहावैतहँवां ३

ओस जो वहां परै है कहे अमृत जो वहां झरै है ताको पान करिकै न प्यास ह्वैजाइहै कहे पियास नहीं लगै है अर्थात् ओसन पियास नहीं जाइहै जो मानि राखे हैं कि अमृत पीकै हम अमर ह्वैजाइँगे सो अमर न होउगे और जो गैबगुफा—पर्वतमें घर मानि राखे हैं सो वहां तेरो मंदिर कहे घर नहीं है अर्थात् वहां तो शून्य है तहां सहस्रदल में धेनु दुहावै हैं कहे धेनु जो है गायत्री ताको अर्थ जो है वह दूध ज्ञानस्वरूप ब्रह्म ताको विचार करै हैं आपने को ब्रह्म मानै हैं जब शरीरसरिजाइहै तब गैबगुफौ जरिजाइहै और फिरि शरीर धारणकरैहैं ॥ ३ ॥

नितअमावसनितसंक्रांति । नितनितनवग्रहबैठेपांति ४

और तहां नित अमावसरहैहै चन्द्रमा सूर्यन के ओट ह्वैजाइ सो अमावस कहावैहै सो यहांते आत्मा जाइकै ब्रह्मज्योतिमें लीन ह्वै जाइ है ताते नित अमावस रहै है और फिरि जब समाधि उतरी तब शङ्का में परिगयो वही वाको नित संक्रान्ति है व नित नवग्रह पांति जो है दुवार जामें ऐसो जो है ग्रह शरीर तौने की पांति बैठैहै कहे इतना योग साधैहै तऊ शरीर धारण करिबो नहीं छूटै है ॥ ४ ॥

मैंतोहिंपूछौं पण्डितजना। हृदयाग्रहणलागुक्यहिखना५

कहकबीरइतनौनहिंजान । कौन शब्द गुरुलागाकान ६

हे पण्डित ! तुमसों हम पूछै हैं कि जब समाधि उतरिआवैहै तब फिरि माया तुमको ग्रहण करिलेइहै औ निर्वाणपद कहतही

हौ सो निर्वाणपद जो जाते तौ कैसे उलटि आवते और कैसे नाना शरीर पावते सो देखनेहौ बूझते नहीं हौ यह अज्ञानरूपी राहुते तुम्हारे ज्ञानरूपी चन्द्रमा को कब ग्रहणकियो ५ श्रीकबीरजी कहे हैं कि इतनौ नहीं जानतेहौ कि शरीर के साधन यह ज्ञान कियेते शरीर मिलैगो कि छूटैगो अर्थात् शरीर के साधन कियेते शरीरही मिलैगो तेरे कान में लागिकै गुरुवालोग कौन सो हंसशब्द को उपदेश कियो है जाते परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को भूलि गये ॥ ६ ॥

इति उनचासवां शब्द समाप्तम् ॥ ४९ ॥

अथ पचासवां शब्द ॥ ५० ॥

बुझबुझपण्डितबिरवा न होई । अधबस पुरुष अधाबसजोई १ बिरवा एक सकल संसाला । स्वर्ग शीश जर गयल पताला २ बारह पखुरी चौबिस पाता । घनबरोह लागी चहुँघाता ३ फलैनफुलै वाकिहै बानी । रैनिदिवस बिकारचुवपानी ४ कहकबीरकछु अछलोन जहिया । हरिबिरवाप्रतिपालत तहिया ॥ ५ ॥

बुझबुझपण्डितबिरवा न होई । अधबसपुरुषअधाबसजोई १
बिरवाएकसकलसंसाला । स्वर्गशीशजरगयलपताला २

हे पण्डित ! यह संसाररूपी वृक्षको जो तैं बूझिराखेहै कहेमानि राखे है तैं बूझतौ जितने बिचार होइहैं तिनको यह मिथ्याही है हरिके चिद्अचिद्रूप ते सत्य है यह संसारवृक्ष आधा पुरुष है आधा प्रकृति है अर्थात् चित्पुरुष जीव और अचित् मायादिक इनहींते सम्पूर्ण जगत्है १ पुनि कैसो है संसाररूपी बिरवा याको स्वर्ग शीश कहे ब्रह्माण्ड को जो खपराहै सो शीशहै अरु याकी जर पाताल में गई है ॥ २ ॥

बारहपखुरीचौबिसपाता । घनबरोह लागी चहुँघाता ३
लैनफुलैवाकिहैबानी । रैनिदिवस बिकार चुव पानी ४

व बारहमहीना जे हैं ते बारे पंखुरी हैं अर्थात् काल और चौबिस तत्त्व वाके चौबिस पात हैं और घन कहे नाना कर्मन की बासना तेई घनबरोह चारों ओर लगी हैं ३ या संसाररूपी वृक्ष साहब को ज्ञानरूप फल नहीं फूलै और साहब को भक्तिरूप फल नहीं लगै है या संसार के बाहर भये ते होय है और रातिदिन बिकाररूप पानी चुवैहै ॥ ४ ॥

कहकबीरकछुअछलोनजहिया।हरिबिरवाप्रतिपालततहिया ५

सो कबीरजी कहै हैं कि जहां हरि परमपुरुष श्रीरामचन्द्र जाके अन्तःकरण में भागवतधर्मरूपी बिरवनकी बाग़ प्रतिपालै हैं तिनको यह संसाररूपी बिरवा अच्छा नहीं है व्यंग यह है कि माली जो होइहै सो कांटावाला पेड़निष्काम अलग कै देइहै इहां हरि संसाररूपी बिरवा अलग कैदेइ है भागवतधर्मरूप बिरवा श्रीकबीरजी रेखता में कह्यो ॥ धर्म की बाग़ फुलवारि फूलीरही शीलसंतोष बहुतकसोहाई। भक्तिका फूल कोउसंतमाथेधरै, ज्ञानमतभेदसतगुरुलखाई ॥ विवेक बिचारसोइबाग़देखनचले, प्रेमफलपाइटोरैचखाई। पराहै स्वाद जब और भावै नहीं, तजैगाप्राण की बहवई ॥ ५ ॥

इति पचासवां शब्द समाप्तम् ॥ ५० ॥

अथ इक्यावनवां शब्द ॥ ५१ ॥

बुझबुझपण्डितमनचितलाय। कबहिंभरलबहैकबहिंसुखाय १ खनउबैखनडुबैखनअवगाह। रतनननमिलैपाव नहिं थाह २ नदिया नाहिंसरसबहैनीर। मच्छनमरैकेवटरहैतीर ३ कह कबीर यह मन को धोखा। बैठारहैचलाचहचोखा ॥ ४ ॥

बुझबुझपण्डितमनचितलाय।कबहिंभरलबहैकबहिंसुखाय १

हे पण्डित! सारासारके बिचार करनवाले तेतो विवेक कहावै हैं चित्तलगाइकै यह मनको बूझि तौ कबहूं भरलकहे कबहूंतौ तैं

आपनेको मानिलेइहै कि मैंहीं ब्रह्म हौं आनन्दते भरिजाय है औ कबहूं वह ज्ञान वहिजाय है तब सुखाइजाइहै अर्थात् वह आनन्द नहीं रहिजाइहै ॥ १ ॥

खनउबैखनडुबैखनअवगाह।रतननमिलैपाव नाहिंथाह २ नदियानाहिंसरसबहैनीर । मच्छ न मरै केवट रहै तीर३

तब क्षण में संसार ते मन ऊबि उठैहै कहे वैराग्य ह्वै आवै है और क्षण में वही मनरूपी नदी हिलै हैं बूड़िजाय है अर्थात् संसार के विषय में बूड़िजाय है और क्षण में अवगाह है कहे नाना मत में बिचार करैहै कि संसार छूटिजाय सो मनरूपी नदी की थाह नहीं पावै है तेहिते रत्न जो है स्वस्वरूप सो नहीं मिलै है बिचारही करत रहिजाय है २ सो मनरूपी नदिया है नहीं जो तैं विचार करै तू तो मनके बाहरहै परन्तु सरसनीर सङ्कल्पबनै है अब मच्छ को मारनवालो केवट ज्ञान तीर में बनै है परन्तु काम क्रोधादिक मच्छ तेरे मारे नहीं मरै हैं ॥ ३ ॥

कहकबीर यहमनकाधोखा।बैठा रहै चलाचहचोखा ४

सो कबीरजी कहै हैं कि नानामत में परिकै संसार छूटिबे को नहीं उपाय करौहौ व चोखे कहे नीके चला चाहौ हो परन्तु हौ बैठे कहे साहब के मिलिबे को उपाय ये एकऊ नहीं हैं काहेते कि पश्चिम को ग्राम नगीचऊ होइ और तहां जाइबो चाहै व जस जस पूर्व को मेहनत करिकै मंज़िलकरै तौ तस तस दूरिहीं परतु जाइहै यह संसार मनको धोखा मिथ्या है सो मनते भिन्न ह्वैकै साहब में लगै तबहीं साहब मिलैंगे ॥ ४ ॥

इति इक्यावनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५१ ॥

अथ बावनवां शब्द ॥ ५२ ॥

बूझिलीजै ब्रह्मज्ञानी । घोरि घोरि बर्षा बरषावै, परियाबुन्द न पानी १ चींटीकेपगहस्तीबांधे, छेरीबीगैखायो । उदधिमाहँते

निकसिछांछरी, चौड़ेगेह करायो२ मेढुकसर्परहैयकसंगै, बिल्लीश्वान बियाही । नितउठिसिंहसियारसोंजूझै, अदभुत कथो न जाही ३ संशयमिरगातनबनघेरे, पारथबानामेलै।सायरजरैसकलबनडाहै, मच्छअहेराखेलै ४ कह कबीर यह अद्भुतज्ञाना, को यहि ज्ञानहि बूझै । विनु पंखै उड़िजाहिअकाशै, जीवहि मरण न सूझै ॥ ५ ॥

बूझिलीजैब्रह्मज्ञानी ॥

घोरि घोरि बर्षा बरषावैं, परिया बुन्द न पानी १

हे ब्रह्मज्ञानी ! आप बूझिये तौ घोरि घोरि कहे नये नये ग्रन्थन को बनाइकै कहे माया ब्रह्मजीव एकैमें मिलाइडास्यो कि एक ही ब्रह्म है वही वाणी शिष्यनके श्रवण में बर्षा ऐसो बर्षावो हो परन्तु तुम्हारे बानीरूप पानी को बुन्दहू न उनके पस्यो अर्थात् तनकऊ ज्ञान न भयो वे ब्रह्म कबहूं न भयो सो तुम्हारो यह हवाल हैरह्यो है ॥ १ ॥

चींटी के पग हस्ती बाँधे, छेरी बीगै खायो ॥
उदधिमाहँ ते निकसि छांछरी, चौड़े गेह करायो २

चींटी कहिये बुद्धि को काहेते कि सूक्ष्म होइ है कुशाग्रवर्ती शास्त्र में कहे हैं ताके पाइँ में मतङ्गरूप जो मन है ताको बांधि दियो मन बड़ा है व दुर्वारमत है याते हाथी कह्यो तब छेरी जो है माया सो बीगा जो है जीव ताको खाइलियो जीवको बीगा काहेते कह्यो कि जो जीव आपनेस्वरूप को जानै तौ छेरी जो है माया ताको नाशकैदेइ सो छेरी मायही बीगा जीवको आपने पेट में डारिलियो अरु छेरी माया को कहै हैं तामें प्रमाण " अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णाम् " इत्यादि सो लोक प्रकाश जो उदधि तहां ते निकारिकै चौड़ी छांछरी जो संसार तामें मच्छरूप जीव घर माया ते बनवायो अर्थात् संसारी है गयो ॥ २ ॥

मेढुक सर्प रहै इकसंगै, बिल्ली श्वान बियाही ॥

नितउठिसिंहसियारसोंजूझै, अद्भुत कथो न जाही ३

वह कैसो संसार है जहां मेढुकजीव और सर्प काल एकैसंग रहै हैं नाना शरीरन को काल खात जाइ है पुनि पुनि शरीर होत जाइ है अरु बिल्ली जो है मानसीवृत्ति सो श्वान भवानन्द ताको विवाही गई अर्थात् वाही में लागिगई वृत्तिको बिल्ली काहेते कह्यो कि बिल्ली जहां गोरस देखैहै तहैं जाइहै और यह वृत्ति जो है सोऊ जहैं रस जो है सुख सो देखै है तहैं जाइहै सो श्वान भवानन्द में बहुत सुख देख्यो याते वाही को विवाही गई तब नित उठिकै सिंह जो ज्ञान सो सियार अज्ञान ते मारो जाइ है जो कह्यो ज्ञान तो अज्ञान को नाश करनवारो है अज्ञान ते ज्ञान कैसे नाश होइ है सो वह जो ब्रह्मज्ञान कियो कि हम ब्रह्म हैं सो अद्भुत है कहिबे लायक नहीं है नेति कहै हैं अर्थात् कोई जीव ब्रह्म नहीं भयो यह कौनेहू शास्त्र पुराण में नहीं कह्यो कि फलानो जीव ब्रह्म ह्वैगयो याही ते मूलाज्ञान में ठहराये हैं ॥ ३ ॥

संशय मिरगा तन बन घेरे, पारथ बाना मेलै ॥
सायर जरै सकल बनडाहै, मच्छ अहेरा खेलै ४

येई दुइतुक अधिकसे जानेपरैहैं परन्तु पोथी में लिखो लख्यो अर्थ करिदियो सो शरीरवनको संशय जो मिरगा है सो घेरे है व पारथ जे हैं गुरुवालोग ते संशयरूपी मृगा के मारिबे को बाण जो है नाना प्रकार को उपदेशरूप वाणी ताको मेलैहैं सो उनको वाणीन ते संशय तो नहीं दूरि होइहै कहा है सो कहै हैं सायर जो है विवेकसागर सो जरिजाइहै व नाना शरीर जे वनहैं ते लाइ देइहैं अर्थात् गुरुवनकी वाणी सुनि सुनिकै शिष्यलोग जब और और जीवन को उपदेश कियो तब उनको सबको साहब को विवेक जरिजारि गयो औरे और में लागिगये विवेक करिकै साहब को ज्ञान जो ह्वैबे को रहै सो न भयो तब संसारसमुद्र में मच्छ जो है काल सो अहेर खेलै है अर्थात् जीवनको खाइ है ॥ ४ ॥

कह कबीर यह अद्भुत ज्ञाना, को यहि ज्ञानहि बूझै॥
विन पंखे उड़ि जाहि अकाशै, जीवहि मरण न सूझै ५

श्रीकबीरजी कहै हैं कि यह संसार अद्भुत है और ब्रह्म अद्भुत है इन दूनों को ज्ञान जिनको है कि ये धोखा है ऐसो कोहै अर्थात् कोई नहीं है परन्तु जो कोई बिरला बूझनवारो होइ और मन माया ये दोनों धोखा हैं येई तहँ उड़े हैं नाना पदार्थन को स्मरण होइ है नानायोनि पावै है संसार में तिनको छोड़ि एक परमपुरुष श्रीरामचन्द्रही को ह्वैरहै तौ ब्रह्म जो है आकाश ताते उड़ि कहे निकसिकै साहब के यहां पहुँचै जाइ जो कहो विना पखना कैसे उड़िजाय सो यहां उपासना दुइ प्रकार की हैं एक बांदरकैसो बच्चा भजन करै है कि बांदर को बच्चा अपनी माता को आपही धरे रहैहै सो यह जीव नाना प्रकार के शास्त्रादिकनते विचार करिकै व असांच मत खण्डन करिकै आपही अपने साहब को धरे रहै है भ्रम में नहीं परै है और दूसरी उपासना बिलारी के बच्चा कीसी है बिलारी को बच्चा और सबकी आशा तोरे माता की आशा किये रहै है सो वह बिलारी अपने बच्चाको जहां सुपास देखै है तहां आपही उठाइ लैजाइ है तैसे यह जीव वेदशास्त्र को छोड़ि कै न काहूके मत के खण्डन करिबे को सामर्थ्य है न अपने मत के मण्डन करिबे की सामर्थ्य है साहब को जानै है कि मैं साहब का हौं दूसरो मत सुनतही नहीं है सो जब सब पक्ष को छोड़िकै साहब को ह्वैरह्यो तब याको साहबही हंसस्वरूप देकै अपने लोक को उठाइ लैजाइहै॥ ५॥

इति बावनवां शब्द समाप्तम्॥ ५२॥

अथ तिरपनवां शब्द॥ ५३॥

गुरुमुख॥ वह बिरवा चीन्है जो कोई। जरामरणरहितै तन होई १ बिरवा एक सकलसंसारा। पेड़ एक फूटल तिनडारा २ मध्यके डारि चारि फललागा। शाखापत्रगनतकोवागा ३ बेलि एक

त्रिभुवन लपटानी । बांधेतेछूटिहिनहिंपानी ४ कहकबीरहमजात पुकारा । पण्डित होय सो करै बिचारा ॥ ५ ॥

वहबिरवा चीन्है जो कोई । जरामरण रहितै तन होई १

जो बिरवा को आगे वर्णनकरै हैं ताको जो कोई चीन्है व असार मानि लेइ व सार जो साहब हैं तिनको जानै सो पार्षद स्वरूप ह्वैजाइ व जन्म मरण ते रहित ह्वैजाइ ॥ १ ॥

बिरवा एक सकल संसारा । पेड़ एक फूटल तिन डारा २
मध्यकेडारचारिफललागा । शाखापत्र गनतकोबागा ३

सो एक बिरवा सब संसार है तौने बिरवा को पेड़ कहे मूल बिराट् पुरुष है तौनेमें ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीनि डार फूटयोहै २ सो मध्यकी डार जे विष्णु हैं तिनमें अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष ये चारि फल लागत भये चारिफल के देवैया विष्णु हैं सो जो कोई विष्णु का उपासक होइ सो चारों फलको पावै है डारन जो डरैया कहै हैं ते शाखा कहावै हैं सो ब्रह्मा-विष्णु-महेश जे तीनि डारै हैं तिनते नाना देव नाना मत भये तेई शाखा हैं तिनको को गनत बागा है अर्थात् उनको अन्त कोई नहीं पायो व सतोगुणी, रजोगुणी व तमोगुणी जे नाना बासना होत भई तेई पत्र हैं ॥ ३ ॥

बेलिएक त्रिभुवन लपटानी । बाँधेतेछूटिहिनाहिं पानी ४
कहकबीर हमजातपुकारा । पण्डितहोयसोकरै बिचारा ५

वृक्ष में बेलि लपटै है सो यह संसाररूपी वृक्ष में आशारूपी बेलि लपटि गई है तामें बँधिकै प्राणी छूटै नहीं है ४ साहब कहैहैं कि हे कबीर ! कहेजीव, ताको संसार जातमें हम पुकारा है राम नाम को सो पण्डित होई तौ विचार करिलेई अर्थात् असार जो राम नाम में जगत्मुख अर्थ ताको छांड़ि राम में सार जो मैं ताको जानिकै रामनाम जपिकै मेरे पास आवै ॥ ५ ॥

इति तिरपनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५३ ॥

अथ चौवनवां शब्द ॥ ५४ ॥

साईंकेसँगसासुर आई। संग न सूती स्वाद नमानी, गयोयौवन सपनेकी नाईं १ जनाचारि मिलि लगन शोचाई, जनापांच मिलि मण्डपछाई। सखी सहेली मङ्गलगावैं, दुखसुख माथे हरदि चढ़ाई २ नानारूप परी मनभांवरि, गांठि जोरि भई पतिआई। अरघे दै दै चली सुवासिनि, चौकहिरांड़भई सँग साईं ३ भयो विवाहचली बिनदूलह, बाटजान समधी समुझाई। कह कबीर हम गौने जैबै, तरबकन्तलैतूरबजाई ॥ ४ ॥

यह जीव परमपुरुष श्रीरामचन्द्रकी शक्ति है सो जौनी भांति ते याको आपने स्वरूपको ज्ञान रह्यो है व फिरि भयो है सो लिखै हैं॥

साईं के सँग सासुर आई ॥

सङ्ग न सूती स्वाद न मानी, गयोयौवनसपनेकीनाई १

परमपुरुष श्रीरामचन्द्र के लोक को प्रकाश जो ब्रह्म है ताको साईं मानिकै ताही सङ्ग सासुर जो यह संसार है तहां आई सासुर संसार काहेते ठहस्यो कि अहंब्रह्मबुद्धि संसारही में होइहै जब संसारके बाहिरे रहैहै तबतो याको सुधिही नहीं रहैहै जब महाप्रलय ह्वै जाइहै तब सत् जो है साहब के लोक को प्रकाश ब्रह्म ताही में सब रहै हैं जब उत्पत्ति का समयभयो सुरति पायो तब आपने को लोकप्रकाश ब्रह्म मान्यो तब मनभयो मनते इच्छा भई तब यह ब्रह्म कहै हैं कि मैं जीवात्मा में प्रवेश करिकै नामरूप करिकैहों सो जीवात्मामें प्रवेश करिकै नामरूप जीवात्माके करतभयो याही ते याको साईं मानि कै चित्शक्ति जीव सासुर जो संसार तहां आवत भयो सो वह ब्रह्म को खसम मानिलेबो धोखा है काहेते कि वह तौ निराकार है सो वाके सङ्ग न सोवत भई न स्वाद पावत भई नानारूप धरत भई तेई यौवन हैं जे सपने की नाईं जातभये सो जौनी भांति चित्शक्ति जीव साईं के संग ससुरे में आई सो लिखै है अपने को ब्रह्म मान्यो तब संसार की उत्पत्ति भई तामें

प्रमाण कबीरजीके शब्द मङ्गलको ॥ सो उत्पत्तिबीज है शून्यप्रलय कर ठाउँ । तनछूटे वह जाइ हौ अकह बसायोगाउँ ॥ १ ॥

जनाचारमिलिलगनशोचाई,जनापांचमिलिमण्डपछाई॥ सखी सहेली मङ्गलगावैं, दुखसुखमाथे हरदि चढ़ाई २

जनाचार कहे मन बुद्धि चित्त अहंकार ये जे अन्तःकरण चतुष्टय हैं तेई मिलिकै लग्न शोचावतभे अर्थात् जीवको शरीर की लग्न लगावत भे व जना पांच कहे पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश ये पांचों तत्त्व मिलिकै मण्डप छावत भये शरीर बनावत भये व सखी सहेली जे हैं पांच कर्मेन्द्रिय ते मङ्गल गावै हैं गाइबो कहा है कि रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द ये विषय को लेनलगे और नाना प्रकार की जे पुण्य पाप की वृत्ति हैं तेई कुवांरी कन्या हैं सो नाना प्रकार के पुण्य पाप कराइ कै दुःख सुख की हरदी जीवरूप दुलहिनि के माथे चढ़ावै हैं ॥ २ ॥

नानारूप परी मनभांवरि, गांठीजोरि भईपतिआई ॥ अरघै दै दै चलीसुवासिनि, चौकहिरांड़भईसँगसाई ३

और नानारूप कहे नानाभांति की जे बासना हैं तिनहीं की याके मनमें भांवरि परिगईहै और चित् अचित् की गांठी परिगई ताहीते ब्रह्म को पतिआइकहे पतिआइगई है अर्थात् ब्रह्मको पतिमानिलियो है कि वह ब्रह्म महीं हौं हेतु यह है कि जब बिवाह ह्वैजाइहै तब स्त्री अर्द्धाङ्गी ह्वैजाइहै व सुवासिनि वे कहावै हैं जे या कुलकी कन्या अनत बिवाहीरहै हैं सो जब संसार में जीव ब्रह्मफांस में फँसिगयो तब सुवासिनि जे हैं साहब के जनैया जिनको ब्रह्म सों बिवाह नहीं भयो ते अरघ दैकै कहे उपदेशकरिकै वाको लैचले सो यद्यपि याको चौका बनोहीहै मड़येके तर बैठीही है अर्थात् यद्यपि संसार में शरीर धारण कियेहै परन्तु तहँ रांड़ ह्वैगई ब्रह्मको पति मानि राख्यो है सो बिचार मारिगयो अर्थात् वाको धोखा समुझि लियो इहां रांड़ ह्वैबो कहिआये और सांच

साईंको संग बन है यह जो कह्यो सो साहब सर्वत्र बनै है वह अहंब्रह्म को विचार मिटिगयो ॥ ३ ॥

भयो बिवाह चलीबिनुदूलह, बाटजातसमधीसमुझाई ॥
कह कबीर हम गौने जैबे, तरब कन्तलै तूर बजाई ४

सो इसतरहते विवाह भयो कहे इसतरहते संसारी भयो और पुनि बिन दूलह चलतभई कहे अहंब्रह्म बुद्धि न रहिगई मुक्ति ह्वैके चितृशक्ति जीव साहब के पास जाइबेकी गैललियो सो वह बाट जातमें समधी जो है शुद्ध समष्टि जीव सो याको समुझावत भयो कि जैसे हम शुद्ध हैं तैसे तुमहूं शुद्ध हौ अर्थात् जब जीव साहब के लोक प्रकाशको बोधिकै साहब के लोकको चल्यो तब यह समुझत भयो कि जैसे ये शुद्ध रहे हैं तैसे हमहूं शुद्ध रहे हैं यह बीचही में धोखा भयो है उनको देखिकै यह ज्ञान भयो यही उनको समुझाइबो है यही समुझबोहै सो कबीर जो है काया को बीर जीव सो कहैहै कि मन वचन के परे जो साहब के ऊपर दूसरो साहब नहीं है जासों हमारो विवाह ह्वैबेको नहीं है वह हमारो सदा को कन्तहै तहां हम गवने जाइ हैं अर्थात् तहां को हम गवन करैंगे अरु वाही कन्त को लैकै कहे पाइकै तरिजाब और कन्त को लैकै न तरैंगे व तहैं परम मुक्तिरूपी तूर बजावैंगे अर्थात् और ईश्वरन में लागे व आपने को ब्रह्ममाने मुक्तिरूपी तूर न बाजैगो अर्थात् संसार व सब उपासना और ब्रह्म ह्वैजाइबो ये सब तूरिकै साहब के पास जाइकै अर्थात् डङ्कादैकै जाइगो ॥ ४ ॥

इति चौवनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५४ ॥

अथ पचपनवां शब्द ॥ ५५ ॥

नलको ढाढ़स देखो आई । कछु अकथ कथा है भाई १ सिंह शार्दुल यकहर जोतिनि, सीकस बोइनि धाना । बनकी भलुइया चाखुरफेरै, छागरभयेकिसाना २ कागा कपरा धोवन लागे, बकुल-

किररै दांता । माछी मूड़ मुड़ावनलागी, हमहूं जाव बराता ३ छेरी बाघहि ब्याह होतहै, मङ्गलगावैं गाई । बनके रोझधैदाइज दीन्हो, गोह लोकंदै जाई ४ कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जो यह पद अर्थावै । सोई पण्डित सोई ज्ञाता, सोई भक्त कहावै ॥ ५ ॥

जिनको सद्गुरु मिले तिनको या भांति उद्धार हैगयो व जिनको सद्गुरु नहीं मिले जे सद्गुरु को नहीं मान्यो तिनको गुरुवालोग और और मत में लगाइ देइ हैं वे साहब को नहीं जानैहैं सो कबीरजी कहैहैं ॥

नलको ढाढ़स देखो आई । कछु अकथ कथा है भाई १

साहब कहतेहैं कि हे भाई, हे सन्तो ! ढाढ़स देखो यह जीव मेरो अंश है सो मोको नहीं जानैहै और और में लागिके खराब होइहै नाना दुःख सहैहै मोको जानिके दुःख नहीं त्याग करैहै बड़ो ढाढ़सी है सो हे भाइउ ! ढाढ़स करिके जोनेके लिये जामें यह लागैहै सो ब्रह्म अकथ कथाहै कहिबे लायक नहीं है वह ब्रह्म विचार झूठा है वहां कछू प्राप्ति नहींहै सो अकथकथा कहैहैं॥ १॥

सिंह शार्दुल यकहरजोतिनि, सीकस बोइनि धाना ॥ बनकी भलुइया चाखुर फेरै, छागर भये किसाना २

यहां सिंह जो है जीव शार्दूल जो है मन येई दोऊ बैल हैं कर्म जो है सोई हर संसार सीकस भूमि है कहे ऊसर भूमि है अजा कहावै है माया सोई छेरी ताको पति बोकरा है सो छागर कहावै तेई माया में लपटे किसान गुरुवालोग सो जोतिके उपदेशरूप धान बोवत भये व तौने नवानावके जे भलुइया कहे भुलावनहारे पण्डित तेई चाखुर फेरै कहे निरावै हैं अर्थात् ताते वृत्ति करिके वेद जो साहब को बतावै है ताको अर्थ फेरिडारैहै॥ २॥

कागा कपरा धोवन लागे, बकुला किररै दांता ॥ माछी मूड़ मुड़ावन लागी, हमहूं जाव बराता ३

नाना पाखण्ड मतमें परे ऐसे जेहैं मालिन पाखण्डी जीव तेई

काग हैं ते कपरा धोवनलगे कहे सबको उपदेश करैहैं कि हमारे मतमें आवो तो हम तुम्हारो अन्तःकरण शुद्धकरिदेइँ व रूपक पक्षमें जब बरात जाइहै तब सवुनीकरिकै लोगजाइहैं ताते यहां सवुनी करिबो लिख्यो अरु जिनके अन्तःकरणरूपी धोवनको वे उपदेश कियो तेई बकुलाभये कहे ऊपर ते तो वेष बनाये चन्दन टोपीदिये हैं और अन्तःकरण मलीन है विषय में चित्त लगाये रहैहैं जहां कोई सन्तमत कहन लगैहै ताको खण्डन करिडारै हैं दांत किररै हैं कहे कोप करै हैं जैसे बकुला ऊपरते तो स्वच्छ है और नदी के तीर मछरी खाइबे को बैठ है भीतर बासना मलीन भरी है हंस आवै है तिनको डेरवाय कै बैठन नहीं देइ है दांत किररैहै तैसे बरात जब चलैहै तब कारिंदा कामकाजी सफ़ेद कपरा पहिरि दांत किररै हैं कि यह काम करो वह काम करो कहां बैठे हो यह रिस करै हैं व माछी कहे जो माया ते क्षीण हैबेको बिचार करै हैं ते माछी कहवावै हैं अर्थात् मुमुक्षु ते नाना मतके जे गुरुवालोग हैं तिनके यहां मूड़ मुड़ावै हैं कि हमहूं बरातजाब कहे हमहूं मुक्ति होब सो वहां मुक्ति तो पायो नामहि पररूपी मीठी बाणी में परिकै आपने को ब्रह्म मानतभये तेहिते स्वस्वरूप को ज्ञान न रहिगयो माया में फँसि गये और रूपकपक्षमें दुलहा के संगती जे हैं ते बार बनवावै हैं ॥ ३ ॥

छेरी बाघहि ब्याह होत है, मङ्गल गावै गाई ॥
बनके रोझधै दाइज दीन्हो, गोह लोकन्दै जाई ४

अब ब्याह को रूपक कहे हैं गुरुवालोग जेहैं तेई पुरोहित हैं उपदेश करनवारे ते छेरी जो है माया ताको और बाघ जो है जीव ताको ब्याह होतहै अर्थात् जीवको माया में डारि देइहैं और छेरी जो है माया ताको बाघ जो है जीव सो खाइलेनवारो है अर्थात् जो जीव आपने स्वरूप को जानै तौ माया को नाशकरिदेइ अरु तहां गायरूपी जो गायत्री है सो मङ्गल गावै है अर्थात् सब जीव को कर्तव्य गायत्री गावै है वेद गायत्री ते कह्यो है और बन कहे

वाणीको रोम जो है प्रणव ताको दाइज दीन्हों यहां रोमको प्रणव काहेते कह्यो कि रोम गवय कहावै हैं काहेते कि गोकी सदृश होइ है सो गैया जो है गायत्री ताके सदृश प्रणवही है अर्थात् वह गायत्री प्रणवही ते निकसी है प्रणव ब्रह्म है ताको दाइज दीन्हों कहे ब्रह्म मैंही हौं यह प्रणव को अर्थ समझाइ दीन्हों कन्या के साथ जो डोलहाई जाइ हैं ते लोकन्दी कहावै हैं सो यह लोकोक्ति है मिथिलाकैती कहै हैं सो गोह जो है सो लोकन्दै जाइ है कहे डोलाके साथ जाइहै वहां गोह कहे गो जो इन्द्रिय हैं जब जीव माया में लपटै तब और चञ्चल ह्वैजाइ है नाना शरीररूप डोला में चढ़ा जीव ताही के साथ साथ जाइहै ॥ ४ ॥

कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जो यह पद अर्थावै ॥
सोई पण्डित सोई ज्ञाता, सोई भक्त कहावै ५

सो कबीरजी कहै हैं कि साहबको कह्यो जो यह पद है ताको हे सन्तो! तुम सुनो इस पद में जे भ्रम बर्णन कियो तिनको छोड़िकै यह पद को अर्थ सांच जो साहब ताको जानै असांच को छोड़ै सोई पण्डितहै सोई ज्ञाता है सोई भक्तहै ॥ ५ ॥

इति पचपनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५५ ॥

श्रीकबीरजी साहब की उक्ति में कहैहैं गुरुमुख ॥

अथ छप्पनवाँ शब्द ॥ ५६ ॥

नलको नहिं परतीति हमारी । झूठे बनिज कियो झूठेसन, पूंजी सबै मिलिहारी १ षटदर्शन मिलि पन्थ चलायो, तिरदेवा अधिकारी । राजादेश बड़ो परपंची, रङ्अतरहत उजारी २ इतते उत औ उतते इतरहु, यमकी सांटसवारी । ज्यों कपिडोर बांधि बाजीगर, अपनेखुशी परारी ३ यहैपेठउत्पत्ति प्रलय को, विषया सबै बिकारी । जैसे श्वानअपावनराजी, त्योंलागी संसारी ४ कह कबीर यह अद्भुतज्ञाना, मानो बचन हमारो । अजहूं लेहु छोड़ाय कालसों, जो घटसुरति सँभारो ॥ ५ ॥

नल को नहिं परतीति हमारी ॥
झूठे बनिज कियो झूठे सन, पूंजी सबै मिलि हारी १

सबते गुरु परमपरपुरुष पर श्रीरामचन्द्रकहै हैं कि नरको हमारी परतीति नहीं है सबलोग झूठेसों झूठी बनिज करतभये कहे झूठे ब्रह्ममें जे लगावै हैं ऐसे जे गुरुवालोग हैं सौदागर तिनसों झूठी वनिज करतभये कहे झूठे ब्रह्ममें लगावै हैं ऐसे जे गुरुवालोगहैं सौदागर तिनसों झूठी बनिज करतभये अर्थात् जो वे उपदेश कियो कि तुमहीं ब्रह्महौ सो झूठा है तासों बनिजकरिकै पूंजी सब हारिगयो कहे आपनी आत्माको ज्ञान भूलिगयो कौन ज्ञान भूलिगये कि यह आत्मा तो मेरो सदाको दास है बद्धहु में मुक्तहूमें है तामें प्रमाण "दासभूताःस्वतःसर्वेह्यात्मनःपरमात्मनः। नान्यथा लक्षणन्तेषां बंधे मोक्षे तथैवच" (इति पद्मपुराणे) जो कहौ भुलवाइकौन दियो ॥ १ ॥

षट दर्शन मिलि पंथ चलायो, तिरदेवा अधिकारी ॥
राजा देश बड़ो परपंची, रइअत रहत उजारी २

औ षट्दर्शन जे हैं ते मिलिकै नानापंथ चलावतभयो कोई योगीह्वैकै योगधारण करनलग्यो औ कोई अनुभव कथिकै शून्य ज्ञान पंथ चलायो अरु कोई नाना प्रकार के कर्म करने लगे औ कोई नाना उपासना करने लाग्यो औ कोई मैं ब्रह्महौं यह कहने लग्यो औ कोई कर्त्ता न्यारा है यह कहने लग्यो औ कोई मत छोड़िकै आत्मामें स्थितभयो या ब्रह्माण्ड में ब्रह्मा विष्णु महेश अधिकारी हैं ते सब मतनके अधिष्ठाताहैं या हेतुते सत रज तमते कोई नहीं छूट्यो औ ओई राजा जे हैं ब्रह्मा विष्णु महेश औ उनको देश जो है सत रज तम सो बड़ो परपञ्ची है याहीते रइअत जे सब जीव हैं तिनके अन्तःकरण उजारि रहे हैं मोर जो है भक्ति मोरे जो है ज्ञान सो उनको अन्तःकरण में नहीं होन पावे है ॥ २ ॥

इतते उतरहु उतते इतरहु, यम की सांटसँवारी ॥

ज्यों कपि डोर बांधि बाजीगर, अपने खुशी परारी ३

तेहिते इतउत कहे कहूं स्वर्ग जाइ है कहूं नरक जाइ है कहूं आपने उपास्यदेवतनके लोकजाइ फिरि इहां आयके उनहींकी उपासना करैहै औ पुनि जब उपासना भूले तब पुनि पापकरिकै नरक जाइहैं तिनके वास्ते यमकी सांटसँवारी कहे यमके दंडते नहीं बचैहै जौने कपि कहे बाँदर को बाजीगर आपनी डोरी ते बांधे है औ वह बांद्र बाजीगरके बश ह्वैगयो तब अपनी खुशी ते वाके बंधन में परो रहै है नानानाच नाचैहै प्रथम चित्शक्ति में जगत् को कारणरूप बनो रह्यो ताते याही भांति सब जीव माया ब्रह्मके बश ह्वैगये तब वहो बंधन में अपनी खुशी ते परे रहै हैं वही ब्रह्मको ज्ञान करैहैं मोको नहीं जानैहैं ॥ ३ ॥

यहैपेठ उत्पत्ति प्रलय को, बिषया सबै बिकारी ॥
जैसे श्वान अपावन राजी, त्यों लागी संसारी ४

यहै मायाब्रह्म उत्पत्ति प्रलयको पेठहै अरु संसारमें जे संपूर्ण बिषयहैं तेई बिकारहैं याते मोहिंते व्यतिरिक्त जे पदार्थ संसारमें ज्ञान योग वैराग्य भक्ति आदिक जेहैं ते सब बिषयहैं या हेतु ते कि जामें जामें मन लगैहै ते तब मनकी बिषयहैं ते सब बिकारई हैं औ जो यहै पेठ उत्पत्ति प्रलयको सौदा सबै बिकारी ऐसो पाठ होइ तौ यह अर्थ पेठ नाउँ हाटको यह देशभाषा है सो अनन्त कोटि ब्रह्माण्डनके उत्पत्ति प्रलय को माया ब्रह्म दोनों तरफ की पेठ कहे बजारैहं सो यह जगत् शहर है बिषयरूपी सौदा जो है ताके संसारी जीव लगनवारे हैं सो जैसे श्वान कुत्ता सो अपावन जो हाड़ है ताको चाटैहै तब वोहीके दांतते लोहू निकसैहै सो हाड़ में लगैहै सोऊ चाटते जाय है वही में राजी रहै है तैसे यह आत्मा अपने भ्रममें परा है वहीको भ्रम नानाबिषय में सुखरूप देखो परै है सो बिषय तो जड़ है बिषय में सुख नहीं है याहीको सुख बिषयन में जाइरहैहै आपने सुख बिषयमें पावैहै अरु मानै

यह है याही को सुख विषयन में जाइ रहैहै आपनो सुख विषय में पावै है अरु मानै है कि मैं विषय को सुख पाऊं हौं अरु वह ब्रह्म को अनुभव कियो तहां वाके आत्मै को सुख मिलै है जानै यहहै कि मोको ब्रह्मानन्द भयो है काहेते कि जबभर अहंब्रह्म बुद्धिरहैहै तबभर तो मूलाज्ञान ठहगइहै जब सबको निराकरण ह्वै गयो एक आत्माही को ज्ञान रहिगयो सो ब्रह्मानन्दरूप होइ है तेहिते वह ब्रह्मानन्द आत्माही को आनन्दहै सो जैसे श्वान आपने ही लोहू के स्वादते हाड़को चाटैहै तैसे यहौ आपनो सुख विषय ब्रह्म में पाइकै भूलि रह्यो संसारी ज्ञान याके लागिरह्यो है ॥ ४ ॥

कह कबीर यह अद्भुत ज्ञाना, मानो बचन हमारो ॥
अजहूं लेहुं छोड़ाय कालसों, जो घट सुरति सँभारो ५

सो हे कबीर, कायाके बीर जीवो ! हम तुमसों यह अद्भुत ज्ञान कहैहैं हमारो वचन मानौ जो अपने घट में सुरति सँभारो और वह सुरति मोमें लगावो तो अबहूं कहे माया ब्रह्म में तुम परेहौ ताहू पर तुमको मैं कालते छोड़ाय लेउँ अथवा अजहूं को भाव यहहै कि कालकी डाढ़ में तुम परिचुके हौ सो कालते तुम को छोड़ाइ लेउँगो ॥ ५ ॥

इति छप्पनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५६ ॥

अथ सत्तावनवां शब्द ॥ ५७ ॥

नाहरिभजै न आदतछूटी । शब्दैसमुझिसुधारतनाहीं, अँधरेभये हियो की फूटी १ पानीमाहँ पषानकी रेखा, ठोंकत उठैभभूका । सहसघड़ानितही जलढारै, फिरि सूखेका सूका २ सेतेसेतेसेत अङ्गभो, शयनबढ़ीअधिकाई ।जोसनिपातरोगिअहिमारै, सोसाधुन सिधिपाई ३ अनहदकहत कहतजगाबिनशे, अनहदसृष्टिसमानी । निकट पयानायमपुरधावै, बोलहिएकहिबानी ४ सतगुरुमिलेबहुत सुखलहिया, सतगुरुशब्दसुधारै । कहकबीरसो सदासुखारी, जो यहि पदहि बिचारै ॥ ५ ॥

नाहरि भजै न आदत छूटी ॥
शब्दै समुझि सुधारत नाहीं, अँधरेभयेहियोकीफूटी १

ना तैं हरि भजैहै अरु ना तेरी आवागमनकी आदत कहे स्वभाव छूट्यो यह अर्थ साहब कैवहै शब्दको सुनिकै व विचारिकै जो आपनो नहीं सुधारै है सो काहे नहीं सुधारै है काहेते कि साहब कहतई जाइहै कि जो मोको कबहूं जीव जानै तौ कालते छोड़ाय लेउँ ताते आंधर भये हियौ की निहारी फूटि गई कहे यहै आदत करत करत वृद्धावस्था पहुँची इन्द्रियन जबाब दियो तामें प्रमाण "नेह गये नैना गये, गये दांत औ कान । प्राण छगीदा रहिगये, तेऊ कहतहैं जान" अबहूँनौ जानौ भजन करिकै छूटिजाउ ॥ १ ॥

पानीमाहँ पषान की रेखा, ठोंकत उठै भभूका ॥
सहसघड़ा नितही जल ढारै, फिरि सूखेका सूका २

हे जीवौ! तुम बड़े जड़ हौ जैसे पानी में पाषाण की रेखा कहे छोटी शर्वती पथरी डारिराखै तो और भभूका आगी को उठन लगैहै चकमक में ठोंकेते तैसे जस जस साधुलोग उपदेश करत जाइ हैं तस तस साहब को भजन तौ नहीं करौहौ व काम क्रोध आदिक जे आगी हैं ते तुम को जोर करत जाइ हैं अर्थात् जब उपदेश करन लगे है तब अधिक रिस करनलगौहौ जैसे पाषाणमें नित हजारन घड़ा जल डारै पै पाषाण भीतर सूखे रहैहै तैसे केतऊ ज्ञान उपदेशकरै परन्तु हे जीवो! तुमजड़के जड़ही बनेरहेहौ॥ २॥

सेते सेते सेत अङ्गभो, शयन बढ़ी अधिकाई ॥
जो सनिपात रोगिअहि मारै, सो साधुन सिधिपाई ३

सेत सेत जो ब्रह्म है तामें लगे लगे तुम भीतर बाहर सफ़ेद ह्वै गये अर्थात् बुढ़ायगये ऊपरौके रोमाबुढ़ायगये ब्रह्ममें सोवत सोवत तोको आपनो स्वरूप भूलिगयो तब शयन में कहे सोवन में अधिकाई बढ़ी कहे अधिक सोवनलगे अर्थात् समाधिकरनलगे अपनी आत्मा को ज्ञान व साहब को ज्ञान व जगत् भूलिगयो

पिशाचवत् मूकवत् जड़वत् उन्मत्तवत् बालवत् तेरी दशा ह्वैगई सोई लक्षणसन्निपातमें होइ है सो तोको सन्निपात भयो है सन्निपातरोग याको मारै है व उनको आत्माको ज्ञानभूलिजाइहै ब्रह्म ह्वैबो साधुलोग सिद्धि पाई हैं कि हम सिद्ध हैं यह मानि लेइहैं। आत्मा को ब्रह्म ह्वैबो असिद्ध है सो आगे कहै हैं सीते सीते पाठ होइ तौ ज्ञान करत करत कि संसारताप हमारो छूटिजाइ शीत अङ्ग ह्वैगये वहै सन्निपात की अधिकाई तुम्हारे अङ्ग में बढ़िआई अर्थात् सन्निपात में खबरि देह की भूलिजाइ है व रोगियन को मारै है सोई साधुलोग सिद्धि पाई है कि हमको देहकी खबरि भूलिगई हम सिद्ध ह्वैगये ॥ ३ ॥

अनहद् कहत कहत जगबिनशे, अनहदसृष्टिसमानी ॥
निकट पयाना यमपुर धावै, बोलहि एकहि बानी ४

वह जो ब्रह्म है ताकी हद नहीं है ताको अनहद् कहत कहत कहै नेति नेति कहत २ संसार बिनाशिगयो अनहद जो ब्रह्म है तामें सृष्टि के सबलोग समाइगये और सृष्टि में वह अनहदब्रह्म समाइगयो सो मानत तो यह है कि सब ब्रह्मही में समाइहै कहै ब्रह्मै ह्वै जाइ है परन्तु निकट पयाना यमपुरही को धाइबो है अर्थात् आपने को ब्रह्म मानिकै ब्रह्म नहीं होइ है यमपुरही को चलेजायँ हैं तेऊ एकही बाणी बोलै हैं कि एक ब्रह्म ही है दूसरा नहीं है तामें धुनि यह है कि अरे मूढ़! एक तो ब्रह्म है नरकै कौन जाय है ॥ ४ ॥

सतगुरु मिले बहुतसुख लहिया,सतगुरु शब्द सुधारै ॥
कह कबीर सो सदा सुखारी, जो यहि पदहि बिचारै ५

हे जीवो! तुमको सतगुरु मिलैं तो वे रामनामरूपी पद म साहबमुख अर्थ बताइदेइँ तौनेको जो तुम बिचारौ तौ बहुत सुख पावो श्रीकबीरजी कहैहैं जे शब्दनको अनर्थ अर्थ बताइकै गुरुवा लोगन बिगारिडारयो है ते शब्द सतगुरु सुधारैहैं काहेते अनर्थ

अर्थ खण्डन करिकै वे वेदशास्त्रादिकन के शब्द के तात्पर्यार्थ छोड़ाइकै साहबमुख अर्थ बताइदेइहैं सो जो या शब्द जो रामनाम ताको जगत्मुख अर्थ बताइ देइ है सो जो कोई रामनामरूपी पद में साहब मुख अर्थ बिचारै सो सदा सुखी रहै है ॥ ५ ॥

इति सत्तावनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५७ ॥

अथ अट्ठावनवां शब्द ॥ ५८ ॥

नरहरलागीदवबिकारबिन, ईंधनमिलनबुझावनहारा। मैं जानोंतोहींतेब्यापै, जरतसकलसंसारा १ पानीमाहँअगिनिको अंकुर, मिलनबुझावनपानी। एकनजरैजरैनौनारी, युक्ति न काहू जानी २ शहर जरै पहरूसुखसोवै, कहैकुशलघरमेरा। कुरिया जरै वस्तुनिजउबरै, बिकलरामरँगतेरा ३ कुबिजापुरुषगलेयक लागी, पूजिनमनकीसाधा। करतबिचारजन्मगोखीसा, ईतनरहल असाधा ४ जानिबूझिजोकपटकरतहै, तेहि असमंद न कोई। कहकबीरसबनारिरामकी, मोते और न कोई ॥ ५ ॥

नरहरलागीदवबिकारबिन, ईंधनमिलनबुझावनहारा ॥
मैं जानों तोहीं ते ब्यापै, जरत सकल संसारा १

हे नरहर! दवलागी कहे तेरे स्वरूपकी हरनवारी मायारूपी दवारि लगी है तैं कैसाहै बिकार बिन तो माया मोको काहे को लगीहै तो बिना ईंधन को बुझावनवारो तोको नहीं मिल्यो जो तोको समुझाइ देइ कि तैं बिनाबिकारको है जो मिलाहै सो नाना उपासना नाना मतरूप ईंधन डारनवारो मिला है साहबको ज्ञान-रूप जलडारै मायारूप दवारि कैसे बुझाइ सो मैं जानो हौं या मायारूपी दवारि तोहींते उत्पन्न भै अर्थात् मायादिक तोहीं ते भये ताही में सब संसार जरो जाइ है ॥ १ ॥

पानीमाहँ अगिनि को अंकुर, मिलन बुझावन पानी ॥
एक न जरै जरै नौ नारी, युक्ति न काहू जानी २

सो वह मायारूपी अग्नि को अंकुर पानी में है कहे नाना वेद शास्त्रादिक वाणीमें हैं ते वेदशास्त्रादिकन के अर्थ को बदलिके साहबको छिपाइके मायारूपी अग्नि को प्रकटकियो और ताको और और में लगाइ दियो अर्थात् वे सबमतन को फल ब्रह्म है जाइबो बताइ दियो वह अग्नि के बुझावन को वेद शास्त्रादिकन को जो सांच अर्थ है जल सो नहीं मिलै है अथवा जे वेदशास्त्रादिकन के सांच अर्थ मुनिजनलोग बनाइ गयेहैं वशिष्ठसंहिता, शुकसंहिता, हनुमत्संहिता, अगस्त्यसंहिता, सदाशिवसंहिता, सुन्दरीतंत्रादिक ग्रन्थ और वेदशिरोपनिषद्, विश्वम्भरोपनिषदादिक सांचे मत के कहनवारे ते जल नहीं मिलै है सो जब वह आगि लगी तब अद्वैत करिकै बहुत समुझावै है परन्तु एक वह आत्मा नहीं जरै और साहब में जे नवधाभक्ति हैं ते नवनारीहैं ते जरै हैं सो यह युक्ति कोई नहीं जान्यो कि आत्मा ब्रह्म नहीं होइहै और साहब को जानै तो वे नवधाभक्ति न जरैं ॥ २ ॥

शहर जरै पहरू सुख सोवै, कहै कुशल घर मेरा ॥
कुरिया जरै बस्तु निजउबरै, बिकल राम रँगतेरा ३

और शहर कहे साहब के मिलिबे के जेते ज्ञान हैं जीवात्मा के ते जरजाइ हैं और पहरू जो आत्मा सो सुखसों सोवै है कहे साहब के बतावनवारे सन्त नहीं ढुरै हैं जे आपने वाणीरूप जल सों माया ब्रह्मरूपी आगी बतावै सोवतै रहैहै और यह कहै है कि, मैं सच्चिदानन्द हौं सो मेरो घर जो है सच्चिदानन्द सो कुशल है यह नहीं जानै है कि ये सब तो जरिहीगये सो मैंहूं जरिजाउँगो एक माया ब्रह्मरूपी आगिही रहिजाइगी वही आगि में तेरी कुरिया जो है स्वस्वरूप ज्ञानकी सोऊ जरिजाइगी अर्थात् जब 'ब्रह्मास्मि' में सुषुप्ति होयगी तब मैं सच्चिदानन्दरूप हौं यह ज्ञान न रहिजाइगो याही ते तैं बिकल है सो यह करु जाते तेरी बस्तु जो है साहब में नवधाभक्ति सो उबरै और और रङ्ग में लगिबो तेरो

रङ्ग नहीं है श्रीरामचन्द्रके रङ्ग में रँगै यही तेरो रङ्ग है ॥ ३ ॥

कुबिजा पुरुष गले यकलागी, पूजि न मन की साधा ॥
करत बिचार जन्मगो खीसा, ईतन रहल असाधा ४

कुबिजा पुरुष कहे अङ्गभङ्ग पुरुष जो वह ब्रह्म है नपुंसक ताको एक मानिकै कि एक ब्रह्मही है ताके गलेमें साहब की जीवरूपा शक्ति लैं लागी सो जैसे नपुंसक पुरुषके सङ्ग स्त्री की साध नहीं पूजै है तैसे वह ब्रह्म में लगे तुम्हारी साध नहीं पूजैहै कहे वामें आनन्द नहीं मिलैहै वही ब्रह्म को विचार करत जन्म खीस कहे वृथा जाइ है तन कहे यह मनुष्य शरीर पाइकै असाध रहे है कहे साहब के मिलनको सुख नहीं पावै है ॥ ४ ॥

जानि बूझि जो कपट करत है, तेहि अस मन्द न कोई ॥
कह कबीर सब नारि रामकी, मोते और न कोई ५

सो जानिबूझिकै जे लोग कपट करै हैं कहे वह धोखाब्रह्म में लगैहैं तिन ऐसो मन्द कहे मूढ़ कोई नहीं है सो कबीरजी कहैहैं कि जहांभर चित्शक्ति जीव हैं ते सब श्रीरामचन्द्रकी नारी हैं सो मैं जानौ हौं याते मोते और पुरुष साहबै है सो जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को छोड़ि और पुरुष करै हैं ते छिनारि हैं सो जो छिनारि हैं तिनके ऊपर संसाररूपी मार परोइ चाहै तामें व्यङ्गथ यह है कि जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को पतिमानै हैं तेई माया ब्रह्माग्नि ते बचै हैं ॥ ५ ॥

इति अट्ठावनवां शब्द समाप्तम् ॥ ५८ ॥

अथ उनसठवां शब्द ॥ ५९ ॥

मायामहाठगिनिहमजानी । तिरगुणफांसलियेकरडोलै, बोलै मधुरीबानी १ केशवके कमला ह्वैबैठी, शिवके भवन भवानी। पण्डा के मूरति ह्वैबैठी, तीरथ में भइ पानी २ योगीके योगिनि ह्वैबैठी, राजाके घर रानी । काहूके हीरा ह्वैबैठी, काहूके कौड़ी कानी ३ भक्तन

के भक्तिनि ह्वैबैठी, ब्रह्माके ब्रह्मानी । कहै कबीर सुनो हो सन्तो, यह सब अकथकहानी ॥ ४ ॥

माया महाठगिनि हम जानी ॥

तिरगुण फांसालिये करडोलै, बोलै मधुरी बानी १
केशव के कमला ह्वै बैठी, शिव के भवन भवानी ॥
पण्डा के मूरति ह्वै बैठी, तीरथ में भइ पानी २
योगी के योगिनि ह्वै बैठी, राजा के घर रानी ॥
काहू के हीरा ह्वै बैठी, काहू के कौड़ी कानी ३
भक्तन के भक्तिनि ह्वै बैठी, ब्रह्मा के ब्रह्मानी ॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, यह सब अकथ कहानी ४

माया महाठगिनि है हम जानी यह माया माधुरी बानी बोलिकै त्रिगुण फांसते सब जीवन को बांधिलियो और सबके घर में नानारूप करिकै बैठी है केशव के कमला ह्वैकै बैठी है व शिवके भवन भवानी ह्वैकै बैठीहै और पण्डाके मूरति ह्वै बैठी है व तीरथ में पानी ह्वै रही है व योगी के घर में योगिन ह्वै बैठी है व राजाके रानी ह्वै बैठी है व काहू के हीरा ह्वै बैठी है व काहूके कानी कौड़ी ह्वैकै बैठी है और ब्रह्माके ब्रह्मानी ह्वै बैठी है सो कबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो सुनो यह सब माया को चरित्र अकथ कहानी कहाँलौं वर्णनकरैं यह माया सत् असत् ते विलक्षण है कहिबे लायक नहीं है अरु याको अन्त नहीं है ॥ १ । ४ ॥

इति उनसठवां शब्द समाप्तम् ॥ ५९ ॥

अथ साठवां शब्द ॥ ६० ॥

मायामोहहि मोहित कीन्हा । ताते ज्ञानरतन हरिलीन्हा १ जीवनऐसोसपना जैसो, जीवनसपनसमाना । शब्दगुरू उपदेशदियो तैं, छांड्योपरमनिधाना २ ज्योतिहिदेखिपतंगहूलसै, पशुनहिंपेखै

आगी। कामक्रोधनलमुगुधपरे हैं, कनककामिनीलागी ३ सय्यद शेख किताब नीरखै, पण्डितशास्त्रविचारे। सतगुरुके उपदेश बिना तुम, जानिकैजीवहिमारै ४ करौ बिचार बिकारपरिहरौतरनतारनै सोई। कह कबीर भगवन्त भजनकरु, द्वितिया और न कोई॥५॥

मायामोहहिमोहितकीन्हा। ताते ज्ञानरतन हरिलीन्हा १

पूर्व जो वर्णन करि आये सो मायाजीव को मोहित करतभई सांचमें असांचकी बुद्धि होयहै मोहको लक्षण सो यह आत्मा तो शरीरनते भिन्न सांच है ताको शरीर की बुद्धि भई कि शरीर मैं हौं मन आदिक मेरे हैं यह असांच बुद्धि भई याही ते माया में परिगयो तब याको माया मोहते मोहित करिकै परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं तिनको ज्ञानरतन जो रहै कि मैं उनको अंश हौं वे बड़ेरतनहैं मैं कनी हौं अल्पज्ञ हौं परन्तु जाति उनहीं की हौं वे विभु आनन्द हैं जैसे उनमें मन आदिक नहीं हैं तैसे मैं जो उनको जानौं तौ मद्दू मन आदिक नहीं हौं यह जीवको ज्ञान रत्नमाया हरिलीन्हों ॥ १ ॥

जीवन ऐसो सपना जैसो, जीवन सपन समाना॥
शब्दगुरू उपदेश दियो तैं, छांड़्यो परम निधाना २

यह जीवन ऐसो है स्वप्न है यह शरीरते दूसरे शरीर में गयो तब यह शरीर स्वप्न ह्वैगयो और वह जीव स्वप्न जे सम्पूर्ण शरीर हैं तिनमें नहीं समान्यो वह शरीर ते भिन्न है काहेते मरिबो जीबो शरीर को धर्म है सो अपने स्वरूप को नहीं जानै है स्वप्न समान जे शरीर हैं तिनको सांच मानिलियो है गुरू कहे सबते गुरुपरमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र हैं ते शब्द जो रामनाम ताको उपदेशदियो कि तैं मेरो है सो मेरे पास आउ सो तैंने शब्द में परमानिधान कहे तिनके रहिबेको पात्र जो साहबमुख अर्थ है ताको शब्द छोड़ि दियो औ संसारमुख अर्थ करिकै संसारी ह्वैगयो ॥ २॥

ज्योतिहि देखि पतङ्ग हूलसै, पशु नहिं पेखै आगी॥

काम क्रोध नल मुगुध परे हैं, कनककामिनी लागी ३

जैसे दीपककी ज्योतिको देखिकै पतङ्ग हुलसे कहे ज्योति में मिलिबेको जाय है परन्तु वह पशु जो है अज्ञानी पतङ्ग सो नहीं देखै है कि या आगी है यामें जरिजैहैं सो वही धसिकै जरिजाय है तैसे काम क्रोधादिकन में जीव मुगुधपरे हैं या नहीं जानै हैं कि यामें जरिजायँगे ॥ ३ ॥

सय्यद शेख किताब नीरखै, पण्डित शास्त्र बिचारै ॥
सतगुरु के उपदेश बिनातुम, जानि कै जीवहि मारै ४

सो हे सय्यद, शेखो ! तुम किताब देखिकै नानाकर्म करौहौ और हे पण्डितो ! तुम नाना शास्त्र पुराण पढ़िकै सुनिकै नानाकर्म करौ हौ सतगुरु को उपदेश तौ तुम लियो न असतगुरुन के पास जाइ जाइ उनहींको उपदेश पाइकै जानि जानिकै तुम अपने जीव को मारौ हौ कहे जनन मरणरूप दुःख देउहौ साहब के जाननवारे जे हैं तिनके पास नहीं जाउहौ जे साहब को बताइदेइँ और जन्म मरण तुम्हारो छूटि जाय जानिकै आपनी आत्मा को मारौ हौ तामें प्रमाण "नृदेहमाद्यं सुलभं सुदुर्लभं प्लवं सुकल्पं गुरुकर्णधारम् । मयानुकूलेन नभस्वतेरितं पुमान्भवाब्धिं न तरेत्स आत्महा" (इति श्रीभागवते) ॥ ४ ॥

करौ बिचार बिकार परिहरौ, तरन तारनै सोई ॥
कह कबीर भगवन्त भजन करु, द्वितिया और न कोई ५

सो विचार करौ व सम्पूर्ण जे विकार तिनको परिहरौ कहे छोड़ौ तरण तारण एक पुरुषपर श्रीरामचन्द्रहीहैं श्रीकबीरजी कहै हैं कि तिनहीं को भजन करु उनते और दूसरो तेरो छोड़ावनवारो नहीं है इहां तरण तारण दुइ कह्यो सो तरण जो है मुक्ति ह्वैबे की इच्छा ताते तारणवारो कोई नहीं है वोई हैं वही मुक्ति की इच्छा करिकै कोई ब्रह्मज्ञान कोई आत्मज्ञान कोई दहरोपासनादिक नाना उपासना करिकै तरन को चाहै हैं परन्तु कोई तरै

नहीं हैं जब तरनकी चाह छूटि जाइहै तब मुक्ति होइहै सो यह तरन की इच्छाते एक परमपुरुष श्रीरामचन्द्रही तारि देइहैं अर्थात् उनहींकी दीनमुक्ति देजाइहै और की मुक्ति नहीं दीनहैजाइ है जबभर तरनकी इच्छा होइ है तबभर मुक्ति नहीं होइ है तामें प्रमाण " भुक्तिमुक्तिस्पृहा यावत्पिशाची हृदि वर्तते । तावद्भक्तिसुखस्यात्र कथमभ्युदयो भवेत् " (इति भक्तिरसामृतसिन्धौ) ॥ ५ ॥

इति साठवां शब्द समाप्तम् ॥ ६० ॥

अथ इकसठसवां शब्द ॥ ६१ ॥

मरिहौरे तन का लै करिहौ । प्राण छुटै बाहर लै धरिहौ १ कायविगुरचन अनवनिवाटी । कोइजारै कोइगाड़ै माटी २ हिन्दू लै जारै तुरुक लै गाड़ै । ई परपञ्च दुनोघरछाड़ै ३ कर्मफांस यमजाल पसारा । ज्यों धीमर मछरी गहिमारा ४ रामविनानल हैहोकैसा । बाटमास गोबरौरा जैसा ५ कह कबीर पाछे पछितैहौ । या घर सों जब वा घर जैहौ ॥ ६ ॥

मरिहौरे तन का लै करिहौ । प्राण छुटै बाहर लै धरिहौ १
कायविगुरचनअनवनिवाटी । कोइजारै कोइगाड़ै माटी २

हे जीवो ! तुम मरिहौ तौ फिर तन लेहौ तौनेको लैकै का करिहौ का या तनते कियो है का वा तनते करिहौ जब प्राणछूटैगो तब वाहू शरीर को लैकै बाहेर धरोगे १ सो या काया जो है ताको बिगुरचन कहे छूटै में आनि आनि बाटि है काहेते कोई तो या काया को जारै है और कोई माटी में गाड़ैहै सो जो गाड़ै है और जारै है तिनको अब कहै हैं ॥ २ ॥

हिन्दू लै जारै तुरुक लै गाड़ै । ई परपञ्च दूनौ घरछाड़ै ३
कर्मफांस यमजाल पसारा । ज्योंधीमरमछरीगाहिमारा ४
रामबिना नल हैहौ कैसा । बाटमांझ गोबरौरा जैसा ५

सो हिन्दू जे हैं तेतो जारै हैं और तुरुक जे हैं ते गाड़ै हैं सोई

दूनो घरमें जो परपञ्चहै ताको तू छाड़ै ३ संसार में यमराज कर्म-फांसरूपी जाल पसारिराख्यो है जाही शरीर में जीव जायहै तहैं मारिडारै हैं जैसे धीमर जौनेडाबरमें मछरी जायहै तौनेही डाबरते खैंचिकै मारिडारै है तब शरीरकी नाना बाटि होइहै भस्म होयहै कीरा होय है विष्ठा होय जाय है ४ सो हे जीवो ! बिना साहबके जाने तुम कैसे होउगे बाटमें जैसे गोबरौरा जोई आवै जाय सोई कचरि देइहै मरिजाय है ॥ ५ ॥

कह कबीर पाछे पछितैहौ । या घरसों जब वा घर जैहौ६

सो कबीरजी कहै हैं कि जब या घरसों वा घर जाउगे अर्थात् जब यह शरीर ते दूसरो शरीर धरौगे गर्भवास होइगो तब पछिताउगे गर्भवास में साहब की सुधि होइ है सो जब गर्भ वास को क्लेश होइगो तब कहौगे कि हे साहब ! अबकी बार जो छूड़ावो तौ फिर न ऐसे काम करैंगे सो गर्भस्तुति श्रीमद्भागवतादिकन में प्रसिद्ध है तेहिते यह व्यङ्ग है कि परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को जानो ॥ ६ ॥

इति इकसठवां शब्द समाप्तम् ॥ ६१ ॥

अथ बासठवां शब्द ॥ ६२ ॥

माई मैं दूनौ कुल उजियारी । बारह खसम नैहरे खायो, सोरह खायो ससुरारी १ सासु ननँदि मिलि पटिया बांधल, भसुरा परलो गारी । जारों मांग मैं तासु नारिकी, सरिवररचल हमारी२ जना पांच कोखिया में राखौं, औ राखौं दुइचारी । पार परोसिनि करों कलेवा, संगहि बुधि महतारी ३ सहजै बपुरी सेज बिछायो, सूतल पाउँ पसारी । आउँ न जाउँ मरों ना जीवों, साहब मेट्यो गारी ४ एक नाम मैं निजकै गहिल्यो, तो छूटल संसारी । एक नाम मैं बदिकै लेखौं, कहै कबीर पुकारी ॥ ५ ॥

माई मैं दूनों कुल उजियारी ॥
बारह खसम नैहरे खायो, सोरह खायो ससुरारी १

चित्शक्ति कहै है कि हे माई कहे हे माया! मैं दूनों कुल उजियार करनवारी हौं कहे मोहींते जीवकुल उजियार हैं जीव छःप्रकार मुक्ति मुमुक्षू विषयी बद्ध नित्यबद्ध नित्यमुक्त और ब्रह्मकुल उजियार है सब ईश्वर ब्रह्मकुलही में हैं याते ब्रह्मकुल कह्यो महीं अनुभव करौहौं तब ब्रह्म होइहै और महीं सब जीवकी चैतन्यता हौं सो बारह खसम को नैहर में खायो ते बारह खसम कौन हैं तिनको कहे हैं अष्टप्रधान जे हैं काली, कौशिकी, विष्णु, शिव, ब्रह्मा, सूर्य, गणेश, भैरव और नवौ परमपुरुष जिनके ई आठौ प्रधान कहे मन्त्री हैं इनको महातन्त्र में वर्णन है और पांच ब्रह्म आदि मङ्गलमें वर्णन करिआये हैं तिन में रेफरूपा जो है सो मन्त्ररूप है और पराशक्ति है ताको शक्तिमान में अन्तरभाव है और शब्दब्रह्म प्रणवरूप है सो उपास्य देवता नहीं है विचार करिबे लायकै तेहिते पांचब्रह्म में तीनि ब्रह्म उपासना करिबे लायकहैं सो अष्टप्रधान और नवौं परमपुरुष और तीनि ब्रह्म मिलाइकै बारह उपास्य भये तेई खसम भये तिनको शुद्ध समष्टि जो है सोई नैहर है जहांते व्यष्टि होइ है सो जहां समष्टि व्यष्टि भयो है तहां मैं इनको खाइलियो है कहे पेट में डारिलियो है मोहिंते भिन्न नहीं है और जब मैं अहंब्रह्म बुद्धि करिकै ब्रह्म में लग्यो वहीको खसम मान्यो तब षोडश कलात्मक जो है जीव ताको खाइलियो कहे पेटमें डारिलियो ॥ १ ॥

सासु ननँदि मिलि पटिया बांधल, भसुरा परलोगारी ॥
जारों मांग मैं तासु नारि की, सखिर रचल हमारी २

सासु जो है जगत्मुख सुरति ताके व मनके संयोग ते ब्रह्म को अनुभव होइ है तेहिते वह सुरति ब्रह्मकी महतारी है और ननँदि जो है विद्या माया काहे ते कि पहिले जब विद्या माया

उत्पत्ति होइ है और जब ब्रह्म को अनुभव होइहै सो सासु जो है जगत्मुख सुरति और ननँदि जो है विद्या सो ये दूनौ को संसाररूपी खटिया के पटिया जे हैं उत्पत्ति प्रलय तिनमें बांध्यो और भसुर जेठको मिथिला में कहे हैं सो भसुर जो है ब्रह्म ते जेठ विज्ञान काहे ते कि विज्ञान पहिले है लेइहै तब ब्रह्म को अनुभव होइहै याते ब्रह्म ते विज्ञान जेठ है सो मोको गारी पर्‌यो कहे मैं तो साहब की चित्शक्ति हौं सो मोको ब्रह्म में लगाइ दियो यही मोको गारी परी सो जगत् कारणरूपा जो वह मायारूपी नारि है तौनेकी मैं भँगुवा जारौंहौं तो आप जड़ व चित्त शुद्ध जीवको गहिकै हमारी सरिवर रच्यो है कहे जीवन को जड़को जड़ कै दियो अर्थात् साहब को ज्ञान भुलाइ दियो ते हिवे जगत्मुख ह्वैकै चैतन्य मानैहै कि हम ब्रह्महैं व आपको कर्त्ता भोक्ता मानै है सो शुद्ध जीव को मिलि कै कारणरूपा साहब की अज्ञानरूप माया ही मानै है मायाही को खराब कियो शुद्धजीवहै ताकी मैं भँगुवाजारौं ॥ २ ॥

जना पांच कोखियामें राखौं, औ राखौं दुइ चारी ॥
पार परोसिनि करौं कलेवा, संगहि बुधि महतारी ३

वही माया को मिलिकै जना पांच जे पांचौं इन्द्रिय हैं व पांचौं तत्त्व हैं व पांचौं शरीर हैं तिनको कोखि में राखौ हौं और दुइ जे निर्गुण सगुण हैं व चारि जे अन्तःकरण चतुष्टय हैं मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार तिनको कोखिमें राखौं हौं और पार जो है ब्रह्म अथवा मोक्ष ताके परोसी कहे बतवैया जे हैं गुरुवालोग तिनको मैं कलेवा करौहौं कहे उनको मतखण्डन करौंहौं शुद्धबुद्धि जो महतारी है मेरी ताको संग ह्वैकै अर्थात् शुद्धबुद्धि जब मोको होइ है तब उनको सब मिथ्या मानिलेउहौं एक साहबै की ह्वैरहौहौं॥३॥

सहजै बपुरी सेज बिछायो, सूतल पाउँ पसारी ॥
आउँ न जाउँ मरौं ना जीवौं, साहब मेट्यो गारी ४

अब हे भाई! तोको मैं छोड़यो मैं बपुरी गरीबिनि हौं मेरे

निकट न आउ अब मैं सहज सेजबिछायो कहे सहज समाधि मैं साहब को कियो अरु पाउँ पसारिकै सोऊंहौं कहे मोको तेरी भय नहीं है यह जगत् मोको बिसरिगयो चितशक्तिमात्र रहिगई व ब्रह्म में मैं लागिरहिउँ नाना उपासना में लगिरही तिनकी मैं नहीं हौं यह गारी मोको परीरही सो साहब मेरीगारी मेट्यो कहे अपनो हंसस्वरूप मोकोदियो तौने स्वरूप ते अपनो रूप देखायो सो साहबकी मैं रहौं सो साहबकी मैं हैगई न आउंहौं न जाउंहौं जो कहौ मेरी गारी साहब कैसे मिटायो ॥ ४ ॥

एक नाम मैं निजकै गहिल्यो, तौ छूटल संसारी ॥
एक नाम मैं बदिकै लेखौ, कहै कबीर पुकारी ५

व एक रामनाम को निजकै कहे आपन करिकै गहिलीन्ह्यो कि यही उद्धारकर्ता है और सब नरकही डारनवारे हैं तब यह संसार छूटिगयो यह हेतु ते कबीरजी कहै हैं कि मैं बदिकै लेखौ हौं कहे पाउं रोपिकै मानौ हौं कि यही एक रामनाम को जो बिश्वास करिकै विचार करिकै जपैगो तौ संसारते छूटिही जाइगो सो यह सबलोग सुनत जाउ मैं पुकारिकै कहौहौं तामें प्रमाण "राम न जपौकहांभोमन्दा। रामविनायममेलैफन्दा ॥ सुतदारा को कियापसारा । अन्तकेबेरभये बटपारा ॥ मायाऊपरमाया माड़ी । साथ न चलैखोवरीहाड़ी ॥ जपोरामजोजियतउबारै । ठाढ़ी बांह कबीरपुकारै" ॥ ५ ॥

इति बासठवां शब्द समाप्तम् ॥ ६२ ॥

अथ तिरसठवां शब्द ॥ ६३ ॥

मैं कासों कहौं को सुनै को पतिआय । फुलवाके छुवतभवँर मरिजाय १ गगनमँडलबिच फुलयकफूला । तरभोडारउपर भो मूला २ जोतियेनबोइयेसिंचियेनसोइ । बिनडारबिनापातफूल यकहोइ ३ फुलभलफुललमालिनिभलगूंथल । फुलवाबिनशि

गयलभवँरानिरासल ४ कह कबीर सुनो सन्तोभाई । पण्डितजन फुलरहे लुभाई ॥ ५ ॥

मैंकासोंकहौंकोसुनैकोपतिआय।फुलवाकेछुवतभवँरमरिजाय १

कबीरजी कहै हैं कि, मैं जासों कहौंहौं सो तो सुनतई नहीं है औ जो सन्यो तौ शङ्का कियो ताको समाधान करिदियो असांच निकारिडारयो सांचे को स्थापित कियो सो यद्यपि वाको जवाब नहीं चलैहै तऊ यह कहैहै कि यह जोलहा को कह्यो वेद शास्त्र को सार अर्थ बिचार कैसे होइगो ताते कोई मोको पतिआय नहीं है ये तो सब धोखामें अटके हैं मैं कासों कहौं को सुनै कौन बात कहौं हौं कि वह धोखाब्रह्म आकाशको फूल है ताके छुवत में भवँर जो है तिहारो जीवात्मा सो मरिजाय है कहे तुम नहीं रहिजाउहौ वह धोखाब्रह्मई रहिजाय है वाके आगेकी बात तुम कैसे जानौगे याते तुम परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को जानो वे जब अपनी इन्द्रिय देइँगे तब वह ब्रह्मके ऊपर की बात जानि परैगी जौन हंस-शरीरौ देइ है सो याके नित्य स्वरूपहै सो नित्यस्वरूप ना पाइकै ब्रह्ममाया के परे मन बचन के परे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जानै है सो मेरो कह्यो कोई नहीं मानै है वही धोखा में लगे है जो धोखाते जगत् होत है कैसो होइ है कि ॥ १ ॥

गगनमँडलबिचफुलयकफूला।तरभोडारउपरभोमूला २

गगनमण्डल कहे लोकप्रकाश चैतन्याकाश में एकफूल फूलत भयो कहे वह ब्रह्ममाया शबलित होत भयो अर्थात् आकाश फूल को मिथ्या कहैहैं सो वह मिथ्याही फूल भ्रमते फूलत भयो जीव को भ्रम भयो ताके अनुमानते प्रकट ह्वैजातभयो सो मूल तो वह ब्रह्म है सो ऊपर भयो और तरे वाकीडारैं फूटत भईं चौदहों लोक संसाररूप वृक्ष तैयार भयो ॥ २ ॥

जोतियेनबोइयेसिचियेनसोइ।बिनडारबिनापातफूलयकहोइ३

फुलभलफुललमालिनिभलगूंथल ।
फुलवाबिनशिगयो भवँरनिरासल ४ ॥

वह न जोति गयो न बोयगयो और न सींचिगयो बिना डार पात है ऐसो बिरवा चैतन्याकाश जो लोकप्रकाश है तामें धोखा ब्रह्मरूप फूल फूल्यो ताहीते संसाररूप बिरवा तैयार भयो ३ तब मालिनि जो माया है सो भल गूंथत भई कहे फूल ब्रह्मको त्रिगुणात्मिका नानावाणी सो खूब वर्णन करिकै वहीको आरोप करत भई तब यह जीव सब छोड़िकै वही ब्रह्म में नानावाणी सुनिकै लग्यो सो जब वहाँ कुछ न पायो वह धोखही ह्वैगयो तब भवँर जो जीव सो निराश ह्वैगयो ॥ ४ ॥

कह कबीरसुनोसन्तोभाई । पण्डितजन फुलरहेलोभाई ५

श्रीकबीर जी कहै हैं कि, हे सन्तो, भाइउ ! सुनो वही ब्रह्मफूल में पण्डित जन जे हैं ते लोभाय रहेहैं यह विचार नहीं करै हैं कि जगत् को तो हम मिथ्यई कहैहैं और वही ब्रह्म ते जगत् की उत्पत्ति कहैहैं सांचते सांच झूंठेते झूठा होइहै सो वह ब्रह्मरूप फूल जो सांचो होतो तो वासो झूठा जगत् कैसे उत्पत्ति होतो और वही ब्रह्म को निराकार अकर्ता निर्द्धर्मिक कहौहौ कहो तो वह ब्रह्म को जान्यो कौन अरु वाको निर्वस्तु कहौहौ कि वह कुछु वस्तु नहीं है देश, काल, वस्तु, परिच्छेद ते शून्यहै कहो तो वह धोखई रहिगयो कि कुछु वस्तु रहिगयो सो तिहारेहि बात में वह धोखा जान्यो परैहै कि कुछु नहीं है शून्यहै तेहिते परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्र में लागौ जाते माया ब्रह्म के पार है उनहींके पास पहुंचौ जाइ और आवागमन ते रहित ह्वैजाउ ॥ ५ ॥

इति तिरसठवां शब्द समाप्तम् ॥ ६३ ॥

अथ चौंसठवां शब्द ॥ ६४ ॥

जोलहाबीनेहुहोहरिनामा जाकेसुरनरमुनिधरैं ध्याना । ताना

तनैकोअउठालीन्हेचर्खीचारिहुबेदा सरखूंटीयकरामनरायण पूरणकामहिमाना १ भवसागरयककठवतकीन्होतामेंमाड़ीसानी माड़ीकोतनमाड़िरहोहै माड़ोबिरलाजाना । त्रिभुवननाथ जो मञ्जन लागे श्याममुरारियादीना चांदसूर्यदुइगोड़ाकीन्हो मांझ दीपकियताना २ पाईकरिकै भरनालीन्हो वे बांधैकोरामा वे ये भरितिहुंलोकै बांधै कोइनरहैउबाना । तीनलोकएककरिगह कीन्हो डिगमगकीन्होताने आदिपुरुष बैठावन बैठे कबिराज्योति समाना ॥ ३ ॥

(श्रीकबीरजी रामानन्दके शिष्यहैं सो अपनी संप्रदाय बतावै हैं)

जोलहा बीनेहु हो हरिनामा जाके सुर नर मुनि धरैं ध्याना । ताना तनैको अउठालीन्हे चर्खी चारिहुवेदा सर खूंटी यक रामनरायण पूरणकामहिमाना ॥ १ ॥

श्रीकबीरजी कहैहैं कि जोलहा जो मैंहौं सो हरिके नामको बिनौ हौं वे हरि कैसे हैं कि जिनको सुर नर मुनि ध्यानधरै हैं कौनी तरह ते बिनौहौं सो उपाय कहौहौं कोरिन के यहां ताना तनिबे को अउठाते नापिलेइ हैं और इहां अउठा जो शरीर है ताको साढ़ेतीनिहाथ को नापलियो अथवा अंगुष्ठमात्र लिङ्गशरीर है सो मनोमय है ताको मैं हरिनाम बिनिबेको धारणकियो है नहीं तौ मैं मनके परे रह्यो हैं और कोरिन के इहां चर्खी ते सूत खैंचिकै कैंड़ाकरि लेइ हैं और इहां चारो वेद जे हैं तेई चर्खी हैं तिनके तात्पर्यते आत्माको स्वरूपकी तैं परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रको है यह सूत जीवात्माको निकास्यो और कोरिनके इहां सर व खूंटीते तानाको पूरै हैं अरु इहां श्री इहां वैष्णव है रूप के मन्त्र पावैहै रघुनाथजी को षडक्षर और नारायण को द्व्यक्षर और अष्टाक्षर सो सर खूंटी राम और नारायण ये नाम हैं एक नाम को सर बनायो एक नाम को खूंटी बनायो इनहीं को नाम लिये हरि नामरूपी कपरा बिनिबे को मैं अधिकारी भयो यह मैं मान्यो कि

मैं पूरिदेहौं रामनाम दुइ खूंटी हैं नारायण नाम सर है ॥ १ ॥

भवसागर यक कठवत कीन्हो तामें माड़ीसानी। माड़ी को तन माड़िरहोहै माड़ो विरलाजाना। त्रिभुवननाथ जो मञ्जनलागे श्याममुररियादीना चाँद सूर्यदुइगोड़ा कीन्हो मांझदीपकियताना २॥

कोरिनके इहां माड़ी सानी जाइहै तब एक कठौता में धरै हैं सो इहां भवसागर कठौता है और चारों शरीर माड़ी हैं तामें जीव सूत सनो है इहां साधन अवस्था में चार्यो शरीर में वह नामको भावना करिकै जो जपिवो है मुमुक्षुदशा में सोई सानिवो है सो नाम उच्चारणकी विधि कोई बिरला जाने है सो रामानुजाचार्य आपने राममन्त्रार्थ में लिख्यो है यह नाम स्मरण को शरीर धारणकियो सो जब नामस्मरण न कियो सोई शरीररूपी माड़ी याके माड़ि रह्यो है कहे लपटि रही है और कोरिनके जब वाको मांजे हैं तब माड़ी सम ह्वै जाइहै और मैल छूटि जाइहै और इहां त्रिभुवननाथ जो मन है सो रेचक, कुम्भक, पूरक जे कूचा हैं तिनमें मांजनलग्यो कहे नाम को जपनलग्यो और जीव को माड़ी जो है चार्यो शरीर तिनको सम कै दियो कहे एक करि दियो और कोरिनके मांजत में जब तागा टूटि जाइहै तौनेको मुररिकै जोरिदेइहै सो मुररिया कहावैहै इहां नामके स्मरण में जब बीचपरैहै तब कहीं श्याम कहीं गोपाल कहीं कृष्ण इत्यादिक नाम लैकै धागा जोरि देइहै और कोरिनके दुइ गोड़ा कहे दुइघोरियाके बीच में ताना तनै हैं और इहां चांद सूर्य जे इड़ा पिंगला तिनके बीच में दीप जो सुषुम्णा नाड़ी है ताको तानाकियो ताना वाको काहेतेकह्यो कि वह साहब के लोकते लै मूलाधारचक्रलौं रश्मिरूप तनी है जीवही सुषुम्णा नाड़ी ह्वै भक्तनको जी उतरै चढ़ै है ॥ २ ॥

पाई करिकै भरना लीन्हो वे बांधै को रामा वे ये भरि तिहुँलोकैबांधै कोइ न रहैउबाना। तीनलोकयककरिगह

कीन्हो दिगमगकीन्होताने आदिपुरुष बैठावनबैठे कबिरा ज्योतिसमाना ३ ॥

कोरिन के इहां पाई साफ़ करिबेको कहे हैं और कमाठिनके बीचते सूतनिकासिलेइहै सो भरना कहावैहै सो इहां चाख्योशरीर माड़ी मांजिके कहे चाख्यो शरीर छोड़ायके जीवको साफ़ करिके कहे सूक्ष्म विचारते जीवको स्वरूप निकस्यो कि रामही को और को नहीं है और कोरिनके राछकी जो कमठी ताके छिद्रहै सब सूत को निकासिलेइ है और दुइ सूत बांधिदेइहै सो वे कहावैहैं और तीनि फेरी करिकै सूतको गांसि देइ है सो 'तिलोक' कहावैहै और उबान वह कहावै है जो बाहर सूत रहिजाइ है सो उबान न रहिगयो सो इहां दूनों कुम्भकमें राम जे दुइ वर्णहैं रकार-मकार तिनको बांधिदियो बहिरे जब श्वास जाइहै तब जहांते थँभिकै लौटैहै सो कुम्भक कहावैहै तहां रकार जपैहै तब सूर्य के प्रकाश को भावनाकरै है और जब भीतर श्वास जाइहै व थँभिकै लौटै है तहां मकार जपै है तब चन्द्रमा को प्रकाश की भावना करै है सो जौन साधारण श्वास चलै है नासिका ते बारह आंगुर भीतर जाय है बारह आंगुर बाहर जाय है जहां जहांते थँभि थँभिकै लौटैहै तहां रकार मकार को जपिकै वे आंगुरनको घटाइ बूझै दूनों कुम्भकनको घटावनलगे इस तरहते वे जो हैं श्वास ताके बांधत में जब श्वासके क्रमते घटाइकै तिहुँलोकै बांधै कहे त्रिकुटी में बांधिदेइ अर्थात् एक आंगुर भीतर जान पावे न एक आंगुर बाहर जान पावे और एक आंगुर बीच में राखै सो यहि तरह ते जो कोईकरै हैं सोई उबान नहीं रहैहैं कहे संकल्प बिकल्प मिटि जाइहै जप करतमें काहेको ऊबैगो ताको रामनामही तीनों लोक देख परै है वोते बाहर नहीं देखपरै है जहां कोरी बीनन को बैठे है सो करिगह कहावै है जब कपरा बीनिचुके तब तहां तीनि घरीकरिकै कपरा धरि देइहै और ताना को दिगमग कहे जहां

तहां डारिदेइहै इहां तीनि लोक में फैली जो जीवकी वृत्ति है ताको जहां अपनेस्वरूप में आत्मा की स्थिति है तहां कैवल्य में राख्यो तीनि आंगुर श्वासा करिकै जो स्मरणकरत रह्यो सो मन पवन को एक घरकैदियो तब संकल्प विकल्प सब मिटिगयो यह ताना शरीरमें तन्योरह्यो ताको दिगमग कियो कहे पृथ्वीको अंश पृथ्वी में जलको अंश जलमें तेजको अंश तेजमें वायुको अंश वायुमें आकाशको अंश आकाशमें मिलाइदियो ये पंच भये और मनको बुद्धिमें बुद्धि को चित्त में चित्तको अहंकार में अहंकार को जीवात्मा में मिलाइदियो ये पांचभये ये सब ताना दशौदिशा में फैलाइदियो तब याको सुधि भूलिगई एक जीवात्मा भर रहिगयो और जब कपरा तैयार ह्वै जाइहै तब कोरीके यहां मालिक को पयादा आवै है तब पयादाके साथ मालिक के यहां कपरा कोरी लै जाइहै और यहां आदिपुरुष जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं ते बैठावनदेइ हैं कहे याको हंसस्वरूप देइहैं सोई पयादा है ताके साथ ह्वैकै कहे तामें स्थितह्वैकै कबीर जो में हौं सो वह जो है कैवल्यरूप ताते छूटिकै पार्षदरूप पाइकै परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्र के लोकको प्रकाशरूप जो है ब्रह्म तौने ज्योति में समाइकै कहे वाको भेद परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र के धामको गयो भाव यह है जैसे कोरीथान मालिक के नजर कैदेइ है तैसे अपने आत्मा को शुद्ध करिकै परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्र को अरपिदीन्ह्यो जाइ ज्योतिभेदिकै साहब में समाइगयो तामें प्रमाण "तज्ज्योतिर्भेदनेसक्तारसिकाहरिवेदिनः" इति ॥ और श्रीकबीरहूजी को प्रमाण "जैसे माया मन रमै तैसे रामरमाय। तारामण्डल भेदिकै तबै अमरपुरजाय" ॥ ३ ॥

इति चौंसठवां शब्द समाप्तम् ॥ ६४ ॥

अथ पैंसठवां शब्द ॥ ६५ ॥

योगियाफिरिगयो नगरमँझारी। जायसमानपांचजहँनारी १

गये देशान्तर कोइ न बतावै। योगिया गुफा बहुरि नहिं आवै २
जरिगो कन्थ ध्वजा गो टूटी। भजिगो दण्ड खपर गो फूटी ३
कह कबीर यह कलि है खोंटी। जो रह करवा निकसल टोंटी॥४॥

योगियाफिरिगयोनगरमँझारी। जायसमानपांचजहँनारी १

जौने ब्रह्माण्ड में पांच नारी जे बयारि हैं नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनंजय ई जिनमें समाइ हैं ऐसे प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान ते जामें समाइगयेहैं तौन जो है नगर ब्रह्माण्ड ताके मांझते योगिया जो है योगी सो फिरिजाइहै कहे फिरिफिरि ब्रह्माण्डको प्राण चढ़ाइ लैजाइहै॥ १ ॥

गयेदेशान्तरकोइनबतावै।योगियाबहुरिगुफानहिंआवै२
जरिगोकन्थध्वजागोटूटी। भजिगो दण्ड खपरगोफूटी ३

जब वह योगी शरीर छोड़्यो तब कोई नहीं बतावैहै कि कौन देशान्तर को गयो कौने लोकको गयो काहेते कि कौन्यो लोकको तो मानतै नहीं है ते हेते यही शरीर पुनि पावैहै तब वह योग की सुधि बिसारिजाइ है पुनि नहीं गुफा में आवै है कहे पुनि नहीं प्राण चढ़ावत बनैहै २ कन्थ जो है शरीररूपी गुदरी सो जरिगयो तब ध्वजा जो है पवन तौनेकी धारा टूटिगई तब मेरुदण्ड भंजित ह्वैगयो कहे टूटिगयो और खप्पर जो है ब्रह्माण्ड की खपरी सो फूटिगई॥ ३ ॥

कहकबीरयहकलिहैखोंटी। जोरहकरवानिकसलटोंटी ४

श्रीकबीरजी कहैहैं कि यह कलि बड़ो खोंटोहै अथवा यह कलि जो है झगड़ा सो बड़ो खोंट है यह कोई नहीं बिचारै है कि जब शरीरही नहीं गयो तब ब्रह्माण्ड कहां रहिगयो जहां ब्रह्माण्ड में लीनह्वैकै बनो रह्यो सो यह बात ऐसी है कि जे ब्रह्माण्ड में प्राण चढ़ावै हैं तिनके जब शरीर छूटिजाय हैं तब उन के गैवगुफा सब जरिजायँ हैं तब गैवगुफारूपी करवा में जो प्राण चढ़ो रहै है सो जब दूसर शरीर धर्‍यो तब नासिका जो है टोंटी तहां ते बहै

पवन निकसै है वही बासना लगीरहै है तेहिते फिरि गुरुसों पूछिकै अभ्यास करनलगे है ॥ ४ ॥

इति पैंसठवां शब्द समाप्तम् ॥ ६५ ॥

अथ छांछठवां शब्द ॥ ६६ ॥

योगिया कि नगरी बसै मति कोइ । जो रे बसै सो योगिया होइ १ वह योगियाको उलटाज्ञाना । काराचोला नाहीं म्याना २ प्रकट सो कन्थागुप्ताधारी । तामें मूलसजीवनि भारी ३ वा योगिया की जुगुति जो बूझै । रामरमैसोत्रिभुवनसूझै ४ अमृत-बेलीक्षणक्षण पीवै । कहकबीर सो युगयुग जीवै ॥ ५ ॥

योगियाकिनगरीबसैमतिकोइ। जोरेबसै सो योगियाहोइ १

योगिया जो है योगी ताकी नगरी जो है ब्रह्माण्ड गैबगुफा तहां कोई न बसौ अर्थात् हठयोग कोई न करो काहेते कि जो कोई वह नगरी में बसैहै अर्थात् हठयोग करै है सो योगिये होइहै कहे फिरि फिरि वही बासना करिकै योगिया होइहै योग साधैहै जन्म मरण नहीं छूटै है ॥ १ ॥

वह योगियाको उलटाज्ञाना । काराचोला नाहींम्याना २

सो वह योगी को उलटा ज्ञान है कहे उलटे पवन चढ़ावैहै अर्थात् या शरीर को वेदान्तशास्त्रमें निषेधकरै हैं कि यही शरीर ते आत्मा भिन्न है तौनेही शरीर को योगी प्रधानमानै हैं कि यही शरीर ते मुक्त ह्वै जायँगे सो इनको चोला जो है मन जौनेते शरीर पावै है और मनै गैबगुफा में समाइजाइ है नाना प्रकार के जे कुत्सितकर्म हैं तिनते मलिन ह्वैरह्यो है याते ताको काराकह्यो और म्याना छोटा को फ़ारसी में कहै हैं सो वह मन छोटा नहीं है बड़ो है सब संसार अरु चारों शरीर मन में भरा है ॥ २ ॥

प्रकट सो कन्था गुप्ताधारी। तामें मूलसजीवनि भारी ३

अरु जो बहुत योग करिकै ब्रह्माण्ड में प्राण चढ़ाइकै प्राणको

गुप्तकियो है सो प्रकटै है ते वे योगी कन्था जो है शरीर ताको धारण किये रहे हैं बहुत दिन जिये हैं ताको हेतु यह है कि मूल-सजीवनि अमृत है सो भारीकहे बहुत है सो चुवतरहै है जैसे संजीवनी औषध महाप्रलय भये नहीं रहिजाइहै सो याको वह जियावैहै सोऊ नहीं रहिजाइ है तैसे जो कोई मूड़काटि डारयो अथवा कोई शरीर को खाइलियो तब न वह अमृत रहिजाइ न वे रहिजाइँ ॥ ३ ॥

वायोगियाकीजुगुतिजोबूझै । रामरमैसो त्रिभुवनसूझै ४
अमृतबेली क्षणक्षण पीवै । कह कबीर सो युगयुग जीवै ५

सो ये जो हैं योगी ते जुगुति करिकै जियै हैं आखिर में इनको जन्म मरण नहीं छूटै सो या योगिया को हठयोग छोड़िकै जो कोई वा योगी की जुगुति बूझै जे राजयोग करनवारे हैं सो रामरमै तब वाको त्रिभुवन में रामई सूझिपरै ४ अरु श्रीकबीरजी कहै हैं कि अमृतबेलि जो है रामनाम ताको क्षणक्षण में पिये कहे श्वास श्वास में राम नाम स्मरण करै है सोई हनुमान् बिभीषणादिक के तरह युगयुग जियै हैं और जनन मरण ते रहित ह्वै जाइ है ॥ ६६ ॥

इति छांछठवां शब्द समाप्तम् ॥ ६६ ॥

अथ सरसठवां शब्द ॥ ६७ ॥

जोपै बीजरूप भगवाना । तौपण्डितकाबूझौआना १ कहँमन कहां बुद्धिॐकारा । रजसततमगुणतीनिप्रकारा २ बिषअमृतफल फलैअनेका । बहुधावेदकहैतरबेका ३ कहकबीरतेमैं काजानो । कोधौंछूटल को अरुझानो ॥ ४ ॥

जो आगे कहिआये कि जो कोई रामनाम लेइहै सोई जनन मरण ते रहित होइहै सो कहै हैं ॥

जोपै बीजरूप भगवाना । तौ पण्डित का बूझौ आना १

कहँमनकहांबुद्धिअंकारा । रजसततमगुणतीनिप्रकारा२

जीव जो है रामनाम सो भगवान् है जनन मरण छोड़ाइ देवे को तौ हे पण्डित ! तुम आन आन जगत्कारण ब्रह्म, ईश्वर, प्रकृति, पुरुष काल शब्द परमाणु इत्यादिक काहे खोजत फिरौहौ यह नामही जगत्मुख अर्थ करि जगत्कारण है १ सो रामनामै जो सबको बीज ठहस्यो तो मन को बुद्धि को प्रणवको कारण कहां रह्यो एने सत रज तम जे गुण हैं तिनके तीनि तीनि प्रकार ह्वैके जगत् कियो है प्रथम मन बुद्धि अंकार कहां रहे कोई नहीं रहे भाव यह है कि प्रथम साहबते सुरति पाय कै रामनाम को जगत्मुख अर्थ करिकै जीव समष्टि ते व्यष्टि ह्वैके संसारी भयो है तबहीं ये सब भये हैं ॥ २ ॥

बिष अमृत फलफूल अनेका । बहुधा वेद कहे तरबेका३

कोई सतोगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी उपासनाते विष अमृत अनेक फल फलत भये कहे नाना दुःख सुख जीव पावत भये कोई वे देवतन की उपासना करिकै उनके लोक जाइकै सुख पायो और कोई विषय आदिक करिकै दुःख पायो येई वे गुणन में फल फले हैं सो सबके फल स्तुति बहुधा वेद तरिबे को लिख्यो है " शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता । शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः" इत्यादिक सब ॥ ३॥

कह कबीर ते मैं का जानो । कोधौं छूटल को अरुझानो४

सो कबीरजी कहै हैं कि वेद तो फलस्तुति में तरिबे को कहे हैं कछू सांच नहीं कहे हैं ये सब जीव आपनी आपनी उपासना में लगे कहे हैं कि हम मुक्त ह्वै जाइँगे सो सब उपासना सतोगुण रजोगुण तमोगुण ये तीन गुणमय हैं सो मैं कहा जानौं को बद्ध है को छूट है तुमहीं बिचार करि लेउ कि हमारी उपासना माया के भीतर है कि माया के बाहिर है अर्थात् वेद में यह देखायो कि सबको मूल रकार बीजहै जो सबको परमकारण

है सबते पर है सो याही रामनामको जो कोई साहबमुख अर्थ करिकै जपैगो सोई परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र के पास जाइगो और नहीं तरै हैं ॥ ४ ॥

इति सरसठवां शब्द समाप्तम् ॥ ६७ ॥

अथ अड़सठवां शब्द ॥ ६८ ॥

जो चरखा जरिजाय बढ़ैया ना मरै । मैं कातौंसूत हजार चरुखला नाजरै १ बाबाब्याहकरायदे अच्छाबरहितकाह । अच्छा बर जो ना मिलै तुमहीं मोहिं बिवाह २ प्रथमे नगर पहूँचते परिगो शोक सँताप । एकअचंभो हौं देखा बेटीब्याहैबाप ३ समधीकेघरलमधी आया आये बहूकेभाय। गोड़चुल्हौनैदैरहे चरखा दियोडढाय ४ देवलोक मरिजाहिंगे एकनमरैबढ़ाय । यहमनरंजनकारने चरखादियोदढ़ाय ५ कहकबीरसन्तोसुनो चरखालखै न कोइ । जाकोचरखालखिपरो आवागमन न होइ ॥ ६ ॥

नानाउपासना में लगे जीव संसार ते नहीं छूटैहैं सो काहेते नहीं छूटै हैं सो कहे हैं ।

जो चरखा जरिजाय, बढ़ैया ना मरै ॥
मैं कातौं सूत हजार, चरुखला ना जरै १
बाबा ब्याह करायदे, अच्छा बरहित काह ॥
अच्छा बर जोनामिलै, तुमहीं मोहिंबिवाह २

यह स्थूल शरीर चरखा है सो जरिजाय है कहे छूटिजाय है और बढ़ैया जो मन है सो नहीं मरै है वह चरखा शरीर गढ़िलेइ है कहे बनाइलेइहै सो जीव कहै हैं कि मैं हजारसूत कातौं-हौं कहे कर्म छूटने के लिये बहुत उपाय करौंहौं बहुत उपासना बहुत ज्ञान इनहीं शरीरनते करौहौं परन्तु चरुखला जे चार्यो शरीर हैं ते नहीं जरै हैं १ जीव गुरुवन के इहां जाइकै कहै है कि हे बाबा गुरुजी! अच्छा बर हितकरनवारो तो है तासों ब्याह कराइदेउ अर्थात् हितकरनवारो जो अच्छा देवताकी उपासना कराइदेइ

अरु आछो देवता जो तुम्हैं न मिलै कहे मुक्ति करि देनवारो देवता जो तुम्हैं न मिलै तो तुमहीं मोको बिवाहौ कहे ज्ञान उपदेश करिकै अपनो मेरो जो भेद है ताको मेटवाइ देउ ॥ २ ॥

प्रथमै नगर पहूंचतै, परिगो शोकसँताप ॥
एक अचम्भौ हौं देखा, बेटी ब्याहै बाप ३

प्रथम साधन बतायो गुरुवालोग कि ईश्वर की उपासनाकरौ जामें अभेद ज्ञान होय सो प्रथम नगर पहुंचतै कहे जब गुरुवा देवताकी उपासना बताइदियो ताही प्रथमही शोक संताप परिगयो कहे तौने देवदेवता को विरहभयो सो जरन लग्यो अरु दूसरो ज्ञान उपदेश जो मांग्यो तामें बड़ो आश्चर्य भयो कि बेटी बाप को बिवाह्यो जब उन उपदेश कियो कि तुमहीं ब्रह्म हौ तुमहीं सर्वत्र पूर्ण हौ सो जीवतौ कबहूं ब्रह्म होतई नहीं है सो ब्रह्म तो न भयो वन वामें ब्रह्मके लक्षण आयभयो कहा कि आपने को ब्रह्म मानि कर्म धर्म सब छोड़िदियो सो ज्ञान अज्ञान जीवही को होइ है सो माया जीवही ते भई है सोई बेटी है सो बाप जीव को बिवाह लियो कहे बांधि लियो ॥ ३ ॥

समधी के घर समधी आयो, आयो बहू को भाइ ॥
गोड़ चुल्हौनै दैरहे, चरखा दियो डढाइ ४

जीवको ब्याही माया जो होइ है सो मनते होइ है सो मन ससुर भयो अरु शुद्ध ते अशुद्ध भयो सो अशुद्ध जीव को बाप शुद्ध जीव ठहर्यो सोई समधी ठहर्यो तौने जीव के घर में समधी जो है मन को भाई चित्त सो आयो नाना स्मरण देवायो तबहूं जो माया है ताको भाई काल आयो चूल्हा जो है तामें दुइपल्ला होइ हैं सो पुण्य पाप जे हैं ते दूनों पल्ला हैं तौने चूल्हा में गोड़ दैकै चरखा जो शरीर है तिनको डढाइ दीन्ह्यो कहे लाइदियो काहू को पुण्य करायकै काहूको पाप करायकै शरीर खाइलीन्ह्यो ॥ ४ ॥

गगनमँडल मा भा उजियारा, उलटा फेर लगाया॥
कह कबीर जनभये बिबेकी, जिन यन्त्री मनलाया ४

वीणा जब स्वर ते बाजै है तब सब रागन को उजियारा है जाइ है और आछौ लगै है सबराग जानि जाइहैं और दूसरे पक्षमें जीवको उलटो ज्ञान जगतुमुख ह्वै गयो तें ब्रह्ममुख ह्वै गयो तें और आत्मामुख ह्वै गयो तें कि मही ब्रह्म हौं ताको नानाशब्द में समुझाइ के अठयें गगन में जीवको साहबमुख करतभये तब जीवको ज्ञान ह्वै गयो सब धोखा छोड़िकै साहब में लग्यो जगत् मुख रह्यो सो उलटा रह्यो ताको सीधे में गुरुवालोग फेरि लै आये और लगायो पाठ होइ तो साहब में लगावत भये श्रीकबीरजी कहै हैं कि यन्त्री जो है बीणाकार उस्ताद तौनेते जो बीन बजावै मन लगाय सीखै है तो वाको स्वरनको रागनको वे ब्योरा आइ जाइ हैं ऐसे सुरति कमल में बैठे जे हैं परमगुरु जे रामनाम को उपदेश करैहैं तिनसों जो कोई यन्त्री जीवात्मा मन लगावै है सो बिबेकी होइहै कहै जगत् को असांच जानिकै सांच साहब में लगि जाइ है॥ ४॥

इति उनहत्तरवां शब्द समाप्तम्॥ ६९॥

अथ सत्तरवां शब्द॥ ७०॥

गुरुमुख॥ चातककहापुकारैदूरी। सोजलजगतरहाभरपूरी १
जेहि जल नादबिन्दु का भेदा। षटकर्म सहित उपान्यो बेदा २
जेहि जल जीव सीवका बासा। सो जल धरणि अमर परकासा ३
जेहि जल उपजे सकल शरीरा। सो जल भेद न जान कबीरा ४

चातक कहा पुकारै दूरी। सो जल जगत रहा भरपूरी १
जेहिजलनादबिन्दुकाभेदा। षटकर्मसहितउपान्योबेदा २

सबते गुरुपरमपुरुषपर श्रीरामचन्द्र कहै हैं कि हे चातक! दूरि दूरि तैं कहा पुकारै है कि पियासो हौं पियासो हौं जौन स्वाती को

जल तें चाहे है जाते पियास बन्द ह्वै जाइहै सो रामनामरूपी जल स्वाती को मुख्य मुक्ति को साधन जगत् में पूरिरह्यो है तें कहां और और मुक्ति के साधन को खोजते फिरै है १ और जौने रामनामरूपी जल में नादबिन्दु को भेद है अपने पट्मात्रन ते वेद को उपान्यो कहे उत्पत्ति किया है ॥ २ ॥

जेहिजलजीवसीवकाबासा॥सोजलधरणिअमरपरकासा ३
जेहिजलउपजेसकलशरीरा।सोजलभेदनजानकबीरा ४

जौने रामनामरूपी जल में जीव जे हैं सीव जे नाना ईश्वर तिनको बास है और सोई रामनामरूपी जल धरणि में जो कोई जपै ताको अमर करै है या प्रकाश कहे जाहिर है अथवा वा अवनी में नाशवान् नहीं होय है या जाहिर है तैं पियासो काहे मरै है ३ जेहि रामनामरूपी जलते सकल शरीर उपजै है अर्थात् संसारमुख अर्थ ते अनन्त ब्रह्मा उपजे हैं रामनाम रूपी जलको भेद कबीरा कहे कायाके बीर जे जीव हैं ते नहीं जानैहैं अर्थात् जो रामनाम मोको बतावै है सो जो बिचार करै तो चिद्विग्रह करिकै सर्वत्र मही देखोपरौं तो मेरी भक्ति जलपान करिकै मुक्ति ह्वै जाइ है और संसारताप बुताइजाइ है ॥ ४ ॥

इति सत्तरवां शब्द समाप्तम् ॥ ७० ॥

अथ इकहत्तरवां शब्द ॥ ७१ ॥

जसमासु नलकी तसमासु पशुकी रुधिर रुधिर यकसाराजी। पशुको मासुभखै सबकोई नलहि न भखै सियाराजी १ ब्रह्मकुलाल मेदिनी भरिया उपजि बिनशि कितगइयाजी। मासु मछरिया जोपै खैया जो खेतनि में बोइयाजी २ माटी को करिदेई देवा जीव काटि कटि देइयाजी। जो तेरा है सांचा देवा खेत चरत किन लेइयाजी ३ कहै कबीर सुनो हो सन्तो रामनाम नितलैया जी। जो कछु कियो जिह्वा के स्वारथ बदल पराराा दैयाजी॥ ४ ॥

देवलोक मरि जाहिंगे, एक न मरै बढ़ाय ॥
यह मनरञ्जन कारने, चरखा दियो दृढ़ाय ५
कह कबीर सन्तो सुनो, चरखा लखै न कोइ ॥
जाको चरखा लखि परो, आवागमन न होइ ६

देवलोक को नरलोक को सबको काल खाइलेइहै यह बढ़ैया जो मन है सो नहीं मारा मरै है और जब वह चरखा टूटै है तब बढ़ईही बनाइदेइ है ऐसे वह बढ़ई जो मन सो कीलके रञ्जनकरिबे को शरीररूपी चरखा को दृढ़ करत जाइ है नाना शरीर कालको खवावतजाय है ५ श्रीकबीरजी कहै हैं कि चरखा जे चार्यो शरीर हैं तिनको कोई नहीं लखैहै जाको चार्यो शरीर लखि पर्यो अरु पांचो शरीर कैवल्य में प्राप्त भयो कहे केवल चिन्मात्र रहिगयो तब वह चरखा को गढ़ैया जो मन है तेहिते जीव भिन्न ह्वै गयो तब छठवों अंश स्वरूप साहब देइ है तामें स्थित ह्वैके साहब के लोकको जाइ है आवागमन नहीं होइ है ॥ ६ ॥

इति अरसठवां शब्द समाप्तम् ॥ ६८ ॥

अथ उनहत्तरवां शब्द ॥ ६९ ॥

यन्त्रीयन्त्रअनूपमबाजै। वाके अष्टगगन मुखगाजै १ तूही गाजै तूही बाजै तुहीलिये करडोलै। एकशब्दमें रागछत्तिसौअनहदबाणी बोलै २ मुखकोनालश्रवणकेतुम्बा सतगुरुसाजबनाया। जिह्वातारनासिकाचरही मायामोमलगाया ३ गगनमँडलमाभा उजियारा उलटाफेरलगाया। कह कबीर जनभये बिबेकी जिन यन्त्री मनलाया ॥ ४ ॥

यन्त्रीयन्त्र अनूपम बाजै। वाके अष्टगगन मुखगाजै १

यन्त्री जो है जीव ताको यन्त्र जो शरीर है सो अनूपम बीन बाजै है बीन में सात स्वर बाजैहैं अरु आठवों जीव के तार में टीप को स्वर बाजैहै और इहां यह शरीर में सात चक्र हैं सहस्रारखों

तिनके बीच बीच को जो है आकाश ये सात गगन भये अरु आठवों सहस्रार के ऊपर को जो आकाश तामें सुरति कमल में बैठो जो गुरु नाम बतावै है सो वह आठवों गगन में जाइकै गाज्यो कहे राम नाम सुनिकै लैनलग्यो सो इहां सुषुम्णा जो नाड़ी सोई तार है मूलाधार चक्र सुरति कमल येई तुम्बा हैं ॥ १ ॥

तूही गाजै तूही बाजै, तुही लिये कर डोलै ॥
एक शब्द में राग छत्तिसौ, अनहद बाणी बोलै २

सो या बीणा को तुही गाजै कहे सुरति कमल में तुही नाम लेइहै व तुही बाजै कहे तुही सुरति बोलैहै व तुही सुरतिको लैकै डोलै है कहे तुही सुषुम्णा ह्वै चढ़िजाइ है अर्थात् शरीर को मालिक तुही है और बीणा में छत्तिसराग बोलै है और इहां एक शब्द जो है राम नाम तामें चौंतिसबर्ण और पैंतीसौं नाद व छत्तिसौ बिन्दु ई सब हैं बिन्दुते आकारादिक स्वर आइगये वही अनहद है कहे वहीको हद नहीं है तौने रामनामरूपी बाणी सुरति कमल में गुरु बोलै है सो तहीं जपै है या अन्तर बीणा बतायो सो जानु अब बाहर को बीणा बतावै हैं ॥ २ ॥

मुखको नाल श्रवण के तुम्बा, सतगुरु साज बनाया ॥
जिह्वा तार नासिका चरही, माया मोम लगाया ३

बीणाके बीच में डांड़ी है यहां मुखै नालडांड़ी है बीणा में दुइ तुम्बा लगैहैं यहां दूनों जे श्रवण हैं तेई तुम्बा हैं बीणा को स्वर मिलावै हैं और यहां सतगुरु जे हैं ते साज बनाइ जीवन को उपदेश करै हैं व वहां बीणा में तार लागैहै अरु यहां जीभ जो है सोई तार है और बीणा में चरही कहे सार लागै है और यहां नासिका चरही कहे सारहै सार में मोम जमायाजाइ है यहां माया जो है गुरु की कृपा "माया दम्भे कृपायां च" सोई मोम जमायो जैसे बीणा में जौन स्वर बजावै तौन बाजैहै तैसे सुरति कमल ते गुरु जो राम नाम को उपदेश कियो सोई जीभ ते जपै है ॥ ३ ॥

जसमासुनलकीतसमासुपशुकी,रुधिररुधिरयकसाराजी॥
पशु को मासु भखै सब कोई, नलहि न भखै सियाराजी १

जस नरकी मासु होइ है तस पशुकी मासु होइ है अरु रुधिर भी एक तरह होइहै परन्तु पशुके मासुके मासको जे भक्षणकरै हैं ते सियारई हैं सो वे मनुष्यते और सियारते यतनै भेदहै कि सियार मनुष्यको मांस खाइहै अरु नर पशुको मांस खाइहै मनुष्य को मांस पशु नहीं खाइहै सो कहैहैं कि रुधिर मांस तो सब एकई तरह है नरको मांस काहे नहीं खायहैं ॥ १ ॥

ब्रह्मकुलालमेदिनीभारिया, उपजिबिनशिकितगइयाजी ॥
मासु मछरिया जो पै खैया, जो खेतनि में बोइयाजी २

जौनेते सब पृथ्वी जगत् भयोहै ऐसो जो है ब्रह्मा कुलाल जो कुम्हार और सर्वत्र जगत् में भरेरहा अर्थात् सब बस्तु ब्रह्मईरह्यो तो यह सब पृथ्वी उपजी और बिनाशिकै कहां गई सो एक ब्रह्मही सर्व मानिकै जो मासु मछरी खाउ कि सबतो एकही है जो मन चलैगो सो करैंगे नरक स्वर्ग कर्म सब मिथ्या है ऐसो जो मानौगे तो जो खेतमें बोवनको होइहै सो तुम मुर्दै पशुकी मासकी मासु खाउ हौ अरु वे तुम्हारे जीतही यमपुर में मांस खाइँगे जो कहो हम देवताको बलि चढ़ाइकै खाइहैं तौने पर कहैहैं ॥ २ ॥

माटी को करि देई देवा, जीव काटि कटि देइयाजी ॥
जो तेरा है सांचा देवा, खेत चरत किन लेइयाजी ३

माटीको तो देवता बनावो हौ उसके आगे जीव काटि काटि कै राखौ हौ यह कैसी गाफ़िली तुमको घेरी है जो माटी को देवता सांच है तो जब बोकरी खेतमें चरती है तब तुम्हारा देवता काहे नहीं खाता क्या देवता को किसीका डर है भाव यह है कि तुम काहे को हत्यारी लेतेहो अंगुरिआयदेउ जो सांच होयगो तो खाइगो तेहिते तुम्हारो देवता मिथ्या है खेतमें चरत बोकरी को न खाइसकैगो ॥ ३ ॥

कहै कबीर सुनो हो सन्तो, राम नाम नित लैयाजी ॥
जो कछु कियो जिह्वाके स्वारथ, बदल पराश दैयाजी ४

सो कबीरजी कहै हैं कि जिनके जिनके गला को तुम काटेहौ ते सब तुम्हारो नरक में गला काटेंगे तेहिते रामनामको नित लेउ भाव यहहै जब नामापराध छोड़ि रामनाम लेउगे और फिरि पातक न करौगे तबहीं तुम्हारे पातक जाइँगे तामें प्रमाण "हरिर्हरति पापानि दुष्टचित्तैरपि स्मृतः। यदृच्छयापि संस्पृष्टो दहत्येव हि पावकः॥ रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन्। नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति" (दशनामापराधमें प्रमाण) "सतां निन्दा नाम्नः परममपराधं वितनुते यतःख्यातिं जातं कथमिह सहेद्धेलनमदः। शिवस्य श्रीविष्णोर्य इह गुणनामादिसकलं धिया भिन्नं पश्येत्स खलु हरिनामाहितकरः॥ गुरोरवज्ञा श्रुतिशास्त्रनिन्दनं तथार्थवादो हरिनामकल्पनम्। नाम्नो बलाद्यस्य हि पापबुद्धिर्न विद्यते तस्य यमैर्हि विच्युतिः॥ श्रुत्वापि नाममाहात्म्यं यः प्रीतिरहितोधमः। अहंममादिपरमो नाम्नि सोप्यपराधकृत्" ॥ ४ ॥

इति इकहत्तरवां शब्द समाप्तम् ॥ ७१ ॥

अथ बहत्तरवां शब्द ॥ ७२ ॥

चलहु का टेढ़ो टेढ़ो टेढ़ो। दशौ द्वार नरकै में बूड़े तू गन्धी को बेठो १ फूटे नैन हृदय नहिं सूझै मति एकौ नहिं जानी। काम क्रोध तृष्णाके मारे बूड़ि मुये बिन पानी २ जारेदेह भसम ह्वैजाई गाड़े माटी खाई। शूकर श्वान कागके भोजन तनकी यहै बड़ाई ३ चेति न देखु मुगुध नर बौरे तूत काल न दूरी। कोटिनयतन करै बहुतेरे तनकि अवस्थाधूरी ४ बालूके घरवामें बैठे चेतत नाहिं अयाना। कह कबीर यक राम भजे बिन बूड़े बहुत सयाना॥५॥

चलहुकाटेढ़ोटेढ़ोटेढ़ो।दशोद्वारनरकैमेंबूड़ेतूगन्धीकोबेठो १

तीनबार टेढ़ो टेढ़ो टेढ़ो जो कह्यो सो ज्ञानकाण्ड कर्मकाण्ड

उपासनाकाण्ड ये तीनों मार्ग अथवा सतोगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी ये तीनों कर्मते टेढ़े हैं सो ये मार्ग में कहा चलौहौ दशौद्वार जे दशौ इन्द्रियहैं ते नरकही में लगी हैं कहे विषयनही में लगी हैं सो तेरे विषय की गन्धलगी है ताते तैं गन्धी है सो तोही ऐसे गन्धी को मायाबोठिलियो कहे तेरो ज्ञान छोड़ाइलियो अरु जो बेड़ो पाठ होइ तौ यह अर्थ है कि तोहीं ऐसे गन्धीको जाके दशौद्वार नरकहीमें बूड़े हैं ताको बेड़ो नहीं है जाते संसारसागर उतरि जाइ अथवा गन्ध जगत् जो है गन्धीशरीर ताको तैं बेड़ो कहे आधार कहा ह्वै रहेहै टेढ़ो टेढ़ो चाल चलिकै यहां कहां तेरो पार कियो होइगो संसारसागर ते न होइगो बूड़िही जाइगो ॥ १ ॥

फूटे नैन हृदय नहिं सूझै, मति एकौ नहिं जानी ॥
काम क्रोध तृष्णा के मारे, बूड़िमुये बिन पानी २
जारे देह भसम ह्वै जाई, गाड़े माटी खाई ॥
शूकर श्वान काग के भोजन, तनकी यहै बड़ाई ३
चेति न देखु मुगुध नरबौरे, तू ते काल न दूरी ॥
कोटिन यतन करै बहुतेरे, तनकि अवस्था धूरी ४

अरु ये पदनको अर्थ स्पष्ट है इनमें यही वर्णन करै हैं कि माया की फौजै तोको लूटि लियो अथवा शरीररूपी बेड़ो तेरो चलायो न चल्यो संसारसागर कामादिक तोको बोरि दियो काल दूरि नहीं है आखिर मरही जाहुगे तनकी अवस्था दूरिही है आखिर धूरिही में मिलिजाइगो॥ २ । ४ ॥

बालू के घरवा में बैठे, चेतत नाहिं अयाना ॥
कह कबीर यक राम भजे बिन, बूड़े बहुत सयाना ५

श्रीकबीरजी कहै हैं कि यही शरीररूप बालूके घर में बैठिकै अरे मूढ़! चेतत नहीं है परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को भजन नहीं करै है न जानै यह शरीर कब गिरिजाइ कहे छूटिजाइ सो विषय

छोड़ि वेगिही भजन करु वे समर्थ तोको छोड़ाइ लेइँगे साहब के भजन बिना बहुत सयान बहुत मतन में लगिकै बूड़िगये हैं अर्थात् माया ते छोड़ाइ लीवे में समर्थ साहबही हैं और कोई न छोड़ाइ सकैगो तेहिते परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को भजन करु वे तोको संसार ते छोड़ायही देइँगे ॥ ५ ॥

इति बहत्तरवां शब्द समाप्तम् ॥ ७२ ॥

अथ तिहत्तरवां शब्द ॥ ७३ ॥

फिरहु का फूलेफूले । जो दसमास उरधमुखभूले सो दिनका-हेक भूले १ ज्यों माखी स्वादै लहि विहरै शोचि शोचि धन कीन्हा । त्योंहीं पीछे लेहु लेहुकर भूतरहनि कछु दीन्हा २ देहरीलौं बर नारि संगहै आगेसंगसहेला । मृतुकथानसँग दियोखटोला फिरि पुनि हंस अकेला ३ जारे देह भसम ह्वै जाई गाड़े माटी खाई । काचे कुम्भ उदक जो भरि या तनकै इहै बड़ाई ४ राम न रमसि मोहमें माते पर्‌यो कालवश कूवा । कहकबीर नल आपु बँधायो ज्यों नलिनीभ्रम सूवा ॥ ५ ॥

फिरहुकाफूलेफूले । जोदशमासउरधमुखभूलेसोदिनकाहेकभूले १

औरे औरे मतन में लगिकै कहा फूले फूले फिरौ हौ कि हमहीं मालिक हैं हमहीं मुक्त हैं दशमहीना ऊर्ध्वमुख गर्भ में भूलतरहे तहां कह्यो कि हे साहब ! मैं तिहारो भजन करौंगो मोको छोड़ावो सो दिन काहेको भूलिगये अब काहे भजन नहीं करौहौ निकसतही कहां कहां करनलग्यो जो कहो जब हम गर्भ में रहे तब हमको साहबै दयालुता करिकै सुरति लगायो अब काहे दया-लुता करिकै सुरति नहीं लगावै हैं सो हम कहाकरैं हमको साहबई भुलाइ दियो अरेमूढ़ ! साहब तो गोहरावत जाइहै सब शास्त्रवेद के तात्पर्य करिकै बीजक में कि जो मोको जानि भजनकरु तो मैं तेरो उद्धार करौंगो सो गर्भबास में जो तैं भजन करिबेको कौल कियो सो भजन न कियो भुलायदियो तामें प्रमाण कबीरजीके

मुक्तिलीलाग्रन्थ को "गर्भवास में रह्यो कह्यो मैं भजि हौं तोहीं। निशिदिन सुमिरौं नाम कष्टसे काढ़ौ मोहीं ॥ यतनाकियो करार काढ़ि गुरुबाहरकीना। भूलिगयोनिजनाम भयो माया आधीना" सो साहब को कौन दोष है तुहीं कौलते चूकि गयो साहब को भजन न कियो ॥ १ ॥

ज्यों माखी स्वादै लहि बिहरै, शोचि शोचि धन कीन्हा ॥
त्योंहीं पीछे लेहु लेहु कर, भूतरहनि कछु दीन्हा २

जैसे माखी फूलन के रसके स्वादको पाइकै बिहारकरै है और ताहीके सहतको धन जोरिजोरिकै धरै है तैसे तुमहूं बिषयभोग करिकै धन जोरि जोरि धरोहो सो जैसे कोल आइकै मछेहन को लाइकै सहत को लैजाइकै आपुस में बांटिलेइ है तैसे तोहीं पीछे कहे जब तुम न रहिजाउगे तब तिहारे धनको स्त्री पुत्रादिक लेहु लेहु करिकै बांटिलेइँगे अरु तुमको भूतकी रहनि कहे दशदिन भूत कहैंगे मरघटा में बैठावेंगे ॥ २ ॥

देहरी लौ बर नारि संग है, आगे संग सहेला ॥
मृतुकथानसँगदियोखटोला, फिरि पुनि हंसअकेला ३
जारे देह भसम ह्वै जाई, गाड़े माटी खाई ॥
काचेकुम्भ उदक जो भरिया, तनकै इहै बड़ाई ४

इन चारो तुकन को अर्थ स्पष्ट है ॥ ४ ॥

राम न रमासि मोह में माते, पर्यो कालवश कूवा ॥
कहकबीरनलआपुबँधायो, ज्योंनलिनीभ्रमसूवा ५

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे जीव! मोहमें माते राम में नहीं रमै है काल के बश ह्वैकै संसारकूपमें पर्यो है याते बार बार तेरो जन्म मरण होइहै सो तो अपनेही भ्रमते नानादुःख सहै है जैसे नलिनी को सुवा अपनेही चंगुलते धरि लियो छोड़ै नहीं है मारोजाइ है तैसे तैंहूं नानामतन में लागिकै अरु विषयन में लागिकै आपहीते

यह संसारमें परिकै बँधिगयो संसारको धरे है भाव यह है संसार ताको बांधे नहीं है तें छोड़ि काहे नहीं देइहै अरु जेहि साहबको तें है जहां एकऊ दुःख नहीं है तिनमें काहे नहीं लगै है ॥ ५ ॥

इति तिहत्तरवां शब्द समाप्तम् ॥ ७३ ॥

अथ चौहत्तरवां शब्द ॥ ७४ ॥

योगिया ऐसो है बदकरणी । जाके गगन अकाश न धरणी १ हाथनवाकेपाउँनवाकेरूपनवाकेरेखा । विनाहाटहटवाईलावै करै बयाईलेखा २ कर्मनवाकेधर्मनवाके योगनवाके युगुती । सींगीपत्र कछुवनहिंवाकेकाहेकमांगैभुगुती ३ तैंमोहिंजानामैंतोहिंजाना मैं तोहिंमाहँसमाना । उतपतिप्रलयएकनहिंहोती तबकहुकौनको ध्याना ४ योगियाएकआनिकियठाढ़ोरामरहाभरिपूरी । औषधमूल कछुवनहिंवाकेरामसजीवनिमूरी ५ नटवतबाजीपेखनीपेखैबाजी-गरकीबाजी । कहैकबीरसुनौहोसन्तोभईसोराजविराजी ॥ ६ ॥

योगियाऐसोहैबदकरणी । जाकेगगनअकाशनधरणी १

हाथ न वाके पाउँ न वाके, रूप न वाके रेखा ॥
बिना हाट हटवाई लावै, करै बयाई लेखा २

योगिया कहे संयोगिया को ब्रह्मसंयोग करिकै जगत् करैहै याते योगिया माया शबलित ब्रह्महै सो वह योगियाकी बदकरणी है कहे निषिद्ध करणी है जौने चैतन्याकाश में 'अहंब्रह्मास्मि' बुद्धिकरैहै तौन चैतन्याकाश मेरे लोक को प्रकाश है तहां आकाश धरणी एकौ नहीं हैं १ वह चैतन्याकाश को जो मानिलियो है कि सो महींहौं ऐसा जो समष्टिजीव चैतन्य ब्रह्मरूप सो वाके न हाथ है न पाउँ है न वाके रूप रेखाहै जहां जीव नानाकर्म करै है अरु वही कर्मनको फल पावै है जहां यही लेनदेन ह्वैरह्योहै सो जो है जगत् हाट वाके नहीं है कहे देश काल बस्तुपरिच्छेद ते शून्य है औहटवाई लगौतै है कहे मायाशबलित ह्वैकै जगत् करते है

अरु बया और को अनाज और औरको नापिदेइहै अरु ब्रह्म जो है बया सो माया शबलित ह्वैकै ईश्वररूपते जीवनके किये जे कर्म के फल हैं ते जीवनको देइहै ॥ २ ॥

कर्म न वाके धर्म न वाके, योग न वाके युगुती ॥
सींगीपत्र कछुव नहिं वाके, काहे को मांगै भुगुती ३

अरु वह ब्रह्मको न कर्म है, न धर्म है और न वाके योग युगुती है और सींगी जो योगीलोग बजावै हैं सो वाके नहीं है व योगी तुम्बा लिये रहे हैं अरु वाके पात्र नहीं है सो कबीरजी कहै हैं कि वह ब्रह्म तौन योग करै न वेष बनावै सिद्धान्त में तो कछू हई नहीं है सो हे योगिउ, ज्ञानिउ! वेष बनाइकै जो कहौहौ कि हमहीं ब्रह्महैं तो मुक्ति कहे ऐश्वर्य काहे मांगौ हौ कि हमहीं जगत् के मालिक व ब्रह्म ह्वैजाइँ हे गुरु! हमको यह युगुति बताइदेउ और जो मुक्ति पाठ होइ तो तुम पहलेहीते मुक्ति बनेरहे गुरुवालोगनते काहे मुक्ति मांगौहौ कि जामें हम मुक्त ह्वैजाइँ सो युगुति बताइदेउ जो कहो हम आपने भ्रमनिवृत्ति करिबे को मुक्ति को ज्ञान मांगै हैं तो अरे मूढ़ो! वह ब्रह्म के तो कुछ हई नहीं है वह निर्लेपहै वह ब्रह्म जो तुम होते तो अज्ञानई तुम्हारे कैसे होतो ॥ ३ ॥

तैं मोहिं जाना मैं तोहिं जाना, मैं तोहिं माहँ समाना ॥
उतपति प्रलय एक नहिं होती, तब कहु कौनको ध्याना ४

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे जीव! ज्ञान जो तैं मानिलियोहै कि केते उपासनाकरै हैं कि मैं ईश्वर हौं ईश्वर में समान हौं ईश्वर मोहीं में समान है तो उत्पत्तिप्रलय जब कुछ नहींहै तबतो बताउ कौन को ध्यान है अर्थात् काहूको ध्यान नहीं करत रह्यो भाव यह है कि तब जो ब्रह्म होते तो संसारी काहे होते ॥ ४ ॥

योगिया एक आनि कियठाढ़ो, राम रहा भरिपूरी ॥
औषधमूल कछुव नहिं वाके, राम सजीवनिमूरी ५

सो तैंहीं यह योगिया माया शबलित ब्रह्म को अनुभव करिकै

धोखाब्रह्महीको साहब मानि ठाढ़के लीन्ह्यो है फिर कैसो है ना कछु औपद है ना वाके मूल है ताको मानै हैं परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं सजीवनिमूरि सर्वत्र पूर्ण ह्वैरहेहैं ताको नहीं जानैहैं सजीवनिमूरि याते कह्यो कि नाना ईश्वर जीवत्व मिटायदेनवारे हैं व साहब जीवनको जियाय देनवारे हैं अर्थात् रूप देनवारेहैं॥५॥

नटवत बाजी पेखनी पेखै, बाजीगर की बाजी॥
कहै कबीर सुनौहो सन्तो, भई सो राजबिराजी ६

जौन तू धोखाब्रह्म सर्वत्र पूर्ण मानै है सो तेरी यह पेखनी नटवत् बाजी पेखनी है अर्थात् झूठ है बाजीगरकी बाजी है अर्थात् सांच असांच देखावै असांच सांच देखावै है सो कबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो ! सुनौ उनको राजबिराजी ह्वैगई कहे सर्वत्र पूर्णसत्य जे साहब हैं ते उनको नहीं जानि परै हैं वही धोखाब्रह्म में लगे हैं असत्यही सर्वत्र देखै हैं मनमाया को राज्य ह्वैरही है साहब को राज्य नहीं है ॥ ६ ॥

इति चौहत्तरवां शब्द समाप्तम् ॥ ७४ ॥

अथ पचहत्तरवां शब्द ॥ ७५ ॥

ऐसो भर्म बिगुरचिनभारी । वेद किताब दीन औ दोजख को पुरुषा को नारी १ माटी को घट साज बनाया नादेबिन्दु समाना। घट बिनशे क्या नाम धरहुगे अहमक खोज भुलाना २ एकैहाड़ त्वचामलमुत्रा रुधिरगूदयकमुद्रा । एक बिन्दुते सृष्टिरच्यो है को ब्राह्मण को शुद्रा ३ रजगुण ब्रह्म तमोगुण शंकर सतोगुणी हरि सोई । कहै कबीर राम रमिरहिया हिन्दू तुरुक न कोई ॥ ४ ॥

ऐसोभर्मबिगुरचिनभारी ।
वेदकिताब दीन औ दोजख को पुरुषा को नारी १

ऐसो कहे यह तरहते जैसो आगे कहै हैं तैसो चिन्मात्र जीव को बिगुरचिन कहे बिगारिबो भर्मते बहुत भारी है काहेते कि भर्म

ते दुबिधा कहिकै वह सार पदार्थ को न जान्यो हिन्दू मुसलमान दोऊ बिगरि गये हिन्दू वेद्की राहते नाना मत वनाय लेत भये व मुसल्मान किताबन की शरा लैकै नानामत दूसरे दीन को खड़ा करत भये हिन्दू नरक स्वर्ग मुसल्मान बिहिश्त दोजख कहत भये जो वेद किताब के तात्पर्यते देखो तो न कोई पुरुष जानिपरै न नारी जानिपरै सो जब पुरुषही नारी को भेद नहीं है तो हिन्दू मुसल्मान कैसे भेद भयो ॥ १ ॥

माटी को घट साज बनाया, नादे बिन्दु समाना ॥
घटबिनशे क्या नाम धरहुगे, अहमक खोज भुलाना २
एकै हाड़ त्वचा मल मुत्रा, रुधिर गूद यक मुद्रा ॥
एक बिन्दु ते सृष्टि रच्यो है, को ब्राह्मण को शुद्रा ३

नाभीके तरे जो दश आंगुरकी ज्योति है व तौने में जब प्राणवायुको संयोग होइ है तब नाद उठै है तामें बिन्दु समाइ गयो तब माटीको घट यह पिण्डभयो ताहीको नाम धरावै है जब याको घट विनशिगयो कहे शरीर छूटिगयो तब याको क्या नाम धरोगे अर्थात् नामरूप याके सब मिथ्याहैं अहमक जो है जीव सो नामरूप के खोजमें भुलाइगयो ये सव जीवात्मा के नामरूप नहीं हैं २ सो एकैहाड़ादिकनते व एकैबिन्दुते कहे बीर्यते सकलसृष्टि भई है काको हिन्दू कहैं काको मुसलमान कहै काको ब्राह्मण कहैं काको शूद्र कहैं शरीर में यही साजु सबके हैं अरु वेद में कर्म किताब में शरा यही ते नानाभेद लगे हैं जो बिचारिकै देखो तो नामरूपही को भेद लागिरह्योहै आत्मा तो सबको चित्ही है व मांस चाम सब के पञ्चभौतिकही है अब जे गुणाभिमानी हैं तिनको कहै हैं ॥३॥

रजगुण ब्रह्म तमोगुण शंकर, सतोगुणी हरि सोई ॥
कहै कबीर राम रमि रहिया, हिन्दू तुरुक न कोई ४

वही नामरूपके भेद ते ब्रह्मा रजोगुणी शंकर तमोगुणी विष्णु सतोगुणी भये और वही नामके भेदते मुसल्मान में इनहीं को

अज़ाजील मैकाईल इजराईल कबीरजी कहै हैं कि येतो सब नाम-रूपके भेद हैं इनको सबको आत्मा एकई है तिनमें अन्तर्यामी-रूप ते मनवचन के परे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रई रमिरहे हैं जो कहो रामनामौ तो नाम में आवै है तो रामको नाम मन वचन में नहीं आवै है आपही स्फुरित होइहै तेहिते नामत्व नहीं है अरु श्रीरामचन्द्र निर्गुण सगुण के परे हैं तिनको जानै और जो आत्मा नामरूपते भिन्न है न हिन्दू है न तुरुकहै तामें येई राम रमिरहे हैं या हेतुते सबको आत्मा इन्हीं को दासहै तेहते इन्हींको जो जानै सोई मुक्त होइहै परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र निर्गुण सगुण के परे हैं तिनहींको रामनाम जाने मुक्ति होइहै तामें प्रमाण "रामकेनाम ते पिण्डब्रह्माण्ड सब रामकानाम सुनि भर्ममानी। निर्गुणनिरा-कारके पार परब्रह्महै तासुकानामरंकारजानी ॥ विष्णुपूजाकरैं ध्यानशंकर धरैं भनैं सुविरंचि बहु विविधवानी। कहै कबीर कोइ पारपावै नहीं रामकानाम अकहकहानी" ॥ ४ ॥

इति पचहत्तरवां शब्द समाप्तम् ॥ ७५ ॥

अथ छिहत्तरवां शब्द ॥ ७६ ॥

अपनपौ आपुही बिसरो । जैसे शोनहा कांचमँदिरमें भर्मत भूंकि मरो १ ज्यों केहरि बपु निरखि कूपजल प्रतिमा देखि परो । ऐसेहि मदगज फटिकशिलापर दशननि आनिअरो २ मर्कटमुठी स्वाद ना बिहुरै घरघर नटतफिरो । कहकबीर ललनीके सुवना तोहिं कवने पकरो ॥ ३ ॥

अपनपौ आपुही बिसरो ॥

जैसे शोनहा कांच मँदिर में, भर्मत भूंकि मरो १
ज्यों केहरि बपु निरखि कूपजल, प्रतिमा देखि परो ॥
ऐसेहि मदगजफटिकशिलापर, दशननि आनि अरो २

अपनपौ कहे आपने जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं तिनको आपही ते यह जीव बिसरिगयो जैसे कूकुर कांचके मन्दिरमें आपनो रूप देखि देखि भर्मते भूँकि भूँकि मरै है १ अरु जैसे केहरि कूपके जल में अपनी प्रतिमा देखिकै कूदिपरैहै अरु ऐसेही प्रतिबिम्ब देखि स्फटिकशिला में हाथीदांत टोरि डारै है॥ २॥

मर्कटमुठी स्वाद ना बिहुरै, घर घर नटत फिरो॥
कह कबीर ललनी के सुवना, तोहिं कवने पकरो ३

अरु जैसे मर्कट मूठीमें जो है दाना ताके स्वादके लिये फँसि गये बाजीगर के साथ नाचत बागैहै सो कबीरजी कहै हैं कि जैसे इनके सबके भ्रम होइहै तैसे हे जीव! तैंहीं सब कल्पना करिलियो है अपनी कल्पनाते तोहींको भ्रम होइहै नाना उपासना नाना ठाकुर खोजत फिरै हैं बिचारिकै देख तो जब तेरे कल्पना नहीं रही तबने शुद्ध रहे है जैसे सुवा ललनीको पकरि लेइ है तैसे तैंहीं ये सब कल्पना करिकै कल्पना में बँधो है जैसे सुवा ललनी को जो छोड़िदेइ तो वृक्षमें पहुंचै जाइ तैसे तैंहूं जो कल्पना को छोड़िदेइ तो तोको कौन पकस्यो है परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र के पास पहुँचै जाइ जब सब कल्पना छोड़ि शुद्ध ह्वैजाइ है तब साहब अपनो विग्रह देइहै तामें स्थित ह्वै साहब के लोकको जाइ है तामें प्रमाण "आदत्ते हरिहस्तेन हरिपादेन गच्छति" (इति स्मृतिः) अरु श्रीकबीरऊजी को मङ्गल प्रमाण 'चलोसखी बैकुण्ठविष्णुमाया जहां। चारिउमुक्तिनिदान परमपदले तहां॥ आगेशून्यस्वरूप अलखजहिं लखिपरै। तत्वनिरञ्जनजान भरमजनि चित धरै॥ आगे है भगवन्त तो अक्षरनाउँ है। तौनमिटावैकोटिबनावैठाउँ है॥ आगेसिन्धुबेलंदमहागहिरोजहां। को नैयालैजायउतारैकोतहां॥ करअजपाकीनावतोसुरतिउतारि है। लेइहौं अज्जरनाउँ तो हंस उबारि है॥ पार उतर पुरुषोत्तम परख्योजान है। तहँवां धाम अखण्ड तो पद निर्वान है॥ तहँ नहिं चाहत मुक्ति तो पद डारेफिरै। सुरत-

सनेही हंसनिरन्तर उच्चरै ॥ बारहमास वसन्त अमरलीला जहां। कहैं कबीर बिचारि अटल ह्वैरहु तहां ॥ ३ ॥

इति छिहत्तरवां शब्द समाप्तम् ॥ ७६ ॥

अथ सतहत्तरवां शब्द ॥ ७७ ॥

आपन आश किये बहुतेरा । काहु न मर्म पाव हरि केरा १ इन्द्री कहां करै बिश्राम । सो कहँगये जो कहते राम २ सो कहँ गये होत अज्ञान । होय मृतक वहि पदहि समान ३ रामानन्द रामरसछाके । कहकबीर हम कहिकहि थाके ॥ ४ ॥

आपन आश किये बहुतेरा । काहु न मर्म पाव हरि केरा १

आपने स्वरूपके चीन्हिबेकी बहुतेरा कहे बहुत आश किये कि हमारो आत्मै सबको मालिक है यही के जाने ते हम मुक्त ह्वै जाइँगे परन्तु मुक्त न भये अरु हरि जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र सबके कलेश हरनवारे हैं तिनको मर्म न पायो अर्थात् उनको कोई न चीन्ह्यो ॥ १ ॥

इन्द्री कहां करै बिश्राम । सो कहँगये जो कहते राम २

अरु यह कोई नहीं बिचार करै है कि इन्द्री कहां बिश्रामकरै है काहेते कि इन्द्री के जे देवता हैं तिनते समेत इन्द्री तो मनते चैतन्य है व मन जीवात्मा ते चैतन्य है व जीवात्मा परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र के प्रकाश ते चैतन्य है सो जे आपने स्वरूप को बिचार करै हैं कि महीं राम हौं ते वे रामभर कहां गये अर्थात् नहीं गये ब्रह्म में समानरहे अरु एक एकते चैतन्य है तामें श्रीगोसाईं तुलसीदास को प्रमाण "बिषयकरन सुरजीव समेता । सकल एकते एक सचेता ॥ सबकर परम प्रकाशक जोई । राम अनादि अवधपति सोई ॥ जगतप्रकाश प्रकाशकरामू । मायाधीश ज्ञान गुणधामू" ॥ २ ॥

सो कहँगये होत अज्ञान । होय मृतक यहि पदहि समान ३

रामानन्द रामरस छाके । कह कबीर हम कहि कहि थाके४

जीव ब्रह्म में समान रह्यो शुद्ध रह्यो जब मन की उत्पत्ति भई अज्ञान भयो सो कहां गयो अर्थात् तब मृतक ह्वैकै आपने स्वरूप को भुलायकै यहि पदहि कहे यहि संसार में समान ३ श्रीकबीरजी कहै हैं कि हम चारोंयुग में कहि कहि थकि गये कि रामानन्द जे हैं तेई राम के रसमें छके हैं अरु तेई परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रके धामको गये हैं और कोई नहीं परममुक्ति पाई है तुमहूं रामानन्द होत जाउ अर्थात् तुमहूं रामहीं ते आनन्द मानत जाउ यह हम चारोंयुग में सबको समुझायो परन्तु कोई हमारो कह्यो न मान्यो राम में आनन्द कोई न मान्यो सब वही मायाब्रह्म में लगिकै संसारी होत भयो ॥ ४ ॥

इति सतहत्तरवां शब्द समाप्तम् ॥ ७७ ॥

अथ अठहत्तरवां शब्द ॥ ७८ ॥

अब हम जाना हो हरिबाजीको खेल । डङ्कबजायदेखायतमाशा बहुरिसोलेतसकेल १ हरिबाजीसुरनरमुनिजहँडे मायाचेटकलाया। घरमें डारि सबन भरमाया हृदयाज्ञान न आया २ बाजी झूँठ बाजीगरसांचा साधुनकी मतिऐसी । कहकबीर जिन जैसी समुझी ताकी गति भइ तैसी ॥ ३ ॥

अब हम जाना हो हरि, बाजी को खेल ॥
डङ्क बजाय देखाय तमाशा, बहुरि सो लेत सकेल १

हे हरि, हे साहब ! संसाररूप बाजीके खेलको हेतु अब हम जान्यो अब जो कह्यो तामें ध्वनि यह है कि तब यह बिचारतरहे कि साहब तो दयालु है शुद्ध जीव को संसाररचि अशुद्ध काहे करि दिये यह शङ्का रही सो अब जब छूटी तब साहब को हेतु जान्यो साहब जो सुरति दियो सो आपने पास लिवाय सुखलिये डङ्का बजाय कहे रामनाम शब्द सुनायकै तमाशा देखाय कहे जगत्

मुख अर्थ द्वार संसार तमाशा देखायकै बहुरि सो हेत सकेल कहे जो कोई जीव साहब के सम्मुख भयो ताको साहब मुख अर्थ बताइ कै चित् अचित्रूप विग्रह जगत् देखायकै संसार सकेलि लेय है अर्थात् संसार देखि नहीं परै ॥ १ ॥

हरिबाजी सुर नर मुनि जहँडे, माया चेटक लाया ॥
घरमें डारि सबन भरमाया, हृदयाज्ञान न आया २
बाजी झूंठ बाजीगर साँचा, साधुन की मति ऐसी ॥
कह कबीर जिन जैसी समुझी, ताकी गति भइ तैसी ३

हरि जे साहब तिनकी बाज़ी जो संसार तामें साहब को हेतु न जानिकै सुर नर मुनि जैहैं ते रामनाम को संसार मुख अर्थ करिकै माया के चेटक में जहँडिगये अर्थात् भूलि गये सो माया इनको घर जो संसार तामें डारिकै भरमाय दियो हृदय में ज्ञान न होत भयो तौन हम जान्यो साहब सुरति दियो तैं अपने पास बोलावे को सो या जीव आपही ते संसार बाज़ी रचि भूलिगयो २ बाज़ी जो संसार सो झूंठ बाज़ीगर जो जीव सो सांचहै सो साधुन की मति तो ऐसी है और जे सब हैं बद्धजीव ते जैसे समुझिनि है ताकी तैसीही गति भई है सो गति हू सब अनित्य है ॥ ३ ॥

इति अठहत्तरवां शब्द समाप्तम् ॥ ७८ ॥

अथ उन्नासीवां शब्द ॥ ७९ ॥

कहो हो अम्बरकासों लागा । चेतनहारे चेतु सुभागा १ अम्बर मध्ये दीसै तारा । यकचेतै दुजे चेतवनहारा २ जोहिखोजै सो उहवांनाहीं । सोतो आहि अमरपदमाहीं ३ कह कबीर पद बूझै सोई । मुख हृदया जाके यक होई ॥ ४ ॥

कहोहो अम्बर कासों लागा । चेतनहारे चेतु सुभागा १
अम्बर मध्ये दीसै तारा । यक चेतै दुजेचेतावनहारा २

तैंतो सुभागा है साहब को है तैं काहे मन माया ब्रह्म में लगि

कै अभागा ह्वैरहे है हे चेतकरनवारे ! तैं चेत तो करु अम्बर जो है लोकप्रकाशरूप ब्रह्म सो कहां लागाहै अर्थात् वह काको प्रकाश है वह साहब के लोक को प्रकाश है चेततो करु १ वह अम्बर जो है लोकप्रकाश ब्रह्म तामें तारा देखाइ है कहे जब तैं उहां 'अहंब्रह्म' बुद्धि करै है तबहीं जगत्रूप तारा उत्पत्ति होइहै तौनेही जगत् में एकगुरु होइ है, सो चेतावै है अरु एक शिष्य होइ है सो चेत करै है ॥ २ ॥

जेहिखोजै सो उहवांनाहीं। सोतो आहिअमरपद्माहीं ३
कह कबीर पद बूझै सोई। मुख हृदया जाके यक होई ४

सो ज्यहि आपने स्वरूप को तैं खोजै है कि मैं आपने स्वरूप को जानिकै मुक्ति ह्वैजाउँ सो उहां वा गुरुवन को ज्ञान में नहीं है वन वह लोकप्रकाश में है काहेते कि जे जे देवतन में वे लगावै हैं ते ई अमर नहीं हैं तो तोको कहां मुक्ति करैंगे अरु महाप्रलय में जब लोकप्रकाश में लीन होइ है तब उहौंते उत्पत्ति होइ है तेहिते उहौं गये अमर नहीं होइ है तेहिते यह आयो कि तैं तो अमर नहीं होइहै तेहिते यह आयो कि तैंतो अमरपद में है साहब को अंशहै साहब को जानिले तो अमर ह्वैजाइ ३ श्रीकबीरजी कहै हैं कि यह अमरपद अपनो स्वरूप कोई बिरला बूझै है कौन जाके सम अधिक नहींहै ऐसो जो है एक रामनाम सो जाके मुख हृदय में होइहै सोई बूझै है ॥ ४ ॥

इति उन्नासीवां शब्द समाप्तम् ॥ ७९ ॥

अथ अस्सीवां शब्द ॥ ८० ॥

बन्दे करिले आप निबेरा । आपु जियत लखु आप ठवरकरु मुये कहां घर तेरा १ यहि अवसर नहिं चेतो प्राणी अन्त कोई नहिं तेरा । कहै कबीर सुनो हो सन्तो कठिन कालको घेरा ॥२॥

बन्दे करिले आप निबेरा ॥

आपु जियत लखु आप ठवर करु, मुये कहां घर तेरा १
यहि अवसर नहिं चेतौ प्राणी, अन्त कोई नहिं तेरा ॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, कठिन काल को घेरा २

हे बन्दे! अपनेमें तो निबेरा करिले अपने जियत अपना ठौर तौ करु मुयेते तेरा घर कहां है अर्थात् जो सत् असत् कर्म करैगो सो सब नरक स्वर्गादिकन में भोग करैगो तेतो कर्मके घर हैं तेरे घर नहीं हैं और जो ज्ञानकरिकै आपने को ब्रह्म मानिकै ब्रह्म प्रकाश में ह्वैकै शुद्धजीवन के रहैगो सो ब्रह्म होना तो धोखा है जब फेरि उत्पत्तिसमय होइगो तब माया धरिलैआवैगी पुनि संसारी ह्वै जाइगो अरु और और देवतन की उपासना करिकै उनके लोक जाइ जो तेऊ तेरे घर नहीं हैं जब माया धरि लै आवैगी तब संसारी ह्वै जाइगो जब मरैगो और ये घरन में जाइगो तब बिचार करने की सुधि न रहिजाइगी तेहिते जीतही आपनो घर बिचारु तेरो घर वह है जहां के गये फिरि न आवे सो तैं साहब को अंश है सो साहबके पास घर करु कहे ठौर करु जाते फिरि न संसार में आवै १ सो कबीरजी कहै हैं कि हे प्राणिउ! यहि अवसर में कहे मनुष्य शरीर में जो साहब को नहीं जानौ हौ तो हे सन्तो सुनो! तुमको अन्तकाल में यह कठिन जो काल को घेरा है ताते कौन बचावैगो अर्थात् जहां जहां जाहुगे तहां तहां ते काल तोको खाइलेइगो साहब बचावनवारे खड़े हैं ताको प्रमाण आगे लिखिही आये हैं "अजहूं लेहुं छुँड़ाइ कालसों जो घट सुरति सँभारै" सो साहब को जानिकै साहब के पास जाय जनन मरण छूटि जाय ॥ २ ॥

इति अस्सीवां शब्द समाप्तम् ॥ ८० ॥

अथ इक्यासीवां शब्द ॥ ८१ ॥

तूतो ररा ममाकी भांति हो सन्त उधारन चूनरी १ बालमीकि

बनबोइया चूनिलिया शुकदेव। कर्म बेनौरा ह्वैरह्यो सुत कातै जय- देव २ तीनलोक ताना तनो ब्रह्माविष्णु महेश। नामलेत मुनिहा- रिया सुरपति सकल नरेश ३ जिन जिह्वा गुण गाइया विन वस्ती का गेह। सूने घर का पाहुना तासों लावे नेह ४ चारिवेद कैंड़ाकियो निरंकार किय राक्ष। विनै कबीरा चूनरी पहिरैं हरिके दाक्ष॥ ५॥

तूतो ररा ममा की भांति हौ, सन्त उधारन चूनरी १

जो तुम मन माया ब्रह्ममें लागि रह्यो है सो तुम इनके नहीं हौ तुम तो ररा ममाकी भांति हौ अर्थात् राम जो मैं हौं तिनकी भांति हौ जैसे मैं विष्णु चैतन्य हौं तैसे तुम अनु चैतन्य हौ मेरे अंश हौ सो मेरो जो रामनाम है ताको उधारननाम की चुनरी कबीर सन्त मेरो बनायो है यही रकारबीज मों मकारहू है यहि हेतुते साहब रकारही को कहे हैं अर्थात् जब रामनाम में जपौगे तब यह जानि जाहुगे कि मकार मेरो स्वरूप है रकार साहब को स्वरूप है व कबीर सन्त असार जो है जगत्मुख अर्थ ताको त्यागिकै सार जो है साहबमुख अर्थ ताको ग्रहण करिकै चूनरी वनाई है सो कहै हैं॥ १॥

वाल्मीकि बनबोइया, चूनिलिया शुकदेव॥
कर्म बेनौरा ह्वै रह्यो, सुत कातै जयदेव २

माटीको है बहुत छिद्र हैं याते शरीर बल्मीक कहे बेमौरि है तामें जो रहै सो वाल्मीकि कहावै सो वाल्मीकि आत्मा है सो वाणीरूपी जो बन कहे कपास है ताको बोवत भयो अर्थात् वही के इच्छाशक्ति भई है और 'शुच शोके' धातु है तेहिते शुक शब्द होइहै ताको जो देव होइ सो शुकदेव कहावै है सो शोच मनके होइहै अर्थात् संकल्प विकल्प मन के होइ है सो शुकदेव मन है सो आत्मा ते जो वाणीरूपी कपास के ढढ़ा को अनुसार भयो ताको चुनिलियो अर्थात् वाणी मनै ते निकसो है अरु जय करिकै क्रीड़ाकरे अथवा जय विषय क्रीड़ाकरे सो जयदेव कहावै सो

सबको जीति लियो है अज्ञान सो मूलाज्ञान जयदेव है तौने में कर्म वेनौरा ह्वैरह्यो है विद्या अविद्यामाया सोई सूत है जाको मूलाज्ञान जो अहंब्रह्मबुद्धि तौन है जाके ऐसो जो जीव जयदेव सो कातै है अर्थात् अहंब्रह्म बुद्धि जब समष्टि जीव कियो है तबहीं मन की उत्पत्ति भई कर्म भयो है संसार प्रकट भयो ॥ २ ॥

तीन लोक ताना तनो, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥
नाम लेत मुनि हारिया, सुरपति सकल नरेश ३

तीनलोक जो है सोई ताना तन्यो है ताको तीनि खूंटा हैं रजोगुण ब्रह्मा मृत्युलोक के सतोगुण विष्णु आकाश के तमोगुण महेश पाताल के अरु अनेक जे नाम हैं अनेक जे मत हैं अनेक जे ज्ञान हैं वेद में सोई कपरा तय्यार भयो तिनको नाम लेत मुनि और इन्द्र व सब राजा हारिगये वही ब्रह्मरूपी कपरा के गठिया में कसे रहिगये वासों निकासिकै मुक्ति न पावत भये अर्थात् ताको न जानत भये ॥ ३ ॥

बिन जिह्वा गुण गाइया, बिन बस्ती का गेह ॥
सूने घर का पाहुना, तासों लावै नेह ४

कहत का भये कि बिन जिह्वा जो गुण गावै है कहे अजपा जो है सोहं तौने अजपा को साथ गाइकै कहे जपि जपिकै बिन बस्ती को गेह जो है ब्रह्म झूठा तौने कपराके गठिया के भीतर बँधि जात भये कहे यह मानत भये कि हमहीं ब्रह्महैं सो वह घर तो देश काल वस्तु परिच्छेद ते सूनहै सो जैसे सूनेघर में पहुना जाय व कुछ न पावै तैसे जीव उहां कुछु न पावत भयो येतो रामनाम को जगत् मुख अर्थ करि सब यह कपरा बिनो अरु श्रीकबीरजी साहब मुख अर्थ करि कौन कपरा बिनै हैं सो कहै हैं ॥ ४ ॥

चारि वेद कैंड़ा कियो, निरंकार किय राक्ष ॥
बिनै कबीरा चूनरी, पहिरैं हरिके दाक्ष ५

चारि वेदको कैंड़ा करिकै और निरंकार को राक्ष बनाइकै वही

निरंकार के भीतरते निकासि लैजाइकै अर्थात् प्रकाशरूप ब्रह्म कौनको प्रकाश है तब यह विचारेउ साहब के लोक को प्रकाशहै लोक कौनकोहै यही विचारकरिबो ब्रह्म ते वेदको तात्पर्य निकसिबो है सो बारिउवेद को कैंड़ा करिकै ब्रह्म जो है राक्ष तौनेते वेद को तात्पर्य निकासि रामनाम की चूनरी श्रीकबीरजी कहै हैं कि मैं बिनौ हौं ताको हरिके जानिबे में दाक्ष कहे दक्ष जे कोई बिरले दासहैं ते पहिरै हैं अर्थात् रामनाम जपिकै साहब को जानै हैं यह पदमें बाल्मीकि को शुकदेव को जयदेव को जो अर्थ हम कियो है सोई अर्थ है काहे ते कि जई बाल्मीकि, शुकदेव, जयदेव को अर्थ करै हैं तिनको यह ज्ञान नहीं रह्यो कि तीनिलोक जब ताना तनि गये हैं ब्रह्मा, विष्णु, महेश खूंटा भये हैं तब बालमीकि, शुकदेव, जयदेव नहीं रहेहैं ॥ ५ ॥

इति इक्यासीवां शब्द समाप्तम् ॥ ८१ ॥

अथ बयासीवां शब्द ॥ ८२ ॥

तुम यहिविधि समझौ लोई गोरीमुख मन्दिर बजोई १ एक सगुण षटचक्रहि बेधै बिनु बृष कोल्हू मांजै । ब्रह्मै पकरि अग्निमें होमै मक्ष गगन चाढ़िगाजै २ नितै अमावस नितै ग्रहण होइ राहुग्रास नित दीजै । सुरभीभक्षणकरै वेदमुख घनबरसै तन छीजै ३ पुहुमिक पानी अम्बरभरिया यह अचरज का कीजै । त्रिकुटी कुण्डल मधि मन्दिर बाजै औघट अम्बर भीजै ४ कहै कबीर सुनोहो सन्तो योगिन सिद्धि पियारी । सदारहै सुखसंयम अपने बसुधा आदि कुँआरी ॥ ५ ॥

तुम यहिविधि समुझौ लोई, गोरीमुख मन्दिर बजोई १
एकसगुण षटचक्रहि बेधै, बिनु बृष कोल्हू मांजै ॥
ब्रह्मै पकरि अग्निमें होमै, मक्ष गगन चाढ़ि गाजै २

वह लोई जो है लपट कहे ज्योति सो ब्रह्माण्ड में है ताको

यहि विधिते तुम समुझो अथवा सोई कहै है लोगो! तुम यहि विधिते समुझो गोरी जो है कुण्डलिनीशक्ति नागिनी ताही के मुख शरीररूपीमन्दिर कहे मृदङ्ग अथवा मन्दिर कहे घर वाजै है अर्थात् परावाणी उहँ ते निकसै है सोई पश्यन्ती ते मध्यमा आइ बैखरी में प्रकट होइ है षट्चक्र को वेधिकै कुण्डलिनी शक्ति नागिनी जाय है ता के साथ त्रिगुण ते युक्त जो एक सगुणजीव है सो जाय है सो वाकी विधि आगे लिखि आये हैं सो वृषभ तो उहां नहीं चलैहै और कोल्हू जो कुण्डलिनीशक्ति सो मांजै कहे देह मांजिकै उठैहै सो पांच हज़ार कुम्भक कियो तब श्वासन ते तपित होइहै अथवा खेचरीते सुधाबिन्दु वाके ऊपर पस्यो ताकी शीतलता पाइकै उठै है सो ब्रह्माण्ड में जाइकै अर्थात् जेतने रोज़ समाधि लगायो तेतने दिन रही ताके साथ जीवहू गयो सो कहैहैं कि ब्रह्माण्ड जो रजोगुण है ताको योगाग्नि में होमि दियो सो रजोगुण जस्यो तो तमोगुण जरै है अरु मत्त जो जीवहै सो नाभी के जल में रह्यो तहांते चलिकै गगन जो ब्रह्माण्ड है तहां गाजै है कहे यह कहै है कि महीं मालिकहौं ॥ १ । २ ॥

नितै अमावस नितै ग्रहण होय, राहुग्रास नित दीजै ॥
सुरभी भक्षण करै बेदमुख, घन बरसै तन छीजै ३
पुहुमिकपानी अम्बरभरिया, यह अचरज को कीजै ॥
त्रिकुटीकुण्डलमधिमन्दिरबाजै, औघट अम्बर भीजै ४

खचरी की दृष्टि तीनहै तामें एक पूर्णिमा है कहे सर्वत्र पूर्ण देखै है व ऊर्ध्वदृष्टि प्रतिपदा है और अन्तरदृष्टि अमावसहै सो जब अन्तर खेचरी चढ़ी व कालपूतरी आकाश में बंधी कहे ऊर्ध्वदृष्टि प्रतिपदामें बंधी तब अन्धकार अविद्या ग्रहण ह्वैकै चैतन्यको छाइ लियो अर्थात् प्रथम अन्धकार देखो परो और कछु न देखि पस्यो पुनि बिजली ऐसी चमकी तब तारागण बीर्य है ताकी गति मालूम भई तब प्रथम सूर्यमण्डल पुनि चन्द्रमण्डल देखो पस्यो सो वही

ज्योति में लीनरहै हैं समाधि लगी रहै हैं जब समाधि उतरी तब जीवको अमावस भई तममें पस्यो आइ तब सूर्य प्रकाश देखत रह्यो ताको मायारूपी राहु ग्रसिलियो अथवा जब नागिनि को सुधा पियावै है तब बहुत दिन की समाधि लगैहै अब जौन पुरुष रोज समाधि लगावैहै और उतारै है सो कहैहैं जब समाधि चढ़ाय लैगयो तब याको अमावस ह्वैगयो पुनि तम में पस्यो और नित्य ग्रहण होइ है वे चन्द्रमा और सूर्य दुइ नाड़ी हैं तिनको सुषुम्णारूपी राहु ग्रास देइ है अर्थात् ग्रसन करावै है वही सुषुम्णा में लीन कै देइहै जब समाधि लगी तब सुरभी जो है गायत्री मायाकुण्डलिनी शक्ति सो वेदमुखवाणी भक्षण कैलियो अर्थात् वाणीरहित ह्वैगयो और तन छीजैहै कहे दूबर ह्वैजाइ है सो घन बरसै है कहे सुधा बरसैहै याते बनोरहै है पुहुमी का पानी जब अम्बर में भरनलगैहै कहे जीवे को वीर्य ब्रह्माण्डमें चढ़ावन लगै है तब शीशे की सराई बनाइ कै लिङ्गद्वारमें डारैहै पानी खैंचै है जब राह साफ़ ह्वैजाइ हैं तब पवनके साथ वीर्य चढ़ै है तब पवन बीर्य के साथ जीवात्मा चढ़िजाइ है त्रिकुटी में त्रिवेणी को स्नान करिकै दशौ अनहद सुननलाग्यो तामें मन्दिर कहे मृदङ्गहै सो बाजै है व घटते कहे बङ्कनाल की राहते जब जीवात्मा जाइहै तब अम्बर जो है गैबगुफा को आकाश सो भीजै है अर्थात् उहां वीर्य पहुँचि जाइहै सो यह आश्चर्य का कीजै ॥ ३ । ४ ॥

कहै कबीर सुनौहो सन्तो, योगिन सिद्धि पियारी ॥
सदा रहै सुखसंयम अपने, बसुधा आदि कुँवारी ५

सो कबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो ! यह ही तरहकी जो सिद्धि है सो योगिन को पियारि है सो प्रथम तो सिद्धिहो नहीं होइ है जो घुणाक्षरन्यायते सदा सुख संयम में रहै और सिद्धि भई समाधिलगी ताते फेरि वैसही योगी भये अथवा पुहुमीपति भये योग करिकै हम यह शरीर के मालिक ह्वैगये मनादिक हमारे

वश ह्वैगये परन्तु जब यह शरीर छूटिजाइ है और शरीर होइ है तब वह सुधि सब भूलिजाइहै अरु जब पुहुमीपति भयो आपने को राजा मानिलियो सो जब मरि गयो तब पुहुमी आनही की ह्वैजाइहै पृथ्वी कुमारिही रहिजाइ है ॥ ५ ॥

इति बयासीवां शब्द समाप्तम् ॥ ८२ ॥

अथ तिरासीवां शब्द ॥ ८३ ॥

भूला वे अहमक नादाना। तुम हरदम रामहिं ना जाना १ बरबस आनिकै गाय पछारा गला काटि जिउ आप लिया। जीता जिव मुरदा करिडारै तिसको कहत हलाल किया २ जाहि मासुको पाक कहत हैं ताकी उतपति सुनु भाई रजबीरज सों मासु उपानी मासु न पाक जो तुम खाई ३ अपनो दोष कहत नहिं अहमक कहत हमारे बड़ेन किया। उसकी खून तुम्हारी गर्दन जिन तुमको उपदेश दिया ४ स्याही गई सफ़ेदी आई दिल सफ़ेद अजहूं न हुआ। रोज़ा नेवाज़ बांग क्या कीजै हुजरै भीतर बैठि मुआ ५ पण्डित वेद पुराण पढ़ै औ मोलना पढ़ै सो कुरराना। कह कबीर वे नरक गये जिन हरदम रामहिं ना जाना ॥ ६ ॥

भूला वे अहमक नादाना, तुमहरदमरामहिंनाजाना १
बरबसआनिकैगाय पछारा, गलाकाटि जिउआपलिया॥
जीताजिवमुरदाकरिडारै, तिसको कहत हलालकिया २
जाहि मासुको पाक कहतहैं, ताकी उतपति सुनु भाई॥
रज बीरजसों मासु उपानी, मासु न पाक जो तुम खाई ३
अपनोदोषकहतनहिंअहमक, कहत हमारे बड़ेन किया॥
उसकी खून तुम्हारी गर्दन, जिन तुमको उपदेशदिया ४
स्याही गई सफ़ेदी आई, दिल सफ़ेद अजहूं न हुआ॥
रोज़ा नेवाज़ बांग क्या कीजै, हुजरै भीतर बैठि मुआ ५

परिडत वेद पुराण पढ़ै, औ मोलना पढ़ै सो कुरराना ॥
कह कबीर वे नरक गये, जिन हरदम रामहिं ना जाना ६

यह पद को अर्थ स्पष्टई है अन्त के तुक को अर्थ करै हैं सब समेटिकै जे हरदम कहे हरसाइत श्वास श्वास में राम को नहीं जानते हैं ते नादान कहे बेवकूफ भूले अथवा हरदम कहे हर-एकके दम कहे प्राण में अन्तर्यामीरूप ते व्यापक परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र को जे बेवकूफ नहीं जानते हैं ते मोलना परिडत भूलिगये जो वे आपने हजरामें बैठिकै रोजा नेवाज किया और कुरान किताब पढ़ा और जो परिडत अपने घरकी कोठरी में एकान्त बैठिकै बहुत वेद शास्त्र को पढ़ा तौ का किया आखिर नरकही में गये भाव यह है कि काहूको न सुन्यो कि बिना राम को जाने मुक्त ह्वैगये ॥ १ । ६ ॥

इति तिरासीवां शब्द समाप्तम् ॥ ८३ ॥

अथ चौरासीवां शब्द ॥ ८४ ॥

काजी तुम कौन किताब बखाना । झंखतब कतरह्यो निशिवासर मति एकौ नहिं जाना १ शक्ति न माने सुनति करतहौ मैं न बदौंगा भाई । जो खोदाय तुवसुनति करानि है आपु कांटि किन आई २ सुनति कराय तुरुक जो होना औरतकी का कहिये । अर्धशरीरीनारिबखानै ताते हिन्दूरहिये ३ घालि जनेऊ ब्राह्मण होना मेहरी को क्या पहिराया । वो तो जन्म कि शूद्रिनिपरुसा सो तुमपांड़े क्यों खाया ४ हिन्दू तुरुक कहांते आया किन यह राह चलाई । दिलमेंखोज खोजुदिल हीमें भिश्त कहां किन पाई ५ कहे कबीर सुनो हो सन्तो जोर करतु हौ भारी । कबिर न ओट रामकी पकरी अन्तचला पचिहारी ॥६॥

काजी तुम कौन किताब बखाना ॥
झंखत बकतरहौ निशिबासर, मति एकौ नाहिं जाना १

हे काजी तुम कौन किताब को बखानत रहौहौ निशिबासर

वही किताब को बकत रहौहौ अरु वाही में भंखत कहे शङ्का करत रहौहौ सो कुरान किताब तात्पर्यते जो एक साहबको वर्णनकरै है ताको जो तुम्हारी मति न जानत भई तौ तुम कुरान किताब की एकऊ बस्तु न जानत भये ॥ १ ॥

शक्ति न माने सुनति करत हौ, मैं न बदौंगा भाई ॥
जो खोदाय तुव सुनति करति तौ, आपु काटि किन आई २
घालि जनेऊ ब्राह्मण होना, मेहरीको क्या पहिराया॥
वोतो जन्म की शूद्रिनि परुसा, सोतुम पांड़े क्यों खाया३

सुनति किये जो मानते हौ कि हम मुसल्मान हैं और या नहीं मानतेहौ कि शक्ति जे माया सोई करै है सो हे भाई ! मैं न बदौंगा जो खोदाय तेरी सुनति करतो तौ पेटहीते कटी आउती २ सो हे पण्डित ! आपनी आत्मा को साहबकी शक्ति न मान्यो अरु ब्रह्म-साहब को न जान्यो जनेऊ पहिरिकै तुमतौ ब्राह्मण भये और अपनी मेहरी को कहा पहिरायो है जाते वह ब्राह्मणी भई सो तिहारी स्त्री तो जन्म की शूद्रिनि है सो परुसै है और हे पांड़े ! तुम खाउ हौ ताते तुम कैसे ब्राह्मण भये ब्राह्मण तो ब्रह्म जाने ते कहावैहै ॥ ३ ॥

हिन्दू तुरुक कहांते आया, किन यह राह चलाई ॥
दिलमें खोज खोजु दिलही में, भिश्त कहां किन पाई ४

आत्मा तो एकईहै हिन्दू तुरुक ये शरीर के भेद हैं यह शरीर कहां ते आयो है और यह राह कौन चलायो है अर्थात् बीचै ते आये हैं बीचै ते जायँगे सो दिलमें तुम खोजौ उसका खोज दिलही में है और कौन भिश्त पायो है अर्थात् खोदायका बन्दा जो तिहारो जीवात्मा है जो हिन्दू तुरुक में एकईहै सो तिहारे दिलही है उसको जानो तो जानिपरै उसके मिलन को खोज कहे राह वही आत्मा है जब आपने स्वरूप को जानोगे तब वाको पावोगे ॥ ४ ॥

कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जोर करतु है भारी ॥

कबिरन ओोट राम की पकरी, अन्त चला पचिहारी ५

कबीरजी कहैहैं कि हे सन्तो! सुनौ यह जीव आपने छूटि जाइबे को बड़ो ज़ोर करैहै कहे बहुत उपाय करैहै नानामतन करिकै ते कबीर कायाके बीर जे जीव हैं ते औरे औरे मतन में लगिकै राम अल्लाहके ओटके ओर पकरत भये कहे और २ जे मत हैं ते राम अल्लाह के ओटके देनवारे हैं तिनको पकरिकै अथवा कबीर जे जीव हैं ते रामकी ओट न पकरत भये अर्थात् आपने जीवात्मा को साहब को बन्दा न जानत भये राम अल्लाह को बिसरिगये ताते अन्तमें पचिकै कहे मरिकै अरु वे मतनते हारिकै चले गये जो यह मानिराख्यो तैं कि हमको स्वर्ग बिहिश्त होइ हम ब्रह्म होइँगे सो एकऊ न भये जौनकर्म करि राख्यो तैसोई कर्म नरक स्वर्गन में भोग करनलग्यो ॥ ५ ॥

इति चौरासीवां शब्द समाप्तम् ॥ ८४ ॥

अथ पचासीवां शब्द ॥ ८५ ॥

भूलालोग कहै घर मेरा। जा घरवा में फूला डोलै सो घर नाहीं तेरा १ हाथी घोड़ा बैल बाहनो संग्रहकियो घनेरा। बस्ती में से दियो खदेरी जङ्गलकियो बसेरा २ गांठीबांधी खरच न पठयो बहुरि कियो नहिं फेरा। बीबी बाहर हरम महलमें बीच मियांको डेरा ३ नौमनसूत अरुझि नहिं सुरझै जन्म २ अरुझेरा। कहै कबीर सुनो हो सन्तो यह पद करो निबेरा ॥ ४ ॥

भूलालोगकहैघरमेरा।जाघरवामेंफूलाडोलैसोघरनाहींतेरा १

साहबको पार्षदरूप जो है हंसस्वरूप आपनो सांच शरीर ताको भूले लोग कहैहैं कि यह मिथ्या जो स्थूल शरीर सो हमारा है सो जा घर स्थूल शरीरमें तैं फूला डोलै है मेरो शरीर है सो तेरा घर कहे शरीर नहीं है ॥ १ ॥

हाथी घोड़ा बैल बाहनो, संग्रह कियो घनेरा ॥

बस्ती में से दियो खदेरी, जङ्गल कियो बसेरा २
गांठीबांधी खरच न पठयो, बहुरि कियो नहिं फेरा ॥
बीबी बाहर हरममहलमें, बीच मियां को डेरा ३

बहुत हाथी, घोड़े, बैल इत्यादिक बाहन को संग्रह कियो परन्तु जब तैं शरीररूपी बस्ती ते खदेरि जाइगो कहे शरीर छूटि जाइगो तब जङ्गल में कहीं पीपर के तर भूत ह्वैके बसेर कहे बास करैगो अरु वह शरीरहू को बाहर खदेरिलै श्मशान में जारि देइँगे तब वह हाथी घोड़े औरहीके ह्वैजाइँगे २ गांठी बांधि धस्यो अरु खर्च न पठयो कहे पुण्य न कियो जो वह लोक में मिलिकै बहुरिकै फेरा न कियो कहे यह शरीर में नहीं पावैहै सो बीबी जो है साहब की दई सुरति सो बाहर है कहे संसार मुख ह्वै रही है और हरमकहे लौंड़ी जो है माया सो महल में है कहे सब शरीरन में है ताके बीच में मियां जो है जीव ताको डेरा है ताको वह माया घेरे है ॥ ३ ॥

नौमन सूत अरुझि नहिं सुरझै, जन्म जन्म अरुझेरा ॥
कहै कबीर सुनोहो सन्तो, यह पद करो निबेरा ४

सो नौमन कहे नित्यही नवीन जो मन है अर्थात् मनके दिये नाना शरीर होय हैं सो नाना कर्म नानामत जे सूत हैं तिनमें अरुझिकै सुरझै नहीं है सो कबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो ! यह पदको निबेरा करो कहे पांचों शरीर में अरुझो जो है मन ताते भिन्न होउ तो तुम शरीरन ते भिन्न ह्वैजाउ ॥ ४ ॥

इति पचासीवां शब्द समाप्तम् ॥ ८५ ॥

अथ छियासीवां शब्द ॥ ८६ ॥

कबिरा तेरो घर कँदलामें या जग रहत भुलाना। गुरुकी कही करत नहिं कोई अमहलमहलदेवाना १ सकलब्रह्ममें हंस कबीरा कागन चोंच पसारा। मनमतकर्मधरैसबदेही नादबिन्दु बिस्तारा २

सकल कबीराबोलैबानी पानीमों घरछाया । लूटिअनन्तहोतिघट-
भीतर घटकामर्म न पाया ३ कामिनिरूपी सकलकबीरा मृगाचरिंदा
होई । बड़बड़ज्ञानी मुनिवर थाके पकरिसकै नहिं कोई ४ ब्रह्मा ब-
रुणकुबेरपुरन्दर पीपा प्रहलदचाखा । हिरणाकुशनख उदरबिदारा
तिनहुंक काल न राखा ५ गोरखऐसोदत्तदिगम्बर नामदेव जयदेव-
दासा । उनकीखबरि न कहतनहिं कोई कहांकियेहैं बासा ६ चौपरखेल
होत घटभीतर जन्मकेपांसा ढारा । दमदमकी कोइ खबरि न जानै
करि न सकै निरवारा ७ चारि दिशा महिमण्डरचोहै रूमसामबिच
दिल्ली । ताऊपर कछु अजबतमाशा मोरेहैं यमकिल्ली ८ सब अवतार
जासुमहिमण्डलअनन्तखड़ोकरजोरे । अद्भुतअगमअथाह रचो है
ई सब शोभा तोरे ९ सकलकबीरा बोलै बीरा अजहूं हो हुशियारा ।
कह कबीर गुरु सिकिलीदर्पण हरदम करो पुकारा ॥ १० ॥

कबिरा तेरो घर कँदला में, या जग रहत भुलाना ॥
गुरुकी कही करत नाहिं कोई, अमहल महलदेवाना १

कबीरजी कहै हैं कि हे कबिरा ! काया के बीर, जीव ! तेरो घर तो कँदला में है कहे आनन्दको कन्दकहे सारांश जो है साहब को धाम तहां है तेरो घर या जगत् में नहीं है तैं नाहक भुलान रहैहै यहां गुरु कहे सबते श्रेष्ठ जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र कहै हैं कि अबहूं जो मोको जानो तो मैं कालते छोड़ाइलेउँ तिनको कह्यो कोई न मानिकै अरु आनन्दको कन्द उनको धाम छोड़िकै अम-हल महल कहे जो कछु बस्तु नहीं है ऐसो जो है धोखाब्रह्म तामें अरु कोई माया के प्रपञ्चमें देवाना ह्वैरह्योहै ॥ १ ॥

सकल ब्रह्म में हंस कबीरा, कागन चोंच पसारा ॥
मन मत कर्म धरै सब देही, नाद बिन्दु बिस्तारा २

हे हंस, कबीर कायाके बीर जीव ! ते साहब को ब्रह्मही कहैहैं तिनको कहिबो कागन कैसी चोंच को पसारिबो है जैसे कागनके आगे जो दूध भात व आमिष धरिदेउ तो दूध भात न खाय

आमिषही खाय तैसे साहब पुकारतई जाय हैं कि तुम मेरे पास आवो मैं तुमको हंसरूप देउँ ताको छोड़िकै जीव मायाब्रह्म के धोखा में लगो कागई होइ है नाना कर्म के बासनन ते शरीर छूटत में जहां जहां मन को मत होइहै कहे जहां जहां मन जाइ है तहां तहां सब देह धरै है नादबिन्दु के बिस्तारते सो नादबिन्दु को बिस्तार लिखि आये हैं ॥ २ ॥

सकल कबीरा बोलै बानी, पानी मों घर छाया ॥
लूटि अनन्त होति घटभीतर, घटका मर्म न पाया ३

अरु ज्ञानी जे सब जीव हैं ते यह बाणी बोलै हैं कि यह शरीर पानी को घर छाया है कहे पानी को बुल्ला है न जानो कब बिनशिजाय कहे छूटिजाय सो मुखते तो यह कहै है अरु घट कहे शरीर के भीतर अनन्त कहे बिना अन्त को जो है साहब ताकी लूटि होइ जाइ है ताको नहीं देखै है यह आत्मा साहबको है तोको भुलाइकै और और मतन में लगाइ देइ है वाको मर्म नहीं पावै है ॥ ३ ॥

कामिनिरूपी सकल कबीरा, मृगाचरिन्दा होई ॥
बड़बड़ ज्ञानी मुनिवर थाके, पकरि सकै नहिं कोई ४

सब कबीर जीवनके शरीर कामिनिरूपी है कहे मृगारूपी है तामें जो चलै सो चरिन्दा कहावै है सो चरिन्दा कहे चलनवारो जो है मन सो मृगा है जब यह जीवात्मा को यमदूत एक पुतरा देखावै हैं तब वह पुतरा में मनोमय जो लिङ्ग शरीर है सो जात रहै अरु वहीके साथ जीव प्रवेश करिजाइ है तब यमराज नाना कर्म भोग करावै हैं जौने शरीर में मन लोभ्यो मरतमें वाको स्मरण भयो सोई शरीर कर्म भोगकरिकै धारण कियो सो मारि तो यह भांति ते जाय है वह मन्त्र को और आत्मा के स्वरूप को कोई न पकरि पायो अर्थात् कोई न जान्यो ॥ ४ ॥

ब्रह्मा बरुण कुबेर पुरन्दर, पीपा प्रहलाद चाखा ॥

हिरणाकुश नखउदरबिदारा, तिनहुँक काल न राखा ५
गोरख ऐसो दत्तदिगम्बर, नामदेव जयदेवदासा॥
उनकीखबरि कहत नाहिं कोई, कहां किये हैं बासा ६

ये चारि तुकनमें जिनको कहि आयेहैं तिनको काल जब खाइ लियोहैं कहे इनके शरीर जब छूटिगये हैं तब ये कहां बास कियो है यह कोई खबरि न जानत भयो सो जहां गये हैं अरु जहां के गये नहीं आवैहैं तौने लोक को मूढ़ जीव न जानत भये इहां नरसिंहौ जी को लिख्यो तामें धुनि यह है कि उपासक आपने आपने उपास्यन के साथ साहबही के लोक जाइ हैं उपास्य उपासक दोऊ जहां परम मुक्तावस्था में जायँ सो वह साहब के लोक को ये बद्धविषयी जीव कैसे जानैं॥ ५। ६॥

चौपर खेल होत घट भीतर, जन्मके पांसा ढारा॥
दम दमकी कोइ खबरि न जानै, करि न सकै निरुवारा ७

मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार ये अन्तःकरणचतुष्टय हैं सोई चौपरि है ताको खेल घटके भीतर ह्वैरह्यो है इनहीं के योग ते नाना जन्म होइ हैं सोई पांसा ढारिबो है सो दम दम कहे आपने श्वास श्वास की खबरि तो कोई जानै नहीं है कि आवत जातमें रकार मकार बिना जपे कब अन्तःकरण शुद्ध ह्वैसकै है अरु को निरुवार करिसकैहै अर्थात् कोई निरुवार नहीं करिसकै है अर्थात् या नहीं जानै है कि हमारो जीवात्मा कहां जपै है रकार मकार जीवात्मा सदा जपै है तामें प्रमाण "रकारेण बहिर्याति मकारेण विशेत्पुनः। रामरामेति वै मन्त्रं जीवो जपति सर्वदा"॥ ७॥

चारिदिशा महिमण्ड रचो है, रूमसाम बिच दिल्ली॥
ता ऊपर कुछ अजबतमाशा, मारे है यम किल्ली ८

महिमण्डल जो है शरीर तामें नाभि, हृदय, कण्ठ, त्रिकुटी ये चारि दिशा रचत भये अरु रूम कहे सहस्रदलकमल है अरु साम सुरतिकमल है तौने सुरतिकमल के बीच में दिल्ली है परन्तु

गुरुको स्थान ता स्थानके ऊपर अजब तमाशा है सो कौन योगी प्राण चढ़ाइके सहस्रदलकमल लों जाइ है कोई परमयोगी प्राण चढ़ाइके सुरतिकमललों जाइ है परमपुरुष स्थानके ऊपर जहां अजबतमाशा है तहां कोई नहीं जाइसके है काहे तेकि यम किल्ली मारेहै कहे दशवां दुवार बन्द कियेहै अजबतमाशा वह कैसे देखै सो कहै हैं कि यह ब्रह्मरन्ध्र ते साकेतलोक जाको कहै हैं परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को धाम वहा साकेतलोक को दशवां स्थान फ़क़ीरलोग जाहूत कहै हैं तहांलों ब्रह्मज्योति की डोरि लगी है वही डोरी को मकतार कहै हैं सो वह मकतार सुषुम्णा में लगो है जब परमगुरु रामनाम बताई है तब वही सुषुम्णा ह्वैकै मकतार की डोरी ह्वैकै साहब के लोक जाय है तहां अजब तमाशा कौनहै कि उहां के त्रिगुण गुल्मलता देखे तो पञ्चभौतिक से परेहै पै पञ्च-भौतिक नहीं है आनन्दरूप है ॥ ८ ॥

सब अवतार जासु महिमण्डल, अनँत खड़ो करजोरे ॥
अद्भुत अगम अथाह रचोहै, ई सब शोभा तोरे ९

सकल अवतार व ईश्वर अनन्त जिनके आगे करजोड़े खड़े हैं वह साहबलोक कैसोहै अद्भुतहै कहे आश्चर्यहै बचनमें नहीं आवै है व अगम है कहे उहां काहूकी गम नहीं है व अथाह है कोई वर्णन करिकै थाह नहीं पायो कि यतनै है सो हे जीव! यह सब शोभा तोरे साहबकी है तेरे देखिबे योग्य है काहेते कि साहबौ द्विभुज हैं और तैंहूं द्विभुज है और तो सब ईश्वर अवतार कोई अष्टभुज कोई चतुर्भुज मत्स्य कूर्म इत्यादिक हैं अथवा साहब के लोकमें जे ईश्वर अवतार आदिक हैं ते सब अपनी शोभा को मण्डल तोरे हैं अर्थात् उनकी शोभा साहब की शोभाते मन्द देखी परैहै ॥ ९ ॥

सकल कबीरा बोलै बीरा, अजहूं हो हुशियारा ॥
कह कबीरगुरुसिकिल्लीदर्पण, हरदम करो पुकारा १०

हे सबके बीरौ कायाके बीर जीवो ! वही बीरा लेउ अर्थात् परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको बीरा लेउ अजहूं हुशियार होउ जे मतन में गुरुवालोग समुझाइ समुझाइ लगाइ दिये हैं तिन मतन में जब भर तुम्हरे रहौगे तब भर तुम्हारो जन्म मरण न छूटैगो ताते मतन को छोड़ि दे सुरति कमल में जे परम गुरु हैं ते सिकिलीगर हैं तुम्हारे अन्तःकरण साफ़ करिबेको ते राम बतावै हैं सो या राम नाम सुनिकै हरदम पुकार करो तब साहबके इहां पहुँचौ अरु सब अवतार ईश्वर उनके द्वारे हाथ जोरे खड़े हैं तामें प्रमाण शिवसंहिता में हनुमान्जी प्रति अगस्त्यजी कहै हैं "आसीनं तमयोध्यायां सहस्रस्तम्भमण्डिते। मण्डपे रत्नसंज्ञे च जानक्या सह राघवम् ॥ मत्स्यः कूर्मकिरिर्नैको नारसिंहोऽप्यनेकधा। वैकुण्ठोऽपि हयग्रीवो हरिः केशववामनौ ॥ यज्ञो नारायणो धर्मपुत्रो नरवरोऽपि च। देवकीनन्दनः कृष्णो वासुदेवो बलोऽपि च ॥ पृश्निगर्भो मधून्माथी गोविन्दो माधवोऽपि च। वासुदेवोपरोऽनन्तः संकर्षण इरापतिः ॥ प्रद्युम्नोऽप्यनिरुद्धश्च व्यूहास्सर्वेऽपि सर्वदा। रामं सदोपतिष्ठन्ते रामदेहा व्यवस्थिताः ॥ एतैरन्यैश्च संसेव्यो रामो नाम महेश्वरः। तेषामैश्वर्यदातृत्वात्तन्मूलत्वान्निरीश्वरः ॥ इन्द्रनामा स इन्द्राणां पतिस्साक्षी गतिः प्रभुः। विष्णुस्स्वयं स विष्णूनां पतिर्वेदान्तकृद्विभुः ॥ ब्रह्मास ब्रह्मणां कर्ता प्रजापतिपतिर्गतिः। रुद्राणां स पती रुद्रो रुद्रकोटिनियामकः ॥ चन्द्रादित्यसहस्राणि रुद्रकोटिशतानि च। अवतारसहस्राणि शक्तिकोटिशतानि च ॥ ब्रह्मकोटिसहस्राणि दुर्गाकोटिशतानि च। महाभैरवकालादिकोट्यर्बुदशतानि च ॥ गन्धर्वाणां सहस्राणि देवकोटिशतानि च। सभां यस्य निषेवन्ते स श्रीराम इतीरितः" (इति) औरु कबीरहूजी को प्रमाण "जहँ सतगुरुखेलैंऋतुबसन्त। तहँपरमपुरुषसबसाधुसन्त ॥ वहतीन लोकते भिन्नराज। तहँअनहदधुनिचहुँपासबाज ॥ दीपकबरैजहँ निराधार। बिरलाजनकोई पावपार॥ जहँकोटिकृष्णजोरेदुहाथ।

जहँकोटिविष्णुनावैंसुमाथ ॥ जहँकोटिनब्रह्मापढ़पुरान । जहँकोटि महादेवधरैंध्यान ॥ जहँकोटिसरस्वनिकरैंराग । जहँकोटिइन्द्रगावनेलाग ॥ जहँगणगन्धर्वमुनिगानिनजाहिं । सोतहँशोपरकटआपु आहिं ॥ तहँचोवाचन्दनअरु अबीर । तहँपुहुपबासभरिअतिगँभीर ॥ जहँसुरतिसुरङ्गसुगन्धलीन । सबवहीलोकमेंबासकीन ॥ मैंअजरदीपपहुँच्योसुजाइ। तहँअजरपुरुषके दरश पाइ ॥ सो कह कबीरहृदया लगाइ । यह नरक उधारण नामजाइ " ॥ १० ॥

इति छियासीवां शब्द समाप्तम् ॥ ८६ ॥

अथ सत्तासीवां शब्द ॥ ८७ ॥

कबिरातेरोघरकन्दलमें, मनैअहेराखेलै। बपुबारीआनन्दमीर्गा रुचीरुचीशरमेलै १ चेततरावलपावनषएढासहजाहिमूलैबांधे । ध्यानधनुषधरिज्ञानवानबनयोगसारशरसाधै २ षटचक्रवेधिकमलबेध्योजबजाइउज्यारीकीन्हा। कामक्रोधअरुलोभमोहयेहांकि साउजनदीन्हा ३ गगनमध्यरोंक्योसोद्वारा जहांदिवसनहिंराती। दासकबीरजायसोपहुँच्योसबबिछुरेसंगसँघाती ॥ ४ ॥

कबिरा तेरो घर कन्दलमें, मनै अहेरा खेलै ॥
बपुबारी आनन्द मीर्गा, रुची रुची शरमेलै १

कबीरजी कहै हैं कि हे कबीर कहे काया के बीर जीव! तेरो घर कन्दलामें है कहे आनन्द को कन्द कहे सार जो साहब को धाम है तहां है जो कहो संसार कैसे भयो तौ तेरो बपु शिकारी बपुरी जो है नाना शरीर तेई बारी हैं शिकारी जहां हांकै है सो बारी कहावैहै तहां जाइकै विषयानन्द ब्रह्मानन्द जे हैं मृगा को शिकार खेलैहैं कोई विषयानन्दरूप मृगा में वृत्ति शर मारि भोग करैहैं कोई शिकारी मन ब्रह्मानन्दरूप मृगा को वृत्ति शर मारि भोग करै हैं ॥ १ ॥

चेतत रावल पावन षएढा, सहजाहि मूलै बांधै ॥

ध्यान धनुषधरि ज्ञानवान बन, योगसार शर साधै २
षटचक्र बेधि कमल बेध्यो, जब जाइ उज्यारी कीन्हा ॥
काम क्रोध अरु लोभ मोह ये, हांकि साउजन दीन्हा ३

जो शिकार खेलबो कैसे छूटै या मनको तौ रावल कहे सबके राजा ताके पावन कहे पायन को चेतकरत कहे स्मरण करत अथवा पावन कहे पवित्र ह्वैकै षण्ढ कहे नपुंसक ब्रह्म तद्रूप जो जीव सो सहज समाधि लगाइकै मूलबन्ध करै यहै ध्यान जो है धनुष् तौनेको धरिकै साहब में आत्मा को लगाय दीबो जो बाण यही योगसाररूप शर साधै २ सोई योग बतावै हैं जे हठयोग करै हैं ते कुण्डलिनी उठायकै छइउ चक्र बेधै हैं इहां कुछ कुण्डलिनी उठाइबे को प्रयोजन नहीं है वह जो ब्रह्मज्योतिकार की मूलाधार चक्रतेलै ब्रह्माण्ड ह्वै साकेत में लगी है सो छइउ चक्र को बेधिकै लगी है सुषुम्णा नाड़ी ह्वैकै ता ज्योतिरूपी डोरी में गुरु जो युगुति बतावै है तौनी युगुति ते सुरतिके साथ जब जीव को साजि दियो तब छइउ चक्र का आपही वह ज्योति बेधै है सो वह ज्योति के भीतर ह्वैकै षट्चक्र बेधिकै सहस्रदलकमल को बेध्यो तब उहां उजियारी देख्यो जाइ ब्रह्म प्रकाश की तब काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सरई जे सांवज हैं तिनको हांकि दीन्ह्यो कहे दूरिकै दीन्ह्यो ॥ ३ ॥

गगन मध्य रोंक्यो सो द्वारा, जहां दिवस नहिं राती ॥
दासकबीर जाय सो पहुँच्यो, सब बिछुरे संग सँघाती ४

जहां सुरति कमल में परमगुरु रकार मकार कहै हैं और दशौ द्वार बन्द हैं तहां न दिवस है न राति है वह प्रकाशरूप ब्रह्मई है सो उहां परमगुरुते रामनाम सुनिकै वही नाम ते दशवों द्वार खोलिकै वही डोरी ह्वैकै दास जो कबीर जीव है सो परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र के लोक को पहुँचे जाइ हैं तब संगके सँघाती जे हैं चारिउ शरीर अरु प्रकाशरूप ब्रह्म जो है कैवल्य शरीर ताहू को

बिछोह ह्वै जाइ है अथवा कबीरजी कहै हैं कि मैं जो हौं साहब को दास सो अनिर्बचनीय पार्षद शरीर जो है हंसशरीर ताको पाइकै वोही डोरी ब्रह्मज्योति ह्वैकै अनिर्बचनीय जो है साहबको धाम तहां पहुँच्यो जाइ तहां हे जीवो ! तुमहूं पहुँचौ यह भ्रम में काहे परेहौ तुमतौ साहब के आनन्दकन्द धामके हौ साहब के दास ताते रहित और जौन तुम मानौ हौ सो तुम नहीं हौ ॥ ४॥

इति सत्तासीवां शब्द समाप्तम् ॥ ८७ ॥

अथ अट्ठासीवां शब्द ॥ ८८ ॥

गुरुमुख ॥ सावज न होइ भाई सावज न होइ । वाकी मांसु भखै सबकोइ १ सावजएक सकलसंसारा अबिगत वाकी बाता । पेट फारि जो देखियेरेभाई आहिकरेज न आँता २ ऐसीवाकीमांसु रेभाई पलपलमांसुबिकाई । हाड़गोड़लैघूरपँवारै आगिधुवां नहिं खाई ३ शिर औ सींग कछू नहिं वाके पूंछ कहां वह पाई । सब पण्डित मिलि धन्धेपरिया कबिर बनौरी गाई ॥ ४ ॥

सावजनहोइभाईसावजनहोइ । वाकीमांसुभखैसबकोइ १

साहब कहै हैं कि जेहि शब्दब्रह्म में तुम लगेहौ व तुमको वही भुलायदियो सो सावज न होइ तौने शब्द को तात्पर्य तुम नहीं बूझो वहीके मांसको तुम सब भक्षौहौ कहे बाणी सब कहौहौ और वही मांस सब जगत् है ताही को भक्षौ हौ कहे भोग करौ हौ अरु वाको तात्पर्य सत्यपदार्थ जो मैंहौं ताको नहीं जानौहौ संपूर्ण बाणीको बिस्तार असत्य है मैंहीं सत्य हौं ॥ १ ॥

सावज एक सकल संसारा, अबिगत वाकी बाता ॥
पेटफारि जो देखिये रे भाई, आहि करेज न आँता २

सो वाको पेट फारिकै जो देखिये अर्थात् जो वाको बिचारिकै देखिये तात्पर्यते तो जो तुम बिचार करिराख्यो है कि शब्दब्रह्म के अर्थ को सारांश करेज निर्गुण ब्रह्म है सो नहीं है वेद तो

तात्पर्यते मोको बर्णन करै है अरु त्रिगुण माया आंतहै सो वाकी बात अविगत है कहे अव्यक्त है काहूके जानिबे योग्य नहीं है जो मोको जानै है सोई वह सावज को जानै है ॥ २ ॥

ऐसी वाकी मांसु रे भाई, पल पल मांसु बिकाई ॥
हाड़ गोड़ लै घूर पँवारै, आगि धुवां नहिं खाई ३

पल का कहावै है सो वह शब्द ब्रह्मकी मांसु जो है बाणी सो हे भाइउ! ऐसी है कि पल पल कहे टकाटका को बिकाइ है अर्थात् को बिकाइ है तामें प्रमाण कबीरजी को चौरासी अङ्गकीसाखी "गलीगली गुरुवा फिरैं दिच्छा हमरी लेहु। की बूड़ौकी ऊबरौ टका परदनी देहु" थोरे थोरे अक्षरकेमन्त्र गुरुवालोग देइहैं व शिष्यन सों धन लेइहैं अरु केवल शब्दब्रह्म ते मुक्ति नहीं होइहै तामें प्रमाण "शब्दे ब्रह्मणि निष्णातो न निष्णायात्परे यदि। श्रमस्तस्य श्रमफलं ह्यधेनुमिव रक्षत" (इति भागवते) सो जब वे गुरुवा मन्त्र दियो तब बाणी को जो हाड़गोड़रहै ज्ञानकाण्ड-कर्मकाण्ड ताको घूर पँवारिदियो कहे ज्ञानकाण्डी कर्मकाण्डी घूर हैं तहां फेंकिदियो उपासनाकाण्डी वह मन्त्रदैकै उपासनामें लगाइ दियो तहां मन्त्र दियो सो उन न जप्यो जाते ज्ञानाग्नि उत्पन्न होइ अरु भ्रम जरै व धुवां जेहैं कल्मष ते निकसिजायँ सो बाणीरूपी वह मांसु ज्ञानाग्नि ते पकाइ नहीं गई अर्थात् वह मन्त्र को अर्थ न जान्यो व न अभ्यास कियो वह अज्ञानरूपी धुवां गुँगुआतै रह्यो निर्धूम न भई ॥ ३ ॥

शिर औ सींग कछू नहिं वाके, पूंछ कहां वह पाई ॥
सब पण्डित मिलि धन्धे परिया, कबिर बनौरी गाई ४

और शिर जे हैं नित्यशब्द व कार्यशब्द ते वाके नहीं हैं और चारि जे सींगहैं नाम, धातु, उपसर्ग, निपात ते वाके नहीं हैं काहेते कि वाको अनिर्वचनीय कहै हैं तो पूंछ जो है ब्रह्म हैजैबो मोक्षताको कहां पावैगो अर्थात् जहां भर बचनै में आवै है सो सब मिथ्या

है जो कहो मोक्षऊको रहिजाइबो न कह्यो तो रहिकागयो तो शब्द तो तात्पर्य करिकै वर्णनकरै हैं कि निर्गुण सगुणके परे परमपुरुष जो मैं ताको सदाको अंश यह जीव है यह जो विचारकरै कि मैं उनको हौं तो बद्धही नहीं है मुक्त काहेते होइ मुक्तही बनो हो बद्धमुक्त तो कथनमात्र है तामें प्रमाण "अज्ञानसंज्ञो भवबन्धमोक्षौ द्वौ नाम नान्यौ स्त ऋतज्ञभावात्। अजस्रचिन्त्यात्मनि केवले परे विचार्यमाणे तरणाविवाहिनी" (इति भागवते) अरु तात्पर्यकरिकै शब्द यह मोहीं को वर्णनकरैहै सो भागवतादिकन में प्रसिद्ध सुनैहै तऊ मूढ़ नहीं मानै है "शब्दब्रह्मपरब्रह्ममभोभे शाश्वती तनू" अपने अपने अर्थ बनाइकै गाइरहेहैं मोको नहीं जानै हैं सब पण्डित धन्धेमें परिरहे हैं नानामत बनाइरहेहैं तिनकी बनौरी को कबीर जे हैं जीव उनके सबशिष्य ते गावै हैं अर्थात् अपने अपने आचार्यन के मत में आरूढ़ ह्वैकै जो और कोई कहै है तो लड़ै हैं अरु पारिख करिकै सब वेदनको तात्पर्य जो मैं हौं ताको नहीं जानै हैं शब्दब्रह्म तात्पर्य करिकै परमपुरुष पर जो मैं हौं ताही को वर्णन करै हैं ॥ ४ ॥

इति अट्ठासीवां शब्द समाप्तम् ॥ ८८ ॥

अथ नवासीवां शब्द ॥ ८९ ॥

सुभागे केहि कारण लोभ लागे रतन जन्म खोये। पूरब जन्म भूमिके कारण बीज काहेको बोये १ पानीसे जिन पिण्डै साजै अगिनिहि कुण्ड रहाया। दशमास माता के गर्भकढ़ि बहुरि लागिलीमाया २ बालकसे पुनि वृद्धहुआ है होनीरही सो होये। जब यम ऐहैं बांधिलैजैहैं नयन भरी भरि रोये ३ जीवनकै जिन आशा राख्यो काल गहे है श्वासा। बाजी है संसार कबीरा चितचेति ढारो पासा ॥ ४ ॥

सुभागे केहिकारण लोभ लागे, रतन जन्म खोये ॥
पूरब जन्म भूमि के कारण, बीज काहे को बोये १

पानीसे जिन पिण्डें साजे, अगिनिहि कुण्डरहाया ॥
दशैमास माता के गर्भ कढ़ि, बहुरि लागिली माया २
बालक से पुनि वृद्ध हुआ है, होनी रही सो होये ॥
जब यम ऐहैं बांधि लैजैहैं, नयन भरी भरि रोये ३
जीवनकै जिन आशा राख्यो, काल गहे है श्वासा ॥
बाजी है संसार कबीरा, चित चेति ढारो पासा ४

हे सुभागे, जीव! तैंतो मेरो है यह संसार में जो तैं लोभ कियो सो कौने कारण कियो काहेते कि आपने दुःख पाइबे को कोई उपाय नहीं करैहे जैसे मन आदिक करिकै संसार में परिगयो तैसे जो मेरो स्मरण करतो मैं हंसस्वरूप देतो तामें स्थित हैके मेरे धाम को पहुँचते सो तैं रत्न जो है यह मानुषजन्म ताको धोइ डार्यो पूर्वजन्म की भूमिकाके कारण कहे पूर्वजन्म में जैसे कर्म करिराखेहैं तैसे सुख दुःख यह जन्म पावै है अरु जो यह जन्म करै हैं सो वह जन्म में दुःख सुख पावैगो सो आँखिन तो देखि लिये ओई सुख दुःख के कारणरूप बीज तैं काहेको बोये और सबपदन को अर्थ स्पष्टई है॥ १ । ४ ॥

इति नवासीवां शब्द समाप्तम् ॥ ८९ ॥

अथ नब्बे शब्द ॥ ९० ॥

गुरुमुख ॥ सन्तमहन्तौ सुमिरौ सोई। जो कालफांससों बाचा होई १ दत्तात्रेय मर्म नहिं जाना मिथ्या स्वाद भुलाना । सलिला माथिकै घृतको काढ़्यो ताहि समाधिसमाना २ गोरख पवन रखै नहिं जाना योगयुक्ति अनुमाना । ऋद्धि सिद्धि संयम बहुतेरा पारब्रह्म नहिं जाना ३ बशिष्ठशिष्ठविद्यासम्पूरण राम ऐसे शिष शाखा। जाहिरामको करता कहिये तिनहुँक काल न राखा ४ हिन्दूकहै हमैं लैजरबै तुरुक कहै मोर पीर। दूनों आयदीनमोंझगरैं देखै हंस कबीर ॥ ५ ॥

आगे के पद में कहिआये कि काल श्वासा गहे है सो चेति पांसा द्वारा कहे बिचारि बिचारि काम करो सोई बिचार बतावै है॥

सन्तमहन्तोसुमिरौसोई । जो कालफांससों बाचा होई १

साहब कहैहैं कि हे सन्तमहन्तो ! ताको सुमिरण करो जो कालफांस ते बचो होई ॥ १ ॥

दत्तात्रेय मर्म नहिं जाना, मिथ्या स्वाद भुलाना ॥
सलिलामथिकैघृतको काढ़्यो, ताहि समाधि समाना २

जो कहो दत्तात्रेय आपने को ब्रह्म मानिकै ब्रह्महीं ह्वैगये ते तो वाके मर्म को कहे ज्ञानको जान्यो है सो प्रथम दत्तात्रेयऊ नहीं जान्यो काहेते कि वह तो धोखा मिथ्या है सो तेऊ मिथ्या स्वाद में भुलाइ गये यह न बिचार्‌यो कि जौन बिचार करत करत रहिजाय है सो मेरो स्वरूप परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को दास है जब वे विग्रह देइ हैं आपनो तब उनके पास जाइ है सो यह तो न जान्यो पानी को मथिकै घृत काढ़्यो वही धोखा ब्रह्मकी समाधि में समाइ रह्यो सो कहूं पानिहूते घृत निकसै है उनके हाथ धोखई लग्यो ॥ २ ॥

गोरख पवन रखै नहिं जाना, योगयुक्ति अनुमाना ॥
ऋद्धि सिद्धि संयम बहुतेरा, पारब्रह्म नहिं जाना ३
बशिष्ठ शिष्ठ बिद्यासम्पूरण, राम ऐस शिष शाखा ॥
जाहि रामको करता कहिये, तिनहुँक काल न राखा ४

अरु योगयुक्ति को अनुमान करिकै गोरख पवन राखै नहीं जान्यो कहे प्राण चढ़ावै नहीं जान्यो काहेते कि ऋद्धि सिद्धि संयम में लागिगये ब्रह्म के पार जे साहब हैं तिनको न जान्यो ३ और वशिष्ठ जे हैं संपूर्ण विद्या में श्रेष्ठ तिनके राम ऐसे कहे श्री रामचन्द्रही के बरोबर रघुबंशी जिनमें शिष्य शाखा भये तिनहूं को काल नहीं राख्यो अर्थात् यह शरीर उनहूं को न रह्यो व राजन में जिनको रामको कर्ता कहैहैं कि श्रीरामचन्द्रको जे उत्पत्ति

कियो है ऐसे दशरथौ को काल न राख्यो इहां गोरख आदिक योगी दत्तात्रेयादिक ज्ञानी वशिष्ठआदिक ब्रह्मर्षि ई सबते श्रेष्ठ हैं याते संयोगी, ज्ञानी, ब्रह्मर्षि पृथ्वी के आइ गये और दशरथ महाराज को श्रीरामचन्द्र के बिछोह होत प्राण छूटिगयो सो ये सब राजर्षिते श्रेष्ठ हैं ताते दशरथ महाराज के कहे सब राजर्षि पृथ्वीके आयगये तिनहूंको काल न राखत भयो अर्थात् शरीरधारी कोई नहीं रहिजाय है कोई योग करि जो जियो तो ब्रह्मा के दिन भर जियो महाप्रलय में जब ब्रह्मा को नाश ह्वै जाइ है तब ब्रह्माण्डई नहीं रहै है और कोई कैसे रहै सो हंस समाधि लैके मिलत है ॥ ४ ॥

हिन्दू कहै हमैं लै जरबै, तुरुक कहै मोर पीर ॥
दूनों आइ दीनमों झगरैं, देखै हंस कबीर ५

जाको हंसस्वरूप साहब देइ है सो हंसस्वरूप में स्थित ह्वैकै साहब के पास जाइ है सो साहब कहै हैं कि जो मोको जानै तो मैं हंसस्वरूप देउँ तामें स्थित ह्वैकै मेरे पास आवै सो मोको तो जानै नहीं है हिन्दू कहै हैं कि हम वह ज्ञानाग्नि कैकै सबकर्म जारिदेइँगे ब्रह्म ह्वै जाइँगे और मुसलमान कहै हैं कि पिरान जाहिर जो मक्का है तहां हमारो पीर है हमारे खाविन्द हैं ते हमारे कर्म सब जारि देइँगे फिरि दोनों आइ दीनमें झगरै हैं वे कहैहैं कि तुम्हारा खोदाय झूठाहै वे कहै हैं कि तुम्हारा ईश्वर झूठा है सो जीवात्मा तो मेरो बन्दा है सो आपने स्वरूप को जानिकै मोको जानै नहीं है आपने आपने अनुमानकरि आपने आपने खाविन्द बनाइ लिये हैं तिनको झगरा देखता कौन है जो सबके ऊपर होइ है सो साहब कहै हैं कि जिनको मैं हंसस्वरूप दियो है मेरे पास पहुँचै हैं ते सबके ऊँचे ह्वैकै उनको झगरा देखते हैं और हँसते हैं कि सांच साहब तो एकई हैं ताको जानै नहीं हैं आपुस में झगरते हैं ॥ ५ ॥

इति नब्बेवाँ शब्द समाप्तम् ॥ ९० ॥

अथ इक्यानबे शब्द ॥ ९१ ॥

जो देखा सो दुखिया देखा तनुधरि सुखी न देखा । उदयअस्त की बात कहतहौं ताकर करहु बिबेखा १ बाटेबाटेसब कोइदुखिया क्या गिरहीबैरागी । शुकाचार्यदुखहीके कारण गर्भैमायात्यागी २ योगी दुखिया जङ्गम दुखिया तापस को दुख दूना । आशा तृष्णा सबघट व्यापै कोईमहल नहिं सूना ३ सांचकहौंतौसब जगखीझै झूठ कहा नाहिं जाई । कहकबीर तेईभे दुखिया जिन यह राह चलाई ॥ ४ ॥

जो देखा सो दुखिया देखा, तनु धरि सुखी न देखा ॥
उदय अस्तकी बात कहतहौं, ताकर करहु बिबेखा १

जाको संसार में देखै हैं ताको सबको दुखियै देखैं तनु धरिकै सुखिया काहूको नहीं देख काहेते कि गर्भते जो जीव निकस्यो तो माया लपटि जातीहै सो उदय अस्त कहे सब संसार की बात कहौ हौं अरु ताकर तुम विवेक करत जाउ ॥ १ ॥

बाटे बाटे सब कोइ दुखिया, क्या गिरही बैरागी ॥
शुकाचार्य दुख ही के कारण, गर्भै माया त्यागी २

आपने आपने बाट में कहे आपने आपने मतमें सबको दुखिया देखते हैं क्या गिरही क्या बैरागी अर्थात् त्रिगुण के मत में सब परे हैं माया को दुःख कोई नहीं छोड़ै है जो जेतो पायो है सो वही को सांच मानिकै सांच पदार्थ को नहीं जानै है दुःख ही के कारण शुकाचार्य गर्भैमें माया को त्यागिदियो शुकाचार्य गर्भ में बारहवर्ष के ह्वैगये सो गर्भते न निकसैं कहैं कि जो हम निकसैंगे तो हमको माया लागि जायगी तब ब्रह्मादिक देवता सब जुरे आय न निकसे तब भगवान् आइ कह्यो कि बरदाके सींग में सरसौं धरिदेइ जब भर सरसौं सींग में रहैहै यतने कालभर माया हम खैंचलेहैं निकसि आवो सो शुकाचार्य निकसे नारासहित बनको चलेगये साहबको मिलेजाइ ॥ २ ॥

योगी दुखिया जङ्गम दुखिया, तापस को दुख दूना ॥
आशा तृष्णा सब घट व्यापै, कोई महल नहिं सूना ३
सांच कहौं तो सब जग खीझै, झूठ कहो नहिं जाई ॥
कह कबीर तेई भे दुखिया, जिन यह राह चलाई ४

योगी जङ्गम सब दुखियाहैं अरु तापस को तो दून दुःखहै काहे ते कि आशा तृष्णा सब के घट में व्यापैहै कोई महल सून नहीं है काहूको हृदय आशा तृष्णा ते सून नहीं है सब के हृदय में आशा तृष्णा व्यापि रहीहै ३ श्रीकबीरजी कहै हैं कि अपने अपने मतमें जीव लगेहैं सांच मानिकै जो सांचको हम कहै हैं कि सांच जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं तिनमें लगौ जिनको तुम जानि राख्यो है ते असांच हैं तो खीझैहैं व मोसों झूठ कह्यो नहीं जाइ है सो जेजे गुरुवालोग आपनी आपनी मतकी राह चलाई हैं ते दुखिया ह्वैगयेहैं तो जिनको वे शिष्य बनायो है ते दुखिया काहे न होयँ ॥ ४ ॥

इति इक्यानबे शब्द समाप्तम् ॥ ९१ ॥

अथ बानबे शब्द ॥ ९२ ॥

गुरुमुख ॥ ता मनको चीन्हौ रे भाई। तनुछूटे मन कहां स. माई १ सनकसनन्दनजयदेवनामा। अम्बरीषप्रह्लादसुदामा २ भक्त सही मनउनहुँन जाना। भक्तिहेतुमनउनहुँनज्ञाना ३ भरथरि गोरखगोपीचन्दा। तामन मिलिमिलि कियो अनन्दा ४ जा मनको कोइ जान न भेवा। तामनमगनभये शुकदेवा ५ एकलनिरञ्जन सकलशरीरा। तामें भ्रमिभ्रमि रहलकबीरा ॥ ६ ॥

जो कहिआये कि नाना उपासना करि सांच साहब को न जान्यो सो इहां कहैहैं ॥

ता मनको चीन्हौ रे भाई। तनु छूटे मन कहां समाई १
सनकसनन्दनजयदेवनामा। अम्बरीषप्रह्लादसुदामा २

भक्तसहीमनउनहुँ न जाना । भक्तिहेतुमनउनहुँ न ज्ञाना ३

जा मनते नाना उपासना भई ता मनको हे भाई ! चीन्हौ यह मन काको भयो है अर्थात् जौने मनते नाना उपासना ठाढ़े कैलियो है सो मन तो तुमहीं ते भयो है सो यह विचार तो करो जब सब शरीर छूटिजाइ है तब मन कहां समाइ है अर्थात् तुमहीं में समाइ जाइ है सो मनके मालिक तो तुम हौ मनैते जो नाना उपासना ठाढ़कैलियो है ते तुम्हारी उपासना सांच कैसे होइगी १ सनक, सनन्दन, सनत्कुमार, नामदेव, जयदेव, अम्बरीष, प्रह्लाद, सुदामा ये सब भक्त सहीहैं संसार ते छूटे हैं परन्तु मनको वोऊ न जान्यो जो मनको जानते तो मनते भिन्न ह्वैकै मन वचन के परे जो मेरो रामनाम है ताहीको जपते और और की भक्तिको कारण जो है मन तेहि करिकै उनहूं को मेरो प्रथम ज्ञान न होत भयो फेरि जब और और उपासनन में कुछ न देख्यो तब साहब कहहैं कि मोमें लगे काहेते कि वह मन आपैते होइ है अरु वह जीवात्मा के परे मैं हौं काहेते कि यह मन आत्मैते होइ है अरु वह जीवात्मा के परे मैं हौं काहेते कि मेरो अंश है अरु ध्यानादि ज्ञानादिक सब मनते अनुमान करै हैं ताते ज्ञानको अनुभव ब्रह्म और ध्यान को अनुभव उपास्य देवता ये मनके भीतर होवई चाहैं और मन आत्मा को है ताते मन में आत्मा को स्वरूप कैसे आइसकै वह तो मनते परे है सो जब मनको छोड़े है तब चिन्मात्र रहिजाइ है याते मन वचन के परे आत्मा होवई चहै अरु जब मैं हंसस्वरूप देउ हौं तामें स्थित ह्वैकै मेरे पास आवते कल्पना करिकै नानारूप में न लगते ॥ २ । ३ ॥

भरथरिगोरखगोपीचन्दा । तामनमिलिमिलिकियोअनन्दा ४
जामनको कोइजानननभेवा । तामन मगन भये शुकदेवा ५

भरथरी गोरख गोपीचन्द जे हैं ते वही मनहीं में मिलिकै आनन्द कियो अर्थात् जौने ब्रह्ममें मिलिकै आनन्द कियो सो ब्रह्म

मनहीं को अनुभव है ४ सो जौने मनको अनुभव ब्रह्म होइ है अरु वह ब्रह्म उपास्यकन में अर्थ आपनी नाना ईश्वर स्वरूप कल्पना करैहै तौने मनको भेद कोई नहीं जान्यो तौने मनके मगन में कहे राह में शुकदेव ना भये गर्भही ते माया को त्यागिदियो और सनक-सनकादिक प्रह्लादादिक बहुत श्रम करिकै फेरि फेरि समुझ्यो है सो साहब कहै है कि मोको जानिकै मेरे पास आये इहां रामोपासक शुकदेव को छूटिगये जो कह्यो तो रामोपासक सब आइगये ॥ ५ ॥

एकलनिरञ्जनसकलशरीरा। तामें भ्रमि भ्रमि रहलकबीरा ६

एक जो है निरञ्जन ब्रह्म सर्वव्यापी तिनहीं को नाना शरीर नारायणादिक महेशादिरूप है तिनहीं में सिगरे कबीर काया के वीर भ्रमि भ्रमि रहत भये रहे उनहीं की उपासना करत भये अपनो रूप और मेरो रूप न जानत भये अरु ब्रह्म नानारूप कल्पना करि लियो है तामें प्रमाण "उपासकानां कार्यार्थं ब्रह्मणो रूपकल्पना" याको अर्थ मेरे सर्वसिद्धान्त में है और रामोपासक शुकदेव को कहि आये हैं सो शुकाचार्यई मुक्त ह्वैगये हैं तामें प्रमाण "शुको मुक्तो वामदेवो वा" (इति श्रुतेः) और रामोपासक रहे हैं तामें प्रमाण "पादम्बुजं रघुपतेः शरणं प्रपद्ये" (इति भागवते) और कबीरऊजीको प्रमाण "आदिनाम शुकदेवजो पावा। पूर्वजन्म के कर्म मिटावा" ॥ ६ ॥

इति बानबे शब्द समाप्तम् ॥ ९२ ॥

अथ तिरानबे शब्द ॥ ९३ ॥

बाबू ऐसो है संसार तिहारो, ये कलि है व्यवहारा। को अब अनख सहै प्रतिदिनको, नाहिंन रहनि हमारा १ सुमृतिसुभावसबै कोइ जानै, हृदयातत्त्व न बूझै। निरजिवआगेसरजिवथापै, लोचन कछुव न सूझै २ तजिअमृतविषकाहेको अचवै, गांठीबाँधो खोटा। चोरनकोदियपाटसिंहासन, शाहुकोकीन्हेंओटा ३ कहकबीरझूठे

मिलिझूठा, ठगही ठग व्यवहारा । तीनिलोक भरि पूरिरहो है, नाहीं है पतियारा ॥ ४ ॥

बाबू ऐसो है संसार तिहारो, ये कलि है व्यवहारा ॥
को अब अनख सहै प्रतिदिनको, नाहिंन रहनि हमारा १

बाबू कहे हे जीवो ! तिहारो यह संसार ऐसो है कि एक जो है मन ताही के लिये यह संसार को व्यवहार है अरु वही के छोड़े ते संसार छूटिजाइ है तामें प्रमाण "मनएवमनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः" तामें कबीर को प्रमाण "मुक्ति नहीं आकाश में मुक्ति नहीं पाताल। जब मनकी मनसा मिटै तबहीं मुक्ति बिशाल" सो यह मन की प्रतिदिन की अनख कौन सहे अर्थात् अणु जो जीव है ताको प्रतिदिन खाइलेइहै कहे अपने में मिलाइ लेइ है सो रोज़ रोज़ को याके स्वरूप को भुलाइबो कौन सहै यह मन हमारे रहनि मुवाफ़िक़ नहीं है यह जड़ हम चैतन्य याते हम कैसे मिलैंगे ॥ १ ॥

सुमृति सुभाव सबै कोइ जानै, हृदया तत्त्व न बूझै ॥
निरजिव आगे सरजिव थापै, लोचन कछुव न सूझै २

सो यहितरहते मनको स्वभाव सुमृति जे स्मृति हैं तामें वर्णन है सो सबै कोई जाने है परन्तु हृदय में जो मनको तत्त्व कहे स्वरूप है ताको कोई नहीं बूझै है कि हम यह मन ते भिन्न हैं निर्जीव जो मन है ताके आगे सजीव जो है आत्मा ताको राखि देइ है कहे मिलाइ देइ है आंधरन को यह नहीं सूझि परैहै कि चित्जीव को जड़न में मिलाइ जड़ काहे करै हैं व आत्मा देह को एकही माने हैं ॥ २ ॥

तजि अमृत विष काहेको अचवै, गांठी बांधो खोटा ॥
चोरन को दिय पाटसिंहासन, शाहुको कीन्हों ओटा ३

अमृत जो है आपने आत्माको स्वरूप ताको छोड़िके बिष जो है मन तामें लागिकै नाना पदार्थन में लागिबो तो है ताको काहेते

अँचवै हैं कि गांठी में खोट जो मन है ताको बांधे है सो काहे सो काहे बांधे है मनते भिन्न नहीं ह्वैजाइ है आत्मा के स्वरूप को भुलाइ के मन में लगाइ देनवारे व साहब को भुलाइ देनवारे व संसार में डारि देनवारे ऐसे जे गुरुवालोगहैं तिनको पाटसिंहासन देइ है कहे उनको गुरु करै है और शाहु जे साधुजन हैं मनते छोड़ाय देनवारे जे साहबको बताइ देयँ आत्माको स्वरूप जनाइ के तिनको ओट कीन्हें है कहे उनको दर्शनई नहीं लेइ है ॥ ३ ॥

कह कबीर झूठे मिलि झूठा, ठगही ठग व्यवहारा ॥
तीन लोक भरिपूरि रहो है, नाहीं है पतियारा ४

सो कबीरजी कहै हैं कि ऐसे जे लोगहैं ते झूठा जो मन को अनुभव ब्रह्म है तामें मिलिकै झूठे ह्वैरहे हैं ठगै ठगको व्यवहार ह्वैरह्यो है सो तीन लोकमें वही भरिपूरिरह्यो है सो पतिआइबे लायक नहीं है जो ठगमें लगै है सो ठगही ह्वैजाइ है जो कहो तीनलोकमें तो साधु हू हैं पतिआइबे लायक कोई न रह्यो यह कैसे तो कबीरजी कहै हैं कि साधुजन तीनिलोक के बाहरई हैं वे तीन लोक के भीतर नहीं हैं काहेते कि तीनिलोक मन को पसारा है अरु वे मनते भिन्न हैं ॥ ४ ॥

इति तिरानबे शब्द समाप्तम् ॥ ९३ ॥

अथ चौरानबे शब्द ॥ ९४ ॥

कहौ निरञ्जन कवनीबानी। हाथ पांय मुख श्रवण न जिह्वा का कहि जपहु हो प्रानी १ ज्योतिहि ज्योति ज्योति जो कहिये ज्योति कौन सहिदानी। ज्योतिहि ज्योति ज्योति दै मारै तब कहँ ज्योति समानी २ चारिवेद ब्रह्मा निज कहिया तिनहूँ न या गतिजानी। कहै कबीर सुनो हो सन्तो बूझहु पण्डित ज्ञानी ॥ ३ ॥

जो कहौ मनही ते यह संसार है और जब मनते छूटैगो तब ब्रह्मही ह्वैजाइगो तामें श्रीकबीरजी कहै हैं ॥

कहौ निरञ्जन कवनी बानी ॥

हाथ पांय मुख श्रवण न जिह्वा, काकहिजपहु हो प्रानी १
ज्योतिहि ज्योति ज्योति जो कहिये, ज्योति कौन सहिदानी ॥
ज्योतिहि ज्योति ज्योति दै मारै, तब कहँ ज्योति समानी २

कहौ तो निरञ्जन ब्रह्म को कौनी वाणीते कहौहौ वाको तो मन वचन के परे कहौहौ तामें प्रमाण "यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह" (इति श्रुतेः) अरु वाको तो बिना नामरूप को कहौ हौ वाको कैसे जपौ हौ और कैसे ध्यान करौ हौ १ जो कहौ वह प्रकाशरूप ब्रह्म है सो प्रकाश को ध्यानकरै है प्रकाश में अपने आत्मा को मिलाइदेइ है ब्रह्म हमहीं ह्वैजाइ हैं सो ज्योतिस्वरूप जो ब्रह्महै तामें आपने आत्मा की ज्योति ज्योतिकै कहे मिलाइ कै जो कहिये वह ज्योति कौन सहिदानी रहिजाइहै अर्थात् जब सब पदार्थ मिथ्या मानत मानत एक प्रकाशरूप ब्रह्म मान्यो ताको मान्यो कि वह ब्रह्म हमहीं ब्रह्म हैं सो जब भर यह मानेरह्यो कि वह ब्रह्म हमहीं हैं तब भर तो तिहारो अनुभव रहै है और जब अनुभवऊ मिटिगयो तब तुमहीं रहिजाउ हौ तब वह ब्रह्मकी कौन सहिदानी रहिजाइ है अर्थात् कछु नहीं रहिजाय है तुमहीं रहिजाउ हौ यही प्रकार जब ब्रह्मज्योति आत्माकी ज्योति मिलायकै वाहि ज्योति को दै मार्यो कहे छोड़यो अर्थात् सबको निराकरणकै कैवल्य शरीर में प्राप्त भयो अरु वहूको छोड़यो तब आत्माकी ज्योति कहां समाइ है सो कहै हैं जीवके मुक्त भये पर परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र हंसस्वरूप देइ हैं तामें टिकिकै साहब की सेवा जीवकरै है यह ज्ञान तो जीव जानै नहीं है वही ब्रह्म प्रकाश को जानि राख्यो है कि हमैंहीं ब्रह्म हैं सो जब मनको निराकरण ह्वैगयो तब ब्रह्महू को ह्वैजाय है तब आत्मै रहिजाय है याते मनैको अनुभव ब्रह्म है सो जौने हंसस्वरूप में वा ज्योति समाइ है ताको विचार करो ॥ २ ॥

चारिवेद ब्रह्मा निज कहिया, तिनहुँ न या गति जानी ॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, बूझहु पण्डित ज्ञानी ३

ब्रह्मा चारि वेद कह्यो तिनमें यह कह्यो कि मुक्त भये पर विग्रह को लाभ होय है "मुक्तस्य विग्रहो लाभः" इत्यादिक श्रुति आंखही कह्यो तऊ न जान्यो काहे ते जो जानते तो जगत् की उत्पत्ति न करते हंसस्वरूप में टिकिकै साहबके लोकको चलेजाते सो कबीर जी कहै हैं कि हे सन्तो ! सुनो जाके सारासार विचारिणी बुद्धि होय सो पण्डित कहावै सोई पण्डितहै सो हे ज्ञानिउ ! जिन संपूर्ण असार को छोड़िकै सार जे साहब हैं तिनको ग्रहण कैलियो ऐसे जे पण्डित हैं तिनसों बूझो वह गति वोई बूझै हैं तबहीं तिहारो धोखाब्रह्म छूटैगो ॥ ३ ॥

इति चौरानबे शब्द समाप्तम् ॥ ९४ ॥

अथ पञ्चानबे शब्द ॥ ९५ ॥

को असकरै नगर कोतवलिया । मासुफैलायगीधरखवरिया १ मूसभोनावमँजरिकँड़हरिया । सोवैदादुरसर्पपहरिया २ बैलबियाय गायभैबांझा । बछवैदुहिया तिनतिनसांझा ३ नितउठिसिंह स्यारसों जूझै । कबिरकपदजनविरलाबूझै ॥ ४ ॥

कोअसकरैनगरकोतवलिया।मासुफैलायगीधरखवरिया १
मूसभोनावमँजरिकँड़हरिया । सोवैदादुरसर्पपहरिया २
बैलबियायगायभैबांझा । बछवैदुहियातिनतिनसांझा ३
नितउठिसिंहस्यारसोंजूझै।कबिरकपदजनविरलाबूझै ४

साहब कहै हैं या संसाररूपी नगर की कोतवाली को करै जौने नगर में शरीररूपी मांस फैला है गीध जो निरञ्जन काल सो रखवार हैं और जहां जीवको स्वरूप ज्ञान जो मूसरूप नाव ताके बिलार कँड़हारिया है कहे गुरुवालोग और दादुर जो जीव है सो सोवै है प्राण जो सर्प सो पहरी हैं पै ई नानाशरीर में लै

जाइ हैं और गाय जो गायत्री सो आपने तात्पर्य छपाय राख्यो सो बांझ भई और बैल जो शब्दब्रह्म सो बियाय है कहे नाना ग्रन्थरूप बछवा भये तेई बछवाको तीनि तीनि सांझ दुहै हैं अर्थात् रजोगुणी, तमोगुणी, सतोगुणी सब वाही को दुहै हैं कहे पढ़ै सुनै हैं और सिंह जो बिवेक है सो सियार जो कुमति तासों रोजही जूझै है सो कबीर जो है जीव ताको पद जो है मेरो धाम ताको कोई बिरला बूझै है जे मेरे धाम को बूझै हैं ते संसारते छूटि जाय हैं ॥ १ । ४ ॥

इति पञ्चानबे शब्द समाप्तम् ॥ ९५ ॥

अथ छानबे शब्द ॥ ९६ ॥

काकहिरोवोगेबहुतेरा । बहुतकगयेफिरेनहिंफेरा १ हमरी बातबतैंनसँभारा । बातगर्भकीतैं न बिचारा २ अबतैंरोयाक्यातैं पाया । केहिकारणतैंमोहिंरोवाया ३ कहै कबीर सुनो नरलोई । कालके बशहि परौ मति कोई ॥ ४ ॥

का कहि रोवहुगे बहुतेरा । बहुतक गये फिरे नहिं फेरा १
हमरीबात बतैं न सँभारा । बात गर्भकी तैं न बिचारा २
अब तैं रोयाक्या तैंपाया । केहिकारण तैंमोहिंरोवाया ३
कहै कबीर सुनो नरलोई । कालकेबशहि परौ मतिकोई ४

का कहिकै रोवौ हौ बहुत तरहते कि ये हमारे भाईहैं ई बाप हैं ई पुत्र हैं बहुत यही तरहते गये हैं फेरि नहीं फेरे फिरे हैं १ सो जब जब हमका तेरो दुःख देखिकै करुणा भई हमारो वा तोको उपदेश दियो सो तू न सँभारे जो करारकिये तैं कि मैं भजन करौंगो सो न बिचारे साहब को भजन न कियो अब तैं गर्भ में जाय जाय संसार में आय आयके रोवै है कहे दुःख पावै है सो क्या तैं पाये अब हमको तैं काहे रोवावै है तेरो दुःख देखिकै मोको दुःख होय है सो कबीरजी कहै हैं कि हे नरलोगो !

साहबको जानौगे तबहीं कालते बचौगे सो साहब को भुलायकै काहे काल के बश परौहौ संसार दुःख पावौहौ ॥ २ । ४ ॥

इति छानबे शब्द समाप्तम् ॥ ६६ ॥

अथ सत्तानबे शब्द ॥ ६७ ॥

अल्लहराम जीवतेरीनाईं । जनपरमेहरहोहुतुमसाईं १ क्या मूड़ीभूमिहिशिरनाये क्या जल देह न्हाये। खूनकरैमसकीनकहावै गुणको रहैछिपाये २ क्याभोउज्जूमज्जनकीन्हे क्यामसजिदशिर नाये । हृदयाकपटनेवाजगुजारै कहाभोमक्काजाये ३ हिन्दूएकादशिचौबिसरोज़ा मुसलम तीस बनाये । ग्यारहमासकहौकिनटारौ ये केहिमाहँसमाये ४ पूरबदिशिमेंहरिको बासा पश्चिम अलह मुकामा। दिलमेंखोजदिलैमेंदेखो यहैकरीमा रामा ५ जो खोदाय मसजिदमेंबसतुहै और मुलुककेहिकेरा। तीरथमूरतिरामनिवासी दुइमहँकिनहुँनहेरा ६ वेदाकिताबकीनकिनझूठा झूठा जो न बिचारै । सबघटमाहँएककरिलेखै भयदूजाकरिमारै ७ जेते औरत मर्दउपाने सोसबरूप तुम्हारा। कबिरपोंगड़ाअलहरामका सो गुरु पीर हमारा ॥ ८ ॥

अल्लहरामजीवतेरीनाईं । जनपर मेहरहोहु तुम साईं १

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे श्रीरामचन्द्र ! कोई तुमको अल्लाह कहै है कोई राम कहै है हिन्दू मुसल्मान दोउन में शरीरभेद है जीव तो एकई है सबमें बिभु चैतन्य तुम हौ अरु चैतन्यजीव है ज्योति तुम्हारी है हिन्दू मुसलमान को आत्मा तुम्हारी है तुम दूनों के साईंहो ताते तुम्हारे जन जे हिन्दू तुरुक दोऊ हैं तिनके ऊपर मेहरबानगी करौ ॥ १ ॥

क्या मूड़ी भूमिहि शिर नाये, क्या जल देह नहाये ॥
खून करै मसकीन कहावै, गुण को रहै छिपाये २

कबीरजी कहै हैं कि हिन्दू तुरुक तुमको बिसराइकै और और

बिचार करै हैं या चित्त में न दीजै मेहर करिये काहेते कि तुरुक मूड़ी भूमि जो गोर तामें शिरनावै है और हिन्दू बहुत जलसों नहाय है याते काहभयो आपको तो जनबै न कियो और जीवन के गर काटै है ऐसो खूनकरै तौन खून तो छिपावै है आपते जे सर्वत्र पूर्ण हैं तिनको नहीं जानै है और मसकीन जो फ़क़ीर सो कहावै है याते कहा भयो ॥ २ ॥

क्या भो उज्जू मज्जन कीन्हे, का मसजिद शिरनाये ॥
हृदयाकपट नेवाज गुजारै, कहाभो मक्का जाये ३
हिन्दू एकादशि चौबिस रोज़ा, मुसलम तीस बनाये ॥
ग्यारहमास कहौ किन टारौ, ये केहि माहँ समाये ४

हिन्दू बहुत प्रकार के मज्जन करै हैं और तुरुक उज्जू जो कुल्ला मुखारी करिकै हृदय में कपट सहित नेवाज गुजार्‌यो मसजिद में माथ नवायो मक्का गयो याते काह भयो आपको तो जनबै न कियो ३ हिन्दू तो चौबिस एकादशी रहे और तुरुक तीस रोज़ा रहे याते काह भयो काहेते याते जनबै न कियो कि और दिन ये काहे में समायँगे ई सब दिन साहिबै के हैं ग्यारह मास ई काके हैं ॥ ४ ॥

पूरुबदिशि में हरिको बासा, पश्चिम अलह मुकामा ॥
दिल में खोज दिलै में देखो, यहै करीमा रामा ५
जो खोदाय मसजिदमें बसतुहै, और मुलुक केहिकेरा ॥
तीरथ मूरति रामनिवासी, दुइ में किनहुँ न हेरा ६

हिन्दू कहै हैं कि पुरुब और उत्तर के कोने में सुमेरु है ताही में बकुण्ठ है वहैं ते सूर्य उदय होइ है तहैं हरिको बास है ताही ओर पूजा ध्यान करै हैं और पश्चिम कैति मक्का है तहां अल्लाह को बास है ताही ओर मुसलमान नेवाज गुजारै हैं सो याते काह भयो आपने दिल में खोजकैकै तो देखबै न कियो कि करीम जे

खोदाय राम जे रामचन्द्र ते दिलही में हैं हिन्दू तुरुक दोउन में वोई हैं ये तो शरीर आय साहब एकई है या न जानै तौ काह भयो ५ मुसल्मान लोग या मानै हैं खोदाय मसजिद में बसतु है और रामचन्द्र मूर्ति और तीर्थ में बसै हैं याते काह भयो काहे ते दुइ में या बात कोई न बिचारै कि और मुल्क में को बसै है सर्वत्र साहबही पूर्ण है आपने आपने पक्ष में लगे हैं ॥ ६ ॥

वेद किताब कीन्ह किन झूठा, झूठा जो न बिचारै ॥
सब घट एक एक करि लेखै, भय दूजा करि मारै ७

वेदवाले किताब को झूठा कहै हैं किताबवाले वेद को झूठा कहै हैं सो या कहा झूठा है इनको को झूठा करिसकै है झूठा वही है जो इनको नहीं बिचारै है कि वेद किताब को यही सिद्धान्त है साहब सर्वत्र पूर्ण है हिन्दू के याहै कि सब नाम साहब ही के हैं " सर्वाणि नामानि यमाविशन्ति " (इति श्रुतिः) और मुसल्मान के जामैजमीसिफ़ात जामै जमीअसमात यह कलामुल्ला के किताब में लिखे है सो घट घट में चित्स्वरूप जीव एक ही है सबके साहब रामचन्द्रही हैं तिनको एक करि लेखै भय दूसरे ते होय है ताको मारै सो यातो बिचारबै न कियो तौ काह भयो ॥ ७ ॥

जेते औरत मर्द उपाने, सो सब रूप तुम्हारा ॥
कबिर पोंगड़ा अलह राम को, सो गुरु पीर हमारा ८

सो कबीरजी कहैहैं कि जेते औरत और मर्द उपाने कहे उपजे हैं ते सब तुम्हारे रूप हैं काहेते कि चित् जो तुम्हारो बिग्रह है ताही ते जगत् है और कबिर कहे काया के बीर जे जीव हैं ते हे अल्लाह, राम ! तिहारे जीवन के पोंगड़ा हैं अर्थात् तुमहीं घट घट में बोलत हौ तुमको जानिबेको इनके कुदरति नहीं है चाहौ तुम उपदेश करि आपने में लगावो चाहौ गुरु पीर द्वारा उपदेश करि आपने में लगावो इनको बश नहीं है तामें प्रमाण " यथ

दारुमयी योषिन्नृत्यते कुहकेच्छया। एवमीश्वरतन्त्रोऽयमीहते सुखदुःखयोः" (चौपाई) "उमा दारुयोषित की नाईं। सबै नचावत राम गोसाईं" ॥ ८ ॥

इति सत्तानबे शब्द समाप्तम् ॥ ९७ ॥

अथ अट्ठानबे शब्द ॥ ९८ ॥

आवो वेआवोमुझेहरिकोनाम। और सकल तजुकौनेकाम १ कहँ तब आदम कहँ तब हवा। कहँ तब पीरपैगम्बर हुवा २ कहँ तब जिमीं कहाँ असमाना। कहँ तब वेदकिताबकुराना ३ जिन दुनियामेंरचीमसीद। झूठेरोज़ाझूठी ईद ४ सांचएकअल्लाको नाम। ताको नयनय करोसलाम ५ कहुधौं भिश्त कहाँते आई। किसके कहे तुम छुरी चलाई ६ करताकिरतिमबाजीलाई। हिन्दु तुरुकदुइराहचलाई ७ कहँ तब दिवस कहां तब राती। कहँ तब किरतिमकी उतपाती ८ नाहिं वाके जाति नहीं वाके पांती। कह कबीर वाके दिवस न राती ॥ ९ ॥

आवोवेआवोमुझेहरिकोनाम। औरसकलतजुकौनेकाम १
कहँ तब आदम कहँ तब हवा। कहँतबपीरपैगम्बरहुवा २
कहँतबजिमींकहाँ असमाना। कहँतबवेदकिताबकुराना ३

श्रीकबीरजी कहे हैं कि जौने नाम में सबनाम हैं तौन जो मन बचन के परे हरिको नाम है सो हे जीव! ताको तैं बिचारकरु कि मोको आवै और सब बस्तु झूठे छोड़िदे कौने काम के हैं जब वह नाम रह्यो है आदि में तब कुछ नहीं रह्यो १ ये जे कहिआये ते कहां रहे हैं अर्थात् कोई नहीं रहे ॥ २। ३ ॥

जिन दुनिया में रची मसीद। झूठे रोज़ा झूठी ईद ४
सांच एक अल्लाको नाम। ताकेनयनयकरो सलाम ५
कहुधौं भिश्त कहाँते आई। किसकेकहेतुमछुरीचलाई ६

अरु जीव जिन संसार में मसीद जो मसाजिद शरीर रच्यो है

ते कर्तारौ नहीं रहे ४ सांच एक मन बचन के परे अल्ला को नाम है ताको नय नयकै सलाम करो और सब झूठा है जिसके बनाये भिश्त भई है तेऊ वही नाम ते प्रकट भये हैं तुम किसके कहे जीव मारते हौ ई सब झूठे हैं ॥ ५ । ६ ॥

करताकिरतिमबाजीलाई । हिन्दुतुरक दुइराहचलाई ७
कहँतबादिवसकहाँतबराती । कहँतब किरतिमकीउतपाती ८
नहिंवाकेजातिनहींवाकेपांती । कहैकबीरवाकेदिवसनराती ९

सो कर्ता कै कृत्रिम जो माया है सो बाजी लगाइ कै दुइ राह चलाई है ७ जब प्रथम साहब सुरति दियो है तब कहां दिन रह्यो है कहां राति रही कहां कृत्रिम जो माया ताकी उत्पत्ति रही है न वाके कछु जाति है जो कहिये वा ब्रह्म में है माया में है सत्‌चित् है तो वा एकऊ में नहीं है न जातिहै वाके एकई साहब हैं दुइचारि साहब नहीं हैं न वाके दिवसहै न राति है कहे न ज्ञान है न अज्ञान है ताते साहब को सांचनाम जपौ ॥ ८ । ९ ॥

इति अट्ठानबे शब्द समाप्तम् ॥ ९८ ॥

अथ निन्नानबे शब्द ॥ ९९ ॥

अब कहँ चल्यो अकेले मीता । उठिकिन करहु घरहुकी चीता १ खीरखांड़घृतपिण्डसमारा । सोतनलैबाहरकैडारा २ जेहि शिर रचि रचि बांध्यो पागा । सो शिररतन बिदारहिं कागा ३ हाड़ जरैं जैसे लकड़ीझूरी । केशजरैं जस तृणकै कूरी ४ आवत संग न जातको साथी । काह भयो दल साजे हाथी ५ मायाको रस लेइ न पाया । अन्तर यम बिलार है धाया ६ कह कबीर नल अजहुँ न जागा । यमको मोगरा मधि शिर लागा ॥ ७ ॥

अबकहँ चल्योअकेलेमीता । उठिकिनकरहुघरहुकीचीता १
खीरखांड़घृतपिण्डसमारा । सो तन लै बाहर कै डारा २

जेहिशिररचिरचिबांध्योपागा । सोशिररतनबिदारहिंकागा ३
हाड़जरैं जस लकड़ी भूरी । केश जरैं जस तृणकै कूरी ४
आवतसंगनजातको साथी । काहभयोदलसाजे हाथी ५
मायाको रस लेइ न पाया । अन्तरयमबिलारह्वै धाया ६
कहकबीरनलअजहुँनजागा।यमकोमोगरा माधिशिरलागा ७

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हे जीवो ! जैसो या पद में कहि आये हैं तैसो तिहारो हवाल ह्वै रह्यो है जो तुम परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को न जानौगे तो तिहारे शिर में यमको मोगदर लगैगो॥ १७॥

इति निन्नानबे शब्द समाप्तम् ॥ ९९ ॥

अथ सौ शब्द ॥ १०० ॥

देखौ लोगौ हरिकी सगाई । मायधरै पुतधिय सँग जाई १ सासुननँदिमिलिअदलचलाई । मादरियागृहबेटीजाई २ हम बहनोइ राम मोर सारा । हमहिं बाप हरिपुत्र हमारा ३ कहै कबीर हरीके बूता । राम रमै त कुकुरी के पूता ॥ ४ ॥

देखौलोगौ हरिकीसगाई । मायधरै पुतधिय सँगजाई १

हे जीवो ! सब संसार की सगाई न देखो दुःखके हरैया जे हरि हैं तिनकी सगाई देखो अर्थात् साहब में लागो तो वे संसारदुःख दूर करिदेइँगे जो संसारमें लागोगे तो माई जो माया सो तुमको धरैगी तुम जीवो वा माया के पुत्र ह्वै रह्यो है समष्टिते व्यष्टिजीव मायाही करैहै याते मायाको माय कह्यो है अब जीवके बुद्धि उत्पन्न होय है याते जीवकी धी कहे कन्या है सो तैं बुद्धि के संग बिगरि गयो और और में बुद्धि निश्चय कराइ नरकमें डारिदियो ॥ १ ॥

सासुननँदिमिलिअदलचलाई । मादरियागृहबेटीजाई २

बुद्धिकर्म की बासना ते उत्पत्ति होय है जौने प्रकार की बासना होय है तैसी बुद्धि होय है सो बासना जीवकी सासु है और जीव की सुरति बहिनी है काहेते कि वही सुरति पाइकै जीव

चैतन्य भयो है संसारी भयो है और वह सुरति जब साहब मुख होइगी तब साहब को पावैगो सो येई जे हैं बुद्धि की सासु ननँदि हैं तेई अदल जो हैं हुकुम सो चलाइकै शुद्ध समष्टि जीव को संसार में डारिदेइ हैं सो कैसे डारिदेइ हैं सो कहैहैं जौन बांदर को नट नचावै हैं सो मादरिया कहावै सो मन है ताकी बेटी जो है इच्छा सो उत्पत्ति भई तब जीव संसार में पर्‍यो ॥ २ ॥

हमबहनोइ राममोरसारा । हमहिं बाप हरिपुत्र हमारा ३
कहै कबीर हरी के बूता । रामरमै तें कुकुरी के पूता ४

हे जीव ! तैं यह बिचारु कि यामें परिकै हम बहनोई हैं अर्थात् बहनवारे हैं सो बही जायँगे अरु हमारे सार कहे सारांश रामै हैं और हमारे बाप रामै हैं और पुत्र रामै हैं तामें प्रमाण "रामो माता मत्पिता रामचन्द्रः स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः । सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुर्नान्यं जाने नैव जाने न जाने" (तामें कबीरजी को प्रमाण) "राम हमारे बाप हैं राम हमारे भ्रात । राम हमारी जाति हैं राम हमारी पांत" सो यह बिचारिकै श्रीकबीरजी कहैहैं कि हरि के बूता कहे हरिनके बूतते अर्थात् अपने बूतते नहीं कुकुरी जो माया है ताके पतो जीवो सर्वनात रामै सों मानिकै रामैमें रमो अर्थात् जब तुम साहबके होउगे तब साहब हंसस्वरूप दैकै तुमको अपने धामको बोलाइ लेहँगे ॥ ३ । ४ ॥

इति सवां शब्द समाप्तम् ॥ १०० ॥

अथ एकसैएक शब्द ॥ १०१ ॥

देखि देखि जिय अचरज होई । यह पद बूझै बिरला कोई १ धरती उलटि अकाशहि जाई । चींटी के मुख हास्ति समाई २ बिन पवनै जहँ पर्वत उड़ै । जीवजन्तु सब बिरछाबुड़ै ३ सूखे सरवर उठै हिलोल । बिनु जल चकवा करै कलोल ४ बैठा पण्डित पढ़ै पुरान । बिन देखे का करै बखान ५ कह कबीर जो पद को जान । सोई सन्त सदा परमान ॥ ६ ॥

देखिदेखिजियअचरज होई । यहपदबूझैबिरलाकोई १
धरतीउलटिअकाशहि जाई । चींटीकेमुखहस्तिसमाई २

श्रीकबीरजी कहै हैं कि मैं तो स्पष्टई कहौं हौं पै यह पद जो साकेतलोक ताको कोई बिरला बूझै है सो यह देखि देखि मोको बड़ो आश्चर्य होइ है १ जब महाप्रलय होय है तब धरती उलटि कै आकाश को जातरहै है कहे पृथ्वी जल में जल तेज में तेज वायु में वायु आकाश में समाइजाइ है अरु वहौं जो है आकाश सो अहंकार में समाइ है अरु अहंकार महत्तत्त्व में समाइ है सो महत्तत्त्व मन है काहेते कि यह सब विस्तार मनहीं को है सो महत्तत्त्व जो है आदि कारण मन हाथी सो भगवत् आपना रूप जो है जगत् की मूलशक्ति सूक्ष्म चींटी ताके मुखमें समाइहै ॥२॥

बिन पवनै जहँ पर्बत उड़ै । जीव जन्तु सब बिरछा बुड़ै ३

सो वह साहबके अज्ञानरूपा मूलप्रकृति लोकप्रकाश में जो समष्टि जीव हैं तहां समानी रहै है पृथ्वी आदिक तो समाइगये हैं उहां पवन नहीं है परन्तु वह चैतन्याकाश कहे ब्रह्मरूपी आकाश में अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड जे पर्वत हैं ते उड़तई रहैहैं ते अरु वही सरवर में जीवजन्तु ते सहित जे संसाररूपी वृक्ष हैं ते बूड़े हैं अर्थात् वही ब्रह्म में सब संसार को लय होय है ॥ ३ ॥

सूखे सरवर उठै हिलोल । बिनुजलचकवाकैरकलोल ४
बैठा पण्डित पढ़ै पुरान । बिन देखे का करै बखान ५

वह ब्रह्म तो सूखा सरोवर है अर्थात् सो ब्रह्म नहीं हौं यह मानिबो मिथ्या है लोकप्रकाश ब्रह्म सत्य है तौने के प्रकाश की हिलोर उठै है तहां बाणीरूपी जल तो है नहीं और चकवा जे जीव हैं ते कलोल करैहैं कहे वहैते पुनि बाणी को उत्पत्ति करिकै संसारी ह्वै जाइहैं ४ पण्डित जेहैं ते बैठे पुराण पढ़ै हैं अरु उत्पत्ति प्रलय को सब बखान करै हैं यह तो नहीं समुझै हैं कि वह तो बिन देखे काहे कहे शून्य है जो हम ज्ञान उपदेश करिकै वह ब्रह्म

में लगावेंगे तो भगवत् अज्ञानरूपी कारणशक्ति तो उहां बनिही है माया फेरि न धरि लै आवैगी ॥ ५ ॥

कह कबीर जो पद को जान । सोई सन्त सदा परमान ६

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जो कोई यह पद को कहै है जौने को प्रकाश यह ब्रह्म है ऐसो जो साकेत है तौने पद को कहे स्थान को जो जानै तो प्रमाण सन्त वही है और जेहिको प्रकाश या ब्रह्म है तौने धाम में जायकै पुनि नहीं लौटिआवै है तामें प्रमाण "न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः । यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम" (तामें कबीरऊजी को प्रमाण) "कालहि जीति हंस लै जाहीं । अबिचल देश पुरुष जहँ आहीं ॥ तहां जाय सुख होइ अपारा । बहुरि न आवै यहि संसारा" ॥ ६ ॥

इति एकसैएक शब्द समाप्तम् ॥ १०१ ॥

अथ एकसैदो शब्द ॥ १०२ ॥

हो दारी किलै देउँ तोहिं गारी । तुम समुभु सुपन्थ बिचारी १ घरहू को नाह जो अपना । तिनहूं सों भेंट न सपना २ ब्राह्मण औ क्षत्री बानी । सो तिनहूं कहल न मानी ३ योगी औ जङ्गम जेते । वे आपु गये हैं तेते ४ कह कबीर यक योगी । तुम भ्रमी भ्रमी भो भोगी ॥ ५ ॥

होदारीकिलैदेउँतोहिं गारी । तुमसमुभुसुपन्थबिचारी १
घरहू को नाह जो अपना । तिनहूं सों भेंट न सपना २
ब्राह्मण औ क्षत्री बानी । सो तिनहूं कहल न मानी ३

हो दारी कहे बांदी की बच्ची जीवशक्ति तोको गारी देइहौं तैं यह माया की बच्ची ह्वैके मायाही में लगिरही है सो यह माया दारी है जो सबको दरिडारै सो दारी कहावै है सो तोको दरेडारै है यही के ये पेटते निकसे यही में लगे यह कुपन्थ है सो तैं सुपन्थ बिचारु १ घरके नाह जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र अपना

है तासों सपनेहूं नहीं भेंट करैहै तो योगज्ञान उपासनादिकन में जो नाह वर्णन किये हैं तेतो जार हैं जो तोको मिलिबो करैंगे दश दिनको तो फेरि छाँड़िदेइँगे २ जो हमारो कहो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य न मान्यो जिनको वेद को अधिकार है ते वेद को तात्पर्य परम-पुरुष पर श्रीरामचन्द्रको न जान्यो तो शूद्र अन्त्यजन की कहबई कहा करैं ॥ ३ ॥

योगी औ जङ्गम जेते। वे आपु गये हैं तेते ४
कह कबीर यक योगी। तुम भ्रमी भ्रमी भो भोगी ५

योगी जङ्गम जेतेहैं ते वही धोखाब्रह्म में लागिकै आपने आपने पौ खोइदियो ४ श्रीकबीरजी कहैहैं कि तुम एकके योगी भयो कि हम आत्मा कोएक जो ब्रह्म है तामें संयोग करिदेइहैं कहे मिलाइ देइ हैं सो यह नहीं बिचार करते हौ कि एक वही ब्रह्म जो जीव होतो तौ वासों भिन्न काहे को होतो और तुमको मिलाइबे को काहे परतो जो कहौ यह ब्रह्महीं को माया ते भ्रम भयो है तब नानारूप देखनलग्यो है तो तुमहीं ब्रह्म को ज्ञानमय कहौहौ "सत्यं ज्ञानमनन्तंब्रह्मेत्यादि" तौ वाको भ्रमहीं कैसे भयो अरु जो माया में एती सामर्थ्य है कि तुमको फोरिकै नानारूप करि दियो है तो जब तुम मिलिहू जाउगे तब तुम को फेरि फोरिकै संसार में न डारिदेइगो का जनन मरण न छूटैगो ताते तुम फेरि फेरि यह भवभ्रम में भ्रमि भ्रमि कै भोगी होउगे अर्थात् जब वह ब्रह्म में लगौगे फेरि फेरि संसारही में परौगे ॥ ५ ॥

इति एकसैदो शब्द समाप्तम् ॥ १०२ ॥

अथ एकसैतीन शब्द ॥ १०३ ॥

लोगो तुमहीं मतिके भोरा। ज्यों पानी पानी में मिलिगो त्यों ढुरि मिल्यहु कबीरा १ ज्यों मैथिलको सच्चा बास। त्योंहि मरण होय मगहर पास २ मगहर मरै मरण नहिं पावै। अन्तै मरै तो राम लजावै ३ मगहर मरै सो गदहा होई। भल परतीति रामसों

खोई ४ क्या काशी क्या ऊसर मगहर हृदय रामबस मोरा। जो काशी तनतजै कबीरा रामै कौन निहोरा ॥ ५ ॥

लोगोतुमहींमतिकेभीरा ॥

ज्यों पानी पानी में मिलिगो, त्यों ढुरिमिल्यहु कबीरा १

हे लोगो! तुम बड़े मतिकेभीर हौ कहे डराकुल हौ काहेते जो मैं एतो उपदेश पशुको करत्यों तो पशुहू को ज्ञान ह्वै जातो तुम पशुहूते अधिक हौ जैसे पानी में पानी मिलिजाइ है ऐसे कबीरजी कहहैं कि तुम्हूँ ढुरिकै मिलौ कहे हंसस्वरूप में प्राप्त होउ और साहब के पास जाउ जो कहो पानी में पानी मिले एकही ह्वैजाइ है तो एक नहीं ह्वैजाइहै काहेते कि लोटा भरे जल में चुरुवाभरि जल नाइ देइँ तो बाढ़िआवै है जो वही जल होतो तो बढ़तो कैसे जो कहो समुद्र में तौ नहीं बढ़ै तो समुद्रौ में गङ्गादिक नदी जुदी ही रहती हैं देखबे को मिली हैं परन्तु उनको पारिख मेघ जानै हैं वहांते मीठे जल लैकै बर्षै हैं पुनि जब श्रीरामचन्द्र समुद्रपर कोपे तब समुद्र आयो है सब नदी चमरछत्र लीन्हें जुदी जुदी आई हैं और कबहूं जहाजवारे जे जानै हैं ते मीठाजल समुद्र को पाइ जाइ हैं सो हे कबीरो! कायाके बीर जीवो! तुमहूं हंसस्वरूप में स्थित ह्वै साहब के लोक में प्रवेश करि साहब को मिलोजाइ ॥१॥

ज्यों मैथिल को सच्चा बास। त्योंहिमरणहोयमगहरपास २

मगहर मरै मरण नहिं पावै। अन्तै मरै तो राम लजावै ३

मगहर मरै सो गदहा होई। भल परतीति रामसों खोई ४

जो श्रीरामचन्द्र को जानै तो जैसे मैथिल कहे मिथिलापुर में मरे मुक्ति होइहै तैसे मगहर में मरे मुक्ति होइ है २ जो मगहर में मरै तो मरण नहीं पावैहै यह सब कोई कहै हैं कि मगहर में मरे मुक्ति नहीं होइहै अरु जो अन्ते मरै तो श्रीरघुनाथजी को लजावे

१—तनु त्यजतु वा काश्यां श्वपचस्य गृहेऽथवा ज्ञानसंप्राप्तिसमये मुक्तोऽसौ विगताशयः ॥

कि तीर्थकी ओटलैकै मस्यो ३ सो जाकी श्रीरामचन्द्र में परतीति नहीं होय है सो मगहर में परे गदहे होइ है ॥ ४ ॥

क्या काशी क्या ऊसर मगहर, हृदय राम बस मोरा ॥
जो काशी तन तजै कबीरा, रामै कौन निहोरा ५

जो हृदयमें श्रीरामचन्द्र बासकिये हैं तो क्या श्रीकाशीहै क्या ऊसरहै क्या मगहरहै जहँ मरे तहँ मुक्ति ह्वै जाइ तो श्रीकबीरजी कहैहैं कि श्रीरामचन्द्रको कौन निहोरा तेहिते मैं श्रीरामचन्द्र को निहोरा करिकै मगहर मैंही शरीर छोड़्यो मोको मगहर बाधा न कियो तेहिते हे जीवो! तुमहूं परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को हृदय में धरौगे और रामनाम जपौगे तो तुमहूं को कछु बाधा न रहेगी जहँ मरौगे तहँ मुक्त ह्वै जाउगे ताते और सब धोखा छोड़िकै परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को स्मरण करौ मैं अजमाइकै कहौहौं जो कहो अपने शरीर छोड़िबे की कथा श्रीकबीरजी अपने ग्रन्थ में लिखैहैं यह असम्भव बात है तौ मगहर में जो श्रीकबीरजी शरीर छोड़्यो तो आपनी रामोपासकता देखाइबे की मैं मगहर में शरीर छोड़ौं हौं कैसे यम मोको गदहा करैंगे और कैसे मैं मुक्त न होउँगो सो मगहर में मैं शरीर छोड़्यो यमको कियो कछु न भयो मगहर में शरीर छोड़ि मथुरा में जाय रतनाकन्दुइनि को उपदेश कियो है पुनि बहुत दिन प्रकट रहे हैं याते यह देखायो कि नित्य वृन्दावन के रास में देख्यो जाइ है जहां सब मुक्त ह्वैकै जाइ हैं परम मुक्त ह्वै नित्य वृन्दावन के रास में जाय हैं तामें प्रमाण शुकाचार्य मुक्त ह्वै गये हैं तिनसों श्रीकृष्णचन्द्र की उक्ति "सचोवाच प्रियारूपं लब्धवन्तं शुकं हरिः । त्वं मे प्रियतमा भद्रे सदा तिष्ठ ममान्तिके" (इति पद्मपुराणे) सो सब कथा आपही धर्मदासते निर्भय ज्ञान में आपने ही मुख कमल ते कह्यो है सो स्पष्टई है ॥ ५ ॥

इति एकसैतीन शब्द समाप्तम् ॥ १०३ ॥

अथ एकसैचार शब्द ॥ १०४ ॥

कैसे के तरो नाथ कैसे के तरो । अब बहुकुटिल भरो १ कैसी तेरी सेवा पूजा कैसो तेरो ध्यान । ऊपर उजर देखो बक अनुमान २ भावतो भुवंग देखो अति बिबिचारी । सुरति शचान देखो मति तौ मञ्जारी ३ अति तो बिरोधी देखो अतिरे देवाना । छौदरशन देखो भेष लपटाना ४ कहै कबीर सुनो नरबन्दा । डाइनिडिम्भपरे सब फन्दा ॥ ५॥

अब गोरखनाथ के मतके जे नाथ कहावै हैं जे आपने इष्ट-देवता को नाथ कहै हैं तिनको कहै हैं कैसहैं वे कि आप कालते नाथे गये अरु औरऊ को कालते नथावै हैं जिनको अपने अपने मतमें लै आवै हैं तेऊ कालते नाथे जायँगे अर्थात् नाथै सो नाथ कहावै अथवा नाथो जाइ सो नाथ कहावै ॥

कैसेकै तरो नाथ कैसेकै तरो । अब बहुकुटिल भरो १

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे नाथ ! तुम कैसे मुक्त होउगे गोरख-नाथ रहे तेतो योगऊ करतरहे अबतो योग को नामई रहिगयो मुद्रा पहिरिलियो वेष बनाइ लियो कपरा रँगिकै अरु नाना प्रकार के मन्त्रते भैरवभूत को बशिकैकै सिद्धि देखावन लगे लोगन को ठगनलगे कोई महन्त बनि बैठे कोई राजकाज करनलगे कोई राजा के गुरु ह्वै बैठे सो अब तुम बहुत कुटिलता ते भरे हौ ॥१॥

कैसीतेरीसेवापूजाकैसोतेरोध्यान।ऊपरउजरदेखोबकअनुमान २

तिहारी सेवा पूजा ध्यान करिबो कैसो है कि ऊपर ते तो यह जानि परै है बड़े पुजेरी हैं बड़े ध्यानी हैं बड़े योगी हैं और भीतर कपटते भरे हैं जैसे बक ऊपरते उज्ज्वल रहै है और भीतर कुटि-लई ते भरे मछरी धरन को ताके रहै है तैसे भीतर बासना भरी है काहूको धन पावै तो लैलेइ काहूके लरिका को देखै तो मूड़ि लेइ काहू राजा को ठगि जागा पावै तो लैलेइ जाते हमारी महन्ती चलै ॥ २ ॥

भावतो भुवंगदेखो अतिबिबिचारी।
सुरतिशचानदेखो मतितो मञ्जारी ३

भाव करिकै तौ भुवंग है जाको सांप धरैहै ताको बिष चढ़ैहै मरि जायहै तैसे जो इनको संग करैहैं ताहू के इनके मत को बिष चढ़िजाइ है इनके मतन म चल्यो सो मारो पर्‌यो अरु वे बड़े बिबिचारी होत हैं शास्त्र के मतते जो कर्म हैं ताको छोड़ाइ ही देइ हैं अरु परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र को जानते नहीं हैं जाते उद्धार ह्वै जाइ सो कर्मकाण्डी तो भला कछु स्वर्ग को सुख पाइ कै संसार में परै हैं ये सीधे नरकही को चले जाइ हैं सो इनकी सुरति श्चान ह्वै रही है जैसे श्चान खोजत फिरै है कि जो कौन्यो जीव को पाऊँ तौ धरिलेउँ अरु उनकी मति जो है दुर्मति सो मञ्जारी ह्वै रही है जैसे मञ्जारी खोजत फिरै है कि जो काहू मूसको पाऊँ तौ धरिलेउँ तैसे येऊ खोजत बागै हैं कि काहू को पावैं तौ चेला करिलेइँ और धन लै लेइँ जैसे आप नरक में जाय हैं तैसे चेलौ को नरक में डारै हैं ॥ ३ ॥

अतितौबिरोधीदेखोअतिरदेवाना।छौदर्शनदेखोभेषलपटाना४
कहै कबीर सुनौ नरबन्दा। डाइनि डिम्भपरेसबफन्दा ५

योगी, जङ्गम, सेवरा, संन्यासी, दरवेश, ब्राह्मण तिनसों अति बिरोध करै हैं अरु अपने मत में अति देवाने ह्वै रहे हैं अर्थात् वही पाखण्ड मत को सब ते अधिक मानै हैं सो याही भांति छइउ दर्शन में देखै हैं कि भेष सब में लपटान्यो है कुछ सार पदार्थ नहीं जानै हैं भेष बनाइ लियो योगी जङ्गम सेवरा-दिक कहावन लगे ४ श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे नर! तैंतो परम-पुरुष पर श्रीरामचन्द्र को बन्दा है सो उनको तो ये षट्दर्शन-वारे जानै नहीं हैं आपने आपने मत में डिम्भ किये हैं कि हमारई मत ठीक है और मत झूठे हैं ॥ ५ ॥

इति एकसैचार शब्द समाप्तम् ॥ १०४ ॥

अथ एकसै पांच शब्द ॥ १०५ ॥

यह भ्रमभूत सकल जग खाया । जिन जिन पूजा तिन जहड़ाया १ अण्डनपिण्ड प्राण नहिं देहा । काटि काटि जिय केतिक येहा २ बकरी मुर्गी कीन्हो छेहा । अगिलजन्मउन्ह अवसर लेहा ३ कहै कबीर सुनो नरलोई । भुतवा के पूजे भुतवै होई ॥ ४ ॥

यहभ्रमभूतसकलजगखाया॥जिनजिनपूजातिनजहड़ाया १
अण्डनपिण्डप्राणनहिंदेहा॥काटिकाटिजियकेतिकयेहा २
बकरीमुर्गीकीन्होछेहा । अगिलजन्मउन्ह अवसर लेहा ३
कहै कबीर सुनो नर लोई । भुतवा के पूजे भुतवै होई ४

दुलहा, देव, भैरव, भवानी, ग्रामदेवता ई सब भ्रम हैं ई सब जगत् को खायेलेइ हैं जिन जिन इनको पूजा है तिनको तिनको जहड़ाइबो कहे वह कालदेइ है १ येई देय तिनके ना अण्ड है ना पिण्ड है इनको अनेक जीव काटि काटि दियो सो काह जानि कै दियो तुमको बैकलाइ डारैंगे फल ना देइँगे २ बकरी मुर्गी दैकै जो तुम इनको पूजा कीन्हों सोई आगिले जन्म तुम्हारो गर काटैंगे ३ सो श्रीकबीरजी कहैहैं हे लोगो ! तुम सुनौ ये भूतनको जो तुम पूजौगे तौ तुमहूँ भूत होउगे भूतके पूजेते भूत होइहै तामें प्रमाण "यान्ति देवव्रता देवान् पितॄन् यान्ति पितृव्रताः। भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोपि माम्" (इति गीतायाम्) ॥ ४ ॥

इति एकसै पांच शब्द समाप्तम् ॥ १०५ ॥

अथ एकसै छः शब्द ॥ १०६ ॥

भवँर उड़े बक बैठे आय । रैनि गई दिवसौ चलिजाय १ हल हल कांपै बालाजीव । नाजानै काकरिहै पीव २ कच्चे बासन टिकै न पानी । उड़िगो हंस काय कुम्हिलानी ३ काग उड़ावत भुजा पिरानी । कह कबीर यह कथा सिरानी ॥ ४ ॥

भवँर उड़े बक बैठेआय । रैनि गई दिवसौ चलिजाय १

हलहल कांपै बालाजीव । ना जानै का करिहै पीव २

यह जगत् में यह दशा ह्वैगई कि भवँर जे हैं रसिक सन्त जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र के प्रेम में छकेरहे हैं ते उड़िगये कहे उठिगये अरु बक जेहैं गुरुवालोग ते बैठे आय जैसे बकुला मछरी खाय है तैसे ठगि ठगिकै जीवको स्वस्वरूप खाइलेइहै कहे भुलाइ देइहै वही ब्रह्म में लगाइकै १ सो यह जीव तो बाला स्त्री कहे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र की चितृशक्ति है सो ब्रह्मधोखा में लगिकै हल हल कांपै है अर्थात् मैं आपने स्वामी को भुलायकै धोखाब्रह्म में लग्यो सो हाथ न लग्यो सो नाजानौं खफ़ा ह्वैकै मेरे पीउ कहे स्वामी अब कहा करैंगे ॥ २ ॥

कच्चेबासन टिकै न पानी । उड़िगोहंसकायकुम्हिलानी ३
कागउड़ावतभुजापिरानी । कहकबीरयहकथा सिरानी ४

सो उमिरि तो वह ब्रह्म में व्यतीत कै दियो और हाथ कुछ न लग्यो तब यह बिचार्‌यो कि मैं अपने स्वामी जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनमें लगौं सो जैसे कच्चे बासन में पानी धरिदेइ तो बासन कच्चा बिगासि जाय है तैसे यह शरीर तो रहै नहीं है जब हंस उड़िगयो शरीर कुम्हिलाइ गयो कहे छूटिगयो भाव यह है तब पछितावई हाथ रहिजाय है ३ श्रीकबीरजी कहैहैं कि जैसे नारी अपने पति के आइबे को भुजा ते काग उड़ावै है जब पति नहीं आवै है तब भुजाको पिरावई रहिजाइ है तैसे ब्रह्मह्वैबे के लिये उमिरि बिताइ दियो अहंब्रह्म अहंब्रह्म करत करत वह सब कथा सिराइ गई कहे जब जब ब्रह्म भये उनको ब्रह्म न मिल्यो तब मेहनतई हाथ रहिजाइ है जैसे बूसी के कांड़े कुछ हाथ नहीं लगै है मेहनतई हाथ रहिजाइ है तैसे इनको बिना परमपुरुष श्रीरामचन्द्र के जाने ब्रह्म ह्वै जाइबो बूसई कैसो कांड़िबो है उहां कुछ हाथ नहीं लगै है तामें प्रमाण "श्रेयःश्रुतिं भक्तिमुदस्य ते विभो क्लिश्यन्ति ये केवलबोधलब्धये । तेषामसौ

क्लेशल एव शिष्यते नान्यद्यथा स्थूलतुषावघातिनाम् १ (इति भागवते) ॥ ४ ॥

इति एकसैछः शब्द समाप्तम् ॥ १०६ ॥

अथ एकसैसात शब्द ॥ १०७ ॥

खसम बिन तेलीके बैल भयो। बैठत नाहिं साधुकी संगति नाधे जन्मगयो १ बहि बहि मरै पचै निज स्वारथ यमके दण्डसह्यो। धन दारा सुत राजकाजहित माथेभारगह्यो २ खसमहिंछोड़ि विषयरँग माते पापके बीजबयो। झूंठमुक्ति नल आशजिवनकी प्रेतको जूंठ खयो ३ लखचौरासी जीवयोनिमें सायर जात बह्यो। कहै कबीर सुनो हो सन्तो श्वान कि पूंछ गह्यो ॥ ४ ॥

खसम बिन तेली के बैल भयो ॥

बैठत नाहिं साधु की संगति, नाधे जन्म गयो १

बहि बहि मरै पचै निज स्वारथ, यम के दण्ड सह्यो ॥

धन दारा सुत राज काजहित, माथे भार गह्यो २

श्रीकबीरजी जीव को उपदेश करै हैं हे जीव! तेरे मालिक जे रामचन्द्र हैं तिनहीं बिना तैं तेली को बैल भयो जे साधु तेरो स्वरूप बताइदेइँ ऐसे साधुन की संगति में कबौ नहीं बैठे तेली के बैल की नाईं नाधे नाधे जन्म व्यतीत भयो जन्मतै मरत रह्यो १ जब कांधे जुवां नाधि जाय है तब निज तेली के निमित्त ढोइ ढोइ मरै है जो ना रेंगैं तो तेली डण्डा मारै है तैसे यह जीव धन, दारा, सुत, राज काज के हित नाना कर्म करै है इन्द्रिय-सुख लिये बहि बहि कहे नाना कर्मन को भारा ढोइ ढोइ कै पचै है अरु अन्त में यमदण्ड मारै हैं सो सहौ हौ याही रीति जन्म जन्म यमदण्ड सहौ हौ ॥ २ ॥

खसमहि छोड़ि विषय रँग माते, पाप के बीज बयो ॥

झूंठ मुक्ति नल आश जिवन की, प्रेत को जूंठ खयो ३

खसम जे साहब तिनको त्यागि विषयरङ्ग में मात्यो और पापको बीज बोवत भयो अर्थात् जो नारी आपने खसम को छोड़ि और पुरुष में लगैहै तो वाको बड़ो पाप होय है सो तैं खसम को छोड़िकै नाना देवतन की उपासना में लगिजात भयो मति गयो सो तैं महापाप के बीज बोयो और नरन को ज्यावनवारी जो मुक्ति की जो हमको उपास्य देवता प्राप्त होयँगे तौ हम जीतै रहैंगे हमारो जनन मरण न होयगो सो वह मुक्ति झूंठी है जौने शरीर ते उनके लोक को जायगो सो तन नाश ह्वै जाइगो जब फेरि सृष्टि समय होइगो तबवोई देवनकेसाथ फिरि आवैगो जनन मरण न छूटैगो सो ऐसी झूंठीमुक्ति के वास्ते तैं प्रेतन को जूठ खाय है कहे भैरवभूत आदि कन के बलिदान खाय है उनके दिये तपौना शराब पियै है ॥ ३ ॥

लखचौरासी जीवयोनि में, सायर जात बह्यो ॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, श्वान कि पूंछ गह्यो ४

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो, जीवो ! सुनो तुम परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र हैं ते तुम्हारे रक्षक संसारसागर ते पार कैदेनवारे जहाज़ तिनको छोड़ि श्वान जे हैं ई सब क्षुद्रदेवता तिनकी पूंछ गहे चौरासी लक्षयोनि समुद्र संसार में बह्यो जाय है सो श्वानकी पूंछ गहेते कैसे संसारसमुद्र ते पारजाउगे ॥ ४ ॥

इति एकसैसात शब्द समाप्तम् ॥ १०७ ॥

अथ एकसैआठ शब्द ॥ १०८ ॥

अबहमभयलबहिरजलमीना । पुरबजन्म तप का मदकीना १ तबमैंअक्षलोमनबरागी । तजलो कुटुम्बरामरटलागी २ तजलो काशीभैमतिभोरी । प्राणनाथकहुकागतिमोरी ३ हमचलिगैल तुम्हारेशरणा । कतहुंनदेखोहरिकोचरणा ४ हमहिंकुसेवकतुमहिं अयाना । दुइमहँदोषकाहिभगवाना ५ हमचलिगैल तुम्हारेपासा । दासकबिरभलकैलनिरासा ॥ ६ ॥

अबहमभयलबाहिरजलमीना । पुरबजन्मतपकामदकीना १
तबमैंअछलो मनबैरागी । तजलोकुटुम्बरामरटलागी २

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जब मैं साहब के पास गयो तब यह बिनती कियो कि तब तो संसार के जल के मीन रहे अब जबते हम संसार के बहिरे तिहारे प्रेमजल के मीन भये प्रथम हम पूर्वजन्म में पञ्चाङ्गोपासना तपस्या बहुत करी पुनि जब जन्म लियो तब हमको पूर्वजन्मकी सुधि बनीरही वह तपस्या को मद कहे अहंकार हमको बहुतरहै सो वह तपस्या के प्रभावते १ तब हमको अच्छो मनमें वैराग्य रहै रघुनाथजी में भक्ति भई तब कुटुम्ब को छोड़िकै रामराम रट लगावतभयो ॥ २ ॥

तजलोकाशी भैमतिभोरी । प्राणनाथ कहुकागतिमोरी ३

तब प्राणनाथ मैं काशी छोड़िदियो और मेरी मति भोरी भई कहे पूर्वजन्म के तप के मद ते निर्गुण रसरूपा भक्ति मोको न होत भई केवल ज्ञाने करिकै रामनामकी रटनि लगाइकै बिचरत भयो कि मिलिही जायँगे तब हे प्राणनाथ ! मेरी कहा गति होत भई सो कहौं हौं ॥ ३ ॥

हमचालिगैलतुम्हारेशरणा । कतहुँनदेखोहरिकोचरणा ४
हमहिंकुसेवकतुमहिंअयाना । दुइमहँदोषकाहिभगवाना ५

हम तुम्हारे शरण तो चलिगये कहे तुम्हारे नाम में रट लगावत भयो पै तुम्हारे चरणन को न देखत भयो अर्थात् दर्शन न पायो ४ सो हे भगवन्, षट्ऐश्वर्य संपन्न ! धौं हमहीं कुसेवक रहे जो तिहारो दर्शन न पायो धौं तुमहीं अयानरहे हमको न जानतरहे जो हमको नहीं मिले दुइमें काको दोष है ॥ ५ ॥

हमचालिगैलतुम्हारेपासा । दासकबीरभलकैलनिरासा६

अब दासकबीर जो मैं हौं ताको भलीभांति ते जब निराश करिदियो कि कौनिउ भांति की जब आश न रहिगई न ज्ञान करिकै न योगकरिकै न भक्ति करिकै केवल सुधारसरूपा निर्गुण

भक्ति जब मोको दियो तब हम तुम्हारे पास चलि आये याते कबीरजी या देखायो कि जब सब बातते निराश ह्वै जाय हैं तब साहब के पास जाइ हैं ॥ ६ ॥

इति एकसैआठ शब्द समाप्तम् ॥ १०८ ॥

अथ एकसैनव शब्द ॥ १०९ ॥

लोग बोलै दुरिगये कबीरा । या मत कोइ कोइ जानैं धीरा १ दशरथसुत तिहुंलोकहि जाना । रामनाम को मर्मैं आना २ जेहि जिय जानिपरा जस लेखा । रजु को कहै उरग को पेखा ३ यद्यपि फल उत्तम गुण जाना । हरिहि त्यागि मनमुक्ति न माना ४ हरि अधार जस मीनहि नीरा । और यतन कछु कहहिं कबीरा ॥ ५ ॥

लोगबोलै दुरि गये कबीरा । या मतकोइकोइजानैंधीरा १

श्रीकबीरजी कहै हैं कि सब लोग बोलै हैं कि कबीर बहुत दूरि गये बहुत पहुँचे हैं सो या मत कोई कोई जे धीरे धीरे साधन में कियनमें समुझन में अभ्यासकरै हैं सो जानै हैं कौन मत सो आगे कहै हैं ॥ १ ॥

दशरथसुत तिहुँलोकहिजाना । रामनामकोमर्मैंआना २

सो दशरथसुत को तो तीनों लोक जानैहै पै रामनाम को मर्म कोऊ कोऊ जानै है अर्थात् कबहूं दशरथसुत कबहूं नारायण कबहूं व्यापक ब्रह्मही अवतार लेइ हैं नित्य साकेत बिहारी परम पुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र हैं जिनके नाम ते ब्रह्म ईश्वर वेद शास्त्र सब निकसैहैं तौने रामनाम को तौ मर्मैं आन है ॥ २ ॥

जेहिजियजानिपराजसलेखा । रजुकोकहैउरगकोपेखा ३
यद्यपिफलउत्तमगुणजाना । हरिहित्यागिमन मुक्ति न माना ४

जाको यह रामनाम जैसो जानि पर्‍यो है सो तैसे लख्यो है कोई रघुनाथजी को दशरथ के पुत्रै मानै है कोई नारायण को अवतार मानै है कोई ब्रह्म को अवतार मानै है तिनही को नाम

रामनाम मानै है सो जैसे रसरी को उरग कहै हैं विना समुझे ऐसे रामनाम जो साहब को है सो भ्रम छोड़िके बिचारै तो साहिबै को बोध करै हैं ३ सो यद्यपि उत्तम गुणजानेके फल होय है कि विष्णुलोक प्राप्त भये परन्तु परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र तिनके प्राप्त भये विना हम मुक्ति नहीं मानै हैं ॥ ४ ॥

हरिअधारजसमीनहिनीरा। औरयननकछुकहैकबीरा ५

सो जैसे मीन को आधार अम्बु है विना जल मीन नहीं रहि सकै है तैसे श्रीरामचन्द्र सबके आधार हैं सो तिनहीं को जो आधार मानै तौ जैसे मीन सर्वत्र जलही देखैहै द्विभुजरूप श्रीरामचन्द्र को सर्वत्र देखै और उनहीं में रहै तो श्रीकबीरजी कहै हैं कि और यतन सब थोरई है तामें प्रमाण श्रीगोसाईं जी को (दोहा) "सो अनन्य अस जाहि के, मति न टरै हनुमन्त। मैं सेवक सचराचर रूपराशि भगवन्त १" (तामें प्रमाण कबीरजी को) " नैनन आगे ख्याल घनेरा। अरध उरध बिच लगन लगी है, क्या संध्या क्या रैनि सबेरा। जेहि कारण जग भरमत डोलै, सो साहब घटलिया बसेरा। पूरि रह्यो असमान धरणिमें, जित देखो तित साहब मेरा। तसबी एक दियो मेरे साहब, कहकबीर दिलहीबिच फेरा" ॥ ५ ॥

इति एकसैनव शब्द समाप्तम् ॥ १०९ ॥

अथ एकसैदश शब्द ॥ ११० ॥

अपनो कर्म न मेटो जाई। कर्मकलिखा मिटैधौंकैसे, जो युग कोटि सिराई १ गुरु बशिष्ठ मिलि लगन शोधाई, सूर्यमन्त्र यक दीन्हा। जो सीता रघुनाथ बिआही, पल यक संचन कीन्हा २ नारदमुनि को बदन छपायो, कीन्ह्यो कपिसों रूपा। शिशुपालहु, के भुजा उपारे, आपुनबौधस्वरूपा ३ तीनिलोक के करता कहिये, बालिबध्योबरियाई। एकसमयऐसीबनिआई, उनहूंअवसरपाई ४ पार्वतीको बांझ न कहिये, ईश न कहिय भिखारी। कहै कबीर करता की बातैं, कर्मकी बात निनारी ॥ ५ ॥

अपनो कर्म न मेटो जाई । कर्मकलिखामिटैधौंकैसे, जो युगकोटिसिराई १ गुरुबशिष्ठमिलिलगनशोधाई, सूर्य-मन्त्रयकदीन्हा । जो सीतारघुनाथबिआही, पलयकसंचनकीन्हा २ नारदमुनिको बदन छपायो, कीन्ह्योकपिसों रूपा । शिशुपालहुकेभुजाउपारे, आपुनबौध स्वरूपा ३ तीनिलोककेकरताकहिये बालिबध्योबरियाई । एकसमय ऐसीबनिआई, उनहूं अवसर पाई ४ पार्वतीकोबांझ न कहिये, ईश न कहियभिखारी । कहकबीरकरताकीबातैं, कर्मकी बात निनारी ॥ ५ ॥

श्रीमन्नारायण वैकुण्ठ ते केतन्यो अवतार लियो तेऊ कर्म की मर्यादा राखिबोई कियो सो जे साहब उत्पत्ति पालन संहार करै हैं तेतो कर्मकी मर्यादा राखिबोई कियो और की कहां गति है सो विना परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र के नाम लिये कर्मकी गति काहू की मेटी नहीं मेटिजाइहै श्रीरामनाम ते कर्मकी गति मिटिजाइ है साहब मेटिदेइहैं तामें दोऊ प्रमाण "रामनाममणि बिषय व्याल के । मेटतकठिनकुअङ्कभालके" ॥ १ ॥ "सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज । अहंत्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः" (इति गीतायाम्) "सकृदेवप्रपन्नाय तवास्मीति च याचत । अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतं मम" (इति रामायणे) और कबीरजी को प्रमाण "पहिले बुरा कमाइकै, बांधीबिषकैमोट । कोटिकर्मभिटपलकमें, आवैहरिकी ओट" और या पद को अर्थ स्पष्टै है ॥ १ । ५ ॥

इति एकसैदश शब्द समाप्तम् ॥ ११० ॥

अथ एकसैग्यारह शब्द ॥ १११ ॥

है कोई पण्डित गुरुज्ञानी उलटि वेदको बूझै । पानी में पावक

जरै अन्धे आंखी सूझै १ गैया तो नाहर को खायो हरिना खायो चीता। कागालगरैफांदिकैबटेरनबाजजीता २ मूसातो मञारै खायो स्यारै खायो श्वाना। आदिको उपदेशजानै तासु बेसै बाना ३ एकै तो दादुरसोखायो पांचौजेभुवंगा। कहै कबीर पुकारिकै हैं दोऊयकसंगा ॥ ४ ॥

हे कोई गुरुज्ञानीपण्डित, उलटिवेदकोबूझै ॥
पानी में पावक जरै, अन्धे आंखी सूझै १

ऐसो गुरुज्ञानी पण्डित कोई नहीं है जो उलटिकै वेदको अर्थ बूझै अर्थात् गायत्री ते वेद भयो है प्रणव ते गायत्री भई है प्रणव रामनाम ते उत्पत्ति भयो है सो कहै हैं पानी जो है बानी तामें पावक बरै है कहे ब्रह्माग्नि बीज रामनाम है सो सर्वत्र पूर्ण है सो अन्धे के आंखी में कैसे सूझै उलटिकै वेद को बूझै तो जानै कि सबको मूल रामनामई है ॥ १ ॥

गैयातोनाहरकोखायो, हरिनाखायोचीता ॥
कागालगरै फांदिकै, बटेरन बाज जीता २

गैया जो गायत्री तौनेके नाना अर्थ करि कहीं सूर्य में लगावैहै कहीं ब्रह्म में लगावै है सोई अर्थ जो गैया सो सांच गायत्री को तात्पर्यार्थ साहब तिनको ज्ञान जो नाहर ताको खाय लियो और हरिना जो अद्वैतज्ञानकी हरि नहीं है प्रणव को अर्थ कियो कि जीव नहीं है एक ब्रह्मही है सो मैं हौं या जो हरिना सो साहब को ज्ञान जो चीता ताको खाय लियो चीता साहब के ज्ञानको काहेते कह्यो कि जब साहब को ज्ञान होइहै तब अद्वैतज्ञान नहीं रहिजाय है और काग जो अज्ञान सो साहब को ज्ञान जो लगर शिकारी पक्षी कागा को खानवारो ताको कागा खाय लियो और असत् शास्त्र के अनेक प्रकार के जे अर्थ तेई हैं बटेर ते सत्शास्त्र जे साहबके बतावनवारे तेई हैं बाज ताको जीतिलियो अर्थात् तामसी जे हैं ते तामसशास्त्र को प्रचार करि सत्शास्त्रको लोप करि दियो ॥ २ ॥

मूसा तो मञ्जारै खायो, स्यारै खायो श्वाना ॥
आदि को उपदेश जानै, तासु बेसै बाना ३
एकै तो दादुर सो खायो, पांचौ जे भूवंगा ॥
कहै कबीर पुकारिकै, हैं दोऊ यकसंगा ४

मूसा जो है बितण्डाबाद सो साहब को उपदेश जो मञ्जार ताको खायलियो और स्यार जो माया सो जीवके स्वरूप ज्ञानते जो होइ है श्वान भवानन्द सोई है श्वान ताको खायलियो सो कबीरजी कहैहैं जो कोई आदिको उपदेश जो है रामनाम जानै ताहीको बेसबाना है और सब पाखण्डई है ३ एकही दादुर जो मन सो दादुर के खायलेनवारो पांच भुवंग जे रति नेष्ठाभाव प्रेमरस ते ताको खाय लियो सोई एक एक के बिरोधी रहे तिनको खाइ लीन्हे सो कबीरजी कहै हैं जीव साहब एकैसंग के हैं आपने स्वरूप को न समुझ्यो या न बिचार्यो कि मैं साहब को हौं ताते संसारी ह्वैगयो है जो साहब मुख अर्थ बिचारतो तौ एकही संगको है ॥ ४ ॥

इति एकसैग्यारह शब्द समाप्तम् ॥ १११ ॥

अथ एकसैबारह शब्द ॥ ११२ ॥

झगरा एक बढ़ो जिय जान । जो निरुवारै सो निरबान १ ब्रह्म बड़ाकी जहँते आया । वेदबड़ाकी जिन उपजाया २ इहमनबड़ा की जेहिमनमाना । रामबड़ा की रामहिं जाना ३ भ्रमि भ्रमि कबिरा फिरै उदास । तीर्थ बड़ा की तीर्थकदास ॥ ४ ॥

झगराएक बढ़ो जियजान । जोनिरुवारै सो निरबान १
ब्रह्म बड़ा की जहँते आया । वेदबड़ाकीजिनउपजाया २
इहमनबड़ाकीजेहिमनमाना । रामबड़ाकीरामहिंजाना ३
भ्रमि भ्रमिकबिराफिरैउदास । तीर्थबड़ाकीतीर्थकदास ४

हे जीवौ ! यह झगड़ा बढ़ो है ताको बिचारकरो जो कोई यह

झगड़ा निरुवारे सोई निर्वाण कहे मुक्त है सो कहैहैं भला जौन ब्रह्मजीव आपने मनते अनुभव करि लियो है सो बड़ा है कि जहांते जीव आयोहै लोकप्रकाश ते सो बड़ो है सो ब्रह्म बड़ा नहीं है वा लोकप्रकाश बड़ा है जहांते जीव आयो है और जौने वेद की आज्ञाते नाना ईश्वर मानिलियो है सो बड़ा है कि रामनामते वेद उपजाहै सो बड़ा है अर्थात् रामनाम बड़ा है जाते वेद भयोहै और मन बड़ाहै कि जाको मन आपने ते बड़ा मान्यो है सो बड़ा है अर्थात् जो मन वचन के परेहै सोई बड़ो है जाको मन मान्यो है और श्रीरामचन्द्र काहूको उपदेश करे नहीं आवैं श्रीरामचन्द्रके जाननवारे राम को बतायकै जीवन को उपदेशके उद्धार कैदेइ हैं याते रामदास बड़े हैं और तीर्थ बड़ो कि जे तीर्थको विधिसहित न्हाइहैं ते बड़े अर्थात् जे तीर्थकेदास बनेहैं ते बड़ेहैं सो हे काया के बीरौ, जीवौ ! भ्रमि भ्रमि काहेको उदास फिरौ हौ या बात को बिचारौ ॥ १ ॥ ४ ॥

इति एकसैबारह शब्द समाप्तम् ॥ ११२ ॥

अथ एकसैतेरह शब्द ॥ ११३ ॥

झूठे जनि पतिआहुहो सुन सन्त सुजाना । घटहीमेंठगपूरहै मति खोउअयाना १ झूठेका मण्डानहै धरती असमाना । दशौ दिशाजेहि फन्दहै जिउघेरेआना २ योग यज्ञ जप संयमा तीरथ ब्रतदाना । नवधा वेद किताब है झूठेका बाना ३ काहूको शब्दै फुरै काहूकर माती । मान बड़ाई लैरहै हिन्दू तुरुक दुजाती ४ बात कथै असमान की मुद्दति नियरानी । बहुत खुदीदिल राखते बूड़े बिन पानी ५ कहै कबीर कासों कहौं सिगरो जगअन्धा । सांचेसों भाजे फिरैं झूंठेसों बन्धा ॥ ६ ॥

झूठेजनि पतिआहु हो, सुनसन्तसुजाना । घटही में ठगपूर है, मतिखोउ अयाना १ झूठेकामण्डानहै, धरती असमाना। दशौदिशाजेहिफन्दहै, जियघेरेआना २ योग

यज्ञजपसंयमा, तीरथ व्रत दाना । नवधावेदकिताबहै, झूठेकाबाना ३ काहूकोशब्देफुरै, काहूकरमाती । मान बड़ाईबलैरहै, हिन्दू तुरुकदुजाती ॥ ४ ॥

हे सन्त सुजान ! जो तुम सुजान होउ तौ वा झूठे सो न पतिआहु मेरी बात सुनो वह ठग जो है तिहारो अनुभव धोखाब्रह्म सो तेरे घटही में है धोखा में परि आपनो स्वरूप जो साहब को दास ताको मति खोउ १ धरती में कहे नीचेके लोकन में और असमान में कहे ऊपर के लोकन में वही झूठ ब्रह्म का मण्डान है और दशौदिशा जे हैं छः शास्त्र और चारि वेद तिनमें वहीको फन्द है वही के फन्दते इनको जो है यथार्थ अर्थ सो कोई नहीं जानै है जीउको आनिकै घेरि लियो है अर्थात् शास्त्रन वेदन में अर्थ बदलि बदलि वही झूठे ब्रह्मको उपदेश कैकै गुरुवा लोग भुलाइदियो है सब में वही धोखही ब्रह्म देखावैहै २ योग यज्ञ जप संयम तीर्थव्रत दान नवधासगुण भक्ति और वेद किताब इन सब में झूठे कहे वही धोखाब्रह्म का बाना कहे बिरदावली गुरुवालोग सबकी मनावे हैं कि या साधनकीन्हे अन्तःकरण शुद्ध होय है तब ब्रह्मको प्राप्त होइ है ३ और काहूको शब्दै फुरै है कहे वेद शास्त्र किताब कुरान पढ़िकै उन को अर्थ बदलि बदलिकै शास्त्रार्थ करिकै और को हरावै है उनहीं को हिन्दू तुरुक दूनों जाति मानबड़ाई करै हैं और कोई मान बड़ाई लैरहै हैं पण्डित मोलवीलोग और कोई जे बैरागी हैं संन्यासी हैं फ़क़ीर हैं औलिया हैं ते काहूको बेटा दियो काहूको जागा दियो कहूं जलमें हीठिगयो कहूं आकाश ते उड़िगये कहूं दश पांच वर्ष कोठरी चुनाइकै आये कहूं भूत भविष्य वर्तमान जानि लियो इत्यादिक नाना प्रकार की करामात देखाइकै हिन्दू तुरुक दूनों दीनन सों मान बड़ाई लैकै रहै हैं ॥ ४ ॥

बातकथै असमानकी, मुद्दतिनियरानी ॥
बहुतखुदीदिलराखते, बूड़े बिन पानी ५

और परमपुरुष श्रीरामचन्द्र अल्लाह साकेत जाहूत के रहनवारे तिनको तो जानै नहीं हैं आसमान जो है शून्य धोखाब्रह्म तौनेकी बातैं कथै हैं कि हमहीं ब्रह्म हैं और हमहीं बेचन बेचिगून बेनुवा बेनिमून हैं और उनके जिन्दगीकी मुद्दति नियरेही है केतनो यहै कथत कथत मरिगये केतो मरेंगे केतो मरेजायहैं यह नहीं बिचारै हैं कि जो खुदा होते ब्रह्म होते तो मरि कैसे जाते सो बहुत खुदी दिलमें राखते हैं कि खुदखाविंद हमही हैं और जो बहुत खुबी पाठ होइ तो यह अर्थ कि हमहीं सबते खूब कहे अच्छेहैं पै बिना पानी भूरहीमें बूड़िगये अर्थात् मरिहीगये वह जो ब्रह्म खुदाको ज्ञानकियो कि हमहीं हैं सो ज्ञान भूरही ठहर्यो वामें कुछु रस न ठहर्यो मरत में वह रक्षा तनकऊ न कियो जो कहो जे साहब खुदाको जानै हैं ते कब जियेहैं तेऊनो मरिहीजायहैं तो तुमहीं रामायणमें सुने होउगे कि जेतेभर प्रजाहैं जेतेभर भालु बांदर हैं तिनको श्रीरामचन्द्र सदेह आपने धामको लैगये और श्रीहनुमान्जी को बिभीषणको छोड़िगये ते अबलों बने हैं और काकभुशुण्डि, नारद, अगस्त्य, वशिष्ठजी रामोपासकहैं ते अबलों बनेहैं जो कहो अबके तो रामभक्त को मरत देखे हैं तौ जे साधनमें हैं और परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को नीकी भांति नहीं जानै हैं और श्रीरामचन्द्रकी प्राप्ति नहीं भई ते शरीर छोड़िकै वह लोकको क्रमतेजाइहैं शरीरछोड़िकै फिरअवतार लेइहैं पुनि ज्ञान होइ है तब जाइहैं और जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को अच्छी भांति जानिलियो है और तहांको प्राप्त होइ गये हैं तिनको शरीर छोड़िबो ऐसो कि यहां गुप्त ह्वैगये पुनि कहूं प्रकट ह्वैकै उपदेश करिकै जीवन को तार्यो वे साहब को प्राप्तई हैं जब चाहै हैं तब साहब के रहै हैं जब चाहै हैं तब प्रकट ह्वैकै जीवन को उपदेश करिकै तारै हैं सो श्रीकबीरजी प्रकटई देखाइ दियो कि काशीमें शरीर छोड़्यो मथुरा में उपदेश कियो और चारिउ युग उपदेश करतई हैं और मुसलमाननके अली शरीर छोड़्यो पुनि लौटि कै आय कै संदूक में आपनी लाश राखिकै ऊंट में लादिकै

लेगये सो द्वैपहार के बीच ह्वै निकसे जाइ सो वही में अटकाइ दियो सो अबलों वह संदूक अटकी है सो इन को चोला छांड़िबो यहि भांति को है जैसे सांप केचुरि छांड़ि देइ हैं ॥ ५ ॥

कहै कबीर कासों कहों सकलोजगअन्धा ॥
सांचे सों भाजे फिरैं झूंठे सों बन्धा ६

सो कबीरजी कहै हैं कि मैं कासों कहों सिगरो संसार आंधर ह्वै रह्यो है सांचे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र सर्वत्र पूर्ण हैं तिनसों भागो फिरे है उनको नहीं देखै है और झूठा जो है धोखाब्रह्म ताही में बँधिरह्यो है और यथार्थ अर्थ में चारयो वेद छइउशास्त्र तात्पर्य कै कै परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को वर्णन करै हैं सो मैं आपने सर्व सिद्धान्त में स्पष्ट करिकै लिखिदियो है ॥ ६ ॥

इति श्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुर
श्रीसीतारामचन्द्रकृपापात्राधिकारिविश्वनाथ
सिंहजूदेवकृततिलकशब्दसमाप्तम् ॥
इति ॥

अथ कहरा लिख्यते ॥

सहज ध्यान रहु सहज ध्यान रहु गुरुके बचन समाई हो । मेली सिष्टब्राचित राखो रहो दृष्टिलौलाईहो १ जो खुटकार बेगि नहिं लागो हृदय निवारहु कोऊहो । मुक्तिकी डोरि गांठि जनि खैंचो तब बांझीबड़रोहूहो २ मनुवै कहो रहै मनमारे खीझुवो खीझि न बोलैहो । मनुवो मीत मिताइ न छांड़ै कबहूं गांठि न खोलैहो ३ भूलो भोग मुक्ति जनि भूलो योग युक्ति तन साधो हो । जो यहि भांति करहु मतवारी तामतके चितबांधो हो ४ नहितो ठाकुर है अतिदारुण करिहै चालु कुचाली हो । बांधि मारिडारिसब लेहैंछुटी सब मतवाली हो ५ जबहीं सामत आइ पहूंचे पीठि सांट

भल टूटैहो। ठाढ़े लोग कुटुम्ब सब देखै कहे काहुकिन छूटैहो ६ एक तो अनिष्ट पाउंपरि बिनवै बिनती किये न मानैहो। अनचिन्ह रहे कियो न चिन्हारी सो कैसे पहिंचानैहो ७ लेइ बोलाय बात नहिं पूछै केवटगर्भतनबोलै हो। जेकरि गांठि सबल कछु नाहीं निराधार है डोलैहो ८ जिन्हसम युक्ति अगमनके राखिन घरणि मांझधर डेहरिहो। जेकरे हाथ पाउं कछु नाहीं धरणि लाग तनसेहरिहो ६ पेलनाअछत पेलि चलु बौरे तीर तीर कह टोवहुहो। उथले रहो परो जनि गहिरे मति हाथै के खोवहुहो १० तरकै घाम उपरकैभूभुरि छांह कतहुं नहिं पावहुहो। ऐसो जानि पसीजहु सीजहु कसन छतरिया छावहुहो ११ जो कछु खेलकियो सो कीयोबहुरिखेलकसहोईहो। सासु ननँद दोउ देत उलाटन रहहु लाज मुखगोईहो १२ गुरुभोढीलगोनभोलचपच कहा न मानेहुँ मोराहो। ताजी तुरुकी कबहुं न साजेहु चढ़यो काठ के घोरा हो १३ ताल झांझ भल बाजत आवै कहरा सब कोइ नाचैहो। जेहिरँगदुलहा ब्याहन आये तेहिरँग दुलहिन रांचैहो १४ नौका अछत खेवै नहिं जान्यो कैसे लागहु तीराहो। कहै कबीर राम रसमाते जोलहा दासकबीराहो ॥ १५ ॥

सहजध्यानरहु सहजध्यानरहु, गुरुके बचन समाईहो ॥
मेलीसिष्ट चराचित राखो, रहो दृष्टि लौ लाईहो १

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे जीव ! तैं गुरु के बचन में समाइ कै सहज ध्यान तैं करु गुरु के बचन जो आगे लिखि आये हैं कि सुरतिकमल में गुरु बैठे रकार मकार जपै हैं तामें समाइजाइ अर्थात् दलदलमें बाढ़िकै इक्कीसहजार छासै श्वास जे चलै हैं तिनमें तेतनेरामनामजपै कौनी रीतिते जपै तामें प्रमाण ॥ श्रीकबीरजी को पद ॥ शतौ योग अध्यातम सोई। एकै ब्रह्म सकल घट ब्यापै द्वितिया और न कोई ॥ प्रथम कमल जहँ ज्ञान चारिदल देव गणेशको बासा। ऋधि सिधि जाकी शक्ति उपासी जपते होत

प्रकासा॥षटदल कमल ब्रह्मको बासा साविन्री सँग सेवा। षट सहस्र जहँ जाप जपतहैं इन्द्रसहित सबदेवा॥ अष्टकमल जहँ हरिसँग लक्ष्मी तीजो सेवक पवना। षटसहस्रजहँ जाप जपत हैं मिटिगो आवागवना॥ द्वादश कमलमें शिवको बासा गिरिजा शक्ती सारँग। षटसहस्र जहँ जाप जपत हैं ज्ञान सुरतिलैपारँग॥ षोडशकमलमें जीवको बासा शक्तिअविद्याजानै। एकसहस जहँ जाप जपत हैं ऐसाभेदबखानै॥ भवँरगुफा जहँ दुइ दल कमला परमहंसकर बासा। एकसहस जाके जाप जपतहैं करम भरमको नासा॥ सहस कमल में झिलमिलदर्शो आपुइ बसत अपारा। ज्योतिस्वरूप सकल जगव्यापी अक्षय पुरुष है प्यारा॥ सुरति कमल परसत गुरु बोलै सहजजापजपसोई। छासै एकइस सहस हि जपिले बूझै अजपा कोई। यही ज्ञानको कोई बूझै भेद अगोचर भाई। जो बूझै सो मनकापेखै कहकबीर समुझाई १ और यही राम नाम मन बचनके परे है सो आगे कहि आये हैं और सब मनके भितैरहै यही राम नाम सबके ऊपर है ताहीमें मतौ तबहीं पारैजाउगे व मेलीसिष्ट कहे सिष्ट जो संसार ताको मेलिदेउ कहे छोड़िदेउ और चराचितराखौ कहे सहजसमाधि आगे कहिआयेहैं ताको चरचितराखौ कहै वही जानतरहो अथवा वाहीमें जो आपने चितको चराकहे चलतराखौ दलदल में चलत रहै और वही में आपने दृष्टिकी लौ लगाय राखौ कहे ज्ञानदृष्टिते साहब को रूप देखतरहौ और ऊपरकी दृष्टिको नासाग्र में लगाय राखौ सो सांसके निकसतमें रकारके पैठत में मकार को निशि-दिन जपतरहौ सुरति याही में लगायराखौ या जीव सदाको श्रीरामचन्द्रहीको है सदा सांस सांसप्रति रामनामको जपत रहै हैं तामें प्रमाण "रकारेणबाहिर्याति मकारेणविशेत्पुनः। रामरामेति वै मन्त्रं जीवोजपति सर्वदा" रकारकरिकै अग्निको पवनको संयोग होइ है तहांते नाद उठैहै अरु अकार करिकै शब्द होइ है और मकार करिकै वाक्यहोइहै यहमें सुरति लगाइराखै यही परम

अजपा है तामें प्रमाण " रकाराज्जायते वायू रकाराच्छब्द उच्यते । वक्तित्वं च मकारेण रामएवेति वै श्रुतिः" दूसरो कबीर को पद ॥ जागुरे जिव जागुरे अब क्या सोवै जिय जागुरे । चोरनको डर बहुतरहतहै उठि उठि पहरे लागुरे । ररो करि खोलुममोकर भीतर ज्ञान रतन करिखागुरे । ऐसे जो अजरायल मारै मस्तकी आवैभागुरे । ऐसीजागनिजोकोईजागै ताहरिदेइसोहागुरे । कह कबीरजागोईचहिये क्यागिरहीबैरागुरे २ सो या जीव आपनो स्वरूप भूलिगयो ॥ १ ॥

जो खुटकार बेगि नहिं लागौ, हृदय नेवारहु कोहूहो ॥
मुक्ति कि डोरिगांठिजनिखैंचौ, तब बांझीबड़रोहूहो ३

और हृदयते काम क्रोधादिकनको निवारण कीन्ह्यो संयम नियमादिक करिकै और मनमायाके खूट करनवारे ऐसेजे साहब तिनमें बेगि जो न लग्यो मुक्तिकी डोरिकी गांठिकहे चित अचित की गांठि जनि खैंचौ कहे न छोर्यो तौ रोह जो मोह है सो तुमको बांझी कहे फँदाइलेइहै ॥ २ ॥

मनुवै कहौ रहै मनमारे, खिझुवाखीझि न बोलैहो ॥
मनुवोमीतमिताई न छोड़ै, कबहूं गांठि न खोलैहो ३

जाके मन मीत होय सो मनुवा कहावै है कैसे जैसे जाके धन होयहै सो धनिका कहावै है जाके धन नहीं होयहै सो निर्द्धनिया कहावैहै सो मन जीवते भयो है ताते मनुवा जो जीव है ताको कहौ आपनो मन मारेरहै खिझुवा जो काम क्रोधादिक मनके खिझावनवारे तिनकी ओर सपनहूं ना हेरै हे सन्तलोगो ! या बात की यतन करो काहेते मनुवा जो जीव है मनमीतकी मिताई न छोड़ैगो और कबहूं जड़चेतन की गांठि न खोलैगो ताते साहब को जानो जाते मनकी मिताई जीव छांड़ै ॥ ३ ॥

भूलौभोगमुक्तिजनिभूलौ, योगयुक्तितनसाधौहो ॥
जोयहिभांतिकरहुमतवारी, तामतकेचितबांधौहो४

सो हे साधो ! जीवनते कहो कि नानाबिषयके जे भोग हैं ताको भुलाइ देउ और मुक्ति को जनिभूलौ और जो सहज समाधिरूप योग प्रथम तुकमें कहिआयेहैं याकी युक्ति तनमें साधौ कहे करौ और नाना मतमें परिकै यहिभांति की मतवारी जो करौहौ कि आत्मै मालिक है हमहीं ब्रह्म हैं याही मनमें चितको बांधो हौ सो न बांधौ जो बांधोगे तौ ऐसो होयगो सो कहै हैं ॥ ४ ॥

नहिं तो ठाकुर है अतिदारुण, करिहै चालकुचालीहो ॥
बांधि मारि डारि सब लेहै, छूटी सब मतवाली हो ५

तौ तिहारे शरीरको ठाकुर जो मन है सो अतिदारुण है और याकी नीच गति है सो तिहारी चालकुचाली कैदेइगो कहे बिषयन में लगायकै संसारही ओर लगाय देयगो तौने संसार में जब तैं मरैगो तब तोको यमदूत बांधिकै पनहिनसों मारिकै डारिलेइगो कहे जो जो तैं कर्म करै है सो सबनरकनमें भुगताइ लेइगो तब सबमतवाली तेरी छूटि जायगी ॥ ५ ॥

तबहीं सामत आइ पहूंचे, पीठि सांट भल टूटै हो ॥
ठाढ़े लोग कुटुम्ब सब देखैं, कहे काहु किन छूटै हो ६

जब यमराजके सामत जे दूत ते जब पहुँचैंगे तब सांटसों भल पीटैंगे मारत मारत केतनो सांट टूटि जायँगे और कुटुम्बके लोग सबठाढ़े देखैंगे सो हे मूढ़ ! तैं या नहीं बिचारै है कि सबछूटै को पुकारै हैं काहूके कहे काहे नहीं छूटैहैं जे गुरुवालोग बताय कुमार्ग में लगायोहै ते यमदूतन से काहे नहीं छड़ाइ लेइहैं ॥ ६ ॥

यकतो अनिष्ट पांयपरि बिनवै, बिनती किये न मानै हो॥
अनचिन्हरहोकियोनचिन्हारी, सो कैसे पहिचानै हो ७

एक जे साहब हैं सबके रक्षक तिनते ये अनिष्टरहे कहे उनको इष्ट न मानत रहे और वहां यमदूतनसों पांय परि परि बिनवै है सब देवतनते बिनवैहै वे बिनतीहू किये नहीं मानै हैं काहेते कि दयाहीन हैं और साहब जे दयालु छड़ावनवारे तिनसों अनचिन्हार

रहे चिन्हारी न कियो सो कैसे अब पहिचानै भाव यह है कि जो अजहूं स्मरणकरो तौ साहब छुड़ाइही लेइगो ॥ ७ ॥

लेइ बुलाय बात नहिं पूछै, केवटगर्ब तन बोलै हो ॥
जेकरी गांठि सबल कछु नाहीं, निराधार ह्वै डोलै हो ८

और केवट जे गुरुवालोग हैं ते तब तो गर्ब कहे अहंकार तन में कैके तुमको बोलाय आपने मतमें बोलाय लीन्हेनि अब जब यमदूत मारनलगे तब तुमको बात नहीं पूछै हैं गुरुवालोग सो जाके सबल कहे खर्च राम नाम रह्यो सो पार भयो और जाके राम नाम सबल कछु नहीं रह्यो सो निराधार कहे रक्षक रहित यमपुरमें डोलै है अथवा निराधार जो ब्रह्म ताहीमें डोलै है ॥ ८ ॥

जिनसमयुक्तिअगमनकैराखिन,घरणिमांझघरडेहरिहो॥
जेकरे हाथ पाउँ कछु नाहीं, धरन लागु तन सेहरिहो ९

जाने स्त्री पुत्रादिकन ते आगेन नाना युक्ति कैकै पालन कियो है तौन घरणि कहे स्त्री शरीर छूटे डेहरी भरि जायहै आगे नहीं जायहै सम जो पाठ होय तौ जिनका अपने सम बनाय राखिन तौन स्त्री डेहरी लौं पहुँचाई धुनिते या आयो कि पुत्र चितालौं जायहै सो जेकरे हाथ पाउँ कछु नाहीं कहे जेकरे हाथ पाउँ नहीं है ऐसो जो जीवात्मा ताको जब यमदूत धरनलागु तब तन में सेहरि ह्वैआवै है तन विकल ह्वैजाइहै वे कोऊ नहीं सहाय करै हैं ताते साहब को जानो जो कहो यमदूते कैसे धरैंगे तो लिङ्ग-शरीरते ॥ ९ ॥

पेलनाअछतपेलिचलुबौरे, तीर तीर का टोवहुहो ॥
उथलेरहोपरोजनि गहिरे, मति हाथेकै खोवहुहो १०

सो कबीरजी कहैहैं कि पेलना जो रामनाम सो अछत बनैहै ताको संसारसमुद्र में पेलिकै हे जीव! संसारसमुद्र उतरिजा तीर तीर कहे नाना मतन को का टोवत फिरै है उथले में रहो अर्थात् साहब को ज्ञान कीन्हे रहो गहिर जो धोखाब्रह्म कठिन तामें

न जाउ वहाँ गये तुम्हार हाथहुको जीवत्व सो जात रहैगो ताते तुम न खोवौ उथले कहे साहब ज्ञान जानौ ॥ १० ॥

तरकै घाम उपरकै भूभुरि, छांह कतहुँ नहिं पावहु हो ॥
ऐसोजानिपसीजहुसीजहु, कसनछतरिया छावहु हो ११

तरको घाम कहे नाना कर्म जे नीकौ नागा किये ताकी जो ताप संसार में ऊपर की भूभुरि कहे नरकमें गये तौ वहाँ तपै है स्वर्ग में गये तौ गिरनकी भय बनी है काहूको अधिक ऐश्वर्य देख्यो तो ईर्षा बनी रहै है कि ऐसो कर्म हम न किये ये दोऊ तापमें साहबको ज्ञानरूप छांह कतहूं नहीं पावैहै ऐसो तुमजानते हौ पै वही में पसीजौ हौ कहे श्रम करौहौ पसीना चलै है और छीजौहौ साहबकी ज्ञानरूप छतरिया काहे नहीं छावहुहौ ॥ ११ ॥

जो कछु खेल कियो सो कीयो, बहुरि खेलि कसहोई हो ॥
सासुननँददोउ देतउलाटन, रहहु लाज मुखगोईहो १२

जो कछु खेल कियो कहे जो कछु कर्म कियो सोई भोग कियो अथवा जौनखेल मायाब्रह्म को साथ करिकै कियो सोई फल भोग कियो सो बिना रामनाम लीन्हें इनको छोड़िकै फेर खेल कियो चाहौ मुक्तवाला सो कैसे होइगो सासु जो है मूलप्रकृति और ननँदि जोहै विद्या माया सो ये दूनों तुमको उलाटन कहे उलटिकै जवाब देइहैं कि विद्या माया करिकै मुमुक्षु है मुक्तिकी इच्छा करत रह्यो सो अब हम तुमहींको लपेटिलियो तुम हमको त्यागत रह्यो है अब नहीं छूटि सको हौ या जवाब सुनि तुम लाजिकै मुख गोइ रहौहौ लाचार है छूटि नहीं सकौहौ ॥ १२ ॥

गुरु भो ढीलगोन भो लचपच, कहा न मानहु मोराहो ॥
ताजी तुरकी कबहुं न साजेहु, चढ़े न काठ के घोराहो १३

जो गुरुवालोग तुमको उपदेश कियो ते गुरु ढील है गये काहेते कि जौन जौन उपासना की गोन तुम्हारे ऊपर लादि दियो तेते देवता लचपच है गये कहे उनके छुड़ायेते ना छूटे संसारमें परेजाय

देवताके फुरते न उत फुर होइहै जब देवतै न फुरे तब गुरुवा ढील परिगयो सो कबीरजी कहै हैं कि जो मैं कहत रह्यो सो तुम ना मान्यो कि रकार मकार जपो याहीते छूटौगे ताजी तुरकी जो रकार मकार ताको कबहूं न साज्यो कहे कबहूं रामनाम ना लियो जो साहबके पास लै जाय काठको घोरा जो है मन जड़ तामें चढ्यो सो कूदिकै संसारगाड़ में डारि दियो जो ताजी तुरकी रामनाम तामें चढ़त्यो तौ तुमको कूदिकै साहबके पास पहुँचावतो ॥ १३ ॥

तालझांझभलबाजत आवै, कहरा सब कोइ नाचैहो ॥
जेहिरँगदुलहाब्याहनआये, तेहिरँगदुलहिनिराचैहो १४

गुरुवालोगन के ओंट झांझ हैं और जीभ ताल देइ है वही ब्रह्महीं में ताल देइहै कहे नानाबाणी करिकै नाना मतन करिकै वही ब्रह्ममें चुनावै है अथवा जाको जौन उपासना बतावै है ताको तौन इष्टदेवता है ताहीको ब्रह्म कहैहैं ताहीको सब कुछ कहैहैं उहै तालको मानदेइहैं अर्थात् सब शास्त्रको अर्थ वाही में पर्यवसान करैहै और गुरुवनमें लागिकै सुखबाचक जो कर्ता न हरागयो कहे परम पुरुष श्रीरामचन्द्र को भूलि गये संसार में सब जीव दुखिया ह्वै नाचनलगे कोई रजोगुणी उपासनामें राचत भये कोई तमोगुणी उपासनामें राचतभये कोई सतोगुणी उपासना में राचत भये जेहि रंग दुलहा जे उपासनावारे जीव ब्याहनआये कहे गुरुवालोग जौनरङ्गमें लगायो तेहि रङ्गमें दुलहिनि बुद्धि रचतभई ॥ १४ ॥

नौका अछत खेवै नहिं जान्यो, कैसेहु लागहु तीराहो ॥
कहै कबीर रामरस माते, जोलहा दास कबीराहो १५

अछत नौका जो रामनाम है ताको खेवै न जान्यो कहे जौने विधिते संसारसागरते पारकैदेइहै सो विधि रामनाम जपिबे की न जान्यो सो कैसे संसारसागरते पारह्वैके तीरलागोगे सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि जोलाहा कहे जो कोई रामरस लहा है अर्थात् रामरस पाय मातो है सोई संसारसागर को पार पायो है सोई कायाको

बीर जीव परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको दास भयोहै जो माते पाठ होय तो या अर्थहै कि कबीरजी कहै हैं कि जातिको मैं जोलहा सो राम के रस में मातेते मैं दासकबीर कहवावनलग्यो पार्षद्-रूप जो हंसस्वरूप याही शरीर में पायगयो संसारको पार ह्वैगयो परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको दास ह्वैगयो तुम ब्राह्मणादिक जो रामरसमें मतौगे तौ कैसे संसारसागरते ना पारहोउगे पारही ह्वै जाउगे कबीरजी रामरसमें मातिकै बचिगये तामें प्रमाण "साथर बीजकको" हम न मरैं मरिहै संसारा। हमको मिला जियावन-हारा॥ अबनामरौंमोरमनमाना। तेई मुवाजिन राम न जाना॥ सो कत मरै सन्त जन जीवै। भरिभरि रामरसायन पीवै॥ १५॥

इति पहिला कहरा समाप्तम्॥ १॥

अथ दूसरा कहरा॥ २॥

मतिसुनुमाणिकमतिसुनुमाणिकहृदयाबन्दिनिवारोहो १ अट-पटकुम्हराकरैकुम्हारियाचमरागाउनबाचैहो। नितउठि कोरिया बेटभरतुहै छिपिया आंगननाचैहै २ नितउठिनौवानात्रचढ़त है बरहीबेराबारिउहो। राउरकीकछुखबरिनजान्योकैसेझगरानिवा-रिउहो ३ एकगांवमेंपांचतरुणिबसैं तिनमेंजेठजेठानीहो। आपन आपनझगरपसारिनि प्रियसोंप्रीतिनशानीहो ४ भैंसिनमाहँ रहत नितबकुला तकुलाताकिनलीन्हाहो। गाइनमाहँ बसेउ नहिं कबहूं कैसेकैपदचीन्हाहो ५ पथिकापन्थबूझिनहिंलीन्हो मूढ़हिमूढ़गवांरा हो। घाटछोड़िकसऔघटरेंगहु कैसैलगबेहुपाराहो ६ जतइतके धनहेरिनिललइचकोदइतकेमनदोराहो। दुइचकरीजिनदरनपसा-रिहु तबपैहौठिकठोराहो ७ प्रेमबानएकसतगुरुदीन्ह्योगाढ़ोतीरक-मानाहो। दासकबीर कियो यह कहरा महरामाहिंसमानाहो॥८॥

मतिसुनुमाणिकमतिसुनुमाणिक, हृदयाबन्दिनिवारोहो १

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हे जीव! तैंतो माणिक है माणिकलाल होय हैं सो तैं कहां संसार में अनुराग करिकै लाल ह्वैरहे साहब

में अनुरागकरि लाल होय गुरुवालोगनकी बाणी तें मति सुनु मति सुनु आपने हृदयकी जो संसाररूपी बन्दि ताको निवारु ॥ १ ॥

अटपटकुम्हराकरैकुम्हरिया, चमरागाउनबाचैहो ॥
नितउठिकोरियाबेटभरतुहै, छिपियाआंगननाचैहो २

काहेते कि अटपट कुम्हरा जो या मन है सो कुम्हरिया करैहै कहे नाना शरीर रचैहै जैसे कुम्हार नानाबासन बनावै है ऐसे या मन नानाशरीर रचैहै सो शरीर जो गाउँहै तौन चमरा कालके मारे नहीं बचै है मन रचतजाइ है शरीर काल खातजाइ और कोरिया जे मुनिलोगहैं सत रज तम ग्रन्थप्रवर्तनवारे ते बेट भरतिहैं कहे बनावतजाइहैं तेई ग्रन्थनको लैकै छिपिया जे गुरुवालोग हैं ते आंगन आंगन नाचैहैं अर्थात् चेला हेरत फिरैहैं नानामत में सीकै नानामत में लगावत फिरैहैं ॥ २ ॥

नितउठि नौवा नाव चढ़त है, बरही बेरा बारिउ हो ॥
राउरकी कछु खबरि न जान्यो, कैसेकै झगरनिवारिउहो३

नौवा जो संन्यासी जौन आपनो मूड़ मुड़ावै है आनौको मूड़िकै चेला बनाइलेइहै सो वेषमात्र जो नाव तामें चढ़िकै संसार-समुद्र पार होवा चाहै है और नानादेवतन प्रतिपाद्य जे ग्रन्थ तेई हैं बरही कहे बोझा ताहीको बेरा रचिवारी जे नानाउपासनावारे हैं ते संसारसमुद्रको पार होवा चाहै हैं राउर जो परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रको घर ताको जानतई नहीं या झगरा कैसेकै निवारण होइ साहब ते तो चिन्हारिनि नहीं है कबहूं माया पकरि लेइहै कबहूं ब्रह्म पकरि लेइहै कबहूं मनपकरि लेइहै इत्यादिक जेई पावैहैं तेई धरिलेइहैं सो कैसेकै झगड़ा निवारण होइ ॥ ३ ॥

एक ग्राम में पांचतरुणि बसैं, तिनमें जेठजेठानी हो ॥
आपनआपन झगरपसारिनि, प्रियसोंप्रीतिनशानीहो ४

एकगांउ जो या संसार तामें पांच तरुणि जे ज्ञानेन्द्रिय ते बसै हैं ज्ञानेन्द्रियते कर्मेन्द्रिउ आइ गईं तिनमें जेठ मन जेठानी माया

है सोई दशौ इन्द्रिय आपन आपन झगर कहे अपने अपने बिषय ओर मनको खैंचनभई सो मनके अधीन है जीव सोऊ वही कत चलो गयो परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र प्रीतम हैं तिनसों प्रीति नशाइ गई ॥ ४ ॥

भैंसिनमाहँ रहतनितबकुला, तकुलाताकिनलीन्हा हो ॥
गाइनमाहँ बसेहु नहिं कबहूं, कैसेकै पद चीन्हा हो ५

सो भैंसी जे दशौइन्द्रियांहैं तिनमें बकुला जो मन सो रहैहै जैसे भैंसी जब जलमें परैहैं तब बकुला वाके ऊपर बैठरहैहै जो मछरी भैंसिनके किलनी खावेको आई सो बकुला खायलीनो ऐसी इन्द्रिय जब बिषय ओर चली तब मनहीं भोगकरै है इन्द्रियद्वारा ताते मनको बकुला कह्योहै सो हे जीव! तैंतो तकुलाहै कहे ताकनवारो है काहे न ताकिलीन्हा और साहब के गावनवारे जे सन्त तिन गाइन में कबहूं बसबै न कियो परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्र को पद कैसेकै चीन्हो ॥ ५ ॥

पथिकापन्थ बूझि नहिं लीन्हो, मूढ़हि मूढ़ गवांरा हो ॥
घाट छोड़ि कस औघट रेंगहु, कैसेकै लगिहो पाराहो६

साहब जे श्रीरामचन्द्र तिनके पन्थ के चलनवारे जे पन्थी सन्त जन तिनसों तो पन्थ बूझि न लीन्हेउ मूढ़ जे गुरुवालोग तिनकी बाणी में परिकै मूढ़ ह्वैगयो गवांर ह्वैगयो सो साहब के पहुँचबे को जो घाट ताको छोड़ि औघट जो मायाब्रह्म तामें चलौ हौ सो कैसे कै पार लागौगे ॥ ६ ॥

जतइतकेधनहेरिनि ललइच, कोदइत के मन दोराहो ॥
दुइचकरी जिन दरन पसारेहु, तहँ पैहहु ठिकठोराहो ७

जतइतके कहे जिनके जतवा चलै है सो जतइत कहावै है सो धोखाब्रह्म है जो सबको दरि डारै है सबको मिथ्यै मानै है तहां ललइच जे लालची हैं ते धन जो मुक्ति ताको हेरिनि सो उहौं न पाइन तब कोदइत जे गुरुवालोग जिनके नाना उपासनारूप को

दौराजाय है तिनके इहां गये कि इहां मुक्ति धन मिलैगो सो कबीर जी कहै हैं कि जतइत के तो धनको ठिकानै न लग्यो तो कोद-इत जे माटी के दुइ चकरी बनाइ दरना पसारै हैं तहां ठीकठौर पैहौ अर्थात् न पैहौ साहब को जानौगे तबहीं ठिकान लगैगो॥७॥

प्रेमबाण यक सतगुरु दीन्हो, गाढ़ो खैंचिकमाना हो ॥
दास कबीर कियो यह कहरा, महरा माहिं समाना हो८

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे जीवो ! तुम यामें पार न जाउगे जब ऐसो करौ तब पारै जाउगे प्रेमको तो बाण करु और सतगुरु जो ज्ञान दीन्हो है ताको कमान करि गाढ़ो खैंचि साहबरूप जो निशाना है तामें प्रेमबाण मारु अर्थात् प्रेम लगाउ हे साहब को सदा को दास कायाकेबीर जीव ! या कहरा में संसार को कहर है सो कहा कियो है महरामाहिं समाना कहे जे साहबके महरमी हैं तेही में समाय अर्थात् उनहींको सत्संग करु काहू गाढ़ो खैंचि कमाना यही पाठ है अथवा हे कबीर, कायाके बीर, जीव ! मन मायाब्रह्म के दास ह्वै यह संसार तैं किये सो कहरा कहे कहर करनवारो है सो तैं आपनो रूप तौ बिचारु कहाँ मायादास ह्वैरहै है तैं महराकहे माया के हरनवारे जे हैं साधु तेही माहिं समाना कहे तैं तिनके बरोबर है जो तैं आपने स्वस्वरूपको जानै है॥८॥

इति दूसरा कहरा समाप्तम् ॥ २ ॥

अथ तीसरा कहरा ॥ ३ ॥

रामनामको सेवहु बीरा दूरि नहीं दुरिआशा हो। और देव का पूजहु बौरे ईसब झूठी आशा हो १ उपरके उजरे कहभो बौरे भीतर अजहूं कारो हो। तनको वृद्ध कहाभो बौरे ईमन अजहूं बारोहो २ मुखके दांत गये का बौरे अन्दरदांत लोहेकेहो। फिरि फिरि चनाचबाउ बिषयके काम क्रोधमदलोभेहो ३ तनकी शक्ति सकल घटि गयऊ मनहिं दिलासा दूनी हो। कहै कबीर सुनो हो सन्तो सकल सयानप ऊनी हो ॥ ४ ॥

राम नाम को सेवहु बीरा, दूरि नहीं दुरि आशा हो ॥
और देव का पूजहु बौरे, ई सब झूठी आशा हो १

श्रीकबीरजी कहैहैं कि, हे कायाके बीरो, जीवो! रामनाम को सेवनकरो रामनाम दूरि नहीं है तुम्हारी आशा दूरि है और देवको हे बौरे! का पूजहु हौ इनकी आशा सब झूठी है ॥ १ ॥

उपर के उजरे कहभो बौरे, भीतर अजहूं कारोहो ॥
तन को वृद्ध कहाभो बौरे, ई मन अजहूं बारो हो २
मुख के दांत गये का बौरे, अन्दरदांत लोहेके हो ॥
फिरि फिरि चनाचबाउबिषयके, कामक्रोधमदलोभे हो ३

हे बौरे! जो ऊपर बहुत ऊजर बने रह्यो बहुत आचार कियो तो कहाभयो भीतर तो अजहूं करियैहौ व तनकी बड़ी वृद्धता मान्यो तौ हे बौरे! कहाभयो मनतो अजहूं बारो कहे लरिकवा बनाहै वही चालचलैहै २ व मुखके दांत गिरिगये तौ हे बौरे! कहाभयो अन्तःकरण के जे बिषय के चना चाबनवारे ऐसे लोहे के दांत तो गाबे न भये काम, क्रोध, मद, लोभ बनेनहैं मिटबै न भये ॥ ३ ॥

तनकीशक्तिसकलघटिगयऊ, मनहिं दिलासा दूनी हो ॥
कहै कबीर सुनोहो सन्तो, सकल सयानप ऊनीहो ४

हे बौरे! तनकी सकल कहे रूप बिषय करनवाली सामर्थ्य घटिगई और संगी मरिगये पै दिलकी दिलासा जो तृष्णा सोतो घटिबै न भई सो कबीरजी कहैहैं कि हे सन्तो! तुम सुनो या सब जीवनकी सयानप ऊनी है अर्थात् तुच्छहै बिना रामनाम के जाने जनन मरण न छूटै है तामें प्रमाण कबीरजी का "जो तैं रसना राम न कहिहै। उपजत बिनशत भरमत रहिहै॥ जस देखी तरुवर की छाया। प्राणगये कहु काकी माया॥ जीवत कछु न किये परमाना। मुये मर्म कहु काकरजाना॥ अन्तकाल सुख कोउ न

सोवैं। राजारङ्कदोऊमिलिरोवैं॥ हंससरोवरकमलशरीरा। राम रसायन पिवै कबीरा" ॥ ४ ॥

इति तीसरा कहरा समाप्तम्॥ ३ ॥

अथ चौथा कहरा ॥ ४ ॥

ओढ़न मेरो रामनाम मैं रामहिं को बनिजारा हो। रामनामका करौंबनिजमैं हरिमोराहटवाराहो१ सहसनामको करौं पसारा दिन दिनहोतसवाईहो। कानतराजू सेरतिपौवा डहकिनढोलबजाईहो२ सेरपसेरीपूराकरिले पासंघकतहुँ न जाईहो। कहै कबीर सुनोहो सन्तो जोरिचलेजहडाईहो॥ ३ ॥

ओढ़न मेरो रामनाम, मैं रामहिं को बनिजारा हो ॥
रामनामको करौं बनिज मैं, हरि मोरा हटवाराहो १

श्रीकबीरजी कहैहैं कि पाखण्डीलोग जे हैं ते कहैहैं कि हमारो ओढ़न रामनामही है अर्थात् रामनामहीं के ओढ़रते ठगिलेहिहैं परमतत्त्व जो रामनाम है तौनेके ठगिबेको ओढ़र बनाये हैं काहेन मारेपरैं कौनी तरहते कि बड़े बड़े टीका दैलिये माला जपै हैं न रामनाम को तत्त्वजानैं न अर्थ जानैं न जपैके बिधि जानैं न नामापराधदश जानैं और या कहै हैं कि हम रामनामको बनिजारा हैं व रामनामकी बनिज करै हैं और हरि जे हैं तेई हमारे हटवारे हैं कहे दलाल हैं अर्थात् हम उनहीं के द्वारा सब रामनामको सौदा लेहिहैं उनकी प्रेरणाते हम मन्त्र देइ हैं जो वाके भागमें होयगो सो होयगो हमारो पैसा धोती तो हाथको न जायगो जो कोई कहै है कि शिष्य परीक्षा कैलेउ तो या कहै हैं कि कहांको बखेड़ा लगायो है हम मन्त्र दैदियो वह जो चाहै सो करै मुक्ति होइ जाइगो ॥ १ ॥

सहस नाम को किये पसारा, दिनादिन होत सवाईहो ॥
कान तराजू सेर तिपौवा, डहकिन ढोल बजाईहो २

और या कहै हैं कि एकनाम के लीन्हेते सर्वकर्म छूटिजाइ हैं हमतो हजारन नाम को पसारा करैं हैं कहे हजारन नाम लेइ हैं कर्म कहां रहैंगे सब छूटिजायँगे हमारे सुकर्म दिन दिन सवाई बढ़ैंगे सो दोऊ गुरुचेलन को ऐसो हवाल है चेलन के कान जे हैं तेई फेरहातरजुवा हैं और तीनपाव का सेर है अर्थात् त्रिगुणात्मक मन है सो मन बचन के परे जो रामनाम सो गुरुवालोग तौलि दियो अर्थात् मन्त्र दियो डहकिन ढोलबजाई कहे चेलालोग चारिउ ओर कहि आये कि हम मन्त्र लियो है कै डहकाइ गये ढोल बजाइ ॥ २ ॥

सेर पसेरी पूरा करिले, पासँघ कतहुँ न जाई हो ॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, जोरि चले जहडाई हो ३

गुरुवन के उपदेशते सेर जो है मन पसेरी जो है ब्रह्मज्ञान सो पूरो करिलै अर्थात् सर्वत्र ब्रह्म को पूर्णो मानै परन्तु पसंघा जो मूलाज्ञान सो कतहूं न जायगो वाही में परिकै अन्तकाल में जहडायकै कहे डहकायकै चले जायँगे ॥ ३ ॥

इति चौथा कहरा समाप्तम् ॥ ४ ॥

अथ पांचवां कहरा ॥ ५ ॥

रामनाम भजु रामनाम भजु चेति देखु मन माहीं हो। लक्ष करोरि जोरिधनगाड़े चलेडोलावतबाहीं हो १ दाऊ दादा औ परपाजा उइगाड़ेभुइँ भांड़े हो। अँधरे भये हियो की फूटी तिन काहे सब छांड़े हो २ ई संसार असार को धन्धा अंतकाल कोइ नाहीं हो। उपजत बिनशत बार न लागै ज्यों बादर की छाहीं हो ३ नातागोताकुल कुटुम्ब सब तिनकी कवनि बड़ाई हो। कह कबीर यकराम भजेबिन बूड़ी सब चतुराई हो ॥ ४ ॥

रामनाम भजु रामनाम भजु, चेति देखु मनमाहीं हो ॥
लक्ष करोरि जोरि धन गाड़े, चले डोलावत बाहीं हो १

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे मूढ़! परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को रामनाम ताको भजु भजु 'भज सेवायाम्' धातु है सो याही रामनाम को सेवा करु रामनाम मन वचन के परे हैं सो आगे लिखि आये हैं आपने मनमें चेति कहे विचारिकै देखु तो लाखन करोरिन धन जोरिकै गाड़ि गाड़ि धरयो जब मरन लाग्यो यमदूत लै जान लगे तब बाहीं डोलावत चलौ हो कि वे धन हमारे नहीं हैं ॥ १ ॥

दाऊ दादा औ परपाजा, उइगाड़े भुइँभांड़े हो॥
अँधरे भये हियो की फूटी, तिनकाहेसबछांड़ेहो २

जो कहो वा जन्म कब देख्यो है तो तेरे दाऊ दादा व परपाजा वे भुइँ में केतौ भांड़े गाड़ि गाड़ि मरिगये हैं उनहीं के साथ कबै धन गयो है सो तैं आँधरे ह्वैगये तेरे हियोकी फुटिगई हैं जैसे सब धन छोड़िकै वे चले गये हैं धनको मालिक तुहीं भयो ऐसे तुहूं धन छोड़िकै चलो जायगो तेरो धन और ही को होयगो तेरे हाथ कछु न लगैगो ॥ २ ॥

या संसार असार को धन्धा, अन्तकाल कोइ नाहीं हो॥
उपजत बिनशत बार न लागे, ज्यों बादर की छाहीं हो ३

या संसार असार कहे झूठही को धन्धाहै अन्तकाल में कोई आपनो नहीं है जो कहो कि हम जावहीं न करैंगे बनेहीरहैंगे तो शरीर के उपजत बिनशत में बार नहीं लगै है जैसे बादर की छाहीं भई व पुनि मिटिगई ॥ ३ ॥

नातागोता कुल कुटुम्ब सब, तिनकी कवनि बड़ाई हो॥
कह कबीर यक राम भजे बिन, बूड़ी सब चतुराई हो ४

बड़े गोतके भये बड़ेकुल के भये बड़ी बड़ी जातिके नात भये तिनकी कौन बड़ाई है ये तो सब शरीरही के हैं जब तेरो शरीर छूटि जायगो तब तेरो शरीरही कोई न छुवैगो ताते ये सब नात गोत जबभर शरीर बनो है तबहीं भरेके हैं शरीर छूटे ये सब छूटि

जाइहैं इनकी कौन बड़ाई है सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि एक जे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र हैं तिनके रामनाम के भजे कहे सेवा किये बिन सब चतुराई तिहारी बूड़िजायगी नरकही को जाउगो जे जे आपनी आपनी कल्पना ते नाना उपासना कैलियेहो तिनते चाहो हो कि हमारी मुक्ति ह्वैजायगी ते एकहू काम न आवैगो तामें प्रमाण श्रीगोसाईंजी को पद "राम कहतचलुरामकहतचलु राम कहत चलुभाईरे । नाहिं तो भवबेगारिमें परिहौ पुनि छूटब अति कठिनाईरे । बाँसपुरानसाजुसबअटखट सरलत्रिकोणखटोलारे । हमहिंदिहल करिकुटिल करमचँद मन्दमोलबिनडोलारे । विषमकहारमारमदमातेचलैंनपायबटोरे रे।मन्दबेलन्दअभेरादलकनिपाई दुखझकझोरे रे । कांटकुरायलपेटनलोटन ठामहिंठामबझाऊरे । जसजसचलियदूरिनिजतसतसबांसनभेंटलकाऊरे । मारग अगम संगनहिंसंबल नामगामकरभूलारे।तुलसिदासभवत्रासहरहुअब होहुरामअनुकूलारे १ रामकहतचलुरामकहतचलुरामकहतचलु भाईरे" अब गोसाईंजी जीवन को उपदेश करै हैं इहां राम कहत चलु तीनि बार कह्यो सो मुक्त-मुमुक्षु-विषयी तीनों जीवन को कहैहैं सो गोसाईंजी अपनी रामायण में कह्यो है चौ० "विषयीसाधकसिद्धसयाने । त्रिविधजीवजगवेदबखाने ॥ रामसनेह सरसमनजासू । साधुसभाबड़आदरतासू ॥ सिद्धविरक्त महामुनि योगी । नामप्रसादब्रह्मसुखभोगी" याते यह कि रामविना मुक्तहुनकी गति नहीं है अरु भाई जो कह्यो सो जीव के नाते कहै हैं कि हम सब यती हैं अरु इहां एकवचन कहै हैं सो प्रतिजीव सो पृथक् कहैहैं कि हे भैया!या दुःखमार्ग त्यागिदेउ यामें दुःख पावोगे ताते राम कहते चलो ॥"नाहिंतोभवबेगारिमेंपरिहौ पुनि छूटब अतिकठिनाईरे" नहीं तो भव जो संसार है ताके बेगारिमें परोगे बेगारि परिबो कहाहै जाते संसारते कबहुं न उद्धार होइ ऐसेकर्म माया तुमको धरिके करावैगी जो शरीररूप डोला को गुमान किये होहु कि डोलाचढ़ि बेगारि न परैंगे तो धरनवारो समरथहै डोला

म चढ़ेहू धरि लेइगो तब कठिन ह्वैजायगो जैसे फिरङ्गी म्याना पालकिनवाले को बेगारि पकरै है तब कोई कहै हैं कि ये तो बड़े आदमी हैं इनको सड़क खोदाना चाहिये तब अंगरेजलोग कहै हैं कि हमारे इहां दस्तूर है म्याना चढ़ेजाइ वही में फरुहा कुदारी धरेजाइ सो पालकिउ चढ़े बेगारि धरिजाइ है और डोलहू तिहारो जर्जरहै सो कहै हैं "बांसपुरानसाजुसबअटखट सरलतिकोन खटोलारे । हमहिं दिहलकरि कुटिल करमचँद मन्दमोलबिन डोलारे" प्रारब्ध जो है सोई पुरान बांस है काहेते कि संचित तो प्रारब्ध भै है तेहिते महापुरान है और सबसाज अटखट कह्यो सो आठ और खटकहे चौदह साज हैं शरीररूपी डोला को सो कहै हैं त्वचा, रुधिर, मांस, अस्थि, मेद, मज्जा, शुक्र, केश, रोम, नस, नख, दन्त, मल, मूत्र सो त्वचा डोलाको वोहार है रुधिर वोहार को रङ्ग व मांस वोहार की तुई है और अस्थि डोला को काठ है व मेद मज्जा डोला को तकिया बिछौना है और नस रसरी है व नख लोहे की पतुरी है व दांत खीला है व मलमूत्र घुलत है और घुन को कीरा है काहेते कि कोरनहूं में पानी होय है अथवा साजु सब अटखट जो यह पाठ होइ तो पुरजा पुरजा जोरै है यही अर्थ है और सरल जो कह्यो सो सरो है कहे रोगन ते ग्रसित है व तिकोन खटोला जो कह्यो डोलामें सो शरीरकी तीन अवस्था हैं जाग्रत्–स्वप्न--सुषुप्ति याही में परोरहेहै सोई तिकोन खटोला है अथवा बालापन-युवापन-वृद्धापन ई तीनौंपन तिकोन खटोला है शरीररूपी डोला में सो ऐसो डोला कुटिल करमचन्द कहे कुटिल कलङ्की करम करिकै कहे बनाइकै हम सबको दीन्हो है और ऐसो निबल डोला है व मन्दमोल बिन जो कह्यो सो और को मांस भोजनहूं में काम आवै है यह मानुषशरीर को मांस बेचेहूते कोऊ नहीं लेइ थाते मन्द मोल कहे थोरहू मोल बिना है सो ऐसो डोला में चढ़िकै हे भैया ! या संसारमार्ग में चलोगे तो कलङ्की करमको दियो है डोला तुमहूंको कलङ्क लागिजाइगो

यह जर्जरडोला जो संसारमार्ग में टूटैगो तो फँसिजाउगे फिर न निकसोगे जो नाम सड़क चलौगे तो या सड़क राजघाटही लगी है डोला टूट्यो दिव्यरूप ते आंखी मूंदेहू चलेजाउगे अथवा दिव्य रूपते बिमान चढ़ि चले जाउगे कैसोहै डोला सो कहैहैं "विषम कहारमारमदमाते चलहिं न पाय बटोरे रे। मन्दबिलन्दअभेरा दलकनि पाईदुखझकझोरेरे" विषम कहे कहार जोहिको पांचौं इन्द्रिय सो एकतो सम नहीं हैं दूसरे स्वभावही ते विषम हैं तीसरे मार मदमाते हैं सो मतवारे के पांय सम नहीं परै हैं चलते में पांय बगरिजाइ हैं पांय बगरिबे कहे रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द इनमें जाय रहै है फिरि मार्गकैसो है मन्द कहे नीच है बिलन्द कहे ऊंचहै अर्थात् कहूं अपमानते दीन है जाइ है अपने को नीच मानैहै कहूं मानते अपनेको बड़ो ऊंच मानैहै व कहूं अभेरा कहे धक्का लगिजाय है धक्का कहा है कहूं पुत्र मरिगयो भाई मरिगयो चोर चोराय लियो सो या लोक में लोग कहै हैं कि हमको बड़ो धक्का लगो दलकनि कहाहै कि विषय सुखदेत में अच्छो लगैहै जब वामें पर्यो तब विषय दल दल में फँसिजाय है और पाई दुख झकझोरे कहे डोलामें झकझोरा लगै है इन्द्रियरूप कहार गिरै हैं कहूं उठै हैं ताते विकलताई झकझोरा का दुखपाइत हैं "कांटकुरायलपेटनलोटन ठांवहिंठांव बझाऊरे। जसजसचलियदूरिनिजतसतस बांसनभेंटलकाऊरे" कहीं कांटहैं कहे सुन्दररूप है सो नयनरूपी कहारनके छेदिजाय हैं तब गिरि जाय हैं कहे आशक्त ह्वैजायहैं और कुराय सजल होइहै सो रस है तामें रसनारूप कहार बूड़िजाय है व लपेटनफूलीलता है तेई गन्ध हैं तामें नासिकारूप कहार लपटिकै गिरिपरै है लोटनलोक में सर्पको कहे हैं सो स्पर्श है त्वचारूप कहारन को डसिडारै है कामिनीके एक अङ्ग छुवत में सर्वाङ्गकामविष चढ़िजाय है याते स्पर्श को लोटनसर्प कह्यो है व ठांवहिं ठांव बझाऊ कहे मोहरूप शिकारी सो नाना विषय की कथा व नाना भूत यक्षनादिक

सेवनते सिद्धि की प्राप्त तिनकी कथा और नाना तामस मत तिन की कथा सो शब्दरूप बागुरि ठामहि ठांव लगाय राख्योहै तामें श्रवणरूप कहार अरुझिके डोला डारिदेइ है फिरि संसारमग कैसो है ज्यों ज्यों संसारपथ में चलियतु है त्यों त्यों दूरि रामपुर परतो जाय है भैया रामपुरकी गैल नहीं है और राह है फिरि कैसो है यामें बास नहीं है अर्थात् कल नहीं रहै है कर्म करतई जाइहै शान्तहैके कोई नहीं टिक्यो "मारग अगम संग नहिं सम्बल नाम ग्राम कर भूलारे। तुलसिदास भवत्रासहरहु अब होहु राम अनुकूलारे" सो या प्रकार यह मार्ग है संसार सोई पृथ्वी है तामें विषय के हेतु नाना यतन करिबो अरु राजस तामस शास्त्रमार्ग तदनुसार कर्म करिबो सोई चलिबो है ताको गोसाईं जी कहै हैं कि अगम है कहे चलिबे मुआफ़िक़ नहीं है और नाम मार्गमें सन्तन को संग है ते रामपुरको विघ्न नाशिकै पहुंचाइ देइहैं यहां कैसो है संग नहिं सम्बल कहे सम्यक् है बल जेहिके ऐसे सन्त संगमें नहीं है अथवा नानामार्ग में तो सात्त्विक श्रद्धा कलेवा मिलैहै या मार्ग में श्रद्धारूप कलेवा नहीं मिलैहै सो गोसाईंजी अपनी रामायण में लिख्यो है जे श्रद्धा सम्बल रहित इत्यादिक व जा गाउं को तुमको जानो है ताको नामही भूलि गयो है भूला जो कह्यो सो गर्भ में सुधि होइ है फिरि भूलिजाय है याते भूला कह्यो है अथवा जीव नाम ग्राम कर भूला है नाना देवतनको नाम लेइहै और तिनहीं के धाम जाइबेकी इच्छाकरै है सो तेरो ते नामनते भवबन्धना छूटै है न ते धामनमें गये तेरो जनन मरण त्रास छूटैगो सो अब गोसाईंजी कहै हैं कि हे भैया! अब अपने अपने जीवन पै दाया करि संसार की त्रास हरो अब काहे ते कह्यो कि अनेक जन्म भटकि के अनेक शरीर पाइकै मनुष्य को शरीर पायो है सो अबहूं नाममार्ग चलौ याते अब कह्यो है और होहु राम अनुकूला जो कह्यो सो उपक्रम में नाममार्गब-तायो ताको चलिकै उपसंहार में होहु रामअनुकूला कह्यो सो एक

उपलक्षण है छः प्रकार की शरणागती को सूचन कियो है उपक्रम में नाममार्ग बतायो उपसंहार में शरणागती बतायो सोई श्रीगोसाईंजी कहै हैं कि हे भैया ! रघुनाथजी को नाम जपौ और शरण जाउ याहीमें उबार है और में नहीं है षट्विधि शरणागत को लक्षण "अनुकूलस्य संकल्पः प्रतिकूलस्य वर्जनम् । रक्षिष्यतीति विश्वासो गोप्तृत्वं वरणं तथा ॥ आत्मनिक्षेपकार्पण्यं षड्विधा शरणागतिः ॥ ४ ॥

इति पांचवां कहरा समाप्तम् ॥ ५ ॥

अथ छठवां कहरा ॥ ६ ॥

रामनाम बिनु रामनाम बिनु मिथ्या जन्म गँवाई हो १ सेमर सेइ सुवा जो जहड़े ऊनपरे पछताई हो । जैसे मदिपगांठि अर्थैदे घरहुकी अकिल गँवाई हो २ स्व दे उदर भरत धौं कैसे ओसै प्यास न जाई हो । द्रव्यक हीन कौन पुरुषारथ मनहीं माहँ तवाई हो ३ गांठी रतनमर्म नहिं जानेहु पारख लीन्ही छोरीहो । कह कबीर यह अवसर बीते रतन न मिलै बहोरी हो ॥ ४ ॥

रामनाम बिनु रामनाम बिनु, मिथ्या जनम गँवाई हो १

उपासक जे हैं ते पञ्चाङ्गोपासना करिकै और कापालिकादिक मतवारे देवतनकी उपासना करिकै नास्तिक मरबई मोक्ष मानिकै व्याकरणी शब्दज्ञान करिकै ज्योतिषी कालज्ञान करिकै सांख्यवाले प्रकृति पुरुषज्ञान करिकै पूर्वमीमांसावारे कर्महीं करिकै नैयायिक दुःखध्वंस ही करिकै और कणादवाले नौगुणध्वंसही करिकै और शङ्करवेदान्तवाले ब्रह्मज्ञान ही करिकै इत्यादिक मुक्त होब माने हैं परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र तिनहीं बिना और तिनके रामनाम बिना मिथ्यै जन्म गँवाइ दियो ॥ १ ॥

सेमर सेइ सुवा जो जहड़े, ऊनपरे पछिताई हो ॥
जैसे मदिप गांठि अर्थैदे, घरहुकीअकिलगँवाईहो २

जैसे सेमरके फलको सुवा सेयो चोंच चलायो जब वामें घुवा

निकस्यो तब भोजनते ऊन कहे खाली पस्यो भोजन न पायो तब पछितायकै कहे जहड़िकै भोजन डहकायकै चल्यो ऐसे जीव नानामतन में परिकै मुक्ति चाह्यो जब मुक्ति न पायो तब मुक्ति डहकाइकै संसार में पस्यो और जैसे मादिप कहे मतवार गांठीको द्रव्य देकै मद पियो घरौ की अकिल गँवायदियो तैसे गुरुवालोगन को गांठिकी द्रव्य देकै मन्त्र लैकै औरे औरे मतन में लगि गये घरौ की अकिल गँवायदियो कहे साहब को सदा को दास है जीव सो अपने स्वरूप को भूलि गयो ॥ २ ॥

स्वादे उदर भरत धौं कैसे, ओसै प्यास न जाईहो ॥
द्रव्यकहीन कौन पुरुषारथ, मनहीं माहँ तवाईहो ३

जौने मत में स्वाद पायो सो तौनेही मतमें लग्यो सो ओसते कहूं पियास बुझाइहै ओसपरो सो ओसको जलको स्वाद मुख में आयो सो कहा स्वादते पेट भरैहै नहीं भरै है तैसे जीव नानामत में लग्यो नानासाधन करनलग्यो और वे देवतन के लोकनगयो अथवा ब्रह्मज्ञान सिद्धभयो अथवा आत्मज्ञान सिद्ध भयो इत्यादिक सब सिद्धभयो किंचित् सुख पायो ते तो ओसको चाटिबो है कहा मुक्ति होइहै नहीं होयहै और द्रव्य का हीन जो पुरुषारथ है सो कौन पुरुषारथ है मन में बहुत विचार करैहै कि वाको दश हजार देउँ वाको पांच हजारदेउँ जब द्रव्य की सुधि आई सो द्रव्य तो हई नहीं है तब मनै मैं तवाई होयहै कि हाय का करौं ऐसे नानामतन में लगे पाछे पछिताउ होयहै अन्तकाल में मैं कहा कियो साहब में न लाग्यो जाते मुक्ति होती ॥ ३ ॥

गांठीरतनमर्मनहिंजानेहु, पारखलीन्हीछोरीहो ॥
कहकबीरयहअवसरबीते, रतननमिलैबहोरीहो४

या जीव सदा को साहब को अंश है सो या रतन तुम्हारे गांठी में है ताको यह रामनाम ते पारिख करिकै छोरिलेउ साहब के गुण जीवो में हैं वे बृहत्चैतन्य हैं या अणु चैतन्यहै वे घनरसरूपहैं या

मधुरसरूप है ऐसो जो शुद्ध आपनो रूप जानै तौ रतन तेरे गांठि में है ताको भर्म तुम रामनाम बिना नहीं जान्यो कि वा साहबको है मनमायाब्रह्मको नहींहै काहेते कि गुरुवालोग तिहारी पारख छोरि लियो और और तिहारो साहब बनाइ दियो सो कबीरजी कहै हैं कि जो ऐसो मनुष्य शरीर में साहब को ज्ञान न भयो कि मैं साहबको हौं तो या अवसर बीतिगये कहे या शरीर छूटि गये फेरि रतन जो है आपने स्वरूपको ज्ञान कि मैं साहब को अंश हौं सो पुनि न मिलैगो और साहब को ज्ञान कैदेनवारो राम नाम न मिलैगो व आगे जे कहिआये पञ्चाङ्गोपासनावारे कापालिकादिकमतवारे व्याकरणी सांख्य मीमांसावारे नैयायिक कणादवारे शंकरवेदान्ती नास्तिकमतवारे जो या कहै हैं कि हमारे मतमें काहे मुक्ति नहीं होय है सो कहै हैं पञ्चाङ्गोपासना तौ सगुण है सो सत रज तम ये गुण माया के हैं सो मायाते माया नहीं छूटै है या असंभव है और कापालिकादिक व्याकरणादिक भैरवको मानै हैं सो वेद विरुद्ध है ई मुक्तिदाता कोई नहीं हैं तामें प्रमाण "मुक्तिदाता च सर्वेषां राम एव न संशयः" और वैयाकरणशब्द ब्रह्मते मुक्ति मानै हैं सो केवल शब्द ब्रह्मके जाने मुक्ति नहीं होय है जब शब्द ब्रह्म को जानिकै परब्रह्म को जानै तब मुक्ति होइ है तामें प्रमाण " शब्दे ब्रह्मणि निष्णातो न निष्णायात्परे यदि ॥ श्रमस्तस्य श्रमफलो ह्यधेनुमिव रक्षतः ॥" और ज्योतिषी कालज्ञानते मुक्ति मानै हैं सो कालहूके काल जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके बिना जाने मुक्ति नहीं होयहै तामें प्रमाण "यः कालकालो गुणी सर्ववेत्ता" और सांख्यवारे प्रकृतिपुरुषते मुक्ति मानै हैं सो पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र हैं तिनके बिना जाने मुक्ति नहीं होइहै तामें प्रमाण "वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्" और पूर्वमीमांसावारे कर्मते मुक्ति मानै हैं सो कर्मते मुक्ति नहीं होय है कर्म त्यागे ते मुक्ति होयहै तामें प्रमाण " न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैके अमृतत्वमानशुरिति श्रुतेः" और नैयायिक ईश्वर श्रीरामचन्द्र

ही हैं तामें प्रमाण "तमीश्वराणां परमं महेश्वरम्" और कणादवारे नौगुणध्वंस मुक्ति मानै हैं सो नौगुणध्वंस ही मुक्ति नहीं होयहै नौगुणध्वंस भये उपरान्त जब भक्ति होयहै तब मुक्ति होय है तामें प्रमाण "ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति। समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम्" और शङ्कर वेदान्ती ब्रह्मज्ञान करिकै मुक्ति मानै हैं सो जीवब्रह्म कधी होतही नहीं है तामें प्रमाण "सत्य आत्मा सत्यो जीवः सत्यं भिदः सत्यं भिदः" और नास्तिक चारि प्रकार के हैं सौगत १ विज्ञानवादी २ सौत्रांत्रिक ३ चार्वाक ४ सो सौगतनामके आत्मा क्षणिक नाशवान् मानै हैं जैसे घट सो आस्तिक मतते बिरुद्ध है काहेते कि आत्मा को नित्य मानै है १ विज्ञानवादीपदार्थमात्र का ज्ञानस्वरूप मानै है सो आस्तिक मत में बाधक है काहेते कि जो क्षणिकज्ञानके बाहर दूसर पदार्थ नहीं मानै है तो ज्ञानाश्रय आत्मा के हित राते होइ २ और सौत्रांत्रिक गुणरूप आत्मा मानै है कौन गुण सुख विशेषगुण सो आस्तिक मतते विरुद्ध है काहेते आस्तिक सुखरूप सुखाश्रय आत्मा को मानै है ३ और चार्वाक शरीरै को आत्मा मानै है काहेते प्रत्यच्च है सो आस्तिक मतते विरुद्ध है काहेते शरीर ते अभिन्न आत्मा को मानै है याही रीति उदयनाचार्य बौधाधिकार ग्रन्थमें बहुत नास्तिकन को खण्डन कियो है ४ और कछु हमहूं कहै हैं और सौगत जो आत्मा को क्षणिक नाशवान् मानैंगे और चार्वाक जो शरीर को आत्मा मानैंगे तो जो क्षणिक नाशवान् आत्मा होत तौ भूत कैसे होत याते सौगत निराकरण भयो और जो शरीरै आत्मा होयगो तौ मुर्दा कैसे होइगो शरीर काटिहूडारै चैतन्यरहैगो और विज्ञानवादी जो आत्मा को ज्ञानस्वरूप मानैगो तो अज्ञान कैसे होयगो और सौत्रांत्रिक सुख गुणस्वरूप आत्मा मानै है तो गुणतो बिना गुणी रहतई नहीं है सो गुणी को है जो कहो अरहन को अथवा जिनको गुण मानै है जीवात्मा को तो गुणगुणी को समवाय है गुणगुणी को छोड़िकै

नहीं रहे है सो जीव जो अज्ञानी भयो सो जाको गुण है जीव सोऊ अज्ञान भयो जो चार्वाक काले कै प्रत्यक्ष मानैहै गुणगुणी को नहीं मानैहै वेद शास्त्रको कहो मिथ्या मानौ हौ सो ग्रहण शास्त्र में लिखैहै सो परतही है सो वेद को कहो कैसे मिथ्या मानै तुम्हारे शास्त्र में लिखै है कि पृथ्वी नीचेको चली जाइहै सो जो पृथ्वी चलीजाती तौ पाथर फेंकेते फेरि कैसे पृथ्वी में मिलतो काहे से कि पाथर हलुक है बिलम्बपूर्वक आवाचाही पृथ्वी गरू है जल्दी जावा चाही ताते तुम्हारे ग्रन्थ झूठे हैं वेद शास्त्र सांचे हैं सो श्रीरामचन्द्र विना तुम मिथ्या जन्म गमाइ दियो ॥ ४ ॥

इति छठवां कहरा समाप्तम् ॥ ६ ॥

अथ सातवां कहरा ॥ ७ ॥

रहहु सँभारे राम बिचारे कहत अहौ जो पुकारेहो १ मूड़मुड़ाय फूलिकै बैठे मुद्रापहिरि मजूसाहो। ताहि उपर कछु छार लपेटे भितर भितर घरमूसा हो २ गाउँ बसत है गर्वभारती माम काम हंकारा हो। मोहिनि जहां तहां लै जैहै नहिं पतिरहै तुम्हारा हो ३ मांझ मँझरिया बसै जो जानै जनहैहै सो थीराहो। निर्भय गुरु कि नगरिया तहँवां सुख सोवै दास कबीराहो ॥ ४ ॥

रहहु सँभारे राम बिचारे, कहत अहौ जो पुकारे हो १
मूड़मुड़ाय फूलि कै बैठे, मुद्रा पहिरि मजूसा हो ॥
ताहि उपर कछु छार लपेटे, भितर भितर घर मूसा हो २

श्रीकबीरजी कहे हैं कि पुकारे कहौ हौं कि श्रीरामनाम को बिचारत हे जीवौ ! यह मनको सँभारे रहौ अनत न जान पावै मैं पुकारे कहौ हौं अनत जायगो तौ मारो जायगो १ ऊपर ते मूड़ मुड़ाय कै काने में मुद्रा पहिरिकै अङ्ग में छार लपेटि कै मजूसा कहे गुफा में बैठे व प्राण चढ़ाइ कै मानन लगे कि हमहीं ब्रह्म हैं सो ऊपर ते तो बहुत रङ्गन कियो पै भीतर भीतर उनको घर मूसिगयो कहे साहब को भूलिगये ॥ २ ॥

गाउँ बसत है गर्ब भारती, माम काम हंकारा हो ॥
मोहिनि जहां तहां ले जैहै, नहिं पतिरहै तुम्हारा हो ३

यह शरीररूपी जो गाउँ है तामें गर्ब को जो भारा है सो थिर भयो कहे यह मान्यो कि यह शरीर मेरो है तब माम जो है ममता व कामादिक जे हैं अहंकार तेहिते भरिगयो सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि मोहिनि जो है मोहि लेनवारी माया सो जहां रहै है तहैं तोको ये सब कामादिक लैजै हैं जो यह मानिराख्यो है कि प्राण चढ़ाइ कै ब्रह्माण्ड में लैगये माया ते भिन्न ह्वैगये सो या पति तिहारी न रहैगी जब समाधिते जीव उतरैगो तब पुनि माया में परिजाउगे ॥ ३ ॥

मांझ मँझरिया बसै जो जानै, जन ह्वैहै सो थीराहो ॥
निर्भय गुरु कि नगरिया तहवां, सुखसोवैदासकबीराहो४

सो मांझ जो है माया काहेते कि जीव साहब के बीच में माया को आवरण है तौने के मँझरिया में जो जन बसै जानै है कि माया के बीच में बसो है और माया वाको ग्रहण नहीं करिसकै है जैसे जल में कमल जल नहीं स्पर्श करिसकै है काहेते साहब को जानै है सहज समाधि लगाये है तेई जन थिर रहै हैं अथवा साहब व जीव के मांझ कहे बिचवादक रामनाम तौने मँझरिया कहे जामिन है साहब के पास पहुँचाइबे को तौने रामनाम में जो कोई बसै जानै है कि मकाररूप मैं हौं रकाररूप साहब है मैं सदा को दास हौं व राम नाम सर्वत्र पूर्ण है ऐसो जो कोई जानै सो थिररहै है तामें प्रमाण गोसाईं की चौपाई "अगुण सगुण बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी" फिर प्रमाण श्लोक "रकारश्शेषलोकश्चअकारो मर्त्यसंभवः। मकारश्शून्यलोकश्च त्रयोलोका निरामयाः" तामें प्रमाण कबीर जी का "क्या नांगे क्या बांधे चाम। जो नहिं चीन्है आतमराम ॥ नांगे फिरै योग जो होई। बनको मृगा मुकुति गो कोई ॥

मूड़ मुड़ाये जो सिधि होई। मूड़ीभेड़ि मुक्ति क्यों न होई ॥ बिंद राखे जो खेलहि भाई। खुसरै कौन परमगति पाई ॥ पढ़े गुने उपजै हंकारा। अधधर बूड़े वार न पारा ॥ कहै कबीर सुनो रे भाई। रामनाम बिन किन सिधि पाई" व थिरह्वैके गुरु कहे सबते श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र के नगर कहे साकेत में कबीर जे जीव ते उनके दास ह्वै तहां सुख सों सोवै हैं वहां और देवके उपासनावारे अहंब्रह्मास्मिवारे जे हैं ते नहीं जाइसके हैं वे मायाही में रहे आवै हैं ॥ ४ ॥

इति सातवां कहरा समाप्तम् ॥ ७ ॥

अथ आठवां कहरा ॥ ८ ॥

क्षेम कुशल औ सही सलामत कहहु कौनको दीन्हाहो। आवत जात दुनौ बिधि लूटे सरबसंगहरिलीन्हा हो १ सुरनरमुनि जेते पीर औलिया मीरा पैदा कीन्हा हो। कहँलौं गिनैं अनन्तकोटिलै सकल पयाना दीन्हा हो २ पानी पवन अकाश जाहिगो चन्द्र-जाहिगो सूराहो। वह भी जाहिगो यह भी जाहिगो परत काहु को न पूराहो ३ कुशलै कहत कहत जग बिनशै कुशल कालकी फांसी हो। कह कबीर सबदुनिया बिनशल रहल राम अबिनाशी हो ॥४॥

क्षेम कुशल औ सहीसलामत, कहहु कौनको दीन्हाहो॥
आवत जात दुनौं बिधि लूटे, सरबसंगहरिलीन्हाहो १

श्रीकबीरजी कहै हैं क्षेम कहे कल्याणस्वरूप सदा रहै व कुशल कहे सबबात में कुशल होय अर्थात् सर्वज्ञ होय व सहीसलामत कहे जेहिके सहीते जीव सलामत ह्वैजाय अर्थात् जेहिके अपनाय लीन्हेते जीवको जनन मरण छूटिजाय ऐसे जे अपने गुण हैं ते साहब कौने जीवको अपने बिना जाने दीन्ह है अर्थात् काहूको नहीं दीन ऐसे जे साहब हैं सरब संग कहे सबके अन्तर्यामी तिनको या काल जीवको आवत कहे जनन और जातकहे

मरण दूनो विधि में लूट्यो अर्थात् जब आयो तब गर्भ को ज्ञान नाश कै दियो और जब जाइगो तब वही को नाश ह्वैगयो साहब ते चिन्हारी ना करन दियो ॥ १ ॥

सुर नर मुनि जेते पीर औलिया, मीरा पैदा कीन्हा हो ॥
कहँलौं गिनैं अनन्त कोटिलै, सकल पयाना दीन्हा हो २

व सुर-नर-मुनि जे हैं व पीर जे हैं व औलिया जे हैं व मीर जे बादशाह हैं तिनको पैदा करत भयो और कहांलौं गिनैं अनन्त कोटि जीवनको पैदाकरि पयाना कराइ देतभयो ॥ २ ॥

पानी पवन अकाश जाहिगो, चन्द्र जाहिगो सूराहो ॥
वहभीजाहिगोयहभीजाहिगो, परत काहुको न पूराहो ३
कुशलैकहत कहतजगविनशै, कुशल कालकी फांसीहो॥
कहकबीरसबदुनियाबिनशल, रहलरामअबिनाशी हो ४

पानी व पवन व आकाश व चन्द्रमा और सूरा कहे सूर्य और यह भी कहे यह जगत् और वह भी कहे ब्रह्म सो ये सब चले जायँगे सबको काल खायलियो है काहूकी पूर नहीं परी है ३ सो कुशलै कहत कहत कहे कुशलै माने माने जग सब मरिगयो कुशल कोई न रहे कुशल काल की फांसी है जाकी फांसी में सब परे हैं सो कबीरजी कहे हैं कि सब दुनिया विनशिजायहै जो राम करिकै जन्म बिनाशी है सोई रहिगे अर्थात् रामके दासई अबिनाशी हैं इनका नाश नहीं होय है सो या बाल्मीकीय रामायण में प्रसिद्ध है अङ्गद हनुमान् आदिकन को नाश नहीं भयो है ॥ ४ ॥

इति आठवां कहरा समाप्तम् ॥ ८ ॥

अथ नवां कहरा ॥ ९ ॥

ऐसन देहनिरापन बौरे मुये छुवै नहिं कोई हो। डण्डक डोरवा तोरिलै आइनि जो कोटिक धन होईहो १ उरध श्वासा उपंगजक तरासा हंकराइनिपरिवाराहो। जो कोई आवै बेगि चलावै

पल यक रहन न हाराहो २ चन्दन चूर चतुर सब लेपैं गल गज-मुक्ताहाराहो। चोंवन गीध मुये तन लूटै जम्बुक वोदर फाराहो३ कहै कबीर सुनो हो सन्तो ज्ञानहीन मतिहीना हो। यकयक दिन यह गति सबहीकी कहा राव का दीनाहो ॥ ४ ॥

ऐसन देह निरापन बौरे, मुये छुवै नहिं कोई हो ॥
डण्डकडोरवा तोरिलैआइनि, जो कोटिक धन होई हो १
उरधश्वासा उपंगजगतरासा, हंकराइनि परिवारा हो ॥
जो कोई आवै वेगि चलावै, पलयक रहन न हाराहो २
चन्दन चूर चतुर सब लेपैं, गल गजमुक्ताहारा हो ॥
चोंचन गीध मुये तन लूटै, जम्बुक वोदर फारा हो ३
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, ज्ञानहीन मतिहीना हो ॥
यकयक दिन यह गति सबहीकी, कहा रावका दीनाहो ४

ऐसी देह निरानपनी है कहे अपनी नहीं है और सब अर्थ प्रकटई है श्रीकबीरजी कहै हैं कि जे मतिते हीन मूर्ख परम पुरुष श्रीरामचन्द्र के ज्ञान ते हीनरहैं तिनके शरीर की दशा ऐसे एक दिन सबकी है चाहै रङ्क होइ चाहै राउ होइ है ॥ १ । ४ ॥

इति नवां कहरा समाप्तम् ॥ ९ ॥

अथ दशवां कहरा ॥ १० ॥

हौं सबहिन में हौं नाहीं मोहिं बिलग बिलग बिलगाई हो। ओढ़न मेरे एक पिछौरा लोग बोलहिं यकताई हो १ एक निरन्तर अन्तर नाहीं ज्यों घटजल शशि झाई हो। यकसमान कोइ समुझत नाहीं जरा मरण भ्रम जाई हो २ रैनिदिवस मैं तहँवों नाहीं नारि पुरुष समताई हो। नामैं बालक नामैं बूढ़ो ना मोरे चेलिकाई हो ३ तिरबिध रहौं सबन में बरतों नाम मोर रमराई हो। पठये न जाउं आने नहिं आऊं सहजरहौं दुनिआई हो ४ ज़ोलहा तान बान नहिं जानै फाट बिनै दशठाई हो। गुरुप्रताप

जिन जैसो भाष्यो जन विरले सुधिपाई हो ५ अनन्तकोटि मन हीरा बेध्यो फिटकी मोलन आई हो । सुरनरमुनि वाके खोजपरे हैं किछुकिछुकबिरनपाई हो ॥ ६ ॥

हौं सबहिनमें हौं नाहीं मोहिं, बिलगबिलग बिलगाईहो॥ ओढ़न मेरे एक पिछौरा, लोग बोलहिं यकताई हो १

गुरुमुख ॥ मैं सबमें हौं औ सब न होउं ऐसे मोको बिलग बिलग कहे जुदा जुदा बिलगाइकै वेद कह्यो इहां दुइबार बिलग बिलग कह्यो सो एकतो चित् कहे जीवब्रह्म ईश्वर अचित्कहे मायाकालकर्म स्वभावपृथ्वीआदिक माया के कार्य सब सो ये दोहुन में अन्तर्यामीरूप ते व्यापक हौं सो जीवब्रह्म ईश्वर चित् तत्त्व में मैं व्यापक हौं तामें प्रमाण “ त्रिष्यवायुत्तमदेहेषु प्रविष्टोदेवताऽभवत् । मर्त्यादिधमदेहेषु स्थितोभजतिदेवता” (इति श्रुतिः) “ एकोदेवःसर्वभूतेषु गूढःसर्वव्यापीसर्वभूतान्तरात्मा” (इति श्रुतिः) “ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहमितिगीतायाम्” अचितौ में व्यापकहैं तामें प्रमाण “विष्टभ्याहमिदंकृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत्” (इति गीतायाम्) सो चित् अचित् दोऊ व्याप्यपदार्थ हैं व्यापक मैं हौं सो चित् अचित्रूप पिछौरा दुइ छोरिया मेरो ओढ़न है सर्वत्र महींहौं सो वेदको तात्पर्य न जानिकै लोग यकताई बोलै हैं कि एकई ब्रह्म है पिछौरा ओढ़ैयाको एकही कहै हैं दूसरा नहीं कहै हैं लोग जो यकताई कहै हैं सो कौनीतरह ते कहै हैं सो कहै हैं ॥ १ ॥

एक निरन्तर अन्तर नाहीं, ज्यों घटजल शशिझाईहो॥ यकसमानकोइ समुझत नाहीं, जरामरण भ्रमजाईहो २

वही ब्रह्म निरन्तर एक सर्वत्र है या लोग बोलै हैं सो कहा अन्तर नहीं है अर्थात् अन्तर है कैसे जैसे जलभरे घटनमें शशि की छाया वामें व्याप्य व्यापक बनो है सो एक जो मैं सो समान कहे सबमें सम व्यापक हौं ताको कोई व्याप्य व्यापक

कोई नहीं समझै है तौ कहा उनको जरा मरण भ्रमजाइ है अर्थात् नहीं जाइ है सो अन्तर्यामी रूपते व्यापक साहब कहि चुके अब निजरूपते जहां रहै हैं तहांकी बात कहै है ॥ २ ॥

रैनिदिवस मैं तहँवों नाहीं, नारि पुरुष समताई हो ॥
ना मैं बालक ना मैं बूढ़ो, ना मोरे चेलिकाई हो ३

जहां मैं रहौ हौं तहां न राति है न दिन है और सब नारी रूप हैं जो पुरुषहू जाइ है सो नारिनरूप ते रास में प्राप्त होइ है पुरुष नहींहौं और समताई है जैसे सच्चिदानन्दरूप हौं ऐसे ओऊ सच्चिदानन्दरूप हैं मैं न बालक हौं न बूढ़ हौं सदा किशोररूप बनो रहौहौं और न मोरे चेलिकाई कहे काऊ वह उपदेश्य नहीं है अर्थात् अज्ञानी कोऊ नहीं है सब मेरे रूपको जानै हैं वहां राति दिन नहीं है तामें प्रमाण "न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः। यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम" ॥ ३ ॥

तिरबिध रहौं सबन में बरतौं, नाम मोर रमराई हो ॥
पठयेन जाउँ आने नहिं आऊँ, सहजरहौं दुनिआईहो ४

तिरबिध रहौं कहे जीव ब्रह्म ईश्वरन में जो अन्तर्यामीरूप ते रहौहौं व सबनमें बरतौं कहे माया, काल, कर्म, स्वभाव इन में जो अन्तर्यामीरूप ते रहौहौं सो इनमें जो रमनवारो अन्तर्यामी मेरो रूप ब्रह्म ताहूको मैं राईहौं सो पठये नहीं जाउँहौं न आने ते आऊँहौं अर्थात् जो कहूं न होउँ तौ ना आने आऊँ पठयेजाउँ सर्वत्रैतो हौं सो यही रीतिते सहजही या दुनिया में अन्तर्यामी के अन्तर्यामीरूप ते पूर्णहौं ॥ ४ ॥

जोलहा तानबान नहिं जानै, फाट बिनै दशठाईं हो ॥
गुरुप्रताप जिन जैसो भाष्यो, जनाबिरले सुधिपाई हो ५

जोलहा जे हैं जीव ते तानबान नहीं जानैं अर्थात् वा हंस स्वरूप पोशाक बनै नहीं जानैं जो पहिरि के मेरे समीप आवै फाट बिनै दशठाईं कहे दश हैं छिद्र जिनमें ऐसो जो शरीर

ताहीको बिनै है कहे नानायतन मैं परिकै वही कर्मकरै है जामें अनेक जन्म शरीर धारण करत जाय है जो कहो कोऊ जानत ही नहीं है तौ गुरुके प्रतापते जो कोऊ मेरो रूप भाष्यो है जैसो सो तौ कोई बिरलाजन सुधि पायो है अर्थात् जाको सतगुरु मिल्यो है सोई पायो है ॥ ५ ॥

अनन्तकोटि मन हीरा बेध्यो, फिटकी मोल न आई हो ॥
सुर नर मुनि वाके खोजपरे हैं, किछुकिछुकबिरनपाईहो ६

अनन्तकोटि जे जीव हीरा हैं तिनमें मन बेध्यो है सो या हीरारूप जीवको फिटिकिरिउ को मोल न रहिगयो सो सुर जे हैं मुनि जे हैं नर जे हैं ते वही अपने स्वरूप को खोजे हैं सो किछु किछु कहे थोरहूते थोर जीव पाइन है और कोई नहीं पायो जे आपनोरूप मेरोरूप गुरुप्रताप जानि शरीर को बिनै या मनको त्याग्यो है तेई पायो है अथवा किछु किछु कबिर न पाई कहे साकल्य करिकै हमारो भेद तो कोई जानतही नहीं है जे अपनो रूप मेरोरूप जानत जे जीव ते किछु किछु भेद पायो है ॥ ६ ॥

इति दशवां कहरा समाप्तम् ॥ १० ॥

अथ ग्यारहवां कहरा ॥ ११ ॥

ननँदीगेतै बिषमसोहागिनि तैं निदले संसारागे। आवत देखि एक सँगसूती तैं अरु खसमहमारागे १ मोरे बाप की दोय मेहरिया मैं अरु मोर जेठानीगे। जब हम ऐनिरसिक के जग में तबहिं बात जग जानीगे २ माई मोर मुवल पिताकेसंगहिसररचि मुवलसंघातागे। अपनो मुई और लै मुवली लोग कुटुम्ब सँग साथागे ३ जौलौं सांसरहै घटभीतर तौलौं कुशल परैहैगे। कह कबीर जब श्वास निसरिगै मंदिर अनल जरैहैगे॥ ४ ॥

ननँदीगेतै बिषम सोहागिनि, तैं निदले संसारागे ॥
आवत देखि एकसँग सूती, तैं अरु खसम हमारागे १

कबीरजी जीवनपर दयाकैके ज्ञानशक्ति ते कहै हैं कि मगहमें मिथिलादेश में परस्पर स्त्रीलोग बताती हैं आदर कैके तब गे सम्बोधन देती हैं सो या पदमें गे सम्बोधन है अथवा गे बिगरे जीव को कहैहैं हे गये जीव ! सो कबीरजी जीव की चित् शक्ति साहब की स्त्री सो ज्ञानशक्ति जो साहब की बहिनी तासों कहै हैं ननँदी याते कहै हैं कि प्रथम साहब को ज्ञान प्रकट होय है पीछे साहब प्रकट होयहै सो साहब की बहिनी भई सो चित्-शक्ति जीव कहै हैं कि तैं हमते सब जीव है तिन पर तैं विषम ह्वै गई व पति की सुहागिनि ह्वैगई कैसी है तैं कि निदले संसारा कहे तैं तो संसार को निदरेन है हमपर विषम ह्वै गई है काहू को ज्ञान करि साहब को मिलाय दियो काहू को ज्ञान हरि संसारी करि दियो गे जो कहै है सो साहब को पति मानि वाको ननँदि मानि गारी दै कहै है कीन्ही तैं कहा कि समष्टि ते व्यष्टि करै वाली ऐसी माया को आवत देखिकै हमार खसम जो साहब है तिनके सङ्ग सूती जाइ तैं अपने भाई को पति बनाये तैं अर्थात् साहब को ज्ञान काहू जीव के न रहिगयो साहब को ज्ञान साहिबै को रहिगयो ॥ १ ॥

मोरे बापकी दोय मेहरिया, में अरु मोर जेठानीगे ॥
जब हम ऐलिरसिकके जगमें, तबहिं बात जगजानीगे २

सो जौने धोखाब्रह्म को मानि हम संसारी भये हैं सो जो हमारो बाप है धोखाब्रह्म ताके दोय मेहरिया हैं जीव चित्शक्ति कहै हैं कि एक मैं और एक मोर जेठानी जौन साहब अज्ञानमूला प्रकृति धोखाब्रह्म ते जेठ समष्टि रहही है सो तब कारणरूपाहै अब कार्यरूपा भई अर्थात् चित्शक्ति जीव कहै है कि वही माया में परिकै " अहं ब्रह्मास्मि " हम सब मानत भये जो कहो तुम या बात कसकै जान्यो तो जब हम ऐलिरसिक के जगमें कहे जब हम रसिक जे साहब तिनके लोक में आये तब हम या बात जान्यो

कि "अहं ब्रह्मास्मि" हम माने न रहे और संसार में परिबेही कियो साहब को ज्ञान हमारे नहीं भयो सो साहब या लोकके मालिक जे हैं तेई हैं तिनके जाने संसार छूटै है ब्रह्म साहब नहीं है॥ २॥

माईमोरमुवल पिताके संगहि, सररचिमुवलसँघातागे॥
अपनो मुई और लै मुवली, लोगकुटुम्ब सँगसाथागे ३

सो पिता जो हमारो धोखाब्रह्म जौने के द्वारा हम व्यष्टि भये सो जब मिट्यो तब मोरमाई जो मूलाप्रकृति सो सर कहे चिता बशीकार बैराग रचिकै पिता के साथ वाहू सती ह्वैगई अर्थात् जब धोखाब्रह्म मिट्यो तब रामा अज्ञानरूपी माया सोऊ छूटि गई साहब को ज्ञान ह्वैगयो सो अपना मरी और जेतने नाता मानिराख्यो लोग कुटुम्ब तिनहूं को साथही लै जातभई अर्थात् अहंब्रह्म छोड़िदियो जगत् के नाते छोड़िदियो एक साहब को जानिलियो उनहीं नाता मानलियो सो हे ज्ञानशक्ति! जब तू या मोको जनायो तब मैं जान्यो॥ ३॥

जौलौं सांस रहै घट भीतर, तौलौं कुशल परैहैगे॥
कहकबीर जब श्वास निसरिगे, मन्दिर अनलजरैहैगे ४

सो जबलौं श्वास है तबलौं कुशल है तू काहे बिषम ह्वैगई जबलौं श्वास है तबलौं इनके आइकै साहब को प्राप्ति कराय कै इनको दुःख छुड़ाइदेउ श्वास निसरिगये पर यम धरि लैजायँगे अनेकयोनि में भटकत बागौगे शरीर जरिजाइगो सो हे ज्ञानशक्ति! तब तू न आयसकौगी तेहिते ईजीवन पर तुम आयसकी हो साहब को ज्ञान ह्वैसकैहै॥ ४॥

इति ग्यारहवां कहरा समाप्तम्॥ ११॥

अथ बारहवां कहरा॥ १२॥

या माया रघुनाथकि बौरी खेलनचली अहेराहो। चतुर चिक-

निया चुनि चुनि मारै काहु न राखै नेरा हो १ मौनी बीर दिगम्बर मारे ध्यानधरन्ते योगी हो । जङ्गलमें के जङ्गममारे माया किनहुँ न भोगी हो २ वेदपढ़न्ता पांड़े मारे पूजा करते स्वामी हो । अर्थ बिचारे पण्डितमारे बांध्यो सकल लगामी हो ३ शृङ्गीऋषि बन भीतर मारे शिरब्रह्माके फोरी हो । नाथ मछन्दर चले पीठदै सिंहलहूमें बोरी हो ४ साकठके घर कर्ता धर्ता हरिभक्तनकी चेरी हो । कहै कबीर सुनोहो सन्तो ज्यों आवै त्यों फेरी हो ॥ ५ ॥

या माया रघुनाथ कि बौरी खेलनचली अहेरा हो ।
चतुर चिकनिया चुनि चुनि मारै काहु न राखै नेरा हो १
मौनी बीर दिगम्बर मारै ध्यान धरन्ते योगी हो ।
जङ्गल में के जङ्गम मारे माया किनहुँ न भोगी हो २
वेद पढ़न्ता पांड़े मारे पूजा करते स्वामी हो ।
अर्थ बिचारे पण्डित मारे बांध्यो सकल लगामी हो ३
शृङ्गीऋषि बन भीतर मारे शिर ब्रह्माके फोरी हो ।
नाथ मछन्दर चले पीठ दै सिंहलहूमें बोरी हो ४
साकठ के घर कर्ता धर्ता हरिभक्तनकी चेरी हो ।
कहै कबीर सुनोहो सन्तो ज्यों आवै त्यों फेरी हो ॥ ५ ॥

ज्ञानशक्ति कबीर को जवाब दियो मैं कहा करौं मोको कोई जीवन के उदय होन नहीं देइ है माया सबको बांधि लियो है सो कबीरजी जीवनसों कहै हैं यह माया छुइ जान न पावै जवहीं आवै तबहीं यासों मुंह फेरिलेउ तबहीं बचौगे या सबको बांधि लियो है तुमहूंको बांधिलेइगी और इहां रघुनाथ की बौरी जो माया कह्यो सो रघु है जीव ताके नाथ जे श्रीरामचन्द्र तिनकी या माया है सो जीवनको धरि धरिकै शिकार खेलैहै सो जब अपने नाथ को या जीव जानै जिनकी या माया है तब तब या माया ते छूटैगो अपने बल ते जीव न छूटिसकैगो अथवा या

माया रघुनाथ की बौरी है रघुनाथ की बौरी कहे रघुनाथ को न जानिबो यहै याको स्वरूप है ॥ १ । ५ ॥

इति बारहवां कहरा समाप्तम् ॥ १२ ॥

इति कहरा सम्पूर्णम् ॥

अथ बसन्त प्रारभ्यते ॥

जहँ बारहि मास बसन्त होय । परमारथ बूझै बिरल कोय १ जहँ बर्षै अग्नि अखण्डधार । बन हरियर भो अट्ठारभार २ पनिया अन्दर तेहि धरे न कोय । वह पवन गहे कशमलन धोय ३ बिनु तरुवर जहँ फूलो अकास । शिव औ बिरञ्चि तहँ लेहिं बास ४ सनकादिक भूले भँवर भोय । तहँ लखचौरासी जीव जोय ५ तोहिं जो सतगुरु सतसो लखाव । तुम तासु न छांड़हु चरण भाव ६ वह अमरलोक फल लगे चाय । यह कह कबीर बूझै सो खाय ॥ ७ ॥

जहँबारहिमास बसन्तहोय । परमारथबूझै बिरलकोय १
जहँबर्षैअग्निअखण्डधार । बनहरियरभो अट्ठारभार २

जाके कहे जौने साहबके लोकमें बरहो मास बसन्त बनो रहै है सो या परमार्थ कोई बिरला बूझै है सो वा रूपकातिशयोक्ति अलंकार करि कहै हैं १ और बसन्तऋतु में सूर्यने अग्नि बर्षै है अखण्डधार बन जो है अठारह भार बनस्पती सो हरियर होत जाइ हैं और साहबके लोक में कोटिन सूर्य को प्रकाश है परन्तु सब को ताप हरिलेनवारो है वहां के सब बन सन्तानक आदिक हरियर रहै हैं ॥ २ ॥

पनियाअन्दरतेहिधरेनकोय । वहपवनगहेकशमलनधोय३
बिनुतरुवरजहँफूलोअकास । शिवऔबिरञ्चि तहँलेहिंबास४

और बसन्तऋतु में वृक्षनके अन्दरन में कोई पानी नहीं धरैहै

चन्द्र जो है सो अमृत को स्रवै है ताहीको गहे पवन वृक्षन के कश्मलन को धोयडारै है व साहब को लोक कैसो है कि पनिया अन्दर कहे वा रसरूप है ताको कोई नहीं जानै है वही रसरूप लोक को स्मरण पवन है ताके गहे कहे किंधते कश्मल जे पापहैं ते धोय जात हैं अथवा कामादि जे कश्मल हैं ते धोयजात हैं ३ और बसन्तऋतु में जहां तरुवर नहीं हैं ऐसो जो आकाश सोऊ पुहुपनके परागन करिकै फूलो देखो परैहै कैसो है आकाश जहां शिव बिरञ्चि बास लेहिहैं अर्थात् बास कीन्हे हैं सुगन्धित ह्वैरह्यो है और साहबहिको लोक कैसोहै कि जेहिको प्रकाश चैतन्याकाश बिना तरुवरै जगतूरूप फूल फूलै है शिव बिरञ्चि आदिक बास लेहिहैं ॥ ४ ॥

सनकादिकभूलेभवँरभोय । तहँलखचौरासीजीवजोय ५

बसन्तऋतु में चौरासीलाख योनि जीवनकी कौन गनती सनकादिक जे मुनि हैं तेऊ पुष्पमकरन्द में भोयकै भवँर की नाईं भूलि जाहि हैं और साहब को लोकप्रकाश ब्रह्म कैसा है कि सनक, सनन्दन, सनत्कुमार जाके भवँर में भोयकै कहे परिकै भूलै हैं चौरासीलाख योनि जीवनकी कौन गनती है ॥ ५ ॥

तोहिंजोसतगुरुसतकैलखाव । तुमतासुनछांड़हुचरणभाव ६
वहअमरलोकफललगेचाय । यहकहकबीरबूझैसोखाय ७

सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि ऐसो जो साहब को लोक जहां बरहो मास बसन्त बनोरहै है तौन जो सतगुरु कहे साहब के बताय देनवारे तोको सत्यकै लखायो होय तो तुम ताके चरण को भाव न छांड़ो भाव यह है कि वा लोक के मालिक जो साहब हैं तिनहूंको बताय देयँगे वह अमरलोक कैसा है कि जहां चारिउ फल अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष आनन्दै के फल लगेहैं सोहे जीवो! या बात जो कोई बूझै है सोई खाय है साहब के धाम में बरहो मास बसन्तरहै है तामें प्रमाण कबीर की साखी ज्ञानसागर की

सदा बसन्त होत तेहि ठाऊं । संशयरहित अमरपुर गाऊं ॥ जहँवां रोग शोग नहिं होई । सदा अनन्द करै सब कोई ॥ चन्द्र सूर्य देवस नहिं राती । बरणभेद नहिं जाति अजाती ॥ तहँवां जरा मरण नहिं होई । क्रीड़ा बिनोद करै सबकोई ॥ पुहुपविमान सदा उजियारा । अमृत भोजनकरै अहारा ॥ काया सुन्दरको परवाना । उदितभये जिमि षोड़श भाना ॥ येता एक हंस उजियारा । शोभितचिकुर उदय जनु तारा ॥ बिमलबास जहँवां पौढ़ाही । योजनचार घ्रान जो जाहीं ॥ श्वेत मनोहर छत्राशिरछाजा । बूझि न परै रङ्क अरु राजा ॥ नहिं तहँ नरक स्वर्गकी खानी । अमृत बचन बोलै भल बानी ॥ अस सुख हमरे घरनमहँ कहैं कबीर बुझाय । सत्य शब्दको जानै अस्थिर बैठे आय ॥ ६ । ७ ॥

इति पहिला बसन्त समाप्तम् ॥ १ ॥

अथ दूसरा बसन्त ॥ २ ॥

रसना पढ़ि भूलेश्रीबसन्त । पुनिजाइ परिहौ तुम यमके अंत १
जो मेरुदण्ड पर डङ्क दीन्ह । सो अष्टकमल पर जारि दीन्ह २
तब ब्रह्म अग्नि कीन्हो प्रकास । तहँ अर्ध ऊर्ध्व बहती बतास ३
तहँ नव नारी परिमल सो गाव । मिलि सखी पांच तहँ देखन जाव ४ जहँ अनहद बाजा रहल पूर । तहँपुरुष बहत्तरि खेलैं धूर ५
तैं मया देखि कस रहसि भूलि । जस बनस्पती बन रहल फूलि ६
यह कह कबीर ये हरिके दास । फगुवा मांगै बैकुण्ठबास ॥ ७ ॥

रसनापढ़िभूलेश्रीबसन्तपुनिजाइपरिहौतुमयमकेअन्त१

श्रीबसन्त कहे ऐश्वर्यरूप जो बसन्त ताको रसना में पढ़िकै मन बचन के परे जो साहबके लोक को बसन्त ताको तुम भूलि गयो रसनामें पढ़ि जो कह्यो तामें धुनि यह है कि औरै देवतनकी उपासनामें बड़ो ऐश्वर्य प्राप्ति होइहै यह पोथिनमें पढ़िपढ़ि भुलाइगयो वाहूको जीभै भरेते कह्यो कछु प्राप्ति नहीं भै सो तुम

फेरि यम के अन्तकहे संसार में परिहौ और जो लेहू पाठ होय तो रसना में श्रीबसन्त को पढ़ि लेहु नहीं तो पुनि यमके अन्त कहे फन्द में परिहौ ॥ १ ॥

जो मेरुदण्डपरडङ्कदीन्ह। सोअष्टकमलपरजारिदीन्ह २

और जो या गुमान करो कि हम योगवारे हैं हम यम के अन्त में न परेंगे सो जो तुम मेरुदण्डमें प्राण खैंचिकै मेरुदण्डपर डङ्का दीन्ह्यो और अष्ट जो हैं आठों कमल मूलाधार, विशुद्ध, मणिपूरक, स्वाधिष्ठान, अनहद, आज्ञाचक्र, सहस्रारचक्र, अठयें सुरतिकमल जहां परमपुरुष है तामें पहुँचिकै जारि दीन्ह अर्थात् योगौ की खबरि भूलिगई ॥ २ ॥

तहँब्रह्मअग्निकीन्होप्रकास। तहँअर्धऊर्ध्वबहतीबतास ३

तहँनवनारीपरिमलसोगाव। मिलिसखीपांचतहँदेखनजाव ४

सो वा ज्योतिमें लीन भयो जीवत हैं ब्रह्मअग्नि प्रकाशकरत भई व बतास जो अर्धऊर्ध्वश्वास सो वहै बहत में अर्थात् बहिरे न आवत भै श्वास वहैं रहत भै या भांति जीव तखत में बैठि मालिक भयो गांउकारा बसन्त देखै है ३ सो यहां परिमल कहे गन्ध का गांव हैं शरीर में पृथ्वीतत्त्व अधिकहै सो गन्ध का गांव शरीर है तौने में नौ नारीहैं कहे नौ राहहैं तहां पांचों जे ज्ञानेन्द्रिय हैं तेई सखी देखन जाय हैं अर्थात् वहै लीन ह्वैगई है ॥ ४ ॥

तहँ अनहदबाजारहलपूर। तहँ पुरुषबहत्तरिखेलैंधूर ५

तैंमयादेखिकसरहसिभूलि। जसबनस्पतीबनरहलफूलि ६

बसन्तमें बाजा बजैहै सो अनहद बाजा जहां पूरि रह्यो है तहां बहत्तरि पुरुष जे बहत्तरि कोठाहैं ते धूरि खेलै हैं अर्थात् चैतन्यता न रहिगै ५ सो बसन्तमें बनस्पती फूलैहैं ऐसे या माया फूलिरही है तामें समाधि उतरे फिरि काहे भूले अथवा जैसे बनस्पती फूलै हैं ऐसे गैवगुफा में सुधा पीकै नागिनी फूलीहै तामें तैं काहे भूलि

रहैहै कहा वा माया के बहिरे है समाधि नागिनिही के अधार तो समाधिउहै ॥ ६ ॥

यहकह कबीर ये हरिकेदास। फगुवामांगै बैकुण्ठबास ७

सो या हठयोग करिकै जानै कि मैं मुक्ति होउँगो तो या समाधि में मायाहीते नहीं छूट्यो मुक्ति कहां होइगो ताते श्रीकबीर जी कहै हैं कि हे जीवात्मा, हरिके दास! तैं बैकुण्ठबास को फगुवा मांगै अर्थात् फगुहार फगुवा खेलाइ कै फगुवा मांगै है सो तैं हठयोग कियो ताको फल फगुवा राजयोग मांगु जाते बैकुण्ठबास होइ॥७॥

इति दूसरा बसन्त समाप्तम् ॥ २ ॥

अथ तीसरा बसन्त ॥ ३ ॥

मैं आयउँमेहतरमिलन तोहिं। अबऋतुबसन्तपहिराउमोहिं १ हैलम्बीपुरियापाइछीन। तेहिसूतपुरानाखुंटातीन २ शरलागेसै तीनिसाठि। तहँकसनबहत्तरि लाग गांठि ३ खुरखुरखुरखुरचलै नारि। वहबैठिजोलाहिनिपलथिमारि ४ सोकरिगहमेंदुइचलहिं गोड़। ऊपरनचनीनचिकरैकोड़ ५ हैं पांच पचीसौ दशहु द्वार। सखी पांच तहँराचीधमार ६ वेरङ्गबिरङ्गी पहिरैंचीर। धरिहरि के चरण गावै कबीर ॥ ७ ॥

मैं आयउँमेहतरमिलनतोहिं।अबऋतुबसन्तपहिराउमोहिं १
हैलम्बी पुरिया पाइछीन। तेहि सूत पुराना खुंटातीन २

जीव कहै हैं मेह कही बड़ेको और जो बड़ाते बड़ा होइ ताको मेहतर कहै हैं फ़ारसीमें सो ईश्वरनते ब्रह्मते जो बड़े श्रीरामचन्द्र हैं तिनसों जीव कहै है कि मैं तुमको मिलन आयो हौं सो जौने लोक में सदा बसन्त रहैहै सो मोको पहिरायो अर्थात् मेरो प्रवेश कराइदीजे तानारूप जो मेरे शरीरको बसन्त ताते छुड़ाइये १ सो लम्बो पुरिया कौन कहावै जो ताना तनै है पूरै हैं सो मैं बासननि करिकै बहुत लम्बा है रह्योंहौं कहे बासननि करिकै मैं संसार में

फैलिरह्यो हौ और पाई वा कहावैहै जो ताना साफ़ करै है सो या आत्माको साफ़ करिबो बहुत झीन है कहे जब कोई बिरले सन्त मिलैं तब आत्मा शुद्ध होइ काहेते कि यह सूतजीव पुरान कहे अनादिकालते तीन खूंटा जोहैं सत, रज, तम तामें बँधो है ॥ २ ॥

शरलागेसैतीनिसाठि। तहँ कसनिबहत्तरिलागगांठि ३
खुरखुरखुरखुरचलैनारि। वहबैठिजोलाहिनिपलथिमारि ४

पाई में शर लागेहै सो शरीरमें तीनिसै साठि हाड़हैं तेई शर हैं बहत्तरि जे कोठा हैं तिनमें बहत्तरिहज़ार नसनकी गांठि एक एक कोठनमें लाग हैं तेई कसनी हैं ३ व बिनत में जौन बीच है चलावैहै सो नारि कहावैहै सो या शरीर में नाड़ी जो है सो खुरखुरखुरखुर चलै है और जोलाहिनि जो है बुद्धि सो पलथी मारिकै बैठी है अर्थात् देहही में निश्चय करिकै बैठी है ॥ ४ ॥

सोकरिगहमैंदुइचलहिंगोड़। ऊपरनचनीनाचिकरैकोड़ ५

सो यह तरह को जो शरीर है सो करिगहहै जहां जोलाहिनि बैठे है धमारि महल में होय है सो शरीरै महल है सो करिगह में जोलाहिनि दोऊ अंगूठा चलावै है ऊपर तानामें नचनी कोड़करै है कहे नाचै है इहां शरीररूपी करिगह में बुद्धिरूपी जोलाहिनि बैठिकै कहूं शुभकर्म में निश्चय करैहै कहूं अशुभकर्म में निश्चय करैहै यही दोऊ अंगूठा को चलाइबो है और वृत्तिबुद्धिकी कहूं शुभ में कहूं अशुभ में जाय है यही नचनी है सो नाचैहै और धमारिपक्ष में नाचतमें नचनीको गोड़चलैहै ऊपर कोड़करैहै कहे भाव बतावै है ॥ ५ ॥

हैंपांच पचीसौ दशहु द्वार। सखी पांच तहँ राची धमार ६

और पांच जे हैं अविद्या अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश, और पचीसौ जे तत्वहैं जीवमाया, महत्तत्व, अहंकार, शब्द, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श दशौ इन्द्रिय एकमन पञ्चभूतई और ताही में दशौद्वार ऐसे शरीरमें पांचसखी जे हैं पञ्चप्राणते धमारि रचतभई

और तानापक्ष में पांच पचीस तत्त्वके कहे सबकोरीके साजु आइगे और धरि कहे सब अपने अपने धमार में लगिगे केड़ावारे माड़ीवारे पुरियावारे कारिगहवारे तानासाफ़ करैवारे और धमारिपक्षमें पांचसखी धमारि रचैहैं दुइ एकबार कियो एकदेखैयाभो ॥ ६ ॥

वे रङ्गबिरङ्गीपहिरैंचीर । धरि हरिकेचरण गावै कबीर ७

पाँचो जे सखी हैं पांचतत्त्वनका रङ्गबिरङ्ग चीरपहिरैं स्वरोदय में लिखेहै श्वास तत्त्वन के रङ्ग जुदेजुदे देखे परे हैं और कोरी के घरके अनेक रङ्गके चीर पहिरै हैं और धमारिपक्षमें केशरि कस्तूरी करिकै गुलाल भोड़र करिकै चीर रङ्ग बेरङ्ग होय हैं ते पहिरै हैं सो यहितरहकी धमारि या संसार में है ताते हरि को चरण धरिकै कबीर गावै है कहैहै या धमारि को प्रथम या कहि आये हैं जौने लोक में सदा बसन्त है तहां प्रवेश करावो और इहां धमारि कहै हैं तात्पर्य यह कि या शरीर को तानाबाना जनन मरण में परि रह्यो है या धमारि तुमको देखायो जो रीझे होहु तो मैं यह फगुवा यही मांगौ हौं कि जहां सदा बसन्तहै वा लोकमें प्रवेश करावो और न रीझ्यो होहु तौ तुम हरिहौ या तानाबाना धमारि हरिलेउ या कहो कि ऐसी धमारि तैं न रचु कबीर कहैहै कि हे जीव! हरिके चरण धरि ऐसी बिनयकरु ॥ ७ ॥

इति तीसरा बसन्त समाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ चौथा बसन्त ॥ ४ ॥

बुढ़िया हँसि कह मैं नितहि बारि । मोहिं ऐसि तरुणि कहु कौनि नारि १ ये दांतगये मोर पान खात । औकेशगयलमोरगँग नहात २ औनयनगयल मोर कजलदेत । अरु बैसगयल परपुरुष लेत ३ औजानपुरुषवामोरअहार । मैं अनजानेको करशृँगार ४ कह कबीर बुढ़ि अनँदगाय । पूतभतारहि बैठि खाय ॥ ५ ॥

बुढ़ियाहँसिकहमैंनितहिबारि।मोहिंऐसितरुणिकहुकौनिनारि १

बुढ़िया जो माया है सो हँसिकै कहैहै कि मैं नित्यही बारी हौं माया अनादि है याते बुढ़िया कह्योहै तामें प्रमाण "अजामेकां-लोहित" इत्यादि और हँसिकै कह्यो याते या आयो कि साधन करिकै छोटे छोटे या कहे हैं कि हमको माया जीर्ण हैगई है अर्थात् अब छूटि जाइ है मैं नित्यही बारी हौं सबके कार्यरूप ते उत्पन्न होतरहौं हौं और मोहिं अस तरुणि कौनि नारि है जो सब जीवन संग करौंहौं और बुढ़ाउँ कबौं नहीं हौं ॥ १ ॥

दांत गये मोर पानखात। औकेशगयलमोरगँगनहात२

और दांत गये पान खात जो कह्यो सो पान जो है वेद ताको तात्पर्य जो जानैहै यही खाब है सो वेद तात्पर्यार्थ जानेते कामा-दिक जे मेरे दांत हैं जिनते जीव सज्जनन को ज्ञान खाय लेइहै ते दांत मेरे जातरहे काम क्रोधादिक माया के दांतहैं तामें प्रमाण ॥ रत्नयोग ग्रन्थकबीर को "कामक्रोधलोभमोहमाया। इन दांतन सों सब जग खाया" और साहब को जो कथा चरित्ररूप गङ्गा तामें जो नहाय है अर्थात् सुनै है सो कुमतिरूप केश मेरे जातरहे हैं ॥ २ ॥

औनयनगयलमोरकजलदेत। अरुबैसगयलपरपुरुषलेत ३

साहब को ज्ञानरूप कज्जल जो कोई दियो तो मेरे नयन जो निरञ्जनहैं सो जातरहे हैं अर्थात् चैतन्यके योग करिकै माया देखै है और नयन को निरञ्जन कहैहैं तामें प्रमाण कबीरजी को "न-यन निरञ्जन जानि भरम में मत परै" और बैस जो मोर है सो परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको लेत अपने वशकै बैस मोर जात रहै है अर्थात् चारिउ शरीर मोर नहीं रहते ॥ ३ ॥

औजानपुरुषवामोर अहार। मैं अनजानेको कर शृँगार ४

और जानपुरुषवा कहे जो या कहै हैं कि हम ब्रह्म को जानि लियो हमहीं ब्रह्म हैं ते तो हमार आहारही हैं आपने आपमै को भूलिगये और अजान जे हैं तिनको शृङ्गारे किये हैं नाना विष

दैकै लोभाय लेउहौं अर्थात् जानौ अजान को। विद्या अविद्यारूपी ते वश करि लियो है पुनि याहै जिनको साहब आपनो हंसरूप दियो है तेई बचे हैं या उपसंहार कियो ॥ ४ ॥

कह कबीर बुढ़ि अनँद गाय । पूत भतारहि बैठिखाय ५

सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि बुढ़िया जो माया है सो जैसो या पद कहिआये तैसो आनन्दसों गावै है वेद शास्त्रादिकन में वाणी-रूप ते सबजीव सुनै हैं परन्तु या नहीं जानैहैं कि जीव व ब्रह्म माया के भितरै है पूत जो जीव है और भतार जो ब्रह्म है ताको बैठिखाय है अर्थात् जब जीव संसारी भयो तब संसार में डारिकै खायो जब ब्रह्म में लीन भयो और सृष्टिसमय आयो तब वा ब्रह्मज्ञानहूं नहीं रहिजाइहै ब्रह्महूं को खायो ॥ ५ ॥

इति चौथा बसन्त समाप्तम् ॥ ४ ॥

अथ पांचवां बसन्त ॥ ५ ॥

तुम बूझहु पण्डित कौन नारि । कोइ नाहिं बिआहल रह कु-मारि १ यहि सबदेवन मिलि हरिहि दीन्ह । तेहि चारिहुयुग हरि सङ्गलीन्ह २ यह प्रथमहि पद्मिनिरूप आय । है सांपिनि सबजग खेदि खाय ३ या बर युवती वे बारनाह । अतितेज तिया है रैनि ताह ४ कह कबीर सब जग पियारि । अब अपने बलकवै रहल मारि ॥ ५ ॥

तुमबूझहुपण्डितकौननारि । कोइनाहिंबिआहलरहकुमारि १
यहिसबदेवनामिलिहरिहिदीन्ह । तेहिचारिहुयुगहरिसंगलीन्ह २

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हे पण्डित! तुम बूझौ तो या शङ्खिनी, ह-स्तिनी, चित्रणी, पद्मिनी चारि प्रकार की नारिनमें कौन नारि है या माया अर्थात् एकौके लक्षण नहीं मिलते एकौके लक्षण जो मिलते तो कुमारि न रहती बिआहिजाती याही ते अबतक कुमारि है १ जब समुद्र माथिगयो लक्ष्मी कढ़ी सो सबदेव मिलि हरिको देतभये सो हरि चारिहुयुग संगहा राखत भये ॥ २ ॥

यहप्रथमहिपद्मिनिरूपआय। हैसांपिनिसबजगखेदिखाय ३
या बर युवती वे बारनाह। अति तेज तिया है रैनि ताह४

प्रथम तो ब्रह्म जे हैं विष्णु तिनकी नाभि में कमलिनी है सो लक्ष्मीरूप है सो आय अब धनरूप सांपिनि है संसार को खेदि खाय है ३ या माया बर युवती है कहे श्रेष्ठ है बार जे लरिका ब्रह्मा-विष्णु-महेश तेई याके नाह हैं और तेह कहे तौन जो संसाररूपी रैनि है तौने में अति तेज है ॥ ४ ॥

कहकबीरसबजगपियारि। यहअपनेबलकबैरहलमारि५

सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि या माया सब जगत् को पियारि है आपन बालक जे जीव तिनको मारि रही है अर्थात् सब जीवन को बांधे है जनन मरण करावै है ॥ ५ ॥

इति पांचवां बसन्त समाप्तम् ॥ ५ ॥

अथ छठवां बसन्त ॥ ६ ॥

माई मोर मनुष है अति सुजान। धन्धा कुटि कुटिकरै बिहान १ बड़े भोर उठि आँगन बहार। बड़ी खांच लै गोबरडार २ बासीभात मनुषले खाय। बड़ घैला लै पानी जाय ३ अपने सैंयां बांधी पाट। लैरे बेंचौ हाटै हाट ४ कह कबीर ये हरिके काज। जोइयाके ढिंगर कौन है लाज ॥ ५ ॥

माईमोरमनुषहै अतिसुजान। धन्धाकुटिकुटिकरैबिहान १
बड़े भोर उठि आँगनबहार। बड़ी खांच लै गोबरडार२
बासीभात मनुष लै खाय। बड़ घैला लै पानी जाय ३
अपने सैंयां बांधी पाट। लैरे बेंचौ हाटै हाट ४
कह कबीरयेहरिकेकाज। जोइयाके ढिंगरकौन है लाज५

जीवशक्ति कहै है कि हे माई, माया! मोर मनुष जो मन सो बड़ा सुजान है धन्धा जो बाल, पौगण्ड, किशोर ताही को कूटि

कूटि कहे कैकै बिहान कहे देहान्त कैदेइहै सुज्ञान याते कह्यो कि मोको नहीं जानदेइ है आपही जानै है बड़े भोर कहे जब दूसर भयो तब आँगन बहार कहे गर्भवास में ज्ञानदियो अन्तःकरण साफ़ कियो यही बहारबो है और बड़ी खांच जो प्रसूतवायु तौने ते गर्भरूप गोबर टास्यो अर्थात् बाहर निकास्यो और बासीभात जो पूर्वकर्म ताको दुःख सुख आपही भोगै है और घैला जो बुद्धि है ताको लैकै गुरुवन के इहां नानाबानीरूप पानी ताको लेनजाइ है अर्थात् बुद्धिते निश्चय करै है ऐसो जो मोर सैंया है ताको पाट जो ज्ञान तामें बांधे पाऊं तो हाट हाट में बेचौं अर्थात् साधुनको संग करिकै अपनो व याको सम्बन्ध छोड़ाय देउँ सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि जोइया जो जीव तौनेको ढिंगरा जो मन सो हरि जे श्रीरामचन्द्र तिनको काज में जो नहीं लागै तो याको कौन लाज है धुनि याहै जो साहब में लगै तो यहू शुद्ध होइ जाय ॥ १ । ५ ॥

इति छठवां बसन्त समाप्तम् ॥ ६ ॥

अथ सातवां बसन्त ॥ ७ ॥

घरही में बाबुल बढ़ी रारि । अँग उठि उठि लागै चपलनारि १ वह बड़ी एक जेहि पांच हाथ । तेहि पचहुनके पच्चीस साथ २ पच्चीस बतावैं और और । वे और बनावैं कई ठौर ३ सो अन्तर मध्ये अन्त लेइ । झक झेलि झुलावै जीवदेह ४ सब आपन आपन चहैं भोग । कहुकैसे परिहै कुशल योग ५ बीवेक बिचार न करै कोइ । सब खलक तमाशा देखलोइ ६ मुख फारि हँसै सब राव रङ्क । तेहि धरे न पैहौ एकअङ्क ७ नियरे बतावैं खोजैं दूरि । वह चहुँदिशि बागुरि रहलपूरि ८ है लक्ष अहेरी एक जीउ । ताते पुकारै पीउ पीउ ९ अबकी बारै जो होय चुकाव । ताकी कबीर कह पूरि दाव ॥ १० ॥

घरहीमेंबाबुलबढ़ीरारि। अँगउठिउठिलागेंचपलनारि १
वहबड़ीएक जेहि पांचहाथ। तेहि पँचहुनकेपच्चीससाथ२

हे बाबू, जीव! तुम्हारे घटही में कहे शरीरही में रारि बढ़ी है काहेते कि हमेशा उठि उठि चपलनारि जो माया सो तेरे पीछू लगी है १ तामें वह एक सबते बड़ी काया जाके पांच हाथ कहे पांच तत्त्व हैं पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश-पुनि एक एक तत्त्वन के साथ पांच पांच प्रकृति हैं अस कैके पचीस प्रकृति हैं सो कहै हैं मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार चौथ पांचों अन्तःकरण जामें चास्यो ओर रहै हैं ये सब निराकार हैं ऐसे आकाशके साथ है और प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान ये कर्म करावै हैं एते वायु के साथ हैं और आंखी, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा येऊ विषय को प्रकाश करै हैं एते अग्नि के साथ हैं और शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध सो येऊ पांचौ तृप्तिकर्ता हैं एते जलपञ्चक हैं जलके साथ हैं और हाथ, पांव, मुख, गुदा, लिङ्ग येऊ आधारभूत हैं एते पृथ्वी के साथ हैं यही रीति पँचहुनतत्त्वन के साथ पचीसौ प्रकृति हैं॥ २॥

पच्चीस बतावैं और और। वे और बतावैं कई ठौर ३

सो ये पचीसौ प्रकृति जेहैं ते और और अपने विषय को बतावै हैं सो कहै हैं अन्तःकरण को विषय निर्विकल्प मन को विषय संकल्प विकल्प चित्त को विषय वासना बुद्धि को विषय निश्चय अहंकार को विषय करतूति प्राणको विषय चलब अपान को विषय छोड़ब समान को विषय बैठब उदान को विषय उठब व्यान को विषय पौढ़ब कान को विषय सुनब आंखों को विषय रूपदर्शन नाक को विषय सूंघिबो, जीभ को विषय बोलिबो त्वचा को विषय स्पर्श शब्द को विषय राग रस स्पर्श को विषय कोमलत्व, कठिनत्व, शीतलत्व, उष्णत्व रूप को विषय सुन्दरत्व रस को विषय स्वाद गन्ध को विषय सुबास इनको वे पचीसौ

प्रकृति बतावै हैं ई सब कई ठौर और बतावै हैं कहे चौरासीलक्ष योनि जीव को बतावै हैं ॥ ३ ॥

सो अन्तरमध्ये अन्तलेइ। झकझोलि झुलाउबजीवदेइ४
सब आपनआपन चहैंभोग। कहकैसेपरि है कुशलयोग५
बीवेकबिचारनकरै कोइ। सब खलक तमाशा लखै सोइ६

सो ये विषय कैसे हैं कि अन्तर में अन्त लेइहैं कहे गाड़िजाते हैं झकझोलिकै कहे जोरावरी झुलाउब जो आवागमन है सो जीव को देइ है ४ सो ये सब आपन आपन भोग चाह्यो तब जीव के कुशल को योग कैसे परै अर्थात् कैसे कल्याण पावै ५ सो ये बन्धन को विवेक कहे विचार कोई नहीं करै है कि क्या सांच है क्या झूंठ है सब खलक कहे सब संसार के लोक वाणी विषयन को तमाशा देखै हैं और वही में अरुझि रहे हैं ॥ ६ ॥

मुख फारि हँसैं सबरावरङ्क। तेहि धरन न पैहौ एकअङ्क७
नियरे बतावैं खोजैं दूरि। वह चहुँदिशि बागुरि रहलपूरि ८
है लच्च अहेरी एक जीउ। ताते पुकारै पीउ पीउ ९

सो वही विषय में परिकै मुख फारिकै रावरङ्क सब हँसैं हैं या दुःखदायी है विषय या अङ्क कोऊ नहीं धरन पावै है तेहिको ७ सो वेद, शास्त्र, पुराण साहब को तो नियरेही बतावै हैं और दूरि खोजै हैं काहेते कि मायारूप बागुरि सर्वत्र पूरिरही है ८ सो ये तो सब शिकारी हैं और लक्ष कहे निशाना एक जीवहो है ताते हे जीव! तैं पीउ पीउ पुकारै तबहीं तेरो बचाउ है ॥ ९ ॥

अबकीबारै जो होय चुकाव। ताकी कबीर कह पूरिदाव१०

सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि अबकी बार जो मानुषशरीर में चुकाव होयगो व साहब को न जानैगो तो ताकी पूरि दांव है काहेते कि अबकी बारके चूके फेरि ठिकाना न लगैगो चौरासी लाख योनिन में भटकैगो फेरि जो मानुष शरीर पावैगो तब

पुनि नानामतन में लगिकै चौरासीलाख योनि में भटकैगो उद्धार न होइगो ताते अब की बार जो समुझै व साहब को जानै तौ तेरो पूरो दांवपरै तामें प्रमाण कबीरजी की साखी ॥ लख चौ-रासी भटकिकै, पौमें अटको आय। अबकी पौ जो नापरै, तौ फिरि चौरासी जाय ॥ १० ॥

इति सातवां बसन्त समाप्तम् ॥ ७ ॥

अथ आठवां बसन्त ॥ ८ ॥

कर पल्लवके बल खेलैनारि। पण्डित जोहोयसोलेइ बिचारि १ कपरा नहिं पहिरै रहउघारि। निरजीवैसोधनअतिपियारि २ उलटी पलटीबाजै सो तार। काहुहिमारै काहुहिउबार ३ कहकबीरदासन के दास। काहुहि सुखदै काहुहि उदास ॥ ४ ॥

करपल्लवकेबलखेलैनारि। पण्डितजोहोयसोलेइबिचारि १

सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि नारि जो माया सो पल्लव जो राम नाम सो करमें लैकै वाही के बल खेलैहै जब प्रथम यह जगत् की उत्पत्ति भई तब रामनाम लैकै बाणी निकसी है तामें प्रमाण "रामनाम लै उचरी बाणी" ताही जगत्मुख अर्थ में चारिउवेद ईश्वर ब्रह्म सब संसार निकसेहैं तामें प्रमाण सायरको "रामनाम के दोई अक्षर चारिउ वेद कहानी" सो तौनेहीके बलते सबसंसार बांधि लियोहै सो जो कोई पण्डित होय सो बिचारिकै लैलेइ जगत्-मुख साहबमुख यामें दोऊ अर्थ हैं सो साहबमुख अर्थ राम नाम में लेइ जगत्मुख अर्थ केवल माया खेलैहै ताको छोड़िदेइ ॥ १ ॥

कपरानहिंपहिरैरहउघारि। निरजीवैसोधनअतिपियारि २
उलटीपलटी बाजैसोतार। काहुहि मारै काहुहि उबार ३

सो वा नारि माया कैसी है कि कपरा नहीं पहिरै उघारही रहैहै अर्थात् वह माया सबको मूंदे है वाको मूंदनवारो कोई नहीं है जो कहो वाको ब्रह्म मूंदे होइगो तो निर्जीव जो ब्रह्म सो धन

जो माया ताको अतिपियारहै अर्थात् वाहूको शबलित कियेहै २ व पुनि कैसी है कि उलटी पलटी तार बाज है कहे काहूको अविद्या में डारिकै नरक देइ है और काहूको विद्यारूप ते स्वर्ग सत्यलोकादि देइ है । ३ ॥

कह कबीरदासनके दास । काहू सुखदै काहू उदास ४

श्रीकबीरजी कहै हैं कि दासन के दास कहे ब्रह्मादिक जे माया के दास तिनहूं के दास जीव तुम्हारी माया कैसे छूटै वे ब्रह्मादिकै माया ते नहीं छूटे या माया कैसी है काहूको तो सुखद है काहू कैति उदास है कहे उनको स्पर्श नहीं करिसकै है अर्थात् जे साहब को जानै हैं तिनकी कैति उदास है तिनहीं के दास तुमहूं होउ तब उबार होइगो माया ब्रह्मजीव के परे श्रीरामचन्द्रही हैं तामें प्रमाण "राम एव परंब्रह्म राम एव परंतपः । रामएव परंतत्त्वं श्रीरामो ब्रह्मतारकम्" (इति श्रुतेः) ॥ ४ ॥

इति आठवां बसन्त समाप्तम् ॥ ८ ॥

अथ नवां बसन्त ॥ ९ ॥

ऐसो दुर्लभ जात शरीर । रामनामभजुलागैतीर १ गयेबेणुबलिगेहैं कंस । दुर्योधनगयेबूड़ेबंस २ पृत्थु गये पृथ्वीकेराव । बिक्रम गयेरहेनहिंकाव ३ छौचकवैमण्डलीकेभार । अजहूंहो नल देखुबिचार ४ हनुमत कश्यप जनकौबार । ईसब रोंके यमके धार ५ गोपीचन्द भल कीन्होयोग । रावणमरिगो करतै भोग ६ जातदेखुअस सबकेजाम । कहकबीर भजु रामैनाम ॥ ७ ॥

ऐसो दुर्लभ जात शरीर । रामनाम भजु लागै तीर १
गये बेणु बलि गेहैं कंस । दुर्योधन गये बूड़े बंस २
पृत्थु गये पृथ्वी के राव । बिक्रम गये रहे नहिं काव ३
छौचकवैमण्डली के भार । अजहूंहो नल देखु बिचार ४
हनुमतकश्यपजनकौबार । ई सब रोंके यम के धार ५

गोपीचँदभलकीन्होयोग । रावण मरिगो करतै भोग ६
जातदेखुअससबकेजाम । कह कबीर भजु रामै नाम ७

चौरासीलाख योनिन में भटकत भटकत यह शरीर पायो दुर्लभ सो वृथा ही जाय है सो रामनाम को भजु सेवा करु जाते तीरलगै बेणु, बलि, कंस, दुर्योधन, पृथु, बिक्रम ये छवो चक्रवर्ती भूमिमण्डल के ते शरीर छोड़िकै जातभये सो नर अजहूं बिचारि कै तू देखु व हनुमत, कश्यप, अदिति जनक कहे ब्रह्मा बार कहे सनकादिक ते ये अबलौं रामनाम कहि यमको धार रोंके हैं अर्थात् जे उनके मत में जाय रामनाम कहे हैं ते संसारते छूटिही जाय हैं उनपै यमको बल नहीं चलै है और गोपीचन्द योगी रहे रावण भोगी रह्यो पै रामनाम नहीं भजे ते दोऊ मरिगये सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि याही भाँति सबके जामा जे शरीर ते जात देखै हैं ताते रामनाम भजु 'भज सेवायाम्' धातु है ताते तैंहूं राम नाम की सेवाकरु तबहीं संसारसमुद्र के तीर लगैगो नहीं तो बहि जायगो राम नाम के जपैया नहीं मरे हैं तामें प्रमाण कबीरजी को पद ॥ हम न मरैं मरि है संसारा । हम को मिला जिलावनवारा ॥ अब ना मरौं मोर मन माना । सोई मुवा जिन राम न जाना ॥ सो कत मरै सन्त जन जीवै । भरिभरिरामरसायन पीवै ॥ हरि मरिहैं तो हमहूं मरि हैं । हरि न मरैं हम काहे को मरिहैं ॥ कह कबीर मनमनहिंमिलावा । अमरभयेसुखसागरपावा ॥ १७ ॥

इति नवां बसन्त समाप्तम् ॥ ९ ॥

अथ दशवां बसन्त ॥ १० ॥

सबहीमदमातेकोइ न जाग । सोसँगहिचोरघर मुसनलाग १
योगीमदमातेयोगध्यान । पण्डितमदमातेपढ़िपुरान २ तपसीमद
मातेतपकेभेव । संन्यासीमातेकरिहमेव ३ मोलनामदमातेपढ़िसो
साफ । काजी मदमाते कैनिसाफ ४ शुकदेव मते ऊधौ अकूर ।
हनुमत मदमाते लिये लँगूर ५ संसारमत्यो माया के धार । राजा

मदमातेकरिहँकार ६ शिवमातिरहे हरिचरणसेव । कलिमाते नामदेव जयदेव ७ वहसत्यसत्यकहसुम्रित बेद । जसरावणमारेघरके भेद ८ यहचञ्चलमनकेअधमकाम । सोकहकबीरभजुरामनाम॥९॥

सबहीमदमातेकोइनजाग।सोसँगहिचोरघरमुसनलाग १
योगीमदमातेयोगध्यान। पण्डितमदमाते पढ़ि पुरान २
तपसी मदमाते तपकेभेव । संन्यासी माते करि हमेव ३
मोलनामदमातेपढ़िसोसाफ़ । काजीमदमातेकैनिसाफ़ ४
शुकदेवमतेऊधौ अकूर । हनुमतमदमातेलिये लँगूर ५
संसारमत्योमायाकेधार । राजा मद माते करि हँकार ६
शिवमातिरहेहरिचरणसेव । कलिमातेनामदेवजयदेव ७
वहसत्यसत्यकहसुम्रितबेद । जसरावणमारेघरके भेद ८
यहचञ्चलमनकेअधमकाम । सोकहकबीरभजुरामनाम९

यह पद को समेटिकै अर्थ करै है यह संसार में सबकोई मद में मातत भयो जगत् कोई न भयो सो जिनको जिनको यह पद में गनाय आये ते ते प्रथम जैसे रावण घरके भेदते मारे गयो तैसे मनके भेदते मारेगये परन्तु इन सबमें जे रामनामको जप्यो तेई छूटे हैं हनुमदादि शुकादि जे कहिआये यह मनके तो अधम काम हैं जे रामनामको नहीं जाने ते संसारही में परे ताते तैंहूं रामनामको भजु तबहीं तेरो उबार होइगो औरीभांति संसारही में परेरहैगो और संसारसागरको पारकरनवारो एकरामनामहीहै तामें प्रमाण॥ माधव दुख दारुण सहि न जाइ। मेरी चपल बुद्धि ताते का बसाइ॥ तन मन भीतर बस मदन चोर। तब ज्ञानरतन हरिलीन मोर॥ हौं मैं अनाथ प्रभु कहौं काहि। अनेकबिगूँचेमैं को आहि॥ औसनकसनन्दन शिवशुकादि। आपुन कमलापतिभो ब्रह्मादि॥योगी जङ्गम यति जटाधारि।अपने अवसर सब गयेहारि॥ सो कह कबीर करि सन्तसात। अभिअन्तरहरिसों करहु बात॥

मनज्ञानजानकरिकरि बिचार। श्रीरामनामभजुहोउपार ॥ १ । ६ ॥
इति दशवां बसन्त समाप्तम् ॥ १० ॥

अथ ग्यारहवां बसन्त ॥ ११ ॥

शिवकाशी कैसी भै तुम्हारि। अजहूंहो शिव देखहु बिचारि१
चोवा अरु चन्दन अगरपान। सब घर घर स्मृति होइ पुरान २
बहु बिधि भवनन में लगैं भोग। असनगरकोलाहलकरतलोग ३
बहु बिधि परजा निर्भय हैं तोर। तेहि कारण चित है ढीठ मोर४
हमरे बालकक्कर यहै ज्ञान। तोहीं हरिको समुझावै आन ५
जग जो जेहिसों मन रहललाय। सो जिवके मरे कहु कहँ समाय६
तहँ जो कछु जाकर होइ अकाज। है ताहि दोष साहब न लाज७
तब हर हर्षित ह्वै कहलभेव। जहँ हमहीं हैं तहँ दुसरकेव ८
तुम दिनाचारि मन धरहु धीर। पुनि जस देखेहु तस कहकबीर ॥९॥

शिवकाशीकैसीभैतुम्हारि। अजहूंहोशिवदेखहुबिचारि १
चोवाअरुचन्दनअगरपान। सबघरघरस्मृतिहोइपुरान २
बहुबिधिभवननमेंलगैंभोग। असनगरकोलाहलकरतलोग ३
बहुबिधिपरजानिर्भयहैंतोर। तेहिकारणचितहैढीठमोर ४

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जब मैं बालापन में साधन करत रह्यों है तबहीं देवतन को दर्शन होत रह्यो है सो मैं महादेवजीतेपूछ्यो कि यह काशी तुम्हारी कैसी भईहै अजहू तो बिचारि देखो तुम्हारी काशीमें चन्दन, चोवा, अगर लगावै हैं पान खाय हैं घर घर स्मृति पुराण होइ हैं विविध भांतिके मेवा पकवान भोग लगावै हैं यही रीतिते नगरमें कोलाहल लोग करिरहे हैं ऐसे परजा तुम्हारे निर्भय होइ रहे हैं तौने कारणते मोरो चित ढीठ होइ गयो है ॥ १ । ४ ॥

हमरेबालककरयहैज्ञान। तोहींहरिको समुझावै आन ५
जगजोजेहिसोंमनरहललाय। सोजिवकेमरेकहुकहँसमाय ६

सो हम जे सब बालक हैं तिनकर यहै ज्ञान है तुम जे हो महादेव और हरि जे हैं श्रीरामचन्द्र तिनको तो समुझवै काशीवाले आन हैं काहेते कि वेदद्वारा यह कहते हैं कि जब संसार छूटै है ज्ञान होइहै तब मुक्ति होइहै ये सब जो काशी में मरै हैं सो मुक्त ह्वैजाइ हैं भोग करै हैं सो यहू वेदद्वारा कहौहौं कि कहे विलक्षण समुझवै है ५ जगत् में जो जौनेमें मनलगावैहै सो शरीर छूटे कहो कहां समाय है अर्थात् जाहीमें मन लगावैहै ताहीमें समायहै यहू वेद में लिखे है ॥ अन्ते या मतिः सा गतिः ॥ सो हम तुमसों पूछै हैं कि विषय में मनलगाये मरै जे काशीके लोग ते कहांजायहैं॥६॥

तहँजोकछुजाकरहोइअकाज । हैताहिदोषसाहबनलाज७
तब हरहर्षित ह्वै कहल भेव। जहँहमहीं हैं तहँदुसरकेव८
तुमदिनाचारमनधरहुधीर।पुनिजसदेखेहुतसकहकबीर ९

सो जाकर अकाज होइ है ताहीको दोष है काहेते वाके कर्मही ते अकाज होइहै साहब जो आप हैं श्रीरामचन्द्र तिनको कौन लाज है जो आप काशीके जीवन्मुक्ति देइ हैं सो कौने हेतुते कहां और संसारी जीव आपका न होइ काशी आपका है ७ तब हर्षित ह्वैकै हर मोसे भेद बतायो कि जहां हमहैं तहां दूसर को है काशी में और सब संसार में जहां हम हैं अर्थात् हमको जे जानै हैं तेके कर्म औ कालईको जोर कैसकैं काहेते कि जब हम ब्रह्माते रामनाम पायो है तब जान्यो है ताहीते मुक्ति करै हैं रामनाम को उपदेश करि श्रीरघुनाथजी को ज्ञान देइ है वाको तब मुक्ति होइ है सो काशीहू में रामनाम दै मुक्ति करै है औरहू देश में रामनाम पाइकै मुक्ति ह्वैजाइहै ८ सो दिनचार तुम मनमें धीर धरो पुनि जस देख्यो तस हे कबीर ! तुम कह्यो अर्थात् जैसे हम रामनाम दैकै जीवनको उद्धार करते हैं तैसे तुमहूं करोगे तब तस देखोगे कि रामनाम ते कैसो विषयी होइ पै उद्धारई होइ जाइहै और काशी में रामनामही ते मुक्ति होइ है महादेव देइ हैं तामें प्रमाण " पेयं पेयं श्रवण-

पुटके रामनामाभिरामं ध्येयं ध्येयं मनसि सततं तारकं ब्रह्मरूपम्। जल्प्यं जल्प्यं प्रकृतिविकृतौ प्राणिनां कर्णमूले वीथ्यां वीथ्यामटति जटिलः कोऽपि काशीनिवासी" (इति स्कान्दे) ॥६॥

इति ग्यारहवां बसन्त समाप्तम् ॥ ११ ॥

अथ बारहवां बसन्त ॥ १२ ॥

हमरे कहलकर नहिं पतियार। आपु बूड़े नल सलिलैधार १ अन्धा कहै अन्ध पतिआय। जस बिश्वा के लगनै जाय २ सोतो कहिये अतिहि अबूझ। खसम ठाढ़ ढिग नाहीं सूझ ३ आपन आपन चाहहिं मान। झुठ परपञ्च सांच करि जान ४ झूठा कबहुं करौ नहिं काज। मैं तोहिं बरजौं सुनु निरलाज ५ छांड़हु पाखण्ड मानहुं बात। नहिंतौ परिहौ यमके हात ६ कह कबीर नल चहै न सोझ। भटकि मुये जस बन के रोझ ॥ ७॥

हमरेकहलकरनहिंपतियार। आपुबूड़ेनल सलिलैधार १
अन्धा कहै अन्ध पतिआय। जस बिश्वाकेलगनैजाय २
सोतो कहिये अतिहिअबूझ। खसमठाढ़ढिगनाहींसूझ३

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हमरे कहे ये जीव कोई नहीं पतियाय हैं साहब में कोई नहीं लगते हैं आप सुखी बानीरूप सलिल में बूड़ेजाते हैं बानी को पानी आगे कहिआये हैं १ आँधर जे गुरुवा लोग हैं ते नानामतन को बतावै हैं आँधर जे जीव ते ग्रहण करै हैं साहब को नहीं जानै हैं जैसे वेश्या की लगन व नानापुरुषते रमै है एकको जानतिही नहीं है ऐसे नाना उपासना माने हैं सो साहब को मानतही नहीं हैं २ सो ते जीवन को हम अतिही अबूझ कहै हैं काहेते कि श्रीरामचन्द्र अन्तर्यामीरूपते ढिगही में हैं तिनको नहींसूझै है ॥ ३ ॥

आपनआपनचाहहिंमान। झुठपरपञ्चसाँचकरिजान ४
झूठाकबहुंकरौनहिं काज। मैंतोहिंबरजौंसुनुनिरलाज ५

छांड़हुपाखंडमानहुंबात । नहिंतौ परिहौ यम के हात ६

आपन आपन मान जो है बड़ाई सिद्धता तौने को चाहे हैं झूठ परपञ्च जो धोखाब्रह्म आत्मै मालिक है याको सांच मानैहैं४ सो जो तैं या झूठो बिचार करिराखे है कि हमहीं ब्रह्म हैं आत्मा मालिक है सो ये झूठे काज तैं न करु हे निर्लज्जजीव! केतौ जन्म मारो गयो है पुनि वही काम करैहै सो मैं तोको बरजो हौं तू या काम न करु साहब को जानु ५ सो मेरीबात तू मानु पाखण्ड को छोड़िदे नहीं तो यम जे हैं तिनके हात कहे गड़ुवा में परिहौ यमदूत डाढ़ी पकरिकै डारिदेयँगे ॥ ६ ॥

कहकबीरनलचलेनसोझ । भटकिमुयेजसबनकेरोझ ७

सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि हे नल! सोझ कहे सूधो अन्तर्यामी जे साहब समीप तिनको न जान्यो दूरि हैं जे नाना उपासना तिनमें बनके रोझकी नाईं भटकिकै मरिगये अर्थात् रोझ औघट बाग तो है शिकारी सो भेंट भई मारोगयो ऐसे नाना उपासना करत रह्यो यमदूत डाढ़ी पकरि नरक में डारिदियो तामें प्रमाण "होइ हिस्साब तब ज्वाब का देहुगे पकरि फिरिस्त लै जाय डाढ़ी" औ साहिबैके जानेसे छूटैगो तामें प्रमाण कबीरजी को पद " चेतनदेकैरेजगधन्धा। रामनामको मरम न जानै मायाके रसअन्धा॥ जनमत तबहिं काह लैआया मरतकाहलैजासी। जैसे तरुवर बसत पखेरू दिवसचारिके बासी॥ आया थापी और न जानै जनमतही जरि काटी। हरि के भक्ति बिना यहि देही फिरि लौटे हिय फाटी॥काम अरु कोह मोह मद मत्सर पर अपवादा सुनिये। कहै कबीर साधुकी संगति रामनाम गुन भनिये ॥७॥

इति बारहवां बसन्त समाप्तम्॥ १२॥

इति बसन्त सम्पूर्णम्॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ चौंतीसी प्रारभ्यते ॥

ॐकार आदिहि जो जानै। लिखिकै मेटि ताहि फिरि मानै ॥ वै ॐकार कहै सबकोई। जिनहुँ लखा सो बिरला सोई १ कका कमल किरणिमें पावै। शशि बिकसितसंपुट नहिं आवै ॥ तहां कुसुंभरंग जो पावै। औ गहगहकै गगन रहावै २ खखा चाहै खोरि मनावै। खसमहिं छोड़ि दशौ दिशि धावै ॥ खसमहिं छोड़ि क्षमा ह्वैरहई। होय अखीन अक्षयपद गहई ३ गगा गुरुके बचनै मानै। दूसर शब्द करै नहिं कानै ॥ तहां बिहंग कलहुं नहिं जाई। औ गह-गहकै गगनरहाई ४ घघा घटबिनशै घट होई। घटही में घट राखु समोई ॥ जो घटघटै घटै फिरिआवै। घटहीमें फिरि घटै स-मावै ५ ङङा निरखत निशिदिन जाई। निरखतनैन रहा रट लाई ॥ निमिष एकलौं निरखै पावै। ताहि निमिषमें नैन छिपावै ६ चचा चित्ररचो बहुभारी। चित्रहि छोड़ि चेतु चित्रकारी ॥ जिन यह चित्र बिचित्र उखेला। चित्र छोड़ि तू चेतु चितेला ७ छछा आहि छत्रपति पासा। छाकिकै रहसि मेटि सब आसा ॥ मैं तोहीं छिन छिन समुझाया। खसम छोड़ि कस आप बँधाया ८ जजा ई तन जियतै जारो। यौबनजारि युक्ति जो पारो ॥ जो कुछ जानि जानि परजरै। घटहि ज्योति उजियारी करै ९ झझा अ-रुझि सरुझि कितजाना। हीठत ढूंढ़त जाहि पराना ॥ कोटिसुमेरु ढूंढ़ि फिरि आवै। जो गढ़गढ़ागढ़हिसोपावै १० ञञा निरखत नगरसनेहू। करु आपन निरुवारि सदेहू ॥ नहिं देखी नहिं आप भजाऊ। जहां नहीं तहँ तन मन लाऊ ११ टटा बिकट बात मनमाहीं। खोलि कपाट महल में जाहीं ॥ रहै लटपटे जुटि तेहिमाहीं। होहिं अटलते कतहुं न जाहीं १२ ठठा ठौर दूरि ठग नीरे। नितके निठुर कीन मनधीरे ॥ जेहिठगठग सबलोगसयाना। सो ठग चीन्हि ठौर पहिचाना १३ डडा डर कीन्हे डर होई।

डरही मैं डर राखु समोई ॥ जो डरडरै डरै फिरि आवै । डरही मैं पुनि डरहि समावै १४ ढढा ढूंढ़तई कत जाना । ढीगर डोलहि जाइ लोभाना ॥ जहां नहीं तहँ सब कछु जानी । जहां नदी तहँले पहिंचानी १५ रे णणा दूरि बसौरे गाऊं । णणा टूटै तेरा नाऊं ॥ मुयेयतेजिय जाहीघना । मुये यतादिक केतिक गना १६ तता अतित्रियोनाहिंजाई । तन त्रिभुवन में राखु छपाई॥जो तन त्रिभुवन माहँ छपावै । तत्त्वहिमिलि सो तत्त्व जो पावै १७ थथा थाह थहो नहिं जाई । यह थीरे वह थीर रहाई ॥ थोरे थोरे थिरहो भाई । बिन थम्भे जस मन्दिर जाई १८ ददा देखौ बिनशनहारा । जस देखौ तस करो बिचारा ॥ दशौ द्वार में तारीलावै । तब दयालको दर्शनपावै १९ धधा अर्धमाहँ अँधियारी । जस देखै तसकरै बिचारी ॥ अर्धछोड़िऊरधमनलावै । अपामेटिकै प्रेम बढ़ावै २० नना वो चौथेमें जाई । रामकाग छह है बरषाई ॥ नाह छोड़ि किय नरक बसेरा । अजौं मूढ़ चित चेतु सबेरा २१ पपा पाप करै सब कोई । पापकेधरे धर्म नहिं होई । पपा कहै सुनौ रे भाई । हमरे सेये कछू न पाई २२ फफा फल लागो बड़दूरी । चाखै सतगुरु देवनतूरी ॥ फफा कहै सुनौ रे भाई । स्वर्ग पताल कि खबरि न पाई २३ बबा बरबरकर सबकोई । बरबराकिये काज नहिं होई ॥ बबा बात कहै अरथाई । फलका मर्म न जानेहु भाई २४ भभा भर्म रहा भरि पूरी । भभरेते है नियरे दूरी ॥ भभा कहै सुनौ रे भाई । भभरे आवै भभरे जाई २५ ममासेये मर्म न पाई । हमरे ते इन मूल गँवाई ॥ ममा मूल गहल मनमाना । मर्मी होहि सो मर्महिजाना २६ यया जगतरहा भरिपूरी । जगतहुते ययाहै दूरी॥ यया कहै सुनौ रे भाई । हमरे सेये जै जै पाई २७ ररा रारि रहा अरुझाई । राम कहै दुखदारिदजाई ॥ ररा कहै सुनौ रे भाई । सतगुरु पूछिकै सेवहुजाई २८ लला तुतरे बात जनाई । तुतरे पावै परचै पाई ॥ अपना तुतुर और को कहई । एकै खेत दुनौं निरबहई २९ ववा वह वह कह सबकोई । वह वह कहे काज नहिं होई ॥

ववाकहै सुनहु रे भाई । स्वर्गपताल कि खबरि न पाई ३० शशा शरद देखै नहिं कोई । शरशीतलता एकहि होई ॥ शशा कहै सुनौ रे भाई । शुन्यसमानचलाजगजाई ३१ षषा षर षर कह सब कोई । षर षर कहे काज नहिं होई ॥ षषा कहै सुनौ रे भाई । रामनाम लैजाहु पराई ३२ ससा सरारचो बरिआई । सरबेधे सबलोग तवाई ॥ ससाके घर सुन गुन होई । यतनीबात न जानै कोई ३३ हहा होइ होत नहिं जानै । जबहीं होइ तबै मन मानै ॥ है तो सही लहै सबकोई । जब वा होइ तब या नहिं होई ३४ क्षक्षा क्षणपरलै मिटि जाई । क्षेव परे तब को समुझाई ॥ क्षेव परे कोउ अन्त न पाया । कह कबीर अगमन गोहराया ॥ ३५ ॥

ॐकार आदिहि जोजानै । लिखिकैमेटिताहिफिरिमानै ॥ वैॐकार कहौ सबकोई । जिनहुँलखा सो बिरलासोई १

ओंकार को आदि जो रामनाम ताको जो कोई जानै पिण्डाण्ड ब्रह्माण्ड को चाहे लिखिकै कहे उत्पत्तिकै मेटै कहे नाशकरै फिरि मानै कहे पालनकरै सो वह ओंकारको तो सबै कोई कहै हैं परन्तु जिन वाको लखा सो कोई बिरलाहै ताके लखिबे को प्रकार हौं कहौहौं अकार लक्ष्मणको स्वरूप उकार शत्रुघ्नको स्वरूप मकार भरतको स्वरूप अर्धमात्रा श्रीरामचन्द्र को स्वरूप संपूर्ण प्रणव श्रीजानकीजीको स्वरूप यहि रीतिते जो कोई प्रणवको जानै सो बिरला है कौनीरीतिते जप करै त्रिकुटी में अकार कण्ठ में उकार हृदय में मकार नाभिमें अर्द्धमात्रा गैवगुफामें संपूर्ण प्रणव ऐसो एक एक मात्रा को अर्थ बिचारत घण्टानादकी नाईं जप करन-वारो बिरला है साहबमुख यह अर्थ हम दिग्दर्शन करदियो है और बिस्तार ते अर्थ हमारे रहस्यत्रयग्रन्थ में है और सब जगत् मुख अर्थ है ॥ १ ॥

ककाकमलकिरणिमेंपावै । शशिबिकसितसंपुटनहिंआवै ॥ तहांकुसुम्भरङ्ग जो पावै । औ गहगहकै गगन रहावै २

क कहिये सुखको सो ककाकहे सुखको सुख जो साहब तिनको किरणि जो अर्धमात्रा ताको नाभिकमल में ध्यानकरि जीव जानै और शशि जो चन्द्रनाड़ी तौनको अमृत सींचिकै विकसित किये रहै संपुटित न होनपावै व तहैं कुसुंभरङ्ग जो प्रेम ताको पावै तो अगह जो साहब जे मन वचन करिकै नहीं गहे जाइँ तिनको गहि कै गगन जो हृदय आकाश तामें राखै याके आवरण के मन्त्र और ध्यान को प्रकार हमारे शान्तशतक में लिख्यो है ककार सुख को कहै हैं तामें प्रमाण "कः प्रजापतिरुद्दिष्टः को वायुरिति शब्दितः ॥ कश्चात्मनि समाख्यातः कः सामान्य उदाहृतः १ कं शिरो जलमाख्यातं कं सुखेऽपि प्रकीर्तितम् ॥ पृथिव्यां कुः समाख्यातः कुः शब्देऽपि प्रकीर्तितः" ॥ २ ॥

खखा चाहैखोरिमनावै। खसमहिंछोड़िदशौदिशिधावै ॥
खसमहिंछोड़िक्षमाह्वैरहई। होइअखीनअक्षयपदगहई ३

ख जो चैतन्याकाश ताहूको चैतन्याकाश अर्थात् ब्रह्महूं को ब्रह्म जो साहब ताको जो चाहै तो अपनी खोरि जो चूक सो मनावै कहे बकसावै कौनचूक जौन खसम जे साहब हैं तिनको छोड़िकै जो दशौदिशा में धावै है कहे नाना उपासना करै है सो या चूक बकसावै व ख जो चैतन्याकाश सम कहे सर्वत्रपूर्ण ऐसो जो धोखाब्रह्म ताको छोड़िकै तैं क्षमाह्वैरहु ब्रह्मको वाद विवाद न करु होइ अखीन कहे आपनो स्वरूप जानिकै कि मैं साहब को हौं अक्षय हौं ब्रह्महूं में लीन भये मेरो जीवत्व नहीं जाय है ऐसो हंसरूप ह्वैकै अक्षयपद जे साहब तिनको गहु ॥ ३ ॥

गगा गुरु के बचनै मानै। दूसर शब्द करै नहिं कानै ॥
तहां बिहङ्गकतहुं नहिं जाई। औगहगहकैगगनरहाई ४

ग जो है साहब को गीत ताको ग कहेते गवैया है सो हे जीव! तैं गुरु जे साहब हैं तिनके बचन मानु कौन बचन कि ॥ अजहूं लेउँ छुड़ाय कालसे जो घट सुरति सँभारै ॥ और दूसर

शब्द न कान करु जो घट सुरति सँभारैगो तौ विहङ्गम जो जीवात्मा सो कतौं न जाइगो व गह कहे अवगाह जे साहब हैं तिनको गहिकै गगन जो हृदयाकाश ताही में रहैगो अर्थात् जो साहब को गुणगान करैगो तौ तेरो मन जो सर्वत्र डोलै है सो कतौं न जाइगो तामें प्रमाण "गो गणपतिरुद्दिष्टो गन्धर्वो गः प्रकीर्तितः। गं गीते गा तु गीता च गौश्च धेनुः सरस्वती" ॥ ४ ॥

घघा घट बिनशे घट होई। घटहीमें घट राखु समोई॥
जो घट घटै घटै फिरि आवै। घटही में फिरि घटै समावै ५

घ जो घट है ताको घा जो नाश है सो करनवारो अर्थात् जनन मरणवारे हे घघाजीव! घट जे पांचौ शरीर ताके बिनशे घट जो है हंस शरीर सो होइ है कैसे होइ है ताको साधन कहै हैं घटही में घट राखु समोई कहे स्थूल सूक्ष्म में सूक्ष्म कारण में कारण महा कारण में महाकारण कैवल्य में कैवल्य हंसस्वरूप में समोइराखु अर्थात् एकएक में लीनकैदेइ जो यही रीतिते घट जे पांचौ शरीर तिनको घटै घटै फिरि आवै तो घट जो है हृदयाकाश ताही में घट जो हंस शरीर सो समावै अर्थात् जीतै यही शरीर में हंसस्वरूप पाय जाय घघान को कहै हैं "घो घटेऽपि समाख्यातः किंकिणी वा प्रकीर्तितः। हनुमते घा समाख्याता घृ मूर्द्धनि प्रकीर्तितः" ॥ ५ ॥

ङङानिरखतनिशिदिनजाई। निरखतनयनरहतरतनाई॥
निमिषएकलौंनिरखैपावै। ताहिनिमिषमेंनयनछिपावै ६

ङ कहे भयानक ङा कहे विषयवाञ्छा सो ङङाभयानक विषयबाञ्छा निरखत कहे बिचारत तोको दिनौ राति जाइ है वाही के निरखत में वाके बिचारत में नय जो नीति सो नहीं रहत रतनाई जो अनुराग विषय में सोई रहिजाइ है कैसी है वह विषय की एक निमिषलौं निरखै पावै कहे वामें लगै तो तौनेन निमिष में भोगोपरान्त नयन छिपावै है नहीं नीक लागै है अर्थात् रूप

को देख्यो फिरि नयन में नीर भरिआवै है नहीं नीक लागै है सुगन्ध बहुत सूंघ्यो उपरान्त नाक बरिउठै है अच्छो भोजन कियो तृप्त भये पर बिरसपरिजाइ है गान बहुत सुन्यो फिरि बकवाधिलगै है स्पर्श बहुत सुन्दर स्त्री कियो फिरि वीर्यपात भये नहीं नीकलगै है गरम लागनलगै है सो ये सब तृप्त के उपरान्त जो निमिष है तौने निमिष नहीं नीकलगै है ङ विषयबाञ्छा को कहै हैं तामें प्रमाण "ङकारो भैरवः ख्यातो ङ ध्वनावपि कीर्तितः। ङकारस्स्मरणे प्रोक्तो ङकारो विषयस्पृहा" ॥ ६ ॥

चचाचित्ररचोबहुभारी । चित्र छोड़ि तू चेतु चित्रकारी ॥
जिनयहचित्रविचित्रउखेला।चित्रछोड़ि तू चेतुचितेला ७

च कहे मन काहे ते कि मनको देवता चन्द्रमा याते च मन को कही और दूसर चा चोरको कही सो तेरो मन जो चोर सो तेरे स्वरूप को चोराय लीन्हो साहब को भुलाय दीन्हो सो यह जगत्रूप चित्र जो रच्यो है चित्रविचित्र सो तू छोड़िदे हे जीव! चित्रकारी जो मन ताको चेत करु वही तेरे स्वस्वरूप को भुलाय दियो है च चन्द्रमा व चोर को कहैहैं "च चन्द्रश्च समाख्यात-स्तस्करश्च उदाहृतः" ॥ ७ ॥

छछाआहिछत्रपतिपासा । छकिकिनरहैछोड़िसबआसा ॥
मैं तोहींक्षणक्षणसमुझाया । खसमछोड़िकसआपुबँधाया ८

छ कहे निर्मल जीव तैं आपने स्वरूप को भूलिकै साहब को भूलिगयो ताते छा कहे खेदरूपहो ह्वैगयो तेरे स्वरूप की क्षय ह्वै गई सो तैं तो छत्रपती जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनको आहि तिनके पास जाय कै ईसब नानादेवन की आशा छोड़िकै छकि रहु या बात मैं तोको क्षण क्षण समुझायो परन्तु तुम खसम जे साहब हैं तिनको छोड़िकै तैं काहेको जगत् में अपनपौ बँधाया छ निर्मल को और खेद को कहै हैं तामें प्रमाण "निर्मले

छस्समाख्यातः तराशिश्छः प्रकीर्तितः। वेदे च छः समाख्यातो विद्वाद्भिः शब्दशासने" ॥ ८ ॥

जजाईतनजियतहिजारो। यौबनजारियुक्ति जो पारो॥
घटहिज्योतिउजियारी करै। जोकछुजानिजानिपरजरै ९

ज कहिये वेगवन्त को व जा कहिये जघनको सो हे जीव! वेगवारो जो मनहै सोई तेरो जघनहै ताहीते बागत फिरै है अर्थात् जनन मरण होतरहै है सो या तनको कहे मनरूप तनको तैं जीतै में कहे यही शरीर को साधन करके जारिदे मरेते न जरैगो दूसर शरीर देइगो यौबन कहे युवाअवस्था को जारिकै वह युक्ति को पारो कहे धारण करो फिरि वृद्धावस्था में साधन करिबे की सामर्थ्य नहीं रहैहै ताते युवै अवस्था में इन्द्रिन को विषय साधनकरि जारु कौनीतरहते जारु कि जो कछु पदार्थ जगत् में जानि राख्यो है ते जानिपरै कि जरिगये अर्थात् मनको संकल्प विकल्प छूटिजाइ तबहीं ज्योति जो मन है सो घटमें साहब की ओर उजियारी करै है ज्योति मनको कहैहैं तामें प्रमाण "जीवरूपयक अन्तरबासा। अन्तर ज्योति कीन परकासा" और जकार वेगवारे को व जघन को कहै हैं "वेगि तेजः समाख्यातो जघने जः प्रकीर्तितः" ॥ ९ ॥

झझाअरुझिसरुझिकितजाना। हीठतढूंढतजाहिपराना॥
कोटिसुमेरुढूंढिफिरिआवै। जोगढ़गढ़ागढ़हिसो पावै १०

झ कहिये झंझा पवन को और झा कहिये नष्ट को सो तैं विषय झझा में परिकै नष्ट होइगये सो यामें अरुझि कै तैं कहां सरुझि कै जैहै झ कहिये पीठि को झा कहिये विषय बयारिको सो विषयबयारि में अरुझि कै साहब को पीठिदैकै सरुझिकै कित जान चाहैहै हीठत ढूंढ़त तेरो परान जाइहै नानाउपासना नाना मत करैहै अथवा हीठत ढूंढ़त तेरो परान जाइहै नानामतन में पै तोको विषयबयारि न छांड़ैगी वाही में अरुझो रहैगो कोटि

सुमेरु कहे कोटिन ब्रह्माण्ड भटकि आवो परन्तु जौन मन शरीर गढ़को गढ़ा है कहे बनावा तौनेन को व गढ़ कहे शरीर को तपावैगो याते तैं विषयबयारि को छांडु साहब के सम्मुख होइ झ झम्झाबातको व नष्टको कहैहैं तामें प्रमाण " झंझावाते झकारः स्यान्नष्टेझस्समुदाहृतः" ॥ १० ॥

ञञानिरखतनगरसनेहू । आपन करु निरुवारु सदेहू ॥
नहिंदेखोनहिंआपुभजाऊ। जहांनहींतहँतनमनलाऊ ११

ञ कहिये सोइबेको ञा कहिये घर्घर ध्वनिको सो घर्घर नाक बजावत ऐसो सोवत कहे आपने स्वरूप को भूलो जीव नानामतनमें वाद विवाद करत नगर जो जगत् व शरीर ताही को निरखै है व वाहीमें सनेह करैहै आपने जो संदेह की मैं साहबको हौं कि और को हौं ताको तो निरवारु करु नयबातते नहीं देखी जेहिमें साहब मिलैहैं और न आप भजाऊ कहे न अपनपो जाने कि मैं कौनको हौं।जिन जिन मतनमें न साहिबै जानिपरै न आपनो स्वरूप जानिपरै तामें तैं तन मनको लगाये है और ञशयनको व घर्घरध्वनिको कहै हैं तामें प्रमाण "ञकारः शयने प्रोक्तो ञकारो घर्घरध्वनौ" ॥ ११ ॥

टटाबिकटबातमनमाहीं । खोलिकपाट महल में जाहीं ॥
रहेलटपटेजुटितेहिमाहीं।होहिंअटलतेहिकतहुँनजाहीं १२

एक ट कहे जो नाभीमें रेफ की ध्वनि उठैहै और दूसरो टा कहे जो सुरति कमलमें गुरुरकार ध्वनि करैहै सो दूनों ध्वनि जामें होइँ सो टटा कहावैहै सो हे टटाजीव ! बिकटबात की जे बासना तेरे मनमें तेई कपाट हैं ताको खोलिकै दूनों रकारकी ध्वनि एककै रामनाम की छइउमात्रा जपत अर्थविचारत महल जो साकेत तहांको जायरहै लटपटे कहे जैसे होय तैसे रामनाम में जुटिरहु तौ साकेत में जाइकै तैं अटल ह्वैहै अथवा बिकटबासनन को तेरे मनमें टटा ह्वै रहा है सो टटा को खोलिकै महल में जा हे लटपटे

जौने संसार में लटपट ह्वैरहे हैं कहे नरक स्वर्ग में तैं गिरै उठै है सो तैं साकेतमें जुटिरहु जे साकेत में जुटिरहे हैं कहे प्रवेश करि रहे हैं तेई अटल ह्वैरहे हैं उनको जनन मरण नहीं होय वे कतहूं नहीं जायहैं ट ध्वनि को कहै हैं तामें प्रमाण "टः पृथिव्यां च कटके टो ध्वनौ च प्रकीर्तितः" ॥ १२ ॥

ठठा ठौर दूरि ठग नीरे। नितकेनिठुरकीन्हमन धीरे ॥
जेहिठगठगसबलोगसयाना ।सोठगचीन्हिठौरपाहिचाना १३

ठ कहिये बृहद्ध्वनि को और ठा कहिये चन्द्रमण्डल को सो बृहत् है ध्वनि कहे कीर्ति जिनकी तीनों ताप के हरणहारे चन्द्र-मण्डलकी नाईं ऐसे परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको ठौर दूरि है और ठग जो मन है सो नेरे है अथवा हे ठट्ठहा मसखरा जीव! साहबसों मसखरी करनवारो जाते जनन मरण छूटै है वा साहबको ठौर दूरि है ठग जे मन बुद्धि चित्त अहंकार ते नेरे हैं तैं नित्यको निठुर है मा जो माया ताको ना धीरे करतभे सो कहे तेजकरते भये ऐसो जो ठग मन जौन सब सयाने लोगन को ठगत भो तौने ठग मन को चीन्हिकै साहब के ठौरको पहिचानौ अथवा ठग जे हैं गुरुवालोग ते साहबते छोड़ायकै और और में लगायो ते कहां तेरे मनको धीरे किये नाहीं किये और ठ बृहद्ध्वनिको व चन्द्रमण्डल को कहै हैं तामें प्रमाण "बृहद्ध्वनिश्च ठः प्रोक्त-स्तथा चन्द्रस्य मण्डले" ॥ १३ ॥

डडा डर कीन्हें डर होई। डरही में डर राखु समोई ॥
जो डर डरै डरै फिरि आवै। डरहीमेंपुनि डरहिसमावै १४

एक ड कहिये ध्वनिको और डा कहिये त्रास को सो मायारूप बाणीकी त्रास कहे डर सो या डर तेरे कीन्हेते होइहै अर्थात् ये मिथ्या हैं तैंहीं बनायलियोहै कैसे मिटै सो जिनको तैं डरैहै बिष-यन को तिनको इन्द्रियन में समोइदे इन्द्रिन को डरै है सो मन जो महाडर है तामें समोइदे और मनको चित् तन्मात्रब्रह्म में

समोइदे या रीति ते डर को डर में समोइके तैं फिरिआउ साधन करि साहब को जानु डकार ध्वनि को और त्रास को कहै हैं तामें प्रमाण "डकारः शंकरे त्रासे डकारो ध्वनिरुच्यते" ॥ १४ ॥

ढढा ढूंढ़तईकतजाना। ढीगरडोलहि जाइ लोभाना ॥
जहांनहींतहँसबकछुजानी। जहांनहींतहँलेपहिंचानी १५

ढ कहिये बाणी को ढा कहिये निर्गुण ब्रह्म को सो हे जीव! बाणी में लागिकै निर्गुणब्रह्म को ढूँढ़त तो कहां जाना है अर्थात् उहां कुछु नहीं है तैं तो साहब को है वा ढीगरहै जापुरुष के है तौने को ढोल बाजा बानीरूप पानी तौने में लोभाने तैं जाइ अर्थात् या बाणीरूप ढोल बाजा है अहंब्रह्म बुद्धि बतावै है सो दूरि को ढोल सुहावन है वामें कछु नहीं देश काल वस्तु परिच्छेद ते शून्य है हाथ एकौ न लगैगो सो हे जीव! जहां कहे जौने साधन में साहब नहीं हैं तौनेन साधन को तैं सब कछु जानि लीन्हे है सो जहां नहीं कहे जहां मायाब्रह्म ये एकहू नहीं हैं तहां साहब को तैं पहिचानले ढ निर्गुण को और ध्वनि को कहै हैं तामें प्रमाण "ढकारः कीर्तितो ढक्का निर्गुणे च ध्वनावपि ॥ १५ ॥

णणा दूरि बसो रे गाऊं। रे णणा टूटै तेरे नाऊं ॥
मुयेयेते जियजाहीघना। मुये यतादिक केतिकबना १६

ण कहिये निष्फल को णा कहिये ज्ञान को सो हे जीव! या धोखाब्रह्म को ज्ञान तेरो निष्फल है या ज्ञानते साहब न मिलैंगे साहब को गाउं जो साकेत है सो दूरि बसैहै सो रे निष्फल ज्ञानवारे मूढ़ जीव! टूटै तेर नाउं कहे वा धोखाब्रह्म में लगै तेरो जीवत्व को नाउं टूटि जाइगो अर्थात् तैं हूं धोखाब्रह्म कहावन लगैगो सो या ज्ञान में केतो मरिगये हैं व घना कहे बहुत जीव मुये जाहि हैं और केते गनै यही रीति मरिजै हैं या धोखाब्रह्म निष्फलज्ञान ते साहब न मिलैंगे ण निष्फलको व ज्ञानको कहैहैं तामें प्रमाण "णकारः कीर्तितो ज्ञाने निष्फलेऽपि प्रकीर्तितः" ॥ १६ ॥

तता अतित्रियो नहिंजाई। तन त्रिभुवनमें राखु छपाई॥
जो तनत्रिभुवनमाहँछपावै। तत्त्वहि मिले तत्त्वसो पावै १७

त कहिये चोर को ता कहिये सीगट को पूंछ को सो हे जीव! साहब ते चोराइकै आंखी छपाइकै सिंह जो साहब ताकी शरण छोड़ि कै सीगट की पूंछ जो धोखाब्रह्म तौने को तैं गहे सो अतित्रियो कहे आसमता ताते कहे अत्यन्त चारिउ ओर व्याप्ति त्रिगुणात्मिका माया तौनौ भरि तेरी नहीं जाइहै मुक्ति होबे की कहा कहिये सो तन कहे अणुमात्र जो तैं है ताको त्रिभुवन में छपाय राखति भै माया सो ये जे तेरे पांचौ तन हैं तिनको तैं त्रिभुवन में छपाय दे अर्थात् चारिउ शरीर हैं तिनको संसारी मानिले व मैं इनते भिन्न हौं वा शरीर को अभिमान जो तैं छांड़िदे तो तत्त्व जो साहब को यथार्थज्ञान कि मैं साहब को हौं तौन जब तोको मिलै तब तत्त्व जे साहब हैं तिनको पावै तत्त्व यथार्थ को कहै हैं तामें प्रमाण "तत्त्वं ब्रह्मणि यथार्थे" और साहब तत्त्व कहावै हैं तामें प्रमाण "रामएव परंतत्त्वं रामएव परंतपः" त चोर को व सीगट कीपूंछ को कहै हैं तामें प्रमाण "तकारः कीर्तितश्चौरः क्रोष्टुपुच्छेऽपि तः स्मृतः" ॥ १७ ॥

थथा थाह थहो नहिं जाई। इह थोरे वह थीर रहाई॥
थोरे थोरे थिररहुभाई। बिनुथम्भे जसमँदिल थँभाई १८

थ कहिये शिलासमूहको और था कहिये रक्षा को सो हे जीव! शिलासमूह जो मन जौने के भयते अपनी रक्षा करु काहेते थाह है अर्थात् बिचार कीन्हे कुछु बस्तु नहीं है परन्तु काहू के थहाये नहीं थहाये जाय है शिलासमूह मन है सो आगे पद में कहि आये हैं "पाहन फोरि गङ्ग यक निकसी चहुँदिशि पानी पानी" सो यह मन थिर होइ तो वह जीवहू थिररहै ताते तैं थोरे थोरे साधन करु जाते मन थिर होइ जो साधन न करैगो तो मन न थिररहैगो कैसे जैसे बिना थम्भकहे खम्भा देवाल और जो कौनो

यशौवाली बात न करै तो वह यश बनै रहत है मन्दिल थँभैहै अर्थात् नहीं थँभै है अथवा थोरे थोरे साधनकरि मन थिर कैले जब मन थिर ह्वैजाइगो तब साधन न करन परैगो कैसे जैसे कौनो यशवाली बात कियो फिर वा यश रूपमन्दिर बिना थम्भै बनोरहै है थ शिलासमूह को व रक्षा को कहै हैं तामें प्रमाण "शिलोच्चये थकारस्स्याद्थकारो भयरक्षणे" ॥ १८ ॥

ददा देखो बिनशनहारा । जस देखौ तस करौ बिचारा ॥
दशौ द्वार में तारी लावै । तब दयालको दर्शन पावै १९

द कहिये कलत्र को व दा कहिये दान को सो हे जीव ! या सब कहे यह लोक में जो कलत्रादि व वह लोक स्वर्गादिक बिनशनहारा है अर्थात् सब नाशमानहै सो जस देखो कहे जैसा नाशमान देखतेहो तैसा तुहूं अपने को बिचार करो कि हमहूं नाश ह्वैजैहैं दशौ द्वारको महामुद्रा करि बन्दकरि तारी लावै कहे समाधिकरै तब दयालु जे साहब हैं तिनको दर्शन तैं पावैगो द कलत्र को और दान को कहै हैं तामें प्रमाण "दं कलत्रे बुधैरुक्तं छेदे दानेऽपि दातरि" ॥ १९ ॥

धधाअर्धमाहँ अँधियारी । जस देखै तस करै बिचारी ॥
अर्धछोड़ि उरध मनलावै । अपा मेटिकै प्रेम बढ़ावै २०

ध कहिये बन्धन को व धा कहिये धाता को सो हे जीव ! माया के बन्धन में परिकै अपने को धाता कहे ब्रह्मा मानिलियो है सो हे जीव ! तैं अर्ध कहे अधोगति की अँधियारी में परो है तोको नहीं सूझिपरै अज्ञान में परो है सो जस देखै है सुनै है तैसही बिचार अज्ञानपूर्वक करैहै सो तैं न करु अर्ध जो है अधोगति की राह ताको छोड़िकै उरध कहे साहबके इहां जावेकी जो राह है तामें मन लगाउ अपामोटिकै कहे जो आपन सब मानि राख्यो है सो सब साहबको मानिकै और आपनेहूं को साहब को

मानिकै प्रेम को बढ़ावै ध बन्धन को और धाता को कहै हैं तामें प्रमाण " धो बन्धने धनाध्यक्षे धाता धीर्मरुतात्रपि " ॥ २० ॥

नना वो चौथे में जाई । राम को गदह ह्वै खरखाई ॥
नाहछोड़िकियनर्कबसेरा । नीचअजौं चितचेतुसबेरा २१

न कहिये गुण को और ना कहिये निन्दा को सो हे जीव ! तैं त्रिगुण में बँधिकै निन्दारूप ह्वैगयो अर्थात् निन्दा करिबे लायक ह्वैकै मन बुद्धि चित्त में अहंकार जो चौथ तामें परिकै अर्थात् आपने को ब्रह्ममानिकै रामको तैं ह्वैकै अर्थात् तैंतो श्रीरामचन्द्र को है परन्तु अवरे २ में गदहा ह्वै खर खाति फिरै है अर्थात् भूर ज्ञानमें परो है सो नाह जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको छोड़िकै नरक में बसेरा कियो सो हे नीच ! अबै सबेरो है अजहूं चेतु न गुणको व निन्दा को कहै हैं तामें प्रमाण " नकारः स्याद् गुणे चन्द्रे दुःस्तुतौ च प्रकीर्तितः " ॥ २१ ॥

पपा पाप करै सबकोई । पापके धरै धर्म नहिं होई ॥
पपा कहै सुनहुरे भाई । हमरे सेये कछू न पाई २२

प कहिये श्रेष्ठ को पा कहिये रक्षक को सो हे जीव ! तैं साहब को ह्वैकै और और देवतन को श्रेष्ठ मानै है व रक्षक मानै है पापई करै है पाप के कियेते धर्म नहीं होइगो अर्थात् और देवतन के किये तेरी रक्षा न होयगी काहेते पपा जे हैं श्रेष्ठरक्षक जिनको तैं मानैहै तेई कहै हैं हे भाई ! सुनो हमारे सेये कछू न पावैगो मुक्ति हमारी दीनि नहीं देजाइ मुक्ति श्रीरामचन्द्रही की दई देजाइ है तामें प्रमाण " मुक्तिप्रदाता सर्वेषां विष्णुरेव न संशयः " विष्णु श्रीरामचन्द्रको नाम है सो हमारे सर्वसिद्धान्त में लिखो है प श्रेष्ठ को व रक्षक को कहै हैं तामें प्रमाण " परमे पः समाख्यातो पा पाने चैव पातरि " ॥ २२ ॥

फफा फललागोबड़दूरी । चाखैं सतगुरु देइँ न तूरी ॥
फफा कहै सुनहुँ रे भाई । स्वर्गपतालकिखबरिनपाई २३

फ कहिये फल को फा कहिये निष्फल भाषण को सो हे जीव ! जौने फल को तैं भाषण करै है कि ऐसो फल होइगो सो या तेरो भाषणो निष्फल है फल जे साहब हैं ते बहुत दूरि हैं सतुगुरु जे हैं जे साहब को जाने हैं तेई चाखैं हैं व फल वे तूरिकै काहू को नहीं देइ हैं काहेते वे साहब मन बचन के परे हैं आपही ते आप जाने जाइ हैं आपनी दई इन्द्रिय ते आप देखे जाइ हैं सतुगुरु जे बतावे हैं ते साहब के प्रसन्न होवे की राह बतावै हैं सो हे भाई ! लोकन में फलकी चाह करिकै निष्फल के भाषणवाले जे गुरुवालोग हैं ते कहै हैं कि स्वर्ग पाताल में साहब की खबरि हमहूं कहूं नहीं पाई अर्थात् साहब हई नहीं हैं फ फल को और फा निष्फल भाषण को कहै हैं तामें प्रमाण " फंफा वाते फकारः स्यात्फः फलेऽपि प्रकीर्तितः । फकारेऽपि च फः प्रोक्तस्तथा निष्फलभाषणे " ॥ २३ ॥

बबा बरबर कर सबकोई । बरबर किये काज नहिं होई ॥
बबा बात कहै अरथाई । फल के मर्म न जानेहु भाई २४

ब कहिये बरुण को बा कहिये घटको सो बरुण जल के भीतर रहै हैं ऐसे हे जीव ! तुहूं बाणी के भीतर ह्वैकै घट की नाईं भकभकाइ बरबर सब कोई करौ हौ सो बरबर के किये काज नहीं होइ है अर्थात् साहब नहीं मिलैहै सो हे बबा ! घट की नाईं भकभकानवारे बात तो बहुत अर्थाय कै कहै हैं परन्तु हे भाई ! लोकन के फलको मर्म नहीं जानौ हौ कि वा फल भोग करि कछु दिन में गिरही परैंगे ब बरुण को व कलश को कहै हैं तामें प्रमाण "प्रचेताबः समाख्यातः कलशो ब उदाहृतः" ॥ २४॥

भभा भर्म रहाभरिपूरी । भभरेते है नियरे दूरी ॥
भभा कहै सुनौरे भाई । भभरे आवै भभरे जाई २५

भ कहिये आकाश शून्य को भा कहिये भ्रमण को सो हे जीव ! भ भरिबो कहावै है डेराबो धोखा या ज्यहि मतनमें कल

शून्य है तेही मतन में तैं भ्रमण करिरहो है कहे सो विचार को भ्रमण तेरे पूरिरहो है सो तोको गुरुवालोग साहबते डेरवाइ दियो और धोखा में लगाइ दियो सो तोको डरही डर सर्वत्र देखो परै है जब आवै कहे जन्म होइहै तबहूं भभरे आवै है कहे डरै में आवैहै और जब जाइहै तबहूं भभरे कहे डरै में जाइ है वोहू नाना प्रकार के दुःख होइहैं सो या भभरे ते नियरे जे साहब हैं ते दूरि ह्वैगये सो भभा जेहैं धोखाब्रह्म के भ्रमणवाले तेई कहै हैं सो हे भाई! सुनो भ्रमैते आवैहै भ्रमते जाइहै महाप्रलय में लीनहोइ है पुनि सृष्टिसमय में संसार में आवै भ आकाश को व भ्रमण को कहै हैं तामें प्रमाण "नक्षत्रं भं तथाकाशं भ्रमणे भः प्रकीर्तितः। दीप्तिर्भा भूस्तथा भूमिर्भीर्भयकथिता बुधैः"॥ २५॥

ममा सेये मर्म न पाई। हमरे ते इन्ह मूल गँवाई॥
ममामूलगहलमनमाना । मर्मी होइसोमर्महि जाना २६

म कहिये लक्ष्मी को मा कहिये बन्धन को सो हे जीव! तैं लक्ष्मी के बन्धन में परिकै ऐश्वर्य में परिकै साहब को मर्म तू न पायो हमरे ते व हे यह सब हमार है यह विचारते यह सब साहब को पहन जानोइ है आपन मानते इन्ह मूल जे साहब हैं तिनको गँवाइ दियो सो हे ममा! मायाबन्धन में बँधो जीव जौन तेरे मन में माना है ताही को मूल मानि गहि लीन्हों है सो तैं मूल न पायो काहेते कि मर्मी कहे जो कोई साहबको मर्मी होइहै सोई साहब के मर्मको जानै है म लक्ष्मी को और बन्धनको कहैहैं तामें प्रमाण "मः शिरश्चन्द्रमा वेधा मा च लक्ष्मीः प्रकीर्तिता। मश्च मातरि माने च बन्धने मः प्रकीर्तितः" ॥ २६ ॥

यया जगत रहा भरिपूरी। जगतहु ते यया है दूरी॥
यया कहै सुनो रे भाई। हमरे सेये जय जय पाई २७

य कहियेत्याग को या कहिये प्राप्त को सो हे जीव! त्याग ते नाम संन्यास ते प्राप्त जे साहब होय हैं ते साहब जगत् में पूरि

रहे हैं जौन भरिपूरि कह्यो सो साहब को सौलभ्यगुण दिखायो न जानै ताको जगत् ते दूरि है अर्थात् बाहर है ते यथा जे साहब हैं ते कहै हैं कि हे भाई ! सुनो हमरे सेयेते कहे हमरेन सेवाते सबको जय करनवाला जो काल ताहूते जय पावै औरी तरहते कालते जय नहीं पावै है साहब त्यागही ते मिलै हैं तामें प्रमाण (दोहा) "बिगरी जन्म अनेक की, सुधरै अबहीं आज । होय रामको राम जपि, तुलसी तजि कुसमाज" य त्यागको व प्राप्त को कहै हैं तामें प्रमाण "यमो यः कीर्तितः शिष्टैर्यो वायुरिति वि-श्रुतः । याने पातरि या त्यागे कथिता शब्दवेदिभिः" ॥ २७ ॥

ररा रारि रहा अरुझाई । राम कहे दुख दारिद जाई ॥
ररा कहै सुनौरे भाई । सतगुरु पूछिके सेवहु आई २८

र कहिये कामको रा कहिये अग्निको सो हे जीव ! तैं कामाग्नि में अरुझिरह्यो है तामें जरो जाइ है सो यामें दुःख दरिद्र न जाइगो रामनाम कहेते दुःख दरिद्र जाइ है सो हे भाई ! सुनो ररा कहे रसरूप जे साहब तिनको ज्ञानाग्नि ते कर्मजरायकै सत्-गुरु जे साहब के जाननवारे तिनसों समुझिकै रामनाम को सेवहु रामनाम के सेवन की युक्ति बूझिकै र को काम अर्थ छोड़िकै र काम को व अग्नि को कहै हैं तामें प्रमाण "रश्च कामे नले सूर्ये रुश्च शब्दे प्रकीर्तितः" ॥ २८ ॥

लला तुतरे बात जनाई । तुतरे पावै परचै पाई ॥
अपनाततुर औरको कहई । एकै खेत दुनो निरबहई २९

ल कही इन्द्र को ला कही लक्ष्मी को सो हे जीव ! तैं इन्द्रकी नाईं लक्ष्मी पाइकै तत्त्व की बातैं जनावै है सो तत्त्व तब पावैगो जब साधुनते परचै पावैगो सो हे जीव ! "तत्त्वं राति गृह्णातीति तत्त्वरः" अपना तो तत्त्व जे हैं यथार्थ साहब तिनको नहीं जानै है और और को ज्ञान सिखवै है सो एक खेत जो है एक हृदय तेरो तामें दोनों निरबहईं अर्थात् का दोनों निरबहै हैं नहीं निर.

बहै हैं कि तैं अज्ञानी बनो रहै है और को ज्ञान कथै है तौ का और के ज्ञान लगै है नहीं लगैहै जो तैंहूं ज्ञानी होइहै तौ तेरो ज्ञानौ कथिबो औरको लगै और जो तुतरे पाठ होय तो या अर्थ है ला इन्द्रको व छेदनको कहै हैं सो हे जीव! जो यज्ञादिककरि इन्द्रादिक देवतनके संतुष्ट के वास्ते पशुच्छेदन करौ हौ सो वेद या तुतरे बात जनाई है जैसे लरिका रोटी को टोटी कहै है परन्तु माता तात्पर्य जानै है कि रोटीही मांगै है ऐसे वेद जो यज्ञादिक कहै हैं सो दुष्कर्म छुड़ाइकै यज्ञादिक में लगायो फेरि ज्ञान दैकै येऊ कर्म छुड़ाइकै तात्पर्य ते साहब को बतावै है सो तुतर जो है वेद तौनेको अर्थ तब पावै जब वाके तात्पर्य को पावै सो आप तो तुतर हैं वेद परदा कैकै बात कहै हैं सब जीवन को ए कहै हैं कि जीव औरको औरई कहैहै मेरो तात्पर्य नहीं समुझैहै सो एकै खेत जो संसार है तामें दूनों निबहै हैं अथवा साहब के इहां वेद नहीं पहुँचि सकैहै न प्रकट वर्णन करिसकै है तात्पर्यही करिकै कहैहै जगत् व कर्म याही को प्रकट वर्णन करै है और जीव जे हैं ते जगत्ही में परेरहै हैं जे तात्पर्य जानै हैं तेई साहब के समीप पहुँचै हैं ताते वेदौ जीवौ एक खेत जो जगत् है ताही मों निबहै हैं जो जगत् न रहै तो बद्धविषयी मुमुक्षुई न रहिजायँ मुक्त भरि रहिजायँ और चारिउ वेद रकार मकार में रहिजायँ ल इन्द्र को लक्ष्मी को छेदन को कहै हैं तामें प्रमाण "लइन्द्रोलवनोलश्च लाचलक्ष्मीप्रकीर्तिता" ॥ २६ ॥

ववावहवहकह सब कोई । वह वह कहे काज नहिं होई ॥
ववाकहै सुनौरे भाई । स्वर्गपताल कि खबरि न पाई ३०

व कहिये भक्त को वा कहिये वायु को सो हे जीव! तैं तो साहब को भक्त है वायुकी नाईं जगत् में बहत फिरौ हौ वह है ईश्वर वह है ईश्वर या कहा सब कोई कहौ हौ सो वे नाना ईश्वरन के कहे काज कहे मुक्ति न होइहै सो हे ववा कहनेवारे भाई!

सुनते जाउ तुम स्वर्ग पाताल की खबरि नहीं पाई अर्थात् सबके रखवार साहब को नहीं जानौ हौ तामें प्रमाण "स्वर्गपताल भूमिलौंबारी। एकै राम सकल रखवारी" वा सात्वतको व वायु को कहै हैं तामें प्रमाण "सात्वते वरुणे वाते वकारः समुदाहृतः" ॥ ३० ॥

शशा सरदेखै नहिं कोई। सरशीतलता एकै होई॥
शशाकहै सुनौ रे भाई। शून्यसमान चला जगजाई ३१

श कहिये सुखको शा कहिये शेषको सो हे जीव! तैं तो सुखसागर जे साहब हैं तिनको शेषहै अर्थात् अंश है सो सुखसर जे साहब हैं तिनको तुम कोई नहीं देखौ हौ कैसो है वा सर कि जाकी शीतलता एकई है वा शीतलता पाये फिरि जनन मरण नहीं होइहै सो शशा जे साहब के शेष साधु हैं ते कहै हैं कि जिनको अंश जीव तिनको नहीं जानै है शून्य जो धोखाब्रह्म ताही में जगत् समान जाइहै श शेषको व सुखको कहै हैं "वदन्ति शं बुधाः शेषे शः शान्तश्च निगद्यते। शश्च शयनमित्याहुर्हिंसा शः समुदाहृतः" ॥ ३१ ॥

षषा षर षर कह सब कोई। षरषर कहे काज नहिं होई॥
षषा कहै सुनौ रे भाई। रामनाम लै जाहु पराई ३२

ष कहिये श्रेष्ठ को सो षा दूसरी है सो हे जीव! श्रेष्ठौते श्रेठ जे साहब हैं तिनको षरषर सांच सांच सबै कहैहैं औरे को खोटा मानै हैं परन्तु षरषर कहेते काज जो है मुक्ति सो न होइगी बिना रामनाम के साधन कीन्हे व बिना नीकी प्रकार साहब के जाने काहेते षषा कहै श्रेष्ठौते श्रेष्ठ जे साहब हैं ते कहै हैं कि हे भाई! सुनौ तुम रामनाम को लैकै मायाब्रह्म ते पराइ जाउ अर्थात् सब को छोड़िकै रामनाम जपौ ष श्रेष्ठ को कहै हैं "षकारः कीर्तितः श्रेष्ठे षश्च गर्भविमोचने" ॥ ३२ ॥

ससा सरा रचो बरिआई। शरबेधे सबलोग तवाई॥

ससाके घर सुनगुन होई । यतनी बात न जानै कोई ३३

स कहिये लक्ष्मी को सा कहिये परोक्ष को सो हे जीव ! तेरो ऐश्वर्य परोक्ष में है अर्थात् साहब के यहां है या देखबे की लक्ष्मी तेरी नहीं है सो तैं सग जो कर्म है ताको बरिआई रचि लियो सो वाही ससारूपी शर है कहे कर्मरूपी शर में लोग बेधे हैं ते सब तवाई में परे हैं नरक स्वर्ग में जाय आवै हैं सो ससा जो जीव ताके घर कहे हृदय में काहूके शून्य कहे धोखाब्रह्म समान है काहू के गुण जो माया सो समान है सो यतनी बात कोई नहीं जानै है कि येई साहबको चीन्हन न देइहैं स लक्ष्मी को व परोक्ष को कहैहैं "स परोक्षे समाख्यातः सा च लक्ष्मीप्रकीर्तिता" ॥३३॥

हहा होइ होत नाहिं जानै । जबहीं होइ तबै मनमानै ॥
है तो सही लहै सबकोई । जबवाहोइतबया नाहिं होई३४

ह कहिये बिष्कम्भ को हा कहिये त्याग को सो हे जीव ! या बिष्कम्भ शरीर को त्याग होत कोई नहीं जानै है जब शरीर त्याग ह्वै जाइ है तबहीं जानै है कि शरीर त्याग ह्वै गयो जामें जीव थँभा रहै है सो शरीर में हंसरूप सही है ता जीवको परन्तु सब कोई नहीं लगै है कहे नहीं पावै है जब वा हंसशरीर होइ जब या शरीर नहीं होइ है वाही हंसशरीर में थँभारहै है जब बिष्कम्भ को व त्याग को कहै हैं तामें प्रमाण "हः कोपवारणे प्रोक्तो हस्त्यादापि च शूलिनी । हानेऽपि हः प्रकथितो हो विष्कम्भः प्रकीर्तितः" ॥ ३४ ॥

क्षक्षाक्षणपरलयमिटिजाई । क्षेवपरे तब को समुझाई ॥
क्षेवपरेकोउअन्तनपाया । कहकबीरअगमनगोहराया३५

क्ष कहिये क्षत्र को क्षा कहिये वक्षस्थल को सो हे जीव ! तैं क्षत्रपति जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको वक्षस्थल में तो ध्यानकरु तो तेरी प्रलय जनन मरण क्षणै में मिटिजाइ जब क्षेव कहे तेरो शरीर क्षय ह्वैजाइगो तब तोको को समुझावैगो क्षेवपरे कहे शरीर

क्षय ह्वैगये कोऊ अन्त साहब को नहीं पायो है सो कबीरजी कहै हैं कि याही ते तोको हम आगेते गोहरावै हैं कि फिरि क्या करैगो क्ष क्षत्र को व वक्षस्थल को कहै हैं तामें प्रमाण "क्षश्च क्षत्रं चाक्षवश्च स्यात् क्षोव क्षसि कथ्यते" क्षत्र कहे क्षत्रपती को बोध ह्वै जाइ जैसे बलि कहे बलिराम को बोध ह्वैजाइहै ॥ ३५ ॥

इति चौंतीसी संपूर्णम् ॥

अथ विप्रमतीसी प्रारभ्यते ॥

सुनहु सबमिलि विप्रमतीसी । हरि बिनु बूड़ी नावभरीसी १ ब्राह्मण ह्वैकै ब्रह्म न जानैं । घर में यज्ञ प्रतिग्रह आनैं २ जे सिरजा तेहि नहिं पहिचानैं । करम भरम लै बैठि बखानैं ३ ग्रहण अमावस सायरपूजा । स्वाती के पात परहु जनि दूजा ४ प्रेतकर्म मुखअन्तर बासा। आहुति सहित होमकी आसा ५ कुल उत्तम कुल माहँ कहावैं । फिरि फिरि मध्यमकर्म करावैं ६ कर्म अशुचि उच्छिष्ट खाहीं । मतिभरिष्टयमलोकहिजाहीं ७ सुतदारा मिलिजूठो खाहीं । हरिभगतनकीछूति कराहीं ८ न्हाय खोरि उत्तम ह्वै आवैं। विष्णुभक्त देखे दुख पावैं ९ स्वारथलागिरहे वे आढ़ा । नाम लेत जस पावक डाढ़ा १० रामकृष्णकी छोड़िनी आसा । पढ़ि गुणि भे कि्रतिमकेदासा ११ कर्मकरहिं कर्महिंको धावैं । जो पूछै तेहि कर्म दृढ़ावैं १२ निष्कर्मी कै निन्दा करहीं । करै कर्म ताही चित धरहीं १३ अस भगती भगवत की लावैं । हरिणाकुश को पन्थ चलावैं १४ देखहु कुमति नरकपरगासा । बिनुलखिअन्तरकिरतिमदासा १५ जाके पूजे पापनऊड़ै । नामसुमिरिते भवमें बूड़ै १६ पापपुण्यकै हाथेहि पासा । मारि जगतको कीन्ह बिनासा १७ ये बहनी दोउ बहानिन छाड़ैं । यह गृह जारैं वह गृह माड़ैं १८ बैठेते घर शाहु कहावैं । भितर भेदमन मुसहि लगावैं १९ ऐसी

विधि सुरविप्र भनीजै। नामलेत पञ्चासन दीजै २० बूड़िगये नहिं आपुसँभारा। ऊंच नीच कहु काहि जोहारा २१ ऊंच नीच है मध्यम बानी। एकै पवन एक है पानी २२ एकै मटिया एक कुम्हारा। एकसबनका सिरजनहारा२३ एकचाकबहुचित्र बनाया। नाद बिन्दुके बीच समाया २४ व्यापी एक सकल में ज्योती। नामधरे क्या कहिये मोती २५ राक्षस करणी देवकहावै। बादकरै भवपार न पावै २६ हंसदेह तजि न्यारा होई। ताकी जाति कहै धौं कोई २७ श्वेतसुपेदकिरातापियरा। अबरणबरणकितातासियरा २८ हिन्दूतुरुक कि बूढ़ाबारा। नारिपुरुषमिलिकरो बिचारा२९ कहियेकाहिकहा नहिं माना। दासकबीरसोईपहिंचाना ३० बहिआहै बहिजातु है कर गहि ऐंचहु और। समझाये समझै नहीं दे धक्का दुइ और॥ ३१॥

सुनहुसबनमिलिविप्रमतीसी। हरिबिनबूड़ीनावभरीसी १
ब्राह्मण ह्वै कै ब्रह्म न जानैं। घरमें यज्ञ प्रतिग्रह आनैं २
जे सिरजा तेहिनहिंपहिचानैं। करमभरमलैबैठिबखानैं ३
ग्रहणअमावससायरपूजा। स्वातीकेपातपरहुजनिदूजा४

विप्रके बर्णन में हम तीस चौपाई कहै हैं सो सबन मिलि सुनते जाउ कैसे ब्राह्मण होतभये कि जिनको जन्म हरि बिना भरी नाव ऐसी बूड़िगई १ ब्रह्मई के जानेते ब्राह्मण कहावै है सो ब्रह्म को तो न जान्यो यज्ञादिकन के प्रतिग्रह घर में लै आवै हैं आदि ते दानौं आयो २ जौन उत्पत्ति कियो है ताको तो जानतई नहीं हैं कर्मकाण्ड को भरम नानाप्रकार के बैठिकै बखानै हैं ३ सो हे दूजा कहे दुःखग्रहण में अमावस में सायर कहे समुद्रादिक तीर्थन में जैसे स्वाती के जल को पपीहा दौरै है ऐसे तुम्हीं ग्रहण अमावस में समुद्रादिक तीर्थन में दानलेन को ताके रहौ हौ परन्तु आशा नहीं पूजै है॥ ४॥

प्रेतकर्ममुखअन्तरबासा। आहुतिसहितहोमकीआसा५

कुलउत्तमकुलमाहँकहावैं। फिरिफिरिमध्यमकर्मकरावैं ६

मुख ते प्रेतकर्म करावै हैं कि ऐसो पिण्डदान करौ तौ प्रेतत्व छूटिजाइ व अन्तःकरण में या आशा बसै है कि जो या होम करै तो हम दक्षिणा पावैं ५ और ब्राह्मण तो बड़े उत्तमकुल के कहावै हैं कि हम बड़े कुलके हैं परन्तु फिरि फिरि कहे बारबार मध्यम कहे नरक जाय वाके कर्म करावै हैं ॥ ६ ॥

कर्मअशुचिउच्छिष्टैखाहीं। मतिभरिष्ट यमलोकहिजाहीं ७
सुतदारामिलिजूठोखाहीं। हरिभगतनकी छूतिकराहीं ८
न्हायखोरिउत्तम ह्वै आवैं। विष्णुभक्त देखे दुखपावैं ९

नानाप्रकार के अपावनकर्म कैकै भैरव दुलहा देवादिकन को उच्छिष्ट खाय हैं सो मति भ्रष्ट ह्वैकै यमलोकहि जाइ हैं ७ तौने प्रेतन को जूठ सुत दारा कहे स्त्री त्यहि समेत सब मिलि खाइहैं व हरिभक्तन की छूति मानै हैं ८ और नहाय खोरिकै आपने जान पवित्र ह्वै आवैं व जिनके दर्शनते पवित्र होय हैं ऐसे विष्णुभक्त तिनको देखिकै दुःख पावै हैं ई बड़े तिलक दिये शङ्ख चक्र दीन्हे कहां रहे उनको मुख देखैंगे तो पाप लगै है या कहै हैं ॥ ९ ॥

स्वारथलागिरहवेआढ़ा। नामलेत जसपावकडाढ़ा १०
रामकृष्णकीछोड़िनिआसा। पढ़िगुणिभेकिरतिमकेदासा ११

अपने स्त्री पुत्र यही के स्वारथ में वे अर्थ आढ़ति लगाय रहे हैं जिनके अंश हैं ऐसे जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके नाम लेत में मानो जीभ पावक में जरीजाइ है १० रामकृष्ण जे हैं तिनकी आशा छोड़िकै पढ़ि गुणिकै किरतिम कहे आपनी बनाई मूर्ति अथवा किरतिम माया तिनको दास कहावै हैं ॥ ११ ॥

कर्मकरहिंकर्महि को धावैं। जो पूछै त्यहि कर्म दृढ़ावैं १२
निष्कर्मीकै निन्दा करहीं। कर्मकरै ताही चितधरहीं १३
असभगतीभगवतकीलावैं॥हिरणाकुशकोपन्थचलावैं १४

कर्म नाना प्रकार के करैहैं व कर्मफल जो स्वर्गादिकन को भोग ताही को धावै हैं और जो कोई मुक्तिहू की बात पूछैहै ताको कर्महीं दृढ़ावै हैं १२ निष्कर्मी जे साधु हैं तिनकी तो निन्दा करै हैं और कोई कर्म करै हैं ताको सत्कार करैहैं १३ सो या रीतिते भगवत् की भक्ति करैहैं या कहै हैं कि ईश्वर तो अजागलथनकी नाईं है वाते कौन काम होय है और कोई हिरण्याकुश को पन्थ तामसी मत चलावै हैं कहैहैं कि हमहीं ब्रह्म हैं ऐसो दैत्यन को ज्ञान है तामें प्रमाण "ईश्वरोऽहमहंभोगी सिद्धोऽहं बलवान् सुखी। आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया" ॥ १४॥

देखहुकुमतिनरकपरगासा। बिनुलखिअंतरकिरतिमदासा १५

सो या कुमतिन को प्रकाश तो देखो बिनु अन्तर के लखे कि हम कौन के हैं या बिना जाने किरतिम जो माया ताके दास ह्वै रहे हैं रक्षक को न माने रक्षा कौन करे ॥ १५ ॥

जाके पूजे पाप न ऊड़ै। नाम सुमिरिते भवमें बूड़ै १६
पापपुण्यके हाथेहिपासा। मारिजगतसबकीनबिनासा १७
ये बहनीदोउबहनिनछाड़ैं। यहगृहजारैंवहगृहमाड़ैं १८

व जौने देवता के पूजे न पाप छूटै न मुक्ति होइ तेई देवतन को पूजै हैं उन्हीं को नाम सुमिरि सुमिरि संसार में बूड़ै हैं १६ और नाना प्रकार के कर्म बताइकै पाप पुण्यरूप फांसी डारिकै जगत् को विनाश करिदेत भये १७ और कोई बिप्र जे हैं ते बहनी कहे संसार में बहनवारी जो विद्या अविद्या माया पाप पुण्यरूप ताको बहनिन कहे ढोवनवारो जो विप्र सो ऊपरते छांड़िकै यह गृह जारिकै कहे छांड़िकै वह गृह कहे वहां के महन्त भये ध्यान लगाय कै बैठे ॥ १८ ॥

बैठेते घर शाहु कहावैं। भितरभेदमनमुसहिलगावैं १९
ऐसीविधिसुरबिप्रभनीजे। नामलेत पञ्चासनदीजे २०
बूड़िगयेनहिंआपुसँभारा। ऊंचनीचकहुकाहिजोहारा २१

ऊंचनीच है मध्यम बानी। एकै पवन एक है पानी २२
एकैमटियाएककुम्हारा। एक सबनकासिरजनहारा २३
एकचाकबहुचित्रबनाया। नादबिन्दुकेबीचसमाया २४

सो ऊपरते ऐसो ध्यान लगायकै घर में बैठे बड़े साधु कहावैं व अन्तःकरण में मनते पराई द्रव्य मूसै को भेद लगाये हैं १९ सो यहि रीति विप्रन के सुरनकी विधि कहैहैं नाम को लेइहैं कहे मन्त्र जपै हैं व पञ्चासन कहे पञ्च आसन देइहैं अर्थात् पञ्चाङ्गो· पासना करै हैं २० सो आपैमाया की धारमें बूड़िगये न सँभारत भये तो ऊंच नीच कहे पांच देवतन में काको जोहास्यो कहे काके भये अर्थात् काहूके न भये २१ सो विप्रन को उत्तम मध्यम नीच बाणी करिकै होइहैं वास्तव तो सबके शरीरन में एकै पानी है एकै पवन है २२ और एकै सबकी माटी है कहे सब पञ्चभौतिक हैं और सबके सिरजनहार कुम्हार मन एकै है २३ एकचाक जो जगत् है तामें बहुत विधिके चित्र बनावत भयो मन व नादबिन्दु के बीच में आपै समातभयो ॥ २४ ॥

ब्यापीएकसकलमेंज्योती। नामधरेकाकहिये मोती २५
राक्षसकरणीदेवकहावै। बाद करै भवपार न पावै २६
हंसदेहतजि न्यारा होई। ताकी जाति कहैधौं कोई २७
श्वेतसुपेदकिरातापियरा। अबरणबरण कि तातासियरा २८

सो एकै ज्योति जो आत्मा सो सबमें ब्यापि रही है ब्राह्मण नामधस्यो सो ताही ते मोती कही अर्थात् न कही बिना ब्रह्मजाने ब्राह्मण नहीं कहावै है २५ और करणी तो राक्षस की नाईं करै हैं व जगत् में ब्राह्मणदेवता भूसुर कहावै हैं और बाद बिबाद नाना प्रकारके करै हैं परन्तु संसारसमुद्र को पार नहीं पावैहैं २६ सो हंस जो जीव है सो देहको त्यागिकै न्यारो ह्वैजाइ है ताकी जाति कोई कहै तो वह कौन वर्णहै ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र २७ और वह आत्मा श्वेत कहे श्याम है कि सुपेद है कि लाल है कि पियर

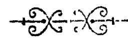
है कि अवर्ण है कि वर्ण में है कि गर्म है कि शीतल है ॥ २८ ॥

हिन्दूतुरुककिबूढ़ावारा । नारिपुरुषमिलिकरहुबिचारा २९
कहियेकाहिकहानहिंमाना । दासकबीरस्वईपहिचाना ३०
साखी ॥ बहिआहै बहिजातुहै, करगहिऐंचहुओर ॥
समझाये समझै नहीं, दे धक्का दुइ और ३१

पुनि हिन्दू है कि तुरुक है कि बूढ़ा है कि लड़िका है या नारि पुरुष मिलि कै सबजने बिचारकरो २९ सो या बात कासों कहों कोई नहीं मानैहै सबके रक्षक जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिन को दासकबीर कहे हैं कि मैं सोई पहिचान्यों है कि उनको अंश जीव है वे स्वामी हैं ३० या जीव औरे औरे में लागिकै बहत आयो है व बहाजाइ है सो कर गहि कहे एक बेर उपदेश करि कै और ऐंचौ हौं कि साहब में लागु समुझावत आयो हैं व समुझावत हौं जो समुझाये न समुझै तो लाचार ह्वैकै दुइ धक्का और मइूं दैदेउँ कि वहां जाय ॥ ३१ ॥

इति विप्रमतीसी संपूर्णम् ॥

अथ बेलिर्लिख्यते ॥



हंसासरवरसरिर हो रमैयाराम । जगतचोरघरमूसलहोरमैया-राम १ जो जागल सो भागल हो रमैयाराम । सोवत गैल बिगोय हो रमैयाराम २ आजबसेरानियरेहोरमैयाराम । कालिहबसेरादूरि हो रमैयाराम ३ परेहुबिरानेदेशहो रमैयाराम । नैन भरैंगे ढूंढ़िहो रमैयाराम ४ त्रासमथनदधिकियो हो रमैयाराम । भवनमथ्यो भरिपूरि हो रमैयाराम ५ हंसापाहनभयल हो रमैयाराम । बेधि-नपदनिरबानहोरमैयाराम ६ तुमहंसामनमानिकहो रमैयाराम । हटलनमानलमोरहो रमैयाराम ७ जसरेकियोतसपायोहो रमैया-

राम । हमरदोषजनिदेहुहोरमैयाराम ८ अगमकाटिगमकीन्हींहो रमैयाराम । सहजकियोबैपारहोरमैयाराम ९ रामनामधनबनिज-हुहोरमैयाराम । लादेहुवस्तुअमोल हो रमैयाराम १० नौबहिया दशगोनहोरमैयाराम । पांचदलनवालादे साथहो रमैयाराम ११ पांचदलनवापरेहो रमैयाराम । खाखरिडारिनिखोरिहो रमैया-राम १२ शिधुनिहंसाचलेहो रमैयाराम । सरवरमीतजोहारहो रमैयाराम १३ आगीसरवरलागिहो रमैयाराम । सरवरभोजरि क्षारहो रमैयाराम १४ कहैकबीरसुनोसन्तोहो रमैयाराम । परखि लेहुखरखोट हो रमैयाराम ॥ १५ ॥

हंसासरवरसरिरहोरमैयाराम । जगतचोरघरमूसलहोरमैयाराम १
जोजागलसोभागलहोरमैयाराम । सोवतगैलबिगोयहोरमैयाराम २

सो हे रामनाम के रमनवारे, हंसा! या शरीररूप सरवर में तेरो ज्ञान जागत में चोर मूसिलियो १ जो जागत है मोहनिशा ते सो भागे है संसार ते सो हे राम में रमनवारे मोहनिशा में सोवत सब बिगोय गये हैं कहे नानायोनि में संसारस्वप्न में भट-कत फिरै हैं ॥ २ ॥

आजबसेरानियरेहोरमैयाराम । काल्हिबसेरादूरिहोरमैयाराम ३
परेहुबिरानेदेशहोरमैयाराम । नैन मरैंगे ढूंढ़िहो रमैयाराम ४

सो हे राम में रमनवारे! आजु बसेरा नेरे है कहे मानुष शरीरई में ज्ञान होइ है सो पाये है काल्हि कहे जब या शरीर छूटि जायगो तब बसेरा दूरि ह्वै जायगो अर्थात् अनेक योनिन में भटकत फिरौगे तब मेरो ज्ञान होयगो तैं जागतै में लूटिगयो है तैं का जागत रहे है नहीं जागत रहे ३ हे राम में रमनवारे! आपनो देश साकेत ताको छोड़िकै बिराने कहे मनके देश में परयो है तैसो अनेक योनिन में तेरी आंखी आंसू ढारिढारि फूटि जायँगी ॥ ४ ॥

त्रासमथन दधिमथन हो रमैयाराम । भवनमथ्यो

भरिपूरिहो रमैयाराम ५ हंसापाहनभयलहो रमैयाराम । बेधिनपद निर्बाणहो रमैयाराम ६ तुम हंसा मनमानिक हो रमैयाराम । टहल न मानेहु मोर हो रमैयाराम ॥ ७ ॥

त्रास मथन जो है रामनाम तौने है दधिमथन कहे मथानी तौने ते हे रामनाम के रमनवारे ! भवसमुद्र जो तेरे हृदय में भरिपूर है ताको काहे नहीं मथ्यो ५ हे रामनाम के रमनवारे ! तैंतो चैतन्य है मनके साथ तुहूं जड़ ह्वैगये है काहे ते कि निर्वाणपद को न बेधि कै तैं जड़ ह्वैगये है जो निर्वाणपदको बेधते तो मेरे साकेत को जाते ६ हे हंसा ! तुमहीं मन में मानि कै कहो तो जब तुम रामनाम को जगतमुख अर्थ करन लग्यो है तब मैं हटक्यों है सो तुम नहीं मान्यो है सो तुमतो रामनाम के रमैया हो परन्तु रामनाम जो मोको वर्णन करै ताको अर्थ नहीं जान्यो संसार में पर्‍यो है ॥ ७ ॥

जस रे कियो तस पायो हो रमैयाराम । हमरदोष जनि देहु हो रमैयाराम ८ अगमकाटि गमकीन्हों हो रमैयाराम । सहजकियो बैपार हो रमैयाराम ९ रामनाम धन बनिजहु हो रमैयाराम । लादेहु बस्तु अमोल हो रमैयाराम ॥ १० ॥

हे रामनाम के रमनवारे, हंसा ! जस कियो तस पायो हमारो दोष जनिदेहु ८ अगम जो रामनाम ताको काटि गम कीन्हों अर्थात् साहबमुख अर्थछांड़ि जगतमुख अर्थ कियो फिरि वही रामनाम को ब्रह्ममुख अर्थ करि सहज व्यापार कहे सहजसमाधि लगावन लगे कि हमहीं ब्रह्म हैं ९ हे रामनाम के रमनवारे ! रामनाम धन को बनिज करिकै रामनाम अमोल वस्तु लादेहु परन्तु अर्थ न जान्यो जो बनिजहु लादहु पाठ होइ तो यह अर्थ है अगम जो है रामनाम ताको काटिकै कहे बीजक में बनाइ कै तुमको गम कै दियो कहे सुगम कै दियो समुझन

लगे रामनाम को व्यापार तुमको सहज कै दियो अर्थात् राम नाम की सहजसमाधि तुमको केउ बताय दियो सो रामनाम अमोल है ताको बनिज करो व वही धन को लादो यह सांच है और सब झूठ है ॥ १० ॥

पांचलदनवालादे हो रमैयाराम । नौबहियादशगोन हो रमैयाराम ११ पांचलदनवा आगे हो रमैयाराम । खाखरि डारिनि खोरि हो रमैयाराम १२ शिरधुनि हंसाउड़िचले हो रमैयाराम । सरवरमीत जोहार हो रमैयाराम ॥ १३ ॥

ताही ते पांच लदनवालादे अर्थात् पञ्चभौतिक शरीर धारण कीन्हेंते जौने में दशौ गोन दश इन्द्रिय हैं तामें मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार पांचों प्राण ते बहिया हैं अर्थात् बहनवारे हैं चलावन-वारे हैं ११ खाखरि जो शरीर तौन जब खोरि में डारेनि अर्थात् नाशभयो तब पांच लदनवा कहे वही पञ्चभौतिक शरीर आगे मिलैहै पांच लदनवा गिरिपरे पाठ होइ तो यह अर्थ है कि जब इन्द्रिय गिरिपरी शक्ति न रहिगई तब शरीरौ छूटिजाइ है १२ सो हंसा जो जीव है सो शिर धुनि कै सरवर जो शरीर मीत तौने को जोहारिकै उड़ि चलै है ॥ १३ ॥

आगिलगी सरवरमें हो रमैयाराम । सरवरजरि भो क्षार हो रमैयाराम १४ कहैं कबीर सुनो सन्तो हो रमैया-राम । परखलेहु खरखोट हो रमैयाराम ॥ १५ ॥

जब हंसा उड़ि चलै है तब सरवर जो शरीर तामें आगि लगै है सरवर जरिकै क्षार ह्वै जाइ है सो हे रामनाम के रमनवारे ! तुम सो संसार मुख अर्थकैकै तुम संसार में पर्‍यो सो तुम्हारी यह दशा होतभई १४ श्रीकबीरजी कहे हैं कि हे सन्तो ! साहब जो कहे हैं ताको सुनते जाउ तुमतो रामनाम में रमनवारे हो सो रामनाम को जगत्मुख अर्थ छांड़िकै साहबमुख अर्थ करिकै

साहब में लागो साहब की बाणी गहो खरखोट परखिलेहु कौन खरा है कौन खोट है साहबमुख अर्थ खरा है काहेते साहिबै अपने मुख कहै हैं जगत्मुख अर्थ खोट है सो खोट छांड़िकै साहब में लागो ॥ १५ ॥

इति प्रथमबेलि समाप्तम् ॥ १ ॥

अथ द्वितीय बेलि ॥ २ ॥

भलसुस्मृतिजहडायहु हो रमैयाराम । धोखा कियो बिश्वास हो रमैयाराम १ सोतो हैं बनसी कसि हो रमैयाराम । शिरकै लियो बिश्वासहो रमैयाराम २ ई तौ हैं बिधिभागहो रमैयाराम । गुरुदीन्हो मोहिं थापिहो रमैयाराम ३ गोबरकोटउठायहुहो रमैया-राम । परिहरि जैहौखेतहो रमैयाराम ४ बुधिबलतहांनपहुँचैहो रमैयाराम । खोजकहांतेहोयहो रमैयाराम ५ सुनिमनधीरजभयल हो रमैयाराम । मनबढ़िरहलजायहो रमैयाराम ६ फिरि पाछेजनि हेरहुहो रमैयाराम । कालबूतसबआयहोरमैयाराम ७ कहकबीर सुनौसन्तोहो रमैयाराम । मतिढिगहीफैलावहो रमैयाराम ॥ ८ ॥

भलसुस्मृतिजहडायहु हो रमैयाराम ।
धोखाकियो बिश्वास हो रमैयाराम ॥ १ ॥

साहब कहै हैं हे रामनामके रमनवारे, जीव ! तुम भलीतरह ते स्मृति में जहडाय गयो स्मृतिको तात्पर्यार्थ जो मैं ताको न जान्यो काहेते कि धोखाब्रह्म में बिश्वास कीन्हेते ॥ १ ॥

सोतौहैबनसी कसिहो रमैयाराम ।
शिरकैलियोबिश्वासहो रमैयाराम ॥ २ ॥

सो तौ है कहे सो धोखाब्रह्म बंसी की नाईं है जो मछरी बंसी में लागे है ताको प्राण छूटि जाइहै ऐसे तुहूं वामें लगैहै सो तेरो जीवत्व न रहैगो अर्थात् तेरो स्वरूप भूलिजाइगो मुरदाकी नाईं टँगो रहैगो तौने धोखाब्रह्म में शिरकै बिश्वास कैलियै है अथवा

जे गुरुवालोग तोको धोखाब्रह्ममें बिश्वास कराइदेइ हैं स्मृतिनका अर्थ फेरिकै ते बनके सीगट हैं उहां हैं वा जो ब्रह्म है सो तैं आहे यही कहै हैं अथवा हुआ है हुआ है या कहै हैं कि तैं लगा सो ब्रह्म हुआ जैसे सीगटनकी बाणी में अर्थ नहीं है ऐसे गुरुवालो-गनकी बाणी में अर्थ नहीं है तैं ब्रह्म कबहूं न होइगो तैं रामनाम में रमनवारो है सो ताही में रमै तबहीं तेरो बनैगो ॥ २ ॥

ईतौहैं बिधिभाग हो रमैयाराम । गुरुदीन्ह्यो मोहिं थापि हो रमैयाराम ३ गोबरकोटउठायहुहो रमैयाराम । परिहरिजैहोखेत हो रमैयाराम ॥ ४ ॥

साहब कहै हैं कि रामनाम के रमनवारे यह स्मृति बिधि निषेधका भाग कहावै है तौने भागबश मोको गुरुवालोग बहँ-काइ दियो मैं काकरौं मेरो दोष कौन है तो हमारो महल छोड़ि तहीं गोबरको कोट उठायहु है जो तैं गुरुवालोगनके न जाते और उपासना न पूछते तो वे काहेको बतौते सो मोको परिहरिकै तैं संसाररूप खेत में जैहै जहां सब उत्पत्ति होइ है ॥ ३ । ४ ॥

बुधिबलतहांनपहुँचैहो रमैयाराम । खोजकहांते होय हो रमैयाराम ५ सुनिमनधीरज भयल हो रमैयाराम । मनबढ़िरहललजाय हो रमैयाराम ॥ ६ ॥

सो धोखाब्रह्म में बुद्धि बल नहीं पहुँचैहै शून्य है खोज कहां ते होई जो कहो कि आपै में तो बुद्धि बल नहीं पहुंचै है तो जो कोई मेरे रामनाम में रमैहै मोको जानैहै ताको महीं बताइदेउहौं नयनइन्द्रिय देउँहौं ताहीमें मोहीं देखै है ५ गुरुवन की बाणी सुनिकै जो तेरे मन में धैर्य भयो कि हम ब्रह्म ह्वैजाइँगे सो राम में रमनवारे वा ब्रह्म में मन बढ़िकै कहे बिचार करत करत ल-जायगयो ब्रह्म न भयो मन आपनी गति जब नहीं देखै है तब सकुचिकै वाही में रहिजाइ है मनको नाश नहीं होय है ॥ ६ ॥

फिरिपाछेजनिहेरो हो रमैयाराम । कालबूतसबआय

हो रमैयाराम ७ कहकबीरसुनौसन्तोहो रमैयाराम। मति ढिगहीफैलावहो रमैयाराम ॥ ८ ॥

तुमतो रामनाम में रमनवारे ईतो सब तुमते पाछे हैं तिनकी ओर जनिहेरौ मायाब्रह्म काल के पराक्रम आय जो इनके ओर हेरोगे तौ ये काल के बूत आय कहे काल के पराक्रम है अर्थात् माये ब्रह्मद्वारा कालनाश सबको कैदेहै ७ सो श्रीकबीरजी कहे हैं कि हे सन्तो! साहब कहै हैं सो सुनते जाउ तुमतो रामनाम में रमनवारेहो दूरि दूरि कहां खोजौहो मति को ढिगही में फैलाव अर्थात् अपने स्वरूप को बिचारु कि मैं कौन को हौं तो या जानि लेइ तैं कि मैं राम में रमनवारो हौं रामनाम स्मरण करौगे तबहीं मुक्ति होयगी तामें प्रमाण—असचरितदेखिमनभ्रमैमोर। ताते निशिदिनगुणरमौंतोर ॥ यक पढ़हिंपाठ यकभ्रम उदास। यक नागिननिरन्तररहनिवास ॥ यकयोगयुक्तितिनहोहिंखीन। यक रामनामसँगरहललीन ॥ यकहोंहिंदीनयकदेहिंदान। यककलपि कलपि कै होयँ हरान ॥ यकतन्त्रमन्त्रऔषधीवान। यकसकल सिद्धिराखैं अपान ॥ यकतीरथव्रतकरिकयाजीति। यकरामनामसों करन प्रीति ॥ यकधूमघोटितनहोहिं श्याम। तेरी मुक्ति नहीं बिन रामनाम ॥ सतगुरूशब्दतोहिकहपुकार। अबमूलगहो अनुभवबिचार ॥ मैं जरामरण ते भयउँ थीर। भै रामकृपायह कहकबीर ॥ ८ ॥

इति बेलि संपूर्णम् ॥

अथ चाचरि प्रारम्भः ॥

दोहा ॥ खेलति मायामोहिनी, जेरकियो संसार। कटिकेहरि गजगामिनी, संशय कियो शृँगार १ रचैरङ्गकीचूनरी, सुन्दरिप-हिरैआय। शोभा अद्भुतरूपकी, महिमा बरणि न जाय २ चन्द्र-बदनि मृगलोचनी, बिन्दुकादियोउघालि। यती सती सब मो-हिया, गजगति वाकी चालि ३ नारद को मुख माड़ि कै, लीन्हों

बदन छिनाय । गर्बगहेलीगर्बते, उलटिचलीमुसकाय ४ शिवअरु ब्रह्मादौरिकै, दोनों पकरे जाय । फगुवालीनछोड़ायकै, बहुरिदियो छिटकाय ५ अनहद धुनि बाजा बजै, श्रवणसुनतभोचाव । खेलनहारीखेलिहै, जैसी वाकी दाव ६ आगेढालअज्ञानकी, टारेटरत न पाव । खेलनिहारी खेलिहै, बहुरि न ऐसी दाव ७ सुरनरमुनि भूदेवता, गोरखदत्ताव्यास । सनक सनन्दन हारिया, और कि केतिक आस ८ छिलकत थोथे प्रेमसों, धरि पिचकारी गात । करिलीनो बश आपने, फिरि फिर चितवतजात ९ ज्ञानगाड़लै रोपिया, त्रिगुणलियो है हाथ । शिवसँगब्रह्मालीनिया, और लिये सबसाथ १० एक ओर सुरमुनिखड़े, एकअकेली आप । दृष्टिपरे छोड़ैनहीं, करिलीनोयकछाप ११ जेतेथतेतेलियो, घूंघुटमाहँ समोय । कज्जलवाकेरेखहै, अदगगया नहिं कोय १२ इन्द्रकृष्ण द्वारेखड़े, लोचनदोउललचाय । कहकबीरतेऊबरे, जाहिन मोह समाय ॥ १३ ॥

खेलति मायामोहिनी, जेरकियो संसार । कटिकेहरि गजगामिनी, संशय कियो शृँगार १ रचेरङ्गकी चूनरी, सुन्दरिपहिरै आय । शोभा अद्भुतरूपकी, महिमा बरणि न जाय ॥ २ ॥

जौन माया सब संसार को जेरकियो है सो मोहिनी माया चाचरि खेलै है केहरि जो है काल सबको खाइलेनवारो सो वाकी कटि है कहे मध्यभाग है मध्य में बैठिकै अर्धऊर्ध्व को खाय है व मन गज है तेही करिकै चलैहै व संशयरूप शृङ्गार किये अर्थात् जहैं बहुत संशय होइहै तहैं माया बहुत शोभित होइहै १ नारि लोग रचेकहे जो पाउ को रुचैहै सो चूनरी पहिरै हैं और माया नाना विषय जो जीवनको नीक लगै ताकी चूनरी पहिरै हैं अद्भुत शोभा त्रियनहूं की होइहै यहै मायौ की अद्भुत शोभा है ॥ २ ॥

चन्द्रबदनिमृगलोचनी, बिन्दुकदियोउघालि । यती

सतीसबमोहिया, गजगतिवाकीचालि ३ नारद को मुख माड़िकै, लीन्हो बदनछिपाय । गर्ब गहेली गर्बते, उलटि चलीमुसकाय ॥ ४ ॥

और नारी चन्द्रबदनी मृगनयनी बिन्दुक दीन्हे घूंघुट उघारि गज की नाईं चलि सबको मोहे हैं माया कैसी है कि याहू चन्द्रबदनी है आपने पदार्थते सबको आनन्द देय है मृगनयनी कहे यहू चञ्चल है बिन्दुक दीन्हे उघारि कहे आपने रागको फैलाय देइ है गजगति कहे धीरे धीरे यती सती सबको मोहे है ३ वे स्त्री नारद कहे जाके रद कहे दांत नहीं हैं ऐसे जे वृद्ध पुरुष तिनको मुख माड़िकै बदन कहे बोलिबो छिनाय लेती हैं अर्थात् और बोलिबो सो छूटि जाइ है नारी नारी यहै कहै हैं चाचरि वोऊ गावै लगेहैं अथवा माया जो है सो नारद ऐसे मुनि को बांदर की नाईं मुख कै दियो शीलनिधि राजाकी कन्या को काज करै चले और स्त्री गर्बको गहे लोगनके मोहिबे को चाचरि में मुसक्याय चलैहै व माया जोहै सोऊ नारद के गर्बको गहिकै मुसक्यायकै चलीहै॥ ४॥

शिव अरु ब्रह्मा दौरिकै, दोनों पकरे जाय । फगुवा लीन छिनायकै, बहुरिदियो छिटकाय ५ अनहदधुनि बाजाबजै, श्रवण सुनत भो चाव । खेलनिहारी खेलिहै, जैसी वाकी दाव ॥ ६ ॥

और स्त्री जे हैं ते पुरुषनते चाचरि में पकरि फगुवा लैकै आपुस में छिटकाय कहे बांटि लेयहैं व माया जो है सोऊ ब्रह्मा शिव तिनको पकरिकै फगुवा जो नानामत सो लैकै अनेक ब्रह्माण्डन में छिटकाय दीन्हो ५ चाचरि में बाजा बजै है ताको सुनिकै चाव होइहै खेलनिहारी आपनो दावँ ताकिताकि खेलैहै और माया जोहै सोऊ अनहद्बाजा योगिनके बजाइकै जौनेके सुनतमें योगिनके चाव होइहै सो खेलनिहारी जो कुण्डलिनी शक्ति सो जैसो वाको दावँ है तैसो खेलैहै जीवको चढ़ावै व उतारै है ॥ ६ ॥

आगेढालअज्ञानकी, टारेटरतनपांव। खेलनिहारीखेलि है, बहुरिनऐसीदांव ७ सुरनरमुनिभूदेवता, गोरखदत्ता ब्यास। सनकसनन्दनहारिया, औरकिकेतिकआस ॥८॥

चाचरिमें स्त्री भोडरकी ढाल आगेकरि पांव पीछेको नहीं टारैहैं सो खेलनिहारी जेहैं ते जब पतिको पायजाय हैं तब कहै हैं कि खेलि लेउ अब ऐसो दावँ न मिलैगो व माया जो है सोऊ अज्ञान की ढाल आगे लीन्हे है जाको पांव ज्ञानभक्ति वैराग्यकरि टारे नहीं टरै सो खेलनिहारी जो माया सो खेलबै करी ऐसो दावँ वाको फिरि न मिलैगो अपने बशकरि पायो है ७ व चाचरि में स्त्रिनते पुरुष हारिजाय हैं सुख मानै हैं व माया जो है ताहूसों सुर जे हैं नर जे हैं मुनि जे हैं भूदेव जे ब्राह्मण हैं गोरख जे हैं दत्तात्रेय जे हैं ब्यास जे हैं सनक सनन्दन जे हैं ते सब हारिगये और की कौन गनती है ॥ ८ ॥

छिलकतथोथे प्रेमसों, धरिपिचकारीगात। करिलीनो बशआपने, फिरिफिरिचितवतजात ९ ज्ञानगाड़लैरोपिया, त्रिगुणलियेहैहाथ। शिवसँगब्रह्मालीनिया, और लियेसबसाथ ॥ १० ॥

चाचरिमें नारी रङ्गकी पिचकारी गात में सींचि आपने बश करि फिरि फिरि चितवत कहे कटाक्ष करै हैं व माया जो है सोऊ थोथे कहे झूठेप्रेमसों संसार राग सबको गात सींचैहै आपने बश करिलियोहै व फिरि फिरि चितवत जातै है कहे सबको ताकेरहै है कि कोऊ बाच्यो तौ नहीं ९ व चाचरि में स्त्रीलोग रङ्गके हौद में डारिदेइहैं व फूलन के माला में हाथ बांधैहैं पुरुषनको व माया जो है सोऊ ज्ञानके गाड़ में ब्रह्मादिक देवतनको डारिकै त्रिगुण की फांसी में बांधिलियो ॥ १० ॥

एकओरसुरमुनिखड़े, एकअकेलीआप। दृष्टिपरे

छोड़ै नहीं, करिलियएकैछाप ११ जेतेथेतेतेलियो, घूंघुट माहँसमाय। कज्जलवारेरेखहैं, अदगनकोईजाय १२ इन्द्रकृष्णद्वारेखरे, लोचनिनिजललचाय। कहकबीरते ऊबरे, जाहिन मोहसमाय॥ १३॥

और चाचरि में दुइपारा होयहैं एक ओर आप एक ओर पुरुष होइहै ऐसे सुर, नर, मुनि सब एक ओर हैं एक ओर माया अकेली आप है दृष्टि परे काहूको नहीं छोड़ै है ११ व स्त्री जे हैं ते आपने घूंघुट में सबको मन समाय लेइ हैं सबके काजर लगाइ देइहैं अदग कोई नहीं जाय है माया जो है सोऊ आपने में सबको समाय लियो है सबके एक दाग लगाइ दियो है अदग कोई नहीं बच्यो १२ चाचरि में त्रिनके द्वारे इन्द्र कृष्ण सब खड़े रहै हैं लोचन देखिबेको ललचाय हैं ऐसे माया जोहै ताहूके द्वारे में इन्द्र कृष्ण जे हैं उपेन्द्र ते खड़ेहैं माया के देखिबे को लोचन ललचाय हैं तो श्रीकबीरजी कहै हैं कि तेई पुरुष उबरे हैं जे मोह में नहीं समाने हैं॥ १३॥

इति पहिली चाचरि समाप्तम्॥ १॥

अथ दूसरी चाचरि॥ २॥

जारहु जगको नेहरा मन बौराहो। जामें शोक संताप समुझ मनबौराहो १ कालबूतको हस्तिनी मनबौराहो। चित्ररचो जगदीश समुझ मनबौरा हो २ बिना नेइको देवघरा मनबौराहो। बिन कहगिलकै ईंट समुझ मनबौरा हो ३ तन धन क्या सो गर्ब समुझ मनबौराहो। भसम क्रीमकीसाजु समुझ मनबौराहो ४ काम अन्ध गजवशपरे मनबौरा हो। अंकुश सहिया शीश समुझ मनबौराहो ५ ऊँच नीच जानेहु नहीं मनबौरा हो। घर घरनाचेहु द्वार समुझ मनबौरा हो ६ मरकट मूठी स्वाद की मनबौरा हो। लीन्हों भुजा पसारि समुझ मनबौरा हो ७ छूटन की

संशय परा मनबौरा हो । घर घर खायो डांग समुझ मनबौरा हो ८ ज्यों सुवना नलिनी गह्यो मनबौरा हो । ऐसाभर्म बिचारि समुझ मनबौरा हो ६ पढ़ेगुनेका कीजिये मनबौरा हो । अन्तबिलैया खाय समुझ मनबौरा हो १० सूने घरका पाहुना मनबौरा हो । ज्यों आवे त्यों जाय समुझ मनबौरा हो ११ न्हाने का तीरथघना मनबौरा हो । पूजेका बहुदेव समुझ मनबौरा हो १२ बिनपानी नलबूड़िया मनबौरा हो । तुमटेकहु राम जहाज समुझ मनबौरा हो १३ कह कबीर जग भर्मिया मनबौरा हो । तुम छोड़े हरिकासेव समुझ मनबौरा हो ॥ १४ ॥

जारहु जगको नेहरा मनबौरा हो । जामें शोक संताप समुझ मनबौराहो १ कालबूतकी हस्तिनी मनबौराहो । चित्ररचो जगदीश समुझ मनबौराहो २ बिनानेइको देव घरामनबौराहो । बिनकहगिलकैईंटसमुझमनबौराहो ॥ ३ ॥

हे मन करिकै बौरा, जीव ! जौने में शोक संताप अनेक पावै है ते सब ऐसो जगत् को नेहरा समुझिकै जारिदे १ व या जगत् काल बूत जो धोखा ताकी हस्तिनी है अर्थात् झूठो है जौन रूप ते देखै जगदीश जो साहब ताको रचो यह चित्र है सो बिचारि के छांड़ो व या देह कैसीहै जैसे विना नेहको देवाला व धन कैसो है जैसे बिना गिलावाकी ईंट अर्थात् देवालाकी नाईं यातन गिरिही जायगो ईंट की नाईं जैसे ईंट खरिकिजाइ है तैसे तन खरिकिही जायगो ॥ २ । ३ ॥

तन धन सों क्या गर्ब, समुझ मनबौराहो । भसम क्रीम की साजु, समुझ मन बौराहो ४ कामअन्ध गज बश, परे मनबौराहो । अंकुशसहियाशीश, समुझमन बौराहो ५ ऊंचनीच जानेहुनहीं, मनबौराहो । घरघर नाचेहुद्वार, समुझ मनबौरा हो ॥ ६ ॥

सो ऐसे नाशवान् तन धनको क्या गर्ब करैहै भस्म व कीरा की साजु है सो तैं जैसे कामते आंधर हैकै हाथी हथिनी वास्ते बँधिकै अंकुश शीश में सहै हैं ऐसे तैं विषयकी बश परिकै नाना प्रकार के दुःख सहै है ऊंच नीच न पहिंचाने द्वार द्वार बागत फिरै है ॥ ४ । ५ । ६ ॥

मरकट मूठीस्वादकी मनबौराहो । लीन्हींभुजापसारि समुझ मनबौराहो ७ छूटनकी संशय परी मनबौराहो । घरघरखायोडांग समुझमनबौराहो ॥ ८ ॥

जैसे मर्कट स्वाद के लिये भुजापसारि चना लेइ है मूठी नहीं छांड़ै है ऐसे तैं मुक्तिके लिये नानामतन में परिकै दृढ़ कैलियो है साहब को नहीं जानैहै सो तोको संसारते छूटिबे की संशय आइ परी है यमके घर लाठी खाय है पै मत नहीं छांड़ै है सो हे बौरा, जीव! मनकरिकै समुझुतो ॥ ७ । ८ ॥

ज्योंसुवनानलिनीगह्यो मनबौराहो । ऐसाभर्मविचारि समुझमनबौराहो ९ पढ़ेगुनेकाकीजिये मनबौरा हो । अन्तबिलैयाखाय समुझमनबौरा हो॥ १० ॥

जैसे नलिनी को सुवा भ्रमते गहैहै कोऊ धरे नहीं है ऐसे तुहूं आपने भ्रमते बँधो है सो साहब को जानै बिचार करै तो छूटिही जाय है जो सुवा पढ़े गुने बहुत भयो तो काभयो बिलैया तो अन्त में खाय है सो ऐसे तैं बहुत पढ़िगुनि नानामत कीन्हे परन्तु जौने में मीचते बचै सो तो करबही न कियो ॥ ९ । १० ॥

सूनेघरकापाहुनामनबौराहो । ज्यों आवै त्यों जाय समुझ मनबौरा हो ११ न्हानेकातीरथघना मनबौरा हो। पूजैका बहुदेव समुझ मनबौरा हो १२ बिनपानी नलबूड़ियामनबौराहो । टेकहु राम जहाज समुझ मन

बौराहो १३ कहकबीरजगभर्मिया मनबौराहो। छोड़ेहरि को सेव समुझमनबौराहो॥ १४॥

सो तैं शून्य धोखाब्रह्म में लगिकै सूना घर को पाहुना भयो जैसे आयो तैसे चल्यो मुक्ति न भई सो जो मुक्ति न भई तौ का बहुत तीर्थ नहाये भयो का बहुत देवपूजे भयो तैंतो बिना पानी को जो संसार समुद्र तौनेनमें बूड़िगयो सो तैं श्रीरामनामरूपी जहाज समुझिकै धरु श्रीकबीरजी कहे हैं कि हे मन करिकै बौरा, जीव! जगत् में भर्मिया कहे भ्रमत फिरै है हरि जे साहब हैं तिनकी सेवा छोड़िकै सो हे मनबौरा! अबहूं समुझ॥ ११। १२। १३। १४॥

इति तीसरी चाचरि समाप्तम्॥ ३॥

इति चाचरि समाप्तम्॥

अथ हिंडोला प्रारभ्यते॥

भर्महिंडोलना झूलै सबजग आय॥ जहँपापपुण्यकेखम्भदोउ मेरुमायानाय। तहँकर्मपटुली बैठिकै कोको न झूलै आय १ यह लोभ मरुवा विषय भमरा कामकीलाठानि। दोउ शुभौ अशुभ बनाय डांड़ी गह्यो दूनौ पानि २ झूलैसो गणगन्धर्व मुनिनर झुलै सुरगण इन्द्र। झूलतसुनारदशारदाहोझुलतब्यासफणिन्द्र ३ झूलतबिरञ्चिमहेशमुनिहो झुलतसूरजइन्दु। औ आप निर्गुणसगुण ह्वैकै झूलियागोबिन्दु ४ छचारिचौदहसातयकइस, तीनलोकबनाय। चौखानिबानीखोजिदेखौ, थिरनकोइरहाय ५ शशिसूर निशिदिनसन्धिऔ तहँतत्त्वपांचौंनाहिं। कालहुअकालहुप्रलयनाहिं तहँसन्तबिरलेजाहिं ६ खण्डहुब्रह्मण्डहुखोजिषटदरशनयेछूटे नाहिं। यहसाधुसंगबिचारिदेखौजोउनिसतारिजाहिं ७ तहँकेबिछुरि बहुकल्पबीतेपरेभूमिभुलाय। अबसाधुसंगतिशोचिदेखौ बहुरि उलटिसमाय ८ तेहिझूलबेकीभयनाहिं जो सन्तहोहिंसुजान। कह कबीरसतसुकृतमिलै तौ फिरि न झूलै आन॥ ९॥

भर्महिंडोलनाझूलै सबजगआय॥ जहँ पापपुण्य के

खम्भ, दोऊमेरुमायानाथ। तहँकर्मपटुलीबैठिकै, कोको न भूलैआय १ यहलोभमरुवा बिषयभमरा, कामकीला ठानि। दोउशुभौअशुभबनाय, डांड़ीगहेदूनौपानि ॥ २॥

परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र के विना जाने भरमको हिंडोला सब संसार भूलैहै कैसो है हिंडोला जहां पाप पुण्यरूप दोऊ खम्भ हैं माया जो है सो मेरु कहे गोला है जौने में कर्मरूपी पटुली है ताही में बैठिकै को नहीं भूल्यो अर्थात् सब भूल्यो है १ लोभ जो है सोई मरुवालगो है विषम जो है सोई भमरा है काम जो है सोई कीलाहै व शुभौ अशुभ जे उपासना हैं तेई डांड़ी हैं ताको पाणि ते गहिकै सब भूलैहैं को को भूलैहैं ताको आगे कहैहैं॥ २॥

भूलेसोगणगन्धर्वमुनिनर, भुलेसुरगणइन्द्र। भूलत सुनारदशारदाहो, भुलतव्यासफणिन्द्र ३ भूलतबिरञ्चि महेशमुनिहो, भुलतसूरजइन्दु। औआपनिर्गुणसगुण ह्वैकै भूलियागोबिन्दु ॥ ४ ॥

गन्धर्व, मुनि, नर, सुरगण, इन्द्र, नारद, शारदा, व्यास फणीन्द्र जे हैं शेष महेश जे हैं बिरञ्चि, सूर्य, चन्द्रमा ये सब भूलै हैं और कहां तक कहैं सगुण निर्गुणरूपते अर्थात् चित् अचित् के अन्तर्यामी ह्वैकै गोबिन्द जे हैं तेऊ भूलैहैं ॥ ३ । ४ ॥

छचारिचौदहसातयकइस, तीनलोकबनाय। चौ-खानिबानीखोजिदेखौ, थिरनकोइरहाय ॥ ५ ॥

छः जे शास्त्र हैं चारि जे वेद हैं चौदह जे विद्या हैं सातजेद्वीप हैं व इक्कीसौ जे हैं सातशून्य सातसुरति सातकमल यतनेमें परे जे तीनिउलोक की रचना भई सो इनमें चारिउखानिके परे जे जीव तिनकी हम चारिउ बानी ते वेदशास्त्रादिकन ते बिचारि खोजि देख्यो कोई थिर नहीं रहैहैं सबै भूलैहैं सो तैं यहां को नहीं है तैं तो बाहर को है जहां इहां की साजु उहां एकौ नहीं है ॥ ५ ॥

शशिसूरनिशिदिनसंधिऔ तहँ, तत्त्वपांचौनाहिं। कालौअकालौप्रलयनहिं, तहँसन्तबिरलेजाहिं ६ खण्डौ ब्रह्मण्डौखोजिषट, दरशनयेछूटेनाहिं। यह साधुसंगबि-चारिदेखौ, जीउनिसतरिजाहिं ॥ ७ ॥

न उहां सूर्य हैं न चन्द्र हैं न दिन है न राति है न संध्या है न पांचौ तत्त्व हैं न काल है न अकाल है न उहां प्रलय है ऐसी जगह में कोई बिरले सन्त जाइ हैं ६ पुनि कैसो है जाको खण्ड जो शरीर ब्रह्माण्ड जो जगत् तामें वाको छहउ दर्शनवारे खोजि खोजि हारे परन्तु पाये नहीं न संसार ते छूटे सो ऐसे लोकको साधु जेहैं तिनको संगकरिकै बिचारिकै देखै जाते जीव यहि संसार ते निस्तरिजाइ ॥ ७ ॥

तहँकेबिछुरिबहुकल्पबीतेपरेभूमिभुलाय । अबसाधु संगतिशोचिदेखौ बहुरिउलटिसमाय ८ तेहिभूलबेकी भय नहीं जो सन्तहोहिं सुजान । कह कबीर सतसुकृत मिलै तौफिरिनभूलैआन ॥ ९ ॥

सो ऐसे लोकते बिछुरे तोकों केतन्यों कल्प व्यतीत भये तैं संसारमें भुलायकै परे आय सो तैं अब साधुसंगति करि बिचारिकै रामनाम को जानै जाते बहुरिकै वहैं समाय अर्थात् जहांते आये है तहैं जाय या संसार हिंडोला छांडु जो कोई साहब के जाननवारे सुजान साधु हैं तिनको या हिंडोला में झूलबे की भय नहीं है तिनसों श्रीकबीरजी कहै हैं कि जो याको सतसुकृत रामनाम मिलै तो फिर आनीबार न भूलै को जपिबे जो है सोई सत्यसुकृत है वही बाङ्मनोगोचरातीत जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके और जे सुकृत हैं ते क्षयमान हैं व रामनाम पास पहुँचबे है तहांते नहीं लौटे है तामें प्रमाण "सप्तकोटिमहामन्त्राश्चित्तविभ्रमकारकाः । एक एव परो मन्त्रो राम इत्यक्षरद्वयम्" (इति सारस्वततन्त्रे)

दूसर प्रमाण "इममेव परं मन्त्रं ब्रह्मरुद्रादि देवताः। ऋषयश्च महात्मानो मुक्ता जप्त्वा भवाम्बुधेः" (इति पुलहसंहितास्मृतिः)॥८।६॥

इति प्रथम हिंडोला समाप्तम् ॥ १ ॥

अथ दूसरा हिंडोला ॥ २ ॥

बहुबिधिके चित्र बनाइकै, हरि रच्योक्रीड़ारास। ज्यहि नाहिं इच्छाभूलबे, असबुद्धि केहिके पास १ भूलत भुलत बहुकल्पबीते, मन न छोड़ै आस। यह रच्यो रहस हिंडोलना, निशि चारियुग चौमास २ कबहूंक ऊंचे नीच कबहूं, स्वर्ग भूलौं जाय। अतिभ्रमत भ्रमहिं हिंडोलना, सो नेकु नाहिं ठहराय ३ डरपतरहौं यहि भूलिबेको, राखु यादवराय। कह कबिर सुनु गोपाल बिनती, शरण हौं तुव पाय ॥ ४ ॥

बहुबिधिके चित्रबनाइकै, हरिरच्योक्रीड़ारास। ज्यहि नाहिं इच्छाभूलबे, असबुद्धि केहिके पास १ भूलत भुलतबहुकल्पबीते, मननछोड़ैआस। यह रच्यो रहस हिंडोलना, निशिचारियुगचौमास २ कबहूंकऊँचेनीच कबहूं, स्वर्गभूलौंजाय। अतिभ्रमतभ्रमहिं हिंडोलना, सोनेकुनहिं ठहराय ३ डरपतरहौं यहिभूलिबेको, राखु यादवराय। कह कबिर सुनु गोपाल बिनती, शरणहौं तुवपाय ॥ ४ ॥

बहुताबिधि चित्र बनाइकै या जगत हरि जे हैं गोलोकबासी कृष्णचन्द्र आपनी क्रीड़ा बनाइ राख्यो है अर्थात् अन्तर्यामीरूप ते आपही बिहार करैहैं सो या जगत्रूप हिंडोला में भूलिबे की बुद्धि काहूके नहीं आई अर्थात् सबैके है न भूलिबेकी बुद्धि कोई बिरले सन्तनके है सो ऐसो हिंडोलना चारियुग जे हैं चौमास तामें रच्यो है जीवन को भूलत भूलत कोटिन कल्प व्यतीतभये

तऊ झूलिबेकी आशा मन नहीं छोड़े है हिंडोला के चढ़ैया कहूं नीचे आवै हैं कहूं ऊँचे जाय हैं ऐसे अतिभ्रमत जो जगतूरूप हिंडोला तामें परे जे जीव ते कहूं नरक को जाय हैं कहूं स्वर्ग को जाय हैं सो हे जीवो ! या जगतूरूप हिंडोला झूलिबे को डरतरहौ राखु यादवराय या कहौ कि हे यादवराय, कृष्णचन्द्र ! हमको बचायो सो हे कायाके बीरौ जीवो ! यह कहौ कि हे गोपाल गो जे हैं इन्द्रिय तिनके रक्षा करनवारे ! हमारी बिनती सुनो हम तुम्हारे चरण शरण हैं ॥ १ । ४ ॥

इति दूसरा हिंडोला समाप्तम् ॥ २ ॥

अथ तीसरा हिंडोला ॥ ३ ॥

जहँ लोभ मोहके खम्भदोऊ, मन रच्योहै हिंडोर । तहँ झुलहिं जीव जहान, जहँलगि कतहुँ नाहिं थित ठोर १ चतुराझूलैं चतुराइया, झूलैं औ राजासेव । अरु चन्द्र सूरज दोऊ झूलहिं, नाहिं पायो भेव २ चौरासिलक्षहु जीव झूलैं, धरहिं रविसुत धाय । कोटिन कलप युग बीतिया, मानै न अजहूं हाय ३ धरणी अकाशहु दोऊ झूलैं, झुलैं पवनहुं नीर । धरि देह हरि आपहू झूलहिं, लखहिं हंसकबीर ॥ ४ ॥

जहँ लोभ मोहके खम्भदोऊ, मन रच्यो है हिंडोर । तहँ झूलहिं जीव जहान, जहँलगि कतहुँ नाहिं थित ठोर १ चतुराझूलैं चतुराइया, झूलैं औ राजा सेव । अरु चन्द्र सूरज दोऊ झूलहिं, नाहिं पायो भेव २ चौरासि लक्षहु जीवझूलैं, धरहिं रविसुत धाय । कोटिन कलपयुग बीतिया, मानै न अजहूँ हाय ३ धरणी अकाशहुदोऊझूलैं, झुलैं पवनहुँ नीर । धरिदेह हरि आपहू झूलहिं, लखहिं हंसकबीर ॥ ४ ॥

जौन जगत् में लोभ मोह के खम्भ बनाइकै मनको रच्यो जो हिंडोल ताहीमें सब जहानके जीव झूलै हैं थिर नहीं कौनो ठौर में रहै हैं चतुर चतुराईते झूलै हैं राजा झूलै हैं सेवक झूलै हैं चन्द्र सूर्य तेऊ झूलैहैं हिंडोला को भेद नहीं पावैहैं चौरासीलक्ष योनि के जीव झूलैहैं तिनको सबको रविसुत जे यमराज ते धेरै हैं सो कोटिन कल्प बीतिगये जीवनको झूलत परन्तु अजहूं नहीं मानै हैं और धरणी, आकाश, पवन, पानी ये सब वही हिंडोला में झूलै हैं और देह धरिकै कहे अवतार लैकै जौनी रीति सब झूलैहैं तौनी रीति हरि आपहू झूलैहैं जीवन को यह दिखाइबे को कि जैसे तुमहूं झूलौ हौ तैसे हमहूं झूलै हैं सो देह धरेको फल यह है इनको हेतु कोई जानि नहीं सकैहै कि जीवनपर दया करिकै उद्धार करिबे को हेतु दिखावै हैं कि देह को फल यह संसारई है ताते देह को अभिमान छोड़ि हमारे अवतार के नाम लीलादिकनमें लागि मनको त्याग करिकै चारो शरीरन को त्याग करि देउ जब तुम आपने स्वरूप में स्थित रहौगे तब हंसस्वरूप दै आपने धामको लैआवैंगो यह बात कोई नहीं लखैहै कहे जानै है जे हंसस्वरूप पाये काया के बीर जीव हैं तेई जानैहैं याते साहबकी दयालुता व्यञ्जितभई ॥ १ । ४ ॥

इति हिंडोला समाप्तम् ॥

अथ बिरहुली लिख्यते ॥

आदि अन्त नहिं होत बिरहुली । नहिंजड़ पल्लवपेड़ बिरहुली १ निशिबासर नहिं होत बिरहुली । पानीपवन न होत बिरहुली २ ब्रह्माआदिसनकादिबिरहुली । कथिगयेयोगअपारबिरहुली ३ मास अषाढ़हिशीत बिरहुली । बोइन सातौ बीज बिरहुली ४ नितगोड़ै नितसिंचै बिरहुली । नित नवपल्लवपेड़ बिरहुली ५ छिछिलाबिरहुलीछिछिल बिरहुली । छिछिलरहीतिहुँलोक बिरहुली ६ फूलएक भलफुललबिरहुली । फूलिरहलसंसारबिरहुली ७ ते फुलबन्देभक्त

बिरहुली । बांधिकेराउरजाहि बिरहुली ८ तेफुललेहींसन्तबिर-हुली । डसिगो बेतल सांप बिरहुली ९ बिष हर मन्त्रनमानबिर-हुली । गाडुरि बोले आरबिरहुली १० बिषकी क्यारी बोयो बिर-हुली । लोरतका पछिताय बिरहुली ११ जन्म जन्म अवतरेबिर-हुली । फलयककनयलडार बिरहुली १२ कह कबीरसचुपायबिर-हुली । जो फल चाखहु मोर बिरहुली ॥ १३ ॥

आदिअन्तनहिंहोतबिरहुली।नहिंजड़पल्लवपेड़ बिरहुली १
निशिबासरनहिंहोतबिरहुली । पानीपवननहोत बिरहुली २
ब्रह्म आदिसनकादिबिरहुली।कथिगयेयोगअपारबिरहुली ३

बी कहे दुइ विद्या अविद्यारूप ते बिरहुली कहे रहनवाली जो माया ताको न आदि है न अन्त है अर्थात् विचार कीन्हे भ्रम-मात्रै है जीव छूटिमात्र जाइ है सो बिरहुली जो माया ताके न जड़ है न पेड़ है न पल्लव है अर्थात् विचार कीन्हे मिथ्या है १ जब निशि बासर नहीं होत है तबहूं बिरहुली माया रही है जब पानी पवन नहीं रह्यो तबहूं बिरहुली माया रही है और ब्रह्मा सनकादिककी आदि बिरहुली है और जौनेयोग अपार कथिगये हैं सोऊ बिरहुली है ॥ २ । ३ ।

मासअषाढ़हिशीतबिरहुली । बोइनिसातौबीजबिरहुली४
नितगोड़ैनितसिंचैबिरहुली । नितनवपल्लव पेड़बिरहुली ५

जब प्रथम उत्पत्तिभई है सोई आषाढ़मास है काहेते चौमास को आदि आषाढ़ है तैसे युगन को आदि सतयुग है सो कैसा है शीत कहे शुद्ध सतोगुण है तौने में जीव सातौ सुरति तेई हैं बीज ते के बोवतभये ते सब बिरहुलिन आइ सो मङ्गल में लिखिआये हैं कि " सात सुरति सब मल हैं प्रलयहु इनहीं माहँ " सो जीव नित गोड़ैहै गुरुवनते बोई कर्म पूछैहै खोदि खोदि नित सींचै है कहे बोई कर्म करैहै जाते बिरहुली कहे माया बढ़ते जाइहै॥४।५॥

छिछिल बिरहुली छिछिल बिरहुली । छिछिलरहल तिहुँलोक बिरहुली ६ फूल एक भल फुलल बिरहुली । फूलि रहल संसार बिरहुली ॥ ७ ॥

कहूं विद्यारूप ते छिछिली है बिरहुली माया कहूं अविद्यारूप ते छिछिली है बिरहुली माया यही रीतिते तीनों लोक में बिरहुली छिछिलरही है सो यही माया बिरहुली में कहूं कर्मत्याग रूप एक फूल धोखाब्रह्म फूलिरह्यो है ताही में सब संसार लागि कै फूलिरहे कहे आनन्द मानिलिये हैं ॥ ६ । ७ ॥

तेफुलबन्दैभक्तिबिरहुली । बांधिकैराउरजायबिरहुली ८
तेफुललेहींसन्तबिरहुली । डसिगोबेतलसांपबिरहुली ९

ते फुल कहे तौन जो धोखाब्रह्म सो भक्तन को बन्दैहै अर्थात् खुलो नहीं है वे धोखा में नहीं परे हैं काहेते वाको बांधि कै कहे खण्डन करिकै राउर जो साहबको महल है तहांको जाहि हैं और जे सन्त धोखाब्रह्मरूप फूल लेहिहैं अर्थात् ब्रह्मबिचार में जे शान्त भे साहब को भूलिगे ते बेतल कहे बेताल भुतहा सांप ऐसो जो धोखाब्रह्म तौनेते डसिगे धुनि या है जाको सांप डसै है ताको स्वरूप भूलिजाइ है सांपै बोलै है ऐसे ज धोखाब्रह्मवारे हैं तिनहूं को आपनास्वरूप भूलिगये कहै हैं हमहीं ब्रह्म हैं ॥ ८ । ९ ॥

बिषहरमन्त्रनमानबिरहुली।गाडुरिबोलेआर बिरहुली १०
बिषकीक्यारीबोयोबिरहुली।अवलोरतपछितायबिरहुली ११

जाको ब्रह्मरूप सर्प डस्यो सो ब्रह्मरूप सर्प को बिषहरनवारो जो रामनाम ताको नहीं मानैहै गाडुरि जे हैं ते आरबोलै हैं भ्रमैहैं इहां सतगुरु जे हैं ते रामनाम उपदेश करै हैं परन्तु नहीं मानै हैं सो विषय की कियारी जो या संसार तामें आत्मज्ञानरूप बीज बोयो सो वा बिरहुली कहे मायै आय सो अवलोरतकहे काटतमें का पछिताय है अबका विषय छांड़ैहै नहीं छांड़ै है कहूं ब्रह्मानन्द

की कहूं विषयानन्द की चाह विद्या में ब्रह्मानन्द की चाह अविद्या में विषयानन्द की चाह तोको नहीं छोड़े है ॥ १० । ११ ॥

जन्मजन्मअवतरेउबिरहुली।फलयककनयलडारबिरहुली १२
कहकबीरसचुपायबिरहुली । जोफलचाखहुमोरबिरहुली १३

सो हे जीव ! बिरहुली जो माया ताही में तुम जन्म जन्म अवतर्‌यो जौने बिरहुली को फल धोखाब्रह्म और वह कर्मफल कैसो है कि कनयल कैसो फल है अर्थात् निरस है रस नहीं है और बिषधर है सो कौनीतरह ते सचुपावोगे सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि तब सचु को पावै जब फल मोर चाखै कहे जौने राम नाम में मैं जपौ हौं ताही फलको चाखै तो सुचित्तई पावै या कनयल का फल न चाखै ॥ १२ । १३ ॥

इति बिरहुली समाप्तम् ॥

अथ साखी लिख्यते ॥

जहिया जन्म मुक्ता हता, तहिया हता न कोइ ॥
छठी तिहारी होजगा, तू कहँ चला बिगोइ १

गुरुमुख ॥ जीवसों साहब कहै हैं जहिया कहे प्रथम जब तुम जन्मते मुक्त रह्यो है कहे जन्म मरण ते छूटरह्यो है तहिया कहे तब ये मनादिक नहीं रहे जो जहिया जनमुक्ताहता या पाठहोय तो साहब कहै हैं कि हे जन, हमारे दास ! जब तुम मुक्तरह्यो है तब ये मनादिक कोई नहीं रहे अणु विज्वर गुणातीत चिन्मात्र मेरो अंश सनातन को या स्वरूप ते रह्यो है छठई देह हमारे पासहै तू कहां बिगरो जाइ है मनादिकन में लगिकै तैं कैवल्यशरीर में टिकिकै हमारे प्रकाश में स्थितरहै हमको नहीं जाने याही ते माया तोको धरिकै संसार में डारिदियो सो तुम कैवल्य तन ते महाकारण में महाकारण ते कारण में कारण ते सूक्ष्म में सूक्ष्म

ते स्थूलशरीर में गयो सो जो अजहूं मनादिकन को त्यागिके मोको जानै तौ मैं तो को हंसशरीर देउँ तामें टिकि मेरे पास आवै प्रथम साहब बरज्यो है ताको प्रमाण आगे बेलि में लिखि आये हैं जो कोई कहै कि हंसस्वरूपई ते माया तो धरिले आई है व भूलि भई है सो बिना बिचारे कहै है पारिख करिकै देखो तो जो हंसस्वरूपई ते माया धरिले आवती तौ पुनि जब हंसस्वरूप पावैगो तबहूं न माया धरि ले आवैगी काहेते कि एक बार तो धरिही लेआई ताते हंसशरीर ते माया नहीं धारिल्यावै है जीव कैवल्यशरीर में सदा स्थित रहै है तहां मनकी उत्पत्ति होइ है तब माया धरि ल्यावै है जीव संसारी है जाइहै पुनि जब महाप्रलय होइहै तब फेरि वही ब्रह्मप्रकाश में जाइ कै एकरूप ते सब रहै है तामें प्रमाण "परे ऽव्यये सर्व एकीभवति" और सब वहै उत्पत्ति होइ है तामें प्रमाण "सदेव सोम्येदमग्र आसीत्--एक-मेवाद्वितीयम्। तदैच्छत एकोहं बहु स्यामिति श्रुतेः" और जब जीव संसार ते मुक्त ह्वैजाय है तब साहब हंसस्वरूप देइ हैं तामें स्थित ह्वैकै साहब के पास जाइहै ताको प्रमाण आगे लिखिआये हैं साहब के पास जाय फेरि नहीं आवै "न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः। यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम" (इति गीतायाम्) और जब जीव कैवल्यशरीर में रहै है सो सच्चिदानन्दरूप कास में भरो रहै है तहां जब मनको अंकुर वह चित होइ है तब तुरीय अवस्था को स्मरण होइ है सो याको महाकारण शरीर है और जब वह सुख के स्मरण ते बासना उपजी तब सुषुप्ति अवस्था में मगन होइहै जागे है तब कहै है कि आज खूब सोयो याको या कारण शरीर है और जब वह बासना संकल्प बिकल्परूप भयो या याको सूक्ष्म शरीर है स्वप्न अवस्था को सुख भयो और जब संकल्प विकल्प ते नानाकर्मन के फल ते पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाशादिक ते स्थूलशरीर पावै है तहां जाग्रत् अवस्था सों सुख होइ है तामें प्रमाण पञ्चदेह की

निर्णय को "एक जीव जो स्वतःपद बुद्धिभ्रान्ति सो काल। काल होइ वह काल रचि तामें भये बिहाल॥ बीहाले को मतो जो देउ सकल बतलाय। जाते पारख प्रौढ़ लहि जीव नष्ट नहिं जाय॥ करि अनुमान जो शून्य भो सूझै कतहूं नाहिं। आपु आप बिसरो जबै तन बिज्ञान कहि ताहिं॥ ज्ञान भयो जाग्यो जबै करि आपन अनुमान। प्रतिबिम्बित झाईं लखै साक्षीरूप बखान॥ साक्षी होय प्रकाश भो महाकारण त्यहिनाम। मसुर प्रमाण सो बिम्बभो नीलबरण घनश्याम॥ बढ़्यो बिम्ब अधपर्व भो शून्याकारस्वरूप। त्यहिका कारण कहत हौं महँ अँधियारी कूप॥ कारण सों आकार भो श्वेत अँगुष्ठप्रमान। वेदशास्त्र सब कहत हैं सूक्षमरूप बखान॥ सूक्ष्मरूप ते कर्म भो कर्महिं ते अस्थूल। परा जीव या रहट में सहै घनेरीशूल॥ सन्तौषटप्रकार की देही। स्थूलसूक्ष्म कारणमहँ कारण केवल हंसकिलेही॥ साढ़े तीन हाथ परमाना देह स्थूल बखानी। रातावर्ण बैखरी बाचा जाग्रत अवस्था जानी॥ रजोगुणी ॐकार मात्रका त्रिकुटी है अस्थाना। मुक्तिश्लोक प्रथमपद गात्री ब्रह्मा वेद बखाना॥ पृथ्वी तत्त्व खेचरीमुद्रा मगपपीलघटकासा। क्षरनिर्णयबड़-वाग्निदशेन्द्री देवचतुर्दशबासा॥ और अहैऋग्वेदबतायू अर्धशुन्नि संचारा। सत्यलोक बिषका अभिमानी विषयनन्द हंकारा॥ आदि सन्त औ मध्य शब्द या लखै कोई बुधिवारा। कहै कबीर सुनो हो सन्तौ इनिस्थूलशरीरा १ सन्तो सूक्षमदेह प्रमाना। सूक्षम देहअँगुष्ठ बराबर स्वप्न अवस्थाजाना॥ श्वेतबर्ण ॐकार-मात्रु का सतोगुण विष्णुदेवा। ऊर्ध्व औ अधतो यजुर्वेद है कण्ठ-स्थान अहैवा॥ मुक्तिसमीप लोक वैकुण्ठं पालनकिरियाराखी। मार्गविहंगभूचरी मुद्रा अक्षरनिर्णयभाखी॥ आवतत्त्वकोहंहंकारा मन्दाअग्नीकहिये। पञ्चप्राण द्वितीयापद गात्री मध्यम बाणी लहिये॥ शब्द स्पर्शरूपरसगन्धंमनबुधिचितहंकारा। कहै कबीर सुनोभइसन्तौ यह तन सूक्षमसारा २ सन्तौ कारणदेह सरेखा।

आधापर्वप्रमाण तमोगुण कारावर्णपरेखा ॥ मध्याशून्यमकार-मात्रुकाहृदयासो अस्थाना । महदाकाशचाचरीमुद्राइच्छाशक्ती जाना ॥ उददाअग्निसुषुप्तिअवस्थानिर्णयरवठस्थानी । कपि-मारग तृतीयपदगात्री अहै प्राज्ञअभिमानी ॥ सामवेद पश्यन्ती बाचा मुक्तस्वरूप बखानी । तेज तत्त्व अद्वैतानन्दं अहंकारनिर-बानी ॥ अहैं बिशुद्धमहातम जामें तामें कछु न समाई । कारण देह इतीसम्पूरण कहै कबीर बुझाई ३ सन्तौ महकारणतनजाना। नीलबरण औ ईश्वरदेवा है मसूरपरमाना ॥ नाखिस्थानत्रिकार-मात्रुका चिदाकाशपरबानी । मारगमीन अगोचरमुद्रा वेद अर्थ नहिं जानी ॥ ज्वाला कलचतुर्थपदगात्री आदिशक्तितनुबाऊ । आश्रयलोकबिदेहानन्दं मुक्तिसज्योतिबनाऊ ॥ नृगै प्रकाशिक तुरीअवस्थाप्रतिज्ञातुअभिमानी । सीत्न्हकारमहाकारणतनइवो-कबीरबखानी ४ सन्तौकेवलदेहबखाना । केवलसकलदेहकासाक्षी भमरगुफाअस्थाना ॥ निराकाश औ लोकनिराश्रयनिर्णयज्ञान-वशेखा । सूक्ष्मवेद है उनमुनमुद्राउनमुनबाणीलेखा ॥ ब्रह्मानन्द कहीहंकाराब्रह्मज्ञानकोमाना । पूरणबोधअवस्थाकहियेज्योतिस्व-रूपीजाना ॥ पुण्यगिरीअरुचिरूमात्रुकानीरञ्जनअभिमानी । परमारथपञ्चमपदगात्रीपरामुक्तिपहिंचानी ॥ सदासीव औमार्ग सिखाहै लहैसन्तमतधीरा । कालेतीतकलासम्पूरणकेवलकहै कबीरा ५ सन्तोसुनौहंसतनव्याना । अवरणबरणरूपनहिं रेखा ज्ञानरहितविज्ञाना ॥ नहिं उपजै नहिं बिनशै कबहूं नहिं आवै नहिं जाहीं । इच्छा अनिच्छा न दृष्ट अदृष्टी नहिं बाहर नहिं माहीं ॥ मैंतूरहितनकरताभोगता नहीं मान अपमाना । नहीं ब्रह्म नहिं जीव न माया ज्यौंका त्यों वह जाना ॥ मनबुधिगुनइन्द्रिय नहिं जाना अलख अकहानिर्बाना । अकलअनीहअनादिअभेदा निगम नीतिफिरिजाना ॥ तत्त्वरहितरबिचन्द्र नतारानहिंदेवीनहिंदेवा । स्वयंसिद्धिपरकाशकसोई नहिंस्वामी नहिं सेवा ॥ हंसदेह विज्ञान भाव यह सकलबासना त्यागे । नहिं आगे नहिं पाछे कोई निज

प्रकाशमें पागे ॥ निजप्रकाशमें आप अपनपौ भूलि भये विज्ञानी। उनमतबालपिशाचमूकजड़दशापांचइहजानी ॥ खोये आपु अपनपौ सबरसानिजस्वरूपनहिंजाने । फिरिकेवलमहकारणकारण सूक्ष्म स्थूलसमाने ॥ स्थूलसूक्ष्मकारणमहाकारणकेवलपुनिविज्ञाना। भयेनछ्यहेरफेरमेंकनौंनहींकल्याना ॥ कहै कबीरसुनोहो सन्तौखोजकरो गुरुऐसा । जुहितेआपअपनपौजानो मेटोखटका रैसा"६ और जब पांचौ शरीर ते भिन्न अपने को मान्यो अरु आपने को ब्रह्मरूप न मान्यो यह मान्यो कि मैं साहब को अंश हौं यह जान्यो तब साहब याको हंसशरीर देइ है सो जैसे साहब अनिर्वचनीय रस रूप है ऐसे जीवो है रकाररूप साहब है मकार रूप जीव है न्यूनता येती है साहब स्वामी है जीव सेवक है साहब स्वतन्त्र है यह परतन्त्र है साहब की मरजी ते सब काम करै है जैसे गुण साहबकेहैं तैसे याहूकेहैं जैसे साहब नहीं आवै जाय है ऐसे यहो नहीं आवै जाय है साहब के पासते जैसे साहब की सर्वत्र गति है ऐसे याहूकी सर्वत्र गति है साहबके बराबर याको भोग है तामें प्रमाण व्यासस्त्रम् ॥ भोगमात्रसाम्यलिङ्गात् तामें प्रमाण षट्दोहावलीको शब्द कबीरका " तत्त्वाभिन्ननिस्तत्त्वनिरक्षरमनोपवनतेन्यारा । नादबिन्दुअनहदअगोचरसत्यशब्दनिरधारा" और स्थूलशरीर पच्चीस तत्त्व को है पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश, दश इन्द्रिय, पञ्चप्राण, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, जीव सो जाग्रत्अवस्था में अनुभव होइ है और ऋग्वेद है प्रथमपद गायत्री और सूक्ष्मशरीर सत्रह तत्त्वको है पञ्चप्राण दश इन्द्रिय मन बुद्धि सो स्वप्न अवस्था में अनुभव होइ है और यजुर्वेद है द्वितीयपदगायत्री और कारणशरीर तीनितत्त्व को है चित्त अहंकार जीवात्मा सो सुषुप्ति अवस्था में अनुभव होइ है सामवेद है तृतीयपद गायत्री और महाकारण शरीर दुइ तत्त्व को है अहंकार जीवात्मा सो तुरीयावस्था में अनुभव होइ है अथर्वणवेद है चतुर्थपदगायत्री वेदहै जीव सूक्ष्मवेद है नी ॐकार

पञ्चमपद गायत्री है बचन में नहीं आवै है ४ छठौं पद गायत्री नाम वेद है तामें प्रमाण "निद्रादौ जागरस्यान्ते योभावउपपद्यते॥तम्भावं भावयेन्नित्यमक्षयानन्दमश्नुते" और कैवल्यशरीर एकतत्त्व को है चित्मात्र है और जौन ब्रह्मको छठौं शरीर मानि राख्यो सो निस्तत्त्व है सो वाको भ्रम है कुछ वस्तु नहीं है सो जो कोई रामनाम को स्मरण करत साहब को जान्यो व पांचो शरीर को त्यागकियो तब साहब हंसशरीर जीव को देइ है मन बचन में नहीं आवै है सो हंसशरीर अनिर्बचनीय है रसरूप है वह निस्तत्त्वहूसे परेहै सो जब प्राकृत रस जो है सोऊ व्यञ्जनावृत्ति करिकै जानो परैहै तौ अप्राकृत जो मन बचन के परे है वाको कोई कैसे जानै सो तौने हंसशरीर में प्राप्त ह्वैकै साहब के पास जाइकै फिरि नहीं आवैहै उहां माया मन आदिकनकी पहुँच नहीं है सो साहब कहैहैं कि हे जीव! हंसस्वरूप जो छठौं शरीर तिहारो सो हमारे पास है तू कहां मनआदिकन में लागिकै बिगरे जाउहौ तुम हमारे पास आवो और अर्थ इनको स्पष्टैहै अन्त में कुछु अर्थ खोले देइ हैं सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि षट् जे हैं छयो शरीर तिनको ऐसा कहै झगरा है मेटो सो जौने ब्रह्म प्रकाश में तुम भरे रहेहौ सो वाको छठौं शरीर आपनो मानो हौ सो तिहारो शरीर नहीं है वामें परे तो पिशाचवत् उन्मत्तवत् ह्वैजाइ है जाको भूत लगैहै और जो उन्मत्त होइहै ताको यथार्थज्ञान नहीं होइ है सो ऐसा गुरु करो जो साहबको बतावै तब आपनो छठा शरीर हंसस्वरूप पावोगे लोक में जो साहब देइ है तौने इहां साहब कह्यो है कि छठी तिहारीही जगह कहे छठौं शरीर हंसस्वरूप हमारी जगह में कहे हमारे है सो हमको जानोगे कि वही ब्रह्म है तब हमारे दिये पावोगे जौन छठौं शरीर तुम मानि राख्यो है और खोजौ हौ सो तिहारो नहींहै ताते तुम्हारो कार्य न सरैगो॥१॥

शब्द हमारा तुम शब्दका, सुनिमति जाहु सरक्खि॥
जो चाहो निजतत्त्व को, तौ शब्दै लेहु परक्खि २

साहब कहै हैं कि शब्द जो है हमारा रामनाम तौनेही शब्द के तुम हौ रामनाम को सरेखिकै कह बिचारिकै माया ब्रह्म में मतिजाहु जो निजतत्त्व को चाहो कि मैं कौनतत्त्व यथार्थ हौं तो शब्द जो रामनाम ताको परखि लेउ अनादि शब्द यही है मेरे धाम में यह नाम मेरो सदा बनोरहै है जब आदि उत्पत्ति प्रकरण होइहै तब यही नाम लैकै यहीको अर्थ वेदशास्त्र व सब जगत् निकासिकै बाणी जगत् की उत्पत्ति करैहै रामनाम को अर्थ मोमें रूढ़ है सो अर्थवाणी गुप्त कैदेइ है तौन अर्थ साधु जानै है कि रकार जे हैं साहब तिनको अकार जो है आचार्य सतगुरु सो मकार जो है जीव ताको शरण करावै है सो तुम मकार तत्त्व हो ताको जानो चाहो तो शब्द जो है मेरो रामनाम ताको परखो जो ककार के समीप मकार होइ तो वो मकार कामरूप सजै है और जो दकार के समीप मकार होइ तो दामरूप सजैहै इत्यादिक नाना शब्द सजै हैं तहां तौने रूप ह्वैजाइ है व नहीं शुद्धता नहीं रहिजाय है जब वहै मकार-रकार के समीप सजै है तबहीं शुद्धता होइहै ऐसे तुम मेरे समीप सजौ है सो मेरे पास आवो मोको जानो तो तुमहूं शुद्ध ह्वैजाउ जैसे रकार के समीप मकार सदा रहै है तैसे तुमहूं सदा के मेरे समीपी हो ताते मेरे समीप आवो औरे औरे में न लगो रकार के शरण मकार को अकार करावै तामें प्रमाण "रकारो रामरूपोऽयं मकारस्तस्य सेवकः। अकारःश्रीमकारस्य रकारे योजनामता" (इति शम्भुसंहितायाम्) ॥ २ ॥

शब्द हमारा आदिका, शब्दहि पैठा जीव ॥
फूल रहन की टोकनी, घोरा खाया जीव ३

साहब कहै हैं कि, हमारा शब्द जो रामनाम सो आदि को है आदिहीते यहि शब्द में जीव पैठा है सो शब्द रामनाम जीव के रहिबे को पात्र है जैसे फूल के रहन की टोकनी पात्र है सो रामनामको लैकै निर्भय सुखपूर्वक हो बिचरै कछू भय न लगै

तौने रामनाम को सार जो अर्थ है सोई घी है ताको घोरे जे पशु हैं गुरुवालोग अज्ञानी ते खाइलियो अथवा पूर्वमें छांछ को घोरा कहे हैं जामें सार नहीं है ऐसे जे हैं छांछ गुरुवा लोग ते साहब को यथार्थज्ञान जो घी ताको खाइ लियो कहे वाको और और अर्थ करिकै नानामतन में लगाइदियो जो रामनाम मोको बतावै है सो अर्थ भुलाय दियो गुरुवालोग बड़े घोर हैं येई संसार में तोको डारि दियो है ॥ ३ ॥

शब्द बिना श्रुति आंधरी, कहौ कहां को जाय ॥
द्वार न पावै शब्द को, फिरिफिरि भटका खाय ४

श्रीकबीरजी कहैहैं कि श्रुति जो है व शब्द जो है रामनाम ताके बिना आंधरी है काहेते कि रकार मकार श्रुति की आंखी हैं ताके बिना कहांको जाय सो शब्द जो रामनाम है तौनेको द्वार नहीं पावै अर्थात् अर्थ नहीं जानै रामनाम तो साहबमुख अर्थ में मन बचन के परे पदार्थ बतावै है या श्रुति नेति नेति कहि बतावै है याते रामनाम को साहबमुख अर्थ नहीं कहि सकै है याते यामें परिकै जीव फिरि फिरि भटका खाय है ज्ञानभक्ति बिज्ञान योग बतावै है फिरि फिरि नेति नेति कहि कहि देइ है याते जीव भटका खाइ है उहां वस्तु कुछ नहीं पावैहै जो राम नाम को साहबमुख अर्थ जीव जानिकै लगावै तो सब श्रुति लागिजायँ और सबके परे पदार्थ सो जानि जाहिं काहे ते बिना आंखी कोई नहीं देखै जौनी तरहते रामनाम ते सब श्रुति लागि जाय हैं और अनिर्बचनीय पदार्थ मालूम होय है सो पीछे लिखि आये हैं ॥ ४ ॥

शब्द शब्द बहु अन्तरही में, सार शब्द मथि लीजै ॥
कह कबीर जेहि सारशब्द नाहिं, धिकजीवन तेहिदीजै ५

जहां जहां अन्तर तहां तहां बहुत शब्द देखै हैं और तुम रामनाम को अनिर्बचनीय हैं श्रुति की आंखी हैं या कहौ हौ सो

कैसे होइगो एकशब्द वोहू होइगो सो या ऐसो नहीं है सार शब्द है जब सब शब्दन को मथे तब वा जानिपरै सो श्रीकबीर जी कहैहैं कि जेहिको सार जो रामनाम सो नहीं मथि लियो है ताको जीवन संसार में धिक् है सारशब्द मत लीजै जो यह पाठ होइ तो सारशब्द रामनाम ताको मतलेइ और जे मत हैं ते कुमत हैं तेहिको छोड़िदे रामनाम बर्णन सब श्रुति की आंखी हैं तामें प्रमाण " आखर मधुर मनोहर दोऊ । बरणबिलोचन जन जिय जोऊ " १ " मुक्तिस्त्रीकर्णपूरौ मुनिहृदयवयःपक्षती तीरभूमी संसारापारसिन्धोःकलिकलुषतमस्तोमसोमार्कबिम्बौ । उन्मीलत्पुण्यपुञ्जद्रुमललितदले लोचने च श्रुतीनां कामं रामेति वर्णौ शमिह कलयतां संततं सज्जनानाम् " ॥ ५ ॥

शब्दै मारा गिरि गया, शब्दै छाड़ा राज ॥
जिनजिन शब्द बिबेकिया, तिनको सरियाकाज ६

श्रीकबीरजी कहै हैं कि शब्द जो रामनाम तौने को जगत्-मुख अर्थ में वेद शास्त्र पुराण नानामत जे निकसे हैं तामें जो पर्यो सो गिर गया अर्थात् संसार में पर्यो और जिन जिन शब्द बिबेकिया कहे सब शब्दन ते बिचार करि सारशब्द जो राम-नाम ताको जानिलियो सोई संसाररूप राजको छोड़िदियेहैं और तिनहीं को काज सरिया कहे सिद्धभयो है ॥ ६ ॥

शब्द हमारा आदि का, पल पल करै जो आदि॥
अन्त फलैगी माहली, ऊपर की सब बादि ७

गुरुमुख साहब कहै हैं कि हे जीवो ! हमारा शब्द जो राम नाम सोई आदिको है अर्थात् याही ते प्रणव वेद शास्त्र बाणी सब निकसे हैं सो याको आदि कहे स्मरण जो पल २ कहे निरन्तर करैगो तो अन्त में फलैगी साकेत जो हमारो महल ताको माहली होइगो बसैया होइगो अर्थात् तहां को जाइगो

और ऊपर के जे सब नानामत हैं ते बादि कहे मिथ्या हैं अथवा और सब ऊपर के मत बादबिवाद हैं ॥ ७ ॥

जिन जिन संबल ना किया, अस पुरपाटन पाय ॥
झाल परे दिन आथये, संबल किया न जाय ८

श्रीकबीरजी कहै हैं कि अस पुरपाटन जो या मानुष शरीर तौने को पायकै जिन जिन पुरुष संबल न किया कहे सम्यक् प्रकार बल न कियो अर्थात् मन आदिकन न जीति लियो साहब को न जान्यो अथवा संबल कहे जमासों परलोक की जमा राम नाम को न जानि लियो अथवा संबल कहे कलेवा सो दिन अथये कहे शरीर छूटे झालि परे अर्थात् चौरासीलाख योनि में पर्‌यो अब संबल कियो नहीं जाय है ॥ ८ ॥

हंसा सरवर तजि चले, देही परिगै सुन्नि ॥
कहै कबीर पुकारिकै, तेई दर तेइ थुन्नि ९

हे हंसा जीव ! बिना साहब के जाने या सरवररूपी शरीर तजिकै जाउगे तब या देही सुन्नि परि जायगी अर्थात् मरि जायगी सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि हम पुकारि कै कहै हैं बिना साहब के जाने तेई दर तेई थूनी बने हैं अर्थात् नये तलाये में लाठि गाड़ि जाइ है सो जहैं जायगो तहैं देहरूपी सरवर में बासनारूपी दर में कर्मरूपी थून्हि गाड़ि लेउगे पुनि पैदा होइगो जननमरण न छूटैगो ॥ ९ ॥

हंसा बकयक रँग लखिय, चरैं एकही ताल ॥
क्षीर नीर ते जानिये, बक उघरै तेहिकाल १०

बकुला और हंस एकही रङ्ग होइहैं और एकही ताल में चरै हैं परन्तु जब नीर क्षीर एक करिकै धरिदियो वे दूध पीलिये पानी रहिगयो तब जानि परो हंस है और नीर क्षीर जुदो कीन न भयो तब जान्यो कि बकुला है ऐसे टीका, कण्ठी, माला, टोपी सब बराबरै होइ हैं जब बिचार करन लग्यो मन माया

ब्रह्म जीव इनते साहब को अलग मान्यो तो जान्यो कि ये हंस हैं जो मन माया ब्रह्मजीव ते अलग न कियो साहब को तो जान्यो कि ये बकुला हैं ॥ १० ॥

काहे हरिणी दूबरी, चरै हरियरे ताल ॥
लक्ष अहेरी यक मृगा, केतिक टारो भाल ११

जीव कहै है कि हे हरिणी बुद्धि! तैं काहे दूबरी हैरही है संसाररूपी हरियरे ताल में चरिकै यह संसारताल में लक्ष तो अहेरी कहे मारनवारो है सो तैं केतिक भारटारोगे मरिही जाइगो सो हरियर है जौने ताल में तौने में काहे नहीं चरै है साहब में निश्चय काहे नहीं करै है और भक्तिरस सरोवर में रक्षक एक तेरो और साहबै है ताते साहबै के ताल में चरु यह संसारताल को छोड़ि दे यहि संसारताल में लाखन मरवैया हैं ॥ ११ ॥

तीनि लोक भो पींजरा, पाप पुण्य भो जाल ॥
सकल जीव सावज भये, एक अहेरी काल १२

तीनों लोक जो पींजरा हैं तामें पाप पुण्यरूप जाल लगे हैं अर्थात् वाही में सब अटके हैं सो सब जीव सावज हैं तिनको काल जो है शिकारी सो मारि मारि खाय है ॥ १२ ॥

लोभय जन्म गँवाइया, पापै खाया पुन्नि ॥
आधी सों आधी कहै, तापर मेरी खुन्नि १३

लोभै करत करत जन्म गँवाइ दियो अर्थात् द्रव्य बिढ़वै के वास्ते नाना पाप किये सो जो प्राकृतन के पाप पुण्य रहैं ताहू को कहे पूर्वजन्म के खायगये सो ऐसी जो लोभवारी बुद्धिहै सो आधी कहे मानसी व्यथा है सो वा ऐसी बुद्धि को या सम तातभाव ते धी कहै हैं कि मैं बड़ी बुद्धि कैकै जटिल्यायो मैं हराय दियो इत्यादिक कहिकै अपनी बुद्धि को बुद्धि कहै हैं और की बुद्धि नहीं कहै हैं तौने पर मेरी खुन्नि है कहे रिस है ॥ १३ ॥

आधी साखी शिर खड़ै, जो निरुवारी जाय ॥
क्या पण्डित क्या पोथिया, राति दिवस मिलिगाय १४

आधी साखी कबीर की चारिवेद का जीव सो आगे आधी साखी रामनाम को कहिआये हैं सो आधी जो है रामनाम सो सब ते शिरखड़ै है कहे जाहिरै है जो यह साखी निरुवारी जाय अर्थात् रामनाम निरुवारा जाइ और जो खण्डै पाठ होइ तो अर्द्धचन्द्र बिन्दुने खण्डै कहे पण्डितौ होइ और या रामनामरूपी साखी निरुवारी जाय अर्थात् साहबमुख अर्थ याको समुझै तो पण्डितलोग दिनराति पोथी देखि २ मरैहैं रामनाम ते काम ह्वै जाय है तामें प्रमाण "नाम लिया तिन सब लिया, सकल शास्त्र को भेद। बिना नाम नर कैगये, पढ़ि पढ़ि चारों वेद" ॥ १४ ॥

पांच तत्त्व का पूतरा, युक्ति रची मैंकीय ॥
मैं तोहिं पूछौं पण्डिता, शब्द बड़ा की जीय १५

यह पांचतत्त्व का पूतरा जो शरीर तामें तैं यह युक्ति रचेहै कि मैंकीय कहे महीं मालिक हौं सो हे पण्डित! मैं तोको पूछोहों कि यह शब्द जो रामनाम जाके विना जाने संसारी भयो है तौन बड़ा है कि तैं बड़ा है जो आपने को मालिक मानै है ॥ १५ ॥

पांच तत्त्व को पूतरा, मानुष धरिया नाउँ ॥
एक कला के बिछुरते, बिकल भया सब ठाउँ १६

पांचतत्त्व को पूतरा जो तैं है ताको मनुष्य यह नाम धस्यो है कला जेहि साहब के नामरूप लीला धामादिक सब परी रहीं एक कला जो रामनाम तौनेके बिछुरत में सबठाउँ में बिकल ह्वैगये कहे जौने शरीर धारण करै हैं तहैं बिकल होइहैं मनुष्य नाम में यह व्यंग्य है कि है पांचतत्त्व पूतरा को मनुष्यनाम धराइलियो है इहांको यह न होइ साहब के इहांको है द्विभुज सो आपनो रूप भूलिकै संसार में पस्यो है ॥ १६ ॥

रङ्गहि ते रँग ऊपजै, सब रँग देखैं एक॥
कौन रङ्ग है जीव को, ताकर करहु बिबेक १७

रङ्गहि जो है संसाररङ्ग तौने रङ्ग जब जीव को लग्यो है तबहीं नानारङ्ग उपज्यो है कहे नानारूप के भये हैं ताको तो हम एक देखैं कहे मायाही के रङ्ग देखै हैं यह जीवात्मा शुद्ध जो है ताको कौन रङ्गहै यह तौ विवेक करो॥ १७॥

जाग्रतरूपी जीव है, शब्द सोहागा शेख॥
जरद बुन्द जल कूकुही, कह कबीर कोइ देख १८

यह जीव जो है सो जाग्रतुरूप है कहे सदा चैतन्य है जैसे साहब को रङ्ग श्वेत चैतन्य आनन्दघनीभूत है ऐसे याहू अणु चैतन्य है शब्द जो रामनाम सोहागारूप साहब को मिलावन-वारो ताको शेष है अन्त को वर्ण मकार है सो जरदबुन्द जल कहे जरदबीर्य स्त्री को जलपुरुष को ये दुनहुन के बीर्य ते शरीर-रूप कूकुही जीवके लागि गई जैसे खेतनमें कूकुही लागिजाइहै सो कबीरजी कहै हैं कि याको भीतर बिचार करिदेखो यहि जीवको स्वरूप जानिपरै कूकुही छड़ाइबो जैसे कूकुहीते अन्ननाश ह्वैजाइ है ऐसे याहू शरीररूप कूकुही जीवके लगी है सो एकरी शुद्धता को नाशकैदेइ है॥ १८॥

पांचतत्त्व लै या तन कीन्हा, सो तन लै कह कीन्ह॥
कर्महि के बश जीव कहत है, कर्महि को जिय दीन्ह १९

या पांचतत्त्वन को लैकै या शरीर कियो सो या शरीर लैकै तैं कौन काम कीन्ह्यो कर्मके बश ह्वैकै मेरो अंश जो जीव सो कर्महि को देतभयो मेरो ह्वैकै अर्थात् कर्मके बश ह्वैकै संसारी भो जीव सो कौन बड़ो काम कियो जीव कहवावन लग्यो॥ १९॥

पांच तत्त्व के भीतरे, गुप्त बस्तु अस्थान॥
बिरल मर्म कोइ पाइ है, गुरु के शब्द प्रमान २०

पांचतत्त्व को जो या शरीर ताके भीतर जो गुप्तवस्तु जीवात्मा है ताको स्थान है ताको मर्म कोई बिरला पावै है कि यह नित्य कौन को है यामें गुरु जे साहब हैं तिनका शब्द जो राम नाम सोई प्रमाण है तौने को अर्थ बिचार करै तो या जानिलेहि कि जीव साहबै को है ॥ २० ॥

अशुन तखत अड़ि आसनै, पिण्डझरोखे नूर ॥
ताके दिल में हौं बसौं, सैना लिये हजूर २१

अशुन कहे शून्य नहीं वा निराकार के परे अशून्य जो साहब को तख्त अड़िकै तामें आसनकैकै अर्थात् ध्यान में रत पिण्ड जो है शरीर ताके झरोखा जेहैं नेत्र तिनते साहब को जो कोई नूरदेखै कि सब साहबै को प्रकाश पूर्ण है सर्वत्र ताके दिल में आपने परिकरते सहित बसौंहौं ॥ २१ ॥

हृदया भीतर आरसी, मुख तौ देखि न जाय ॥
मुखतो तबहीं देखिहौं, जब दिलकी द्विबिधा जाय२२

हृदय भीतर जो आरसी है कहे तौन आपरन परिकर जे हैं जानकी लक्ष्मणादि तिनको मुख आपने रूप को जो सो नहीं देखो जाय है वो बिचार करिकै देखो जाय है सो मुख जो तुम्हारो स्वरूप सो तबहीं देखिहौं जब मैं मोर या द्विबिधा जात रही कि चित् अचित्रूप सब साहिबै के देखोगे॥ २२ ॥

ऊंचे गांव पहाड़ पर, औ मोटे की बांह ॥
ऐसो ठाकुर सेइये, उबरिय जाकी छांह२३

जो गांव ऊँचेपर होइ है तहां बूड़ा की भय नहीं होइहै जाके जबरेकी बांह होइ है ताको डर नहीं होइ है ऐसे ऊँचो गांव जो साकेत तहां साहब जे हैं तिनकी जहां बांह ऐसे जे साहब हैं तिनकी छांह में टिको जाते उबरो उहां मायाके बूड़ाको डर नहीं है कहा मन मायादिकन में परेहो इनमें काल ते न बचौगे॥ २३ ॥

ज्यहि मारग गे पण्डिता, तेही गई बहीर ॥
ऊंची घाटी राम की, त्यहि चढ़ि रहे कबीर २४

जौने मार्ग में रामनाम जाने बिना पण्डित गये वही मार्ग ह्वै मूर्खौ जातभये अर्थात् पापी पुण्यी सब वही यमपुरी ह्वैगये कबीरजी कहै हैं कि ऊँची घाटी जो रामनाम तामें आरूढ़ ह्वैकै माया के बूड़ाते बचिगयों सबको तमाशा देखौ हौं ॥ २४ ॥

हे कबीर तें उतरिरहु, सँबल परोहन साथ ॥
सँबल घटे औ पग थके, जीव बिराने हाथ २५

गुरुवालोग मोको समझायो हे कबीर ! तैं ऊँची घाटी जो रामनाम तौने ते उतरि रहु न तेरे सँबलकहे कलेवाहै न परोहन कहे बाहन साथ है सो सँबल और पगु जब थाकैगो तब जीव तो बिराने हाथ ह्वैजाइगो जो हमारे पास आवोगे तो ज्ञानयोगादिक संबल बतावैंगे 'अहं ब्रह्मास्मि' बाहन देयँगे तामें आरूढ़ ह्वैकै संसार समुद्र पार ह्वै जाइगो ॥ २५ ॥

घर कबीर का शिखर पर, जहां सिलिहिली गैल ॥
पांय न टिकैं पिपीलिका, खलकन लादे बैल २६

श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे गुरुवालोगो ! हमारा घर शिखर जो रामनाम है तामें तहां गैल चिकनी है चींटी जो बुद्धि है ताहीके पांय नहीं टिकै हैं अर्थात् वा मन वचन के परे हैं रामनाम और स्वरूप है ताते बिछुलनहारि है गैल उहां नानामत नानाशास्त्ररूप लाद लादे बैल जेहैं गुरुवा ते नहीं जायसकै हैं अर्थात् सूक्ष्मबुद्धि नहीं जायसकै हैं तो तुम जे नानामतन को लाद लादे हौ सो कैसे जायसकौ हौ जहां मैं टिकौ हौं तहां भरि तुमहूं पहुँचि सकते नहीं हौ कहां कलेवा देउगे कहां बाहन देउगे ॥ २६ ॥

बिन देखे वह देश की, बातैं कहै सो कूर ॥
आपै खारी खातहौ, बेचत फिरत कपूर २७

श्रीकबीरजी कहैहैं कि जौने शिखर में हम चढ़ेहैं तौने देश को बिना सतगुरुद्वारा देखे जे बात वहां की कहैहैं ते क्रूरहैं अर्थात् तुम हमको उतरन शिखरते बिना जाने कहौहौ सो तुमहीं क्रूर हौ कैसे हौ आप तो खारी जे नानामत तिनको ग्रहण कीन्हे हौ स्वच्छ उज्ज्वल कपूर जो है ज्ञान ताको बेंचत फिरौ हौ अर्थात् द्रव्यलैके चेला बनावत फिरौ हौ भाव यह है कि नाम को भेद नहीं जानौ हमारे इहां कैसे पहुँचौगे ॥ २७ ॥

शब्दशब्द सबकोइ कहैं, वातो शब्द विदेह ॥
जिह्वापर आवै नहीं, निरखिपरखि कर लेह २८

शब्द शब्द सब कोई कहै हैं परन्तु वा शब्द जो रामनाम है सो विदेह है बिना शरीर का है जिह्वा में नहीं आवै है मन बचन के परे है ताको ज्ञानदृष्टि ते निरखि कै पारिख करिलेहु ॥ २८ ॥

परबत ऊपर हर बसै, घोड़ा चढ़ि बस गाउँ ॥
बिन फुल भौंरा रस चखै, कहु बिरवा को नाउँ २९

पर्वत आगे जीव ब्रह्म को कहिआये हैं सो पर्वत जो ब्रह्म ताके ऊपर हर जो माया सो जोतै है अर्थात् शबलित ह्वैकै संसार की उत्पत्ति करै है सो घोड़ा जो है मन तौने में गाउँ जो संसार है सो बसै है अर्थात् मनै में सब संसार है बिन फुल कहे या संसार तरु को फूल विषय है सो मिथ्या है कछु वस्तु नहीं है तौने को रस भौंरारूप जीव चाखै है सो वा बिरवा को नाउँ तो कहु सो बताउ हमको नाम संसार मिथ्या है जौन याको सांच नाम है ताको कहु ताको तैं नहीं जानै है ॥ २९ ॥

चन्दन बास निवारहू, तुझ कारण बन काटिया ॥
जिवत जीव जनि मारहू, मुये ते सबै निपातिया ३०

हे चन्दन, जीव! अपनी बासना तू निवारण करु काहेते कि मैं तेरे कारण जौने गुरुवन की नानाबाणी नाना मतन में तुम लाग्यो तिनकी बाणीरूप बन मैं काटिडारयो अर्थात् खण्डन

करिडारयो जाते तुमको ज्ञान होय सो बासना में परिकै जीवत्व जीव तुम अपनो न मारो जो वामें लागि जाहुगे तो तुम्हारो जीवत्व जातरहे मरिजाहुगे वाही धोखा में लगिकै आपको ब्रह्म मानन लगोगे तब निपातिया कहे सब साहब के ज्ञान को निपात ह्वै जाहिगो ॥ ३० ॥

चन्दन सर्प लपेटिया, चन्दन काह कराय ॥
रोम रोम बिष भीनिया, अमृत कहां समाय ३१

चन्दन जो जीव है सो कहा करै है सर्प जे गुरुवालोग हैं ते लपटिरहे हैं सो उनकी बाणी को जो है बिष सो रोम रोम बिषे भेदि गयो है हमारो उपदेश जो अमृत सो कहां समाय ॥३१॥

ज्यों मुर्दादि समसान सिल, सब यकरूप समाहिं ॥
कह कबीर साउज गतिहि, तब की देखि भुकाहिं ३२

जैसे मुर्दादि समसानसिल होइ है सो जो कोई देखै है ताको मुर्दैले रूप देखि परै है सोकबीर जी कहै हैं कि गुरुवालोगन की बाणीरूप सिल में तबकी कहे सृष्टि के आदि में आपनी गति देखै हैं कि तबहूं हम ब्रह्म रहे हैं या मानिकै भोंकै हैं कि हमहीं ब्रह्म हैं अथवा ज्यों मुर्दादि कहे मुर्दको आदि ब्रह्म ज्यों कहे कैसे जैसे मसान ते सहित सिल पाथर के भुतहा चौरा जेई वा चौरा में बैठे हैं सो अभुआइ हैं कहे हैं हमहीं ब्रह्म हैं सोई कहे हैं मैं फलानो भूत हौं आपनो रूप भूलिजाइ हैं ऐसे जेई गुरुवालोगन की बाणी उपदेश में परे हैं ताहीके एकरूप ब्रह्म समाहि है यही कहैहैं कि महीं ब्रह्म और सब ब्रह्मही है एकरूप दूसरो पदार्थ नहीं है सो श्रीकबीरजी कहै हैं साउज जो जीव है ताकी तबकी गति गुरुवालोग कहै हैं तब तुम ब्रह्मही रहेहौ आपने अज्ञानते तुम जीवत्व को धारण कीन्हे हौ अबहू जो ज्ञान करो तो ब्रह्मही ह्वैजाहु या मानिकै उपदेश जीव भोंकै है कि हमहीं ब्रह्म हैं अर्थात् जैसे वा पण्डा भूत नहीं ह्वै जाइहै जीवही रहै है ऐसे न ब्रह्म रहे हैं न

ब्रह्म होइगो भोकैपद के शक्ति ते दूसरो दृष्टान्त ध्वनित होइहै जैसे कूकुर कांच के मन्दिर में आपनो प्रतिबिम्ब देखि भूंकै है ऐसे अपने भ्रमते गुरुवन की बाणीरूप ऐना में आपनो रूप ब्रह्मही देखैहैं भूंकै हैं यह नहीं जानै हैं कि हम साहब के हैं या गुरुवा-लोगन की बाणी में ब्रह्म देखो परै है सो हमारे मनहीं को अनुभव है ॥ ३२ ॥

गही टेक छोड़ै नहीं, चोंच जीभ जरि जाय ॥
मीठो काह अँगार है, ताहि चकोर चबाय ३३

ब्रह्मबादिन की टेक कैसी है जैसे चकोर को ओठ जीभ जरै है परन्तु अँगारै को चाबैहै ॥ ३३ ॥

झिलमिल झगरा झूलते, बाकी छुटी न काहु ॥
गोरख अँटके कालपुर, कौन कहावै शाहु ३४

झिलमिल झगरा कहे दशमुद्रा करिकै बङ्कनालते खिरकी के राह लैजाइकै वह ज्योति जो झिलमिलाइ है तामें आत्मा को मिलाइदेइ है पुनि षट्चक्र ते झिलिकै गैवगुफा में जो ब्रह्मज्योति है तामें मिलिकै व झगरा करिकै कहे काम क्रोधादिकन को दूरि करिकै पुनि संसारमें झूलिपरै है अर्थात् जब समाधि उतरि आई तब फेरि वही झगरामें झूलिपरै सो कर्मकी बाकी काहू की नहीं छूटैहै सब कर्म भोग करै है जो गोरखै कालपुर में अँटके अर्थात् उनहीं को जो काल खाइलियो तो और दूसरो कौन शाहु कहावै है कौन काल ते बच्यो है जो बहुत जियो योगी तो कल्पान्त में कोई नहीं रहिजाय है जो कोई रहिगयो जल बढ़यो तो जल में मिलिकै रहिगये अग्नि बढ़ी अग्नि में मिलिकै रहिजाइ है तो महाप्रलय में नहीं रहिजाइ है ॥ ३४ ॥

गोरख रसिया योग के, मुये न जारी देह ॥
मांस गली माटी मिली, कोरो मांजी देह ३५

जो कहौ गोरख तो बने हैं तो प्रलयादिकन में वोऊ न रहैंगे

योग के रसिया जे हैं गोरख ते ऐसो योग हजारनबर्ष कियो कि मस्यो ते देह को न जास्यो मांसगालिकै माटी में मिलिगयो तब कोरी कहे मई मांजी कहे शुद्धचर्म देह गोरख की काढ़िआई आखिरपर वहौ प्रलयादिकन में न रहैगो सो उनकी देह मुयो कहे ऐसो योग कियो कि जाते अज्ञान न रहिगयो संसार छूटिगयो संसार ते मारिगये कै उनकी सूक्ष्मादिक देहौ मस्यो पर न जरी जब देह न जरी तब पुनि २ संसार में आवते भये कल्पान्तरन में सो कल्पान्तर में गोरखआदि दैकै योगी सब आवै हैं सो आगे कहे हैं ॥ ३५ ॥

बनते भागि बिहड़े परा, करहा अपनी बानि ॥
वेदन करहकसों कहै, को करहा को जानि ३६

बन जो है संसार तौनेते भागिकै बिहड़ जो है अटपट गैल ब्रह्म तामें पस्यो जाइ सो यह जीव को सदा स्वभावई है कि प्रलयादिकन में ब्रह्म में गयो व पुनि करहा कहे करहिआयो संसार में जन्म लियो शरीर धारण कियो सो यह जीव संसार योगादिक साधन कियो सो यह वेदन कहे पीड़ा जीव कासों कहै और शरीर काहेते करहि आयो यह को जानै जैसे आम्रादिक वृक्ष करहि आवै हैं कहे फूलि आवै हैं फेरि फरै हैं आपनी ऋतु पाइकै तैसे जब महाप्रलयादिक भये तब लीन ह्वैगयो जब उत्पत्ति प्रकरण भयो तब फेरि करहि आये कहे शरीर धारण किये पुनि नाना कर्म करिकै नाना फल पावन लगे ॥ ३६ ॥

बहुत दिवससों हीठिया, शून्य समाधि लगाय ॥
करहा परिगा गाड़ में, दूरि परे पछिताय ३७

जीव बहुतदिन समाधिलगाइकै शून्य में हीठिया कहे भ्रमत भये कि हमारो जन्म मरण छूटै है सो हजारन कल्प समाधि लगाये रहे जब समाधि उतरी तब पुनि जैसेके तैसे ह्वैगये अथवा हजारन बर्ष ब्रह्म में लीन रहे जब सृष्टिभई तब पुनि संसाररूपी

गाड़ में परिकै पछितानलगे पछिताइबो कह्यो है कि वही बासना लगीरही ताते पुनि नानासाधन करनलगे कि हमारो जन्म मरण छूटै ॥ ३७ ॥

कबिरा भर्म न भाजिया, बहु बिधि धरियाभेख ॥
साईं के परिचय बिना, अन्तर रहिगो रेख ३८

कबीर जे हैं कायाके बीर यह जीव सो बहुत भांति के वेष धरत भयो योगी ह्वैकै योग करत भयो ज्ञानी ह्वैकै ज्ञान करत भयो भक्त ह्वैकै भक्ति करतभयो कर्मकाण्डी ह्वैकै कर्म करत भयो पै जिन को यह जीव अंश है ऐसे जे हैं साईं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिन के बिना जाने याको भ्रम न भाजत भयो जो मुक्त हू ह्वैगयो आपने को ब्रह्महू मानत भयो तो मूलाज्ञानरेख याके रही गई काहेते कि जाको है ताको तो जान्यो नहीं योग कियो ज्ञान कियो भक्ति कियो व नानाकर्म कियो ताते पुनि संसारही में पस्यो कौन रक्षाकरै रक्षकको तो बिसराइ दियो ॥ ३८ ॥

बिन डांड़े जग डांड़िया, सोरठ परिया डांड़ ॥
बांटनहारा लोभिया, गुरते मीठी खांड़ ३९

यह संसारमें जीव बिना काहूके डांड़े डांड़िया कहे सब डारि जाते भये अर्थात् आपनेही कर्मते साहबको ज्ञान भूलिगये व सोरठ या देश बोलीहै सोरठै फलदेउ दशउ फलदेउ सो ये सोरठै उपाय बतायो चारि वेद छःवेदाङ्ग छःशास्त्र ई सोरठैते ब्रह्मा साहबको उपदेश इनको कियो पै ये सब अपने अपने कर्म में लागिगये उनको वा सोरठ कहे सोरठै जौन ब्रह्मा उपाय बतायो तौन उनको डांड़पस्यो डांड़ वह कहावैहै जौन बन कटिकै मैदान ह्वैजाय है सो उनको चारि वेद छःवेदाङ्ग छःशास्त्र ई जे सोरठ हैं ते डांड़ पस्यो कहे वामें साहबको खोज न पायो साहबको बिचार उनको दिखाई न पस्यो अनतही अनतही लगावै है वेद शास्त्र का अर्थ करि काहेते न पायो कि बांटनहारो जो ब्रह्मा है सो लोभी रह्यो है

कहे रजोगुणी है सो बहुत चोराइके कह्यो परोक्ष कह्यो जाते कोई न पावै और जे जानतभये ब्रह्माको उपदेश ते गुरु जे ब्रह्माहैं तिनहूंते अधिक ह्वैगये अर्थात् गुरु गुरहींको रह्यो चेला खांड़ ह्वैगयो गुरुते मीठी खांड़ होय है काहेते ब्रह्माते अधिक ह्वैगये कि ब्रह्मा गुणको धारण किये हैं और वे सगुण निर्गुणके परेकी बात जानै हैं ॥ ३९ ॥

मलयागिरि के बास में, बृक्षरहा सब गोइ ॥
कहिबे को चन्दन भया, मलयागिरि ना होइ ४०

मलयागिरि चन्दन के वृक्ष के बास में सब वृक्ष गोररहे कहे मलयागिरिकै बास सब में ह्वैगई कछु मलयागिरि नहीं ह्वैगये ऐसे तिन को साहब को ज्ञान भयो तिनमें साहब को गुण आइ गये शुद्ध ह्वैगये कछु साहब न ह्वैगये जो कहो ब्रह्मा तो चारि वेद छःवेदाङ्ग छःशास्त्र जे सोरठ हैं तिनते सबको उपदेश कियो ताको गुप्तार्थ और लोग काहे न समझ्यो एक साहब को जनैये काहेते जान्यो तौने को अर्थ दूसरी साखी में दिखावै हैं ॥ ४० ॥

मलयागिरि के बास में, बेधा ढाक पलास ॥
बेना कबहुँ न बेधिया, युग युग रहिया पास ४१

मलयागिरि के बास में ढाक पलास सब बेधिगये और बेना जो है बांस सो युग युग मलयागिरि के पास रहै है पै वामें बास न बेधत भई अर्थात् और वृक्षन भीतर सार रह्यो तेहिते बास बेधि गई व बांसके भीतर सार न रह्यो ताते बास न बेधत भई अर्थात् और जे अज्ञानिउरहे तिनके अन्तःकरण में शून्य नहीं रह्यो सो जो कोई उपदेश कियो तो साँच मानिकै समुझिलियो और जिनके भीतर वह शून्य ब्रह्मधोखा घुसोरह्यो ते और ऊपरते खण्डन करनलगे और और अर्थ वेदशास्त्र के बनाइलियो ते न बासिगये कहे उनको साहब को रङ्ग न लग्यो चारों युगमें वेद-शास्त्र सब पढ़तई रहे ॥ ४१ ॥

चलते चलते पगु थका, नगर रहा नौकोस ॥

बीचहि में डेरा पख्यो, कहौ कौन को दोस ४२

चलत चलत थकिगयो वह नगर नवकोस रह्यो सो नवकोस में एकौकोस न चलिसक्यो तो दशौं कोस जहां साहबको मुकाम है तहां कैसे जायसकै दशौं कोस दशौं मुकाम रेखता में लिखि आये हैं सो बीचे में याको डेरा पख्यो बीचहीं में रहिगयो ताते जन्म मरण होन लग्यो तो कौन को दोषहै साहबके पास भरतो पहुँचिओई न कियो और मुसल्माननके मतमें बहत्तरहजार परदा के ऊपर जब गयो तब नवपरदा बाकी रहिजाय हैं तौने कोस है दशयें में साहब है ॥ ४२ ॥

झालिपरे दिन आँथये, अन्तर परिगै साँझ ॥
बहुत रसिक के लाग ते, बेश्या रहिगै बाँझ ४३

यहि साखी में अर्थ कोऊ यह कहै हैं प्रपञ्च करते करते और बिषयरस लेते लेते बुढ़ाई आई और वेदशास्त्र पुराण नानाबाणी पढ़ते पढ़ते व कर्म उपासना तपस्या योग बैराग्य करते करते थके आखिर गुरुपद पारिख की प्राप्ति नहीं भई एकदिन मौत आइ पहुँची तब आँखिनपर झालिपरी कहे अँधियारी परी और दिन कहिये ज्ञान सो गाफिली में डूबिगया व हमारो अर्थ यह है झालि पर कहे जब दिन अँथवा कहे आयुर्दाय घटी तब गिरिपरे तब बीमार हुये इन्द्रिय शिथिल भईं तब अन्तःकरण में अँधियार ह्वै गयो कहे कुछ न सूझि परन लग्यो तब जैसे बहुत रसिक के संगते बेश्या बांझ रहिजाइहै तैसे गुरुवालोगन का नानाप्रकार की बाणी को उपदेश सुनि सुनिकै शून्य ह्वैगये ज्ञान भक्ति उत्पत्ति भई और साहब न प्राप्त भये ॥ ४३ ॥

मनतो कहै कब जाइये, चित्त कहै कब जाउँ ॥
छामासे के हीठ ते, आध कोस पर गाउँ ४४

मन संकल्प बिकल्प करिकै आत्मा को स्वरूप खोजै है कि आत्मा कैसो है और चित्त स्मरण करै है कि आत्मा को स्वरूप

कैसो है सो आभास जो हैं छयूशास्त्र तौनेमें हीठतकहै स्वरूपको खोजतई गये पै वह गाउँ आत्मा को स्वरूप मकार आधकोस में कहे अर्धनाम रकार ताके निकटही रह्यो पै खोजे न पायो ॥४४॥

गिरही तजिकै भये उदासी, बनखँड ताको जाय ॥
चोली थाकी मारया, बरइनि चुनि चुनि खाय ४५

घर छोड़िकै जगत् ते उदास भये बन पहारमें बैठेजाय साहब को तौन जान्यो शरीर औटिकै तपस्या करनलगे सो यामारते कहे कन्दर्प ते चोली थकिगई कहे वीर्य की हानि ह्वैगई जब वृद्ध ह्वैगये तब जैसे चोली बरइनि की थकि गई तब बरइनि सरे सरे पान निकारिडारै है नये नये पान चुनि चुनिकै खाय है तैसे माया जोहै बरइनि कहे ज्ञानभक्ति को बरायदेनवारी कहे दूरि करनवारी सो पुरान पुरान जे शरीर हैं तिनको निकारि डास्यो नये नये सुन्दर शरीर दैकै स्वर्गादिकन को सुख दियो राजा बनायो धनवान् बनायो भोग कराइ कराइकै उनको माया मृत्युरूप खाय लियो ज्ञानी भक्त योगी तपस्वी कोई नहीं बचैहैं जे साहब को जानै हैं ते बचै हैं ॥ ४५ ॥

रामनाम जिन चीन्हिया, झीने पिंजर तासु ॥
नयन न आवै नींदरी, अङ्ग न जामै माँसु ४६

जिन रामनामको चीन्ह्यो है तिनके पिंजर झीने ह्वैगयेहैं पांचो शरीर उनके छूटिगये यह स्थूल शरीर कैसो बन्यो है जैसे सूमा जरिजाय ऐंठनि बनीरहै जब यहौ शरीर छूटैगो तब हंसशरीरमें स्थित ह्वैकै साहब के पास जाइगो सो इनको शररूपी पिंजरा झीन ह्वैगयो है व नयनन में नींद नहीं आवै है कहे सोवायदेनवारी जो माया है सो उनको स्पर्श नहीं करै है और अङ्गमें पुनि मांस नहीं जामै अर्थात् पुनि वै शरीर धारण नहीं करै हैं ॥४६॥

जे जन भीजे रामरस, बिकासित कबहुँ न रुक्ख ॥
अनुभव भाव न दरशै, ते नर सुक्ख न दुक्ख ४७

जे जन श्रीरामचन्द्रके रस में भीजेरहे हैं ते सदा बिकासित रहे हैं उनको हृदयकमल सदा प्रफुल्लितई रहे है रूख कबहूं नहीं रहै है और रूख जो है अनुभवभाव वह धोखाब्रह्म सो उनको कबहूं नहीं दर्शै है और ते नरन को न संसार को सुख होइ है न दुःख होइ है वे रामरसही में मग्न रहै हैं ॥ ४७ ॥

काटे आँब न मौरिया, फाटे जुरै न कान ॥
गोरख पद परसे बिना, कहौ कौन की सान ४८

कबीरजी गोरख सों कहै हैं अथवा गो जो हैं मनादिक इन्द्रिय तिनको राखै कहे रक्षाकरै अर्थात् चैतन्यकरै सो गोरख कहावै जीव सो हे जीव ! जो आरमा काटिडारै तो फेरि नहीं मौरै है कहे नहीं फूलैहै व कान जो फाटिजाय तो फेरि नहीं जुरैहै यहि जीव पर जे हैं साहब तिनके पद बिना परसेई काहूकी सान नहीं राखै हैं कहो कौनको सान रह्यो है अर्थात् योगी ज्ञानी ब्रह्मादिक सब को काल खायलियो है काहूकी सान नहीं रही है ॥ ४८ ॥

पारसरूपी जीव है, लोहरूप संसार ॥
पारस ते पारस भया, परख भया टकसार ४९

कबीरजी कहै हैं कि यह जीव पारस है काहेते कि पारस जे परमपुरुष श्रीरामन्द्र हैं तिनको अंश है तो यहू उन्हीं को रूप है वै बिभु हैं जीव अणु है सो जीव लोहरूपी संसारमें मिलिकै लोह ह्वैगयो सो जब पारस जे हैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनको स्पर्श करै तब पारस होइ और अपने स्वस्वरूप को जानै कि मैं साहब को अंश हौं तब जानिये कि जौन टकसार मत है सांचा है तौन याको परखभयो कहे जान्यो काहेते यहै मत टकसार है सांचा है यहीके जाने जन्म मरण नहीं होइ है जो कहो पारसके परसे तो सोन होइ है तो यह पारसके परसे सोन होइ है कहे और जीव अशुद्ध ह्वै रहेहैं ते शुद्ध होइ जाइहैं वाके स्पर्श ते और श्रीरामचन्द्र

के चरणारबिन्द पारसके परसे पारसई होइ है काहेते कि वह पारस सच्चा है और यह पारस कच्चा है पाषाण है जड़ है ॥ ४६॥

प्रेमपाट का चोलना, पहिरि कबीरा नाच ॥
पानिप दीन्ह्यो तासु को, तन मन बोलै सांच ५०

कबीरजी कहै हैं कि हे जीव ! तैं साहबके प्रेमपाटका चोलना पहिरिकै नाचैहै संसार में नहीं नाचता पानिप कहे शोभा साहब ताहीको देयहैं जो तन मनते साहबसों सांच बोलै कहे सांच प्रेम करै है ॥ ५० ॥

दर्पण केरी जो गुफा, सोनहा पैठो धाय ॥
देखत प्रतिमा आपनी, भूंकि भूंकि मरिजाय ५१

दर्पणकी गुफा कहे शीशमहल में कूकुर पैठ्यो सो अपनी प्रतिमा देखिकै भूंकि भूंकिकै मरिजाय है अर्थात् यह जीवात्मा यह नहीं समुझैहै कि मेराही अनुभव यह ब्रह्महै दर्पणकी गुफा जोहै ब्रह्मज्ञान तामें पैठिकै अहंब्रह्म भूंकि भूंकि मरै है जाको अंश यह जीव है ताको न जान्यो जैसे कूकुर नहीं जानै है कि मेराही प्रतिबिम्ब है ऐसेही यहभी नहीं जानैहै कि मेराही अनुभव है ॥५१॥

ज्यों दर्पण प्रतिबिम्ब देखिये, आप दुहूं घट होई ॥
ऐसे वा तत्त्व यही तत्त्वसों, है याही पुनि सोई ५२

वह ब्रह्म को जो अनुभव करै है सो तेरा ही अनुभव है वह तत्त्व व तेरो तत्त्व एक है अर्थात् दूनों चितई तत्त्व हैं भेद इतना ही है वह विभु चित है तैं अणु चित है परन्तु तेराही अनुभव है जैसे दर्पण में अपनोई प्रतिबिम्ब देखि परै है वह तेरई अनुभव है मैं वही ब्रह्म हौं यही धोखा है ॥ ५२ ॥

जो बन सायर मुञ्झते, रसिया लाल कराय ॥
अब कबीर पाजी परे, पन्थी आवहिं जाय ५३

जौने बन कहे बाणी करिकै सायर जो है समुद्र अगाध ब्रह्म

तौने में मुञ्झते कहे मोह को तुम प्राप्त भयो व वहीके रसिया कहे रसिक ह्वैके लाल कहे दुलार करत भये अपने को ब्रह्म मानत भये वाणी को प्रकाशरूप जो ब्रह्म है सो अगाध है याको पार कोई नहीं जाय है सो कबीरजी कहे हैं कि अब हम सबको जौन नहीं समुझि परत रह्यो अगाध रह्यो शुद्ध जीवन को सो ब्रह्म पाजी पर्यो है वही प्रकाशित ह्वैके रामरसिक ह्वैके साहब के लोक को चलोजाय है और पुनि जीवनके उपदेश करिबे को चलो आवै है ब्रह्मप्रकाश ह्वैके साहब के लोक को चलेजायँ हैं तामें प्रमाण "सिद्धा ब्रह्मसुखे मग्ना दैत्याश्च हरिणा हताः । तज्ज्योतिर्भेदने सक्ता रसिका हरिवेदिनः" और साहब के लोक में जे हैं तिनकी सर्वत्र गति है तामें प्रमाण "स मृत्युन्तरति स सर्वेषु लोकेषु कामचारो भवति" (इति श्रुतेः) ॥ ५३ ॥

दोहरातो नवतन भया, पदहि न चीन्है कोइ ॥
जिन यह शब्द बिबेकिया, क्षत्रधनी है सोइ ५४

सेव्य सेवकभाव मान्यो साहबको जान्यो तब दोहरा तो तन भया कहे हंसशरीर पायो पराभक्ति पायो तौने पद कहे साहब के लोक में प्रवेश करे है सो वो लोक को नहीं चीन्है है जो कहो ब्रह्मरूप ह्वैके कैसे सेव्य सेवकभाव साहबते कियो तुम बनायकै कहौ हौ तो श्रीकबीरजी कहे हैं जिन यह शब्द बिबेकिया कहे जिन साहब यह बिबेककरि शब्द बतायो सोई क्षत्र धनी है अर्थात् साहिबै मोको बतायो है मैं बनायकै नहीं कहौं हौं तामें प्रमाण "ज्ञानी बेगि जाहु संसारा । अमी शब्द करि जीव उबारा ॥ पुरुष हुक्म जब जब मैं पावा । तब तब जीवको आनि चेतावा" गीतामें भी लिखा है "ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति । समस्सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥ भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः । ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम्" ॥ ५४ ॥

कबिरा जात पुकारिया, चढ़ि चन्दन की डार ॥
बाट लगाये ना लगै, फिरि का लेत हमार ५५

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जब मैं चन्दन की डार में चढ़िकै कहे वह ब्रह्मके परे ह्वैकै साहबके लोक को जान लग्यों तब मैं पुकार्यों और अबहूं पुकारौं हौं सो पीछे लिखि आये हैं कि बिरवा चन्दनते बासिजाइ है कछु चन्दन नहीं ह्वैजाइहै ऐसे ब्रह्मज्ञान किये जीव शुद्ध ह्वैजाइहै कछु ब्रह्म न होइहै सो ब्रह्म जो है चन्दन तौनेकी डार चढ़िकै अर्थात् ब्रह्मज्ञान करिकै शुद्ध ह्वैकै वाको जानिकै पुकार्यों हौं कि साहबके होउ ब्रह्मही में जनि अटकेरहौ इतनाही नहीं है साहब ब्रह्मके आगे है सो सबको मैं बाट लगावौं हौं कि तुम साहब के होउ तुम हमारे लगाये उस राह में जो नहीं लगते हो तो हमारो कहाजाय है अथवा हम जौन चाल बतावैं हैं तौने चाल नहीं चलतेहो और हमारो फिर क्या लेतेहो कि हम कबीरपन्थी हैं सो लम्बी टोपी दीन्हे औरबिना छिद्रको चन्दनदिये और बहुत साखी शब्दी कण्ठकरलिये हमारे फिरका न पावोगे मतको न पावोगे यम के धक्काते न बचोगे तामें प्रमाण "हमारा गाया गावैगा। अजगैबी धक्का पावैगा॥ मेरा बूझा बूझैगा। सो तीनलोकमें सूझैगा १" कबीर की साखी शब्दी पढ़िकै और बितण्डावाद् अनर्थ करनेलगे और परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको वेदशास्त्रको झूठ करनलगे आपने जीवै को सत्य करनलगे ते यम को धक्का पावै चाहैं और जे कबीर की साखी बूझिकै और परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को अंश है जीव श्री रामचन्द्र याके रक्षक हैं ऐसो जे बूझ्यो ते तीनलोक में सूझबई करैंगे काहेते उनके रक्षक परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तो बनेई हैं सर्वत्र रक्षा करिलेइ हैं ॥ ५५ ॥

सबते सांचा है भला, जो सांचा दिल होइ ॥
सांच बिना सुख नाहिंना, कोटि करै जो कोइ ५६

जो आपना साँचा दिल होइ तो सबते साँचे जे परमपुरुष

श्रीरामचन्द्र व उनहीं को अंश जीव है और उन्हीं को मैं साँचो दास हौं यह मत सबते साँच है सोई भला है सो यह साँच मत बिना सुख काहूको नहीं है कोटिन उपायकरै और श्रीरामचन्द्र सत्य हैं व जीव सत्य है व जीवको और श्रीरामचन्द्र को भेद सत्य है तामें प्रमाण "सत्यंभिदः सत्यंभिदः" इत्यादि और कबीरजी की साखिहूको प्रमाण "सत्य सत्य समरथ धनी, सत्य करो परकाश। सत्यलोक पहुँचावहू, छूटैभवकी आश" ॥ ५६ ॥

साँचा सौदा कीजिये, अपने मनमें जानि ॥
साँचे हीरा पाइये, झूठे मूरो हानि ५७

आपने मन में पारिख कै लीजिये तब साँचा सौदा कीजिये कहे ऐसी खानि खुदाइये जाते साँचे हीरा पाइये वही में कच्चे हीरा निकसै हैं तिनको छाँड़ि दीजिये ऐसे वेद पुराण खानि हैं तिनमें साहब को मत निकासि लीजिये यह साँचो सौदा कीजिये और मतन को त्यागि दीजिये काहेते झूठे मत में लागे आपनो स्वरूप जो है साहब को अन्तमूर ताकी हानि ह्वैजाय है अर्थात् भूलिजाय है ॥ ५७ ॥

सुकृत वचन मानै नहीं, आपुनकरै बिचार ॥
कहैं कबीर पुकारिकै, सपन्यो गो संसार ५८

सुकृत साहब अथवा सुकृत सन्त अथवा सुकृत वचन जो मैं कहौ हौं कि साहब को भजन करो सो नहीं मानैहैं जो मन में आवै है सो विचार करै हैं सो कबीरजी पुकारिकै कहै हैं कि उन को स्वप्न्यो में संसार गयो अर्थात् स्वप्नेहू में संसार नहीं गयो यह काकु है ॥ ५८ ॥

लागी अग्नि समुद्र में, धुआँ प्रकट नहिं होइ ॥
की जानै जो जरिमुवा, की ज्यहि लाई होइ ५९

समुद्र में आगि बड़वाग्नि लगी है और वाको धुआँ नहीं प्रकट होइ है सो वाको सो जानै है जो वामें जरिजाय कि जाकी

वह बड़वाग्नि लाई कहे लगाई होइ सो जानै अर्थात् संसार में मायाब्रह्म की अग्नि लगिरही है ताको वही जानै जाको ज्ञान भयो होय या समझै कि मायाब्रह्म की अग्नि में हम जरेजाय हैं अथवा सो जानै जाकी अग्नि बनाई है संसार रच्यो है ॥ ५६ ॥

लाई लावनहार की, जाकी लाई परजरै ॥
बलिहारीलावनहारकी, छप्पर बाजै घरजरै ६०

यह अग्नि किसकी लगाई है ताके लायेते सगुण निर्गुण जे दोनों पर हैं ते जरैहैं और घर जे हैं पांचो शरीर ते जरिजात हैं तामें प्रमाण "अबतौ अनुभव अग्निहि लागी। घेरि घेरि तन जारनलागी ॥ यह अनुभव हम कासों कहिये बूझै कोउ बैरागी॥ ज्यठरी लहुरी दोनों जरिया जरी कामकी बारी। अगम अगोचर समुझिपरै नहिं भयो अचम्भौ भारी ॥ सम्पतिजरी सम्पदा उबरी ब्रह्मअगिनिपसरी। कहै कबीर सुनोहो सन्तो बड़ी सो कुशल परी" ॥ ६० ॥

बुन्द जो परा समुद्र में, सो जानै सब कोइ ॥
समुद्र समाना बुन्द में, बूझै बिरला लोइ ६१

यह ब्रह्म ईश्वर माया आदि दैकै जो संसारसागर है तामें बुन्द जो जीव है सो पर्यो या सबै जानैहैं कि जीव संसारी ह्वै गयो है वेदशास्त्र में सर्वत्र लिखैहै अरु यह सिगरो संसारसमुद्र बुन्दरूप जीव में समायजाय है अर्थात् ईश्वर मायाब्रह्ममय जो संसार ताको जीवही अनुभव करिलियो है सो जब जीव या भांतिते अनुभव त्यागै कि बिषय इन्द्रिय में इन्द्रिय मनमें मन चित्त में चित्त प्राण में प्राण जीवात्मा में लीन कैदियो तब संसार सागर बुन्दरूप जीव में समायजाय है अर्थात् संसार मिटि जाय है जीव साहब को जानि जाय है ॥ ६१ ॥

जहर जिमींदै रोपिया, अमि सींचै सौबार ॥
कबिरा खलकै नातजै, जामें जौन बिचार ६२

जिमीं में जहर को थलहा देकै जो बीज बोवै है सो वामें जो सैकड़ों बार अमृतौ सींचै तो वहि बीजा में जहर को असर आयबोई करैगो तैसे यह खलक कहे संसार में माया की जिमीं है बिषय को थलहा है ताते केतिकौ कोई उपदेश करै परन्तु माया को असर कबिरा जे जीव हैं तिनके आयही जाय है जोई बिचार आवै है सोई करै हैं सो संसार नहीं छोड़ैं ॥ ६२ ॥

दौकी डाही लाकरी, बाभी करै पुकार ॥
अबजोजाउँलोहारघर, डाहै दूजीबार ६३

दावानल की डाही कहे जरी जो लकरी है सोई लाई भई वहै पुकारिकै कहै है कि अब जो लोहार के घर जाउँ तो दूजी बार लोहार मोको डाहै कहे जारै सो दावाग्नि जो है ब्रह्माग्नि तौने ते जो सम्पूर्ण कर्म जरिहुगे तो कोयला रहिजाय है कहे वहै कैवल्य शरीर रहिजाय है सो कहैहै कि जो अब लोहार जे सतगुरु हैं तिनके इहां जाउँ तो कैवल्यौ शरीर छूटै मुक्त ह्वैजाउँ अर्थात् जो साहब को न जान्यों और कर्म सब जरिगये तो कैवल्य शरीर रहिगयो अर्थात् सब संसारही में आवैहैं जो कैवल्य शरीर छूटै तो हंस शरीर ते मुक्त ह्वैजाय काहेते कर्मन के जरे कैवल्य शरीर नहीं छूटै है ॥ ६३ ॥

बिरह कि ओदी लाकरी, सपचै औ गुंगुआय ॥
दुखते तबहीं बाचिहौ, जब सगरो जरिजाय ६४

बिरहकी जरी लाकरी है अर्थात् याको साहब को बिरहभयो है सो वह बिरहते ओदी है याहीते सपचै है और गुंगुआय है नाना दुःख पावै है सो जब पांचौ शरीर जरिजाय हैं हंस शरीर पाय साहब के पास जाय है तब दुःखते बचै है जो कह्यो इहां तो सगरो शरीर को जरिजायबो कह्यो हंस शरीर को जरिबो काहे न कह्यो तो हंस शरीर याको न होय वा साहब के दिये मिलै है यहिते याही के पांचौ शरीर जब जरैहैं तब सतई जगह भूमिका

ते नांघिकै आठईं भूमिका में जाय है तब चितमात्र रहिजाय है तब साहब हंस शरीर देइ हैं तामें टिकिकै साहब के पास जाय है सो पाछे लिखि आये हैं ॥ ६४ ॥

बिरहबाण ज्यहि लागिया, औषध लगत न ताहि ॥
सुसुकिसुसुकिमरिमरिजियै, उठै कराहि कराहि ६५

साहब को बिरहरूपी बाण जाके लग्यो अर्थात् जिनको यह जानि पर्यो कि हमते साहब ते बिछोह ह्वैगयो है ते बिरहवारेन को ज्ञान योगादिक औषध नहीं लगैहै बिरहबाणाग्नि ते तप्त जरै है मरि मरि जियै है या जो कह्यो सो बिरहाग्नि ते जरै है स्थूल शरीर को जब अभिमान छूट्यो तब सूक्ष्मशरीर में जियो जब सूक्ष्म शरीर छूट्यो तब कारण शरीर में जियो जब कारण शरीर छूट्यो तब महाकारण शरीरमें जियो जब महाकारण शरीर छूट्यो तब कैवल्य शरीर में जियो यही मरिमरि जीबो है और तहौं कराहि कराहि उठै है कहे एको शरीर नहीं आछे लगै हैं ॥ ६५ ॥

सांचा शब्द कबीरका, हृदया देखु बिचार ॥
चितदै समझै मोहिं नहिं, कहत भयल युगचार६६

साहब कहै हैं कि साँचा शब्द जो कबीर का रामनाम ताको हृदय में बिचारिकै देखु तो तैं चित्त दैकै नहीं समझै है मोको चारों युग वेद शास्त्र में कहतभयो और कबीर जेहैं तेऊ चारोंयुग में कहत आये हैं सतयुग में सत्य सुकृत नाम ते त्रेता में मुनीन्द्र नामते द्वापर में करुणामय नामते और कलियुग में कबीर नाम ते एक रामनामै को उपदेश कियो सो जो तैं वह रामनाम को जानते तो तेरे समीप मोको आवनपरतो हंस शरीर दै अपने पास लै आवतो ॥ ६६ ॥

जो तू साँचा बानियाँ, साँची हाट लगाउ ॥
अन्दर में झारू को दैकै, कूरा दूरि बहाउ ६७

हे जीव ! जो तैं अपने स्वरूपको चीन्है तो तैं साँचा बानियाँ है

सो साँची हाट लगाउ कहे साँचे जे साहब तिनको जानु और उनके नामरूप लीलाधाम सब साँचे हैं तिनकी हाट लगाउ कहे स्मरण करु और अन्दर में झारू दैके बिषयबासना और नानामत जे कूरा हैं तिनको दूरि बहाय दे तू साँचाहै साहब को है असाँचेन मा न लागु ॥ ६७ ॥

कोठी तो है काठकी, ढिग ढिग दीन्ही आगि ॥
पण्डित तो झोला भये, साकठ उबरे भागि ६८

कोठी जे हैं चार्यो शरीर तेतो काठकी हैं जरनवारी हैं ज्ञानाग्नि ढिग ढिग उनके लगीहै वेद, शास्त्र, पुराण साहब को बतावै हैं सो जे पण्डित रहे ते सारासारको बिचारकर साहब जे सार तिनको जान्यो ते उस अग्नि में परिकै झोला ह्वैगये कहे उनके सब शरीर जरिगये अर्थात् संसार ते मुक्त ह्वैगये और साकठ जे हैं शाक्त ते भागिकै उबरे कहे जो वेद शास्त्र साहबको प्रतिपादन करैहै ताके डांड़े नहीं गये खण्डन करनलगे उनसों भागिकै संसार में परे माया में लपटे हैं मायैको स्मरण करन लगे ॥ ६८ ॥

सावन केरा मेहरा, बुन्द परा असमान ॥
सबदुनिया वैष्णव भई, गुरू न लाग्यो कान ६९

जैसे श्रावण के मेह को आसमान बुन्द परै है तैसे सब दुनिया वैष्णव होतभई सब बीजमन्त्र लेतभये जैसे लोकमें को गुरु हज़ारन चेला एकैबार बैठायकै मन्त्र गोहराय देय हैं याही भांति श्रावणकैसो मेह सबको मन्त्र देइ हैं चेला मन्त्र लेइहैं याही रीति गुरुवालोग उपदेश करत भये कोटिन वैष्णव होत भये गुरु कबै कान लग्यो अर्थात् नहीं लग्यो अरु गुरु तो वाको कहै हैं जो अज्ञान को नाशकरै सो जो चेला को अज्ञान न नाश भयो तो गुरु चेला दोऊ नरक को जाय हैं तामें प्रमाण " हरै शिष्य धन शोक न हरहीं । ते गुरु घोरनरकमहँ परहीं " सो जो वो चेला को अज्ञान दूरि न कियो तो कौन गुरु है और जौन

गुरुते ज्ञान लै अज्ञान न नाश कियो तो वह कौन चेला है अर्थात् वह गुरु नहीं है कायर क्रूर है और वह चेला नहीं है टूटमसखरा है और जो अज्ञान को नाशै सोई गुरुहै तामें प्रमाण " अज्ञान-तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया । चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः " और जो संसार दूरि नहीं करैहै सो गुरु नहीं है तामें प्रमाण " गुरुर्न स स्यात् स्वजनो न स स्यात् पिता न स स्याज्जननी न सा स्यात् । दैवन्न तत्स्यान्नृपतिश्च स स्यान्न मोचयेद्यस्समुपेतमृत्युम् " श्रीकबीरजीकी गुरुपारख अङ्ग की साखी "गुरू सीख देवे नहीं, चेला गहै न खूट । लोकवेदभावे नहीं, गुरु शिष्यकायरटूट " ॥ ६९ ॥

ढिग बूड़ा उसला नहीं, यहै अँदेशा मोहिं ॥
सलिल मोहकी धार में, क्या नींद आई तोहिं ७०

साहब कहै हैं कि हे जीवो ! तुम सब संसारसागर के तीरही में बूड़िगये एकहू बार न उसले यहै मोको अँदेशा है या संसार-सागर के मोहरूपी सलिलधार में क्या तोको नींद आई है भला एक बार तो मूड़निकासि उसलि मोको पुकारतो तो मैं तोको पारही लगावतो सर्वत्र पूर्ण मैं बनो हौं तैं मेरे ढिगही बूड़ोजातो है अबहूं जो जान तो मैं पारही लगाय देहुँ ॥ ७० ॥

साखी कहैं गहैं नहीं, चाल चली नहिं जाय ॥
सलिल मोहनदिया बहै, पांय नहीं ठहराय ७१

कबीरजी कहै हैं कि साखी तो कहैहैं और जो मैं साखी कहो है ताको गहैं नहीं हैं वाको बिचारै नहीं हैं और जो मैं चाल लिख्यो है सोऊ नहीं चली जाय संसाररूपी नदिया में मोहरूपी सलिल बहैहै तामें पांवें नहीं ठहराय जीव बिचारा क्या करै ? या साहब सों अर्जकै जीवको क्षमापन करावै है ॥ ७१ ॥

कहता तो बहुता मिला, गहता मिला न कोइ ॥
सो कहता बहिजानदे, जो नहिं गहता होइ ७२

साहब कहै हैं याही भांति कहता तो बहुत मिल्यो गहता कोई नहीं मिलै है सो जो कोई गहता न होइ ताको तैं बहिजानदे तोको कहापरी है ॥ ७२ ॥

एक एक निरवारिया, जो निरवारी जाय ॥
दुइदुइ मुखको बोलना, घने तमाचा खाय ७३

तामें पुनि कबीरजी कहै हैं कि हे साहब ! याको जीव को दोष नहीं है एक २ जो निरवारतो तो वेद शास्त्र ते याको निरवार ह्वै जातो अर्थात् जो एकमालिक आपही ठहराय देतो तो जीव गहि लेतो दुइ दुइ मुखको बोलना बेद शास्त्र को अर्थात् कहीं ब्रह्म को कहीं ईश्वर को कहीं जीव को कहीं काल को कहीं कर्म को कहीं मालिक बतायो सो या दुइ मुख के बोलेते जीव घने तमाचा खाय है तुमको नहीं जानिसकै ॥ ७३ ॥

जिह्वा को दे बन्धनै, बहुबोलना निवारि ॥
सो परखी सों संग करु, गुरुमुखशब्दबिचारि ७४

सो कबीरजी कहै हैं कि हे जीव ! मैं साहबसों बिनती करि लियो है सो तुम यह राह चलो तुम्हारो उबार साहब करिलेइगो आपनी जिह्वा बन्धन करो असत् वाक्य न बोलने पावे एक राम नामहीं कहो और नाना मत जो कहौहो सो कहिबो निवारि देउ व जौन सब मतनते पारिख करिकै साहबको ठहरायो होय ऐसे पारखी को संग करु और गुरुमुख जो शब्द है ताको तू बिचार करु काहे ते साहब या कह्यो है " अबहूं लेहुँ छुड़ाय कालसों, जो घट सुरति सँभारै " सो तैं सुरति सँभारि साहब में लगाय दे अनत न जान दे साहब तो को संसारसागर ते उबारिही लेइँगे ॥ ७४ ॥

जाकी जिह्वा बन्द नहिं, हृदया नाहीं सांच ॥
ताके संग न लागिया, घालै बटिया कांच ७५

जाकी जिह्वा बन्द नहीं है जौने मत को चाहै तौनेन मत को

प्रतिपादन करे है और जिन के हृदय में साहब के नाम रूपादिक नहीं हैं तिन के संग कबहूं न लागिये वे कच्चे हैं उनके संग लागेते संसार में परौगे ॥ ७५ ॥

पानी तो जिह्वै ढिगै, क्षण क्षण बोल कुबोल ॥
मनघाले भरमत फिरै, काल देत हिंडोल ७६

पानीरूप जो बानी है सो याके जीभ के ढिगै है छिन छिन में कुबोलई बोल बोलै है असत्‌बाणी बोलि २ बानीरूप पानी में बूड़ि गयो अथवा ब्रह्ममाया की आगी बुझावनवारो पानी याके जीभ ही के ढिग है सो नहीं कहै है छिन छिन कुबोल ही बोलै है सो मनके घाल्ले कहे फेरि संसारमें भरमत फिरै है काल जो है सो याको हिंडोलरूप शरीर दिया है सो झूलत फिरै है कबहूं मानुष होय है कबहूं पशु पक्षी इत्यादिक शरीर धारण करै है ॥ ७६ ॥

हिलगें भाल शरीर में, तीर रही है टूटि ॥
चुम्बक बिन निकसैं नहीं, कोटि पहन गये फूटि ७७

जिन मतन में श्रीरघुनाथजी नहीं मिलै हैं तेई मतन के बाण याके लगैहं नाना कुमतिरूपी गाँसी याके अटकी हैं सो रामनाम चुम्बक बिना वे नहीं निकसै हैं ॥ ७७ ॥

आगे सीढ़ी साँकरी, पाछे चकना चूर ॥
परदा तर की सुन्दरी, रही धका दै दूर ७८

साहब के यहां की गैल बहुत साँकरी है कोई कोई पावै है और पाछे संसार में गिरै तो चकनाचूर ह्वैजाय परदा तरकी सुन्दरी जो माया सो जो कोई साहबसों लगन लगावन लागै है ताको धका देइ है और जो कोई साहब के सम्मुख भयो वह राह चढ़्यो तेहिते दूरि रहै है धुनि याहै कि जो वाके जायगी तो गैल साँकरी है दूसरे की समाई नहीं है पीसि जायगी यह डेरै है ॥७८॥

संसारी समय बिचारिया, क्या गिरही क्या योग ॥

अवसर मारो जात है, चेतु बिराने लोग ७९

क्या गिरही कहे गृहस्थ और क्या योगवारे कहे योगी ज्ञानीते श्रीरामचन्द्रको छोड़ि छोड़ि और और साहब बिचारैहैं ते सब संसारी समय बिचारते हैं परमारथ कोई नहीं बिचारै हैं अर्थात् संसारही में रहे हैं अर्थात् आपने इष्टदेवतन के लोक गये अथवा ब्रह्म में लीन भये ज्योतिमें लीन भये पुनि संसारमें आय गये सो हे जीव ! तैं बिराना है साहब को है और काहू को नहीं है और मतन में लागे तैं न छूटैगो जौन जाको होय है तौन ताही के छुड़ाये छूटै है सो या मानुषशरीर पायकै अवसर मारो जाय है चेतु तौ तैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को है तिनहीं के छुड़ाये संसार ते छूटैगो और संसारी देवतन को कहापरी है जो आपने ते छुड़ाय कै संसारते छुड़ावैंगे वे तो और संसार ही में डारैंगे ॥ ७९ ॥

संशय सब जग खंधिया, संशय खँधै न कोय ॥
संशय खंधै सो जना, जो शब्दाबिबेकी होय ८०

संशय जो है मनको संकल्प-बिकल्प सो सब जगको खँधाइ लियो है कहे फंदाय लियो है और संशय जो है मन को संकल्प बिकल्प ताको कोई नहीं खँधिसकै है अर्थात् मनको संकल्प-बिकल्प काहूको नहीं छूटै है जो साहब के शब्द राम नाम को अर्थ बिचारत रहैहै सोई संशयको खाँधिसकै है अर्थात् ताहीके मनको संकल्प बिकल्प छूटैहै संशय छूटिबे को उपाय याहीमें है ॥ ८० ॥

बोलना है बहुभाँतिके, नयन कछू नहिं सूझ ॥
कहै कबीर बिचारिकै, घट घट बाणी बूझ ८१

सो बोलना तो बहुत प्रकार के हैं कहे बहुत प्रकार के शब्द हैं बहुतप्रकार के मत हैं तिन मतनमें ज्ञाननयनते सार पदार्थ जो जनन मरण छुड़ावे सो कछू न सूझतभयो सो कबीरजी कहै हैं कि तैं बिचारिकै तो देखु ये जे बाणी ते नाना मत घट घटते निकसै हैं ते मनैके संकल्प बिकल्पते हैं सो तौनेते संकल्प बिकल्प

मनको कैसे छूटैगो येतो मन बचन में है वह घट घटकी बाणी तो झूठ की कहांते निकसी है वह बाणी को मूल और मन बचन के परे ऐसो जो रामनाम ताको बिचार करि जानैगो तबहीं छूटैगो यह सब बाणी को मूल रेफ है सो नाभिस्थान में है तहाँते बाणी उठै है सो जो मूल है सो तो साहब को बतावै है रामनामही प्रथम प्रकट करै है और मूलाधारचक्र में मूल जो रामनाम है मन बचन के परे त्यहिते जो अनुसार भयो बाणी को ताहीको आभास परा बाणी प्रकट भई रेफ ताहीते अकार जब जोरयो तब रकाररूप हृदय में पश्यन्ती प्रकट होइहै और फेरि जब एक अकार और आयो तब कण्ठ में मध्यमा प्रकट होइहै और पुनि जब बैखरी में एक अकार और प्रकट भयो जब ओठलग्यो तब व्यञ्जन मकार भई तब वहै मन बचन के परे रामनाम सो आपने रूप को आभास बैखरी में प्रकट करै है सोई प्रथम कबीर लिख्यो कि "रामनाम लै उचरी बाणी" सो प्रथम याको प्रतिलोमक्रमते जप करत चारिउ बाणीको स्वरूप जानै और फेरि अनुलोमक्रमते रामनाम को उच्चार करै घण्टानादवत् या भांतिते जो जप करै तो मन बचनके परे जो रामनाम ताको आभास जो रामनाम है सो प्रथम याही को लै कै बाणी उचरी है फेरि प्रणवादिक मन्त्र भये हैं यही घट घट बाणी को मूल तैं बूझ और मन बचनते परे जे साहब हैं तिनको पाय जाय सो या भांतिते बाणी को मूल जो तैं घट घट में बिचारै तो ये सब बाणी ऊपरते नाना मत नाना सिद्धान्त कहै हैं याको मूल सिद्धान्त तो साहिबै को बतावै है त्यहिते चारो वेद छः शास्त्र तात्पर्य करिकै श्रीरामचन्द्र ही को बतावै हैं सो मेरे सर्वसिद्धान्तग्रन्थ में प्रसिद्ध है ॥ ८१ ॥

मूल गहे ते काम है, तू मति भर्म भुलाय ॥
मनसापर मनलहरि है, बहि कतहूं मति जाय ८२

मन जो है सोई समुद्र है मनसा कहे मनोरथ ताकी लहरि

में बहिकै तैं मति जा अर्थात् मनको संकल्प बिकल्प छोड़ि दे नानाबाणी नानामत में तैं न भूलिजाय मूल जो रामनाम ताही को ग्रहण करु याही के गहेते तेरो उबार होइगो संसार छूटैगो ॥ ८२ ॥

भँवर बिलम्बै बागमें, बहुफुलवनकी आश ॥
जीव बिलम्बै विषयमें, अन्तहु चलै निराश ८३

जैसे भँवर बाग में बहुत फूलन की आश करिकै बिलँबै है तैसे जीव संसार में बहुत विषय की आश कै पस्यो सो ऐसो फूल न भ्रमर पायो कि एकै फूल सूंघेते सन्तोष ह्वैजाय और न ऐसो विषय जीवही पायो कि जामें संतुष्ट ह्वैजाय अर्थात् विषयसुख जीव कियो परन्तु अन्तमें निराश ही ह्वैजाय है सो प्रकटही है वह सुख नहीं रहि जायहै परन्तु मूढ़ जीव नहीं छोड़ै है ॥ ८३ ॥

भँवरजाल बगुजाल है, बूड़े जीव अनेक ॥
कह कबीर ते बाचि हैं, जिनके हृदय बिबेक ८४

भ्रमरजाल जो है संसारसागर के विषय को भौंता सो कैसे हैं कि बकुला जे जीव हैं तिनके बोरिबे को जाल है तामें बहुत जीव बूड़ि गये सो कबीरजी कहै हैं कि जिनके हृदय में बिबेक है असार बाणी को छोड़िकै सार जो रामनामरूपी जहाज ताको बिबेक करि गहिलियो है तेई संसारसागर के पार जाइ हैं ॥ ८४ ॥

तीनि लोक टींड़ी भई, उड़िया मन के साथ ॥
हरिजन हरि जाने बिना, परे काल के हाथ ८५

टींड़ीके जब पखना जामा तब जहँ जाइ है तहँ मारिही जाय है सो तीनि लोक के जीवन के मनरूपी पखना जामे सो जहां जाय हैं तहां मारिही जाय हैं सो हैं तो ये हरिके जन हरिके अंश पै अपनो स्वामी और रक्षक हरि जे हैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र सबके क्लेश हरनेवाले तिनके बिना जाने काल के हाथ में परे और मन के साथ

उड़े हैं सो मरतमें जहँ मन जाय है तौने रूप ह्वै जाय है तामें प्रमाण " अन्ते या मतिः सा गतिः " और कबीरहू को प्रमाण " जाकी सुरति लागिहै जहँवां । कहै कबीर सो पहुँचै तहँवां " ॥ ८५ ॥

नाना रङ्ग तरङ्ग हैं, मन मकरन्द असूझ ॥
कहै कबीर पुकारिकै, अकिलकला लै बूझ ८६

संकल्प बिकल्परूप नानारङ्ग की हैं तरङ्गै जामें ऐसो जो मन तामें काहेते तरङ्ग उठै है कि मकरन्द जो विषय रस ताको पान करिकै मतवालो ह्वै गयो है सो जो मतवालो होय है सो और को और करै चाहै सो कबीरजी पुकारि कै कहै हैं कि अकिल जो बुद्धि तामें निश्चय करिकै कला जो है रेफ अर्धमात्रा ताको लैकै बूझ अर्थात् वही अर्धमात्रा में स्थित की विधि पाछे लिखि आये हैं अथवा नानारङ्ग की जामें तरङ्ग उठती हैं ऐसा जो मकरन्द पुष्परस कहावै है सो महुवाके फूलका रस मदिरा समुद्र मन सो असूझ कहे अपार है वारपार नहीं सूझि परै है सो कहां ते मनरूपी मद भरयो है सो अपनी अकिलते कहे बुद्धि ते वह कलाल कहे कलार को तो बूझ ॥ ८६ ॥

बाजीगरका बन्दरा, ऐसा जिउ मनसाथ ॥
नाना नाच नचायकै, राखै अपने हाथ ८७
ये मन चञ्चल चोरई, ई मन शुद्ध ठगार ॥
मनकरि सुरमुनि जहड़िया, मनके लक्ष दुवार ८८
बिरहभुवंगम तन डसा, मन्त्र न मानै कोइ ॥
रामबियोगी ना जियै, जियै सो बाउर होइ ८९

ये दूनों साखिन को अर्थ स्पष्टई है ८७ । ८८ बिरहभुवंगम कहे जिनको साहब की अप्राप्ति है तिन जीवन को अज्ञान भुवंगम डस्यो है ताते ज्ञानभक्ति वैराग्य योग ये मन्त्र नहीं मानै हैं काहे ते कि जिनमें साहब को ज्ञान नहीं है तैं भक्ति वैराग्य ते

विमुख है सो कबीरजी कहै हैं कि राम के बियोगी जे जीव हैं ते जियै नहीं हैं विषय में लागे हैं काल उनको खाय लेइहै और जे योग करिकै वैराग्य करिकै भक्ति करिकै जियैहैं विषय छाँड़िकै संसार को छोड़ै हैं ते बाउर ह्वैजाय हैं कहे बहुतदिन जीबो किये ब्रह्महू में लीन भये तौ पुनि संसार में तो आवही करैंगे काहेते कि अपने स्वामी को तो चीन्हबही न किये अर्थात् बैकल ह्वैगये हैं जो बैकलाय है सो और को और करै है यथार्थ बात नहीं करै है ॥ ८९ ॥

रामबियोगी विकलतन, जनिदुखओइनकोइ ॥
छूवत ही मरि जायँगे, तालाबेली होइ ९०

श्री कबीरजी गुरुवालोगनते कहै हैं जे साहब के बियोगी जीव ह्वैरहे हैं तिनको तुम काहे दुखावते हो अर्थात् नानामतनमें नाना उपासना में काहे भटकावते हो जरे में लोन मींजतेहो इनके भीतर आपहीते तालाबेली परिरही है नानामत खोजैहैं ये छुवतही मरिजायँगे अर्थात् धोखाब्रह्म उपदेश देतै में गहिलेइँगे सो अबै तो भला बद्ध भरि हैं नित्यबद्ध नहीं हैं जो कहूं साधुते भेंट ह्वै जाय तो उबारहू ह्वैजाय जब धोखाब्रह्म में लागैगो तब वाको न छाँड़ैगो साहब को मत खण्डन करैगो सो तुम ऐसे मरेन को काहे मारौ हौ ॥ ९० ॥

बिरहभुवंगम पैठिकै, कीन करेजे घाव ॥
साधु न अङ्गनमोरिहै, जब भावै तब खाव ९१

बिरहरूपी भुवंगम कहे साहब को अप्राप्तरूपी जो भुवंगमहै सो पैठिकै करेजेमें घाव करतभयो अर्थात् साहबते बिमुख संसारी ह्वैगये अथवा गुरुवालोग नानामत नाना उपासना बताय करेजेमें घाव करिदिये हैं अर्थात् साहब ते बिमुख करिदिये सो जेतो असाधु रहे तेतो मारे परे और जे कौनेहू जन्ममें साहबको पुकार्‌यो है उपासना कियो है सो साधु कबहूं न अङ्ग मोरैगो

वाकी पूर्ववासना साहबमें बढ़तही जायगी आखिर साहबको जानि साहबके पास पहुँचैगो वे गुरुवनके लगाये धोखा में कबहूं न ला-गेगो काल उनको जब चाहै तब खाय वे जब जन्म धरैंगे तब साहिबै की उपासना करैंगे उपासना सिद्धकरि साहबके पास पहुँ-चैंगे तामें प्रमाण "भक्ति बीज पलटै नहीं, जो युग जाहिं अनन्त। नीच ऊंच घर अवतरै, होय सन्तको सन्त" इति चौरासी अङ्गकी साखी समाप्तम् ॥ ९१ ॥

करक करेजे गड़िरही, बचन बृक्षकी फाँस॥
निकसाये निकसै नहीं, रहीसो काहू गाँस९२

सब जीव को साहब के अप्राप्त की करक कहे पीड़ा गड़ि रही है कहे गुरुवन के बैन बृक्ष की फाँस को लगोड़ छोलिकै काठके बाण बनावै है ताकी फाँस अथवा बृक्ष ते शर इव आयगई ताकी फाँस करेजे में गड़िरही है सो निकासे ते नहीं निकसै है अर्थात् जिनको गुरुवालोग धोखाब्रह्म में लगाय दिये हैं ते पलटाये नहीं पलटै हैं वाही को गहे हैं काहूके तो बाणसहित गाँसी के अटकी रहै हैं ते वही ब्रह्म को प्रतिपादन करै हैं सत् मतको ख-ण्डन करै हैं और वे जे ऊपरते बेष बनाये हैं भीतर धोखाब्रह्मही घुसो है तिनके भीतर करेजे में गाँसिही भर अटकी है तामें प्र-माण "अन्तश्शाक्ता बहिश्शैवाः सभामध्ये च वैष्णवाः। नाना-रूपधराः कौला विचरन्ति महीतले" अथवा गुरुवालोग जो और और देवतन को मत सुनायोहै सोई उनके अन्तःकरण में जाइकै अज्ञानरूपी बृक्ष जाम्यो है तौने की कुमतिरूपी फाँस याके करेजे में गड़िरही है सो वह करक कहे जनन मरण रोग नहीं जायहै अर्थात् वा फाँस काहूकी निकासी नहीं निकसै केतो उप-देश कोई करै सो कबीरजी कहै हैं कि काहू गुरुवन की यह जीव के कहा गाँस कहे बैर रह्यो है जो ऐसी फाँस मार्‌यो है जो अब लौं निकासी नहीं निकसै ॥ ९२ ॥

कालसर्प शरीर में, सबजग खाइसि झारि ॥
बिरलै जन बचिहैं जोई, रामहिं भजैं बिचारि ६३

कालरूप जो सर्प सो सबजीवन के शरीर में बसै है शरीर के साथै उत्पन्न भयो है जेती अवस्था जायहै तेती काल खातोजाय है जब आयुर्दाय पूरिगई तब सब काल खायलियो याही भाँति सब जगत् को काल झारा दै खायेलेइहै जे सबमत को छोड़ि परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को बिचारिकै भजै हैं तेई बिरलै बाचै हैं तामें प्रमाण कबीरजी को पद "सन्तो रामनाम जो पावैं। तो वे बहुरि न भवजल आवैं॥ जङ्गमतो सिद्धिहिको धावैं। निशिबासर शिव ध्यान लगावैं॥ शिव शिव करत गये शिवद्वारा। रामरहे उनहूंते न्यारा॥ पण्डित चारिउ वेद बखानैं। पढ़ैं गुनैं कछु भेद न आनैं॥ सन्ध्या तर्पण नेम अचारा। राम रहे उनहूंते न्यारा॥ सिद्ध एक जो दूध अधारा। काम क्रोध नहिं तजै बिकारा॥ खोजत फिरैं राजको द्वारा। राम रहे उनहूंते न्यारा॥ बैरागी बहुवेष बनावैं। करमधरमकी युगुति लगावैं॥ घण्ट बजाय करैं झनकारा। राम रहे उनहूं ते न्यारा॥ जङ्गमजीव कबौं नहिं मारैं। पढ़ैं गुनैं नहिं नाम उचारैं॥ कायहिको थापैं करतारा। राम रहे उनहूंते न्यारा॥ योगी एक योग चित धरहीं। उलटे पवन साधना करहीं॥ योग युगुति लै मनमें धारा। राम रहे उनहूंते न्यारा॥ तपसी एक जो तनको दहई। बस्ती त्यागि जँगल में रहई॥ कन्दमूलफल कर आहारा। राम रहे उनहूंते न्यारा॥ मौनी एक जो मौन रहावैं। और गाउँमें धुनी लगावैं॥ दूध पूत दै चले लबारा। राम रहे उनहूंते न्यारा॥ यती एक बहुयुगुति बनावैं। पेट कारणे जटा बढ़ावैं॥ निशिबासर जो कर हङ्कारा। राम रहे उनहूंते न्यारा॥ पकर लैं जियजबेकराहीं। मुखते सबतर खुदा कहाहीं॥ लै कुतका कहैं दम्ममदारा। राम रहे उनहूंते न्यारा॥ कहै कबीर सुनो टकसारा। सारशब्द हम प्रकटपुकारा॥ जो नहिं मानहिं कहा हमारा। राम रहे उनहूंते न्यारा" ॥ ६३ ॥

काल खड़ा शिर ऊपरे, जाग बिराने मीत ॥
जाको घर है गैल में, क्या सोवै निश्चीत ६४

जाको घर गैलमें होइहै सो बेगारि धरिहीजायहै सो हे जीव ! तेरे ऊपर काल खड़ा है तैं कैसे निश्चिन्त ह्वैकै बेखबरि सोवै है तुहूं बेगारि धरो जायगो ताते चेतकरु तैंतो बिराना मीतहै अर्थात् तैंतो साहबको मीतहै से जागु बेगारि न धरिजायगो ॥ ६४ ॥

कायाकाठीकालघन, यतन यतनसों खाय ॥
कायामध्ये कालबस, मर्म न कोऊ पाय ६५

यह कायारूपी काठ में कालरूप घुन लग्यो है सो यतन यतनसों लव निमेष परिणाम युग वर्ष कल्प करिकै पिण्डाण्डहू को ब्रह्माण्डहूको खाइलेइ है सो जे शरीर धारण किये हैं तिनके शरीरही में काल बसै है कहै हैं कि हम दश बर्ष के भये बीस बर्ष के भये यह नहीं जानै हैं कि यह काल हमारी एती अवस्था खाय लियो ॥ ६५ ॥

मनमाया की कोठरी, तन संशय का कोट ॥
बिषहरमन्त्रनमानहीं, कालसर्पकी चोट ६६

मनमायाकी कोठरी तन संशय का कोट है तामें परो जो है जीव ताको काल सर्पकी चोट भई है कहे कालरूपी सर्पशरीरको डस्यो है सो बिषहर कहे बिष के हरनवारे जे ज्ञान योग बैराग्य मन्त्र हैं तिनको नहीं मानै हैं अर्थात् मणिते बिष उतरि जाय है सो रामनाम जो बिष हरनवाली मणि ताको नहीं जानै हैं जाते कालरूपी सर्पको बिष उतरिजाय तामें प्रमाण गोसाईंजी को "मन्त्रमहामणिबिषयब्यालके।मेटतकठिनकुअङ्कभालके" ॥ ६६॥

मनमाया तो एकहै, माया मनहिं समाय ॥
तीनिलोक संशयपरी, काहि कहों बिलगाय ६७

यह माया मन में समानी है मन माया एकही ह्वै गई है सो

यह मनमाया साहब को भुलाय दियो है ताते तीनलोक में काल की संशय परीहै काल के छूटिबे को सब उपाय करैहैं परन्तु छूटै नहीं है मैं काको बिलगाय कै कहौं कि यह मनमाया को छोड़ि कै साहब को जानो कालते छोड़ावनवारे कालहू के काल साहिब ही हैं उनहीं को काल डेराय है तामें प्रमाण कबीरजी को "कह कबीर कालहु कर काला। है दारुण बड़ काल कराला" यह ज्ञानसागरकी साखी है॥ और साहिबको काल डेराय है तामें प्रमाण "यद्भयाद्वाति वातोऽयं सूर्यस्तपति यद्भयात्। वर्षतीन्द्रो दहत्यग्निर्मृत्युर्धावति यद्भयात्" (इति भागवते)॥ ९७॥

बारी दीन्ह्यो खेत में, बारी खेतहि खाय॥
तीनिलोक संशयपरी, काहिकहौं समुझाय ९८

खेतकी रखवारीवारे बारी रूँधिजाय हैं सो जो बारिही खेत को खाय तो काकरैं तैसे ज्ञानयोग बैराग्य ब्रह्मभावना जीव की रक्षा करिबे को बतायो सो जो ब्रह्महीं में लीन ह्वै संसार में परे तो जीव कहाकरै सो यह संशयरूप जो धोखाब्रह्म सो तीनोंलोक में है मैं काको काको समुझाऊं कि तुम धोखा में न जाउ संशय जो है धोखाब्रह्म सोई खेत चरे लेइहै तामें प्रमाण कबीरजी की परिचयकी साखी "शब्द विषय कहि ब्रह्मऊ, गुरुवन कीन्ह्यो फेर। मातु सुतै बिषदेइ जो, का बस बालककेर"॥ ९८॥

मनसायर मनसा लहरि, बूड़े बहे अनेक॥
कह कबीरतेइबाचिहैं, जिनके हृदय बिबेक९९

मनसायर जो है मनको समुद्र तौने में मनसा की लहरि जोहै मनको अनुभव धोखाब्रह्म सो ये दुनहुंन में परिकै केतौ बूड़िगये केतौ बाहिगये सो कबीरजी कहै हैं कि जिनके हृदय में विबेकहै साहब में लगै हैं तेई बाचै हैं॥ ९९॥

सायरबुद्धि बनायकै, बायुबिचक्षण चोर॥

सारी दुनिया जहड़िगै, कोई न लाग्यो ठौर १००

सायर जो है संसारसमुद्र तामें बुद्धि बनायकै कहे बुद्धि को निश्चय करिकै बायुबिचक्षण जो है बेहर ताहूते चञ्चल जो चोर-रूपी मन ताको सङ्ग करिकै सबदुनिया जहड़िगई कहे बिगरिगई कोई न ठौरमें लागतभये अर्थात् कोई न साहब के पास पहुँचत भये मन वायुते चञ्चल है तामें प्रमाण कबीरजी को " पानी ते अति पातला, धूवौंते अतिझीन । पवनहुँते अति ऊतला, तेहि मित्र कबीराकीन " ॥ १०० ॥

मानुष ह्वैकै ना मुवा, मुवा सो डाँगरै ढोर ॥
एकौजीवठौरनहिंलाग्यो, भया सो हाथी घोर १०१

जो कोई साहबके पास पहुँचै सोई मानुष है अर्थात् साहब द्विभुज हैं यहौ द्विभुज ह्वैकै साहब के पास जाइ है और कबहूं मरै नहीं है सो साहब के जाननवारे नहीं मरैं या पीछे लिखि आये हैं और जे साहब को नहीं जानै हैं तेई मरै हैं ते वे डाँगर ढोर हैं ते मानुष नहीं हैं अर्थात् पशु हैं एकौ ठौर में नहीं लागै हैं कहे साहब के पास नहीं पहुँचै हैं हाथी घोर इत्यादिक नाना योनि में भटकै हैं ॥ १०१ ॥

मानुष तैं बड़पापिया, अक्षर गुरुहि न मानि ॥
बारबार बन कूकुही, गर्भ धरे चौखानि १०२

हे मानुष ! तैंतौ श्रीरामचन्द्र को अंश है तेरो स्वरूप मानुष को है सो तैं बड़ो पापी ह्वै गयो काहे ते कि साहब तोको बारबार गोहरायो कि तैं मेरो है मेरे पास आउ सो उनके कहे अक्षर न मान्यो आज्ञाभङ्ग कियो तौने पापते बारबार जो बनकी कूकुही कहे मुर्गी तिनके कैसो गर्भ चारिउ खानि के जीवन में परिकै परिवार के पालन पोषण में लगिकै पुनि पुनि जन्म धरत भयो नाना दुःख सहत भयो इहां मुर्गी याते कह्यो है कि बच्चा बहुत होय हैं ॥ १०२ ॥

मनुष बिचारा क्याकरै, कहे न खुलैं कपाट ॥
श्वान चौक बैठायकै, पुनि पुनि ऐपन चाट १०३

वेद, शास्त्र, पुराण इनके कहे जो कपाट नहीं खुले हैं अर्थात् ज्ञान नहीं होय है तो मानुष बिचारा क्या करै प्रथम साहब को कह्यो नहीं मान्यो याते मानुष पशुवत् है गयो अज्ञान घेरे है सो जो कूकुर कुकुरिया को बिवाह करै चौक में बैठाइये तौ वे पुनि पुनि ऐपनै चाटै हैं तैसे जीवन को पशुवत् ज्ञान है गयो है फेरि फेरि वही बिषयमें लागेहैं साहबकी ओर नहीं लागेहैं ॥ १०३॥

मनुष बिचारा क्या करै, जाके शून्य शरीर ॥
जो जिउ झाँकि न ऊपजै, काहि पुकार कबीर १०४

या मानुष बिचारा क्या करै जाके शरीर में शून्य जो धोखा ब्रह्म सो समायरह्यो है सो धोखाब्रह्म को झांकिउ कहे देखिउ चुक्यो कि इहां कुछ बस्तु नहीं है और साहबको ज्ञान न उपज्यो तो कबीरजी कहैहैं कि मैं काको पुकारौं वह तो बड़ो अज्ञानी है बूड़िगयो जो प्रत्यक्ष देखो नहीं मानै है कि यह शून्यही है यामें कछू न मिलैगो तो मेरो कह्यो कैसे सुनैगो ॥ १०४ ॥

मानुष जन्महिं पायकै, चूकै अबकी घात ॥
जायपरै भवचक्र में, सहै घनेरी लात १०५

चौरासीलाख योनि में भटकतभटकत ऐसो मानुष शरीर पायकै अबकी जो घात चूक्यो साहब को न जान्यो तो संसार-चक्र में परैगो और यमकी घनेरी लातैं सहैगो ॥ १०५ ॥

ज्ञानरतनको यतनकरु, माटी का शृङ्गार ॥
आयाकबिरा फिरि गया, झूठा है हंकार १०६

साहब के ज्ञानरतन को यतनकरु जाते साहब को ज्ञान होय यह जो माटी कहे शरीर को शृङ्गार करै है सो अनित्य है कबिरा कहे काया को बीर! यह संसार में आया और फिरिगया

तब शरीर पराय जाताहै यह जो अहंकार करताहै कि हम शरीर हैं हम ब्राह्मण हैं क्षत्रिय हैं वैश्य हैं शूद्र हैं सो सब झूठे हैं और जो फीका है संसार यह जो पाठ होय तो यह अर्थ है कि साहब के ज्ञानरतन को जो यतन करै है ताको या संसार फीके लगै है जो कोई दाख को खानवारो है ताको महुवा फीके लगै है ॥ १०६ ॥

मनुष जन्म दुर्लभ अहै, होय न दूजी बार ॥
पक्काफल जो गिरिपरा, बहुरि न लागै डार १०७

यह मानुष जन्म तिहारो बड़ो दुर्लभ है जौन अबैहो तौन फिरि न होउगे पक्काफल गिरिपरै है तो पुनि वह डार में नहीं लगै है अबै साहब के जानिबे को समय है सो साहब को जानि लेउ ॥ १०७ ॥

बांह मरोरे जातहौ, मोहिं सोवत लियो जगाय ॥
कहै कबीर पुकारिकै, यहि पैंड़े ह्वैकै जाय १०८

मुसल्मानन में जे साहब के भक्त होय हैं ते जब भजन करै हैं तब उनको पीर दस्ततेदस्त मिलावै हैं सो दस्त मिलायकै साहबको बताइ देइ हैं पास पहुँचाय देय हैं तिनसों जीव वे कहै हैं कि हमारी बांह मरोरे चलेजाउ हौ हम संसार में सोवत रहे सो जगाय लियो तब उनके पीर जे हैं कबीर ते कहै हैं कि यहि पैंड़े ह्वैकै जाउ या कहिकै साहबके जायबेको राह बताय देइ हैं तब उनके परमगुरु जे हैं महम्मद आदि दैकै पैग़म्बर तिनके इहां पहुँचाय देय हैं तब उनके चेला वह राहचलि महम्मद के पास पहुँचैहैं तब महम्मद साहब के पास पहुँचावैहैं और हिन्दुन में जेश्रीरघुनाथजी को स्मरण करैहैं ते गुरुद्वारा ह्वैकै सुमिरन करै हैं ते गुरु परमगुरु को मिलावै हैं परमगुरु आचार्य को मिलावै हैं ते साहब को मिलाय देइहैं जैसे रामानुजमतवारे आपने गुरु को प्राप्तभये और गुरु शठकोपाचार्य को प्राप्तभये और वे विष्वक्सेन को प्राप्त कियो जीवको और वे संकर्षण को प्राप्तकियो और वे

जानकीजी को प्राप्त कियो जानकीजी श्रीरामचन्द्र को प्राप्त कियो कबीरजी रामानन्दके संप्रदाय के हैं तेहिते यह संप्रदाय संक्षेपते लिखिदियो है ऐसे सब आचार्यलोग आपने आपने चेलन को साहब में लगाय देइ हैं ॥ १०८ ॥

बेरा बांधिन सर्पको, भवसागर के माहि ॥
छोड़ै तौ बूड़त अहै, गहै तौ डसिहै वाहि १०९

पञ्चमुखी सर्प अहंकार ताके पांचमुखन में पांचप्रकार की बाणी निकरी है प्रथममुख विश्व है ताते कर्मकाण्ड निकरा और दूसरा मुख तैजस ताते योगकाण्ड निकरा और तीसरामुख प्राज्ञ ताते उपासनाकाण्ड निकरा और चौथामुख प्रत्यगात्मा ताते ज्ञानकाण्ड निकरा और पांचौं मुख निरञ्जन ताते अद्वैतविज्ञान निकरा सो ऐसे पञ्चमुखी सर्प में बेरा को बांध्यो आपने मनसे कल्पिकै भवसागर अनुमान कियो ताको मान्यो तब ये नरदेह में पञ्चमुखी सर्प अहंकार उठा तौने अहंकार को पहिरिकै वामें सब जीव चढ़े भवसागर पार के वास्ते सो अब जो बिचार करि के छोड़ा चाहे तो भवसागर की भय लागै है कि बूड़ि जायँगे और धरे रहैहैं तो सर्प डसै है सो पञ्च शरीराहंकार सर्प को बेराबने पर सब वाही में आरूढ़ हुआ बेरा समुद्र के पार नहीं जाय सकै है तीरही नें रहिगये सो न बेराको गहिसकै न बेरा को छोड़िसकै संसारसागर में बूड़ते उतराते हैं ॥ १०६ ॥

कर खोरा खोवा भरा, मग जोहत दिन जाय ॥
कबिराउतरा चित्तसों, छाँछदियो नहिं जाय ११०

गुरुमुख जे साहब के जन हैं ते कौनी भांति ते जाने जाय हैं कि पूरहैं सर्वत्र साहबको देखै हैं हाथमें खोवा भरा कटोरा लीन्हे राह जोहै हैं कि कोई आवै खाय सो सर्वत्र तो साहिबै को देखै हैं ताते जोई आयकै खाय है ताको साहिबै जानै हैं और साहिबै मानिकै आदर करै हैं और खोवा खवावै हैं और कबहूं परुषवचन

नहीं बोले हैं ते जीव साहब के प्यारे हैं और जिनसों छाँछहू नहीं दैजाय लाठी लै मारदौरै हैं ते कबीर काया के बीर जीव साहब के चित्तते उतरिजाय हैं अर्थात् वे मुक्ति कबहूं नहीं पावै हैं संसारही में परे हैं अथवा यह साखी गुरुमुख है ताते यह अर्थ है साहब कहै हैं कि खोवा भरा कटोरा हाथ में लिये हौं रामनाम उपदेश करौहौं यह कैसोहै कि कहतमें सरल है फिरि काया को कलेश कौनो नहीं करनपरै और सबको अधिकार है जैसे खोवा खातमें न कौनो अरसा है न कौनो श्रम है ऐसे रामनामरूपी खोवा उपदेशरूप लियेहौं जो कोई याको खाय अर्थात् स्मरण करै तौ मैं वाको संसार ते छोड़ायदेउँ सो मेरे पास आवै तौनेको काया के बीर कबीरजी नहीं ग्रहण करै हैं ते मेरे चित्त में उतरि जाय हैं उनको छाँछऊ मोसों दियो नहीं जाय अरु ज्ञानादिक कर्मादिक के फल तौ मैं देउहौं सो उनके उत्तम कर्महूं के फल मोसों नहीं दिये दैजायँ अर्थात् मेरो चित्त नहीं चाहै है कि छाँछ जे हैं ज्ञानादिक ते उनके उत्तम कर्मादिक के फल देउँ सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि अबै साहब समुझावै हैं सो मानिकै राम नाम कहिकै संसार छोड़िदे फेरि जब यमके सोंटा लगैंगे तब न कह्यो कहि जायगो तामें प्रमाण "बहुरि न बनि है कहत कछु, जब शिर लागि है चोट। अबहीं सब यकठौर है, दूध कटोरा टोट" ॥ ११० ॥

एक कहौं तौ है नहीं, दोय कहौं तौ गारि ॥
है जैसा तैसा रहै, कहै कबीर बिचारि १११

साहब कहै हैं कि हे जीव ! जो मैं तोको एक कहौं कि ब्रह्मई है सब तैंहीं है तौ वेद में लिखै है कि "सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म" (इति श्रुतिः) ब्रह्म तो ज्ञानमय है सो जो ब्रह्म होतो तौ माया में बद्ध ह्वैकै कैसे संसारी होतो और जो दोय कहौं कि तैं काहू ईश्वर को दास है तौ गारी तोको परै है काहेते कि तैं तो मेरो अंश है

सो हे कबीर कायाके बीर जीव ! बिचारिकै देखु तो तैं सनातन को मेरो अंश है दास है और को नहीं है तामें प्रमाण "ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः" और मैं मालिक एकई हौं दूजो नहींहै तामें प्रमाण चौरासी अङ्ककी साखी "सोई मेरा एक तू और न दूजा कोइ। जो साहब दूजा कहै सो दूजा कुलको होइ" ॥१११॥

अमृत केरी पूरिया, बहुबिधि लीन्हे छोरि ॥
आपसरीखा जो मिलै, ताहि पिआऊं घोरि ११२

साहब कहै हैं कि अमृतपुरिया जो या रामनाम सो मैं बहुत भांतिते छोरे लीन्हे हौं और जो दीन्ही पाठ होय तो यह राम नाम की पुरिया छोरि दीन्ह्यो है कहे बहुत बिधिते प्रकट करि दीन्ह्यो है कि यही संसार ते छोड़ावनवारो है दूसरो नहीं है सो आपसरीखा जो मोको मिलै ऐसी भावना करत होय कि मैं साहब को अंशहौं दासहौं सखाहौं दूसरेको नहीं हौं ताको मैं रामनामकी पुरिया घोरिकै पिआइदेउँ कहे अर्थसमेत बतायदेउँ और पुरिया रामनाम की दैकै संसाररोग मिटाय देउँ और रामनाम औषध है तामें प्रमाण "रामनाम यक औषधी, सतगुरु दिया बताय। औषध खावै पथ करै, ताकी वेदन जाय" ॥ ११२ ॥

अमृत केरी मोटरी, शिर से धरी उतारि ॥
जाहि कहौं मैं एकहौं, मोहिं कहै द्वैचारि ११३

साहब कहै हैं कि अमृतकी मोटरी जो रामनाम ताको तो शिरते उतारि धर्‌यो कहे वाको तो कोई बिचार करै है नहीं जासों मैं कहौहौं कि एक मालिक मही हौं सो मोको दुइचारि बतावै हैं कहे छः बतावै हैं अर्थात् पञ्चाङ्गोपासना और छठौं ब्रह्म सबको मालिक जो मैं हौं ताको भूलिगये कोई देवीको कोई सूर्यको कोई गणेशको कोई विष्णुको कोई महादेवको मालिक कहैहैं ॥११३॥

जाको मुनिवर तप करैं, वेद पढ़ैं गुण गाय ॥
सोईदेवासिखापना, नहिं कोई पतिआय ११४

जाके हेतु मुनिवर तपस्या करे हैं परन्तु नहीं पावै हैं और जाको चारों वेद गावै हैं परन्तु गुण को पार नहीं पावै हैं तौनेन साहबको श्रीकबीरजी कहै हैं कि मैं सिखापन दैकै बताऊं हौं कि उनहीं के रामनाम को जपौ तबहीं संसारते छूटौगे ताहू में मोको कोई नहीं पतिआय है अथवा कोई जौन सिखापन दियो है कि मेरो नाम जपै तौ संसारते उद्धार ह्वै जाय तौने मैं सिखापन दै बताऊं हौं परन्तु पतिआय नहीं है सो महामूढ़ है ॥ ११४ ॥

एक शब्द गुरुदेव का, ताको अनंत बिचार ॥
थाके पण्डित मुनिजना, वेद न पावैं पार ११५

एक शब्द जो है रामनाम ताको अनन्त बिचार है अर्थात् ताहीते वेद शास्त्र पुराण नानामत सब निकसेहैं सो हमारे राम-मन्त्रार्थ में लिखो है तौने रामनाम को अर्थ करत करत पण्डित मुनि वेद थकिगये पार न पाये अर्थात् अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड में वेद शास्त्र सब याहीते निकसे हैं ये कैसे पार पावैं ॥ ११५ ॥

राउर को पिछवार कै, गावैं चारो सेन ॥
जीवपरा बहु लूट में, ना कछु लेन न देन ११६

राउर जो है साहबको धाम ताको पिछवारे कै दिये हैं चारो सेन जे चारोवेद तिनके श्रुतिन को नाना उपासना में नानामत में लगायकै तिनहीं मतन को उपासना करि जीव लूट में पर्यो न कछु लेनहै न कछु देनहै अर्थात् कछु हाथ बस्तु नहीं लगैहै ॥११६॥

चौगोड़ा के देखतै, व्याधा भागा जाय ॥
अचरजहो यकदेखौ सन्तौ, मुवा कालकोखाय ११७

चौगोड़ा जो है जीवात्मा ताके चारि गोड़ जे हैं मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार इनहीं ते जीव चलैहै तौनेके देखते कहे जब अपने स्वरूप को चीन्ह्यो कि मैं साहबको अंश हौं तब व्याधा जो है काल सो भागिजाय है निकट नहीं आवै है सो हे सन्तो ! एक बड़ो अचरज है जब जीवात्मा स्वरूप को जान्यो तबतो काल

भागतही भर है और मुवा कहे मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार जे चारो गोड़ तिनको और पांचो शरीर छोड़यो तब काल खायही जाय है कहे काल की भय नहीं रहिजाय है हंस शरीर में बैठि के साहब के पास जाय है वहां कालकी भय नहीं है तामें प्रमाण "न यत्र शोको न जरा न मृत्युर्नार्तिर्न चोद्वेग ऋते कुतश्चित्। यश्चिन्तितोदः कृपयानिदं विदां दुरन्तदुःखप्रभवानुदर्शनात्" (इति भागवते) "यस्य ब्रह्म च क्षत्रञ्च उभे भवत ओदनः। मृत्युर्यस्योपसेचेत क इत्थावेत यत्र सः" और वा लोक में कौनौ शोक नहीं है तामें प्रमाण धर्मदास को पद नामलीलाग्रन्थ को "जहाँ पुरुष सतिभाव तहाँ हंसनकी बासा। नहीं यमनको नाम नहीं ह्वां तृष्णा आसा॥ हर्ष शोक वा घर नहीं नहीं लोभ नहिं हान। हंसा परम अनन्द में धरै पुरुषको ध्यान॥ नहिं देवी नहिं देव नहीं ह्वां वेदउचारा। नहिं तीरथ नहिं बर्त्त नहीं षटकर्म अचारा॥ उतपाति परलय ह्वां नहीं नहीं पुण्य नहिं पाप। हंसा परम अनन्द में सुमिरै सतगुरु आप॥ नहिं सागर संसार नहीं ह्वां पवनहुँ पानी। नहिं धरती आकाश नहीं ह्वां और निशानी॥ चाँद सूर वा घर नहीं नहीं कर्म नहिं काल। मगन होय नामै गहै छूटि गयो जंजाल॥ सुरति सनेही होइ तासु यम निकट न आवै। परमतत्त्व पहिंचानि सत्य साहब मन भावै॥ अजर अमर विनशै नहीं परमपुरुष परकास। केवल नाम कबीर का गाय कहै धर्मदास॥ ११७॥

तीनिलोक चोरी भई, सब का सरबस लीन्ह॥
बिना मूड़ का चोरवा, परा न काहू चीन्ह ११८

तीनिलोक में चोरी होत भई सबको सर्बस्व लैलियो सो ऐसो जो बिना मूड़को चोर निराकार ब्रह्म सो काहू को न चीन्हि पर्यो अथवा बिन मूड़को चोर छिन्नमस्ता देवीके उपासकते अपने हूं को भावना करैहैं कि हमारो मूड़ नहीं है काहेते कि "देवो

भूत्वा देवं यजेत्" यह लिखे है ते शाक्त काहूको नहीं चीन्हि परे हैं माया में डारिकै सब जीव को भरमाइदेइ हैं ॥ ११८ ॥

चक्की चलती देखिकै, नयनन आया रोइ ॥
दो पट भीतर आयकै, साबितगया न कोइ ११९

पुण्य और पाप दूनों चक्की हैं कहे चकरी हैं तामें द्वैत जो है हम हमार सो किल्ली है तौने चक्की के दूनों पटके भीतर आयकै साबित कोई नहीं गया है पीसिही गयो है जो कोई साहब को सर्वत्र चिदचित्‌रूप ते देखैहै सोई बाचे है तामें प्रमाण "पाप पुण्य दुइ चक्की कहिये, खूँटा द्वैत लगाया है। तेहि चक्कीतर सबै पीसिगे, सुर नर मुनि न बचाया है" और प्रमाण शायर बीजक को "चक्की चली रामकी सबजग पीसा झारि। कहइ कबीर ते ऊबरे जे किल्ली दियो उखारि" ॥ ११९ ॥

चारि चोर चोरी चले, पग पानहीं उतारि ॥
चारोदर थून्हीं हनी, पण्डित कहहु बिचारि १२०

चारि चोर जे हैं विश्व, तैजस, प्राज्ञ, तुरीय ते चोरी को चले आपनी आपनी पनहीं जो है बिचार ताको उतारिकै कहे छोड़िकै जैसे कि चोर चलै है तब पनहीं उतारिकै चुपा जाय है तैसे येऊ चलैहैं सो विश्वाभिमान कर्मकाण्ड की थून्ही गाड़ी और तैजस अभिमान उपासनाकाण्डकी थून्ही गाड़ी व प्राज्ञाभिमान योग की थून्ही गाड़ी व प्रत्यगात्मा तुरीयअभिमानने ज्ञानकाण्ड की थून्ही गाड़ी सो ताही को बिचार पण्डितजन करने लगे अथवा चार जो है मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार ते बिचाररूप पनहीं को उतारिकै चोरी को चले सो मन संकल्प विकल्प की थून्ही गाड़ी व चित्त अनुसंधान की थून्ही गाड़ी और बुद्धि निश्चय की थून्ही गाड़ी व अहंकार अहंब्रह्म की थून्ही गाड़ी सो ताही को सब पण्डित बिचार करनेलगे सो कहैहैं मनतो संकल्प विकल्प करने लग्यो कि संसार कौनी भांति ते छूटै और चित्त अनुसंधान औरे

और ईश्वरनपर करने लग्यो व बुद्धि और और ईश्वरनपर निश्चय करनलागी व अहंकार अहंब्रह्म को बिचार करनेलग्यो कि मैं ब्रह्म हौं सो हे पण्डितो ! बिचार तो करौ ये चारो जे हैं ते चारोदर में थून्ही गाड़दिये बिचाररूप पनहीं उतारिकै कहे साहबको बिचार न करत भये साहब के बिचार को पनहीं काहेते कह्यो कि पनहीं पदत्राण कहावै हैं पांय की रक्षा करै हैं सो बिचाररूप पनहीं उतारि डार्‌यो ताते जैसे कांटा बेधि जाय है तैसे नानामत नानाप्रकार के भ्रम बेधिगये ॥ १२० ॥

बलिहारी वह दूध की, जामें निकसै घीव ॥
आधी साखि कबीर की, चारि वेद का जीव १२१

वह दूध जोहै चारोवेद अथवा और जे भक्तिशास्त्र तिनकी बलिहारी है जामें घीव रामनाम निकसै है आधीसाखी जोहै कबीर की रामनाम सो चारोंवेद का जीव है काहेते जीव है कि चारोंवेद याहीते निकसे हैं और आधीसाखी रामनामै को कह्यो है तामें प्रमाण ॥ " रामनाम लै उचरी बाणी " सबको आदि रामनामही है ॥ १२१ ॥

बलिहारी तिहि पुरुषकी, परचितपरखनहार ॥
साई दीन्ह्यो खांड़को, खारी बूझ गँवार १२२

कबीरजी कहैहैं कि परचित कहे सबते परे चिद्रूप जो साहब ताको परखनहार जो अणुचित पुरुष है ताकी बलिहारी है और जे साईं कहे बयाना तो खांड़ को दीन्ह्यो कि वेदन में श्रीरामचन्द्र को बूझै ताको छोड़ि खारी जो हैं नानामत तिनको वेदन में बूझै हैं वोई मतन की उपासना करै हैं ते गँवार हैं खारी जो बहुत खाय तौ पेट काटिदेइ है सो नानामतनमें परिकै नाना दुःख सहै हैं ॥ १२२ ॥

बिष के बिरवा घर किया, रहा सर्प लपटाय ॥
ताते जियरै डर भया, जागत रैनि बिहाय १२३

विषको बिरवा जो है संसार तामें जीव घर कियो जामें काल-रूपी सर्प लपटाय रह्यो है तेहिते जाके हृदय में डरभयो है जागिकै साहबको जान्यो ताकी मोहरूपी निशा बिहाय जाय है और जे नहीं जागे हैं तिनको काल डासिखाय है सो जिनको रामोपासना सिद्ध ह्वै गई है ऐसे जे भक्त हैं तिनके शरीर नहीं छूटै हैं सो हनुमान् कबीरजी प्रकटै हैं ॥ १२३ ॥

जोई घर है सर्पका, सो घर साधु न होइ ॥
सकल संपदा लै भई, बिषभरलागी सोइ १२४

जो घर सर्प को है सो घर साधुको न होइ अर्थात् सर्प को घर बेमोर है तामें बहुत छिद्र होइहैं सो या शरीरौ बहुत छिद्र की बाँबी है तामें काल बसै है सो बेमोर में जो जीव जाय है तिनको सर्प खायलेइहै और जे या शरीर में कौनो जीव बसै हैं तिनको काल खाइलेइहै ॥ १२४ ॥

मनभर के बोये कबौं, घुँघुची भर ना होइ ॥
कहा हमर मानैं नहीं, अन्तहु चले बिगोइ १२५

शरीरमें जो घुँघुची भर बासना उठै तो मन भरकी ह्वैजाती है कहे मन संकल्प बिकल्प करिकै और बढ़ाइ देइहै मनमें वही भरि रहती है और मनभर उपदेश करै तो घुँघुचीभर ज्ञान नहीं रहै यह मन नीचे में जाय है ऊंचेको नहीं जाय सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि हम केतो उपदेश करैं परन्तु कोई नहीं मानै हैं ताते अन्त में बिगोइकै कहे बिगरिकै मरिकै नरक में जाय हैं ॥ १२५ ॥

आपा तजो औ हरिभजो, नखशिख तजो बिकार ॥
सब जिउ ते निरबैर रहु, साधु मता है सार १२६

श्रीकबीरजी कहै हैं कि जबभर तैं यहि शरीर को आपनो मानैगो तबभर तेरो जनन मरण न छूटैगो ताते "अहं शरीरः" मैं शरीर हौं यह जो है आपा ताको छोड़िदे तैंतो साहब को

पार्षदस्वरूप है तामें टिकि तिनको भजन करु और नखशिख में तेरे काम क्रोधादिक बिकारई देखे परैहैं तिनको छोड़दे और चिद्चित् बिग्रहते सर्वत्र साहिबही हैं यह भावना करिकै सब जीवनते निर्बैर रहु साधु मत को यही सारांश है सब साहब के शरीर हैं तामें प्रमाण "खं वायुमग्निं सलिलं महीञ्च ज्योतींषि सत्त्वानि दिशो द्रुमादीन्। सरित्समुद्रांश्च हरेः शरीरं यत्किञ्चभूतं प्रणमेदनन्यः" चित् जो है जीव सोऊ शरीर है तामें प्रमाण "यश्चात्मनि तिष्ठन् यमात्मानं वेद यस्य आत्मा शरीरम्" ॥ १२६ ॥

पक्षापक्षी कारणे, सबजग रहा भुलान ॥
निरपक्षे ह्वै हरिभजैं, तेई सन्त सुजान १२७

और तो सब माये में भुलान हैं जिनके कछू सामुझ है ते आपने आपने मत को पक्ष कीन्हे हैं आनको पक्ष खण्डन करि डारै हैं सो जे पक्षापक्षी छोड़िकै साहब को भजै हैं तेई सुजान सन्त हैं ॥ १२७ ॥

माया त्यागे क्या भया, मान तजा नहिं जाय ॥
जेहि माने मुनिवर ठगे, मान सबनको खाय १२८

सन्तलोग जो माया को छोड़िउदियें तो कहाभयो मान बड़ाई तो छोड़िबे न किये याही चाहै हैं कि हमारो मान होय सो जौने मान में मुनिवर ठगि गये हैं सोई सबको खाये लेइ है सो हम पूछै हैं कि जो तिहारो बड़ो मान भयो बड़ी बड़ाई भई कि फलाने के समान उपासना में कोई नहीं है ज्ञान में विद्या में कोई नहीं है तो यासों कहाभयो जाके निमित्त घर छोड़्यो सो तो मिलबई न भयो तेहिते जो कोई साहब के मिलिबेकी संसार छूटिबेकी बात कहै तो मानिलेइ चाहै आपने मत को होइ चाहै बिराने मतको होइ काहेते कि साधुको मत यही है कि संसार छूटै

साहब मिलैं व माने प्रतिष्ठा भये साधु कहावे या कौने शास्त्र में लिखा है तेहिते साधु वही है जो साहब को जानै ॥ १२८ ॥

घुंघुचीभर जो बोइया, उपज पसेरी आठ ॥
डेरा परा काल घर, सांझ सकारे बाठ १२९

यह शरीररूपी क्षेत्र कैसो है कि जो घुँघुची भर बोइजाय अर्थात् उठै तो आठ पसेरी कहे मन उत्पत्ति होय है काल के घर में डेरा पस्यो है तेहिते यह शरीर को कहूं सांझ होइ है कहूं सकार होइ है अर्थात् कबहूं मरिजाय है कबहूं उत्पत्ति होइ है व बाठ कहावै बरेठ सो मन माया में मिलो जो आत्मा सो बरेठ ह्वैगयो बरेठमें तीनि लहर होय हैं यामें त्रिगुणात्मिका माया बरिगई है सो एककैति पुण्य की गैल है जप यज्ञ दानते खैंचिके स्वर्गको लैजाय हैं और एककैति पापकी गैलहै काम क्रोधादिकते खैंचिकै नरक में डारिदेइ हैं जब बरेठ टूटिजाय है तब ख्याल गुल ह्वै जाय है अर्थात् मुक्ति ह्वै जाय है ॥ १२९ ॥

बड़े ते गयो बड़ापनो, रोम रोम हंकार ॥
सतगुरु की परिचय बिना, चारयो वर्ण चमार १३०

सबते बड़े को हैं साधु जे संसार को त्याग कीन्हे हैं तिनमें और दोष तो हई नहीं हैं काहेते कि संसार को छोड़े हैं परन्तु जे चित् अचितरूप साहब को नहीं देखैं हैं सर्वत्र ते आपने बड़ापनही में गये कि हमारी बराबरी को साधु कोई नहीं है या अहंकार रोमरोम बंधि गयो सो सतगुरु तो पायो न जो रामनाम को बताय देइ जाते साहब याकी रक्षा करैं सो साहब के जाननवारे जे साधु तिनके बिना परिचय चारिउवर्ण चमारके तुल्यहैं ॥ १३० ॥

मायाकी झक जगजरै, कनक कामिनी लागि ॥
कहकबीरकसबाचिहौ, रुई लपेटी आगि १३१

झक वाको कहे हैं कि जैसे या कहे हैं कि भूत की झक लगी है सो कनक कामिनी में लागि माया की झक में बैकलाय

के जरै है सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि कनककामिनीरूप रुई में लपटिकै विषय आगि सेवन करौ हौ सो कैसे बाचिहौ अर्थात् जरिहीजायगो ॥ १३१ ॥

माया जग साँपिनि भई, बिष लै बैठी बाट ॥
सबजग फन्दे फन्दिया, गया कबीरा काट १३२

संसार में माया साँपिनि भई है सो बिष लैकै संसार की जे हैं सब राहै तन, धन, कर्म तिनमें बैठी है सो सम्पूर्ण जग वाके फन्दे में फन्दिगयो जोई कबीर कहे जीव वे राहन में चलै है सोई काटा जाय है अथवा कबीरजी कहै हैं कि मैं जौने जौने राहन में वह साँपिनि बैठी रही है तौने तौने राहनको काटिकै कहे बरायकै और राह ह्वै चलोगयो ॥ १३२ ॥

सांप बीछि को मन्त्र है, माहुर झारे जाय ॥
बिकटनारि के पालेपरा, काटिकरेजा खाय १३३

साँप बीछी को बिष मन्त्रन ते झारेजाय है और वह बिकट नारि जो माय है ताते पाले जो पर्‌यो ताको करेजा काटिकै खाय लेइ है अर्थात् साहब के ज्ञानादिक जे अन्तःकरण में हैं तिनको खाय है सोई माया को रूप कहै हैं ॥ १३३ ॥

तामसकेरे तीनगुण, भौंर लेइ तहँ बास ॥
एकैगरी तीनफल, भाँटा ऊँख कपास १३४

आदि तामस जो है अज्ञान मूलप्रकृति तामें रजोगुणी तमोगुणी सतोगुणी तीन फल लगे हैं सो सतोगुणी ऊँख है जो ऊँख चुह्यो तो पहिले रस पान कियो कहे यज्ञादिक कर्म कियो स्वर्ग में जायकै अप्सरनके साथ सुख कियो जब पुण्यक्षीण भयो तब फेरि संसार में परे सो यहै हाथमें लग्यो फिरि चौरासी में भटकन लग्यो और रजोगुणी कपास है कपास को लियो कपरा बिनायो पहिर्‌यो ह्याँई फटिगयो तैसे रजोगुणी कर्म कियो तामें राजा भयो सुख भोग कियो दियो लियो बड़ो यश कियो फेरि

फेरि मरिकै जैसो कर्म कियो तैसो भयो जाय और तमोगुणी कर्म भांटा है टोरयो तब कांटा लग्यो और जब खायो तब पुरुषशक्ति की हानि ह्वै गई अखाद्य लिखे हैं द्वादशी त्रयोदशी इत्यादिक दिन में जो खायो तो नरक को गयो ऐसे तमोगुणी कर्म ते काहू को मारयो तो मरिगयो और पाप लग्यो राजा बाँधिकै शूलीदियो मारोगयो दुःख पायो सो इहां दुःख पायो और वहां नरक में दुःख पायो ॥ १३४ ॥

मन मतङ्ग गैयर हनै, मनसा भई सचान ॥
यन्त्र मन्त्र मानै नहीं, लागी उड़ि उड़ि खान १३५

मनरूपी जो हाथी है मतवार सो गैयर कहे आपने अरते कहे हठते गवा जोहै जीव अर्थात् साहबको भूलिगयो जोहै जीव अथवा गैयर कहे बड़ा जो है जीव ताको हनैहै सो जब जीव मारे पर्यो तब मनसा जोहै मनोरथ सोई सचान भयो है कहे शार्दूल भयो सो उड़ि उड़ि याको खाय है अर्थात् जब मरनलागै है तब जहैं मनोरथ जाय है तहैं जीव जायहै सोई खाइबो है और यन्त्र मन्त्र जो नानाउपदेश वेद शास्त्र कहै है सो नहीं मानै है ॥ १३५ ॥

मन गयन्द मानै नहीं, चलै सुरतिके साथ ॥
दीनमहावत क्या करै, अंकुश नाहीं हाथ १३६

मनरूपी जो मतङ्ग है सो नहीं मानै है सुरतिरूपी जो हाथिनी है ताके साथ चलैहै महाउत जो है जीव सो कहाकरै अंकुश जो है नामका ज्ञान सो याके हाथई नहीं है ॥ १३६ ॥

या माया है चूहरी, औ चूहर की जोइ ॥
बापपूतअरुभायकै, सग न काहुकी होइ १३७

या माया चूहरी कहे चाण्डालिनी है और चूहरै की जोइ है कहे जीवकी जोइ ह्वैकै जीवहू को चूहर बनायलियो अर्थात् आपने बश कै लियो सो यह माया काहूकी सग नहीं है मन जो है

बाप पूत जो हैं ब्रह्म ताको पति जो है जीव तासों अरुझाय दियो है ॥ १३७ ॥

कनककामिनीदेखिकै, तूमतिभूलसुरङ्ग ॥
बिछुरनमिलनदुलेहरा, केंचुलितजैभुजङ्ग १३८

साहब कहै हैं कि यह कनककामिनीरूप माया को देखि तू मति भुलाय तैं तो सुरङ्ग है साहब कहै हैं कि मेरे अनुराग में रङ्गनवारो है सो आपने स्वरूप तो बिचारु यह कनककामिनी-रूप जो माया है तौने में जो रँग्यो है ताको जो छोड़िदे तो जैसे भुजंग केंचुलि छोड़िदेइ है तब वाको स्वरूप निकरि आवै है तैसे तेरे चारो शरीर छूटि जायँ तब हंसशरीर पाय मेरे पास आवै ॥ १३८ ॥

मायाके बश सब परे, ब्रह्माबिष्णु महेश ॥
नारद शारद सनक औ, गौरीसुत गनेश १३९

पीपरएकजोमहँगेमान । ताकरमर्मनकोऊजान ॥
डारलफायनकोऊखाय।खसमअछतबहुपीपरजाय १४०

अर्थ याको स्पष्टही है १३९ एक पीपर के वृक्ष को सबै महँगे मानिलियो है सो वह ब्रह्म है अनुभवगम्य है वाको मर्म कोई नहीं जानै है कि पीपर को डारलफाय कै कोई नहीं खाय है अ-र्थात् वा अलख है कैसे मिलै वातो कथनमात्रही है सो साहब कहै हैं कि जीवनको खसम अछत मैं बनेहौं ताको तो नहीं प्राप्ति होय वह पीपर जो ब्रह्म ताही में सब चलेजाते हैं सो वह ब्रह्म झाँई है तामें प्रमाण मूल रमैनी को "निर्गुण अलख अकह निरबाना । मन बुधि इन्द्री जाहि न जाना ॥ बिधि निषेध जहँवाँ तन होई । कहकबीर पद झाँई सोई ॥ पहिले झाँई झाँकते, पैठी सन्धिककाल । झाँईकी झाँईरही, गुरुबिनु सकै को टाल ॥ १४० ॥

शाहूते भो चोरवा, चोरन ते भो जुज्झ ॥

तब जानैगो जीयरा, मारु परैगो तुज्झ १४१

प्रथम शाहु रहे कहे शुद्ध रहेहौ सो ब्रह्म माया मन चोर हैं तिनमें लगिकै तैंहू चोर ह्वैगये अर्थात् उपदेश करिकै जीवन के साहब को ज्ञान चोराय लियो काहूको कह्यो कि ब्रह्म तूहीं है काहू को कह्यो कि आदिशक्ति को भजु जगत्को कर्ता वहा है काहूको कह्यो जो मनमें आवै सो करु बन्ध मोक्ष को कारण मनै है याहीं रीति गुरुवा चोरन ते जुज्झ भयो सो तुज्झ कहे तोहीं तबहीं समुझि परैगो जब यमको सोंटा शीश में लगैगो तब तब जानैगो कि रक्षक को भुलाय दियो ॥ १४१ ॥

ताकी पूरी क्यों परै, गुरु न लखाई बाट ॥
ताको बेरा बूड़िहै, फिरि फिरि अवघट घाट १४२

जाको गुरुने साहब के पास पहुँचिबे की बाट नहीं लखाई ताकी पूरि कैसे परै ताकी बेरा जो है ज्ञान सो अवघटघाट में बूड़ि जाइगो अर्थात् जब उनके शरीर छूटि जायँगे पुनि पुनि जनन मरण होइगो तब वा ज्ञान भूलि जायगो ॥ १४२ ॥

जाना नहिं बूझा नहीं, समुझि किया नहिं गौन ॥
अन्धे को अन्धा मिला, राह बतावै कौन १४३

मनमायादिक जो जगत् है ताको न जान्यो कि यह जड़ है मैं इनको नहीं हौं इनते भिन्नहौं वा ब्रह्म को न बूझयो बिचारई करत रहिगये अपने स्वरूप को न जान्यो कि मैं साहब को अंश हौं समुझिकै नानामतन में गौन न किये कि ये नरक लैजानवारे हैं सो आँधर जे जीव तिनको आँधरै गुरुवालोग मिले साहब के यहाँ की राह कौन बतावै ॥ १४३ ॥

जाको गुरु है आँधरा, चेला कहा कराय ॥
अन्धे अन्धा ठेलिया, दोऊ कूप पराय १४४
मानसकेरी अथाइया, मति कोइ पैठैधाय ॥

एकुइ खेते चरतहैं, बाघगदहरागाय १४५

याको अर्थ स्पष्टही है १४४ या संसार में मनुष्य की अथाई है तामें धायके कोई मति पैठे काहेते कि एकुइ खेत जो है संसार तामें बाघ जो है जीव व गदहा जो है मन और गाय जो है माया सो एकई संग चरै हैं गदहा मनको कह्यो सो कर्म को बोझा याही में लादि जाय है और जीव बाघ है समर्थ जो साहब को जानै तो गाय जो है माया ताको खायजाय अर्थात् नाश करदेइ ॥ १४५ ॥

चारिमासघनबरसिया, अतिअपूर्बशरनीर ॥
पहिरेजड़तरबख़्तरी, चुभै न एकौ तीर १४६

कबीरजी कहै हैं कि घन जो हौं मैं सो चारिमास जे हैं चारि युग तामें अतिअपूर्ब जो है शर कहे बाणरूपी नीर ज्ञान ताको बरसत भयो कहे उपदेश करत भयो सब जीवन को परन्तु ऐसो जड़तर कहे जड़ौ ते जड़ बख़्तर पहिरे है कि तीर कहे एकौ ज्ञान नहीं चुभै है अथवा चारिमास जे हैं चारिउ वेद ते घन कहे बहुत ज्ञानकी बर्षा कियो कहे सब जीवन को उपदेश कियो परन्तु साहब को कोई न समुझत भयो वेद को अर्थ औरईमें लगायदियो सब शब्द को सार रामनाम न जाने सब नरक को चलेगये तामें प्रमाण " नाम लिया सो सबलिया, वेदशास्त्रको भेद ॥ बिना नाम नरकैगये, पढ़ि पढ़ि चार्‌यो बेद" ॥ १४६ ॥

गुरुकेभेलाजिवडरै, काया छीजनहार ॥
कुमति कमाई मनबसै, लागु जुवाकी लार १४७

कबीरजी कहै हैं कि गुरुके भेले में जिउ डरै है वह गुरुकी भेली कैसी है कि काया जे हैं पांचौ शरीर तिनको छीजन कहे छोड़ाय देनवारी है सो ये संसारी जीवन के मन में कुमति की कमाई लगी है ताते जुवाकी लार मानुष शरीर में लाग है न कर्म करत बन्यो तो नरक गयो कर्म करत बन्यो तो स्वर्ग गये

कर्म छूटनको उपाय नहीं करै हैं लार संग को कहै हैं पश्चिम की बोली है ॥ १४७ ॥

तनसंशयमनसोनहा, कालअहेरीनित्त ॥
एकैडाँगबसेरवा, कुशलपुछौकामित्त १४८

साहब कहै हैं संशय जो मन सोई तन में सोनहा है जीवन को शिकार खेलै है और एक यह काल अहेरी है अर्थात् जब काल मारै है तब मनकी सुरति जहां मरतमें जायहै तहां आत्मा जात रहै है तौनै शरीर धारण करै है सो मन सोनहा काल अहेरी जीव सावज ये तीनों एकैडाँग जो शरीर तामें बसै हैं सो हे मित्र! तुमतो हमारे सखा हौ भूलि कै यह डाँग जो शरीर तामें कहां बसेहौ चारों शरीरन को छोड़ि हंस शरीर में बैठि मेरे पास आवो ॥ १४८ ॥

शाहुचोरचीन्हैनहीं, अन्धामतिकाहीन ॥
पारिखबिनाबिनाशहै, करिबिचारहोभीन १४९

हे अन्धा, हे ज्ञाननयनको हीन! तैंतो शाहु रह्यो है चोर जो है मन ताको तैं न चीन्है ताते तैंहूं चोर ह्वैगये सो बिचार न कियो कि पारिख बिना बिनाश है सो पारिख तो करु तैंतो चित् है और यह मन जड़ है तेरो वाको साथ नहीं बनिपरै है सो जैसे तैं अणु चित् है तैसे साहब विभुचित् हैं चित् चित् को साथ होइ है सो बिचार करि यहि मनते भिन्न ह्वै मेरे पास आउ ॥ १४९ ॥

गुरु सिकिलीगर कीजिये, मनहि मसकला देइ ॥
शब्द छोलना छोलिकै, चित दर्पण करिलेइ १५०

जो कहौ मनते हम कौनी भाँति ते भिन्न होईं तो गुरु सिकिलीगर है आत्मा तरवारिहै मनादिकन की काटनवारी है तामें साहब को ज्ञानरूपी मसकला दै रामनाम छोलना ते अज्ञानरूपी मरचा छोलि प्रेमकी बाढ़िधरि मनादिकन के काटिबे को समर्थ

करि देइ अर्थात् चारिउ शरीर को छोड़ि स्वरूपरूपी दर्पण में आपनो हंस शरीर जानि लेइ कि मैं साहब को अंश हौं ॥१५०॥

मूरुख के समुझावते, ज्ञानगाँठि को जाय ॥
कोइला होइ न ऊजरो, नौमन साबुन खाय १५१
मूढ़करमिया मानवा, नखशिखपाखरआहि ॥
बाहनहारा काकरै, बाण न लागैताहि १५२

यह साखी को अर्थ प्रसिद्धै है १५१ मूढ़कर्मी कहे मूढ़ है और कर्मी है कर्मत्याग को उपाय नहीं करै है ऐसो जो है मनुष्य सो नखशिखलौं अज्ञानरूपी पाखर पहिरे है और जो मूढ़कर्मी पाठ होय तौ बानरकी नाईं बाँध्यो है हठ नहीं छांड़ै ॥ १५२ ॥

सेमरकेरा सूवना, सिहुले बैठाजाय ॥
चोंचचहोरै शिरधुनै, यह वाहीकोभाय १५३

सेमर का सुवा जो सिहुले कहे मदारे में बैठिकै चोंच मार्‍यो जब घुवा निकर्‍यो तब शिर धुनै है या कहै है कि या वही को भाई है अर्थात् जीव संसार सुख लागिरह्यो जब कुछ न पायो तब ब्रह्मसुख में लग्यो कि मोको ब्रह्मानन्द होयगो सो वहौ बिचार करत जब अठईं भूमिका में गयो तब अनुभवौ न रहिगयो तब जान्यो कि जैसे संसारीसुख मिथ्या है तैसे ब्रह्मसुखौ मिथ्या है कुछु नहीं रहिजाय है अथवा घर छोड़िकै बैरागी भये महन्ती लिये मठबाँधे चेला भये सो घर में एकै मेहरी रही एकै बेटा रहो इहां बहुत चेली भईं बहुत चेला भये बहुत घर भये न गृहस्थी में बन्यो न बैराग्य में बन्यो तामें प्रमाण चौरासी अङ्ककी साखी "घरहुतजिनितौअस्थलबाँधिनि, अस्थलतजिनितौफेरी । फेरी तजिनितौचेलामूड़िनि, यहिबिधिमाया घेरी" ॥ १५३ ॥

सेमर सुवना बेगि तजु, घनी बिगुर्चनपाँख ॥
ऐसा सेमर जो सेवे, हृदया नाहीं आँख १५४

हे सुवा ! जीव संसाररूप सेमर को तैं छोड़िदे तैं तो पक्षी है तेरे मेरे पास आवनको पक्ष है कहे तेरे स्वरूप में मेरे पास आवनको ज्ञान बनो है जो संसारी ह्वै जायगो मायाब्रह्म में लगैगो तो मेरे पास आवनेको तेरे पखना बिगुर्चन ह्वै जायँगे कहे घुवा ऐसो चोथिडारैंगे नाम नाना ज्ञान में लगाय देयँगे वा ज्ञान न रहिजायगो सो ऐसे संसाररूपी सेमर को सेवै है जाके हृदय में आंखी नहीं हैं मेरो ज्ञान नहीं है ॥ १५४ ॥

सेमर सुवना सेइये, दुइ ढेंढी की आश ॥
ढेंढी फुटी चटाकदै, सुवना चले निराश १५५

हे सुवना, जीव ! संसार सेमर की दुइ ढेंढी की आश सेवै है सेमर की दुइ ढेंढी कौनि हैं एक फूलकी है एक फलकी है और या संसार में एक तो संसारी सुख है एक परलोकसुख है सो सेमर में रसकी चाहकियो जब चोंच चहोरयो तब ढेंढी चटाकदै फूटिगई घुवा निकस्यो सुवा निराश ह्वैके चलेगये रस की प्राप्ति न भई तैसे तैं संसार में परयो जनन मरण छुटावे के वास्ते धोखाब्रह्म में लाग्यो परन्तु जनन मरण न छूट्यो ॥ १५५ ॥

लोग भरोसे कौनके, जग बैठिरहे अरगाय ॥
ऐसे जियरै यम लुटै, जस मेढ़े लुटैं कसाय १५६

अरे लोगो ! यहि संसार में कौनके भरोसे अरगायकै कहे चुपायकै बैठिरहेहो ज्ञान करिकै कि महीं ब्रह्म हौं अथवा या मानिकै कि महीं जीवका मालिक हौं अथवा योगकरिकै कुण्डलिनी के साथ प्राण को चढ़ायकै ज्योति में मिलायकै व चुप ह्वैकै बैठि रहे सो हम पूछै हैं कि तुम कौन के भरोसे बैठिरहे साहब को तो जानिबोई न कियो जब उत्पत्ति भई तब ब्रह्म ते माया तुम को धरिलै आई और पुण्य क्षीण भई तब स्वर्गादिकन ते उतरि आये और जब समाधि छूटी तब जीव उतरि आयो पुनि जस के तस ह्वै गये और आपनेहीं को मालिक मान्यो तो जब शरीर

लूट्यो तब यम खूब लूट्यो जैसे मेढ़ा को कसाई लूटै है तैसे विना रक्षक कौन बचावै ॥ १५६ ॥

समुझि बूझि जड़ ह्वैरहे, बल तजि निर्बल होय ॥
कह कबीर ता सन्तको, पला न पकरै कोय १५७

सर्वत्र साहब को समुझिकै औ साहब को रूप बूझिकै कि या भांति को है जड़वत् ह्वैरहे कि जो करैहै सो साहब करै है ऐसे साहब को जो जानै है ताके बहुत सामर्थ्य ह्वैजाय है जो चाहै सो करिलेइ तौने आपने बल को छपायके आपको निर्बल मानै है कि हम कहा करै हैं जौन काम करै है तौन साहिबै करै है वे समर्थ हैं सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि ऐसे सन्तको पला कोई नहीं पकरै है कहे बाधा कोई नहीं करिसकै है सब साहिबै करै हैं तामें प्रमाण कबीरजी के ज्ञानसम्बोधनकी साखी ॥ पाप पुण्य फल दोय, सबै समर्पै समरथै । निज मन शक्ति न होय, मनसा बाचा कर्मणा ॥ १५७ ॥

हीरा वही सराहिये, सहै घननकी चोट ॥
कपटकुरङ्गी मानवा, परखत निकसा खोट १५८

हीरा जो है साहब का ज्ञान सोई सराहा जायहै जो घन चोट सहै कहे नानामत करि कै कोई बादी खण्डन न करिसकै व मानुष जे कपट कुरङ्गी कहे हरिणी ह्वैरहे हैं अर्थात् चञ्चल ह्वैरहे हैं सो जब घन की चोट लगी कहे गुरुवालोग आपनो मत समुझायो तब हृदय फूटिगयो साहब को ज्ञान तो जानो न रहे तामें प्रमाण कबीरजी की परिचय की साखी ॥ झूंठ जवाहिर को बनिज, तब लगि परि है पूर । जब लगि मिलै न पारखी, घने चढ़ा नहिं कूर ॥ सो या माया केरङ्गवारे मानुष परखतमें खोटही निकसै हैं ॥ १५८ ॥

हरि हीरा जन जौंहरी, सबन पसारी हाट ॥
जब आवै जन जौंहरी, तब हीरो की साट १५९

हरि जेहैं तेई हीरा हैं और जन जेहैं तेई जौंहरी हैं कहे जानन-

वारे हैं सो सब जीव हाट लगाइन लगे कहे साहब को जानन लगे ज्ञान कथनलगे गुरुवालोग आपने मत में खैंचिगये सो जब साहब के जाननवारे साहब के जनाय देनवारे साहब जन जौंहरी आये तब सबके मत खगडन करि हरि हीरा के समीप कनी जे जीव तिनको पहुँचाय देतभये अर्थात् जीवन को या जनाय दिये कि तुम साहबके हो साहब में लगौ या हीरा के साटको अर्थ है और मतन में परे जनन मरण न छूटैगो ये कनफुक्का संसारही को लै जायगो तामें प्रमाण "कनफुक्का गुरु हद्दका, बेहदका गुरु और ॥ बेहद का गुरु जो मिलै, तब पावै निज ठौर ॥ १५६ ॥

हीरा तहां न खोलिये, जहँ कुँजरों की हाट ॥
सहजै गांठी बांधिकै, लगी आपनी बाट १६०

जहां कुँजरों की हाट है तहां हीरा न खोलिये काहे ते कि वे भांटा खीरा के बेचनवारे हीरा को भेद कहाँ जानै अर्थात् जहां आपने आपने मतमें काउ काउ करि रहे हैं तहां साहब के ज्ञान-रूपी हीरा न खोलिये साहब में मन लगाये एकान्त बैठि रहिये यही आपने बाट में लगे रहिये ॥ १६० ॥

हीरा परा बजार में, रहा छार लपटाय ॥
बहुतक मूरख चलिगये, पारिखलियाउठाय १६१

हीरा जो है रामनाम सो बजार में परा है कहे सब संसार के लोग कहैहैं छार में लपटाय रह्यो है अर्थात् नानामत रामनाम हीते निकसे हैं व सब मत रामनामही ते सिद्ध होय हैं या नहीं जानैं ऐसे जे मूरख ते संसार बजार में चलिगये न लीन्हे सो जाते साहबको ज्ञान होय है ऐसो रामनाम हीरा ताके जे पारखी रहे ते रामनाम को जानिकै साहब को पहिंचानिकै मुक्त ह्वैगये सो येही रामनाम को लैकै सब साहबको जान्यो है तामें प्रमाण॥ "रामको नाम चौमुक्तिका मूलहै निगम निचोर रसतत्त्व छानी। राम को नाम षटशास्त्र में मथलिया राम षटदर्शमें है कहानी ॥

रामको नाम लै ध्यान ब्रह्मा किया ररंकारै धुनि सुनीमानी । कहैं कब्बीर अवगाह लीला बड़ी रामको नाम निर्बाणबानी । रामको नाम लै बिष्णुपूजा करैं रामको नाम शिवयोग ध्यानी । रामको नाम लै सिद्धसाधक जियो जियो सनकादिनारदहु ज्ञानी । रामको नाम लै रामदीक्षा लिया गुरू बाशिष्ठमिलि मन्त्रदानी । रामको नाम लै कृष्णगीता कथी पथी पारत्थ नहिं मर्म जानी ॥१६१॥

हीरा की ओबरी नहीं, मलयागिरि नहिं पाँति ॥
सिंहनके लेहड़ा नहीं, साधु न चलैं जमाति १६२

सबको मालिक साहब एकही है और साहब के जाननवारे बिरले साधु हैं जे रामनाम को जपै हैं वे सब साधुन के शिरमौर हैं तामें प्रमाण "साधु हमारे सबखड़े अपनी अपनी ठौर ॥ शब्दबिबेकी पारखी सो माथे को मौर" तामें या दृष्टान्त है जैसे मलयागिरि चन्दन एक है सिंह एक है तैसे हीरा जो रामनाम है तेहिते साहब को ज्ञान होय है सो एकही है और ताके जानन-वारे साधु एकही हैं वे जमाति में नहीं चलै हैं ऐसे तो सब साधुही कहावै हैं और रामनाम बस्तु खोयकै और में लागै हैं ते गँवार हैं तामें प्रमाण "वह हीरा मति जानिये, जेहिलादै बन-जार ॥ यह हीरा है मुक्ति को, खोये जात गँवार ॥ १६२ ॥

अपने अपने शीशकी, सबन लीन है मानि ॥
हरिकी बात दुरन्तरी, परी न काहू जानि १६३

जौन जाको मत नीक लाग्यो सो तौनेन मतको शीश चढ़ाय मानि लीन्ह्यो हरिकी जो दुरन्तरी बात है सबते दूर कहे परे सो काहू को न जानिपरी कि सबके रक्षक साहबै हैं ॥ १६३ ॥

हाड़ जरैं जस लाकड़ी, तनवा जरै जस घास ॥
कबिरा जरै सो रामरस, जस कोठी जरै कपास १६४

कबीर जे जीव हैं तिनके रामरस जो है रामभक्ति सो कैसे उनके अन्तःकरण में जरै है जैसे कोठी में कपास भितरै जरै है

याही ते उनके हाड़बार लकड़ी घास की नाईं जरै हैं ॥ १६४ ॥

घाट भुलाना बाट बिन, भेष भुलाना कानि ॥
जाकी माड़ी जगतमा, सो न परा पहिचानि १६५

घाट कहे सत्संग बाट जो है बिचार ताके बिना भूलिगयो अर्थात् साहब को तो जान्यो न अपनेही को ब्रह्म मानन लग्यो बिचार भूलि गयो सत्संग काहे को करै आपने गुरुवन की कानि मानि भ्रमवारे मत न छाड़त भये भेषवारे साधु सब भुलायगये सो जाकी माड़ी कहे माया जगत् में पूरि रही ऐसे जो साहब सो न पहिचानि पर्यो माड़ी माया में भूलिगये ॥ १६५ ॥

मूरुख सों क्या बोलिये, शठ सों कहा बसाय ॥
पाहन में क्या मानिये, चोखा तीर नशाय १६६

मूरुख कौन कहावै है कि साधुन के समुझायेते सूझै परन्तु बूझै नहीं है तासों क्या बोलिये शठ कौन कहावै है कि चाहै नीको कोऊ बनावै परन्तु छाड़ै न हठ कीन्हे वाही में लाग रहे जौन गुरुवा लोग पहिले बतायनि है चाहै कू गैमा गिरिपरै पै छाड़ै न सो ऐसे लोगनते कहा बसाय उनको ज्ञान दीन्हे ज्ञानौ खराब होयगो पाहन के मारे तीरही टूटैगो शठ मूरुख नहीं समुझै तामें प्रमाण "पानी को पाषाण, भींजै तौ बेधै नहीं ॥ त्यों मूरुख को ज्ञान, सूझै तौ बूझै नहीं" ॥ १६६ ॥

जैसे गोली गुमज की, नीचपरे ढुरिजाय ॥
ऐसे हृदया मूर्ख के, शब्द नहीं ठहराय १६७

जैसे गुम्बज में जो गोली मारिये तौ ऊँचे परे ढरकिजाय है ऐसे मूरुख के हृदय में शब्द रामनाम केतौ उपदेश करिये परन्तु ठहराय नहीं है एक घरीभर तो ज्ञान रह्यो फिरि ज्यों को त्यों ह्वै गयो ॥ १६७ ॥

ऊपर की दोऊ गईं, हिय की गईं हेराय ॥
कह कबीर चारिउ गईं, तासों कहा बसाय १६८

ऊपर की आँखिन ते या देखे हैं कि साहब को भजिकै हनुमानादिक अजर अमर ह्वैगये जिनकी पूजा देवता करै हैं सब सिद्धि को प्राप्त हैं काल, शुक्र, विष्णु सबते अधिक हैं और हिये की आँखिन ते देखे हैं कि हाथिन को पति ऐरावत है पक्षिन को पति गरुड़ है भक्तन में महादेव पति हैं मनुष्यन में भूपति है ऐसे सब ईश्वरन के मालिक श्रीरामचन्द्र हैं तिनको नहीं भजन करैहै सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि जाकी भीतरौ बाहर की आँखि फूटिगई तासों कहा बसाय ॥ १६८ ॥

केते दिन ऐसे गये, अनरूचे को नेह ॥
बोये उसर न ऊपजै, जो घन बरसैं मेह १६९

जैसे ऊसर में बोवै घन बहुतौ बरसैं परन्तु जामै नहीं है तैसे निराकार धोखा में लग्यो फल कछू न हाथ लग्यो वातो कुछ वस्तु ही नहीं है अनरुचे को नेह है अर्थात् या बड़ी प्रीति कियो वातो प्रीतिही नहीं करै ॥ १६९ ॥

मैं रोऊं सब जगत को, मोको रोवै न कोइ ॥
मोको रोवै सो जना, जो शब्द बिबेकी होइ १७०

साहब कहैहैं कि मैं सब जगत् पर दया करिकै रोऊं हौं कि मेरो अंश जीव मोको भूलिगयो ताते जगत् में जनन मरणरूपी दुःख सहै है और जीव मोको नहीं रोवै है कि हम अपने मालिक को भूलिगये नाना मालिक मानि नाना दुःख पावैहैं सो मोको सो जन रोवै है जो शब्द जो रामनाम ताको विवेकी होय कि रकार के समीप मकार शोभित होइहै मैं साहब को हौं ॥ १७० ॥

साहब साहब सब कहैं, मोहिं अँदेशा और ॥
साहबसों परिचय नहीं, बैठेगा केहि ठौर १७१

कबीरजी कहै हैं कि साहब साहबतो सबजीव कहै हैं अर्थात् आपने आपने इष्टदेवता को सबते परे कहै हैं कि येई सबके मालिक हैं सो येतो सब एक एक मालिक बनाये हैं पै मोको या

और अन्देशा है कि जौन रामनाम साहब को बतावै है तौने राम-नाम को जानि साहब ते परिचय तो करिबै न किये ये कौने ठौर बैठैंगे काके पास जायँगे अर्थात् जनन मरण न छूटैगो ॥१७१॥

जिव बिन जिव बाचै नहीं, जिवका जीव अधार ॥
जीव दयाकरि पालिये, पण्डित करहु बिचार १७२

या जीव बिना जीव कहे सतगुरु बिना नहीं बाचै है जीवको जीव जो सतगुरु है सोई आधार है सो जीवपर दया करि अर्थात् सतगुरु के शरण ह्वै जीव उद्धारकरो हे पण्डित! तुम बिचार कर देखो तो बिना सतगुरु संसार पार न होउगे ॥ १७२ ॥

हम तो सबही की कही, मोको कोइ न जान ॥
तबभीअच्छाअच्छाअबभी, युगयुगहोहुनआन १७३

साहब कहै हैं कि हमतो सबके अच्छे की कही जाते काल ते बचिजायँ परन्तु मोको कोई न जानत भयो सो तब भी अच्छा है अब भी अच्छा है काहेते कि युग युग में मैं आन नहीं होउँहौं वही वही बनोहौं जो अबहूं मोको जानै तौ मैं कालते बचाय लेउँ तामें प्रमाण गोसाईंजी को (दोहा) "बिगरी जन्म अनेक की, सुधरै अबहीं आज ॥ होय रामको राम जपि, तुलसी तजि कुसमाज" और कबीरजीने कह्यो है "कह कबीर हम युग युग कही। जबहीं चेतो तबहीं सही ॥ १७३ ॥

प्रकट कहौं तौ मारिया, परदा लखै न कोइ ॥
सहना छपा पयारतर, को कहि बैरी होइ १७४

श्रीकबीरजी कहैहैं कि जो मैं प्रकट कहौ हौं कि तुम साहब के हो और के नहीं हो तो मारन धावै है अर्थात् वाद विवाद करै है और जो परदे सों कहौ हौं तो कोई समुझतै नहीं है काहेते नहीं समुझै है कि सहना जो है मन जौन संसार को रचिलियो है सो शरीर जो पयार तामें छपा है साहब को नहीं जानन देइ है पयार शरीर याते कह्यो कि सार जो साहब को ज्ञान सो

निकसिगयो है सो याको कहिकै बैरीहोइ ब्रह्मबादिनते और सहना वो कहावै है जो सरकार ते पयादा आवै है सो ब्रह्म माया के साथ या मन आयो है साहब का ज्ञान छिदेहै साहब को जानन नहीं देइहै या मनहीं सब संसार रचिलियो है तामें प्रमाण कबीरजी को पद " सन्तो या मन है बड़ जालिम । जासों मनसों काम परो है तिसही ह्वैहै मालुम । मन कारण की इनकी छाया तेहि छाया में अटके । निरगुण सरगुण मनकी बाजी खरे सयाने भटके ॥ मनहीं चौदहलोक बनाया पाँचतत्त्व गुण कीन्हे । तीनिलोक जीवनबश कीन्हे परे न काहू चीन्हे ॥ जो कोउ कहै हम मनको मारा जाके रूप न रेखा । छिन छिन में केतनौ रँग ल्यावै जे सपनेहु नहिं देखा ॥ रासातल यकईश ब्रह्मगडा सबपर अदल चलावै । षटरस में भोगी मनराजा सो कैसे कै पावै ॥ सबके ऊपर नाम निरच्छर तहँ लै मनको राखै । तब मनकी गति जानि परै यह सत्यकबिरमुख भाखै " ॥ १७४ ॥

देश बिदेशन हौं फिरा, मनहीं भरा सुकाल ॥
जाको ढूंढ़त हौं फिरौं, ताको परा दुकाल १७५

देश कहे संसार बिदेश कहे ब्रह्म तौनेमें फिरा है सो ये दूनों माया को सुकाल भरा है अर्थात् वह ब्रह्म मनहीं को अनुभव है व संसार मनहीं को कल्पना है जौन बस्तुको मैं ढूंढ़त फिरौं हौं जो मन बचन के परे है ताको दुकाल पर्यो वा न ब्रह्म में है न संसार में है ॥ १७५ ॥

कलि खोटा जग आँधरा, शब्द न मानै कोइ ॥
जाहि कहौं हित आपना, सो उठि बैरी होइ१७६

जगत् तो आँधरा है ज्ञानदृष्टि याके नहीं है कुछु समुझै नहीं है तौने में या कलि खोटा प्राप्त भयो सो जाको शब्द जो राम नाम मैं बताऊँ हौं सोई बैरी होइ है कहे शास्त्रार्थ करै है मानै नहीं है ॥ १७६ ॥

मसि कागद तो छुयो नहिं, कलम गही नहिं हाथ ॥
चारिहु युगमाहात्म्य जेहि, करिकै जनायो नाथ १७७

गुरुमुख ॥ चारिउ युग में है माहात्म्य जिनको ऐसे जे नाथ रघुनाथ हैं तिनको कबीरजी सबको जनायो न कलम गही न कागद लियो न मसि लियो मुखहीते कह्यो येतो सरल करिकै कह्यो कि जामें एकौ साधन न करनपरै सो साहब कहैहैं कि जो मोको जानिलेइ तो संसार ते तरिजाय जो कहो कबीरजी मुखही ते कह्यो है ग्रन्थ कैसे भये हैं तो कबीरजी कहते गये हैं शिष्यलोग लिखते गये हैं ॥ १७७ ॥

फहमै आगे फहमै पाछे, फहमै दहिने डेरी ॥
फहमै पर जो फहम करत है, सोई फहमहै मेरी १७८

गुरुमुख ॥ फहम जो है ज्ञानस्वरूप ब्रह्म सोई आगे है सोई पाछे है सोई दहिने है सोई डेरी कहे बांयें है अर्थात् सर्वत्र पूर्ण है सो यह जो फहम है ज्ञानस्वरूप ब्रह्म तौने के ऊपर ब्रह्म याहू के परे साहब है फहम करै है कि वह ज्ञानरूप उनहींको प्रकाशहै याहूके परे साहबहै तौन फहम मेरी है कहे वह ज्ञान मेरोहै॥ १७८॥

हद चलै सो मानवा, बेहद चलै सो साध ॥
हद बेहद दोनों तजै, ताको मता अगाध १७९

हद जो चलै है सो मानवा है कहे उनको मान कहे प्रमाण है अर्थात् जो जौने देवता की उपासना कियो सो तौने देवता के लोक गये वाको वहै भर प्रमाण है उतने ज्ञान होइहै और जे बेहद चले हैं ब्रह्म में लगे हैं ते साधु हैं जो ब्रह्म को साधन करिकै सिद्धि करिलेइ सो साधु सो हद जो है सगुणसंसार और बेहद जो है निर्गुण ब्रह्म ये दोनों को जे तजिकै निर्गुण सगुण के परे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र के सेवक ह्वैरहे हैं ऐसे जे रामोपासक हैं तिनहीं के मत अगाध हैं ॥ १७९ ॥

समुझैकी गति एक है, जिन समुझा सब ठौर ॥

कह कबीर जे बीचके, बलकहि औरै और १८०

जे रामोपासक निर्गुण सगुणको समुझिकै ताहूते परे साहबको जान्यो तिनकी गति एक है कहे एक साहबही को सबठौर निर्गुण सगुण में समुझै हैं कबीरजी कहैहैं कि जे बीच के हैं ते और और उपासना करै हैं और और ज्ञान करै हैं और आपने आपने देवतनमें बलके हैं कि येई सबके मालिक हैं ॥ १८० ॥

राह बिचारी का करै, पथिक न चलै बिचारि ॥
आपन मारग छोड़िकै, फिरहिं उजारि उजारि १८१

पथिक जो बिचारिकै न चलै तो राह बिचारी कहाकरै वेद, पुराण, शास्त्र येई सब राहै हैं तिनको तात्पर्य यही है यह जीव साहब को अंश है उनहीं के जाने संसार ते छूटै है सो रामनाम को जपिकै साहबको हेरहै यह जो है आपनो मारग तौने को छोड़िकै उजारि उजारि कहे कोई ब्रह्ममें कोई ईश्वरमें कोई नाना देवतन की उपासना में फिरै हैं सो उनके जनन मरणरूप कण्टक लागिबोई चाहैं नरकरूप खोह गिरै चाहै और जीव साहब को अंश है तामें प्रमाण "ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः" और ब्रह्ममाया ईश्वर जगत् इनको बिचार करै तो भ्रममात्र है कछू इनते जीवको उद्धार नहीं होय है तामें प्रमाण "ब्रह्मजीव ईश्वर जगत,ई सब अनमिल सैन ॥ निरबाहे ठहरै नहीं, भाषत भाई बैन ॥ १८१ ॥

मूआ है मरिजाहुगे, बिन शर थोथे भाल ॥
परे कल्हारे बृक्षतर, आजु मरै की काल १८२

अरे जीवो ! तुम केतनौ बार मरत आये हौ व मरिजाउगे बिना शर काहेते कि तुम्हारे भाले में थोथे लिखे हैं बिना फल के बाणसों तुम यहि संसारबृक्ष तरे जो बोलते बताते हौ सो परे कल्हारते हौ आजु मरिजाउ कि कालिह मरिजाउ वादा कछू नहीं है ॥ १८२ ॥

बोली हमारी पूर्ब की, हमें लखा नहिं कोइ ॥
हमको तो सोई लखै, घर पूरुब का होइ १८३

हमारी जो पूर्वकहे पहिले की बोली जो साहब को रूप उपदेश करि आये जीवको स्वरूप बताय आये सो कोई नहीं लखै है न हमको लखै है सो हमारी बाणी को तो सोई लखैहै जो कोई पूरुब को कहे शुद्धजीव ह्वै जाय जस पूर्बही रह्यो है॥१८३॥

जेहि चलते रबद परा, धरती होइ बिहार ॥
सोइ साउज घामें जरै, पण्डित करो बिचार १८४

जेहि जीव के चलत कहे निकसत में यह शरीर रबदे कहे धूरि में मिलिजाय है पुनि वहै जीव जो कहूं अवतरै है तब यहै शरीर को पाइकै धरती में विहार करैहै और वहै साउज जो है जीव सो शरीरनको पायके आधिदैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक जे तीनों ताप हैं तेई घाम हैं तिनहीं में जरै है सो हे पण्डित ! तुम बिचार करिकै असार को त्याग करायकै सार जे साहब श्रीरामचन्द्रहैं तिनको बताओ तो तीनों तापते जीव छूटै॥१८४॥

पायँन पुहमी नापते, दरिया करते फाल ॥
हाथन परबत तौलते, तेहि धरि खायो काल १८५

जे हाथनते पर्वत तौलतेरहे व पायँन ते पुहुमी नापते रहे व समुद्र को एक फाल करतेरहे हिरण्याक्षादिक तिनहूं को काल धरिखायो ॥ १८५ ॥

नव मन दूध बटोरिकै, टिपका किया बिनाश ॥
दूध फाटि कांजी हुआ, भया घीवका नाश १८६

नव मन कहे नवीन नवीन जामें होते आये मन ऐसो केतौ देह धरे अब यह दूध मनुष्यशरीर पायो सो कांजी का टिपका जो धोखाब्रह्म में लागिबो ताते दूध जो मनुष्यशरीर सो कांजी भया कहे पशुतुल्य भया घीव जो साहब को ज्ञानरहै ताको नाश ह्वै गयो ॥ १८६ ॥

केत्यो मनावैं पायँपरि, केत्यो मनावैं रोइ ॥
हिन्दू पूजैं देवता, तुरुक न काहुक होइ १८७

श्रीकबीरजी कहै हैं कि केतन्यो हिन्दू ते देवतन के पायँ परि मनावै हैं कि हमारी मुक्ति ह्वैजाय और नाना देवतन को पूजते हैं व केतन्यो जे मुसल्मान तिनको हाल आवती है और साहब के इश्कमें रोवते हैं व मानते हैं कि साहब बेचून बेचिगून बसुवा बेनिमून निराकार हैं सो जे देवतन को मनावते हौ पायँ परिकै तिनहीं की मुक्ति नहीं भई तिहारी मुक्ति कैसे होयगी देवता तो सब सगुणहैं विष्णु सतोगुणी के ब्रह्मा रजोगुणी के रुद्र तमोगुणीके अभिमानी हैं मुक्त नहीं भये तो तुमको कैसे मुक्त करेंगे सो जौन तीनौं देवतनको अधिकार दिये हैं सबको मालिक श्रीरामचन्द्र तिनको भजनकरु तब मुक्ति पावैगो और हे मुसल्मानौ! तुम निराकार तो मानो हौ इश्क काकेपर करौ हौ सो जो साहब को रूप न मानौगे तो इश्क तुम्हारा झूठा ठहरि जायगा ताते बिचारौ तो साहब रूप न होता तो मूसा पैगम्बर को छिगुनी कैसे देखावता ताते उसके रूपहैं परन्तु मायाकृत पञ्चभौतिक नहीं हैं दिव्यरूप हैं याते निराकार कहै हैं सगुणनिर्गुण के परे जो साहब श्रीरामचन्द्र ताको बन्दाहोउ आपनेको जो मालिक मानौगे तो बड़ी मार सहौगे तामें प्रमाण "स्वामी तो कोई नहीं, स्वामी सिरजनहार ॥ स्वामी ह्वै जो बैठिये, घनी परैगी मार १" और साहब निर्गुण सगुणके परे हैं तामें प्रमाण "सगुणकी सेवाकरो, निर्गुण का करु ज्ञान । निर्गुण सर्गुणके परे, तहैं हमारा ध्यान" ॥ १८७ ॥

मानुष तेरा गुण बड़ा, मांस न आवै काज ॥
हाड़ न होते आभरण, त्वचा न बाजन बाज १८८

हे मानुष! जो तैं देहको अभिमान करैहै सो नाहक करैहै यह देह तेरी कौने काम की है तेरो मांस काम नहीं आवै कोई नहीं खाय है हाड़न के आभरण नहीं होते हैं त्वचा के बाजन नहीं

बाजते हैं सो तेरे एक गुण है या देहते साहब मिलते हैं सो मि-
लिबे की यतनकरु ॥ १८८ ॥

जौलगिढोलातौलगिबोला, तौलगि धन व्यवहार ॥
ढोला फूटा धन गया, कोई न झांकै द्वार १८९
सबकी उतपति धरणि में, सब जीवन प्रतिपाल ॥
धरती न जाने आपगुण, ऐसा गुरू दयाल १९०

एकको प्रकटै हैं एकको कहे हैं दुःख सुख नीक नागा सबकी उत्पत्ति धरती ही ते है कहे शरीरहीते है जौने ज्ञानते सब जीवन को प्रतिपाल है ऐसे ज्ञानको तू जान अपने गुण को धरती जो शरीर ताको न मानु तो पांचो शरीर ते बाहिरे हैं ऐसे गुरु दयाल हैं साहब छुड़ावनवारे ताको जानु तैं अंश है साहब अंशी हैं ॥ १८९ । १९० ॥

धरती जानत आपगुण, तौ कधी न होत अडोल ॥
तिल तिल होतो गारुवा, ह्वै रहत ठिकौकी मोल १९१

धरती जो शरीर ताको धरैया जो जीव धरती सो आपनो गुण नहीं जानत कि मोमें साहब की प्राप्ति होय वो यही गुण है उत्पत्ति जो करौहौ सो साहब की शक्तिते मेरी शक्ति नहीं है तौ कधी डोल न होतो अर्थात् मनादिकन को उत्पत्ति करि संसारी न होतो शुद्धै बनो रहतो धरती जीव आपनो गुण कहा जानै जो आपनो गुण साहब को प्राप्त होइबो जानतो तो तिल तिल में गरुई होत जातो कहे तिल तिल वह ज्ञान बाढ़तो और ठीक जो है शुद्ध साहब के जनैया जीवात्मा ताके मोल ह्वै जातो कहे यहौ अमर ह्वैजातो जे साहब सों मेल किये रहे हैं शरीरहू सांच ह्वैजाय है तामें प्रमाण "जाकी सांची सुरति है, सांची साखी खेल । आठपहर चौंसठघरी, है साहब सों मेल ॥ १९१ ॥

जहिया किरतिम ना हता, धरती हता न नीर ॥
उतपति परलय ना हती, तब की कही कबीर १९२

कबीरजी कहै हैं कि जब ये रहबै नहीं भये तबकी कहैहैं॥१६२॥

जहांबोलअक्षरनहिंआया । जहँअक्षरतहँमनहिंदृढ़ाया॥
बोलअबोलएककहैसोई । जिनयालखासोबिरलाहोई १६३

जहां बोल जो शब्द भया तहां अक्षर आपही जाय है जब अक्षर भया तब मन दृढ़ावही करैहै कहे मनकी उत्पत्ति होतही है सो तब तो आकाश ही नहीं रह्यो शब्द कहांते निकसा सो प्रथम जो बाणी रामनाम लैकै उचरी सो अबोल है कहे अनिर्बचनीय है सोई कहे तौनै जो है रामनाम सोई बोल है कहे वहीते सब अक्षर निकसे हैं सो वही अबोल है कहे अनिर्बचनीय है सो यह बात कोई बिरला जानै है काहेते कि जब कुछु नहीं रहै तब एक साहबही रहे हैं तिनहीं ते सबकी उत्पत्ति भई है वह तो सबको मूल है वाको कोई कैसे कहिसकै जब यह साहब को ह्वै जाय और आशा छोड़देइ तब साहब ही प्रसन्न ह्वैकै सब बनाय लेइ हैं तामें प्रमाण साहब की उक्ति । "जानै सो जो महीं जनाऊं । बांह पकरि लोकै पहुँचाऊं ॥ यहै प्रतीति मानु तैं मेरी । यह सुयुक्ति काहू नहिं हेरी ॥ सत्य कहौं तोसों मैं टेरी । भवसागर की टूटै बेरी" ॥ १६३ ॥

जौलौं तारा जगमगै, तौलौं उगै न सूर ॥
तौलौं जिय जग कर्मबश,जौलौं ज्ञान न पूर १६४

जौलौं सूर्य नहीं उगै हैं तौलगि तारा जगमगाय है ऐसे जौलौं साहब को पूरो ज्ञान नहीं होय है तौलौं जीव नानाकर्मन के बश ह्वै नानामतन में लागै है जब जीव साहबको जान्यो और साहब को ह्वैगयो तब साहबै अपनो ज्ञान देय हैं कर्म छूटिजाय है ॥ १६४ ॥

नाम न जानै ग्रामको, भूला मारग जाय ॥
काल गड़ैगा कांटवा, अगमनकसनखोराय १६५

अरे साहब के तो नगर को नामही नहीं जानै है औरे मतन

मारग में काहे भूलाजाय है यह कालरूप कांटा तेरे गड़ैगा काल तोको मारिडारैगा तेहिते अगमन कहे आगे वह खोरि कहे राह में आवै जेहिते कालते बचिजाय ॥ १६५ ॥

संगति कीजै साधुकी, हरै और की व्याधि ॥
ओछी संगति क्रूरकी, आठौ पहर उपाधि १६६

जो साधुकी संगति करिये जे साहबको जनाय देनवारे हैं तो साहबको जानिकै और की व्याधि हरै और जो क्रूर जे असाधु तिनकी संगति करै तो आठौ पहर उपाधिही लगी रहैहै ॥ १६६ ॥

जैसी लागी औरकी, तैसी निबहै थोरि ॥
कौड़ी कौड़ी जोरिकै, पूज्यो लक्ष करोरि १६७

और ते जो थोरहू थोर साहब में लगै भक्तिकरै और तैसे छोर लों निबहि जायहै तो जो थोरऊ थोर साहब में लगै व साहबकी भक्तिकरै तो जैसे कौड़ी कौड़ी जोरे केतो करोरि ह्वै जायहै ऐसे वाकी भक्ति हू ह्वै जायहै अनेक जन्म के संसिद्धते मुक्त ह्वै जायहै ॥ १६७ ॥

आजु कालिह दिन एकमें, अस्थिर नहीं शरीर ॥
केते दिनलौं राखिहौ, काचे बासन नीर १६८

आजु कालिह यहि कलिकाल में एकौ दिनमें शरीर स्थिर नहीं है केतनी बेर धौं शरीर छूटिजाय आगे तो प्रमाण रह्यो है कि येती आयुर्दाय मनुष्यकी है अबतो कछू प्रमाणै नहीं है केती बेर शरीर छूटिजाय तेहिते साहबको भजन करो कच्चे बासन शरीर में केते दिन नीर राखौगे ॥ १६८ ॥

करु बहियां बल आपनी, छाड़ु बिरानी आस ॥
जाके आंगन नदीहै, सो कस मरै पिआस १६९

अरे और और मतन में जो लगै है तिनमें न लागु बिरानी आशा छोड़िदे तैं काहू के छुड़ाये न छूटैगो आपनी बहियां को बलकरु तेरे उद्धार करिबेको तेरी बहियां श्रीरामचन्द्र हैं सो आगे

कहिआये हैं कि मोटेकी बाँहले और जाके आँगन में नदिया है सो का पिआसन मरैहै तेरा तो साहब ऐसो रक्षक बनोहै तैं काहे साहब को भूलि और और मतन में लगैहै ॥ १९९ ॥

बहुबन्धनते बाँधिया, एक बिचारा जीव ॥
काबल छूटै आपने, जो न छुड़ावै पीव २००

कबीरजी कहै हैं कि ये बिचारे जीव ते बहुत बन्धन ते बँध्यो है बहुत गरीब हैं सो जो तैं आपने बिचारते छूटा चाहै तो तैं न छूटैगो बिना श्रीरामचन्द्र के छोड़ाये वोई तेरे पीउ हैं उनकी या प्रतिज्ञा है कि जो एकहू बार मोको जीव गोहरावै तो मैं वाको छुड़ाय लेवहौं ताते तैं साहब की शरण जाय जाते संसारते छूटि जाय जे साहब की शरण जाय हैं ते कालहू के माथ पै लात दै चले जाय हैं तामें प्रमाण कबीरजीको "कालके माथे पगधरी, सतगुरु के उपदेश ॥ साहब अङ्क पसारिकै, लैगे अपने देश १ गगनमँडल दृग महल में, है घाटी के ईश ॥ नामलेतहंसाचले, काल न बाचै शीश" २ और जे—रामनाम नहीं लेइ हैं ते नहीं मुक्त होइहैं तामें प्रमाण "यह औतार चेतो नहीं, पशु ज्यों पाली देह। रामनाम जान्यो नहीं अन्तपरा मुख खेह" ॥ २०० ॥

जिवमति मारहु बापुरा, सबका एकै प्राण ॥
हत्या कबहुँ न छूटि है, कोटि न सुनै पुराण २०१
जीवघात ना कीजिये, बहुरिलेत वह कान ॥
तीरथ गये न बाचिहौ, कोटि हिरा दे दान २०२
तीरथगये तु तीन जन, चितचञ्चल मन चोर ॥
एकौ पाप न काटिया, लादे दशमन और २०३
तीरथगये ते बहुमुये, जूड़े पानी न्हाय ॥
कहकबीर सन्तो सुनो, राक्षस ह्वै पछिताय २०४

याके अर्थ स्पष्टई है २०१ । २०२ । २०३ ॥ तीर्थ में जे

जाय हैं ते तीर्थ के जूड़े पानी में नहाय के बहि मुये कहे खराब है मुये काहे ते कि जौन तीर्थ जावे नहावे की बिधि है सो एकौ न किये काहूको धक्का माखो काहू पै कोप कियो सो कबीरजी कहै हैं कि हे सन्तो सुनो ते नर राक्षस होइकै पछिताय हैं कि हमसों न बनी ॥ २०४ ॥

तीरथ भै बिषबेलरी, रही युगन युग छाय ॥
कबिरन मूल निकन्दिया, कौन हलाहल खाय २०५

तीरथ कहे तीन हैं रथ जाके सत रज तम ऐसी जो त्रिगुणात्मिका माया सो विष बेलरी भै चारिउ युग में छायरही है कबिरन मूलनिकान्दिया कहे मूल जो रामनाम है ताको कबिरा जे जीव हैं ते निकान्दिया कहे न ग्रहण करते भये जो कोई कहबौ करै ताहू को खण्डि डारतभये सो या नाना कुमतिरूप हलाहल खाय जीव क्यों न नरकै जाय जावेही चाहै ॥ २०५ ॥

हे गुणवन्ती बेलरी, तवगुण बरणि न जाय ॥
जर काटे ते हरिअरी, सींचेते कुँभिलाय २०६

हे गुणवन्ती बेलरी माया बाणी तेरो गुण बरणि नहीं जाय है कहांलौ बर्णन करैं जब तेरी जर काटन चलै हैं तीर्थ करिकै "अहं ब्रह्मास्मि" कैकै तो अधिक हरिअरी होय है महीं ब्रह्म हौं या अभिमान बढ़थो अधिक हरिअरी भई तामें प्रमाण "कुशलाब्रह्मवार्तायां वृत्तिहीनाः सुरागिणः । तेपि यान्ति तमो नूनं पुनरायान्ति यान्ति च ॥ २०६ ॥

बेलिकुढंगी फलबुरो, फुलवाकुबुधिबसाय ॥
मूलबिनाशी तूमरी, सरोपात करुआय २०७

यह मायारूपी जो बेलि है सो कुढंगी है काहेते कि याको दुःखरूपी फल बुरो है और कुबुधि जो है सोई फूलहै वाकी नाना वासना जे हैं सोई बास बसाय है सो या मूल बिनाशी है अर्थात् मिथ्या है याको मूल नहीं है आपही ते उत्पत्ति भई है और जेते

भरमायिक पदार्थ हैं ते पात हैं तिनमें सबमें करुआई है अर्थात् साँचे सुख नहीं हैं ॥ २०७ ॥

पानी ते अतिपातला, धूआँ ते अतिझीन ॥
पवनहुँते अतिऊतला, दोस्त कबीराकीन २०८

पानिहुँते पातर धूमौं ते झीन और पवनौंते चञ्चल ऐसो जो क्षुद्रमन ताको कबीरा जे जीव ते दोस्त किये हैं सो चौरासी लक्ष योनिमें डारिदियो ॥ २०८ ॥

सतगुरुबचनसुनोहोसन्तो, मति लीजैशिरभार ॥
होहजूरठाढ़ाकहौं, अबतें समर सँभार २०९

साहब कहै हैं सतगुरु जो कबीर तिनको बचन सुनिकै हे सन्तो! आपने में मनको भारा मति लेहु तुमसों समर ह्वैरह्यो है सो मनको जीतिलेहु मैं हजूर में ठाढ़ कहौ हौं अर्थात् दूरि नहीं हौं जो तुम मनको जीतो तो मैं अपनाय लेहुँ ॥ २०९ ॥

ये करुआई बेलरी, औ करुवा फल तोर ॥
सिन्धुनाम जब पाइये, बेल बिछोहा होर २१०

हे कल्पनारूप बेलि! तेरा फल बहुत कड़ुवा है जो कल्पना करै है सो नरकही को जाय है सो तब सिन्धुनाम पावैगो जौने जगत् मुख अर्थ वेद शास्त्र माया ब्रह्मजीव सब जगत् भरो है तौनेको जब पावैगो तब साहब मुख अर्थ जानिकै साहब रत्नको पावैगो तब कल्पना बेलि को बिछोह ह्वै जायगो ॥ २१० ॥

परदे पानी ढारिया, सन्तो करहु बिचार ॥
शरमीशरमापचिमुया, कालघसीटन हार २११

गुरुमुख ॥ परदे ते पानी ढारिया कहे गुरुवालोग नयेमन्त्र बनायके परदे परदे उपदेश कियो और सिखापन दियो कि काहू सों कहियो नहीं सब वेद शास्त्र झूठे हैं जीवात्मै सत्य है ताही मानो या समुझायदियो सो वही धरे धरे जीव नरकको गये जो

साँचो रामनाम है ताको न जान्यो वही गुरुवन को बतावो मन्त्र ताहीके भरोसे सब पूजापाठ धर्म कर्म सब छांड़िदियो कहै हैं हम निष्कर्म हैं सो यह बात पूछो तो कि भगवान् पूजादिक ये कर्मन में नहीं हैं तामें प्रमाण कबीरजीको "और कर्म सबकर्महैं, भक्ति कर्म निष्कर्म। कहै कबीर पुकारिकै, भक्ति करौ तजि भर्म" सो देखो तो भाजी के लिये तो बाजारमें मूड़ फोरै हैं भगवान् की भक्ति करिबेको कहै हैं हम निष्कर्म हैं पिसानके चौक डारि मालपुवा धरिकै चौका करै हैं आरती करै हैं भगवान्‌की आरती करिबे को कहहैं हमहीं मालिक हैं हमारी आरती सबजने करते जाउ सो हे सन्तो! बिचारते तो जाउ यह आपने शरमा शरमी में पचिमुवा है या कहै हैं कि हम गुरुवन को उपदेश न छांड़ैंगे या नहीं जानै हैं कि या शरम में हमको व हमारे गुरुवौंको यम घसीटि डारैंगे नरकमें डारि देयहैं तब मालिक ह्वैकै न बचौगे तब कौन रक्षाकरैगो साहबको तो जानबै न कियो और जिन साहब को जान्यो है हनुमान् अङ्गद कबीरते अबलौं बने हैं तेहिते साहब को भजन करो जेहिते कालते बचिजाउ नहीं तो शरमा शरमी में नरकमें पचिमरौगे और तुम भगवान्‌को नहीं मानौहो भगवान्‌के पाछे नहीं चलौहौ सो ब्रह्मराक्षस होइगो तामें प्रमाण "नानुव्रजति यो मोहाद्व्रजन्तं जगदीश्वरम्। ज्ञानाग्निदग्धकर्मापि स भवेद् ब्रह्मराक्षसः" (इति पुरुषोत्तममाहात्म्ये) और सब झूठा है साहब को भजन साँचा है तामें प्रमाणकबीरजीको "कञ्चन केवल हरिभजन, दूजो कथाकथीर॥ झूठा या जञ्जालतजि, कपरासाँच कबीर १ जो रक्षक है जीवको, नाहिं करो पहिंचान। रक्षक के चीन्हे बिना, अन्त होइगी हान" ॥ २ ॥ तेहिते तुम साहब को भजन करो जाते साहब के लोकै जाउ जहां काल की गम्य नहीं है तामें प्रमाण "जहां कालकी गमि नहीं, मुआ न सुनिये कोइ ॥ जो कोइ गमि ताको करै, अजर अमर सो होइ १ साहब ते विमुख करनवाले गुरुवा लोग यमदूत हैं तामें प्रमाण ॥ नानारूपधरा दूता जीवानां ज्ञान-

हारकाः । कालाज्ञां समनुप्राप्य विचरन्ति महीतले" २ और कबीरजी चौका में रघुनाथजी की पूजा षोड़शही प्रकार की लिख्यो है तामें प्रमाण ॥ अगर "चंदन घसि चौक पुरावासत सुकृतमनभावा । भरझारीचरणामृतकीन्हाहंसनकोबरतावा। पूरन मौज और रखवारा सतगुरुशब्द लखावा । लौंग लायची नरियल आरति धोती कलश लेसावा । श्वेत सिंहासन अगमअपारा सो अतिबरठहराया । छांड़लोक अमृत की काया जग में जोलहकहाया । चौरासी की बंदिछोड़ाया निरअक्षर बतलाया । साधु सबै मिलि आरति गावैं सुकृत भोग लगाया । कहै कबीर शब्द टकसारा यमसों जीव छड़ाया । पूरणमासी आदि जो मङ्गल गाइये । सतगुरुके पद परशि परमपद पाइये । प्रथमैं मँदिर झराय कै चँदनलिपाइये । नूतनवस्त्र अनेक चँदोवा तनाइये । तब पूरणगुरु के हेतु तौ आसन बिछाइये । गुरुके चरण परछालि तहाँ बैठाइये । गजमोतिन की चौक सु तहां पुराइये । गतापरनरियलधोती मिष्टान्नधराइये । केरा और कपूर तौ बहुबिधिल्याइये । अष्टसुगन्ध सुपारीलोपान मँगाइये । पलौसहित सो कलशसँवारिकै ज्योति बराइये । तालमृदङ्ग बजाइकै मङ्गलगाइये । साधुसङ्गलै आरति तबहिं उतारिये । आरति करि पुनि नरियल तबहिं भराइये । पुरुष को भोगलगाइ सखामिलि खाइये । युगयुगक्षुधाबुझाइ तो पाइ अघाइये । परमअनन्दित होइ तौ गुरुहिमनाइये । कहै कबीर सतभाय सो लोकसिधाइये" इहां पूजाके मन्त्र नहीं लिख्यो सो पुरुष सूर्यन के मन्त्रहैं ताते नहीं लिख्यो है "दशौ दिशाकरमेटै धोखा । सो कड़हारबैठहीचोखा ॥ दशौ दिशाकरलेखाजानै । सो कड़हारआरतीठानै ॥ दशइन्द्री कै पारिखपावै । सो कड़हार आरती गावै ॥ जो नहिं जानै एतिकसाजै । चौकायुक्तिकरै क्यहि काजै ॥ हिंसकारणकरहीं गुरुआई। बिगरैज्ञान जो पन्थ पराई । पदसाखी अरु ग्रन्थदृढ़ावै । बिनपारिख उत्तमघरपावै ॥ शब्द साखीसिखपारसकरहीं । होयभूतपुनिनरकाहिपरहीं ॥ बिना भेद

कड़हारकहावै । आगिलजन्मश्वान को पावै ॥ पद साखी नहिं करहि बिचारा । भूंकि भूंकि जसमरै सियारा ॥ पद साखी है भेद हमारा । जो बूझै सो उतरहि पारा ॥ जबलग पूरा गुरू न पावै । तबलग भवजल फिरि फिरि आवै ॥ पूरागुरु जो होय लखावै । शब्द निरखि परकट दिखलावै ॥ एकबार जिय परचौ पावै । भवजल तरै बार नहिं लावै ॥ शब्द भेद जो जानही, सो पूरा कड़हार ॥ कह कबीर धूमक्ष है, सोहं शब्दहिपार" ॥ २११ ॥

आस्तिकहोतोकोइनपतीजै, बिनाआस्तिकोसिद्ध ॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तो, हीरै हीरा बिद्ध २१२

कबीरजी कहै हैं कि आस्तिकमत जो मैं सबको बताऊं हौं तो कोई नहीं पतिआय हैं काहेते कि गुरुवालोगन की बाणी मानि उनको सिद्ध जानै हैं या नहीं जानै हैं कि ये आस्तिक नहीं हैं साहब को नहीं जानै हैं इनते संसार न छूटैगो साहब के जाननवारे जे साँचे साधु हैं तिनहीं ते संसार छूटै है काहे ते हीरा हीरै ते बेधि जाय है ॥ २१२ ॥

सोना सज्जन साधुजन, टूटि जुरै सौबार ॥
दुर्जनकुम्भ कुम्हारके, एकैधकादरार २१३

सज्जन साधुजन जेहैं ते सोना हैं जो सैकरनबार टूटै फिरि फिरि जुरि जायहै और दुर्जन जे हैं कुम्हार के कुम्भ कहे घड़ा जो फूटा तो फिरि नहीं जुरैहै अर्थात् जो साधुजन कहूं मार्ग में भूलिहू जायँ परन्तु फिरि समझाये वाही में लागिजाय हैं खोटी राह छांड़िदेइहैं और दुर्जन जे हैं ते घड़ासे फूटिजाय हैं अर्थात् जौने कुसंगमें परे तौनेहीके भये फिरि नहीं बूझै हैं ॥ २१३ ॥

काजरकेरी कोठरी, बूड़न्ता संसार ॥
बलिहारीतेहिपुरुषकी, पैठिकैनिकसनहार २१४

यह काजर कै कोठरी माया है तौने में यह संसार बूड़िगयो

सो वह जीव की बलिहारी है जो माया में आय निकासि जाय ॥ २१४ ॥

काजरहीकीकोठरी, काजरहीकाकोट ॥
तौभीकारीनाभई, रहाजोओटहिओट २१५

गुरुमुख ॥ साहब कहै हैं कि यह माया काया काजर की कोठरी है याके काजरही के कोट बने हैं नाना आशा नाना मत माने हैं सो यद्यपि ऐसहू रह्यो परन्तु मोको रक्षक माने रह्यो मेरी भक्ति की ओट ही ओट बचिगयो अर्थात् माया ते बचिगयो ॥ २१५ ॥

अर्बखर्बलौंद्रर्बहै, उदयअस्तलौंराज ॥
भक्तिमहातमनातुलै, येसबकौनेकाज २१६

अर्ब खर्ब लौं द्रव्य भई अथवा अर्ब खर्ब लौं विद्या को षट जानाभयो साखी शब्द चौपाई दोहा कण्ठभये सब शास्त्र कण्ठ भये व उदय अस्तलौं राज्य भयो बड़ो बादशाह भयो सबको अपने बश कै लियो अथवा महन्त भयो पण्डित भयो सबको उदय अस्त लौं चेला करि लियो और शास्त्रार्थ करिकै जीति लियो और मन न जीत्यो तो कहा कियो भक्ति के माहात्म्य को नहीं तुलै है ॥ २१६ ॥

मच्छ बिकाने सब चले, ढीमरके दरबार ॥
रतनारीअँखियांतरी, तू क्यों पहिरा जार २१७

मन में लागिकै सबजीव मच्छमाया को अनुभव ब्रह्म है ताही के हाथ जीव बिकाय गये और ढीमर के दरबार सब चले जायँ हैं अर्थात् काल मनरूपी जाल में सबको फँदायलेइ है ताही के दरबार सब चले जायँ हैं अर्थात् माया के मारिबे को सब उपाय करै हैं कि माया को नाश कैकै ब्रह्म ह्वै जायँ मनरूपी जाल में फन्दे मछरी जो माया को अनुभव ब्रह्म ताही के साथ बिकाय गये अर्थात् वही में लीनभये ताहू पै काल ते न बचे सो साहब

कहै हैं कि तैं तो मेरा है तेरे ज्ञान नयन रतनारे रहेहैं कहे मोमें तेरो अनुराग रह्यो है तैं काहे मनरूपी जाल में परिकै काल के दरबार चलो जाय है जामें मेरो अनुराग है वे आपनो ज्ञान नयन खोलु मेरी निर्गुण भक्ति छागुणवारी है सो करु मेरे पास आइकै मनमाया काल ते बचि जायगो ॥ २१७ ॥

पानी भीतर घर किया, शय्या किया पतार ॥
पांसा पराकरम को, तब मैं पहिराजार २१८

जीवमुख ॥ जीव कहैहैं कि मैं बाणीरूप पानी में घर कियो है गुरुवालोग बाणी को उपदेश करिकै वही बाणीरूप पानी में डारिदिये व संसाररूपी पतार है बन तामें शय्या किया तब कर्म को पांसा पर्‌यो तामें मनरूपी जाल मैं पहिर्‌यो अर्थात् मनरूप जाल में फँदिगयो ॥ २१८ ॥

मच्छहोय ना बचिहो, ढीमर तेरे काल ॥
जेहिजेहि डावरतुमफिरौ, तहँतहँ मेलैजाल २१९

हे जीव ! जो तुम मच्छ जो है माया को अनुभव ब्रह्म सोई ह्वैकै जो बाचा चाहौ तो न बाचोगे तेरो फँदावनवारो ढीमर जो है मन सोई काल है सो तुमको फँदायकै कालके घर पहुँचाय देइगो अर्थात् जो ज्ञानकरि ब्रह्महू ह्वै जाउगे तबहूं माया धरिही लै आवेगी अथवा समाधि करिकै प्राणको ब्रह्माण्ड में पठाय कै ज्योति में लीनौ होउगे तबहूं माया धरि लै आवैगी तेहिते जौने जौने मत जे डाबर तामें फिरौगे कहे मत में लागौगे तहाँ तहाँ या मनरूपी ढीमर जाल फेंकिकै तुमको धरिही लै आवैगो तेहि ते मन बचन के परे जो भक्तियोग तौनेको जानौ तब वह काल ते बचौगे सो भक्ति के गुण पाछे कहिआये हैं व भक्तियोग मन बचन के परे है तामें प्रमाण कबीरजी के शब्दावली ग्रन्थ को ॥ अवधू ऐसा योग बिचारा। जो अक्षरहू सों है न्यारा ॥ जौन पवन तुम गङ्ग चढ़ावो करौ गुफा में बासा। सोतो पवन गगन

जब बिनशै तब कह योग तमासा ॥ जबहीं बिनशै इंगला पिंगला बिनशै सुषुमन नारी । जो उनमुनि सो नाड़ी लागी सो कहरहै तुम्हारी ॥ मेरुदण्ड में डारिदुलैचा योगी आसन ल्याया। मेरुदण्ड की खाक उठैगी कच्चे योग कमाया ॥ सो तो ज्योति गगन में दरशै पानी में ज्यों तारा । बिनशो नीरन सों जब तारा निसरौगे केहि द्वारा ॥ द्वैतलाग बैराग कठिनहै अटके मुनि जन योगी। अक्षर लों सब खबरि बतावै जहँ लों मुक्ति बियोगी ॥ सो पद कह्यो कहे सो न्यारा सत्य असत्य निबेरा। कहै कबीर ताहि लखु योगी बहुरि न करिये फेरा ॥ २१९ ॥

बिन रसरी गर सब बँध्यो, तामें बँधा अलेख ॥
दीन्हो दर्पण हाथ में, चशम बिना क्या देख २२०

गुरुमुख ॥ बिन रसरी सबके गर बाँधिलियो ऐसो जो है धोखा ब्रह्म तामें अलेख जे जीव हैं ते बँधे हैं साहब कहै हैं तिनके हाथ में दर्पण दियो रामनाम बताइदियो सो चशम तो हैं नहीं कहे रामनाम को ज्ञान तो है नहीं आपनो रूप कैसे देखैं कि मैं साहब को अंश हौं मकार स्वरूप हौं जब आपनो रूप न जान्यो तब मोको कहा जानै ॥ २२० ॥

समुझाये समुझै नहीं, परहथ आप बिकाय ॥
मैं खैंचत हौं आपको, चला सो यमपुर जाय २२१

साहब कहै हैं कि मैं बहुत समझाऊं हौं कि तैं मेरो है मेरे पास आउ आन के हाथ कहां बिकान जाय है नाना मतन में लागै है ब्रह्म में लागै है कि आपही को मालिक मानै है सो मैं बहुत खैंचौ हौं आपनी ओर कि तैं मेरे पास आउ यह यमपुरही को चलो जाय है ॥ २२१ ॥

लोहे केरी नावरी, पाहन गरुवा भार ॥
शिरमें बिषकी मोटरी, उतरन चाहै पार २२२

या काया लोहे की नाव संसारसमुद्र पार जाबे को है मन

पाहन ताको गरुवा भार भरो है तापर बिषयरूप बिषकी मोटरी शिरपर लीन्हे है सो जीव कैसेके पारजाय ॥ २२२ ॥

कृष्णसमीपी पाण्डवा, गले हेवारहि जाय ॥
लोहाको पारस मिलै, काई काहेक खाय २२३

कृष्णसमीप के बसनवारे पाण्डवा ते हेवार में गलेजाय सो कृष्णचन्द्रको जो वे जानते तो हेवार में काहेको जाते काहेते जो पारसमें लोहा छुइजातो है तामें काई नहीं लगै है अर्थात् सोना ह्वैजाय है साहबको जाननवारो पारसही ह्वैजाय है यामें या हेतु है कि जे नीकीतरह साहब को जानै हैं ते यही देह जाय हैं सो गोपी याही देह गई हैं सो ब्रह्मवैवर्तक में प्रसिद्ध है सो गोपिका नीकी प्रकार जान्यो है ॥ २२३ ॥

पूरब ऊगै पश्चिम अथवै, भखै पवन को फूल ॥
ताहूको तो राहु गरासै, मानुष काहेक भूल २२४

पूरबते सूर्य उगै हैं और पश्चिम अथवै हैं पवन को फूल भखैं हैं अर्थात् प्रबल पवन चलैहै वाही भ्रमत रहै हैं ऐसे सूर्य हैं तिनहूं सूर्य को राहु गरासै है अरे मनुष्य ! जो तैं भूले है कि पवनते मैं आत्मा को चढ़ायलेउँगो हजारनवर्ष पवनै खाय जियैगो मुक्त ह्वैजायगो सो तैं केते दिन पवन खायगो जे सूर्य केतो दिन पवन खायो ताहू को कालराहु गरासै है तैं कैसे काल ते बचौगे॥२२४॥

नैनके आगे मन बसै, पल पल करै जो दौर ॥
तीनि लोक मनभूप है, मनपूजा सब ठौर २२५

ज्ञाननयन के आगे मनहीं बसै है वह धोखाब्रह्म मनहीं को अनुभव है पल पल में दौरै है नयनबिषयन में लगै है नानामतन में लगै है नानाज्ञान बिचार करै है तीनि लोक में या मनहीं भूप है मनहीं की पूजा सबठौर होइ है अर्थात् मनहीं ब्रह्म है पुजावै

है मनहीं जीवात्मा को ज्ञान करै है कि महीं मालिक हौं जो मन के परे साहब हैं ताको कोई नहीं जानै हैं ॥ २२५ ॥

मनस्वारथ आपहि रसिक, विषयलहरिफहराय ॥
मनके चलतै तन चलत, ताते सरबसु जाय २२६

या आपनो स्वारथ मनहीं को मानिलियो मनको रसिक आपही भयो अर्थात् मनको रस आपही लेइ है मनके किये जे पाप पुण्य तिनको भोगै या आपही बन्यो है याही हेतु ते याके विषय लहरि फहराय रही है सोई विषयन को जब मन चल्यो तब जीवहु चल्यो मनके चलते तनहुँ चल्यो जाय है विषय करन को ताते सरबसु हानि या जीवकी होती है अर्थात् विषय लिये पापादिक कर्म कियो नरकको गयो और येई विषयन लिये अप्सरन को भोगकरै है नानायज्ञादिक कियो स्वर्ग को चलोगयो सो सरबसु याको साहब है तिनके ज्ञान की हानि हैगई पाण्डवन के दृष्टान्त ते उपासनाकाण्ड व सूर्य के दृष्टान्त ते योगकाण्ड व मन के अनुभव के दृष्टान्त ते ज्ञानकाण्ड और विषय लहरि के दृष्टान्त ते कर्मकाण्ड कह्यो सो इनमें लगिकै नित्यबिहारी साकेत-निवासी जे श्रीरामचन्द्र तिनको जीव भूलिगये याही ते जीवन को जरा मरण नहीं छूटै है ॥ २२६ ॥

ऐसी गति संसारकी, ज्यों गाड़र की ठाट ॥
एक परी जो गाड़ में, सबै जात तेहि बाट २२७

या संसार की ऐसी गति है जैसे गाड़र की पाँति जो एक गाड़ में गिरै तो वाही राह सिगरी गिरती जाय हैं सो या संसार को भेड़ियाधसान यही है एक जो कौनो मत गहै तो सिगरे वा मत गहैं नीक नागा को बिचार न करैं ॥ २२७ ॥

वा मारग तो कठिन है, तहँ मति कोई जाय ॥
जे गे ते बहुरे नहीं, कुशल कहै को आय २२८

वा मार्ग तो महाकठिनहै जे साहबके पास जाय हैं ते नहीं लौटै

हैं उनको जनन मरण नहीं होइ है इहां फिरि आइकै वा मार्ग की खबरि को कहै अर्थात् कुशल को बतावै रहिगे कुसंगी तिनको संग करिकै जीव नरक को चले जायहैं साहब को न जाने ॥ २२८ ॥

मारी मरै कुसंग की, केरा के ढिग बेर ॥
वह हालै वह अँग चिरै, बिधिने संग निबेर २२९

केरा के साथ बेर जामै है तो जैसे बेरके हाले केराको अङ्ग फटि जाय है वाके काँटा ते तैसे कुसंग कीन्हे साहब को ज्ञान जातरहै है गुरुवन के बचन जे हैं तेई काँटा हैं गुरुवालोग बेर हैं ॥ २२९ ॥

केरा तबहिं न चेतिया, जब ढिग लागी बेरि ॥
अबके चेते क्या भया, काँटन लीन्हो घेरि २३०

गुरुमुख ॥ साहब कहै हैं कि अरे केरा अरे जीवो ! तैं तो बड़ो कोमल है तब न चेत कियो जब तेरे समीप बेर लागी अर्थात् गुरुवालोग उपदेश करनलगे अब तेरे चेते कहा भयो अब तो उपदेशरूप काँटा तोको घेरिलियो मेरे ज्ञानको फारिडास्यो अब कहा चेतैहै तामें प्रमाण "आछे दिन पाछे गये, कियो न हरिसों हेत। अब क्या चेते मूढ़ तैं, चिड़िया चुनिगईं खेत" ॥ २३० ॥

जीव मरण जानै नहीं, अन्ध भया सब जाय ॥
बादी द्वारे दादि नहिं, जन्म जन्म पछिताय २३१

सो कबीरजी कहै हैं कि साहब या प्रकार ते उपदेश करै हैं पै जीव को कोई मरण नहीं जानै है कि हम मरिजायँगे हमारो जनन मरण न छूटैगो सो एक तो आंधरही रहे साहब को ज्ञान नहीं रहो तापै गुरुवन को उपदेश भयो आंधर ते आंधर होत जायँ हैं बादी के द्वारे दादि नहीं पावै अर्थात् जासों पूछै हैं कि हम कौन के हैं हमारो जनन मरण कैसे छूटै नरक ते कौन हमारी रक्षा करै तो वेतो बादी हैं साहबको कैसे बतावैं और और मतमें लगाय दियो फिरियादिहू किये साहबको न पायो ताते जगत् में जनमि २

पछिताय हैं जनन मरण न छूट्यो गुरुवासाहब को ज्ञान भुलाय दियो तामें प्रमाण विप्रमतीसी को ॥ बिन परशन दरशन बहुतेरे ह्वै हैं ब्रह्मज्ञानी। बीज बिना बिज्ञान कथैगो, धोखाकी सहिदानी॥ कृतिमउपासी कर्मबिलासी जायँ ते जन यमद्वारं। हम करता भजि करता ह्वै रहे औरै के उपकारं॥ राम कहैगा सो निबहैगा उलटि रहै जो गाड़ा। धोखा दुंदुर बहुत उठैगा रामभक्ति के आड़ा॥ हिन्दू तुरुक दोऊ दल भूले, लोक वेद बटपारं। सतगुरु बिना सिद्धि नहिं कोइ खिरकी कै न उघारं॥ २३१॥

जाको सतगुरु ना मिल्यो, व्याकुल चहुँदिशि धाय॥
आँखि न सूझै बावरा, घर जारै घूर बुताय २३२

गुरुमुख॥ जाको सतगुरु नहीं मिले हैं सो व्याकुल ह्वैकै चारों ओर धावै है कहूं ब्रह्म में कहूं नाना ईश्वरन में नानामतन में लागै है कि हमारी मुक्ति ह्वैजाय सो अरे बावरे! तेरी आंखिन में नहीं सूझै है औरे औरे मतन में निश्चय करै है सो घूर है ताको कहा बुतावै है मेरो रूप और आपनो रूप ताको तो जानु या घरतो जरो जाय है ताको बुताउ जामें जनन मरण छूटै घूर बुताये कहा है॥ २३२॥

अनतबस्तु जो अनतैखोजै, केहिबिधिआवै हाथ॥
ज्ञानी सोई सराहिये, पारिखराखै साथ २३३

श्रीकबीरजी कहै हैं कि अनतकी वस्तु अनतै खोजै है कहे यह जीव साहब को अंश है सदाको दासहै तौने को कहैहैं कि ब्रह्मको है देवतन को है ईश्वरन को दास है सो जौने साहब को दास है ताको तो जानब ही न कियो आपनो स्वरूप कौनी रीति ते जानै सो हम तो सोई ज्ञानी को सराहते हैं जो पारिख अपने साथ राखै है कि हम साहब के हैं दूसरे के नहीं हैं न ब्रह्म के न माया के न ईश्वरन के हैं सोई सांचे ज्ञानी को हम सराहते हैं॥ २३३॥

सुनिये सबकी, निबेरिये अपनी ॥
सिन्धुर को सेंदुरा, झपनी की झपनी २३४

जहाँ जहाँ सुनिये तहाँ तहाँ साहबही की बात निबेरि लीजिये और मत खण्डन करिडारिये काहेते कि वेद शास्त्र सोई है जामें साहबको परत्व होइ जो कहूं वेद शास्त्र करिकै साहबको न जान्यो ताको उपदेश यहि रीति ते जैसे सिन्धुर जो हाथी ताको सेंदुर शृङ्गार कियो वे शुण्डते धूरि भरिलियो झपनी की झपनी कहे जैसे रज झपिगई तैसे जबलौं उपदेश सुन्यो तबलौं ज्ञान रह्यो फिरि नहीं रहै और जौने वेदशास्त्र में साहब को परत्व होइ सोई अर्थ तामें प्रमाण चौरासी अङ्गकी साखी ॥ रामनाम निज जानिले, येही बड़ा अरत्थ ॥ काहेको पढ़ि पढ़ि मरै, कोटिन ज्ञान गरत्थ ॥२३४॥

बाजनदे वा यन्त्ररी, कलिकुकुरीमतिछेर ॥
तुझे बिरानी क्या परी, तू आपनी निबेर २३५

जे और और बातैं सब कहै हैं सो या शरीर यन्त्र कहे बीणा है जैसो बजवैया बजावै है तैसो बाजै है ऐसे या शरीर मन के आधीन है जहां चलावै है तहां चलैहै कहूं बक बक करावै है कहूं ब्रह्म में लगावै है नानामतन को सिद्धान्त करै है सो वा यन्त्र को बाजनदे मन बैकल कुकुरिया है वाको बिष जो तेरे चढ़ैगो तो तुहूं बैकल ह्वै मरिजाइगो अर्थात् चौरासी योनि में परैगो सो तोको बिरानी कहा परी है तैं आपनी निबेरु जो तेरे यन्त्र बाजै हैं सुरतिकमल में गुरू रामनाम ध्वनि उपदेश देइँ हैं ताको ध्यान करु रामनाम शब्द सब शब्द ते अलग है सोई साँच है और सब मिथ्या हैं सो तैं रामनाम ते सनेह करु रामनाम को सनेही मरत नहीं है तामें प्रमाण कबीरजी को ॥ शुन्य मरै अजपा मरै, अनहदहू मरिजाय ॥ रामसनेही ना मरै, कह कबीर समुझाय ॥ २३५ ॥

गावैं कथैं विचारैं नाहीं, अनजाने को दोहा ॥
कहकबीर पारसपरशे बिन, ज्यों पाहन बिचलोहा २३६

नानापुराण नानाशास्त्र नानामत गावै हैं और उनको कथनी करैहैं और और को समुभावै हैं प न्तु सर्वशास्त्र को अर्थ साहब ही हैं यह नहीं बिचारै हैं जैसे शुक चित्रकूटी राम कहिदिये न चित्रकूट को अर्थ न राम को अर्थ जानै हैं आनै में आन साजै हैं रसाभाव करिदिये हैं ऐसे सर्वशास्त्र को सिद्धान्त जो साहब पारसरूप तिनको तो जानतही नहीं है कौनी रीति जीव लोहा कञ्चन होइ अर्थात् जब स्पर्श होय उनको जानि उनमें लगै भजन करै तब कञ्चन होय ॥ २३६ ॥

प्रथमै एक जो हो किया, भया सो बारहबाट ॥
कसत कसौटी नाटिका, पीतर भया निराट २३७

प्रथम में यह जीवको एक कियो कहे एक राह में लगायो कि मेरी भक्ति करैगो तो संसारते छूटि जायगो और यह बारह बन भयो कहे आपने रूपी बाण को बारह लक्ष में लगायो अर्थात् छः शास्त्र के सिद्धान्त में छः दर्शन में लगाय दियो बारहबाट भयो मोको न जान्यो सो जब ज्ञानरूपी कसौटी में कस्यो कि साहब को ज्ञान है कि नहीं तब पीतरहीं ह्वैगयो जगत्मुखै ठहस्यो साहबमुख न ठहस्यो साहब को ज्ञान सोना न ठहस्यो ॥ २३७ ॥

कबिरन भक्ति बिगारिया, कङ्कर पत्थर धोय ॥
अन्दर में बिष राखिकै, अमृत डारै खोय २३८

कबिरा जे जीव हैं ते भक्ति को बिगारि डास्यो कङ्कर जो है जौने को पत्थर जो है मन तामें धोयकै ॥ पाहन फोरि गङ्ग यक निकरी चहुँ दिशि पानी पानी ॥ या पदमें पाहन मनको लिखि आये हैं सो पाषाण में जो कङ्कर धोवै तो और चूर चूर ह्वैजाय सो मेरे भक्तिरूपी जल में आपने अणु जीव कङ्कर को तैं नहीं धोये पाथर में धोये ताते चूर चूर ह्वै नानामत नानादेवमें लागे

आपने स्वरूप को न जाने अन्दर में बिषयरूपी बिष राखि अमृत रूप साहब को ज्ञान ताको खोइ डास्यो ॥ २३८ ॥

रहियएककी भय अनेककी, बेश्या बहुतभतारी ॥
कह कबीर काकेसँग जरिहै, बहुतपुरुषकी नारी २३८

गुरुमुख ॥ साहब कहै हैं कि हे जीव! तैंतो मेरो रह्यो है सो तैं अब बहुत मतन में लगिकै बहुत मालिक मानन लग्यो सो कौन तेरो उद्धार करैगो बहुतभतारी बेश्या काके काके साथ जरैगी ॥ २३९ ॥

तन बोहित मन काग है, लख योजन उड़िजाय ॥
कबहीं दरिया अगम बह, कबहीं गगनसमाय २४०

ये चारिउ शरीर बोहित कहे नाव हैं तामें मनरूपी काग बैठो है सो लख योजन लौं उड़िजायहै कबहूं संसारसमुद्र में बहत रहै है व कबहूं पँचवाँ शरीर जो कैवल्य चैतन्याकाश अगम जायबे लायक नहीं तामें महाप्रलयादिकन में समाय है सो जे हरि की शरण जाय हैं ते यहि संसारसमुद्र को गोखुर की तुल्य उतरि जायहैं तामें प्रमाण ॥ इच्छा कर भवसागर, बोहित राम अधार । कह कबीर हरि शरण गहु, गोबछ खुर बिस्तार ॥ ३४० ॥

ज्ञानरत्न की कोठरी, चुपकरि दीन्हो ताल ॥
पारखि आगे खोलिये, कुञ्जी बचन रसाल २४१

ज्ञानरत्न की जो कोठरी है तामें चुपको तारा दीन्हेही रहिये जो कोई समुझनेवारो पारखी होइ ताहीके आगे रसाल बचन कुञ्जी ते चुपको तारा खोलिकै ज्ञान को प्रकट करिये काहेते कि जे नहीं समुझै हैं तिनके आगे न कहिये साहब को ज्ञानरत्न वे कहा जानैं ॥ २४१ ॥

स्वर्ग पतालके बीच में, द्वै तुमरी यक बिद्ध ॥
षटदर्शन संशय परो, लखचौरासी सिद्ध २४२

यह स्वर्ग पातालरूपी वृक्ष में जीव ईश्वररूप दुइ तुमरी लगी हैं तामें जीवरूपी तुमरी बेधी है कहे जीवही ते नानाशब्द निकसे हैं शरीर सारी हैं सो येई जे जीव हैं षट्दर्शन आदिदैके तिनको नानामत करिके संशय परो है साहब को नहीं जानै हैं एक सिद्धान्त नहीं पावै हैं तिनको चौरासी लाख योनि सिद्धि बनी हैं भटकतही रहै हैं ॥ २४२ ॥

सकलोदुरमति दूरिकरु, अच्छाजन्म बनाउ ॥
कागगवनबुधि छोड़िदे, हंसगवनचलिआउ २४३

साहब कहै हैं कि अरे जीव! तेरो जो सकल है शरीर सोई दुर्मति है सो पांचो शरीरन को छोड़ि दे व आपनो अच्छो जन्म बनाउ कागबुद्धि को त्याग मेरो दियो हंस शरीर तामें टिकिकै मेरे पास आउ ॥ २४३ ॥

जैसी कहौं करौ जो तैसी, राग द्वेष निरुवारै ॥
तामेंघटैबढ़ैरतिऔनाहिं, यहिविधिआपसँभारै २४४

गुरुमुख ॥ साहब कहै हैं कि जैसो उपाय मैं तेरे छूटिबे को कहि आयों है तैसो करै और संसार में नाना राग द्वेष करि राखे हैं ताको निरुवारै मोमें प्रीति रत्तिउ भर घटै न पावै एक रस ही आवै ॥ २४४ ॥

द्वारे तेरे राम जी, मिला कबीरा मोहिं ॥
तूतो सबमें मिलि रहा, मैं न मिलौंगा तोहिं २४५

साहब कहै हैं कि हे जीव! तेरे मुखद्वार में मेरो राम अस नाम बनो है ताको भजन करि हे कबीर जीवो! मोको मिलौ जो कहौ कि साहब दयालु हैं वोई मिलिबे की सामर्थ्य देयँगे सो सत्य है तेरी दया मोको लगै है परन्तु तैं सब में मिलि रहा है ताते मैं तोको न मिलूंगा तैं सब छोड़ि दे तो मैं तोको आपसे मिलौंआइ ॥ २४५ ॥

भर्म परा तिहुँलोक में, भर्म बसा सब ठाउँ ॥

कहहि कबीर पुकारिकै, बसै भर्म के गाउँ २४६

कबीरजी कहै हैं कि हे जीव! साहब को तैं कैसे मिलै काहेते कि तीनोंलोक कर्म भर्म जोहै धोखा ब्रह्म सो भरो है तिनमें भर्म बसो है भरम ही में सब मिलि रहे हैं भरम के पार जे साहब हैं तिनको तो जानवेही न कियो ॥ २४६ ॥

रतन लड़ाइनि रेत में, कङ्कर चुनिचुनि खाय ॥
कहकबीरयह अवसर बीते, बहुरिचलेपछिताय २४७

रतन जोहै साहब को ज्ञान ताको रेत में लड़ाय कहे लगाय दियो अति कठोर जोहै कङ्कर ब्रह्मज्ञान तामें आत्मा को लगायो चुनि चुनि खान लग्यो सो कबीर जी कहै हैं कि जब या अवसर बीति जायगो अर्थात् शरीर छूटि जायगो तब पछितायगो वा धोखाब्रह्म में कुछ न मिलैगो ॥ २४७ ॥

जेते रेणु बनस्पती, औ गङ्गाकी रेणु ॥
पण्डित बिचारा क्या कहै, कबिर कहै सुखबेणु २४८

सारासार के बिचार करनेवारे पण्डित तोको केतो समुझावैंगे कबीरजी कहै हैं कि जेतो मैं समुझायो है कि बनस्पती पत्र गिनि जायँ व गङ्गाकी रेणु गनी गिनिजायँ परन्तु मेरे मुखके बैन गने नहीं गिनिजाय हैं तऊ न तुम बूझ्यो ॥ २४८ ॥

हम जान्यो कुल हंसहो, ताते कीन्हो सङ्ग ॥
जो जनत्यों बक बरणहो, छुवन न देत्यों अङ्ग २४९

कबीरजी कहैहैं कि हमतो तुमको हंस के कुल में जानते रहेहैं ताते तुमको उपदेश कियो तुम्हारो सङ्ग कियो है जो तुमको बकै के बर्ण जानते कि हंस नहीं हो तो एकौ अङ्ग छुवन न देत्यों अर्थात् उपदेश की बातहू न चालतो उपदेश तो कौन ॥ २४९ ॥

गुणियातो गुणको गहै, निर्गुणगुणहि घिनाय ॥
बैलहि दीजै जायफर, क्या बूझै क्या खाय २५०

गुणिया कहे जो सगुण होय है सो गुण को गहैहै सत रज तम को जो धारण करैहै सो अशुद्धई रहै है ते माया ते नहीं छूटैहैं और जो निर्गुण उपासक होइ है सो सगुणको घिनाय है सो निर्गुणोवाले सगुणवाले साहब के गुणको कहाजानैं वे तो सगुण निर्गुण के परे हैं मायाकृत गुणते रहित हैं दिव्यगुण सहितहैं काहे ते कहैहैं कि बैलके आगे जो जायफर धरि दीजिये तो कहा बूझै क्या खाय ऐसे वे साहब के गुण को कहाजानैं ॥ २५० ॥

अहिरहु तजि खसमहु तज्यो, बिना दाँतको ढोर ॥
मुक्ति परी बिललाति है, बृन्दाबन की खोर २५१

बिना दाँतको ढोर जो है बूढ़ा गाय बैल ताको अहिरो चराइबो छांड़िदेइ है और खसम जो है बैलको मालिक सोऊ छोड़ि देइ है अर्थात् बूढ़ा जानिकै कि मेरे कामको नहींहै तब वह बैल बृन्दाबनकी खोरि बिललानलग्यो ऐसे जब मनरूपी दाँत उखारिडार्‌यो तब अज्ञान अहिर याको छोड़िदियो व याको खसम जोहै माया शबलित ब्रह्म सो जब मन न रहिगयो तब याहू छांड़ि दियो तब आपही आप मुक्त ह्वैगयो सर्वत्र साहबही को देखन लग्यो जैसे बृन्दाबन में डारमें पातमें कृष्ण देखि परैहैं मुक्ति परी बिललाइ है काको मुक्त करै ऐसे यहू सर्वत्र साहबको देखने लग्यो मुक्तही ह्वैगयो मुक्ति काको मुक्तकरै तामें प्रमाण " सब नदियाँ गङ्गाभई सब शिल शालग्राम। सकलौ बन तुलसी भयो चीन्हौ आत्माराम " ॥ २५१ ॥

मुखकी मीठी जे कहैं, हृदया है मति आन ॥
कह कबीर तेहि लोगसों, रामौ बड़े सयान २५२

जो या भाँतिते मनको त्यागिकै सर्वत्र साहबको देखैहैं तिनको साहब सर्वत्र देखिपरै हैं और जिनके मनमें व मुख में आनै आन है तिनको कबीरजी कहैहैं कि रामऊ बड़े सयान हैं अर्थात् उनते दूरि रहैहैं ॥ २५२ ॥

इतते सबतौ जातहैं, भार लदाय लदाय ॥
उतते कोइ न आइया, जासों पूछौं धाय २५३

नानाकर्म के नानाउपासना के नानाज्ञान के भार लदाय लदाय इतते सब जात हैं परन्तु उहांते ऐसा कोई न आया जासों धायके उहांकी खबरि पूछौं कि कौन फल पाया सो आपनेही जन्म की खबरि नहीं जानै साहबकी खबरि कहाजानै ॥ २५३॥

भक्ति पियारी रामकी, जैसे प्यारी आगि ॥
सारा पाटन जरि गया, फिरि फिरि ल्यावे मांगि २५४

यह भक्ति साहब की बहुत पियारी है जैसे आगि पियारी होइ है कि आगि लगी व सारा पाटन कहे शहर जरिजाय पुनि आगी की चाहना बनीही रहैहै पुनि पुनि मांगि लै आवै है आपनी करैहै कामी लोग ऐसे साहब की भक्ति के तो लोग साहब की भक्तिकरि संसारते पार ह्वैगये परन्तु अबतक जो कोई भक्तिकरै है सो पियारै होत जाय है संसार ते उतरिजाय है ॥ २५४ ॥

नारि कहावै पीउकी, रहै और सँग सोइ ॥
जारमीतहिरदैबसै, खसम खुशी क्या होइ २५५

नारि तो अपने प्रीतम की कहावै है व आनपति लैकै सोइ रहै है तो खसम कैसे खुशी होय ऐसे यह जीव साहबको अंश है और और मत में लग्यो कहीं ब्रह्ममें कहीं माया में सो साहब कैसे खुशी होय ॥ २५५ ॥

सज्जन तौ दुर्जनभया, सुनि काहूको बोल ॥
काँसा ताँबा ह्वैरहा, नहिं हिरण्यका मोल २५६

सज्जन शुद्ध जीव हैं ते गुरुवालोगन के बोल सुनिकै दुर्जन ह्वै गये सो जो हिरण्य का मोल है सो जातरहा काँसा ताँबा की तुल्य ह्वैरहा है ॥ २५६ ॥

बिरहिनसाजीआरती, दर्शन दीजै राम ॥

मुयेते दर्शन देहुगे, आवै कौने काम २५७

कबीरजी कहै हैं कि जे श्रीरामचन्द्र के बिरही जीव हैं ते आरती साजे खड़े हैं कि जो रामजी मिलैं तो आरती करैं संसार छाँड़ि एक तुम्हारे मिलिबेकी आशा किये हैं सो हे साहब ! दर्शन दीजै मुये ते दर्शन तो देबही करोगे परन्तु और जीवन के काम न आवोगे काहेते वे तौ उपदेश करहो न आवैंगे साहब बिरही को मिलै है तामें प्रमाण चौरासी अङ्गकी साखी "बिरहिन जरती देखिकै, साईं आये धाय ॥ प्रेमबुन्दते सींचिकै, हिय में लई लगाय" ॥ २५७ ॥

पलमें परलय बीतिया, लोगन लगीतमारि ॥
आगिलशोचनिवारिकै, पाछे करो गोहारि २५८

पलभरे में प्रलय तेरी होतिजाय है आयु क्षीण होती जाय है यही तमारि लोगन के लगी है फिरि वा घरी नहीं मिलै ताते आगिल शोच छाँड़िदेव जौन धन जोरि जोरि स्त्री लरिकन हेत धस्यो है पाछिल गोहारि करौ साहब को जानो जाते जनन मरण छूटै ॥ २५८ ॥

एक समाना सकलमें, सकल समाना ताहि ॥
कबिरसमाना बूझमें, तहाँ दूसरा नाहि २५९

एक जो ब्रह्म है सो सब जीवन में समाय रह्यो है और कबीर जी कहैहैं कि मैं बूझ में समान्यो है ब्रह्म के प्रकाशी व सब जगत् के अन्तर्यामी ऐसे जे श्रीरामचन्द्र तिनको जब बूझयो तब वही बूझ में समाय रह्यो है सर्वत्र साहबही को देखन लग्यो दूसरा न देखत भयो मुक्त है सांचा दास भयो तामें प्रमाण कबीरजी को ॥ जीवन्मुक्त हैरहै, तजै खलककी आस। आगे पीछे हरि फिरैं, क्यों दुख पावै दास ॥ २५९ ॥

यकसाधे सबसाधिया, सबसाधे यक जाय ॥
उलटि जो सींचै मूलको, फूलै फलै अघाय २६०

एक जो साहबकी भक्ति है ताके साधे सब सधिजाय है अर्थात् लोकौ परलोक बनिजाय है और सब साधेते अर्थात् नाना-मतन में लागेते एक जो साहबकी भक्ति सो जात रहै है व ऊपर ते वृक्ष के जलमें डारिराखै तो पत्ता फूल फल सरिजाय हैं व जो वृक्ष को मूलते सींचै तो फूलै फलै अघायके ऐसे सबके मूल साहब हैं तिनकी भक्ति कीन्हे सब फूलै फलै है दूसरे की चाह नहीं रहिजाय है दूसरे की उपासनामें संसार नहीं छूटैहै ॥ २६० ॥

जेहि बन सिंह न संचरै, पक्षी नहिं उड़िजाय ॥
सो बन कबिरनहीठिया, शून्य समाधि लगाय २६१

जेहि बाणीरूप बन में कहे जेहि बाणी ते ब्रह्म ज्ञानो कथै है तौनी बाणी में सिंह जे हैं शुद्धजीव साहब के जाननवारे ते नहीं संचरै हैं कहे नहीं जाय हैं व पक्षी जे हैं नाना मतवारे नाना शास्त्रवारे ते आपने आपने पक्षकरि ब्रह्मको बिचार करै हैं उड़ैहैं पार कोई नहीं पावै हैं सो तौने बनको कबीर जे हैं जीव सो हीठिया कहे हीठत भयो वही शून्य समाधि लगायकै साहब की प्राप्ति न भई तामें प्रमाण चौरासी अङ्गकी साखी " शून्य महल में सुन्दरी, रही अकेले सोइ। पीउ मिल्यो ना सुखभयो, चली निराशा रोइ" ॥ २६१ ॥

बोली एक अमोल है, जो कोइ बोलै जानि ॥
हिये तराजू तौलिकै, तब मुख बाहर आनि २६२

सो वे शून्यसमाधि लगायकै शून्य ब्रह्म में जाय हैं तिनको कहि आये अब ज्ञान करिकै जे ब्रह्म में लीन ह्वैहैं तिनको कहै हैं कि वह बोली सोहं अमोल ताको जो कोई जानिकै हिये के तराजू में तौलिकै मुख के बाहर लैआइकै बोलै कहे श्वास श्वास में यही जपै जात में सो आवत में हृदय तराजू में यही तौलै कि सो पार्षदरूप हंस साहब को है ॥ २६२ ॥

वोहूतो वैसहि भया, तू मति होइ अयान ॥

तू गुणवन्ता वे निर्गुणी, मति एकै में सान २६३

श्रीकबीरजी कहैहैं कि योगी तो समाधि करिकै शून्य में गये व वहू जेहैं वह ज्ञानी सहज समाधिवारे तौनौ ज्ञान करिकै वैसे भये कहे वही शून्य में समाय रह्यो तू मति अयान होइ कहे अज्ञानी होइ तूतौ गुणवन्ता कहे दिव्यगुण सहित जे साहब हैं तिनको है दिव्यगुण तेरहू है निर्गुण जो धोखाब्रह्म तामैं तू काहे सानैहै तू मति सान साँचा ह्वैकै तू असाँच काहे होइ है ॥ २६३ ॥

साधू होना चहहु जो, पक्का के सँग खेल ॥
कच्चा सरसों पेरिकै, खरी भया नहिं तेल २६४

जो तुम साधु होना चाहो तो पक्के जे साहब के जाननवारे तिनके संग खेल कहे सत्संग करौ जो तुम और नानादेवता नाना मतन में लगौगे तो तुम्हारो न लोकै बनैगो न परलोकै बनैगो जैसे कच्चे सरसों को पेरनो न तेलै भयो न खरी भई ॥ २६४ ॥

सिंहे केरी खालरी, मेढ़ा ओढ़े जाय ॥
वाणी ते पहिंचानिया, शब्दहि देत बताय २६५

सिंहकी खालरी कहे शुद्ध जीवनको वेष गुरुवालोग संसार में बनाये कण्ठी छापा टोपी दीन्हे हैं सबलोग जानैं कि बड़े साधु हैं जैसे सिंह की खालरी मेढ़ाको उढ़ाय देइ अर्थात् मढ़ि देइ तो सब सिंहेकी नाईं जानैहैं परन्तु जब भ्याँ भ्याँ बोलन लग्यो तब वाणी ते जानि परेउ कि सिंह नहीं है मेढ़ा है ऐसे जब गुरुवन को सत्सङ्ग कीन्ह्यो तब वाणी ते जानि परे कि ये साहब को नहीं जानै हैं वेषै भरि बनाये हैं इनते संसार न छूटैगो तामें प्रमाण चौरासी अङ्ग की साखी ॥ स्वामी भया तो का भया, जान्यो नहीं विवेक ॥ छापा तिलक बनायकै, दग्धै जन्म अनेक १ जप माला छापा तिलक, सरै न एकौ काम ॥ मन काचे नाचे वृथा, साँचे राचे राम ॥ २६५ ॥

ज्यहि खोजत कल्पन भया, घटही में सो पूर ॥

बाढ़े गर्व गुमानते, ताते परिगो दूर २६६

जौने मुक्ति को खोजत खोजत कल्पै भयो अर्थात् कल्पना करत करत कल्पनारूप ह्वैगया ब्रह्म में लीन भया मुक्ति को मूल जो रामनाम सो तेरे घटही में है ताको "अहं ब्रह्मास्मि" के गर्व ते तोको दूरि परिगयो अबहूं समुझ तो तेरे समीपही हैं॥२६६॥

दश द्वारे का पींजरा, तामें पक्षी पौन॥
रहिबेको आश्चर्य है, जायतो अचरज कौन २६७
रामहिसुमिरहिंरणभिरैं, फिरैं और की गैल॥
मानुष केरी खालरी, ओढ़ि फिरत हैं बैल २६८

रामनाम को तौ सुमिरै है परन्तु रामनाम जपिबे की बिधि गुरुते नहीं पाये बादबिवाद करत साधुनते भिरत फिरै हैं साहब को नहीं जानै हैं ते मानुष की खाल ओढ़े तो हैं परन्तु बैल हैं अर्थात् पशु हैं जानै नहीं हैं॥ २६७।२६८॥

खेत भला बीजौ भला, बोइये मूठी फेर॥
काहे बिरवा रूखरा, या गुण खेतै केर २६९

खेती तो नीकई है परन्तु तृणादिकन के जरको कारण वामें बनो है त्यहिते बिरवा उठै नहीं पावै तृण छायजाय है सो या गुण खेतै को है ऐसे खेत अन्तःकरण में नानाबासनारूप तृण जामि रहे हैं तामें रामनामरूपी बीज फेरि फेरि बोवै हैं परन्तु तृण बासनन के मारे लगै नहीं पावैं साहबमें प्रीति नहीं होइ देइ जब सत्संग करि कै निराय डारै तो तृण व रामनामरूप अंकुर दृढ़ ह्वै जाय साहब को जाननलगै संसार छूटि जाय पापजारे में नाम की बड़ी शक्ति है तामें प्रमाण "नाम्नीति यावती शक्तिः, पापनिर्दहने हरेः। तावत्कर्त्तुं न शक्नोति, पातकम्पातकी जनः॥ २६९॥

गुरु सीढ़ी ते ऊतरै, शब्द बिमूखा होइ॥
ताकोकाल घसीटिहै, राखिसकै नहिं कोइ २७०

गुरु के बताये साधनसीढ़ी में चढ़ो फिर उतरि और और साधन में लगो रामनाम ते बिमुख ह्वैगयो ताको काल नरक में घसीटिकै डारिही देइगो कोई नहीं राखि सकैगो ॥ २७० ॥

आगि जो लगी समुद्रमें, जरैसोकांदौझारि ॥
पूरब पश्चिम पण्डिता, मुयेबिचारिबिचारि २७१

या संसारसमुद्र में अज्ञानरूपी अग्नि लगी है सो पूरब पश्चिम के पण्डित कहे उदय अस्त के पण्डित बिचारि बिचारि मरे परन्तु अज्ञानरूपी अग्नि न बुतानि उपासना करिकै ज्ञानहु करिकै संसारसमुद्र सूखिहू गयो परन्तु वा मूल अज्ञानरूप कांदौ में फँसे जरे जाय हैं ॥ २७१ ॥

जो मोहिंजानै त्यहिमैं जानौं, लोक वेदका कहा न मानौं ॥
भूमुरघाम सबैघटमाहीं, सबकोउबसैशोककीछाहीं २७२

गुरुमुख ॥ अज्ञानरूपी घाम ते अन्तःकरणरूपी भूमि सबकै तपिरही है शोकरूपी जे नाना उपासना तिनकी छाया चाहै है परन्तु वही ते और तप्त होय है शीतल नहीं होइहै सो मोको तो जानतही नहीं हैं मैं वाको काहे को जानौं जो कोई मोको जानै तो मैं वाको जानौं जानबही करौं लोकवेद तो कहतही है कि जो जाकोहै सो ताहूको जानै है सो या लोक वेद को कहा मानबही करौं अथवा कैसो पापी होइ जो मेरी शरण आवै तो मैं लोक वेद का कहा न मानूं वाको शरण में राखबई करौं वाके सम्पूर्ण पाप मही छुड़ाय देउँ तामें प्रमाण “ सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते । अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतंमम” ॥ २७२ ॥

जौनमिला सो गुरुमिला, चेलामिला न कोइ ॥
छइउलाख छानबे रमैनी, एक जीवपर होइ २७३

श्रीकबीरजी कहै हैं कि एकजीवके उपदेशपर मैं छःलाखछानबेरमैनी युगयुग कह्यो पै मेरो कह्यो कोई न समझयो जो मिलो सो गुरुही मिलो चेला कोई न मिलो जो मेरो कहो बूझै साहब

को जानै संसार ते छूटै छानबे रमैनी में प्रमाण ॥ सहसछानबे और छःसाखा ॥ युग परमाण रमैनी भाखा ॥ २७३ ॥

जहँ गाहक तहँ हौं नहीं, हौं जहँ गाहक नाहिं ॥
बिन बिबेक भटकत फिरै, पकरिशब्दकी छाहिं २७४

गुरुमुख ॥ जहां नाना ईश्वर नाना उपासना नाना ज्ञान इन एकहूका जहां गाहक है तहां मैं नहीं हौं अथवा जहां कौनिहूं बस्तु की चाहहै तहां मैं नहीं हौं जहां कौनिहूं बस्तु की चाह नहीं है तहां मैं हौं सो बिना बिबेक कहे बिना सांच असांचके जाने अर्थात् सांच जो रामनाम ताके बिना जाने गुरुवालोगन के शब्द की छांह पकरिकै संसार भटकत फिरैहै जनन मरण नहीं छूटैहै जब रामनाम जानै तब संसारते छूटै तामें प्रमाण " सप्तकोटिमहा मन्त्राश्चित्तविभ्रमकारकाः । एक एव परो मन्त्रो राम इत्यक्षर-द्वयम् " ॥ २७४ ॥

शब्द हमारा आदिका, इनते बली न कोइ ॥
आगे पाछे जो करै, सो बलहीना होइ २७५

गुरुमुख ॥ साहब कहैहैं कि शब्द जो है हमारो रामनाम सो आदिका है अर्थात् रामनामहीं ते सबकी उत्पत्ति भई है सो या रामनामते बली कोई नहीं है यह आदिशब्द जो रामनाम ताके जपिबे में जो आगे पीछे करैहै अर्थात् याको बलछोड़ि और देव-तनको बल मानै है सो बलहीन होइ है अर्थात् मुक्ति होनेको बल नहीं रहिजाय ॥ २७५ ॥

नग पषाण जग सकलहै, लखि आवै सबकोइ ॥
नग ते उत्तम पारखी, जग में बिरला कोइ २७६

या जगमें नग जो है तिहारो मन सो पाषाण ह्वैरह्यो है त्यहिते तुमहूं पाषाण ह्वैगयो मनमें मिलिकै जग ह्वैगये सो वही में आवै है वही में जाइहै सो नग जो है मन त्यहिते उत्तम जे पारखी जीव हैं अर्थात् मनते न्यारे जे जीव हैं तौन जगत् में कोई बिरला

है और मनको माणिक पीछे बेलि में कहि आये हैं ॥ २७६ ॥

ताहि न कहिये पारखी, पाहन लखै जो कोइ ॥
नगनलयादिलसोंलखै, रतन पारखी सोइ २७७

जो कोई पाहनरूपी मनको देखैहै अर्थात् जब भरम जाके मन बनोरहैहै ताको पारखी न कहिये और जो कोई नर आपनो आत्मारूप जो है नगस्वस्वरूप सो आपने दिल में रामनाम में देखैहै अर्थात् मकारस्वरूप जो है आपनो स्वस्वरूप ताको रकार रूप जे हैं साहब तिनके समीप देखै सोई पारखी है जब नग मुंदरी में जड़िजाय है तबहीं शोभा होयहै नहीं तो पाहनैहै ॥ २७७॥

सारीदुनिया बिनशती, अपनी अपनी आगि ॥
ऐसा जियरा ना मिला, जासों रहिये लागि २७८

सारी दुनिया आपनी आपनी आगिमें कहे कोई ब्रह्ममें लागि के कोई नानादेवतनमें लागिकै कोई नानामतन में लागिकै बिशेष ते बिनशि रहे हैं साहब को नहीं जानै हैं सो कबीरजी कहैहैं ऐसा जियरा कहे रामोपासक सन्त कोई न मिला जासों लागि रहैं अर्थात् सत्संग करौं कहे जे साहबको नहीं जानैं ते बिनशिजाय हैं तामें प्रमाण "यश्च रामं न पश्येत यं च रामो न पश्यति ॥ निन्दितः सर्वलोकेषु स्वात्माप्येनं विगर्हते" ॥ २७८ ॥

सपने सोया मानवा, खोलि देखै जो नैन ॥
जीव परा बहु लूट में, ना कछु लेन न देन २७९

जो मानुष आपनी आँखि खोलिकै देखै तो सब स्वप्नै है यह जीव बहुत लूटमें पर्‍यो है नानामतन में नानाउपासनन में लग्यो है साहबको नहीं जानै ताते न कछु लेनहै न देनहै याते या आयो कि इनमें वृथै लागेहैं मुक्ति काहूकी दई नहीं दै जायहै या सब स्वप्न है तामें प्रमाण कबीरजी को गोरख पूछैहैं "कर्ताकोस्वरूपकौन। अण्डकास्वरूपकौन। अण्डपारबसैकौन। नादबिन्दुयोगकौन। जीवईश्वरभोग कौन। भौमी अवतार कौन। निराकार पार

कौन। पापपुण्यकरै कौन। वेद औ वेदान्तकौन। बाचा औ अबाचा कौन। चन्द्रसूर्यभास कौन। पञ्च में प्रपञ्च कौन। ओहं औ सोहं कौन। स्वर्ग नरक बसै कौन। पिण्ड औ ब्रह्माण्ड कौन। आत्म परमात्म कौन। जरा मरण काल कौन। गुरु शिष्य बोध कौन। अक्षरक्षर निर्क्षर कौन। तब कबीरजी बोले॥ नाद बिन्दु योग स्वप्न जीवईश्वर भोग स्वप्न भौमी अवतार स्वप्न निराकार स्वप्न है। पापपुण्य करै स्वप्न वेद औ वेदान्त स्वप्न बाचा औ अबाचा स्वप्न चन्द्रसूर स्वप्न है॥ इत्यादिक बहुत बाक्य हैं॥ २७६॥

नष्टैका यह राज्य है, नफरकबरतै छैक॥
सारशब्द टकसार है, हिरदय माहिं विवेक २८०

नष्ट जोहै धोखा ताहीको यह राज्यहै अर्थात् "अहंब्रह्मास्मि" कहिकै सब नष्टभये और नफर जो है काल ताहीको छेक संसार बरतरह्यो है अर्थात् सब संसारको काल छेकि छेकि खाये जायहै सार शब्द जो रामनाम टकसार ताको हृदय में कोई कोई विवेक करतभये अर्थात् कोई साहबको न जानतभये संसारते न छूटत भये॥ २८०॥

दृश्यमानसबबीनसै, अदृश्यलखै ना कोइ॥
हीनकोइ गाहक मिलै, बहुतै सुखसोहोइ २८१

जहां भर दृश्यमान है सो सब बिनशै है नाश होयहै और मन बचन के अगोचर जो ब्रह्म है ताको तो कोई देखतै नहीं है धोखही है सो दृश्य अदृश्य के परे हीन कोइ कहे कोई हीन होइ अर्थात् दीनहोइ ताको गाहक ऐसे जे साहब श्रीरामचन्द्रते मिलैं जो जीवको तौ बहुत सुख सो होय अर्थात् जनन मरण छूटि जाय साहबके समीप सेवा में बनो रहै तामें प्रमाण॥ गोसाईंजी को दोहा॥ पद गहि कहति सुलोचना सुनहु बचन रघुबीर। तुमहिं मिले नहिं होइ भव यथा सिन्धुकर नीर॥ २८१॥

दृष्टिहि माहिं विचार है, बूझै बिरला कोइ॥

चरमदृष्टि छूटै नहीं, ताते शब्दी होइ २८२

जो कहो साहब को देखै कैसे हैं तो दृष्टिही में विचार है साहब को देखै है या चर्मदृष्टि करिकै साहब को नहीं देखै या बात कोई बिरला बूझै है या जीवकी चर्मदृष्टि नहीं छूटै है तेहिते जो मन बचनमें आवै है सो ज्ञान करै है शब्दी ह्वै जायहै विषयन में लागै है ॥ २८२ ॥

जबलगढोलातबलगबोला, तबलगधनव्यवहार ॥
ढोला फूटा धन गया, कोई न झांकै द्वार २८३

जबलग या ढोला कहे शरीर है तबलग बोलै है तबलग सब धन व्यवहार है जब ढोला शरीर छूट्यो कहे फूट्यो तब घर धन व्यवहार सब आनै को ह्वैगयो कोई वाको नाम नहीं लेइ न कोई द्वार झाँकै याते या आयो कि साहब को जानो जाते संसार छूटै ॥ २८३ ॥

करु बन्दगी विवेककी, वेषधरे सबकोइ ॥
सो बन्दगि बहिजानदे, शब्दविवेक न होइ २८४

अरे मूढ़ ! विवेक करिकै बन्दगी करु ई सब जितने मतवाले वेष धरे हैं तिनमें शब्द जो रामनाम ताको विवेक जाके न होइ अर्थात् साहब न जानत होइ ताको बहिजानदे न ग्रहणकरु जे संसारसुख अर्थ छांड़िकै साहबमुख अर्थ विवेक करि जानै हैं ताको बन्दगी करु ॥ २८४ ॥

सुरनरमुनि औ देवता, सातद्वीप नवखण्ड ॥
कहकबीर सबभोगिया, देहधरे का दण्ड २८५

जे साहबमुख अर्थ जानि साहब में न लगे असाँचमतन में लगे ते सात द्वीप नवखण्ड जहांभर सुर नर मुनि हैं ते सब कर्मभोगै भोगै हैं ॥ २८५ ॥

जौलगदिलपरदिलनहीं, तौलगसबसुखनाहिं ॥

चारौं युगन पुकारिया, सो संशयदिलमाहिं २८६

जबलग दिल पर दिल कहे जो दिल है मन ताके परे जो साहब को दियो मन हंसस्वरूपवाला सो मन जबलग याके नहीं है तबलग याको सुख नहीं है अर्थात् एकहू सुख नहीं है सो कबीरजी कहै हैं कि मोको चारोंयुगन में चारिरूपते पुकारत भयो पै सो संशय इन के दिलमें पराहीरह्यो साहबको न जान्यो जाते संसार छूटै ॥ २८६ ॥

यन्त्र बजावत हौं सुना, टूटिगये सब तार ॥
यन्त्र बिचारा क्याकरै, गयो बजावनहार २८७

अनहद आदिक बजावत मैं सुन्यो है जब बजावनहारो जीव शरीरते निकसिगयो कहे शरीर छूटिगयो तब नस जे सब तार हैं ते टूटिगये तब यन्त्र जो शरीर है सो बिचारा कहाकरै अरु वह अनहद बाजा कैसे बाजै जहांभर बाणी सब बोलै हैं ते सब बाजे हैं जीव बजावनवारो निकसो बाजा कहाकरै ॥ २८७ ॥

जो तुमचाहो मूझको, छांडु सकलकी आस ॥
मेरा ऐसा ह्वै रहै, तब कुछ तेरे पास २८८

गुरुमुख ॥ साहब कहै हैं कि जो तुम मोको चाहो तो सबकी आशा छोड़िदे जब तैं सबकी आशा छोड़िकै मोमें लगैगो तब तैं मेरा ऐसा ह्वैरहै और सब कुछ तेरे पास ह्वै जायगो कुछ कमी न रहैगी अथवा जैसा मैं द्विभुजहौं तैसा तुहूं रहैगो ॥ २८८ ॥

साधुभया तो क्या भया, जोनहिंबोलबिचार ॥
हतै पराई आतमा, जीभ लिये तलवार २८९

जो वाके बोल कहे शब्द को बिचार नहीं है तो साधुभया तो क्या भया वातो जीभरूपी तलवार लिये पराई आतमा हतै है कैसे कि सबको उपदेश करिकै नानामतन में लगावै है सो उनको उद्धार कबहूं नहीं होय है तेहिते अरे मूढ़ो! आपनी जीभरूपी तरवारि ते कहे सबके आत्मा को हतन करौहौ जीवन

को जनन मरण देवावो हो बिना साहब के जाने जनन मरण न छूटैगो ॥ २८९ ॥

हंसाके घट भीतरे, बसै सरोवर खोट ॥
जीव ठौर लागै नहीं, रहामो ओटै ओट २९०

या हंसा जो है जीव तौने के घट भीतर एक मनरूपी सरोवर खोटहै तहैं या हंस जीव बसै है सो या जीव ठौर में न लग्यो कहे साहब के पास न गयो वही मनके ओट में रहिगयो अर्थात् मनरूपी सरोवरै में रहिगयो ॥ २९० ॥

मधुरबचन हैं औषधी, कटुक बचनहैं तीर ॥
श्रवणद्वार ह्वै संचरैं, शालैं सकल शरीर २९१

कटुकबचन तीर हैं और मधुरबचन औषध हैं ते ये दोऊ श्रवणद्वार ह्वैके सञ्चरै हैं कहे जाइ हैं और सिगरे शरीर में शालै हैं कहे व्याप्त ह्वै जायहैं जो कोई मीठ बचन कह्यो तो वासों राग भयो और जो कोई कटुकबचन कह्यो तो वासों द्वेषभयो और मधुरबचन ते जहां राग कियो जहां मनलग्यो तहैं जन्मत भयो और कटुकबचन सुनि कोप करि बधादिक कियो तेहिते आयु हानि भई मरत भयो याते मधुरबचन कटुबचन दोऊ बराबर शालै हैं ॥ २९१ ॥

ई जगतो जहडे गया, भया योग ना भोग ॥
तिलातिलझारिकबीरलिय, तिलठी झारै लोग २९२

या जगतो जहडेगयो कहे ह्वै गयो काहेते कि न याको योग ही सिद्ध भयो न भोगही सिद्ध भयो कैसेउ हज़ारन वर्षलों योग कीजिये महाप्रलय भर रहे आखिर नाशही ह्वै जाइ है जो धर्म करि दिविको भोग कियो तो जब पुण्य क्षीण ह्वैजाइ है तब तो मृत्युही लोकको आवैहै याते न भोग सिद्ध भयो न योग सिद्ध भयो सो तिल जो है रसरूपा भक्ति साहबकी ताको तो कबीरजी कहै हैं कि मैं झारि लियो तिलठी जो है नाना उपासना तिनकी

ओर लोग झारे हैं नाम करे हैं जामे रस नहीं है ॥ २६२ ॥

ढाढस देखु मरजीवको, धसिकै पैठि पताल ॥
जीव अटक मानै नहीं, गहिलै निकस्यो लाल २६३

मरजीव ते कहावैहैं जे समुद्रमें पैठि रत्न निकारैहैं ताको ढाढस देखो ढाढस करिकै पाताल में पैठहैं जीव को अटक नहीं मानै हैं समुद्र ते लाल गहि लैआवै हैं तैसे जीव तैंहूं मनादिकन को त्यागिदे मरिबे को न डेराय बिश्वास करिकै साहब रसरूप सागर में पैठु ॥ २६३ ॥

ये मरजीवा अमृत पीवा, का धसि मरै पताल ॥
गुरुकी दयासाधुकी संगति, निकसिआउयहिकाल २६४

ये मरजीवा कहे तैं तो अमृतको पीवनवारो पाताल में धसिकै कहे संसार में परिकै कहा मरैहै और जियैहै नरक को चलाजाइ है सो गुरुकी दयाते साधुन की संगति ते तू यही कालमें संसारते निकसि आउ जो तैं साहबके जाननवारे साधुन की शरण होइ वाही चालचलै ॥ २६४ ॥

एक बुन्द हलफे गये, केते गये बिलोइ ॥
एक बुन्दके कारणे, मानुष काहेको रोइ २६५

हा इति कष्टमें है सो कबीरजी कहै हैं कि हाय केतन्यो जीव लफे कहे नैगये अर्थात् ढरकि गये अर्थात् साहब के मार्ग चले साहब की उपासना कियो पै गुरुवालोग जो नानामत लखायो तिनही में लफे कहे नैगये सो केतौ तो या प्रकारसों गये व केतौ पहिलेही ते बिगोय गये कहे बिगरिगये सो हे मानुष! श्रीरामचन्द्र को जो आनन्द समुद्र ताके एकबुन्द के कारण हे संसारीजीव! तैं काहे रोवैहै धोखाब्रह्म को छांड़ि साहब को जानु जाते जनन मरण छूटै ॥ २६५ ॥

आगि जो लगी समुद्र में, टुटि टुटि खसै जो झोल ॥

रोवै कबिरा डिम्भिया, मोर हीरा जरै अमोल २९६

या संसारसमुद्र में अज्ञानरूपी आगि लगी कर्मरूप भोल जे शरीर के कारण हैं ते या देहते टुटि टुटि वा देह में गये या देह जरि गई याही रीतिते नानादेह धरै हैं संसार नहीं छूटै है सो कबीरजी रोवै हैं कि दम्भी ह्वैकै मोर अमोल हीरा जीव ते अज्ञानरूपी अग्नि में जरे जाय हैं ॥ २९६ ॥

साँचे शाप न लागिया, साँचे काल न खाय ॥
साँचे साँचे जो चलै, ताको कहा नशाय २९७

कबीरजी कहै हैं कि दम्भ करिकै काहे अज्ञानरूपी आगि में जरे जाउहौ जो साँचे साहब में लागिकै साँचे साधु होउ तो वे सबते जबर होइहैं न वाको शाप लागै न वाको काल खाय है सो जाम्बवन्त हनुमानादिक अबतक बने हैं ॥ २९७ ॥

पूरा साहब सेइये, सब बिधि पूरा होइ ॥
ओछे नेह लगाइये, मूलौ आवै खोइ २९८

पूरा साहब जे सर्वत्र पूर्ण हैं तिनको जो सेइये तो सब बिधि पूरो होइ और ओछे जे हैं नानामत धोखा तौने में जो लगाइये तो नफा की कौन चालै मूलौ की हानि ह्वै जाय है ॥ २९८ ॥

जाहु वैद्य घर आपने, बात न पूछै कोइ ॥
जिन या भार लदाइया, निरबाहैगा सोइ २९९

कबीरजी कहैहैं कि हे वैद्य, गुरुवालोगो ! तुम आपने घरको जाहु तुमको बात कोई नहीं पूछै है जिन यह संसाररूपी भार लदाया है कहे संसार उत्पत्ति किया है तौनै निर्बाहैगा अर्थात् न निर्बाहैगा येतो सब मायिक हैं अधिक बाँधनेवारे हैं छुड़ावनेवारे नहीं हैं ॥ २९९ ॥

औरनके समुझावते, मुख में परिगो रेत ॥
राशि बिरानी राखते, खाये घर को खेत ३००

औरेन को उपदेश करत करत तुम्हारे मुखमें रेत कहे धूरि परिगई अर्थात् कुछु न तुमसों बनिपस्यो बिरानी राशि तो तुम राखतेहौ कहे और औरेको उपदेश करिकै समुझावते हौ आपने घरको खेत जो स्वरूप ताको नहीं ताकतेहौ काल खाये लेइहै सो तुम्हारो स्वरूप खेततौ ताको नहीं रहै औरकी राशि कहे आत्मा तुम कैसे ताकौगे ॥ ३०० ॥

मैं चितवत हौं तोहिंको, तुम कह चितवै और ॥
नालत ऐसे चित्त को, चित्त एक दुइ ठौर ३०१

गुरुमुख ॥ साहब जीवसों कहै हैं कि मैं तो तेरी ओर चितवौ हौं सदा सन्मुख बनेरहौ हौं और तू कहा और और में चित्त लगावै है सो ऐसे तेरे चित्त को नालति है कि एक आपने चित्त को माया में व ब्रह्म में दुइ ठौर लगाये है ॥ ३०१ ॥

तकत तकावत तकिरहे, सके न बेझा मारि ॥
सबै तीर खाली परे, चले कमानी डारि ३०२

साहब कहै हैं कि जे जीव मोको तकै हैं अर्थात् मेरे सन्मुख भयेहैं तिनको माया कालादिक जे हैं ते काम क्रोधादिकनते तकावैहैं कि जबहीं संधि पावैं तबहीं मारिलेइँ व आपहू ताके रहैहैं परन्तु जे जे मोको तकेरहे चास्योयुग तिनको ये कबहूं न बेझा मारिसकै हैं सो जब सबै तीर खाली परे माया कालादिकनते तब कमानी डारिकै चलेगये अर्थात् मोको जे हंसजीव जानै हैं तिनमें माया कालादिकनको ज़ोर नहीं चलैहै ॥ ३०२ ॥

जसकथनी तस करनियो, जस चुम्बकतस नाम ॥
कह कबीर चुम्बक बिना, क्यों छूटै संग्राम ३०३

जस साधुनकी कथनी कहे कहैहैं तस करनिउहै कैसे जैसे चुम्बक श्रीरामचन्द्र हैं तैसे उनको नामहूंहै सो कबीरजी कहैहैं कि रामनाम चुम्बक बिना कामादिकनको संग्राम याको कैसे छूटै जैसे लोहेको कना धूरिमें मिलोरहै है जब चुम्बक देखावो तो वाही में

लपटि आवैहै धूरि में नहीं रहै ऐसे या जीव साहब को है साहब को नामलेइ है तबहीं संसार ते छूटैहै नहीं भटकतै रहैहै॥३०३॥

अपनी कहै मेरी सुनै, सुनि मिलि एकै होइ॥
मेरे देखत जग गया, ऐसा मिला न कोइ ३०४

गुरुमुख॥ साहब कहै हैं कि अपनी शङ्का मोसों कहै पुनि जौन मैं वेदशास्त्रादिकन में कह्यो है ताको सुनै और वह मेरे वाक्यमें मिलावै देखै तो कोई शङ्का रहिजाती है अर्थात् न रहिजायगी तब एकै मत ह्वैजाय एक जो मैंहौं ताहीं को जानिलेइ और सब छोड़ि देइ सो ऐसा मोको कोई न मिला जो मेरे देखत जग गया होइ कहे जगत् ते दूरि भया होइ॥ ३०४॥

देश देश हम बागिया, ग्राम ग्राम की खोरि॥
ऐसा जियरा ना मिला, जो लेइ फटकि पछोरि ३०५

कबीरजी कहै हैं कि मैं देश देश गाउँ गाउँ खोरि खोरि बाग्यो परन्तु ऐसा जियरा मोको कोई न मिला कि जो मैं कहौंहौं ताको फटकि पछोरिलेइ॥ ३०५॥

लोहे चुम्बक प्रीति जस, लोहा लेत उठाय॥
ऐसा शब्द कबीर को, काल ते लेइ छुड़ाय ३०६

लोहेकी व चुम्बक की प्रीति है जो लोह को चुम्बक देखैहै सो उठायलेइ है ऐसे कबीर जो है काया को बीर जीव ताको या शब्द रामनाम है जौन जीवको कालते छड़ाय लेय है जैसे चुम्बक लोहे के किणका को आपने में लगाय लेइहै ऐसे रामनाम जीव को आपने में लगायलेइ है॥ ३०६॥

गुरू बिचारा क्या करै, शिष्यहि में है चूक॥
शब्दबाण बेधै नहीं, बाँस बजावैं फूंक ३०७

कबीरजी कहै हैं कि गुरू जो है साहब सो बिचारा कहा करै शिष्य जो है जीव ताही में चूकहै कौन चूकहै यासों कि रामनाम रूपी जो शब्दबाण ताके साथ छइउ जे चक्र हैं तिनको बेधिकै

सातों चक्र जे हैं सुरतिचक्र ताको बेधिकै उहां जो गुरू बतावै हैं मकरतारडोरि ताही चढ़िकै रामनामरूपी बाण के साथ साहब के पास जायबो न जान्यो वहै निर्गुण ब्रह्म जो है भूर बाँस ताही में लगिकै फूंकि फूंकि बजावै हैं अर्थात् वोहीको ज्ञान कथै हैं ॥२०७॥

दादा बाबा भाई कै लेखै, चरन होइगे बन्धा ॥
अबकीबेरियाजोनासमुझ्यो, सोईसदा है अन्धा३०८

मानुष शरीर पायकै दादा, बाबा, भाई सब साहिबै को मानै है सोई साहबके चरण को बन्धा होइ है कहे साहब के चरण में सदा लगे रहे हैं सो अबकी बेरिया कहे या मानुष शरीर पायके साहब को न जान्यो सोई सदा को अन्धा है ॥ ३०८ ॥

लघुताई सब ते भली, लघुताइहि सब होइ ॥
जस द्वितियाको चन्द्रमा, शीश नवै सब कोइ ३०९

लघुताई सबते भली है लघुताइन ते सब होइ है सर्वत्र साहब को देखै आपने को दास मानै तो वाकी प्रीति साहब में बढ़तै जाय है और सब माथ नावैहैं तामें प्रमाण कबीरजी को "लघुताते प्रभुता मिलै, प्रभुताते प्रभु दूरि ॥ चींटी लै शक्कर चली, हाथी के शिर धूरि" ॥ ३०९ ॥

मरते मरते जग मुवा, मरण न जानै कोइ ॥
ऐसा ह्वैकै ना मुवा, जो बहुरि न मरना होइ ३१०

मरते मरते सब जग मराजाय है मरण कोई नहीं जानै है ऐसा ह्वैकै कोई न मुवा जाते फेरि मरण न होय अर्थात् इन्द्रियनते मनते शरीरते भिन्न ह्वैकै साहब में न लगे जाते पुनि जनन मरण नहीं होय ॥ ३१० ॥

बस्तुअहै गाहक नहीं, बस्तुसोगरुवामोल ॥
बिनादाम को मानवा, फिरै सो डामाडोल ३११

वह गरुवा मोलको जो साहब है सर्वत्र पूर्ण है परन्तु वाको

गाहक कोई नहीं मिलैहै और बिनादाम को कहे बिना मोल को यह जीव साहबके ज्ञान बिना डामाडोल में फिरै है अर्थात् जैसे बाजार में गयो व सबसाज उहां बनी है और हाथ में दाम नहीं है तो डामाडोल फिरै है लै नहीं सकै है तैसे साहब सर्वत्र पूर्ण हैं परन्तु सतगुरु को उपदेशरूप दाम नहीं है डामाडोल फिरै है ॥ ३११ ॥

सिंह अकेला बन रमै, पलक पलक के दौर ॥
जैसा बन है आपना, तैसा बन है और ३१२

बन जो है शरीर तामें सिंह जो है जीव सो अकेला रमै है और पलक पलक में दौरकरिकै गुरुवन सों पूछैहै सो अस नहीं बिचारै है कि जैसा बन कहे शरीर मेरोहै तैसे औरहू को है जैसे मोको अज्ञान है तैसे इनहूंको अज्ञान है येई नहीं संसार ते छूटे हमको कैसे छुड़ावैंगे ॥ ३१२ ॥

मरते मरते जग मुवा, बहुरि न किया बिचार ॥
एक सयानी आपनी, परबश मुवा संसार ३१३

मरत मरत सब जग मरिगया व मरत चलोजाय है पै बहुरि कै कहे उलटिकै कोई न बिचार कियो कि काहेते मरे जाय हैं आपनी आपनी सयानीते एक एक खाविंद खोजि लियो साहब को न जान्यो जे जीव के मालिक हैं तेहिते काल के बश ह्वै सबै मरे जायँ हैं ॥ ३१३ ॥

पैठा है घर भीतरै, बैठा है साचेत ॥
जब जैसी गति चाहता, तब तैसी मति देत ३१४

साहब जो है सो सबके घट में पैठा है व साचेत बैठा है जब जैसी गति जीव चाहैहै तब तैसी मति जीवको देइ है जीव अणुचैतन्य है साहब बिभु चैतन्य हैं सो जीव जौने कर्म को सन्मुख होइहै तब चैतन्यता बढ़ाय देइ है तैसे मति बढ़ाय देइहै और बिना साहब के समर्थ जीव कछू नहीं करिसकै तामें प्रमाण

"कर्तृत्वं करणत्वं च स्वभावश्चेतना धृतिः॥ यत्प्रसादादिमे सन्ति न सन्ति यदुपेक्षया" (इतिश्रुतेः)॥ ३१४॥

बोलतही पहिंचानिये, चोर शाहु के घाट॥
अन्तर की करणी सबै, निकसै मुख की बाट ३१५

जे साहब में लगे हैं ते और जे धोखाब्रह्म में लगेहैं ते इनको कैसे पहिंचानिये तो उनके बोलते अन्तर की करणी मुख की बाट निकसै है तबहीं चोर शाहू पहिंचाने परैहैं इहां चोर जो कह्यो सो यह जीव साहब को है तिनको चोराइकै कहे छोड़िकै धोखा में लग्यो ताते चोर कह्यो है तामें प्रमाण "नारि कहावै पीउकी, रहै और सँग सोइ। जार पुरुष हिरदे बसै, खसम खुशी क्यों होइ" ३१५॥

दिलकामहरमकोइनमिलिया, जोमिलियासोगरजी॥
कह कबीर असमानै फाटा, क्योंकरिसीवैदरजी ३१६

मन दिलका महरमी कहे निष्काम है साहब में लगैया कोई न मिल्यो जो मिल्यो सो गरजवाला मिल्यो ताको तेतनै मँजूरी दैकै साहब अऋण ह्वैजाय हैं सो कबीरजी कहै हैं कि जो जीव साहबको है तो जौन जौन बस्तु साहब की है तौन तौन बस्तु जीवहूकीहै पै आपनेको अस फाटा कहे जुदा जुदा मानैहै कि साहबसों मांगैहै कि फलानी बस्तु मोको देउ या मूर्ख नहीं समुझै है कि साहबकी शरण भये कौनौ बातकी टोटा न रहिजायगी सो दरजी जो साहब है सो कहांतक सीवै कहे आपने में मिलावै॥३१६॥

बना बनाया मानवा, बिना बुद्धि बेतूल॥
कहा लाल लैकीजिये, बिना बास का फूल ३१७

यह मानवा जो है मनुष्य सो बनैबनावा व बेतूल है कहे कौनौ देवता याकी बराबरी को नहीं है पै बिना बुद्धि को है याही ते सबते नीच ह्वैरह्यो है बिना बासको कहे बिना सुगन्ध को लाल फूल लैकै कहाकरै ऐसे जीव बहुत सुन्दर भयो व साहब को न

जान्यो औरे मतन में लगिके लाल ह्वैरह्यो वा बुद्धि नहीं जाते साहबको बूझै तो कहा भयो तामें प्रमाण "कहाभयोजोबड़कुलउपजे, बड़ीबुद्धिहैनाहिं। जैसेफूलउजारिके,बृथालालभरिजाहिं"॥३१७॥

साँच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप ॥
जाके भीतर साँच है, ताके भीतर आप ३१८
करतैं किया न बिधिकिया, रविशशिपरी न दृष्टि ॥
तीन लोक में है नहीं, जानत सकलो सृष्टि ३१९

या साखी को अर्थ स्पष्ट है ३१८ कर्तापुरुष भगवान् नहीं किया न करतार किया न रवि शशि दृष्टि परी न तीनलोक में खोजे मिलै परन्तु सबसृष्टि जानै है सो कबीरजी कहै हैं कि या झूठ कहां ते आई है ॥ ३१९ ॥

आगे आगे दव बरै, पीछे हरियर होइ ॥
बलिहारी वा बृक्ष की, जर काटे फल होइ ३२०

कर्ता जगत् को बनायो सो कैसो है ताको कहै हैं आगे आगे दव बरै आगे शरीर सबके जरत जाय है और पीछे हरियर होय है कहे नये नये शरीर धारण होत हैं सो ऐसे संसाररूपी बिटप की बलिहारी है जामें जर काटे फल होइ है अर्थात् जौने जीव को संसार निर्मूल ह्वै गयो तौने जीवको साहबरूपी फल मिलै है ॥ ३२० ॥

सरहर पेड़ अगाध फल, अरु बैठा है दूर ॥
बहुत लाल पचि पचि मरे, फल मीठा पै दूर ३२१

या शरीररूपी सरहर बृच्छ बड़ा ऊंचा है सरलहू है सबको मिलै है और शरीर बृक्ष को फल कहा है साहब को जानै सर अगाध है व सर्वत्र पूर्ण है अन्तर्यामीरूप ते सबके हिये में बैठा है सो ऐसो साहब को ज्ञानरूपी फल मीठा है परन्तु दूरि है बहुत लाल कहे बहुत जे जीव हैं ते पचि पचि मरे पै पाये नहीं अथवा

साहब को ज्ञानरूपी फल सरहर है कहे चीकन है चढ़ने मुवाफ़िक़ नहीं है खसिलि परै है तामें प्रमाण कबीरजी को "बहुतक लोक चढ़े बिन भेदा, देखा शिख गहि पानी । खसिला पाउँ ऊर्ध्व मुख भूले, परे नरक की खानी" और शरीर को फल साहब को भजन है तामें प्रमाण गोसाईंजी को "देह धरे को या फल भाई । भजिय राम सब काम बिहाई ॥ ३२१ ॥

बैठ रहै सो बानियां, खड़ा रहै सो ग्वाल ॥
जागत रहै सो पाहरू, तिनहुँ न खायो काल ३२२

बनियां बैठरहैहैं दुकान लगाये ते गुरुवालोग हैं जे जौने देवता को मन्त्र मांगै हैं ताको तौनहीं मन्त्र देइ हैं और ग्वाल खड़े गौवन को चरावैहैं ते वेहैं जे आत्मैको मालिक मानै हैं इन्द्रियन को चरावै हैं जौने विषय चाहै हैं तौनै भोगै हैं दूसरो लोक नहीं मानै हैं शरीरही को मानै हैं और जे जागत रहैहैं ते पाहरू हैं आपनी बस्तु ताकैहैं ते योगी हैं आपनी इन्द्रिय को ताकेरहै हैं समाधि लगाये सदा जागतरहैहैं सो ये तीनों साहबको न जान्यो ताते तिनहुँन को काल धरि खायो ॥ ३२२ ॥

युवा जरा बालापन बीत्यो, चौथि अवस्था आई ॥
जसमुसवाको तकै बिलैया, तसयमघातलगाई ३२३

तीनिउँ अवस्था बीतिगई चौथि अवस्था आय गई जैसे मूस को बिलारी ताकैहै ताको घात लगायेहै तैसे यम तोको घात लगाये हैं सो अजहूँ साहब को चेतु ॥ ३२३ ॥

भुलासोभुलाबहुरिकैचेतु ॥शब्दकिछुरीसंशयकोरेतु ३२४

गुरुमुख ॥ साहब कहै हैं कि हे जीव ! तैं भूला सो भूला भला यह संसार ते बहुरि कहे उलटिकै तो चेत करौ सारशब्द जो रामनाम छूरी तेहिते आपनी संशय रेतडारु कहे काटिडारु अर्थात् रामनाम को अर्थ तो बिचारु तैं मेरोई है और पदार्थ

छोड़िदे तामें प्रमाण "यक रामनाम जाने बिना भव बूड़ि मुवा संसार" ॥ ३२४ ॥

सबही तरुतर जायकै, सब फल लीन्हों चीखि।
फिरिफिरिमांगतकबिर है, दर्शनहीं की भीखि ३२५

सबही तरुतर जायकै कहे शरीर धारण करिकै सुख दुःखरूप फल सब चाख्यो नाना उपासना योग ज्ञान वैराग्य सब कै चुक्यो शरीरधरे को फल कोई न पायो सो शरीरधरे को फल साहब को दर्शन है सो फिर फिर कबीर मांगै है ॥ ३२५ ॥

श्रोता तो घरही नहीं, बक्ता बदै सो बाद ॥
श्रोता बक्ता एक घर, तब कथनीको स्वाद ३२६

श्रोता तो घरही में नहीं है अर्थात् सुनतै नहीं है और बक्ता आपनोमत बादि बादि बदैहै श्रोताको समुझावै है सो जब श्रोता बक्ता एक घर होइ कहे एकै उपासना होइ एकै मत होय तब कथनी को स्वादहै कहे कथा को स्वाद तबहीं मिलै है जैसे याज्ञवल्क्य भरद्वाज इत्यादिक तामें प्रमाण ॥ इष्टमिलै अरु मन मिलै, मिलै भजन रस रीति। तुलसिदास सोइ सन्त सों हठ करि कीजै प्रीति १ शिष्य सांच गुरुसांच है, झूठ न जियत न मान। बध्यो शिष्य सांची प्रकृति, छोरत गुरु दै ज्ञान २ और कबीरहूजी को प्रमाण "नाम सत्य गुरु सत्य है, आप सत्य जब होइ। तीन सत्य प्रकटैं जबै, गुरुका अमृत होइ ॥ ३२६ ॥

कञ्चन भो पारस परसि, बहुरि न लोहा होइ ॥
चन्दनबास पलासबिधि, ढाककहै नहिं कोइ ३२७

पारसको परसिकै कञ्चन भयो जो लोह है सो फिरि लोहा नहीं होइहै और चन्दन के बासते पलाश जो छिउल है सो बेधि गयो ताको ढाख कोई नहीं कहैहै चन्दनै कहै है ऐसे जो जीव

साहबको ह्वैगयो साहब के पास गयो ताको जीवको नहीं कहै है पार्षद रूप कहावन लगैहै ॥ ३२७ ॥

बेचूनै जग राचिया, साईं नूर निनार ॥
तब आखिरके बखत में, किसका करौ दिदार ३२८

बेचून निराकार जौन जगत् को रचिसि है सो साईं के नूरते कहे प्रकाशते निनार है जुदा है अर्थात् साहब को प्रकाश न होइ वा नूरही अल्लाह है ऐसा जो मानो तो हे मुसल्मानो! मैं पूछता हौं कि आखिरके बखत में कहे क़यामत के बख़त में वा निसाफ़ करेगा ऐसा कुरानमें लिखता है सो उसको बेचून मानते हौ निराकार मानते हौ तो भला वा किसतरह से निसाफ़ करेगा और किसका दिदार करौगे अर्थात् किसकी सूरति देखौगे भाव या है कि वा निराकार नहीं है साकार है तुमको भ्रम भया है सो या बात सत्ताईस रमैनीके मूल में है साहब को नूर जो है प्रकाश सो सबके भीतर बाहर भरा है कोई जगह उससे ख़ाली नहीं है व साहब और साहब की सामग्री व साहबको लोक सब नूरही नूर का है वहां बहुतसा नूर समिटिकै एकसल देखि परै है जिस तरह की मिसाल कि जैसा साहब है तैसा साहबै है दृष्टान्त काको देई सो कबीरजी पूछै हैं कि भला तुमहूँ तो विचारि देखो कि जो उस के हाथै पांउ न होते तो जगत्को कैसे रचता सो साहब साकार है तुमको निराकार की भ्रम भई है तामें प्रमाण "कलिमा बाग नेवाज गुजारै। भरम भई अल्लाह पुकारै॥ अजब भरम यकभई तमासा। लामकान बेचूननिवासा॥ बेनिमून वै सबके पारा। आख़िर काको करौ दिदारा॥ रगरै महजिद नाक अचेता। भरमाने बुतपूजा हेता॥ बावन तीस बरण निरमाना। हिन्दू तुरुक दोऊ परमाना॥ भरमिरहे सब बरण महँ, हिन्दूतुरुक बखान। कहै कबीर बिचारिकै, बिनगुरु की पहिंचान॥ भरमत भरमत सब भरमाना। रामसनेही बिरलाजाना" ॥ ३२८ ॥

साईं नूरदिल एकहै, सोई नूर पहिंचानि ॥
जाके करते जगभया, सो बेचून क्यों जानि ३२९

साईं जो है साहब श्रीरामचन्द्र ताही को एक नूर सबके दिल में है सोई नूर तैं प्रकाश पहिंचान, जौनेके करते जग सब उत्पत्ति भया है ऐसो जो साहब ताको तू बेचून कहे निराकार न जान वे साहब साकारहैं और निर्गुण सगुण के परे हैं तामें प्रमाण कबीरजी को साक्षी ॥ स्वरूपअखण्डितव्यापीचैतन्यश्चैतन्य । ऊंचे नीचे आगे पीछे दाहिन बायँ अनन्य ॥ बड़ाते बड़ा छोटते छोटा मीहीते सब लेखा । सब के मध्य निन्तर साईं दृष्टि दृष्टि सों देखा ॥ चाम चश्मसों नजरि न आवै खोजु रूहके नैना । चूनचगूनबजुदं न मानु तैं सुभानुमूना ऐना ॥ ऐना जैसे सब दरशावै जो कछु बेष बनावै । ज्यों अनुमान करै साहब को त्यों साहब दरशावै ॥ जाहि रूह अल्ला के भीतर तेहि भीतर के ठाईं । रूप अरूप हमारि आश है हम दूनहुं के साईं ॥ जो कोउ रूह आपनी देखै सो साहब को पेखा । कहैं कबीर स्वरूप हमारा साहबको दिल देखा ॥ ३२९ ॥

रेख रूप जेहि है नहीं, अधर धरो नहिं देह ॥
गगनमँडल के मध्यमें, रहता पुरुष बिदेह ३३०

कैसो साहब है कि जाके रूप रेखा नहीं है व बिशेषि के देह धारण कीन्हे है अर्थात् रसही रस देह धारण किये है पञ्चभौतिक नहीं है व अधर जो आकाश तामें देह कबहूं नहीं धरै अर्थात् जो कबहूं न रहै तब न देह धारै वा तो सर्वत्र पूर्ण है गगनमण्डल के मध्य में कहे तीन आकाश हैं एक नीचे एक मध्यमें एक ऊपर सो तीनों आकाश में वा बिदेह पुरुष पूर्णहै ॥ ३३० ॥

धरो ध्यान वा पुरुषको, लावहुबज्रकेवाल ॥
देखिकै प्रतिमा आपनी, तीनों भये निहाल ३३१

वह परमपुरुष साहब जे रसरूप तिनको ध्यान धरो जलन्धर

बन्ध लगायकै झटका दै कै बज्रकपाट लगायो सुरति कमल में जो रकार है सो ध्यान किये साहब आपही प्रकट होय है यही ध्यान करिकै तीनों ब्रह्मा-बिष्णु-महेश आपनी आपनी प्रतिमा देखिकै निहाल भये हैं अर्थात् साहब के समीप हजारन ब्रह्मा-बिष्णु महेश देखिकै या निहाल भये कि धन्य हमारी भाग्य है कि श्रीरामचन्द्र के द्वार में हमहूं हैं यहां तो कोटिन ब्रह्माण्ड के ब्रह्मा बिष्णु महादेव मौजूद हैं ठाढ़े स्तुति करै हैं ॥ ३३१ ॥

यहमनतोशीतलभया, जब उपजा ब्रह्मज्ञान ॥
जेहि बैसन्दर जगजरै, सो पुनि उदक समान ३३२

जब ब्रह्मज्ञान भयो तब यह मन शीतल ह्वैगयो अर्थात् संकल्प बिकल्प छोड़िदियो तपिबो मिटिगयो सो जौने बैसन्दर ते कहे ब्रह्मज्ञान ते मनको संकल्प बिकल्प छूटिगयो जग जरि गयो अर्थात् न रह्यो तौन जो ब्रह्मज्ञान सो उदक जो साहब की प्रेमाभक्ति तामें समान अर्थात् जब साहब की भक्ति भई तब वा ब्रह्माग्नि न रहिगई या में ते या आयो कि ज्ञानको फल साहब की भक्ति है तामें प्रमाण "ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति ॥ समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम्" १ भक्ति में छा गुण हैं "क्लेशघ्नी शुभदा मोक्षलघुताकृत्सुदुर्लभा । सान्द्रानन्दविशेषात्माश्रीकृष्णाकर्षणी मता" बिना भक्ति साहब नहीं मिलैं तामें प्रमाण कबीरजी को भवतरणग्रन्थको "सुनु धर्मदास भक्तिपद ऊंचा । तिन सीढ़ी नहिं कोउ पहूंचा ॥ बर्त एक है भक्ति को पूरा । और बर्त सब कीजै दूरा ॥ और बर्त सब जनकी फाँसी । भक्तिहि बर्त मिलैं अविनासी ॥ ३३२ ॥

जासों नाता आदिको, बिसरिगयो सब ठौर ॥
चौरासी के बश परे, कहत और को और ३३३

जौने साहब को आदि को नाता रहै कहे जाको सदा को

दास अंश तौने रामचन्द्र को भक्ति बिसरि गयो माया में परि चौरासी लाख योनि के वश ह्वै और को और कहैहैं अर्थात् कहूं कहैहैं कि वा ब्रह्म मही हौं कहूं आत्मै को मालिक मानै हैं कहूं नानादेवतन को स्वामी मानै हैं परन्तु संसार काहू को छुड़ायो न छूट्यो ॥ ३३३ ॥

बूझौ शब्द कहांते आया, कहां शब्द ठहराय ॥
कहकबीरहमशब्दसनेही, दीन्हाअलखलखाय ३३४

लीन्ह्यो फटिक पछोरि यह साखी भर सब पोथिन को पाठ मिलि आवा है व लोहे चुम्बक प्रीति जस यह साखीते चौरासी के वश यह साखी भो उन्तिस साखी एक पोथी के क्रम ते ह्वै आवा अर्थ अब एक पोथी में अट्ठाइस साखी औरई और हैं तिनहुंन को अर्थ लिखै हैं यह शब्द जो रामनाम है सो बूझौ कहे बिचारो कहांते आया है व कहां ठहराय है सो हम वही शब्द के सनेही हैं वा शब्द तुम नहीं बूझते हौ कैसोहै शब्द की साहब के इहां ते आयो है "रामनाम लै उचरी बाणी" यह रमैनी में लिखि आये हैं सो जब कुछु नहीं रह्यो तब रामनामही ते सबकी उत्पत्ति भई है सो रामनाम मन्त्रार्थ जो मैं बनायो है तामें बिस्तार ते लिखिदियो है इहां संक्षेप ते जनाये देउँ हौं "अइउण् ऋलृक् एओङ् ऐऔच् हयवरट् लण् ञमङणनम् झभञ् घढधष् जबगडदश् खफछठथचटतव् कपय् शषसर् हल्" ये सब वर्ण चौदह सूत्रमें पाणिनिने लिखिदियो ॥ आद्यन्ताभ्यां आद्यन्तौ सहमध्यगानामसंज्ञा यह सूत्र करिकै अकार आदि का लीन व लकार अन्तका लीन तब अल् प्रत्याहार कीन तेहिते बीच के वर्ण सब आय गये सो अल्प्रत्याहार रामनामको एकदेश ते निकसै है सो रामनाम के रकारको वर्ण विपर्ययकियो तब अकार को यह कैति लैव रकारको वह कैतिलै गये तब (अर्) भयो सो रकार लकार को अभेद है तेहिते अल् भयो तेहिते

रामनाम के एकदेश ते सब निकसि आये तेहिते सबको आदि रामनाम है सो रामनाम को अर्थ साहिबै के ठहराय है अर्थात् रामनाम साहबही को बतावै है सो श्रीकबीरजी कहै हैं कि हम वही शब्द के सनेही हैं कैसो है शब्द कि अलख है वा सबको लखावै है वाको कोई नहीं लखै है जैसे आँखी ते सबको देखै व आंखी आपनी कोई नहीं देखै है जो कहो कबीर कैसे कहैहैं कि हम अलख को लखाय दियो तौ सुनौ जैसे ऐना लैकै देखै तो आपनी आंखी को प्रतिबिम्ब देखि परै है सो यह बीजकरूप ऐनाहै तामें अनिर्बचनीय जो रामनाम ताको प्रतिबिम्ब बीजक में दिखायो अर्थात् यह बताय दियो कि रामनामही ते जगत् मुख अर्थ में सबकी उत्पत्ति भई है व रामनामही साहब को बतावै है साहब मुख अर्थ में व अनिर्बचनीय साहब को राम नामही देखाय देइ है यह कबीरजी अलख के देखिबे को उपाय बतायदियो यही अलख को लखावनो है सो जब साहब को ह्वै जाय तब या लखै तामें प्रमाण सुखसागर को ॥ अलख अपार लखै केहि भांती । अलख लखै अलखै की जाती ॥ ३३४ ॥

बूझौ करता आपना, मानौ बचन हमार ॥
पञ्चतत्त्व के भीतरै, जिसका यह बिस्तार ३३५

तुम कहांते आये व तुमको को कियो सो अपने कर्ता को तुम बूझौ वह साखी में तो बचन हम कहि आये ताको तुम मानौ तुम वह शब्द रामनामही ते भये हौ जिसका यह बिस्तार सब देखते हौ व जौन जौन मानिदी तुम मानिराखे हौ सो सब पञ्चतत्त्वके भीतर है एक वह रामनामही पञ्चतत्त्व के बाहिरे है व वही तुम्हारो आदि कर्ता है ॥ ३३५ ॥

हमकर्ता हैं सकलसृष्टिके, हमपर दूसर नाहिं ॥
कहै कबीर हमैं नहिं चीन्है, सकलसमानाताहि ३३६

हमहीं सम्पूर्ण सृष्टि के कर्ता हैं हम मालिक दूसर नहीं है

हमहीं सबके मालिक हैं सब महीं में समान है हमहीं ब्रह्म हैं ऐसा कोई कोई कबीर काया के बीर जीव कहै हैं ताको आपै खण्डन करै हैं ॥ ३३६ ॥

सुत नहिं मानै बात पिताकी, सेवै पुरुष विदेह ॥
कहै कबीर अबहुं किन चेतौ, छांड़ो झूठ सनेह ३३७

तैं सुत है रामनाम प्रतिपाद्य जे साहब हैं ते तेरे पिता हैं तिन की बात तैं नहीं मानै है व विदेह पुरुष जो है ब्रह्म ताको सेवै है कहै आपही ब्रह्म है बैठे है सो अबहूं चेत करु साहब कहि आये हैं कि "अजहूं लेहुँ छुड़ाय कालसों, जो घट सुरति सँभारै" सो ऐसे पिता की बात मानु यह झूठ सनेह छोड़िदे जो आपने को ब्रह्म मानिकै बैठे हैं कि महीं ब्रह्म हौं यह ब्रह्म तो मनको अनुभव है झूठा है जीव ब्रह्म कबहूं नहीं होय है ॥ ३३७ ॥

सबै आशकर शून्य नगरकी, जहां न कर्ता कोई ॥
कहकबीर बूझौ जिय अपने, जाते भरम न होई ३३८

सबै वह शून्यनगरकी आशा करै हैं जहां कोई कर्ता नहीं है सो वह तो झूठाहै सो कबीरजी कहै हैं कि तुम आपने मनमें बूझौ तौ उहां तौ कर्ता हई नहीं है व जगत् बनैहै तौ कौन जगत् को कियो है तेहिते निराकार अकर्ता ब्रह्म कहनूति जो कहोहौ सो सब झूठी है सो यह तुम आपने जियमें बूझौ जेहिते ब्रह्म-वालो भ्रम तुमको न होई ॥ ३३८ ॥

भक्ति भक्ति सब कोइ कहै, भक्ति न आई काज ॥
जहँको किया भरोसवा, तहँ ते आई गाज ३३९

भक्ति भक्ति सब कोई कहै हैं और और देवतनकी भक्ति करै हैं सो वा भक्ति कौनो काज न आई जेहि जेहि देवको भरोसा कियो तहांते गाज आई कहे वे सब काल स्वरूप हैं सब याको मारिकै आपने लोक लैगये जब महाप्रलय भई तब इष्ट व उपासक

दोऊ न रहे पुनि जब जगत् की उत्पत्ति भई तब कर्मानुसार वोऊ उत्पन्न भये ॥ ३३९ ॥

समुझौ भाई ज्ञानियो, काहुन कहा सँदेश ॥
जेइ गये बहुरे नहीं, है वह कैसा देश ३४०

हे भाई, ज्ञानिउ ! तुम समुझते जाउ जौन तुम ब्रह्म ब्रह्म कहौहौ तहां को संदेश कोई न कह्यो कहे सब वेदान्ती ब्रह्मज्ञानी कहे हैं कि वाको तो हम कही नहीं सकै हैं धौं कैसा है औ जे उहां गये ते बहुरिकै न आये जो वहां को संदेश बतावैं अर्थात् कुछ न हाथ लग्यो ॥ ३४० ॥

धोखे सब जग बीतिया, धोखे गई सिराइ ॥
थितिना करै सो आपनी, यह दुख कहा न जाइ ३४१

धोखाही ते सम्पूर्ण जगत् व्यतीत होगया और धोखाही ते सिरायगया व यह मन अपनी थिति नहीं पकरै है कहे स्थिर नहीं होयहै सो अपनी भूल कासोंकहै या दुःख काहूसों नहीं कह्यो ॥ ३४१ ॥

मायाते मन ऊपजै, मनते दश अवतार ॥
ब्रह्म विष्णु धोखे गये, भरम परा संसार ३४२

साहब व साहब के पास पहुँचे हैं जे तिनको छोड़े और सब मनके फन्द में परे हैं और अर्थ स्पष्टही है ॥ ३४२ ॥

राम कहत जग बीते सिगरे, कोई भये न राम ॥
कहकबीरजिनरामहिंजाना, तिनके भे सबकाम ३४३

हमहीं राम हैं हमहीं राम हैं या कहत कहत सब जग बीतगये कहे मारिगये परन्तु कोई राम न भये व कबीरजी कहैहैं कि जिन श्रीरामचन्द्रको मालिक जान्योहै तिनके सबकाम ह्वैगयेहैं ॥ ३४३ ॥

यह दुनिया भै बावरी, आदिटसों बाँध्यो नेह ॥
दृष्टमान को छोड़िकै, सेवै पुरुष विदेह ३४४

यह दुनिया बावरी ह्वै गई अदृष्ट जो निराकार ब्रह्म तासों नेहबाँध्यो है सो वातो धोखा है काको मिलै जीव ब्रह्म होतही नहीं है सो दृश्यमान जे साहब श्रीरामचन्द्र हैं तिनको छोड़िकै वा बिदेहपुरुष निराकार ब्रह्मको सेवै है अर्थात् वाही में लागै है ॥ ३४४॥

राजा रैयत ह्वै रहा, रैयत लीन्ही राज ॥
रैयत चाहे सबलिया, ताते भया अकाज ३४५

राजा जो साहब है सो रैयत ह्वै रहा है अर्थात् वाको कोई जानतही नहीं है और रैयत जो धोखाब्रह्म सो सब लेत भयो अर्थात् सब जगत् वाही में लगत भयो सो रैयत जो है "अहम्ब्रह्मास्मि" सो साहब को सब लियो चाहै है अर्थात् आपै ब्रह्म होन चाहै है ताते अकाज भयो माया के बश ह्वै आपनेन को मालिक मानन लग्यो ॥ ३४५ ॥

जिसकामन्त्रजपैसबसिखिकै, तिसके हाथ न पाऊं ॥
कहै कबीर मात सुत काही, दिया निरञ्जननाऊं ३४६

जिसका मन्त्र सब सिखिकै जपै हैं प्रणव उसका अर्थ ब्रह्म ही है जिसके हाथ पांउ नहीं हैं और निरञ्जन जो है ब्रह्म ताको निरञ्जननाम मायैको धरायो है माया वा निरञ्जन ब्रह्म की माता है काहेते कि या निरञ्जन नाम बचन में आवै है बिज्ञान करिकै अनुभव जो ब्रह्म होइ है सो मनका अनुभव है मायैको पुत्र है वह माया मनमें मिलि इच्छारूप है सो जाको तुम ब्रह्म कहौहौ सोई माया ते रहित नहीं है तुम कैसे अहम्ब्रह्म मानि माया ते रहित होउगे तामें प्रमाण कबीरजी के शब्दको ॥ मनपरपञ्ची मनै निरञ्जन, मनही है ॐकारा । तीनलोक मन फांसिलियाहै, कोई न मनते न्यारा ॥ ३४६ ॥

जानि भूलोरे ब्रह्मज्ञानी, लोक वेदके साथ ॥
कहकबीरयहबूझहमारी, सो दीपकलियेहाथ ३४७

कबीरजी कहैहैं कि रे ब्रह्मज्ञानी ! तुम जानि भूलौ लोक वेद

के साथ लोकमें सरहना पायके वेदमें धोखा ब्रह्ममें लागिके अर्थात् तुम यामें न खराब होउ सो कह कबीर यह बूझ हमारी कहे काया के बीर जीवो परमपरपुरुष जे साहब श्रीरामचन्द्र तिनमें तन मनते लागो जो हमारी बूझहै सोई साहब के अनुरागरूप दीपक हाथमें लेउ जाते संसाररूप अन्धकारते पार होउ ॥३४७॥

देवन देखा सेवकहि, सेवक देवन दीख ॥
कहकबीर इन मरते देखो, यह गुरु देई सीख ३४८

देवता आपने सेवक को सेवक आपने इष्ट देवता को न दीख तिनको कबीरजी कहै हैं कि हम दूनोंको मरते देखा है अर्थात् महाप्रलय में नहीं रहैं ताते हम गुरूकी सीख इनको देते हैं कि धोखा व नानामतको त्यागि साहब को जानो जाते जनन मरण छूटै या सीख देते हैं ॥ ३४८ ॥

तेरी गति तैं जानै देवा, हममें समरथ नाहीं ॥
कहकबीरयहभूलसबनकी, सबपरे संशयमाहीं ३४९

सबलोग या कहै हैं कि तुम्हारी गति तुम्हीं जानो हममें सामर्थ्य नहीं है जौन हमको गुरू बताय दियो है ताहीमें लगे हैं तिनको कबीरजी कहै हैं कि इन सबकी भूल ईश्वर तो बतावै न आवैंगे व जीवको तो आपने साहब को जानबै चाही नाहक संशयमें परे हैं साहबको जानैं तौ साहब छुड़ाइ लेइँगे ॥ ३४९ ॥

खाली देखिकै भरमभा, ढुंढ़त फिरै चहुँदेश ॥
ढूंढ़त ढूंढ़त मरगया, मिला न निर्गुण भेश ३५०

जौने संशयमें सब बूड़िगये हैं सो संशय कबीरजी देखावै हैं खाली कहे शून्य देखिकै सब जीवन को भरम भयो सो देवता परोक्ष है वाको अर्थ जानैं नहीं हैं व चारों देश में ढूंढ़त फिरै हैं व केते वा निर्गुण धोखाब्रह्म को ढूंढ़त ढूंढ़त मरि गये खोज न लाग्यो ॥ ३५० ॥

बूझआपनी थिर रहै, योगी अमर सो होइ ॥
अब बूझै भरमै तजै, आपे और न कोइ ३५१
देखादेखी सबजगभरमा, मिला न सतगुरुकोइ ॥
कहैकबीरकरतनितसंशय, जियराडारा खोइ ३५२

गुरुवा लोग कहै हैं कि जो बूझ थिर रहै तौ योगी अमर ह्वै जाय जो जगत् के नाना भ्रम छोड़िकै अबहूं बूझै तौ एक आपही है दूसरा नहीं है मारैगा कौन ऐसे कहि कहि देखादेखी श्री कबीरजी कहै हैं कि सब जगत् भरमि गयो सतगुरु कहे साहब के जाननवारे इनको कोई न मिलो हमहीं ब्रह्म हैं यही संशय में डारिकै आपने जीवन को खोइडारे अर्थात् नरक में डारि दीन्हे ॥ ३५१ । ३५२ ॥

झांकी आश लगाइया, झूठी झांकी आश ॥
गृहतजिबनखँडमानिया, युगयुग फिरै निराश ३५३

वा ब्रह्म जो धोखा ताकी आश लगाये है सो आश तेरी झूठी है गृहत्यागि कै जाके हेतु तुम बनखण्ड में टिकेहु सो युग युग निराश फिरैगो अर्थात् ठिकाने न लगैगो वह मिथ्या है बिना साहब के जाने संसारते न छूटैगो ॥ ३५३ ॥

नेइकेबिचलेसबघरबिचला, अब कछुनाहिंबसाइ ॥
कहै कबीर जो अबकीसमुझै, ताको काल न खाय३५४

कबीरजी कहै हैं कि नेइ जब बिगरि जाय है तब सगरौ घर बिगरिजायहै ऐसे नेइ जो है धोखाब्रह्म जौनेको गुरुवालोग समुझावै हैं सोई जब मिथ्या ठहस्यो तब और सब लोकके देवता येई घरहैं ते बिगारिबोई चाहैं अर्थात् इनते अब कौन सांचफल मिलै सो कबीरजी कहै हैं जो कोई साहब को समुझै अर्थात् तन मन ते लागै ताको काल नहीं खाय है और सब काल को कलेवा हैं ॥ ३५४ ॥

रामरहे बन भीतरे, गुरुकी पूजि न आश ॥
कह कबीर पाखण्ड सब, झूठे सदा निराश ३५५

बन जो है संसार तौनेके भीतर जब जीव भयो तब राम रहे कहे वह जीव रामते रहित भयो रामको पुनि बरिआई पावै है अथवा रामते रहित जब जीव भयो तब संसारी ह्वै जायहै और परमगुरु जे सुरति कमलमें बैठे रामनाम बतावै हैं तिनकी आश न पूजतभई वे रामनाम बतावै हैं यह नहीं सुनै हैं वे छुड़ावन चहै हैं सो नहीं छूटै हैं और जे साहब को छोड़ि और और में लगावै हैं ते सब पाखण्ड हैं झूठे हैं और पाखण्डी जे हैं और और में लागे हैं तिनकी मुक्ति कबहूं नहीं होइहै वे सदा निराश हैं तामें प्रमाण चौरासी अङ्गकी साखी ॥ चकई बिछुरी रैनिकी, जाय मिली परभात ॥ जे जन बिछुरे रामते, दिवस मिलैं नहिं रात ॥ ३५५ ॥

बिनारूप बिनरेखको, जगत नचावै सोइ ॥
मारै पांचौ जो नहीं, ताहि डरै सबकोइ ३५६

जो मन जगत् को नचावै है सो बिनारूप को है व बिना रेख को है आकाश वायु आदिक जेहैं तिनमें रूप नहीं है पै रेख देखी परै है व वायुको परस होय है साई रेख है व मनके रेखऊ नहीं है सो जे पांचौ ज्ञानेन्द्रिय पांचौ कर्मेन्द्रिय को नहीं मारै हैं ऐसे गुरुवन को सबजने डेराते जाउ नहीं तौ तुमहूं को संसार में डारि देइँगे ॥ ३५६ ॥

डरउपजाजिय है डरा, डरते परा न चैन ॥
देखा रामहि है नहीं, यहौ कहै दिन रैन ३५७

यही मनते डर उपजा कहे यहीके अनुभवते ब्रह्मभयो सो भूत ब्रह्मको सबै डेराय हैं सो यही ब्रह्मके डरमें जीव डराहै कहे पराहै

सो यह ब्रह्मके डरते चैन न याको परा अर्थात् यह ब्रह्मको ढूंढ़तही रहिगये पायो न ब्रह्म न भयो न चैन भयो यह कहै हैं कि राम को कोई देखा है हमतो नहीं देखा जो कोई हमको देखाइदेइ तौ हम मानैं सो अरेमूढ़ौ ! तुमतो डरमें परेहौ तुमको कैसे देखाइदेइँ जाको साहब कृपाकरै हैं ताको देखाइदेइहौं ॥ ३५७ ॥

सुखको सागर मैं रचा, दुखदुख मेलोपांव ॥
थिति ना पकरै आपनी, चले रङ्क औ राव ३५८

श्रीकबीरजी कहै हैं कि मैं तो या बीजक ग्रन्थ में सुख को सागर रच्यो है कहे साहब को बताइदियो है तामें नहीं लगै दुःखमें पाँव मेलै है अर्थात् कहूं ब्रह्म में कहूं ईश्वरन में कहूं नाना मत में लागै है जहां याकी थिति है साहब में तिनको नहीं पकरै याही ते राजा रङ्क सब चले जाय हैं काल खायेलेइ है ॥ ३५८ ॥

दुख न हता संसार में, हता न शोग बियोग ॥
सुखहीमें दुखलादिया, बोलै बोली लोग ३५९

या संसार जो है सो चित् अचित्रूप साहबको है सो जो कोई साहबरूप करि संसारको देखै है ताको न दुःख है न शोक है न बियोग है साहब तो सर्वत्र पूर्ण है ऐसो सुखरूप जो है संसार तामें मोर तोर में परिकै दुख ला दिया कहे दुःख भोगन लग्यो व वही मोर तोरकी बोली लोग बोलै हैं साहब को नहीं जानै हैं ॥३५९॥

लिखापढ़ी में परे सब, यहगुण तजै न कोइ ॥
सबै परे भ्रम जाल में, डारा यह जिय खोइ ३६०

सब लिखापढ़ी में परे हैं वेदशास्त्र तात्पर्य करिकै साहब को बतावै हैं सो तो न जान्यो बादबिवाद पढ़िपढ़ि करनलगे नये नये ग्रन्थ बनाय लेनलगे लिखनलगे वेदशास्त्र को अर्थ फेरि डारनलगे साहब मुख अर्थ जौन तात्पर्य करिकै वेदशास्त्र बतावै

हैं ताको छोड़ि अर्थ बदले हैं या गुणको कोई नहीं छांड़ै याहीते सब भ्रमजाल में परे आपने जियको खोइडास्यो ॥ ३६० ॥

धोखे धोखे सब जग बीता, द्वै अगुवा के साथ ॥
कहै कबीर पेड़ जो बिगरै, अबका आवै हाथ ३६१

कबीरजी कहै हैं कि एक शुभकर्म एक अशुभकर्म ये दुइ अथवा विद्या अविद्या माया ये दुइ अथवा माया ब्रह्म ये दुइ अगुवा के साथ बिगरिगयो अर्थात् मायावादी शक्ति ब्रह्मवादी ये दुइ अगुवा हैं तामें प्रमाण कबीरजीको ॥ कबिरायुगयुगसंप्रदा, सिरी शंकरीहोय ॥ सिरीसुबादीशक्तिके, शंकराशिवही होय १ सो धोखे धोखेन सबजग बीता कहे मरिगये मरतजायहैं मरिजायँगे श्रीकबीरजी कहै हैं कि पेड़ही बिगरिगयो काहेते कि साहब जीव को बहुत गोहरायो कि मेरे पास आ परन्तु पेड़ही ते अर्थात् प्रथमहीते मेरेपास न आयो मन व मनको अनुभव ब्रह्म को व माया को मिलिकै यह जीव संसारी ह्वैगयो साहब को न जान्यो जब शुद्धरह्यो है तबहीं मायामन ब्रह्म याको करिकै संसारी कै दियोहै ताहीके बश पस्योहै अब कहां याके हाथ साहब आवै हैं सो याको भाव यह है कि जो मन माया ब्रह्म ईश्वर उपासना ज्ञान सब छोड़ि साहबमें लगे तब यह जीवको कल्याण होइ यह जीव श्रीरामचन्द्रही को है और को नहीं है सो आपने स्वामीको चीन्है तबहीं याको कल्याण होइगो औरी भांति कल्याण न होइगो व बीजकभरेको सिद्धान्त यह है कि वेदशास्त्र पुराणादिक कुरान किताबन को कि जीव साहब श्रीरामचन्द्र को है सो जब उनको जानै तबहीं कल्याण है औरी भांति कल्याण नहीं है व जो या सिद्धान्त न जानै तौ संसार में भटकतही रहै सो मैं सर्वसिद्धान्त ग्रन्थमें स्पष्टही लिख्यो है कि वेदशास्त्र सिद्धान्तमें प्रतिपाद्य व श्रीरामचन्द्रही को कियोहै सो देखिलीजियो औ बीजक में सोई कबीरजी सिद्धान्त कियो है कि मन बचनके

कहे निर्गुण सगुणके परे श्रीरामचन्द्रहैं व तिनहीं के जाने जीव की मुक्ति होइ है तामें प्रमाण ॥ सायरबीजकको पद ॥ सन्तो बीजकमतपरमाना । कैयकखोजोखोजिथके कोइ बिरलाजन पहिं-चाना ॥ चारिउयुग औनिगमचतुर्भुज गावैंग्रन्थअपारा । बिष्णु बिरञ्चिरुद्रऋषिगावैं शेष न पावै पारा ॥ कोइनिर्गुणसर्गुणठहरावै कोईजोतिबतावै । नामधनीको सबठहरावै रूपको नहीं लखावै ॥ कोउसूक्षमअस्थूलबतावै कोउअक्षरनिजसांचा । सतगुरुकहँबिरले पहिचानैं भूलेफिरैं असांचा ॥ लोभके भक्ति सरै नहिं कामा साहब परमसयाना । अगमअगोचरधामधनीको सबैकहैंहांजाना ॥ देखै न पन्थमिलै नहिं पन्थी ढूंढ़तठौर ठिकाना । कोउठहरावौशुन्यक कीन्हा जोतिएकपरमाना ॥ कोउकहैंरूपरेख नहिं वाके धरतकौन को ध्याना । रोमरोममेंपरगटकर्ता काहेभरमभुलाना ॥ पक्षअपक्ष सबैपचिहारे करताकोइ न बिचारा । कौनरूपहैसांचा साहब नहिं कोईबिस्तारा ॥ बहुपरचैपरतीतिदृढ़ावै सांचेकोबिसरावै । कलपनकोटिजन्मयुगवागै दर्शन कतहुँ न पावै ॥ परमदयालुपरम पुरुषोत्तम ताहि चीन्ह नर कोई । ततपरहालनिहालकरतहै रीझतहै निजसोई ॥ बधिककर्मकरिभक्तिदृढ़ावै नानामतकोज्ञानी । बीजकमतकोइबिरलाजानै भूलिफिरेअभिमानी ॥ कहकबीरकर्ता में सब है कर्तासकल समाना । भेदबिना सबभरमपरे कोउ बूझै सन्तसुजाना ॥ २६१ ॥

सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुर
श्रीसीतारामचन्द्रकृपापात्राधिकारिविश्वनाथसिंहजू
देवकृतपाखण्डिखण्डनी टीका समाप्ता शुभमस्तु ॥

श्लोक ॥

पाखण्डखण्डिनी नाम टीकेयं परमा मता ॥
प्रेरणाद्विश्वनाथेन विश्वनाथप्रकाशिता १

दोहा ॥

बीजक ग्रन्थ कबीरको, कहरासाखी जान ॥
गूढ़मूललखितिलककिय, श्रीविश्वनाथसुजान १
लहिविश्वनाथरजायशुभ, रामनाथ परधान ॥
लिख्यो आपने हस्त ते, साखी शब्दमहान २

इति साखीसम्पूर्णम् ॥

इति श्रीबीजककबीरदाससम्पूर्णम् ॥

